देवकोश अर्थात् अमरकोश

भाषा

विवरण मूल सहित ।

बरेली की पाठशाला के मुख्याध्यापक पण्डित

देवदत्त तिवारी ने बनाया ।

बनारस

मेडिकल् हाल् के छापेखाने में मुद्रित हुआ ।

सन् १८७९ ई० ।

सम्बत् १९३६ आश्विन कृष्ण १० गुरौ ॥

मोल फ़ी पुस्तक ५) * भारतखण्ड के भीतर डाक महसूल ।)
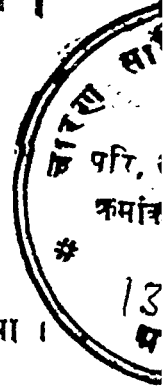
भूमिका ।

यूरोप के विद्वानों ने कई एक उत्तम उत्तम संस्कृत डिक्शनरी बनाई हैं परन्तु वे यूरोप की भाषा में लिखी हुई हैं, और मोल भी प्रत्येक का बहुत है इस कारण संस्कृत के पाठक जो यूरोप की भाषाओं को नहीं जानते अथवा बहुत व्यय कर्ने को समर्थ नहीं हैं, वे उन पुस्तकों को नहीं ले सकते हैं। संस्कृत के कोश बड़े कठिन होने से पण्डितों को छोड़ और किसी को लाभदायक नहीं होते जब ये ग्रन्थ टीकाओं की सहायता से बालकों को पढ़ाये जाते हैं तो उन का बहुत काल व्यर्थ व्यतीत होता है। शब्दों को इन ग्रन्थों में खोजना अत्यंत कठिन होता है और जिन लोगों को इन्हें आदि से अंत तक पढ़ने का समय नहीं मिलता उन्के लिये ये व्यर्थ हैं, कोलब्रुक साहिब ने अमरकोश को आजकल के संस्कृतपाठिओं के लिये सिद्ध किया और शब्दों को खोजने की सुगमता भी की परन्तु वह पुस्तक भी उन्होंने अंग्रेजी में लिखी और मोल भी बहुत रक्खा वह पुस्तक अब लभ्य भी नहीं है, इन दिनों के विद्यार्थिओं को इस प्रकार के ग्रन्थ की बड़ी आवश्यकता रहती है इस कारण मैंने यह कठिन परिश्रम उठाना अंगीकार किया, संस्कृत के सब कोषों में अमरकोश सर्वोत्तम गिना जाता है और जहां संस्कृत का प्रचार है वहां अमरकोश का भी प्रचार है, यह ऐसा उत्कृष्ट ग्रन्थ है कि इस के बनने के पीछे और कोषों की प्रतिष्ठा जाती रही और बालकों को सब स्थानों में यही पढ़ाया जाता है, पर इस का पढ़ना अबतक् बहुत कठिन था यह विचार कर मैंने इस की हिन्दी भाषा की टीका लिखने का उद्योग किया ॥

इस अमरकोश में (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,) आदि स्वर के क्रम से अनुक्रमणिका में सब अमरकोश के पद पृष्ठ पंक्ति श्लोक आदि ऐसे क्रम से रक्खे गये हैं कि पुस्तक हाथ में लेते तुरन्त स्पष्टार्थ हो जाता है, और कोलब्रुक साहिब के अंग्रेजी और संस्कृत अमरकोश के अनुसार और बड़े २ टीकाकार संस्कृत के और २ कोशकारों की अनुमति से बड़े कठिन परिश्रम के साथ पृथक् २ पद पदकृति और सब का अर्थ बहुत

स्पष्ट तथा पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग और कहीं २ "(इस प्रकार के चिन्हों)" के भीतर क्लिष्ट पदों की व्युत्पत्ति और कहीं २ "इस" प्रकार के चिन्हों से और कोशों के पद तथा १, २, ३, ४, ५ आदि अंकों के इशारे से मूल के नीचे लकीर लगाकर शब्दों का प्रथम उच्चारण और अर्थ सुगम हिन्दी भाषा में अच्छी रीति सहित स्पष्ट लिखा गया है ॥

आर्य्यावर्त्त अर्थात् हिन्दुस्तान भर के वा सब दुनिआ के पण्डित अपने और अन्य २ प्रिय छोटे २ बालकों को चार और पांच वर्ष वालों को बहुधा यही महा कठिन ग्रन्थ पढ़ाते हैं परन्तु पढ़ाने वाले और पढ़ने वालों का समय व्यर्थ वीतता है, क्योंकि इस महा कठिन शास्त्र की संस्कृत भाषा में वडी उत्तम २ टीका बनी हैं जिन से बालकों और उन के अध्यापकों को कुछ लाभ नहीं होता है, और इस नवीन भाषा टीका से बिना गुरु के भी बालकों को वड़ी सहायता मिल सकती है और सज्जन विद्वज्जन महाशयों के निकट निवेदन यह है कि जहां कहीं अशुद्ध देखें वहां कृपा कर शोध देवैं क्योंकि जो लिखता है उसी को मोह होता है इसका श्रम गुणज्ञ लोग जानैंगे और कृपा कर अङ्गीकार करैंगे ज्यादे शुभ ॥

३ अप्रैल १८७५ ई० — पण्डित देवदत्त तिवारी
हेड पण्डित बरेली कालेज ॥

PREFACE.

The want of a Sanskrit Dictionary has been long and greatly felt by students of that language who cannot afford to buy the costly and elaborate works prepared by European Scholars, or those who do not possess a knowledge of English sufficient to understand them.

The native Dictionaries called *Koshas* are defective in two important respects.

(1.) They are written in verse instead of in alphabetical order. This renders reference impracticable and the works are hardly of any use until read throughout.

(2.) Their language is so complicated that it cannot be understood by any but advanced students. For this reason numerous commentators have laboured, not very successfully, to adapt them for the study of beginners. But all these commentaries (have been) written in Sanskrit and are therefore of little use to students of the present time.

The late Dr. Colebrooke prepared the *Kosha* by Amar Singha with a view to facilitate both study and reference. But it had also the same defects which the Dictionaries by other European Scholars have, viz., its English dress and expensiveness. Moreover the work is now very rare.

I have endeavoured in this work to meet the peculiar wants of the modern student. The work I have chosen for my original is Amara Singha's *Kosh* which is decided to be superior to all other *Koshas*, and is so popular that others are

consulted only when it is "silent or defective." I have tried to adapt it to the requirements of both beginners and advanced students, to the former as a book of study, to the latter as one of reference. It has been prepared on much the same plan as Dr. Colebrooke's admirable Edition of *Amar Kosha*. Hindustanee words have been given in the margin for each set of Sanskrit synonyms, and foot notes contain explanations of words, varieties in their forms and quotations from other works on Sanskrit philology. An Alphabetical list of all the words, in the book has been given at the end for the sake of reference. Great care has been taken to make the work so easy as to be understood by a student in an early stage of his learning, without the assistance of a teacher; and the advantages of it have been extended to students whether knowing or not knowing English.

DEVA DATTA TIWAREE,

Head Pundit, Bareilly College.

BAREILLY COLLEGE:
3rd April, 1875.

॥ श्रीविद्याधीशाय नमः ॥

श्रीविद्यानिधिकामदो विजयते विघ्नान् विनिघ्नन् स्वयं
यो वेत्ता सचराचरेषु निखिलान्निःस्वाय सर्व्वान् गुणान् ।
यन्ध्यात्वा मनुजास्त्यजन्ति विविधान् क्लेशाननार्य्यार्ज्जितान्
तम्वन्दे सुरवृन्दवन्दितपदं स्वाभीष्टसिद्धै विभुम् ॥ १ ॥

श्रीरामं जनकात्मजां सुललितां सम्भूषिताङ्गं मुहुः
पश्यन्तं सुकटाक्षदृष्टिसुनसं कारुण्यरूपां शिवाम् ।
नत्वाहं शिरसा परं रघुपतिं संसेवितं सत्परैः
कुर्व्वे श्रीह्यमरप्रशस्तविवृतिं श्रीदेवदत्तस्सुधीः ॥ २ ॥

टीकास्सन्ति कवीश्वरैर्व्विरचिता यद्यप्यनेकाऽनघा
या सुस्वल्पधियो विवेकरहिता बाला विषीदन्ति ये ।
तेषामेव कृते निसर्गसुहृदाम्भाषास्वरूपाम्वराम्
सो ऽयम्मे ऽत्र परोपकारकुशलैः सङ्गम्यतान्दुर्नयः ॥ ३ ॥

दोहा ।

श्रीगणेश के पद कमल । मन क्रम बचन मनाय ॥
अमरसिंह के कोश का । अर्थ करौं शुभदाय ॥ १ ॥

बड़े निपुन ये कवि बरन । टीका रची अनेक ॥
परम कठिन के हेतुतें । पण्डित लहहिं विवेक ॥ २ ॥

लघु बालक अरु सिथिलजन । विद्या रहित जो कोय ॥
इन सब के हित अति सुलभ । क्रिया अर्थ हम सोय ॥ ३ ॥

अमर सिंह अति कुशल कवि । ग्रंथ किया सब जानि ॥
उल्था करि उस अर्थ को । प्रगट किया शुभ मानि ॥ ४ ॥

राजा अरु पंडित बरन । कोश महा उपकार ॥
बिना कोश के उभय जन । पावैं क्लेश अपार ॥ ५ ॥

देवदत्त द्विज आनि उर । कोश विषय व्यवहार ॥
क्रिया सुगम अति हित समुझि । भाषा सहज प्रकार ॥ ६ ॥

निवेदन ।

यह सब पण्डितों की अनुमति है कि अमरसिंहकृत अमरकोश अर्थात् एक संस्कृताभिधान संज्ञापदों के ज्ञान कराने में एक अति उत्तम मार्ग है, क्योंकि पाणिनीय व्याकरण के अनुसार शब्दसाधुत्त्व की समानता तो और भी व्याकरण रखते हैं, परन्तु अमरकोश तो एक ऐसा है कि जहां कहीं संस्कृत का अधिकार विशेष है इसका ही बर्ताव है, और और कोश, केवल वहां पढ़े पढ़ाये जाते हैं जहां अमरकोश कुछ नहीं लिखता वा अल्प लिखता है, और संस्कृत के अन्य कोशों के समान यह भी श्लोकबद्ध है, इस कोश से केवल संज्ञापदों का ज्ञान होता है, मैत्रेय माधवादिकृत धातुपाठ सूत्र संस्कृत कोश बनाने के लिये आवश्यक सामग्री हैं और इसी लिये ये उत्तम गिने जाते हैं, ॥

इस कोश में तीन भाग हैं इसी से बहुधा त्रिकाण्ड कहलाता है, कभी २ अपने प्रकरण के हेतु से अभिधानसंज्ञक होता है और ग्रंथकर्त्ता के नाम से अमरकोश भी कहलाता है, इस ग्रन्थ के अमरसिंहकृत होने में टीकाकारों की ऐक्यता है, और यह अनुमान होता है कि वह राजा विक्रमादित्य के राजसभा के नव रत्नों में वर्त्तमान था, जो उसका यह वृत्तान्त ठीक है तो उसको १६३५ वर्ष से अधिक नहीं हुये हैं ॥

यह ग्रन्थकार की भूमिका से सूचित होता है कि इस ग्रन्थ के मूल कारण और २ पुराने कोश हैं ॥

॥ टीका अमरकोश की ॥

१. सब टीकाओं में से जो वर्ती जाती हैं राय मुक्तामणि की टीका प्रधान है, यह हम को ग्रन्थकार से ही ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ जो पादचन्द्रिका के नाम से प्रसिद्ध है वह प्राचीन सोलह १६ टीकाओं से संग्रह की गई है, विशेष कर चीरस्वामी से ॥

२. यद्यपि आदि से पदों की व्युत्पत्ति मुक्तामणि की टीका में ठीक नहीं है, तथापि उस का प्रमाण बहुत है ॥

३. राय मुकुटमणि की टीका से ज्ञात होता है कि प्राचीन टीकाओं में से क्षीरस्वामीकृत टीका बहुत सत्कार योग्य है, और भारतवर्ष के किसी २ प्रदेशों में अबतक प्रचलित है ॥

४. वाच्यसुधा एक नवीन टीका रामाश्रम वा भानुदीक्षितकृत है (क्योंकि किसी में रामाश्रमकृत और किसी में भानुदीक्षितकृत लिखा है) ये टीका मूल के वाक्यार्थ को जहां कि ठीक है पुष्ट करती हैं जहां कि अशुद्ध है उस को शुद्ध करती हैं ॥

५. अच्युत उपाध्यायकृत एक शुद्ध संक्षेप व्याख्या मूल का है ॥ इन पांचों में पाणिनीय व्याकरण के अनुसार पदों की उपपत्ति है, औरों में जो इन (पांचों के) पीछे गणना के योग्य हैं शब्दसाधना के लिये अनेक प्रचलित व्याकरणों का मत लिया गया है ॥

६. भारतमलकृत टीका जिस की मुग्धबोधिनी ऐसी आख्या है एक बहुत उत्तम ग्रन्थ है, अति सुस्पष्ट और विस्तार से तथा विशेष कर वर्ण शुद्धि ज्ञान अनेक ग्रन्थकारों की अनुमति के अनुसार कहा है और शब्दसाधना वोपदेवकृत व्याकरण की रीति की है ॥

७. सार सुन्दरी मथुरेशकृत बहुत स्पष्ट और दूसरी टीकाओं के बचनों से भरी है, और जिस सें मूल के अनेक टीका और पाठ जान पड़ते हैं, इसमें पदों की उपपत्ति सुपद्म व्याकरण के अनुसार है ॥

८. दूसरी बहुत प्रशंसनीय टीका नारायणचक्रवर्त्तीकृत पदार्थकौमुदी है, और कलापव्याकरण के अनुसार इस में शब्दों की साधना कही है ॥

९. रामनाथकृत टीका में जिसकी त्रिकाण्डविवेक संज्ञा है, बहुत रीति से शब्दों का शुद्धिज्ञान कहा है ॥

१०. नीलकण्ठकृत एक टीका और है जो बहुत से स्थानों की टीका अच्छीतरह और विस्तारपूर्व्वक कहती है, और जिसका प्रमाण बहुधा अमरकोश की व्याख्या मे दिया जाता है ॥

११. तर्कवागीशकृत टीका जिस में कलापव्याकरण की रीति शब्दों की उत्पत्ति है शुद्धता के कारण बहुत स्तुति के योग्य है ॥

इन पहिले वर्णन की हुई टीकाओं से अधिक और भी हैं, नयनानन्द की कौमुदी और रघुनाथचक्रवर्ती की त्रिकाण्ड चिन्तामणि जो

पाणिनीय व्याकरण के अनुसार है, और रामप्रसाद तर्कालंकारकृत अमरकोशकौमुदी, लोकनाथकृत पादमंजरी जो कलापव्याकरण के अनुसार है ॥

रामाश्रमकृत प्रदीपमंजरी और रामेश्वरकृत बृहतमंजरी और भी टीका हैं जिन के कर्त्ता कृष्णादास—चिलोचनदास—सुन्दरानन्द—वानदीपभट्ट—विश्वनाथ— गोपालचक्रवर्ती— गोविन्दानन्द—रामानन्द— भोलानाथ आदि कितने हैं ॥

संस्कृत कोश और अभिधान अन्य कृत बहुत हैं ॥

१. मेदिनी कोश एक अवर्ग आदिवर्णों के क्रम से सुश्राव्य पदों का मेदिनीकृत अभिधान है ॥

२. विश्वप्रकाश एक दूसरा ऐसा ही कोश है जिस्को माहेश्वर वैद्य ने बनाया है परन्तु वह ऐसा शुद्ध और ऐसे अच्छे क्रम से नहीं है, यही ग्रन्थ मेदिनी के बनाने में कारण है, जो कि उत्तम शुद्ध और बहुत प्रामाणिक कोश है, बहुधा टीकाकार इन दोनों का प्रमाण देते हैं ॥

३. तीसरा अभिधान हेमनामक है जिसको हेमचन्द्र ने बनाया है, इस के दो काण्ड हैं पहिले काण्ड में एकार्थ पद हैं और वे क्रम से छ सर्गों में रक्खे गये हैं, और दूसरे काण्ड में समजाति पद अवर्गादि क्रम से हैं, और ये दोनों ग्रंथ बहुत श्रेष्ठ हैं ॥

४. अभिधानरत्नमाला हलायुध रचित है, और इस के पांच सर्ग हैं अन्त के सर्ग में ऐसे पद हैं जो कई २ अर्थों में ग्रहण किये जाते हैं यह एक बहुत छोटा ग्रन्थ है ॥

५. धर्नी एक ऐसे पदों का कोश है कि जिन के अर्थ कई प्रकार से होते हैं टीकाकार वारम्वार इस का कथन किया कर्त्ते हैं, ॥

६. अभिधानहारावली उसी ग्रन्थकार का है जिसका धर्नी कोश है और ये दोनों बहुत प्रामाणिक हैं ॥

ये अगली श्रेणी और और कोशों को जनाती हैं जिनका टीकाकार प्रमाण देते हैं, जैसे ॥

अमरमाला अमरदत्त शब्दार्णव शाश्वत वरण द्विरूप उणादिकोश रत्नकोश रत्नमाला रुद्र अजय गंगाधर वाचस्पति तारपाल अरुणदत्त संसारावर्त नाममाला भागुरि वररुचि वोपालित रन्तिदेव हरकोश शुभाङ्क हलायुध गोवर्द्धन रभस पाल वाभट माधव धर्म्मव्याडि पुरुषोत्तम आदि हैं ॥
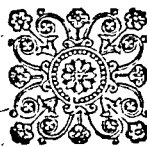
PREFACE TO AMARAKOSHA.

The celebrated Amarakosha, or vocabulary of Sanskrit by Amar Singh, is, by the unanimous suffrage of the learned, the best guide to the acceptations of nouns in Sanskrit. The work of Páṅini on etymology is rivalled by other grammars some of which have even obtained the preference in the opinion of the learned of particular provinces: but Amara's vocabulary has prevailed wherever the Sanskrit language is cultivated and the numerous vocabularies, which remain, are consulted only where Amara's is either silent or defective. Such decided preference for the Amarakosha, and the consequent frequency of quotations from it, determined the selection of this as the basis of an Alphabetical Dictionary. Like other vocabularies of Sanskrit, that of Amara is in meter. Verbs not being exhibited in the Amarakosha, which is a vocabulary of nouns only, the Treatises of Maitreya and Mádhava, and others on Sanskrit roots furnish important materials towards a complete Dictionary of the language.

I. The Tent of the Amarakosha.

The vocabulary comprised in three books, is frequently cited under the title of Trikanda sometimes under the denomination of Abhidhana (nouns), from its subject; often under that of Amarakosha, from the name of the author. The commentators are indeed unanimous in ascribing it to Amara Singh. He appears to have been; among the ornaments of the court of Raja Vicramáditya. If this mention of him be accurate, he must have lived not more than 1935 years ago.

It is intimated in the author's own preface, that the work was compiled from more ancient vocabularies: his commenta-

tors instance Trikanda, Utpalini, Rabhasa and Katyayana as furnishing information on the nouns; and of Vyadi and Vararuchi on the genders.

II. Commentaries on the Amarakosha.

(*a.*)—At the head of commentaries which have been used must be placed that of Ráya Mucuta Maní. This work entitled Padachandrica was compiled as the author himself informs us from 16 earlier commentaries to many of which he repeatedly refers: especially those of Cshíra Swamí Subbate Hadda Chandra, Cóalinga Cóncata, Sarvadhyra, and the Vyac'hya Mrita Tícásar'aswa, &c., &c.

Though the derivation of Mucuta's commentary be often inaccurate its authority in general great.

(*b.*)—Among the earlier commentaries named by Raya Mucuta that of Cshíra Swami is a work of considerable merit and is still in general use in some provinces of India although the interpretations not unfrequently differ from those commonly received.

(*c.*)—The Vyác'hyasudhá a modern commentary by Ramasráma or by Bhanudíshitá (for copies differ as to the name of the author) is the work of a grammarian of the School of Benares. He continually refers to Raya Mucuta and to Swami and his work serves to conform their scholar where accurate or correct them where erroneous.

(*d.*)—The Vyac'hya Pradipa by Achyuta Upadhyaya is a concise and accurate exposition of the text note. In these four commentaries, the derivations are given according and Pánini's system. In others who are next to be enumerated, various popular grammars are followed for the etymologies.

(*e.*)—The commentary of Bharat Malla, entitled Mugdhabod'hini, is indeed a very excellent work; copious and clear and particularly full upon the variations of orthography according to different authorities. The etymologies are given conformably Vopadéva's system of grammar.

(*f.*)—The Sára Sundarí by Mathuresa is perspicous and abounds in quotations from other commentaries and is therefore a copious source of information on the various interpretations and readings of the text. The Supadma is the grammar followed in the derivations stated by the commentator.

(*g.*)—The Padár'tha Caumudi by Narain Chakravarti is another commentary of considerable merit. The Kalapa is the grammar followed in the etymologies here exhibited.

(*h.*)—A commentary by Ramanat'ha Vidyavachospati, entitled Tricanda Vineca is peculiarly copious on the variations of orthography.

(*i.*)—Another commentary is that of Nilkantha. It is full and satisfactory on most points for which reference is usually made to the expositions of the Amarakosh.

(*j.*)—The commentory of Tarhvajish is recommended for its accuracy. This follows the grammar entitled Kalapa.

Besides those already mentioned there are other commentaries.

Caumudi by Hyayanauda *Tricanda Chintamany* by Raghunauth Chakravarti, to the according to Pánini's system of etymology, Vaishaniya. *Caumudi* by Ram Pershad Tarcalancasa; Padamanjura by Loknath, both following the grammatical system of the Kalapa Prodipinonjari by Ramsarma Vubat Háránali by Ramsuor. Also commentaries by Creshuadosa Trilochandasa, Sundarananda, Vanadeya Vatta, Viswanath, Gopal Chackravarti, Sorindanand Ramanand Bholanath, &c.

III. Sanskrit Dictionaries & Vocabularies by other Authors.

(1.)—The Medini, an alphabetical Dictionary, by Homonymous terms, by Medimcor.

(2.)—The Vishwaprakasa, by Maheswar Vaidya, a similar Dictionary, but less accurate and not so well arranged. It is the ground work of the Medini which is an improved and

corrected work of great authority. Both are very frequently cited by the commentators.

(3.)—The Hain, a Dictionary by Hema Chandra, in two parts, one containing synonymous words arranged in six chapters, the other containing, homonymous terms in alphabetical order. Both are works of great excellence.

(4.)—The Abbidhana Rotnamala, a vocabulary by Halayadha, in 3 chapters, the last of which relates to words having many acceptations. It is too concise for general use.

(5.)—The Dham, a vocabulary of words bearing many tenses. This is frequently cited by the commentators.

(6.)—The Harovoli of the same author Both these are of considerable authority. The following is the list of other Dictionaries quoted by the commentators.

Amar Mala, Amar Datt, Sabdamava, Saswata Varan (वरण) Desava Dwirapa, Unadikosha, Ratnakosha, Ratna Málá, Rantideva, Rudrá, Vyádí, Rahhas Vapalita Bhojári Vachaspatí, Tasapál, Amar Lalla.
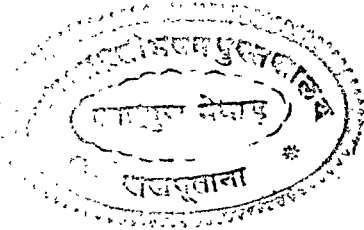
अमरकोश के संकेत ।
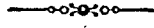
१. मिले पदों को जुदा करने के लिये मिले अक्षरों के नीचे बिन्दी लगा दीये हैं, जैसे कम्बल—अम्बर—आदि ॥

२. पदों के शिरपर १—२—३—४—५—आदि अंकों के चिह्नों से मूल के नीचे लकीर लगाकर पदों के प्रथम उच्चारण लिख दिये हैं, जैसे
१ १ २ २ २
त्रिदशालयाः=त्रिदशालय, सुपर्व्वाणः=सुपर्व्वन्—वा र्व्वन्, आदि ॥

३. और कोशों के समानार्थक—वा पर्य्याय शब्दों के लिखने के लिये ये संकेत लिख दिये हैं, जैसे उत्तमागेषुनैचिकी=वा "नैचिका, और नैचिकी" आदि हैं ॥

४. जहां कहीं कठिन पदों की व्युत्पत्ति लिखनी है वहां "( )" इस प्रकार के चिह्न के भीतर लिख दी गई है, जैसे "(सन्धागर्भाधानमस्त्यस्याः सन्धिनी)" आदि है ॥

५. पुलिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग—नपुंसकलिङ्ग— और त्रिलिङ्ग— लिखने के योग्य स्थल में पु—स—न— और पुसन— पदों के शिर पर ये अक्षर लिख दिये हैं,
पु स न पुसन पुसन
जैसे अमराः, नगरी, त्रिविष्टपं, पूतं, पवित्रं, आदि हैं ॥

६. इस ग्रन्थ की अनुक्रमणिका में सब पद वा शब्द पुल्लिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग—नपुंसकलिङ्ग—आदि निर्व्विभक्तिक लिख दिये हैं, मूल—और टीका में सविभक्तिक लिखे हैं, पद खोजने के समय विचार कर लेना चाहिये ॥

७. एकवचन के स्थान एक व. वा ए. व., और बहुवचन के स्थान में बहुव. वा ब.ब. आदि हैं ॥

८. सङ्क्षेप से मूल के निकट बाजू पर और विशेष अर्थ टीका में स्पष्ट लिखा गया है ॥
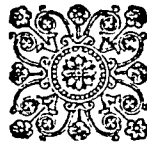
॥ श्रीविद्याधीशाय मङ्गलमूर्त्तये नमः ॥

अमरकोशः ।

श्रीमान अमरसिंह नाम और लिङ्ग के (१) अनुशासन करने वाले शास्त्र के निर्विघ्न समाप्ति के लिये स्वकृत मङ्गल को ग्रन्थ के आदि में शिष्यों की शिक्षा के निमित्त लिखते हैं, यस्येति,

हे धीर पुरुषों जिस अति गम्भीर ज्ञान और करुणासागर के निर्म्मल क्षान्ति आदि गुण हैं और जो नाशरहित है सम्पत्ति और मोक्ष के अर्थ आप सब उसकी आराधना करें ॥ १ ॥

(२) अभिमत ग्रन्थ के करने की प्रतिज्ञा करते हैं, कि अन्य शास्त्र (नाम और लिङ्ग के प्रतिपादन करने वालों) को एकट्ठा कर अल्प अधिक और वहुत अर्थों से प्रतिपद प्रकृति प्रत्यय के विचार से प्राप्त संस्कार सजातीय वर्गसमूहों से, नाम अर्थात् स्वर अव्यय आदि, लिङ्ग अर्थात् पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गों के व्युत्पादक शास्त्र की विवेचना हम करते हैं ॥ २ ॥ ॥ परिभाषा ॥

पहिले हम वक्ष्यमाण शास्त्र की परिभाषा तीन श्लोकों से कहते हैं, बहुधा विशेष स्वरूप ही से स्त्री पुं नपुंसक लिङ्ग जानना जैसे (लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा, पिनाको ऽजगवंधनुः) तथा कहीं साहचर्य्य से अर्थात् अन्य शब्दों के साथ होने से लिङ्ग जानना जैसे (अश्वयुक् अश्वनी, ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः, वियत् विष्णुपदं) यहां से ये पद सन्दिग्ध हैं (अश्वयुक् ब्रह्म वियन्ति) इन शब्दों को अश्वनी आत्मभूः विष्णुपद के साहचर्य्य से स्त्री पुं नपुंसक लिङ्ग जानना चाहिये, तथा कहीं लिङ्ग विशेष के कहने से, जैसे (भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् क्लीबे त्रिविष्टपं) ये होते हैं ॥ ३ ॥

इस ग्रन्थ में अनुक्त, व्युत्पत्ति हीन, और असमान लिङ्गों के शब्दों के नामों का लिङ्गभेद कहने के लिये हमने (द्वन्द्व समास) नहीं किया,

---

(१) बतलानेवाले- (२) चाहे हुये-

जैसे (कुलिशं भिदुरं पविः) और नहीं तो कुलिशभिदुरपवयः, ऐसा होता, तथा एक शेष भी नहीं किया, क्योंकि एक शेष में जो शेष रहता उसी के लिङ्ग का बोध होता, जैसे नभः खं श्रावणो नभाः, नहीं तो एक शेष करने पर खश्रावणौ तु नभसी, ऐसा होता, और क्रम के बिना भिन्न लिङ्गों का संकर अर्थात् मेल भी नहीं किया, क्योंकि साहचर्य्य से लिङ्ग के निश्चय का अभाव भी पढ़ सकते किन्तु स्त्री पुं नपुंसक क्रम से पढे हैं जैसे (स्तवः स्तोत्रं स्तुतिः नुतिः) नहीं तो (स्तुतिः स्तोत्रं स्तवोनुतिः) ऐसा हो जाता, और यहां बहुधा रूपभेद इत्यादि, उक्त रीति से जिनके लिङ्ग व्युत्पादित हैं उनके तो भिन्न लिङ्गों के भी स्थलान्तर मे द्वन्द्व आदि किया है, जैसे (अप्सरो यक्षरक्षो गन्धर्वकिन्नराः) माता पितरौ पितरौ ॥ ४ ॥

तीनों लिङ्ग होने के योग्य स्थल में त्रिषु यह पद कहा, जैसे (त्रिषुस्फुलिङ्गो ऽग्निकणः) स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्गों में होता है, तथा मिथुन में अर्थात् स्त्रीलिङ्ग पुल्लिङ्ग होने के योग्य स्थल में द्वयोः यह पद कहते हैं, जैसे वन्हेर्द्वयोर्ज्वालकीलौ, तथा (निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं) जहां जो लिङ्ग निषिद्ध है वहां उससे अवशिष्ट लिङ्ग जानना चाहिये, जैसे (व्योमयानं विमानोऽस्त्री) यहां स्त्रीलिङ्ग के निषिद्ध होने से विमान शब्द को पुं नपुंसक की विधि है, तथा तु शब्द है अन्त में जिसके वह त्वन्त है और अथ शब्द है आदि में जिसके वह अथादि है ये दोनों पूर्व पद के साथ सम्बन्ध नहीं रखते जैसे (पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती) यहां नगरी यह त्वन्त पद इन्द्राणी यह जो पूर्व पद है तिसके साथ सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु अमरावती के साथ सम्बन्ध रखता है, तथा (नित्याऽनवरता ऽजस्रमप्यऽथातिशयोभरः) यहां अथ यह पद पूर्व जो अजस्र पद है उससे सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु भर आदि से सम्बन्ध रखता है ॥ ५ ॥

॥ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये परमात्मने नमः ॥

॥ श्रीविद्याधीशाय नमः ॥

अमरकोशः ।

परिभाषा ॥

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥
समाहृत्यान्यतन्त्राणि सङ्क्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥
प्रायशो रूपभेदेन साहचर्य्याच्च कुत्रचित् ।
स्त्रीपुंनपुंसकञ्ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥
भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः ।
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानाङ्क्रमादृते ॥ ४ ॥
त्रिलिंग्यान्त्रिष्विति पदम्मिथुने तु द्वयोरिति ।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्त्थं त्वन्ताथादि न पूर्व्वभाक् ॥ ५ ॥

प्रथम काण्डः ।

प्रथम वर्गः ।

	पु पु पु १पु
स्वर्ग ॥	स्वर् (अव्ययं) स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालयाः ।
	२पु स स न
	सुरलोको द्यो-दिवौ (द्वे स्त्रियां) (क्लीवे) त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
	पु पु पु पु पु पु
देवता ॥	अमरा निर्ज्जरा देवास्-त्रिदशा विबुधाः सुराः ।
	३पु ४पु पु ५पु
	सुपर्व्वाण-स्सुमनसस्-त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ २ ॥

१–यः   २–क.   ३–र्व्वन्.   ४–नस्.   ५–कस्.

स्वः, स्वर्गः, नाकः, त्रिदिवः, त्रिदशालयः, सुरलोकः, द्यौः, द्यौः, त्रिविष्टपम्, ये ९ स्वर्ग के नाम हैं, इनमे स्वर यह अव्यय है, जिस लिये इसको लिङ्ग सख्या और कारक का अभाव है, द्यो और दिव ये दोनो स्त्रीलिङ्ग हैं, "दिव शब्द अकारान्त भी है पर वह नपुंसकलिङ्ग है", त्रिविष्टपं, "वा त्रिपिष्टपं, और त्रिविष्टपं", ये नपुंसकलिङ्ग ही हैं, और त्रिदशालय आदि देवताओं के स्थानों के नामवाचक पद हैं, इसी प्रकार आगे भी अर्थ की समता से पर्य्याय शब्दों को आप से आप विचार करलेना चाहिये ॥ १ ॥ एक व॰ अमरः, बहु व॰ अमराः, निर्ज्जराः, देवाः, त्रिदशाः, विबुधाः, सुराः, सुपर्व्वाणः, सुमनसः, त्रिदिवेशाः, दिवौकसः, "दिवौकाः, वा दिवौकाः (स) वा दिवोकस्" ॥ २ ॥

पु १पु पु पु
आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।
पु २पु पु पु ३पु
आदित्या ऋभवो ऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ३ ॥
पु ४पु पु ५पु
बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्व्वाणाः दानवारयः ।
पु ६पु न स
वृन्दारका दैवतानि (पुंसि वा) देवता (स्त्रियाम्) ॥ ४ ॥

गणदेवता ।

पु पु ७पु पु ८पु ९पु
आदित्य-विश्व-वसवस्-तुषिता-भास्वरा-निलाः ।
पु पु पु
महाराजिक साध्याश्-(च) रुद्राश्-(च गणदेवताः) ॥ ५ ॥

देव-जाति ।

पु १०पु पु ११न पु पु
विद्याधरो-ऽप्सरो-यक्ष-रक्षो-गन्धर्व्व-किन्नराः ।
पु पु पु पु
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतो-(ऽमी देवयोनयः) ॥ ६ ॥

असुर ।

पु पु पु पु १२पु पु
असुरा दैत्य-दैतेय-दनुजेन्द्रारि-दानवाः ।
पु पु पु १३पु
शुक्रशिष्या दितिसुताः पुर्व्वदेवाः सुरद्विषः ॥ ७ ॥

जिन-वा बुध ।

पु पु पु १४पु पु
सर्व्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्म्मराजस्-तथागतः ।

१—षद्. २ऋभु. ३—घस्. ४—भुज्. ५—रि. ६—त. ७—वसु. ८—आ—
९—अ—. १०—अप्सरस्. ११—रक्षस्. १२—इन्द्रारि. १३—द्विष्. १४—राज.

आदितेयाः, दिविषदः, "दिविसत्, वा द्युषत्, और द्युसत्," लेखाः, अदितिनन्दनाः. आदित्याः, ऋभवः, "ऋभुः, वा ऋभूः", अस्वप्नाः, अमर्त्याः, अमृतान्धसः, ॥ ३ ॥ बर्हिर्मुखाः, "वहिर्मुखः, वा बर्हिमुखः", क्रतुभुजः, गीर्व्वाणाः, "वा गीर्वाणाः" दानवारयः, वृन्दारकाः, दैवतानि, वा देवताः, ये २६ देवताओं के नाम हैं, "व्यक्ति के बहुत होने से इनमें बहुवचन का प्रयोग है, विकल्प से दैवत शब्द पुल्लिङ्ग है" ॥ ४ ॥ आदित्याः, बारह, विश्वे तेरह, "बहु व॰ विश्वे, वा विश्वेदेवाः" वसवः आठ, तुषिताः छव्वीस, आभास्वराः चौंसठि, अनिलाः उंचास, महाराजिकाः, "और महाराजकाः", दो से वीस, साध्याः बारह, रुद्राः ग्यारह, ये ९ गण देवताओं के नाम हैं, ॥ ५ ॥ विद्याधराः जीमूत वाहन आदि, अप्सरसः देवताओं की स्त्री, यक्षाः कुबेर आदि. "इसी प्रकार जक्षः, स्त्री यक्षी और यक्षीर्णी", रक्षांसि लङ्का वासी माया करने वाले, गन्धर्व्वाः तुम्बुरु आदि देवगायक, किन्नराः अश्वादि मुखनर का स्वरूप, पिशाचाः मांस भक्षक भूत विशेष, "और भी पैशाचः" गुह्यकाः मणि भद्र आदि, "धन की रक्षा करने वाले यक्ष को गुह्यकः कहते हैं", सिद्धाः विश्वावसु आदि, भूताः बालग्रह आदि रुद्र के अनुचर, जाति मानकर मूल में एकवचन है, ये १० देव योनि वा देवजाति के नाम हैं ॥ ६ ॥ एक व॰ असुरः, बहु व॰ असुराः, "इसी प्रकार आसुरः, और आसुराः", दैत्याः, दैतेयाः, दनुजाः, इन्द्रारयः, दानवाः, शुक्रशिष्याः, दितिसुताः, पूर्व्वदेवाः, सुरद्विषः, ये १० दैत्य वा असुरों के नाम हैं, सर्व्वज्ञः, सुगतः, बुद्धः, "और भी बुधः", धर्म्मराजः, तथा गतः ॥

	पु १पु पु पु पु समन्तभद्रो भगवान् मारजि-ल्लोकजि-ज्जिनः ॥ ८ ॥ पु पु २पु पु षडभिज्ञो दशबलो ऽद्वयवादी विनायकः । पु पु ३पु पु मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः
बौद्धमती ।	४पु शाक्यमुनिस्- (तु यः) ॥ ९ ॥
	पु पु ५पु (स) शाक्यसिंहः सर्व्वार्थसिद्धश् शौद्धोदनिश् (च सः) । ६पु ७पु ८पु गौतमश् (चा) ऽर्कबन्धुश् (च) मायादेवीसुतश् (च सः) ॥१०॥
ब्रह्मा ।	९पु १०पु पु ११पु पु ब्रह्मा-त्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः । पु पु १२पु पु हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयम्भूश् चतुराननः ॥ ११ ॥ १३पु पु पु पु पु धाता-ऽब्जयोनि-र्द्रुहिणो विरञ्चिः कमलासनः । १४पु पु १५पु १६पु १७पु पु स्रष्टा प्रजापति-र्वेधा विधाता विश्वसृग् विधिः ॥ १२ ॥
विष्णु ।	पु पु पु पु १८पु विष्णुः-र्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः । पु पु पु पु पु दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १३ ॥

१–वत्. २–दिन्. ३–शास्तृ. ४–मुनि. ५–दनि. ६–तम. ७–बन्धु. ८–सुत ९–ब्रह्मन्. १०–आ. ११–ष्ठिन्. १२–भू. १३–धातृ. १४–स्रष्टृ. १५–वेधस. १६–तृ. १७–सृज्. १८–वस्.

समन्त-भद्रः, भगवान, मारजित्, लोकजित्, जिनः, ॥ ८ ॥ षडभिज्ञः, दशबलः, अद्वय–वादी, विनायकः, मुनीन्द्रः, श्रीघनः, शास्ता, "उसीप्रकार शासिता (तृ), मुनिः, ये १८ जिन–वा बुधके नाम हैं; शाक्यमुनिः, ॥ ९ ॥ शाक्यसिंहः, "और भी शाक्यः", सर्व्वार्थसिद्धः, "उसी प्रकार सर्व्वार्थः, और सिद्धार्थः", शौद्धोदनिः, गौतमः, अर्कबन्धुः, मायादेवीसुतः, ये ७ बुद्ध के भीतरी शाक्य मुनि के भेद के नाम हैं; "सर्व्वज्ञः, वीतरागः, अर्हन, केवली, तीर्थ कृत्, जिनः, ये ६ नास्तिक के देवताओं के नाम हैं;" ॥ १० ॥ ब्रह्मा, आत्मभूः, सुर–ज्येष्टः, परमे-ष्ठी, पितामहः, हिरण्यगर्भः, लोकेशः, स्वयम्भूः, चतुराननः, ॥ ११ ॥ धाता, अब्ज-योनिः, द्रुहिणः, "उसी प्रकार द्रुहणः, और द्रुघणः", विरञ्चिः, "और भी विरिञ्चः, विरिञ्चिः, विरञ्चः, विरञ्चनः", कमलासनः, स्रष्टा, प्रजापतिः, वेधा, विधाता, विश्वस्रट्, विधिः, ये २० ब्रह्मा के नाम हैं; ॥ १२ ॥ विष्णुः, नारायणः, "उसी प्रकार नरायणः" कृष्णः, वैकुण्ठः, विष्टर–श्रवाः, दामोदरः, हृषीकेशः, केशवः, माधवः, स्वभूः, ॥ १३ ॥

पु पु पु पु
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
पु पु १पु पु पु
पीताम्बरो-ऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्-सेनो जनार्द्दनः ॥ १४ ॥
पु २पु ३पु पु
उपेन्द्र इन्द्रावरजश् चक्रपाणिश् चतुर्भुजः ।
पु पु ४पु पु
पद्मनाभो मधुरिपु-र्वासुदेवस् त्रिविक्रमः ॥ १५ ॥
पु पु पु पु
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।
५पु ६पु पु ७पु
वनमाली बलिध्वंसी कंसाराति-रधोक्षजः ॥ १६ ॥
पु ८पु पु पु
विश्वम्भरः कैटभजिद् विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।
पु पु
वसुदेव । वसुदेवो-(ऽस्य जनकः स एव) आनकदुन्दुभिः ॥ १७ ॥
पु पु पु पु
बलदेव । बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।
पु पु पु पु
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ १८ ॥
पु ९पु पु १०पु ११पु
नीलाम्बरो रौहिणेयस्-तालाङ्को मुसली हली ।
पु पु पु पु
सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ १९ ॥

१—शार्ङ्गिन्· २—रज· ३—णि· ४—देव· ५—लिन्· ६—सिन्· ७—अधोक्षज· ८—जित्· ९—य· १०—लिन्· ११—हलिन्·

दैत्यारिः, पुण्डरीकाक्षः, गोविन्दः, गरुडध्वजः, पीताम्बरः, अच्युतः, शार्ङ्गी, विश्वक्सेनः, "और भी विश्वक्सेनः" जनार्द्दनः, ॥ १४ ॥ उपेन्द्रः, इन्द्रावरजः, चक्रपाणिः, चतुर्भुजः, पद्मनाभः, "उसी प्रकार पद्मनाभिः", मधुरिपुः, वासुदेवः, "और भी वासुदेवः, और वासुः" त्रिविक्रमः, ॥ १५ ॥ देवकी नन्दनः, "उसी प्रकार दैवकीनन्दनः" शौरिः, "वा सौरिः", श्रीपतिः, पुरुषोत्तमः, वनमाली, बलिध्वंसी, कंसारातिः, अधोक्षजः ॥ १६ ॥ विश्वम्भरः, कैटभजित्, विधुः, श्रीवत्सलाञ्छनः, "और भी श्रीवत्सः, पुराणपुरुषः, यज्ञपुरुषः, नरकान्तकः, जलशायी, विश्वरूपः, मुकुन्दः, मुरमर्द्दनः", ये ४६ विष्णु के नाम हैं, वसुदेवः, आनकदुन्दुभिः, "और भी अनकदुन्दुभिः, और दुन्दुः", ये २ कृष्ण के पिता वसुदेव के नाम हैं, ॥ १७ ॥ बलभद्रः, "उसी प्रकार भद्रबलः, और भद्रबलनः", प्रलम्बघ्नः, बलदेवः, अच्युताग्रजः, रेवतीरमणः, रामः, । कामपालः, हलायुधः ॥ १८ ॥ नीलाम्बरः, रौहिणेयः, तालाङ्कः, मुसली, "और भी मुषली, और मुशली" हली, सङ्कर्षणः, सीरपाणिः, कालिन्दी-भेदनः, बलः, "उसी प्रकार बललः", "ये १७ बलदेव जी के नाम हैं ॥ १९ ॥

	पु पु पु पु पु
कामदेव ।	मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
	पु पु पु पु पु पु
	कन्दर्पो दर्पको-ऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २० ॥
	पु पु पु १पु
	शम्बरारि-र्मनसिजः कुसुमेषु-रनन्यजः ।
	२पु पु पु पु
	पुष्पधन्वा रतिपति-र्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २१ ॥
	पु पु पु पु
अनिरुद्ध ।	ब्रह्मसू-र्विश्वकेतुः (स्याद) ऽनिरुद्ध उषापतिः ।
	स स स स स स
लक्ष्मी ।	लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्री-र्हरिप्रिया ॥ २२ ॥
	स स स स स
	इन्दिरा लोकमाता मा क्षीराब्धितनया रमा ।
	पु
लक्ष्मीपतिका शंख ।	(शङ्खो लक्ष्मीपतेः) पाञ्चजन्यश्
	पुन
उनका चक्र ।	(चक्रं) सुदर्शनः ॥ २३ ॥
	स
उनकी गदा ।	कौमोदकी (गदा)
	पु
उनका खड्ग ।	(खड्गो) नन्दकः
	पु
उनका मणि ।	कौस्तुभो (मणिः) ।
	३पु ४पु पु पु पु
गरुड़ ।	गरुत्मान् गरुडस् तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ॥ २४ ॥
	पु पु पु पु
	नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ।

१—अनन्यज, २—न्वन् ३—त्मन्. ४—रुड़.

मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः । मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्पकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, ॥ २० ॥ शम्वरारिः, "और भी सम्बरारिः, वा संवरारिः," मनसिजः, "उसी प्रकार मनोज्ञः," कुसुमेषुः, अनन्यजः, पुष्पधन्वा, "और भी पुष्पधनुष," रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः, ये १९ काम देव के नाम हैं, ॥ २१ ॥ ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः, "उसी प्रकार ऋश्यकेतुः, वा ऋष्यकेतुः, और रिश्यकेतुः, वा रिष्यकेतुः, और ऋष्यकेतनः," अनिरुद्धः, उषापतिः, "और भी ऊषापतिः", ये ४ अनिरुद्ध के नाम हैं; लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया, ॥ २२ ॥ इन्दिरा, लोकमाता, मा, क्षीराब्धितनया, रमा, ये ११ लक्ष्मी के नाम हैं; लक्ष्मीपति विष्णु के शङ्ख को पाञ्चजन्यः कहते हैं; और उनके चक्र को सुदर्शनः, "वा सुदर्शनं" कहते हैं; ॥ २३ ॥ फिर उनकी गदा कौमोदकी है, "उसी प्रकार कौमोदी, और कौमोदकी" उनका खड्ग, नन्दकः, और मणि कौस्तुभः है, "उनका धनुष शार्ङ्ग है, और उनकी छाती में के लाञ्छन अर्थात् चिह्न को श्रीवत्सः कहते हैं; (एकैकं) गरुत्मान्, गरुड़ः, तार्क्ष्यः, वैनतेयः, खगेश्वरः ॥ २४ ॥ नागान्तकः विष्णुरथः, सुपर्णः, पन्नगाशनः, ये ९ गरुड़ के नाम हैं, ॥

शिव ।

पु पु पु पु १पु पु
शम्भु-रीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ॥ २५ ॥
पु पु पु २पु पु
ईश्वरः सर्व्व ईशानः शङ्करश् चन्द्रशेखरः ।
पु पु पु पु पु
भूतेशः खण्डपरशु-र्गिरीशो गिरिशो मृडः ॥ २६ ॥
पु ३पु ४पु पु
मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ।
पु ५पु पु पु पु
उग्रः कपर्द्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ॥ २७ ॥
पु पु ६पु पु
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस् त्रिलोचनः ।
७पु पु पु पु
कृशानुरेताः सर्व्वज्ञो धूर्ज्जटि-र्नीललोहितः ॥ २८ ॥
पु पु ८पु ९पु पु
हरः स्मरहरो भर्गस् त्र्यम्बकस् त्रिपुरान्तकः ।
पु पु १०पु पु
गङ्गाधरो-ऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ॥ २९ ॥
पु पु पु ११पु पु पु
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू-रुद्र उमापतिः ।

उनकी जटा । पु
कपर्द्दो-(ऽस्य जटा-जूटः) पु न

उनका धनुष । पिनाको-ऽजगवं (धनुः) ॥ ३० ॥

उनके सेवक । पु
प्रमथाः (स्युः पारिषदाः) स स

सप्तमाता । ब्राह्मी (त्याद्या स्तुमातरः) ।

१-शूलिन्. २-ङ्कर. ३-सस्. ४-किन्. ५-र्द्दिन्. ६-क्ष. ७ तस्. ८—भर्ग. ९-अम्ब, १०-सिन्. ११-स्थाणु.

शम्भुः, 'और भी शम्भूः" ईशः, पशुपतिः, शिवः, शूली, महेश्वरः, ॥ २५ ॥ ईश्वरः, सर्व्वः, "उसी प्रकार शर्वः" ईशानः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, भूतेशः, खण्डपरशुः, "उसी प्रकार खण्डपर्शुः" गिरीशः, गिरिशः, मृडः, ॥ २६ ॥ मृत्युञ्जयः, कृत्तिवासाः, "और भी कृतिवासः," पिनाकी, प्रमथाधिपः, उग्रः, कपर्द्दी, श्रीकण्ठः, शितिकण्ठः, कपालभृत्, ॥ २७ ॥ वामदेवः, महादेवः, विरूपाक्षः, त्रिलोचनः, कृशानुरेताः, सर्व्वज्ञः, धूर्ज्जटिः, नीललोहितः, ॥ २८ ॥ हरः, "और भी हीरः" स्मरहरः, भर्गः, "उसी प्रकार भर्ग्यः," त्र्यम्बकः, त्रिपुरान्तकः, गंगाधरः, अन्धकरिपुः, क्रतुध्वंसी, वृषध्वजः, ॥ २९ ॥ व्योमकेशः, भवः, भीमः, स्थाणुः, रुद्रः, उमापतिः; ये ४८ शिव जीके नाम हैं, "(ईशितुं शीलमस्येश्वरः, ईष्टे तच्छीलईशानः,)" शिव जी की जटा के समूह को कपर्दः कहते हैं, और इनके धनुष को अजगवं, "और भी अजकवं, अजगवं, अजगावं, आजकावं, और अजीकवं" कहते हैं, और, उसी को पिनाकः कहते हैं ॥ ३० ॥ इनके पारिषदः अर्थात् सभा में साधु वा रहने वाले प्रमथ हैं, "उसी प्रकार पार्षदः, वा पार्षद्यः, और पारिषद्यः, भी कहते हैं", ब्राह्मी, "और भी ब्रह्माणी" आदि माता हैं, जैसे ब्राह्मी, माहेश्वरी कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, ये ७ माता हैं, "और चर्चिका भी" ब्रह्मा आदि की शक्ति इन नामों से प्रसिद्ध, हैं;

	स स न
सिद्धि-वा ऐश्वर्य्य ।	विभूति-र्भूति-रैश्वर्य्यं (अणिमादिकमष्टधा) ॥ ३१ ॥
	स स स स स १स
पार्व्वती ।	उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवती-श्वरी ।
	स स स स स
	शिवा भवानी रुद्राणी सर्व्वाणी सर्व्वमङ्गला ॥ ३२ ॥
	स स स स स २स
	अपर्णा पार्व्वती दुर्गा मृडानी चण्डिका-म्बिका ।
	३पु पु पु पु
गणेश ।	विनायको विघ्नराज-द्वैमातुर-गणाधिपाः ॥ ३३ ॥
	४पु पु पु पु
	(अप्ये)-कदन्त-हेरम्ब-लम्बोदर-गजाननाः ।
	पु पु ५पु पु
स्वामिकार्तिक ।	कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ॥ ३४ ॥
	पु पु पु पु पु
	पार्व्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानी-रग्निभू-र्गुहः ।
	६पु पु पु पु
	बाहुलेयस् तारकजिद्-विशाखः शिखिवाहनः ॥ ३५ ॥
	पु पु पु पु
	षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ।
	पु ७पु ८पु ९पु पु
इन्द्र ।	इन्द्रो मरुत्वान् मघवा बिडौजाः पाकशासनः ॥ ३६ ॥

१–ई. २ अ–. ३–क. ४ए–. ५–न्मन्. ६–लेय. ७–त्वत्. ८–वन्. ९–जस्.

विभूतिः, भूतिः, ऐश्वर्य्यं, ये ३ ऐश्वर्य्य–वा सिद्धि के नाम हैं, "विभूतिः और भूतिः, ये २ शिवजी के अङ्ग में लगाने के भस्म के भी नाम हैं", और वे अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः, प्राकाम्यं, ईशित्वं, वशित्वं ये ८ सिद्धियां हैं; ॥ ३१ ॥ उमा, कात्यायनी, गौरी, "उसी प्रकार गौरा" काली, "और भी काला", हैमवती, ईश्वरी, "उसी प्रकार ईश्वरा", शिवा, "और भी शिवी", भवानी, रुद्राणी, शर्व्वाणी, "उसी प्रकार सर्व्वाणी" सर्व्वमङ्गला, ॥ ३२ ॥ अपर्णा, पार्व्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, "उसी प्रकार चण्डिः, चण्डी, वा चण्डा", अम्बिका, "और भी अम्बा", "आर्य्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा", ये २१ पार्व्वती के नाम हैं; विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, ॥ ३३ ॥ एकदन्तः, हेरम्बः, लम्बोदरः, गजाननः, ये ८ गणेशजी के नाम हैं; कार्त्तिकेयः, महासेनः, शरजन्मा, षडाननः, ॥ ३४ ॥ पार्व्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानीः, अग्निभूः, गुहः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः, ॥ ३५ ॥ षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः, "उसी प्रकार बाहुकेयः और क्रौञ्चदारणः", ये १७ स्कन्द–अर्थात् स्वामिकार्त्तिक के नाम हैं; इन्द्रः, मरुत्वान्, मघवा, "और भी मघवान्, कोई मघवन् पढते हैं" बिडौजाः, "उसी प्रकार बिडोजाः", पाकशासनः, ॥ ३६ ॥

१पु पु पु पु
वृद्धश्रवास् सुनासीर: पुरुहूत: पुरन्दर: ।
पु पु पु पु पु
जिष्णु लेखर्षभ: शक्र: शतमन्यु-र्दिवस्पति: ॥ ३७ ॥
२पु पु ३पु पु ४पु ५पु
सूत्रामा गोत्रभिद्-वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ।
पु पु पु पु
वास्तोष्पति: सुरपति-र्बलाराति: शचीपति: ॥ ३८ ॥
६पु पु ७पु पु
जम्भभेदी हरिहय: स्वाराण्-नमुचिसूदन: ।
पु ८पु ९पु पु
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस् तुराषाण्-मेघवाहन: ॥ ३९ ॥
पु पु १०पु
आखण्डल: सहस्राक्ष: ऋभुक्षास् ।
(तस्य तु प्रिया) ।

	स स ११स
इन्द्राणी ।	पुलोमजा शची-न्द्राणी
	१२स
इन्द्रकीराजधानी।	(नगरी त्व्)—मरावती ॥ ४० ॥
	१३पु
इसका घोड़ा ।	(हय:) उच्चै: श्रवास्
	पु
इसका सारथी ।	(सूतो) मातलि- न
इसका बाग ।	र्नन्दनं (वनं) ।
	पु
इसका स्थान ।	(स्यात् प्रासादो) वैजयन्तो
	पु पु
इसका पुत्र ।	जयन्त: पाकशासनि: ॥ ४१ ॥

१—वस्. २—मन्. ३—वज्रिन्. ४—हन्. ५—वृषन्. ६—दिन्. ७—स्वाराज्. ८—वन. ९—साह. १०—क्षिन्. ११ ई—. १२ अ—. १३—वस्.

वृद्धश्रवा:, सुनासीर:, "उसी प्रकार शुनाशीर:", और शुनासीर:, "पुरुहूत:, पुरन्दर:, जिष्णु:, लेखर्षभ:, शक्र:, शतमन्यु:, दिवस्पति:, ॥ ३७ ॥ सूत्रामा, "और भी सुत्रामा", गोत्रभिद्, वज्री, वासव:. वृत्रहा, वृषा, वास्तोष्पति:, "वाजे वास्तोष्पति: पढते हैं", सुरपति:, बलाराति:, शचीपति:, ॥ ३८ ॥ जम्भभेदी, हरिहय:, स्वाराट्, नमुचिसूदन:, संक्रन्दन:, दुश्च्यवन:, तुराषाट्, मेघवाहन:, ॥ ३९ ॥ आखण्डल:, सहस्राक्ष:, ये ३५ इन्द्र के नाम हैं; "इनमें स्वाराट् जकारान्त—और तुराषाट् हकारान्त है, ऋभुक्षानान्त पथिन् के तुल्य है", पुलोमजा, शची, "उसी प्रकार शचि:, वा सचि:, और सची", इन्द्राणी, ये ३ इन्द्र की प्रिया—अर्थात् इन्द्राणी के नाम हैं; इसी रीति इन्द्र की नगरी का अमरावती, "वा अमरा" नाम है, ॥ ४० ॥ उसका घोड़ा उच्चै:श्रवा: है, उसके सारथी का मातलि: नाम है, उसके उपवन-वा बगीचा का नन्दनं नाम है; और उसके प्रासाद अर्थात् गृह विशेष को वैजयन्त: कहते हैं; जयन्त:, पाकशासनि:, ये २ इन्द्र के पुत्र के नाम हैं, ॥ ४१ ॥

	पु १पु २पु ३पु
इन्द्र का हाथी।	ऐरावतो-ऽभ्रमातङ्गै-रावणा-ऽभ्रमुवल्लभाः ।
	स पुन पुन न पु
इसका वज्र।	ह्रादिनी वज्रम-(-ऽस्त्री स्यात्) कुलिशं भिदुरं पविः ॥ ४२ ॥
	पु पु पु पु ४पु स
	शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलि-रशनिर् (द्वयोः) ।
	न पुन
इसका विमान।	व्योमयानं विमानो-(ऽस्त्री)
	५पु
देवऋषि।	(नारदाद्याः) सुरर्षयः ॥ ४३ ॥
	६स स
देवसभा।	(स्यात्) सुधर्म्मा देवसभा
	न ७न स
अमृत।	पीयूष-ममृतं सुधा ।
	स स स स
आकाशगंगा।	मन्दाकिनी वियद्गंगा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ॥ ४४ ॥
	पु पु ८पु पु पु
सुमेरु।	मेरुः सुमेरु-र्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ।
	पु पु
देववृक्ष वा कल्पवृक्ष।	(पञ्चैते देवतरवो) मन्दारः पारिजातकः ॥ ४५ ॥
	पु ९पु पुन
	सन्तानः कल्पवृक्षश्-(च पुंसि वा) हरिचन्दनम् ।

---

१ अ—· २ ऐ—· ३ अ—· ४ अ—· ५—र्षि· ६—र्मन्· ७ अ—· ८—द्रि· ९—वृक्ष·

ऐरावतः, अभ्रमातङ्गः, ऐरावणः, अभ्रमुवल्लभः, ये ४ इन्द्र के हाथी के नाम हैं; ह्रादिनी, वज्रं, कुलिशं, "उसी प्रकार कुलीशं", भिदुरं, "और भी भिदिरं, और भिदुः", पविः, ॥ ४२ ॥ शतकोटिः, स्वरुः, "उसी प्रकार स्वरुः (स्) सान्त भी है", शम्बः, "और सम्बः भी", दम्भोलिः, अशनिः, "और भी अशनी, और वज्राशनिः", ये १० वज्र के नाम हैं, इन में ह्रादिनी स्त्री, वज्रं अस्त्री अर्थात् पुं· नपुंसक लिङ्ग है, पवि आदि पुल्लिङ्ग हैं, और अशनिः शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग है; व्योमयानं, विमानः, ये २ विमान के नाम हैं, इन् दोनों में विमान शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग है; नारदः, और देवलः, आदि सुर ऋषि हैं; ॥ ४३ ॥ सुधर्म्मा, देवसभा, ये २ देवसभा के नाम हैं; पीयूषं, "उसी प्रकार पैयूषं, और पेयूषं भी", अमृतं, सुधा, ये ३ अमृत के नाम हैं; मन्दाकिनी, वियद्गंगा, स्वर्णदी, "उसी प्रकार स्वर्नदी", सुरदीर्घिका, ये ४ आकाशगङ्गा के नाम हैं; ॥ ४४ ॥ मेरुः, सुमेरुः, हेमाद्रिः, रत्नसानुः, सुरालयः, ये ५ सुमेरु पर्व्वत के नाम हैं; मन्दारः, पारिजातकः, ॥ ४५ ॥ सन्तानः, कल्पवृक्षः, हरिचन्दनं, ये ५ देववृक्ष के नाम हैं, इनमें हरिचन्दनं यह शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग है, ॥

सनत्कुमार ।	पु पु सनत्कुमारो वैधात्रः
स्वर्ग-वैद्य ।	पु १पु स्ववैद्या-वश्विनीसुतौ ॥ ४६ ॥
	पु २पु पु ३पु नासत्या-वश्विनौ-दस्रा-वाश्विनेयौ (च तावुभौ) ।
अप्सरा ।	४स स (स्त्रियां वहुष्व)-प्सरसः स्ववेश्या (उर्व्वशीमुखाः) ॥४७॥
गन्धर्व्व ।	पु ५पु ६पु (हाहा हूहूश्-चैवमाद्या) गन्धर्वास्-(त्रिदिवौकसाम्) ।
अग्नि ।	पु पु पु पु पु अग्नि-र्वैश्वानरो वह्नि-र्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ॥ ४८ ॥
	पु पु ७पु ८पु कृपीटयोनि-र्ज्वलनो जातवेदास्-तनूनपात् ।
	९पु १०पु ११पु पु पु वर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केशः उषर्वुधः ॥ ४९ ॥

१ श्र——२. श्राश्विन. ३ श्रा—. ४ श्रप्सरस्. ५—हू. ६—र्व्व. ७—दस्. ८—पाद्. वा पात्. ९ वर्हि वा वर्हिस्. १०—न्. ११—र्त्मन्.

सनत्कुमारः, "उसी प्रकार सनात्कुमारः, वा सत्कुमारः", वैधात्रः, "श्रोर भी वैधातकिः", ये २ सनकादिक के नाम हैं; स्ववैद्यौ, श्रश्विनीसुतौ, ॥ ४६ ॥ नासत्यौ, "उसी प्रकार नासिक्यौ", श्रश्विनौ, दस्रौ, श्राश्विनेयौ, ये ६ अश्वनी कुमार के नाम हैं; वे दोनों यमल हैं। अर्थात् एक साथ उत्पन्न भये हैं इसी से ये द्विवचनान्त हैं; उर्व्वशी, श्रादि अर्थात् उर्व्वशी, "उसी प्रकार उर्वसी, श्रोर ऊर्व्वसी", मेनका, रम्भा, ये अप्सरसः स्ववेश्या, "उसी प्रकार स्ववेष्या" कही जाती हैं; ("घृताची मेनका रम्भा उर्व्वशी च तिलोत्तमा, सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्ते ऽप्सरसोवुधैः)" यहां अप्सरस शब्द एक व्यक्ति में भी वहुवचनान्त श्रोर स्त्रीलिङ्ग ही रहता है, ॥ ४७ ॥ हाहाः, हूहूः इत्यादि देवताओं के गन्धर्व्वाः अर्थात् गवैये कहलाते हैं, श्रादि पद से तुम्बुरु, विश्वावसु, चित्ररथ, श्रादि जानना चाहिये, "हाहाः सान्त भी है श्रोर हाहा यह श्रादि में ह्रस्व, हूहू यह उभय ह्रस्व अर्थात् हुहु भी है, जैसे हहाः, श्रोर हाहा, (स), हाहाः, हहाः, श्रोर भी हुहुः, श्रोर हाहा हूहूः, श्रोर हूहूः", गीत के मधुरता से सम्पन्न श्रोर विख्यात हाहा हूहू ये हैं, यह व्यास के प्रयोग से ज्ञात होता है; अग्निः, वैश्वानरः, "श्रोर भी विश्वानराः" वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, ॥ ४८ ॥ कृपीटयोनिः, ज्वलनः, जातवेदाः, तनूनपात्, "श्रोर तनूनपाः, (पा)", वर्हिः, शुष्मा, "वा शुष्मन्, श्रोर वर्हिः शुष्मन्, श्रोर भी शुष्मः (ष्म)", कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केशः, उषर्वुधः, ॥ ४९ ॥

	पु पु पु पु पु आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावको-ऽनलः । पु १पु २पु ३पु रोहिताश्वो वायुसखः शिखावाना- शुशुक्षणिः ॥ ५० ॥ ४पु ५पु पु पु हिरण्यरेता हुतभुग् दहनो हव्यवाहनः । ६पु ७पु ८पु पु पु सप्तार्चि-र्दमुनाः शुक्रश् चित्रभानु-र्विभावसुः ॥ ५१ ॥ पु ६पु शुचि-रप्पित्तम्
वड़वानल ।	१०पु पु पु औौर्व्वस् (तु) वाडवो वडवानलः ।
अग्निकी ज्वाला ।	पुस पुस ११स स स्र (वह्ने-र्द्वयो)-र्ज्वाल कीला वर्चि-र्हेतिश्-शिखा (स्त्रियाम्) ५२॥
अग्नि के टुकड़े ।	पुसन पु (त्रिषु) स्फुलिङ्गो-ऽग्निकणः
जलना ।	पु पु सन्तापः सञ्ज्वरः (समौ) ।
यमराज ।	पु पु १२पु १३पु धर्म्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ॥ ५३ ॥ पु १४पु पु १५पु पु कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्-यमः । पु पु पु पु पु कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतो-ऽन्तकः ॥ ५४ ॥

१-खि. वा-ख. २-वत्. ३ आ-. ४-तस्. ५-भुज्. ६-स्. वा-र्चिस्. ७-नस्. ८-क्र. ९ अ-. १०-र्व. ११ अर्चि. १२-र्तिन्. १३-राज्. १४-तृ. १५-राज्.

आश्रयाशः, "उसी प्रकार आशयाशः," बृहद्भानुः, कृशानुः, "और भी कृपाणुः," पावकः, अनलः, रोहिताश्वः, "और भी लोहिताश्वः." वायुसखः, शिखावान्, आशुशुक्षणिः ॥ ५०॥ हिरण्यरेताः, हुतभुक्, दहनः, हव्यवाहनः, सप्तार्चिः, दमुनाः, "और भी दमूनाः," शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, ॥ ५१ ॥ शुचिः, अप्पितं, ये ३४ अग्नि के नाम हैं; और्व्वः, "उर्व्वः, बहु व. उर्व्वाः," वाडवः, वड़वानलः, ये ३ वड़वानल अग्नि के नाम हैं, जो समुद्र में रहता है; ज्वालः, "स्त्री ज्वाला," कीलः, "स्त्री कीला," अर्चिः, हेतिः, शिखा, ये ५ अग्नि की ज्वाला के नाम हैं; ज्वाल-कील ये दोनों शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में हैं, अर्चिष शब्द स्त्री और नपुंसकलिङ्ग में है, हेति-शिखाये २ स्त्रीलिङ्ग हैं; "और इस ज्वाला को अग्नि की जिह्वा कहते हैं, जिसके काली कराली मनोजवा सुलोहिता सुधुम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वदाया आदि ७ नाम हैं," ॥ ५२ ॥ स्फुलिङ्गः, "स्त्रीस्फुलिङ्गा स्फुलिङ्गं," अग्निकणः, ये २ अग्नि के कनिका के नाम हैं, और स्फुलिङ्ग शब्द तीनों लिङ्ग है; सन्तापः, सञ्ज्वरः, ये २ अग्नि के तेज के नाम हैं; धर्म्मराजः, पितृपतिः, समवर्त्ती, परेतराट्, ॥ ५३ ॥ कृतान्तः, यमुनाभ्राता, शमनः, यमराट्, यमः, कालः, दण्डधरः, "उसी प्रकार दण्डधारः", श्राद्धदेवः, वैवस्वतः, अन्तकः, ये १४ यमराज के नाम हैं; ॥ ५४ ॥

राक्षस ।	पु पु १पु पु पु पु राक्षसः कौणपः क्रव्यात् क्रव्यादो-ऽस्रप आशरः । पु पु पु पु रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ॥ ५५ ॥ पु पु पु न २पु यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातु-रक्षसी ।
वरुण ।	३पु पु ४पु पु ५पु प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपति-रप्पतिः ॥ ५६ ॥
पवन ।	पु पु पु ६पु पु श्वसनः स्पर्शनो वायु-र्मातरिश्वा सदागतिः । पु पु पु ७पु ८पु पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहा-ऽनिला-शुगाः ॥ ५७ ॥ पु पु ९पु पु पु समीर-मारुत-मरुज्-जगत्प्राण-समीरणाः । १०पु पु पु पु पु नभस्वद्-वात-पवन-पवमान-प्रभञ्जनाः ॥ ५८ ॥
शरीरस्थ पवन ।	पु पु ११पु १२पु पु प्राणो-ऽपानः समानश्-(चो) दान-व्यानौ (च वायवः । शरीरस्था इमे)
शीघ्रता वा वेग ।	१न ३न पु पु रंहस्-तरसी (तु) रयः स्यदः ॥ ५९ ॥

१ क्रव्याद्. २ रक्षस्. ३-तस्. ४ पाशिन्. ५ अ-. ६-स्वन्. ७ अ-. ८ आ-. ९-त्. १०-त्. ११-न. १२ उ-. १३ तरस्.

राक्षसः. कौणपः, "कोणपः भी", क्रव्यात्, क्रव्यादः अस्रपः, "उसी प्रकार अश्रपः", आशरः, "वा आशिरः" (आश्रणाति हिनस्तीत्याशरः हिंसा करनेवाला आङ् पूर्वक शृधातु से अच प्रत्यय भया)" रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः, कर्बुरः, "उसी प्रकार कर्बूरः, और कर्वरः", निकषात्मजः ॥ ५५ ॥ यातुधानः, "वा जातुधानः", पुण्यजनः, नैऋतः, "और भी नैर्ऋतिः" यातु, रक्षः, ये १५ राक्षसों के नाम हैं, इन्मे यातु-रक्षस् ये २ नपुंसकलिङ्ग हैं; प्रचेताः, वरुणः, "उसी प्रकार वरणः", पाशी, यादसांपतिः, "और भी अपांपतिः", अप्पतिः, ये ५ वरुण के नाम हैं; ॥ ५६ ॥ श्वसनः, स्पर्शनः, वायुः, मातरिश्वा, सदागतिः, पृषदश्वः, "वा पृषताश्वः," गन्धवहः, गन्धवाहः, अनिलः, आशुगः; ॥ ५७ ॥ समीरः, मारुतः, "उसी प्रकार मरुतः", मरुत्, जगत्प्राणः, "और भी जगत्, द्वि॰ व॰ जगतो, वा जगन्तो" समीरणः, नभस्वान्, वातः, "उसी प्रकार वातिः", पवनः, पवमानः, प्रभंजनः, ये २० पवन के नाम हैं; "प्रकम्पनः, महावातः, ये २ महापवन-अर्थात् आंधी के नाम हैं, और वही वृष्टि सहित झंझावातः भी कहलाता है" ॥ ५८ ॥ प्राणः, अपानः, समानः, उदानः, व्यानः, ये ५ शरीर में रहने वाले पवन के भेद हैं, (एकैकं) रंहः, "और भी रंघः", तरः, रयः, स्यदः, ॥ ५९ ॥

	१पु जवो-
शीघ्र	न न न न २न न (ऽथ) शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्र-मरं द्रुतम् । न न न ३न ४न सत्वरं चपलं तूर्ण-मविलम्बित-माशु (च) ॥ ६० ॥
नित्य वा लगातार	न न ५न न ६न ७न सतते-ऽनारता-ऽश्रान्त-सन्तता-ऽविरता-ऽनिशम् । न ८न ६न नित्या-ऽनवरता-ऽजस्रम्- (ऽप्य-)
बहुत ।	पु पु (ऽथा)-ऽतिशयो भरः ॥ ६१ ॥ न न १०न ११न १२न न अतिवेल-भृशा-ऽत्यर्था ऽतिमात्रो-द्गाढ-निर्भरम् । १३न १४न १५न न न १६न तीव्रै-कान्त-नितान्तानि गाढ-बाढ-दृढानि (च) ॥ ६२ ॥ (क्लीबे शीघ्रा-द्यसत्त्वेस्यात् त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत्) ।

१ जव. २ अर. ३ अ—. ४ आ—. ५ अ—. ६ अ—. ७ अ—. ८ अ—. ६ अ—. १० अ—. ११ अ—. १२ उ—. १३ तीव्र. १४ ए—. १५—न्त. १६ दृढं.

जवः, "उसी प्रकार जवनः" ये ५ शीघ्रता के नाम हैं; शीघ्रं, "पुं॰ शीघ्रः, स्त्री॰ शीघ्रा, न॰ शीघ्रं", त्वरितं, लघु, क्षिप्रं, अरं, द्रुतं, सत्वरं, चपलं, तूर्णं, अविलम्बितं, आशु, ये ११ शीघ्र के नाम हैं, "रंहस आदि वेग सहित के कहने वाले नपुंसकलिङ्ग हैं, और शीघ्रं आदि तो धर्मवाचक ही हैं, इसीलिये शीघ्रं पचति ऐसा प्रयोग होता है, और जवं पचति ऐसा प्रयोग नहीं होता, सच मुच वेगाख्य गुण वाचक रंहः आदि हैं, और शीघ्र आदि तो काल के अल्पता में हैं; ॥ ६० ॥ सततं, अनारतं, अश्रान्तं, सन्ततं, अविरतं, अनिशं, नित्यं, अनवरतं, अजस्रं, ये ६ नित्य के नाम हैं; क्रियान्तर से अव्यधान में सन्ततं, है, और पुनः पुनः में अतिशय शब्द है, यह दोनों में भेद है, अतिशयः, भरः, ॥ ६१ ॥ अति वेलं, भृशं, अत्यर्थं, अतिमात्रं, उद्गाढं, निर्भरं, तीव्रं, एकान्तं, नितान्तं, गाढं, बाढं, दृढं, ये १४ अतिशय अर्थात् वारंवार के नाम हैं, (शीघ्र और त्वरित से लेकर दृढ़ शब्द पर्य्यंत नपुंसक लिङ्ग जो कहे हैं सो तो असत्त्वे अर्थात् द्रव्य वाचकत्त्व के अभाव ही में होते हैं यह जानना चाहिये) जैसे शीघ्रं कृतवान्, भृशं मूर्खः, भृशं याति, ॥ ६२ ॥ उन शीघ्र आदि शब्दों में से जो सत्त्वगामी है अर्थात् द्रव्यवाची है वह तीनों लिङ्ग है अर्थात् उस के द्रव्य का जो लिङ्ग होता है उस का भी वही लिङ्ग है, जैसे शीघ्रा धेनुः, शीघ्रो वृषः. शीघ्रं गमनं; अतिशय और भर आदि को शीघ्रगामित्त्व नहीं है, इसीलिये ये नित्य पुल्लिङ्ग हैं, जहां भेद्यगामी यह पाठ है वहां विशेष्य गामी यह अर्थ जानना चाहिये, ॥

कुवेर ।	१पु पु २पु पु कुवेरस् त्र्यम्बकसखो यक्षराड्-गुह्यकेश्वरः ॥ ६३ ॥ ३पु पु पु पु मनुष्यधर्म्मा धनदो राजराजो धनाधिपः । पु पु पु पु किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ६४ ॥ ४पु ५पु ६पु पु ७पु यक्षै-कपिङ्गै-लविल-श्रीद-पुण्यजनेश्वराः ।
उसका बगीचा ।	न (अस्योद्यानं) चैत्ररथं
उसका पुत्र ।	पु (पुत्रस्तु) नलकूवरः ॥ ६५ ॥
उसका स्थान ।	पु कैलासः (स्थानं)
उसकीराजधानी।	स अलका (पूर्)
उसका विमान।	पु न (विमानन्तु) पुष्पकम् ।
उसके दूत ।	पु ८पु पु पु (स्यात्) किन्नरः किम्पुरुषस् तुरङ्गवदनो मयुः ॥ ६६ ॥
खजाना ।	पु पु निधि-(र्ना) शेवधि-
खजाने का भेद ।	न न (भेदाः पद्मशंखादयो निधेः) ।

॥ इति स्वर्गवर्गः ॥

१—र. २—राज्. ३—र्मन्. ४—यक्ष. ५ ए—. ६ ए—. ७—र. ८—प.

कुवेरः, त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, गुह्यकेश्वरः, ॥ ६३ ॥ मनुष्यधर्म्मा, धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किन्नरेश, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, ॥ ६४ ॥ यक्षः, "और भी यक्षेश्वरः," एकपिङ्गः, "उसी प्रकार एक पिङ्गलः", ऐलविलः, "और भी ऐडविडः, वा ऐलविलः, और ऐडविडः", श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः, ये १७ कुवेर के नाम हैं; अस्य, इसका प्रत्येक में सम्बन्ध है, जैसे इस कुवेर केबाग का चैत्ररथं नाम है, इस के पुत्र का नलकूवरः "और मणिग्रीवः," नाम है; ॥ ६५ ॥ इस के स्थान का कैलासः नाम है, इसकी राजधानी का अलका नाम है, इस के विमान को पुष्पकं कहते हैं, "यह पुष्पक शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग है" किन्नरः, किम्पुरुषः, तुरङ्गवदनः, मयुः, ये ४ किन्नर मात्र के नाम हैं, "जो कुवेर के दूत भी कहलाते हैं", ॥ ६६ ॥ निधिः, शेवधिः, "और भी सेवधिः", ये २ सामान्य निधि अर्थात् खजाना के नाम हैं, और ये दोनों पुलिङ्ग हैं, ना शब्द का कौवे की आंख की पुतली के समान दोनों में सम्बन्ध है, पद्म—शंख—आदि निधियों के भेद हैं, आदि शब्द से मकर—कच्छप आदि ग्रहण किये जाते हैं, जैसे "(महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपौ, मुकुन्द—कुन्द—नीला—श्च खर्वश्च निधयो नव)" (एकैकम्) ॥

॥ इति स्वर्गवर्गः ॥

॥ अथ द्वितीयवर्गः ॥

आकाश।	स स १न २न न ३न द्यो-दिवौ (द्वे स्त्रियाम्)-ऽभ्रं व्योम-पुष्कर-मम्बरम्। ४न न न न ५न न नभो-ऽन्तरिक्षं गगन-मनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ ६न न ७पुन ८पुन वियद्-विष्णुपदं (वा तु पुंस्या-) काश-विहायसी। "विहायसो-ऽपिनाको-ऽपि द्यु-रपिस्यात्तदव्ययम्" ॥
	इति व्योमवर्गः।
दिशा।	९स १०स स ११स १२स दिशस् (तु) ककुभः काष्ठा आशाश् (च) हरितश् (चताः) २
दिशा के भेद।	१३स १४स १५स प्राच्य-ऽवाची-प्रतीच्यस् (ताः पूर्व्व-दक्षिण-पश्चिमाः)। स (उत्तरा दिग्) उदीची (स्याद्)
दिशा की वस्तु।	पुसन दिश्यं (तु त्रिषु दिग् भवे) ॥ ३ ॥
दिशा के स्वामी।	पु पु पु पु पु पु इन्द्रो वह्निः पितृपति-र्नैर्ऋतो वरुणो मरुत्। पु पु कुबेर ईशः (पतयः पूर्व्वादीनां दिशा-ङ्क्रमात्) ॥ ४ ॥

---

१ अ—. २ व्योमन्. ३ अं—. ४ नभस्. ५—र्त्मन्. ६—तु. ७ आकाश. ८—यस्. ९ दिश्. १० ककुभ्. ११ आशा. १२ हरित्. १३—ची. १४ अ—. १५—ची.

द्यौः, द्योः अभ्रं, "वा अब्भ्रं" व्योम, पुष्करं, अम्बरं, नभः, "उसी प्रकार नभं", अन्तरिक्षं, "वा अन्तरीक्षं", गगनं, "वा गगणं", अनन्तं, सुरवर्त्म, खम्, ॥ १ ॥ वियत्, विष्णुपदं, आकाशं, "पुं॰ विहायाः, नपुं॰ विहायः, और भी विहायसः नाकः, द्युः", ये १९ आकाश के नाम हैं, इन्में द्यो—और दिव ये २ शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं, आकाश और विहायस ये २ पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग हैं, विहायस और नाक ये २ पुल्लिङ्ग हैं; द्युः, अव्यय है, शेष नपुंसक हैं, ॥ २ ॥ इति व्योमवर्गः।

एक व॰ दिक्, बहु व॰ दिशः, एक व॰ दिशा, बहु व॰ दिशाः, ककुभः, "एक व॰ ककुप्", स्त्री॰ ककुभाः, काष्ठाः, आशाः, हरितः, ये ५ दिशा के नाम हैं ॥ २ ॥ वे पूर्व्व—दक्षिण—पश्चिम—इस् क्रम से प्राची—अवाची—प्रतीची—हैं, जैसे पूर्व्व दिशा प्राची, दक्षिण दिशा अवाची, "वा अपाची", और पश्चिम की दिशा प्रतीची, कहलाती है, (एकैकं) जो उत्तर की दिशा है उसे उदीची कहते हैं, (एकं), दिश्यं, यह १ दिशा में होने वाले पदार्थ का नाम है और तीनों लिङ्ग में होता है, जैसे दिश्यः हस्ती, दिश्या हस्तिनी, दिश्यं फलं, आदि, ॥ ३ ॥ इन्द्र आदि देवता पूर्व्व आदि दिशाओं के स्वामी हैं (एकैकं) जैसे पूर्व्व दिशा का स्वामी इन्द्र है, १ अग्नि कोण का पति अग्नि है २, दक्षिण दिशा का स्वामी पितृपति है ३ नैरित्य कोण का स्वामी नैर्ऋत है ४, पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण है ५, वायव्य कोण का स्वामी मरुत है ६, उत्तर दिशा का कुबेर है ७, ईशान कोण का स्वामी ईश है ८, ॥ ४ ॥

	पु पु पु पु १पु
दिग्गज ।	ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदो-ऽञ्जनः ।
	पु पु २पु
	पुष्पदन्तः सार्व्वभौमः सुप्रतीकश् (च दिग्गजाः) ॥ ५ ॥
	स स स ३स
उनकी स्त्रियां ।	(करिण्यो)-ऽभ्रमु-कपिला-पिङ्गला-ऽनुपमाः (क्रमात्)
	स स स स
	ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती (चा)-ऽङ्गना (चा)-ऽञ्जनावती ॥ ६ ॥
	न स
दिशों का मध्य वा कोन ।	(क्लीबाव्ययन्त्व)-ऽपदिशं (दिशो-र्म्मध्ये) विदिक् (स्त्रियाम्) ।
	न न
मध्य-वा बीच ।	अभ्यन्तरं (त्व)-ऽन्तरालं
	पुन पुन
घेरा वा मण्डल ।	चक्रवालं (तु) मण्डलम् ॥ ७ ॥
	न पु पु पु पु
मेघ वा बादर ।	अभ्रं मेघो वरिवाहः स्तनयित्नु-र्बलाहकः ।
	पु ४पु ५पु पु पु
	धाराधरो जलधरस् तडित्वान् वारिदो-ऽम्बुभृत् ॥ ८ ॥
	पु पु पु ६पु ७पु
	घन-जीमूत-मुदिर-जलमुग्-धूमयोनयः ।
	स स
मेघपंक्ति ।	कादम्बिनी मेघमाला
	पुसन
उनकी वस्तु ।	(त्रिषु मेघ भवे)-ऽभ्रियम् ॥ ९ ॥

१ अञ्जन. २-क. ३ अ-. ४-धर. ५-त्वत्. ६-मुक्. ७-नि.

ऐरावत आदि ८ दिग्गज क्रम से पूर्व आदि दिशाओं के धारण करने वाले हस्ती हैं, जैसे पूर्व्व दिशा का ऐरावत् १ अग्नि का पुण्डरीक २ दक्षिण का वामन ३ नैरित्य का कुमुद ४ पश्चिम का अञ्जन ५ वायव्य का पुष्पदन्त ६ उत्तर का सार्व्व भौम ७ ईशान का सुप्रतीक ये ८ क्रम से दिग्गजों के नाम हैं; ॥ ५ ॥ और क्रम से इन की स्त्रिया ये हैं, जिन के पू० अभ्रमुः १ "उसी प्रकार अभ्रमुः", अ० कपिला २ द० पिंगला ३ नै० अनुपमा ४, प० ताम्रकर्णी ५, वा० शुभ्रदन्ती "और भी शुभदन्ती" ६, उ० अंगना, "और भी अङ्गदा" ई० अञ्जनावती ८, ये क्रम से इनके नाम हैं; (एकैकं) ॥ ६ ॥ अपदिशं, विदिक्, "उसी प्रकार प्रदिक्," ये २ दिशों के मध्य भाग अर्थात् कोन के नाम हैं, इन्में भी अपदिशं क्लीव-और अव्यय है, विदिक् स्त्री लिङ्ग है; अभ्यन्तरं, अन्तरालं, ये २ मध्य में अवकाश अर्थात् बीच के नाम हैं, चक्रवालं, "वा चक्रवाडं" मण्डलं, ये २ मण्डलाकार-अर्थात् घेर के नाम हैं, ॥ ७ ॥ अभ्रं "वा अब्भ्रं", मेघः, वारिवाहः, स्तनयित्नुः, वलाहकः, धाराधरः, जलधरः, तडित्वान्, वारिदः, "और भी वारिधरः", अम्बुभृत्, ॥ ८ ॥ घनः, जीमूतः, मुदिरः, जलमुक्, धूमयोनिः, ये १५ मेघ अर्थात् बादल के नाम हैं, धूमयोनिः यह १ धूम के समूह का भी नाम है; कादम्बिनी, मेघमाला, ये २ मेघमाला अर्थात् मेघपंक्ति के नाम हैं, अभ्रियः यह १ मेघ में उत्पन्न वा होने वाली वस्तु का नाम है, और यह तीनों लिङ्ग है, जैसे अभ्रियः आसारः, अभ्रिया आपः, अभ्रियं, जलम्, आदि ॥ ९ ॥

	न न न १न
मेघ का गर्जन ।	स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसिता-(दि च) ।
	स स २स ३स स
बिजुली ।	शंपा-शतहृदा-ह्रादिन्यै-रावत्यः क्षणप्रभा ॥ १० ॥
	स स स स स
	तडित् सौदामिनी विद्युत् चञ्चला चपला-(ऽपि च) ।
	पु पु
वज्र वा बिजुली का गर्जन ।	स्फूर्जथु-(र्वज्रनिर्घोषो)
	पु ४पु
मेघ की ज्योति ।	मेघज्योति-रिरंमदः ॥ ११ ॥
	न ५न
इन्द्र धनुष ।	इन्द्रायुधं शक्रधनुस्
	न
	(तदेव ऋजु) रोहितम् ।
	स न
वर्षा ।	वृष्टि-र्वर्षं
	पु ६पु
झूरा ।	(तद्विघाते-)-ऽवग्राहा-ऽवग्रहो (समौ) ॥ १२ ॥
	पु पु
मेघधारा ।	धारासंपात आसारः
	पु
जलकण वा फुहारा	शीकरो-(ऽम्बुकणाः स्मृताः) ।

१–त. २–नी. ३ ऐ–ती. ४ इ–. ५–स्. वा–नुप्. ६ अ–.

स्तनितं, गर्जितं, मेघनिर्घोषं, रसितं, आदि पद से ध्वनितं, आदिं, ये ४ मेघ के गर्जने के नाम हैं; शंपा, "और शम्बा," शतहृदा, ह्रादिनी, ऐरावती, बहु व॰ ऐरावत्यः, क्षणप्रभा, ॥ १० ॥ तडित्, सौदामिनी, "उसी प्रकार सौदामनी, और भी सौदाम्नी," विद्युत्, चञ्चला, चपला, ये १० बिजुली के नाम हैं; स्फूर्जथुः, "और भी स्फुर्जथुः, और विस्फूर्जथुः, वा विस्फुर्जथुः," वज्रनिर्घोषः, "वा वज्रनिस्पेषः," ये २ वज्र के बड़े गर्जन के नाम हैं; मेघज्योतिः, इरंमदः, ये २ मेघ की ज्योति के नाम हैं; ॥ ११ ॥ इन्द्रायुधं, शक्रधनुः, वही जब सीधा हो तब रोहितं है, ये ३ इन्द्र के धनुष के नाम हैं, जब मेघ के समय जो धनुष के आकार कई रंग का दिखलाई देता है उसके नाम हैं; वृष्टिः, वर्षं, ये २ वर्षा के नाम हैं; "और उसी प्रकार वर्षणं भी," अवग्राहः, अवग्रहः, ये २ वर्षा के न होने अर्थात् झूरा के नाम हैं; ॥ १२ ॥ धारासंपातः, आसारः, ये २ मेघधारा के निरन्तर गिरने के नाम हैं, शीकरः, "वा सीकरः," यह १ पानी के अति छोटे बून्दो–अर्थात् फुहारे का नाम है; ॥

	१पु पुस
पत्थल वा ओला।	वर्षोपलस् (तु) करका
	न
दुर्दिन।	(मेघच्छन्नेऽह्नि) दुर्दिनम् ॥ १३ ॥
	स स पु २न
ढांपना।	अन्तर्द्धा व्यवधा (पुंसि त्व)-ऽन्तर्द्धि-रपवारणम्।
	न न न ३न
	अपिधान-तिरोधान-पिधाना-च्छादनानि (च) ॥ १४ ॥
	४पु ५पु पु पु पु
चन्द्रमा।	हिमांशुश् चन्द्रमाश् चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः।
	पु पु पु ६पु पु
	विधुः सुधांशुश् शुभ्रांशु रोषधीशो निशापतिः ॥ १५ ॥
	पु पु पु पु पु पु
	अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौ-मृगाङ्कः कलानिधिः।
	पु पु पु पु
	द्विजराजश् शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥ १६ ॥
	स
कला।	कला (तु षोड़शो भागो)
	पुन पुसन
बिम्ब।	बिम्बो (ऽस्त्री) मण्डलं (त्रिषु)।
	न पुन पुन पु
हिस्सा।	भित्तं शकल-खण्डे (वा पुंस्य)-ऽर्द्धो-
	न
आधा।	ऽर्द्धं (समेंऽशके) ॥ १७ ॥

१—ल. २ अ—. ३ आ—न. ४—शु. ५—मस्. ६ ओ—.

वर्षोपलः, करका, "उसी प्रकार करकः" ये २ जब प्रथम वृष्टि में मेघ का जल कठिन होकर पत्थल के तुल्य गिरता है उसको अर्थात् ओला को कहते हैं; दुर्दिनं, यह १ मेघ से ढंके दिन का नाम है, और रात्रि का भी उपलक्षक है, ॥ १३ ॥ अन्तर्द्धा, व्यवधा, अन्तर्द्धिः, अपवारणं, अपिधानं, तिरोधानं, पिधानं, आच्छादनं, "और भी छादनं, और छदनं भी", ये ८ आच्छादन के अर्थात् ढापने के नाम हैं; इनमें अन्तर्द्धा, और व्यवधा, ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं, अन्तर्द्धिः पुल्लिङ्ग है; ॥ १४ ॥ हिमांशुः, चन्द्रमाः, "उसी प्रकार चन्द्रमस्" चन्द्रः, "और भी चन्दः" इन्दुः, कुमुदबान्धवः, "उसी प्रकार कुमुदबन्धुः", विधुः, सुधांशुः, शुभ्रांशुः, ओषधीशः, निशापतिः, ॥ १५ ॥ अब्जः, जैवातृकः, सोमः, "और भी सोमा (न्)" ग्लौः, मृगाङ्कः, कलानिधिः, द्विजराजः, शशधरः, "उसी प्रकार शशाङ्कः, शशलाञ्छनः, शशी (न्)," नक्षत्रेशः, क्षपाकरः, ये २० चन्द्रमा के नाम हैं, ॥ १६ ॥ चन्द्रमण्डल का सोलहवां भाग कला है, और चन्द्रमण्डल के व्यास को भी कला कहते हैं, (एकं) बिम्बः, "और भी बिम्बो" मण्डलं, ये २ चन्द्रमा और सूर्य्य के बिम्ब के नाम हैं, भित्तं आदि ४ टुकड़े के नाम हैं, इनमें भित्तं, नपुंसक है, शकल, और खण्ड, ये २ पुं॰ और क्लीव हैं, अर्द्धः, पुल्लिङ्ग ही है, जैसे, (कम्बलस्यार्द्धः खण्डः), और भी जैसे अर्द्धा शाटिः, अर्द्धः पटः, अर्द्धं वस्त्रं, इस रीत तीनों लिङ्ग हैं, अर्द्धं यह १ तुल्य भाग में है, सो तो नपुंसक ही है, ॥ १७ ॥

	स स स
चान्दनी ।	चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना
	१पु स
स्वच्छ ।	प्रसादस्-(तु) प्रसन्नता
	पु २पु न न ३न न
कलङ्क ।	कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं (च) चिह्नं लक्ष्म (च) लक्षणम् ॥ १८ ॥
	स
बड़ी शोभा ।	सुषमा (परमा शोभा)
	स स ४स स
शोभा मात्र ।	शोभा कान्ति-र्द्युतिश्-छविः ।
	५पु ६पु ७पु न न
हिम वा ठण्ढ ।	अवश्यायस् (तु) नीहारस्-तुषारस्, तुहिनं हिमम् ॥ १९ ॥
	न स
	प्रालेयं महिका (चा)
	स स
बड़ा ठंढ ।	(ऽथ) हिमानी हिमसंहतिः ।
	न
ठंढ ।	शीतं (गुणे)
	पुसन पुसन पुसन
ठंढ पर्य्याय ।	(तद्वदर्थाः) सुषीमश् शिशिरो जडः ॥ २० ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन
	तुषारश् शीतलः शीतो हिमः (सप्तान्य लिङ्गकाः) ।
	पु पु
ध्रुव ।	ध्रुव औत्तानपादिः (स्याद्)
	पु पु
अगस्ति ।	अगस्त्यः कुम्भसम्भवः ॥ २१ ॥

१-द. २ अङ्क. ३-क्ष्मन्. ४-ति. ५-ष. ६-हार ७-षार.

चन्द्रिका, "और भी चन्द्रिमा" कौमुदी, ज्योत्स्ना, ये ३ चद्रमा की प्रभा के नाम हैं, प्रसादः, प्रसन्नता, ये २ उस की निर्मलता के नाम हैं, कलङ्कः, अङ्कः, लाञ्छनं, । चिह्नं लक्ष्म, लक्षणं, "उसी प्रकार लक्ष्मणं" ये ६ चद्रमा के भीतरी चिह्न के नाम हैं, ॥ १८ ॥ सुषमा, यह १ बड़ी शोभा का नाम है; शोभा, "उसी प्रकार आभा", कान्तिः, द्युतिः, छविः, ये ४ शोभा मात्र के नाम हैं; "उसी प्रकार द्युती, और छवी भी"; अवश्यायः, नीहारः, तुषारः, तुहिनं, हिमं, प्रालेयं, मिहिका, "वा महिका" ये ७ हिम के नाम हैं; ॥ १९ ॥ हिमानी, हिमसंहतिः, ये २ बड़े हिम अर्थात् हिम समूह के नाम हैं; इस प्रकार अवश्याय शब्द आदि उक्त लिङ्ग हैं, नपुंसकलिङ्ग शीत शब्द भी गुण अर्थात् स्पर्श विषय में ही है, सुषीमः, "उसी प्रकार सुषिमः, सुशीमः"; शिशिरः, जडः, ॥ २० ॥ तुषारः, शीतलः, शीतः, हिमः, ये ७ शीत आदि के पर्य्याय वाची हैं, (और शीत गुणवान् अर्थ है जिन्हों के वे अन्य लिङ्ग हैं अर्थात् विशेष्य के लिङ्ग के समान इन का भी लिङ्ग होता है), तुषार हिम शीत आदि शब्द (निरूढ लक्षणया) अर्थात् लक्षणा शक्य अर्थ के बाध में होती है, जैसे "(गंगायां घोषः)" गंगा की धारा में अहीरों का घर नहीं हो सकता तो गंगा पद का प्रवाह अर्थ छोड़ तीर में लक्षणा किया तब गंगा तीरे घोषः यह अर्थ सिद्ध भया उसी प्रकार लक्षणा, से गुणी में भी रहते हैं, और इसीलिये ये दोनों स्थल में पढ़े गये हैं, ॥ ध्रुवः, औत्तानपादिः, ये २ महाराज उत्तानपाद के पुत्र के नाम हैं, और महाराज मनु के पौत्र हैं, अगस्त्यः, "और भी अगस्तिः" कुम्भसम्भवः, ॥ २१ ॥

	१पु मैत्रावरुणिर्
उसकी स्त्री ।	स (ऽस्यैव) लोपामुद्रा (सधर्म्मिणी) ।
तारा ।	न २न न स स ३सन नक्षत्र-मृक्षं भं तारा तारका (ऽप्यु)-डु (वा स्त्रियाम्)॥-२२॥
दक्ष की कन्या ।	दाक्षायण्यो (ऽश्विनी-त्यादि तारा)
अश्विनी ।	४स ५स अश्वयुगश्विनी ।
विशाखा ।	स स राधा विशाखा
पुष्य ।	पु पु पु पुष्ये (तु) सिध्य-तिष्यौ
धनिष्ठा ।	६स श्रविष्ठया ॥ २३ ॥
	स (समा) धनिष्ठा
पूर्व और उत्तर भाद्रपद ।	स स (स्युः) प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः (स्त्रियः) ।
मृगशिर ।	न न ७स मृगशीर्षं मृगशिरस्-(तस्मिन्नेवा)-ऽग्रहायणी ॥ २४ ॥
इल्वला ।	८स इल्वलास् (तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः) ।
गुरु ।	पु पु पु ६पु पु बृहस्पतिः सुराचार्य्यो गीष्पति-र्धिषणो गुरुः ॥-२५ ॥

१-णि. २ ऋक्ष. ३ उडु. ४-युज्. ५ श्र-. ६-ष्ठा. ७ श्रा-. ८-ला. ९ धि-.

मैत्रावरुणिः, "मैत्रावरुणः, उसी प्रकार वरुणिः" ये ३ अगस्त्य जी के नाम हैं, इस अगस्ति जी की सहधर्म्मिणी पत्नी लोपामुद्रा है, (एकं) नक्षत्रं, ऋक्षं, भं, तारा, "नपुंसक तारकं, उसी प्रकार पुल्लिङ्ग तारकः, और तारः", उडु, नपुंसक, "उडुः, वा उड्वी, स्त्रीलिङ्ग", ये ६ नक्षत्र मात्र के नाम हैं, उडु शब्द-स्त्री और नपुंसक में है, अपि शब्द से तारका शब्द भी तैसा ही है, ॥ २२ ॥ अश्विनी आदि तारा हैं, और अश्विनी आदि सप्तविंशति २७ नक्षत्र दाक्षायणी संज्ञक हैं, (एकं) अश्वयुग्, अश्विनी, ये २ अश्विनी नक्षत्र के नाम हैं; राधा, विशाखा, ये २ विशाखा के नाम हैं, पुष्यः, सिध्यः, तिष्यः, ये ३ पुष्य के नाम हैं, श्रविष्ठा, धनिष्ठा, ये २ धनिष्ठा के नाम हैं, श्रविष्ठया समा अर्थात् श्रविष्ठा के तुल्य हैं, ॥ २३ ॥ प्रोष्ठपदाः, भाद्रपदाः, ये २ पूर्व्वाभाद्रपद, और उत्तराभाद्रपद के नाम हैं, पूर्व्वे प्रोष्ठपदे २ और उत्तरे प्रोष्ठपदे २ ऐसे ४ चार होने से इनमें बहुवचन है, और ये स्त्रीलिङ्ग हैं, "उसी प्रकार भद्रपदाः भी"; मृगशीर्षं, मृगशिरः, (स्), "पुल्लिङ्ग मृगशीर्षः, उसी प्रकार स्त्री॰ मृगशिराः (स्), पुं॰ मृगः" आग्रहायणी, ये ३ मृगशीर्ष के नाम हैं, ॥ २४ ॥ और उस मृगशीर्ष के शिरोदेश में जो ५ तारा रहती हैं उन्हें इल्वलाः कहते हैं, "और भी इल्वकाः", (एकं) बृहस्पतिः, सुराचार्य्यः, गीष्पतिः, "उसी प्रकार गीर्पतिः, गीः पतिः, गीः पतिः" धिषणः, गुरुः, ॥ २५ ॥

	पु पु १पु पु जीवः आङ्गिरसो वाचस्पतिश् चित्रशिखण्डिजः ।
शुक्र ।	पु पु पु २पु पु पु शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ॥ २६ ॥
मङ्गल ।	पु पु पु पु पु अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ।
बुध ।	पु पु पु रौहिणेयो बुधः सौम्यः
शनि ।	पु पु (समौ) शौरि-शनैश्चरौ ॥ २७ ॥
राहु ।	न पु पु पु पु तमस्-(तु) राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ।
सप्तर्षि ।	पु (सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्)-चित्रशिखण्डिनः ॥ २८ ॥
लग्न ।	न (राशीना मुदयो) लग्नं
राशि ।	(ते तु मेषवृषादयः) ।
सूर्य ।	पु पु ३पु ४पु ५पु ६पु सूर-सूर्यार्य्यमा-दित्य-द्वादशात्म-दिवाकराः ॥ २९ ॥

१—ति. २—नस. ३ अ—न. ४ आ—. ५—त्मन्. ६—र.

जीवः, आङ्गिरसः "और भी अङ्गिरसः", वाचस्पतिः, चित्रशिखण्डिजः, ये ६ बृहस्पति के नाम हैं; शुक्रः, दैत्यगुरुः, काव्यः, उशना "सम्बोधन का एक वचन उशनः, (स्) उशनन्, और उशनाः" भार्गवः, "उसी प्रकार भृगुः, वा भगवः" कविः, ये ६ शुक्राचार्य्य के नाम हैं, उशना यह सान्त है; ॥ २६ ॥ अङ्गारकः, कुजः, भौमः, लोहिताङ्गः, महीसुतः, ये ५ मङ्गल के नाम हैं; रौहिणेयः, बुधः, सौम्यः, ये ३ बुध के नाम हैं; शौरिः, "और भी सौरः, वा सौरिः, शनैश्चरः, ये २ शनि अर्थात् शनीचर के नाम हैं, ॥ २७ ॥ तमः, "और भी पुं॰ तमाः (स्)" राहुः, स्वर्भानुः, सैंहिकेयः, विधुन्तुदः, ये ५ राहु के नाम हैं; तमस् यह सान्त और क्लीब है, कहीं पुल्लिङ्ग भी है, मरीच्यत्रिमुखाः, ये सप्तऋषि चित्रशिखण्डि संज्ञक हैं; मुख शब्द से पुलस्त्य, पुलह आदि सप्तर्षि हैं, वे सब ये हैं, मरीचिः, अङ्गिराः, अत्रिः, पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतु, वशिष्ठः, ये ७ चित्रशिखंडि संज्ञक सप्तर्षि कहलाते हैं, ॥ २८ ॥ राशियों के उदय को लग्नं कहते हैं; जैसे मेष—वृष—मिथुन आदि राशियां कहलाती हैं; सूरः, "उसी प्रकार शूरः" सूर्य्यः, आर्य्यमा, आदित्यः, द्वादशात्मा, दिवाकरः, ॥ १९ ॥

पु १पु पु पु पु
भास्करा-ऽहस्कर-ब्रध्न-प्रभाकर-विभाकराः ।
२पु पु पु पु ३पु
भास्वद्-विवस्वत्-सप्ताश्व-हरिदश्वो-ष्णरश्मयः ॥ ३० ॥
पु ४पु पु पु ५पु ६पु
विकर्त्तना-ऽर्क-मार्तण्ड-मिहिरा-ऽरुण-पूषणः ।
७पु पु ८पु पु पु
द्युमणिस् तरणि-र्मित्रश् चित्रभानु-र्विरोचनः ॥ ३१ ॥
पु ९पु पु १०पु
विभावसु-र्ग्रहपतिस् त्विषांपति-रहर्पतिः ।
पु पु ११पु पु १२पु पु
भानु-र्हंसः सहस्रांशुस् तपनः सविता रविः ॥ ३२ ॥

सूर्य्य के चारो ओर रहने वाले ये तीन ग्रह विशेष हैं ।

पु पु १३पु
माठरः पिङ्गलो दण्डश् (चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः) ।

प्रभात ।

पु पु पु पु पु
सूरसूतो ऽरुणो ऽनूरुः काश्यपि-र्गरुडाग्रजः ॥ ३३ ॥

मण्डल ।

१४पु पु १५न न
परिवेषस् (तु) परिधि-रुपसूर्य्यक-मण्डले ।

किरण ।

पु १६पु पु १७पु पु पु १८पु
किरणो-स्र-मयूखांशु-गभस्ति-घृणि-धृष्णयः ॥ ३४ ॥
पु पु पुस स
भानुः करो मरीचिः (स्त्री पुंसयो)-र्दीधितिः (स्त्रियाम्) ।

---

१ अ–. २–त्. ३ उ–श्मि. ४ अ–. ५ अ–. ६ पूषन्. ७–णि. ८–त्र. ९–ति. १० अ–. ११–शु. १२–तृ. १३–ण्ड. १४–ष. १५ उ–. १६ उस्र. १७ अंशु. १८ घृष्णि.

भास्करः, अहस्करः, ब्रध्नः, प्रभाकरः, विभाकरः, भास्वान्, विवस्वान्, सप्ताश्वः, हरिदश्वः, उष्णरश्मिः, ॥ ३० ॥ विकर्त्तनः, अर्कः, मार्त्तण्डः, "और भी मार्त्ताण्डः" मिहिरः, "उसी प्रकार मिहिरः" अरुणः, पूषा, द्युमणिः, तरणिः, मित्रः, चित्रभानुः, विरोचनः, ॥ ३१ ॥ विभावसुः, ग्रहपतिः, त्विषांपतिः, अहर्पतिः, "और भी अहष्पतिः" भानुः, हंसः, सहस्रांशुः, तपनः, "उसी प्रकार तापनः" सविता, रविः, ये ३७ सूर्य्य के नाम हैं, ॥ ३२ ॥ माठरः, पिङ्गलः, दण्डः, ये ३ सूर्य्य के पारिपार्श्वक हैं, अर्थात् सूर्य्य के चारो ओर के रहने वाले ग्रह विशेष के नाम हैं, "सौरतंत्र में कहा है कि दण्ड नाम दण्डनायक सूर्य्य के वाम भाग में रहता है, अग्नि इसके दक्षिण भाग में, और पिङ्गल नाम वाम भाग में है, दाहिनी ओर यमराज माठर नाम रहता है"; सूरसूतः, अरुणः, अनूरुः, काश्यपिः, गरुडाग्रजः, ये ५ सूर्य्य के सारथी के नाम हैं, "उसी प्रकार काश्यपः" ॥ ३३ ॥ परिवेषः, "और भी परिवेशः" परिधिः, उपसूर्य्यकं, मण्डलं, ये ४ सूर्य्य के चारो ओर कभी कुण्डल के आकार विशेष तेज जो दिखलाई देता है उस के नाम हैं, किरणः, उस्रः, मयूखः, अंशुः, गभस्तिः, घृणिः, "उसी प्रकार रश्मिः", धृष्णिः, "याजे प्रश्निः पढ़ते हैं" ॥ ३४ ॥ भानुः, करः, मरीचिः, दीधितिः, ये ११ सूर्य्य किरण के नाम हैं, मरीचिः, स्त्री पुल्लिङ्ग में है और दीधितिः स्त्रीलिङ्ग है, ॥

तेजमात्र ।	स १स स २स स ३स स स ४स (स्युः) प्रभा-रुग्-रुचि-त्विड्-भा-भाश्-छवि-द्युति-दीप्तयः ३५
	५न ६न रोचिः शोचि-(रुभे क्लीबे)
सूर्य्य का तेज	पु पु पु प्रकाशो द्योत आतपः ।
थोड़ा गरम ।	न न न न कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं (त्रिषु तद्वति) ॥ ३६ ॥
बड़ा गर्म ।	न न न तिग्मं तीक्ष्णं खरं (तद्वन्)
मृगतृष्णा ।	स स मृगतृष्णा मरीचिका ।

॥ इति दिग्वर्गः ॥

१ रुच्. २ त्विष्. ३ भास्. ४ दीप्ति. ५ रोचिस्. ६ शोचिस्.

प्रभा, रुक्, रुचिः, त्विड्, भा, भाः, "और भी पुल्लिङ्ग भाः (स्) वा भासः, (स्)" छविः, द्युतिः, दीप्तिः, ॥ ३५ ॥ रोचिः, शोचिः, ये ११ प्रभा मात्र के नाम हैं, इन्मे दीप्ति शब्द पर्य्यन्त स्त्रीलिङ्ग हैं, और रोचिः शोचिः ये २ सान्त और क्लीब हैं, द्विवचन में तो रोचिषी, शोचिषी, होते हैं, भाः, यह सान्त है, प्रकाशः, द्योतः, आतपः, ये ३ सूर्य्य के प्रभा वा आतप वा घाम के नाम हैं, कोष्णं कवोष्णं, मन्दोष्णं, कदुष्णं, ये ४ इषत् उष्ण के नाम हैं, और धर्म वाची होंय तो तीनो लिङ्ग में होते हैं; ॥ ३६ ॥ तिग्मं, तीक्ष्णं, खरं, ये ३ अति उष्ण के नाम हैं, और कोष्ण शब्द के तुल्य हैं, अर्थात् धर्म में क्लीब, और धर्म्मी में तीनो लिङ्ग हैं, मृगतृष्णा, मरीचिका, ये २ मृगजल के नाम हैं, अर्थात् मरुदेश आदि के बालू में फैली हुई सूर्य्यकिरण जलाकार से जो भ्रम रूप जल का आभास है उसे कहते हैं, ॥ ३७ ॥

॥ इति दिग्वर्गः ॥

अथ चतुर्थवर्गः।

	पु पु १पु पु
समय।	कालो दिष्टो-(ऽप्य)-ऽनेहा (ऽपि) समयो-(ऽप्य)-
	स
पहिली तिथि।	(ऽथ) पक्षतिः।
	२स
	प्रतिपद् (द्वे इमे स्त्रीत्वे)
	३पुस
तिथि।	(तदाद्यास्) तिथयो (द्वयोः) ॥ १ ॥
	पु न ४न पुन पुन
दिन।	घस्रो दिना-ऽहनी (वा तु क्लीबे) दिवस-वासरौ।
	पु न न ५न ६न
प्रात।	प्रत्यूषो ऽहर्मुखं कल्य मुषः-प्रत्यूषसी (अपि) ॥ २ ॥
	न
	प्रभातं (च)
	पुनअ॰
सांझ।	(दिनान्ते तु) सायं
	स स
गोधूली।	सन्ध्या पितृप्रसूः।

१ अनेहस्. २—पद्. ३ तिथि. ४ अहन्. ५ उषस्. ६ षस्.

कालः, दिष्टः, अनेहा, समयः ये ४ समय के नाम हैं, अनेहा यह सान्त है, पक्षतिः, "वा पक्षती" प्रतिपत्, ये २ प्रथम तिथि अर्थात् परिवा के नाम हैं, और प्रतिपद आदि तिथियां कहलाती हैं, तिथि शब्द स्त्री और पुल्लिङ्ग है, "उसी प्रकार स्त्रीलिङ्ग तिथी भी" ॥ १ ॥ घस्रः, दिनं, अहः, दिवसः, वासरः, "और भी वाशरः" ये ५ दिन के नाम हैं; इनमें दिवस, और वासर क्लीब पुं॰ है. प्रत्यूषः, अहर्मुखं, कल्यं, "और काल्यं भी" उषः, "और भी पुं॰ उषः, (स) और स्त्री उषा" प्रत्यूषः, उसी प्रकार पुं॰ प्रत्युषः (ष) और न॰ प्रत्युषः (स्), प्रभातं, "उसी प्रकार भातं, और विभातं" ये ६ प्रातः काल के नाम हैं, तिन में आदि प्रत्यूष शब्द अदन्त–पुं॰ और न॰ भी है, काल्यं यह तालव्यान्त है, ॥ २ ॥ दिनान्तः, सायं, "और भी पुं॰ सायः" संध्या, "उसी प्रकार सन्धा, सन्धा पितृप्रसूः" पितृप्रसूः, ये ४ दिन के अन्त–अर्थात् सायंकाल के नाम हैं, और इनमें सायं यह अव्यय और नपुंसकलिङ्ग विकल्प करके है।

दिन के भाग ।	पु १पु २पु प्राह्णा-ऽपराह्ण-मध्याह्नास् (त्रिसन्ध्यम्)
रात्रि ।	स (अथ) शर्व्वरी ॥ ३ ॥
	स स ३स स स स निशा निशीथिनी रात्रिस् त्रियामा क्षणदा क्षपा ।
	स ४स स स स विभावरी-तमस्विन्यौ रजनी जामिनी तमी ॥ ४ ॥
अंधेरी रात ।	स स तमिस्रा तामसी (रात्रिर्)
चान्दनी रात ।	स ज्योत्स्नी (चन्द्रिकयाऽन्विता) ।
पूर्व और पर दिन से युक्त रात ।	स (आगामिवर्त्तमाना ऽहर्युक्तायां निशि) पक्षिणी ॥ ५ ॥
रात्रि समूह ।	न गणरात्रं (निशाबह्वः)
रात का आरम्भ ।	पु न प्रदोषो रजनीमुखम् ।
आधीरात ।	पु पु अर्द्धरात्र-निशीथौ (द्वौ)
पहर ।	पु पु (द्वौ) याम-प्रहरौ (समौ) ॥ ६ ॥

१ श्र–. २–ह्न. ३–त्रि. ४–नी.

प्राह्णः, अपराह्णः, मध्याह्नः, इनमें प्रातःकाल से लेकर दोपहर होने तक जो समय है उसे प्राह्णः कहते हैं, ठीक दोपहर को मध्याह्नः, और तीसरे प्रहर को अपराह्णः कहते हैं; और जब इन तीनों कालों को एक शब्द से कहना होता है तो उसे त्रिसन्ध्यं, वा त्रिसन्ध्या, यों कहते हैं; शर्वरी, "और भी शार्व्वरी" ॥ ३ ॥ निशा, निशीथिनी, रात्रिः, "और भी रात्री" त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, "उसी प्रकार क्षिपा" विभावरी, तमस्विनी, "उसी प्रकार, तमस्वती भी" रजनी "उसी प्रकार रजनिः" जामिनी, "और भी यामवती" तमी, "उसी प्रकार तमिः, वा तमा, और तामी" ये १२ रात्रि के नाम हैं; ॥ ४ ॥ जो तमसे युक्त रात्रि है उसे तमिस्रा कहते हैं, और जो चन्द्रिका से युक्त रात्रि है उसे ज्योत्स्नी कहते हैं; पूर्व और पर दिन से युक्त रात्रि को पक्षिणी कहते हैं; ॥ ५ ॥ बहुत रात्रि को गणरात्रं कहते हैं, अथवा रात्रि समुदाय को गणरात्रं कहते हैं; प्रदोषः, रजनीमुखं, ये २ रात्रि के पूर्व भाग को कहते हैं, अर्द्धरात्रः, निशीथः, ये २ रात्रि के मध्य समय अर्थात् आधीरात के नाम हैं; यामः, प्रहरः, ये २ रात्रि और दिन के अष्टम भाग को कहते हैं; ॥ ६ ॥

पर्वसन्धि ।	पु (स) पर्वसन्धिः (प्रतिपत्पञ्चदश्योर्य्यदन्तरम्) ।
अमा और पूर्णिमा ।	स पक्षान्तौ (पञ्चदश्यौ द्वे)
पूर्णिमा ।	स स पौर्णमासी (तु) पूर्णिमा ॥ ७ ॥
कलाहीन पूर्णिमा ।	स (कलाहीने सा) ऽनुमतिः
कलासहित पूनो ।	स (पूर्णे) राका (निशाकरे) ।
अमावस्या ।	स १स पु पु अमावास्या (त्व) ऽमावस्या दर्शः सूर्य्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥
अमा विशेष ।	स (सा दृष्टेन्दुः) सिनीवाली
वही ।	स (सा नष्टेन्दुकला) कुहूः ।
ग्रहण ।	पु पु उपरागो ग्रहो (राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च) ॥ ९ ॥

१ अ- .

जो प्रतिपद और पूर्णिमा तिथि के मध्य अन्तर है उसे पर्व और सन्धि कहते हैं, "उसी प्रकार पर्वसन्धि भी" जैसा रुद्राचार्य्य ने कहा है, दर्श और प्रतिपद की सन्धि में तथा ग्रन्थि और प्रस्ताव में पर्व क्लीब है और विषुवत् प्रभृति में भी क्लीब है, अथवा पर्व सन्धि यह एक पद चार अक्षर का है, पक्षान्तौ, पञ्चदश्यौ, ये २ अमा और पूर्णिमा के नाम हैं, तथा पक्षान्त तिथि के भी नाम हैं, द्वित्व होने से इन्में द्विवचन है, पौर्णमासी, पूर्णिमा, "उसी प्रकार पूर्णमा, पूर्णमासी, पूर्णिमासी, पौर्णमी भी" ये २ शुक्ल पक्ष के अन्त्य तिथि के नाम हैं, ॥ ७ ॥ वह पूर्णिमा कलाहीन चन्द्रमा के रहते अनुमति कहलाती है, और फिर वही पूर्णिमा पूर्ण निशाकर के होने से राका कहलाती है, (एकं), अमावास्या, अमावस्या "अमावासी, अमावसी, अमामासी, अमामसी, और अमा" दर्शः, "उसी प्रकार अदर्शः, सूर्य्येन्दुसङ्गमः, ये ४ कृष्णपक्ष के अन्त्य तिथि के नाम हैं, ॥ ८ ॥ वह अमावास्या जिस्में चन्द्रमा दिखलाई देवे तो उसे सिनीवाली, कहते हैं, (एकं) और वही अमावास्या जिस्में इन्दु की कला दिखलाई नहीं देती उसे कुहूः, "उसी प्रकार कुहुः" कहते हैं (एकं) यो पूर्व अमावास्या है वह सिनीवाली है, और जो उत्तर अमावस्या है उसे कुहू कहते हैं, "यह श्रुति है" राहु से चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रस्त होने पर उस ग्रास का उपरागः, ग्रहः, ये २ नाम हैं, ॥ ९ ॥

	पु १पु सोपप्लवो-परक्तौ (द्वाव्)-
उल्का-वा धूमकेतु	पु पु ऽग्न्युत्पात् उपाहित: ।
सूर्य्य और चन्द्र ।	२पु (एकयोक्त्या) पुष्पवन्तौ (दिवाकर-निशाकरौ) ॥ १० ॥
काष्ठा ।	स (अष्टादश निमेषास्तु) काष्ठास्
कला ।	स (त्रिंशत्तु ता:) कला: ।
क्षण ।	पु (तास्तु त्रिंशत्) क्षणस्-
मुहूर्त्त ।	पुन (तेतु) मुहूर्त्तो (द्वादशा ऽस्त्रियाम्) ॥ ११ ॥
एकरात दिन ।	३पुन (तेतु त्रिंशद्) ऽहोरात्र:
पक्ष ।	पु पक्ष (स्ते दशपञ्च च) ।
पक्षभेद ।	पु पु (पक्षौ पूर्व्वापरौ) शुक्ल-कृष्णौ
महीना ।	पु मास (स्तु तावुभौ) ॥ १२ ॥

१ उ-. २ वत्, वा वन्त. ३ अ-.

सोपप्लव:, उपरक्त:, ये २ राहु से ग्रस्त चन्द्रमा और सूर्य्य वा ४ रो ग्रहण के नाम हैं; अग्न्युत्पात:, उपाहित:, ये २ अग्नि कृत उत्पात के नाम हैं, वा जो तारा टूट कर गिरता है, उसे कहते हैं, वा धूमकेतु को वा उल्का को भी कहते हैं, "और ग्रहण होने पर कदाचित् आग्नेय मण्डल से जो उत्पन्न होता है उसको कोई वा धूमकेतु के उत्पात् को कोई कहते हैं", एक उक्ति से अर्थात् अपृथक् वचन से पुष्पवन्तौ ऐसे कहे गये सूर्य्य और चन्द्रमा जाने जाते हैं, ॥ १० ॥ निमेष आंखों के पलक के गिरने के काल को कहते हैं, ऐसे अष्टादश निमेष मिलकर एक काष्ठा होती है, तीस काष्ठा मिलकर एक कला, और ये तीस कला मिलकर एक क्षण होता है, वे द्वादश क्षण मिलकर एक मुहूर्त्त होता है, वह पुं॰ नपुं॰लिङ्ग है, ॥ ११ ॥ वे तीस मुहूर्त्त मिलकर एक रात्रि और दिन होते हैं, वे पञ्चदश संख्यक रात्रि दिन मिलकर एक पक्ष होता है, वह पक्ष दो प्रकार का है, कृष्ण और शुक्ल, महीने का पहिला कृष्ण और दूसरा शुक्ल पक्ष है, वे दोनों पक्ष मिलकर एक मास होता है, "उसी प्रकार मा: (स्), यह चन्द्रमा के प्रमाण से मास होता है, ॥ १२ ॥

ऋतु ।	(द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्याद्) ऋतु[पु]-
आधावर्ष ।	(स्तैर्) यनं[१न] (त्रिभिः) ।
वर्ष ।	(अयने द्वे गतिरुदग् दक्षिणार्कस्य) वत्सरः[पु] ॥ १३ ॥
समरात्रिदिन ।	(समरात्रिंदिवे काले) विषुवद्[२न] विषुवं[न] (च तत्) ।
अगहन ।	मार्गशीर्षे[पु] सहा[३पु] मार्ग[पु] आग्रहायणिकश्[पु] (च सः) ॥ १४ ॥
पूस ।	पौषे[पु] तैष[पु]-सहस्यौ[पु] (द्वौ)
माघ ।	तपा[४पु] माघे[पु]
फागुन ।	(ऽथ) फाल्गुने[पु] ।
	(स्यात्) तपस्यः[पु] फाल्गुनिकः[पु]
चैत ।	(स्याच्) चैत्रे[पु] चैत्रिको[पु] मधुः[पु] ॥ १५ ॥

१ अ–. २–वत्. ३ सहस्. ४ तपस्.

मार्गशीर्ष आदि दो दो मास का एक २ ऋतु होता है, और मूल में माघ आदि का जो उपक्रम है वह तो अयनारम्भ के वश से है यह जानना चाहिये, वह ऋतु हेमन्त आदि सञ्ज्ञक है, उन तीन ऋतुओं का एक अयन होता है, वह अयन सूर्य्य के गति के भेद से दो प्रकार का है, जैसे सूर्य्य की उत्तर गति को उत्तरायण और दक्षिण गति को दक्षिणायन कहते हैं; इसी प्रकार दो अयन का एक वरस होता है, ॥ १३ ॥ विषुवत्, विषुवं. "और भी पुं॰ विषुवान् और विषुवः, और विषुणः, वा विषुपः" ये २ समरात्रि दिन के नाम हैं, अर्थात् जिस काल तुला की संक्रान्ति और मेष की सक्रान्ति में जब दिन और रात्रि सम होते हैं, उस काल को कहते हैं; मार्गशीर्षः, सहाः, "उसी प्रकार सहः (स्)" मार्गः, आग्रहायणिकः, "और भी अग्रहायणः" ये ४ मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन के नाम हैं, ॥ १४ ॥ पौषः, तैषः, सहस्यः, ये ३ पौष के नाम हैं, तपाः, "और भी तपः (–प॰), माघः, ये २ माघ के नाम हैं; फाल्गुनः, तपस्यः, फाल्गुनिकः, "और भी फाल्गुनः", ॥ ये ३ फाल्गुन मास के नाम हैं; चैत्रः, चैत्रिकः, मधुः, ये ३ चैत्र के नाम हैं, ॥ १५ ॥

वैशाख।	पु पु पु वैशाखे माधवो राधो
जेठ।	पु पु ज्येष्ठे शुक्रः
आषाढ़।	पु शुचि-(स्त्वयम्)।
	पु आषाढे
सावन।	पु १पु पु श्रावणे (तु स्यात्) नभाः श्रावणिकश् (च सः) ॥ १६ ॥
भादों।	पु पु पु पु (स्यु) र्नभस्य-प्रौष्ठपद-भाद्र-भाद्रपदाः (समाः)।
कुआर।	२पु पु ३पु (स्यादा) श्विन इषो (ऽप्या) श्वयुजो (ऽपि)
कातिक।	पु (स्यात्तु) कार्त्तिके ॥ १७ ॥
	पु ४पु पु बाहुलो-र्जौ कार्त्तिकिको
हेमन्त।	हेमन्तः
ठंढ।	पुन शिशिरो (ऽस्त्रियाम्)।
वसन्त।	पु पु ५पु वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्
गर्मी।	पु पु ग्रीष्म उष्णकः ॥ १८ ॥

१ नभस् २ आ–. ३ आ–. ४ ऊर्ज. ५–भि.

वैशाखः, माधवः, राधः, ये ३ वैशाख के नाम हैं; ज्येष्ठः, "उसी प्रकार ज्येष्ठः" शुक्रः, ये २ ज्येष्ठ के नाम हैं; शुचिः, आषाढ़ः, "और भी अषाढः, अषाढकः, और आशाढः" ये २ आषाढ़ के नाम हैं; श्रावणः, नभाः, श्रावणिकः, ये ३ श्रावण के नाम हैं; ॥ १६ ॥ नभस्यः, प्रौष्ठपदः, भाद्रः, भाद्रपदः, ये ४ भाद्रपद के नाम हैं; आश्विनः, इषः, "उसी प्रकार ईषः" आश्वयुजः, "और भी अश्वयुजः" ये ३ आश्विन के नाम हैं; कार्त्तिकः, ॥ १७ ॥ बाहुलः, ऊर्जः, कार्त्तिकिकः, ये ४ कार्त्तिक के नाम हैं; अब ऋतुओं के भेद कहते हैं, हेमन्तः, "उसी प्रकार हेमा (न्) यह १ हेमन्त ऋतु का नाम है, शिशिरः, यह १ शिशिर का नाम है, और पुं॰ न॰ लिङ्ग हैं, (एकैक) वसन्तः, पुष्पसमयः सुरभिः, ये ३ वसन्त के नाम हैं, ग्रीष्मः, उष्णकः, "वा उष्मकः, और भी ऊष्मा, वा ऊष्मा (न्)," ॥ १८ ॥

	पु पु पु १पु पु
	निदाघ उष्णोपगम उष्ण उष्णागमस् तपः ।
	२स स
वर्षा ।	(स्त्रियां) प्रावृट् (स्त्रियां भूम्नि) वर्षा
	३स
शरत् ।	(अथ) शरत् (स्त्रियाम्) ॥ १६ ॥
	४पु
	(षड़मी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात्) ।
	पु पु ५पु पुन ६स स
वरस ।	संवत्सरो वत्सरो ऽब्दो हायनो (ऽस्त्री) शरत् समाः ॥२०॥
	पु पु
पितृदिन ।	(मासेन स्याद्) ऽहोरात्रः पैत्रो
	पु
देवदिन ।	(वर्षेण) दैवतः ।
	पु
ब्रह्मा का दिन ।	(दैवे युगसहस्रे द्वे) ब्राह्मः
	पु
कल्प ।	कल्पौ (तु तौ नृणाम्) ॥ २१ ॥
	न
मन्वन्तर ।	मन्वन्तरं (तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः) ।
	पु पु पु पु पु
प्रलय ।	संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त (इत्यपि) ॥ २२ ॥
	॥ इति कालवर्गः ॥

१—म. २—प्. ३—द. ४ ऋतु. ५ अब्द. ६—द. ७ कल्प.

निदाघः, उष्णोपगमः, उष्णः, उष्णागमः, "उसी प्रकार ऊष्णोपगमः, ऊष्णः, और ऊष्णागमः, वा उष्णोगमः, आदि और "ऊष्णोगमः" तपः, ये ७ ग्रीष्म ऋतु के नाम हैं, तपः, अकारान्त और पुं॰ है, "और भी तपः (स्)" प्रावृट्, "उसी प्रकार प्रावृषा" वर्षाः, ये २ वर्षाऋतु के नाम हैं, इन्में प्रावृट् शब्द षकारान्त और स्त्रीलिङ्ग है, और वर्षा शब्द तो स्त्रीलिङ्ग और नित्य बहुवचन है, शरद्, "और शारदः" यह १ शरद ऋतु स्त्रीलिङ्ग और दकारान्त है, ॥ १६ ॥ ये हेमन्त आदि ६ ऋतु संज्ञक पुल्लिङ्ग हैं, वे हेमन्त आदि मार्गशीर्ष आदि मासों के षट् युग्मों के क्रम से होते हैं, "(कहा भी है, आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासौ ऋतुर्मत इति)" संवत्सरः, वत्सरः, "उसी प्रकार परिवत्सरः, और अनुवत्सरः" अब्दः, हायनः, शरत, समाः, ये ६ वर्ष वा वरस के नाम हैं, इन्मे हायनान्त स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं, शरत् स्त्री है, समाः स्त्री. और बहु व॰ है, कहीं एक वच. भी है, ॥ २० ॥ मनुष्यों के एक मास से पितरों का एक रात्रि दिन होते हैं, तिन में शुक्ल पक्ष दिन और कृष्ण पक्ष रात्रि होती है, तैसेही मनुष्यों के एक वर्ष से देवताओं के रात्रि दिन होते हैं, इन्में उत्तरायण दिन और दक्षिणायन रात्रि होती है, इसी प्रकार दो सहस्र देवयुग से ब्रह्मा का १ दिन रात्रि होती है, ये २ देवयुग सहस्र द्वय से मनुष्यों के कल्प अर्थात् स्थिति और प्रलय के काल होते हैं. ॥ २१ ॥ जो दिव्य युगों की एक अधिक सत्तर युग हैं उन्हें मन्वन्तर कहते हैं; उन चतुर्दश मन्वन्तरों से ब्रह्मा का एक दिन है; संवर्त्तः, "और भी सम्वर्तः, उसी प्रकार परिवर्त्तः" प्रलयः, कल्पः, क्षयः, कल्पान्तः, ये ५ प्रलय के नाम हैं; ॥ २२ ॥

॥ इति कालवर्गः ॥

अथ पञ्चमवर्गः ।

पाप । (अस्त्री) पङ्कं (पुमान्) पाप्मा पापं किल्विषं कल्मषम् ।
कलुषं वृजिनै नोघ मंहो दुरितं दुष्कृतम् ॥ १ ॥

पुण्य । (स्याद्) धर्म्म-(मस्त्रियां) पुण्य-श्रेयसी सुकृतं वृषः ।

हर्ष । मुत् प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदा-मोद-सम्मदाः ॥ २ ॥
(स्यादा) नन्दथुरा नन्द-शर्म्म-शात-सुखानि (च) ।

कल्याण । स्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ ३ ॥
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेम-(मस्त्रियाम्) ।
शस्तं (चा)
(ऽथ त्रिषु द्रव्ये पाप-पुण्य-सुखादि च) ॥ ४ ॥

---

१ पाप्मन्. २ एनस्. ३ अघ. ४ अंहस्.-वा अंधस्, ५ श्रेयस्. ६ मुद्. ७ आ–. ८ आ–. ९ आ–. १० शर्म्मन्.

पंकं, पाप्मा, पापं, किल्विषं, कल्मषं, कलुषं, वृजिनं, एनः, अघं, अंहः, "उसी प्रकार अंघः" दुरितं, दुष्कृतं, ये १२ पाप के नाम हैं, इन्में पंकं यह न. और पुं. है, पाप्मा नकारान्त और पुं. है, और सब क्लीब हैं; ॥ १ ॥ धर्मं, पुण्यं, श्रेयः, सुकृतं, वृषः, ये ५ सुकृत अर्थात् पुण्य के नाम हैं, तिनमें धर्मं, पुं. न. लिङ्ग है, वृषः, पुं. है; और पुण्य शब्द जब विशेषण होता है तब इस का लिङ्ग विशेष्य के लिङ्ग के समान होता है; मुत्, "उसी प्रकार मुदा और मुदिता", प्रीतिः, प्रमदः, हर्षः, प्रमोदः, आमोदः, सम्मदः, ॥ २ ॥ आनन्दथुः, आनन्दः, "और भी आनन्दिः, और नन्दिः" शर्म्म, शातं, "दन्त्य आदि भी है सातं" सुखं, "उसी प्रकार सौख्यं" ये १२ हर्ष के नाम हैं, इनमें प्रीति के साहचर्य्य से मुद भी दकारान्त औ स्त्रीलिङ्ग है; स्वः, श्रेयसं, शिवं, भद्रं, "भदं, भंदं, भद्रं, शिवं, तथा यह त्रिकाण्ड शेष है" कल्याणं, "स्त्री कल्याणी" मंगलं, शुभं, ॥ ३ ॥ भावुकं भविकं, भव्यं, कुशलं, "और भी कुषलं, और कुसलं" क्षेमं, शस्तं ये १२ कल्याण मात्र के नाम हैं, इन्मे क्षेमं शस्तं ये २ पुं. न. हैं, स्वः श्रेयसं यह चार अक्षर का पद है, पाप-पुण्य-शब्द और तैसेही सुख आदि शब्द-और स्वः-श्रेयः-शिव-भद्र "शस्त अन्त" द्रव्य विशेष्य में वर्त्तमान तीनों लिङ्गों में विशेष्य के लिङ्ग होते हैं, जैसे पापः पुमान्, पापास्त्री, पापं कुलं, इस आदि होते हैं, ॥ ४ ॥

प्रशस्त वा अच्छा।	स स पुन १पु पु मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्ड मुद्ध-तल्लजौ । (प्रशस्त वाचकान्यमून्य)
शुभ भाग्य।	२पु ऽयः (शुभावहोविधिः) ॥ ५ ॥
भाग्य।	पुन पुन पुन पुन स पु दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं (स्त्री) नियति-र्विधिः ।
कारण।	पु न न हेतु-(र्ना) कारणं बीजं
आदि कारण।	३न (निदानं त्वा) दिकारणम् ॥ ६ ॥
चैतन्य पुरुष।	पु ४पु पु क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः
प्रकृति।	न स प्रधानं प्रकृतिः (स्त्रियाम्) ।
अवस्था-वा उमर।	स (विशेषः कालिको) ऽवस्था
गुण।	न ५न ६न (गुणाः) सत्त्वं रजस् तमः ॥ ७ ।
जन्म।	७न न न स ८स ९पु जनु-र्जनन-जन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

१ उ–. २ अय. ३ आ–. ४ आत्मन्. ५ रजस्. ६ तमस्. ७–स्.
८ उ–. ९ उ–.

मतल्लिका, मचर्चिका, प्रकाण्डं, "प्रकाण्डः, पुल्लिङ्ग भी है" उद्धः, तल्लजः, ये ५ प्रशस्त अर्थात् अच्छे के नाम हैं, और ये ५ नित्यही द्रव्य वाची हैं, लिङ्गान्तर के साथ होने पर भी अपने निज लिङ्ग को नहीं छोड़ते "(प्रशंसा वचनैश्च इस सूत्र से कृष्णसर्पः इस के सामान नित्य समास है, जैसे प्रशस्तो ब्राह्मणो ब्राह्मण मतल्लिका, प्रशस्ता गौर्गोमचर्चिका, गो प्रकाण्डं, ब्राह्मणोद्धः, कुमारीतल्लजः)"; अयः, शुभकारी भाग्य को कहते हैं, और अयः अकारान्त और एक वचन है; ॥ ५ ॥ दैवं, "और दैव्यं" दिष्टं, भागधेयं, भाग्यं, नियतिः, विधिः, ये ६ पूर्व्व जन्म के कर्म्म के नाम हैं, नियतिः, स्त्री, विधिः, पुल्लिङ्ग है; हेतुः, कारणं, "उसी प्रकार करणं" बीजं, ये ३ हेतु मात्र के नाम हैं, हेतुः, पुल्लिङ्ग है; जो आदि कारण है उसे निदानं कहते हैं, यह १ उपादान कारण का भी नाम है; ॥ ६ ॥ क्षेत्रज्ञः, आत्मा, पुरुषः, "और भी पूरुषः" ये ३ शरीर के अधिदेवता के नाम हैं; प्रधानं, प्रकृतिः, ये २ सत्त्व आदि गुणों की साम्यावस्था के नाम हैं; और जो कालिक अर्थात् कालकृत देह आदि की यौवन आदि विशेष है उसे अवस्था कहते हैं, (एकं) सत्त्वं, रजः, तमः, "उसी प्रकार सत्त्वं, और भी पुं· रजः (रज) उसी प्रकार पुं· तमः (तम)" ये ३ गुण कहलाते हैं, और ये ३ प्रकृति के धर्म्म हैं, (एकैकं) रजः, और तमः, ये सान्त हैं; ॥ ७ ॥ जनुः, जननं, जन्म, जनिः, उत्पत्तिः, उद्भवः, "एकवचन जन्म, वा जन्मं और भी पुं· जन्मः, वा जनीः, और भी पुं· जनिः" ये ६ जन्म के नाम हैं, जनुः सान्त और जनिः स्त्रीलिङ्ग है, ॥

	१पु पु. २पु पु पु ३पु
प्राणी, वा जीव ।	प्राणी (तु) चेतनो जन्मी जन्तु-जन्यु-शरीरिण: ॥ ८ ॥
	स न न
जाति ।	जाति-र्जातं (च) सामान्यं
	स स
व्यक्ति ।	व्यक्ति-(स्तु) पृथगात्मिका ।
	न ४न न न ५न न न
मन ।	चित्तं (तु) चेतो हृदयं स्वान्तं हृन् मानसं मन: ॥ ९ ॥
	स स स स स स स
बुद्धि ।	बुद्धि-र्मनीषा धिषणा धी: प्रज्ञा शेमुषी मति: ।
	स ६स ७स ८स ९स स स
	प्रेक्षो पलब्धिश् चित्-सम्वित्-प्रतिपज्-ज्ञप्ति-चेतना: ॥ १० ॥
	स
मेधा ।	(धी-र्धारणावती) मेधा
	पु
संकल्प ।	सङ्कल्प: (कर्म्ममानसम्) ।
	पु पु
सुखेच्छा ।	चित्ताभोगो मनस्कारश्
	स स स
विचार ।	चर्चा संख्या विचारणा ॥ ११ ॥
	१०पु स ११पु
तर्क ।	अध्या-हारस् तर्क ऊहो
	स पु
सन्देह ।	विचिकित्सा (तु) संशय: ।

१ प्राणिन्. २ जन्मिन्. ३—रिन्. ४ चेतस्. ५ हृद्. ६ उ—ब्धि. ७—त्. ८—द्. ९—द्. १०—र. ११—ह.

प्राणी, चेतनः, जन्मी, जन्तुः, जन्युः, शरीरी, ये ६ प्राणियों के नाम हैं, ॥ ८ ॥ जातिः, जातं, सामान्यं, ये ३ घटत्त्व आदि जाति के नाम हैं, व्यक्तिः, पृथगात्मिका, ये २ घट आदि व्यक्ति वा स्वरूप के नाम हैं; । चित्तं चेतः, हृदयं, स्वान्तं, हृत्, मानसं, मनः, मन शब्द को पुल्लिङ्ग और नपुंसक दोनों कोई लोग मानते हैं, ये ७ चित्त अर्थात् मन के नाम हैं, हृद् दकारान्त है; ॥ ९ ॥ बुद्धिः, मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, "और भी प्राज्ञा" शेमुषी, "उसी प्रकार सेमुषी" मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः, चित्, संवित्, प्रतिपत्, ज्ञप्तिः, चेतना, ये १४ बुद्धि के नाम हैं, इनमें चित् तकारान्त—संवित्—और प्रतिपत्—ये दकारान्त हैं; ॥ १० ॥ जो धारणावती धी अर्थात् बुद्धि है उसे मेधा कहते हैं; (एकं) और जो मानसव्यापार है उसे संकल्पः, "और विकल्पः भी कहते हैं", "अवधानं, समाधानं, प्रणिधानं, ये ३ समाधान के नाम हैं" चित्ताभोगः, मनस्कारः, "उसी प्रकार मनसिकारः" ये २ सुख आदि में तत्पर मन के नाम हैं; चर्चा, संख्या, विचारणा, "और भी चर्चनं, संख्यानं, और विचारः" ये ३ प्रमाणों से अर्थ परीक्षण के नाम हैं, ॥ ११ ॥ अध्याहारः, तर्कः, ऊहः, "उसी प्रकार ऊहा" ये ३ तर्क के नाम हैं, "अपूर्व का उत्प्रेक्षण तर्क वा विचार है", विचिकित्सा, संशयः, ॥

	पु पु
	सन्देह-द्वापरौ (च)
	पु पु
निश्चय ज्ञान ।	(ऽथसमौ) निर्णय-निश्चयौ ॥ १२ ॥
	स स
मिथ्या ज्ञान ।	मिथ्यादृष्टि-र्नास्तिकता
	पु न
परद्रोह ।	व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।
	पु पु
सिद्धान्त ।	(समौ) सिद्धान्त-राद्धान्तौ
	स स पु
भ्रमज्ञान ।	भ्रान्ति-र्मिथ्यामति-र्भ्रमः ॥ १३ ॥
	१स २स न पु ३पु पु
स्वीकार ।	संवि-दागूः प्रतिज्ञानं नियमा-श्रव-संश्रवाः ।
	पु ४पु पु ५पु
	अङ्गीकारा-ऽभ्युपगम-प्रतिश्रव-समाधयः ॥ १४ ॥
	न
ज्ञान ।	(मोक्षे धी)-र्ज्ञानं
	न
विज्ञान ।	(अन्यत्र) विज्ञानं (शिल्पशास्त्रयोः) ।
	स न न ६न न न७
मोक्ष ।	मुक्तिः कैवल्य-निर्वाण-श्रेयो-निःश्रेयसा-ऽमृतम् ॥ १५ ॥

१—द. २ आगूः वा आगुर्. ३ आ—. ४ अ—. ५—धि. ६ श्रेयस्. ७ अ—.

सन्देहः, द्वापरः, ये ४ संशय ज्ञान के नाम हैं, निर्णयः, निश्चयः, ये २ निश्चयज्ञान के नाम हैं, ॥ १२ ॥ मिथ्यादृष्टिः, नास्तिकता, ये २ परलोक के अभाववादी ज्ञान के नाम हैं, "(नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य तस्य भावो नास्तिकता)"; व्यापादः, द्रोहचिन्तनं, ये २ परद्रोह के चिन्तन के नाम हैं; सिद्धान्तः, राद्धान्तः, ये २ सिद्धान्त के नाम हैं; "(सिद्धो अन्तोनिर्णयो यस्य स सिद्धान्तः)" भ्रान्तिः, मिथ्यामतिः, भ्रमः, ये ३ अयथार्थ ज्ञान के नाम हैं, "(स्थाणौ पुरुषोयमितिज्ञानं भ्रान्तिः, स्थाणुर्वा पुरुषो वा ऽयमित्येक कोटिकं ज्ञानं संशयः, स्थाणौ स्थाणुरितिज्ञानं निश्चयः)"; ॥ १३ ॥ संवित्, आगूः, "एक वचन आगूः, और बहु वचन आग्वः, और आगूम्, वा आग्वम्, परन्तु आगूः (र्) आगुरं" प्रतिज्ञानं, नियमः, आश्रवः, संश्रवः, अंगीकारः, अभ्युपगमः, प्रतिश्रवः, समाधिः, ये १० अंगीकार के नाम हैं, इनमें संवित्, और आगूः ये २ स्त्रीलिङ्ग हैं, "आगूर्वधूवत्, आग्वौ, आग्वः, इत्यादि, पक्षे धूर्वत्, आगुरौ, आगुरः", इत्यादि, ॥ १४ ॥ मोक्ष के विषय में जो बुद्धि है उसे ज्ञानं, "और धीः" कहते, हैं (एकं) मोक्षशास्त्र से भिन्न शिल्पशास्त्र और चित्र आदि में जो धीः बुद्धि है उसे विज्ञानं कहते हैं, (एकं) मुक्तिः, कैवल्यं, निर्वाणं, श्रेयः, निःश्रेयसं, अमृतम्, ॥ १५ ॥

	पु पु मोक्षो ऽपवर्गो
अज्ञान ।	१न २स ३स (ऽथा) ऽज्ञान मविद्या ऽहम्मतिः (स्त्रियाम्) ।
विषय ।	न पु पु पु ४पु रूपं शब्दो गन्ध-रस-स्पर्शाश् (च) पु विषया (अमी) ॥ १६ ॥
	पु ५पु गोचरा इन्द्रियार्थाश् (च)
इन्द्रिय ।	न ६न ७न हृषीकं विषयी न्द्रियम् ।
कर्म्मेन्द्रिय ।	न कर्म्मेन्द्रियं (तु पाय्वादि)
ज्ञानेन्द्रिय ।	न (मनो नेत्रादि) धीन्द्रियम् ॥ १७ ॥
रस ।	८पुन पुन तुवरस् (तु) कषायो (ऽस्त्री)
मधुर आदि ।	पु पु पु मधुरो लवणः कटुः ।
तीत आदि ।	पु ९पु तिक्तो ऽम्लश् (च) रसाः (पुंसि) (तद्वत्सु षड़मी त्रिषु) ॥ १८ ॥

१ अ–. २ अ–. ३ अ–. ४ स्पर्श. ५–र्थ. ६–यिन्. ७ इ–. ८–र. ९ अम्ल.

मोक्षः, अपवर्गः ये ८ मोक्ष के नाम हैं; अज्ञानं, अविद्या, अहंमतिः, ये ३ अज्ञान के नाम हैं, रूपं, शब्दः, रसः, गन्धः, स्पर्शः, ये ५ बहु॰ व॰ विषयाः गोचराः, इन्द्रियार्थाः, एक॰ व॰ विषय, गोचर, और इन्द्रियों के अर्थ कहे जाते हैं, (त्रयं), ॥ १६ ॥ हृषीकं, विषयि, इन्द्रियं, ये ३ चक्षु आदि इन्द्रियों के नाम हैं, पायू, उपस्थ, आदि कर्म्मेन्द्रिय कहलाती हैं, आदि शब्द से वाक्–पाणि–पाद–आदि का ग्रहण करते हैं, "जैसे पायू–उपस्थ–पाणि–पाद–वाक्–ये इन्द्रियों के संग्रह हैं, और उत्सर्ग–आनन्द–आदान, गति–आलाप–ये क्रम से उन की क्रिया हैं" मन, नेत्र, आदि ज्ञानेन्द्रिय हैं, आदि पद से श्रोत्र आदि का ग्रहण करते हैं, जैसे, "कर्ण, नेत्र–रसना–त्वचा–नासिका–और मन–ये ६ ज्ञाने–न्द्रिय कहलाती हैं, (एकं) ॥ १७ ॥ अब रसके भेद कहते हैं तुवरः, "और भी तूवरः, वा कुवरः" कषायः, ये २ तुवर अर्थात् प्राकृत भाषा में कडुआ इस् प्रसिद्ध के नाम हैं, मधुर आदि पृथक २ रस जाने जाते हैं, इसी प्रकार तुवर आदि ६ भी रस कहे जाते हैं, इन्में तुवरः हरीत की आदि में प्रसिद्ध है, मधुरः, जल आदि में प्रसिद्ध है, लवणः सैन्धव आदि में प्रसिद्ध है, कटुः, "स्त्री कटुः, वा कट्वी" मरिचा आदि में प्रसिद्ध है, तिक्तः, नीव आदि में प्रसिद्ध है, अम्लः, अमिली आदि मे प्रसिद्ध है, "और भी अम्ब्लः" ये तुवर आदि ६ रस रसमात्र में वर्त्तमान पुल्लिङ्ग हैं, और जब रसवानों में वर्त्तमान हैं तब तीनो लिङ्गो में हैं, अर्थात् वाच्य लिङ्ग हैं, अस्त्री के कहने से तुवर और कषाय नपुसकलिङ्ग भी हैं, ॥ १८ ॥

	पु
सुगन्ध वा अतर।	(विमर्दोत्थे) परिमलो (गन्धेजनमनोहरे)।
	पु
खुशबू।	आमोदः (सोऽति निर्हारी)
	(वाच्यलिङ्गत्त्व मागुणात्) ॥ १९ ॥
	१पु २पु
बड़ी दूर जानेवाला सुगन्ध।	समाकर्षी (तु) निर्हारी
	पु पु
बड़ा सुगन्ध।	सुरभि-घ्राणतर्पणः।
	पु पु
	इष्टगन्धः सुगन्धिः (स्याद्)
	३पु पु
पान।	आमोदी मुखवासनः ॥ २० ॥
	४पु ५पु
दुर्गन्ध।	पूतिगन्धिस् (तु) दुर्गन्धो
	न ६न
बिना पके मांस का गन्ध।	विस्रं (स्याद्) मगन्धि (यत्) ॥ २१ ॥
	पु पु पु पु पु पु पु
उजला।	शुक्ल-शुभ्र-शुचि-श्वेत-विशद-श्येत-पाण्डुराः।

१-र्पिन्. २-रिन्. ३-दिन्. ४-न्धि. ५-न्ध. ६ आ-.

विमर्द से उठे अर्थात् संघर्षण की अग्नि से उत्पन्न और जनों के मन के हरने वाले गन्ध को परिमलः कहते हैं, विमर्द के ग्रहण से जाति-पद्म आदि का निरास है, (एकं) और जो अति निर्हारी और अति समाकर्षी गन्ध है उसे आमोदः कहते हैं, (एकं) इस से आगे आगुणात् अर्थात् गुणेशुक्लादयः इस वक्ष्यमाण गुण शब्द से पूर्व वाच्य लिङ्गत्वं अर्थात् अभिधेय के अनुसार तीनों लिङ्ग होते हैं, ॥ १९ ॥ समाकर्षी, निर्हारी, ये २ दूर से गिरने वाले गन्धद्रव्य के नाम हैं "(निर्हरत्यवश्यं मनो निर्हारी)" सुरभिः, "स्त्री सुरभी" घ्राणतर्पणः, इष्टगन्धः, सुगन्धिः, "स्त्री. सुगन्धी" ये ४ शोभन गन्ध से युक्त गन्धद्रव्य के नाम हैं, "(शोभनोगन्धो ऽस्य सुगन्धिः)" आमोदी, मुखवासनः, "और भी शुभ वासनः" ये २ जो मुख को वासित कर्त्ता है ताम्बूल आदि उस के नाम हैं, ॥ २० ॥ पूतिगन्धिः, दुर्गन्धः, "और भी दुर्गन्धी (न)" ये २ अनिष्ट गन्ध से युक्त द्रव्य के नाम हैं, "(पूतिः दुष्टः गन्धो यस्य सः)" जो आमगन्धि है उसे विस्रं, "उसी प्रकार विश्रं" कहते हैं, "वा और आम अपक्व मांस है उस के तुल्य गन्ध अर्थात् बिना पके मांस आदि का गन्ध है जिस में वह" शुक्लः, शुभ्रः, शुचिः, श्वेतः, "स्त्री. श्वेता, और श्येता, वा श्येनी" विशदः, "और भी विषदः" श्येतः, पाण्डुरः, ॥ २१ ॥

	पु पु पु पु पु पु अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ॥ २२ ॥
कुछ उजला और पीला ।	पु पु १पु हरिणः पाण्डुरः पाण्डुर्
कुछ उजला ।	पु (ईषत्पाण्डुस्तु) धूसरः ।
काला ।	पु पु २पु पु पु पु पु कृष्णो नीला-सित-श्याम-काल,श्यामल-मेचकाः ॥ २३ ॥
पीला ।	पु पु पु पीतो गौरो हरिद्राभः
हरा ।	पु पु पु पालाशो हरितो हरित् ।
लाल ।	पु पु पु रोहितो लोहितो रक्तः
लाल कमल ।	पु पु शोणः कोकनदच्छविः ॥ २४ ॥
थोड़ा लाल ।	३पु (अव्यक्तरागस्त्व)-ऽरुणः
श्वेत और लाल ।	पु (श्वेतरक्तस्तु) पाटलः ।
बानर के समान रङ्ग ।	पु पु श्यावः (स्यात्) कपिशो
धूमिल ।	पु पु पु धूम्र-धूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २५ ॥

१—ण्डुः. २ अ—. ३ अ—.

अवदातः, सितः, "स्त्री॰ सिता" वलक्षः, "उसी प्रकार अवलक्षः" धवलः, अर्ज्जुनः, ॥ २२ ॥ हरिणः, पाण्डुरः, पाण्डुः, ये १६ शुक्ल के अर्थात् सफेद के नाम हैं, इनमें अर्जुनपद पर्य्यन्त शुक्ल के त्रयोदश नाम हैं, और हरिण आदि ३ पीत से मिले शुक्ल के नाम हैं, यह विभाग है, सो उत्तम है, "(शब्दार्णव में तो, श्वेतस्तु सम पीतो सौ रक्तेतरजपारुचिः। वलक्षस्तुसितः शावः कदली कुसुमोपमः। अर्ज्जुनस्तु सितः कृष्णलेशवान् कुमुदच्छविः। पाण्डुस्तु पीतभागार्द्धः केतकीधूलिसन्निभः इत्युक्तम्। हरिणौ पाण्डु सारंगाविति हैमः।)" इषत्पाण्डुः, धूसरः ये २ थोड़े सफेद के नाम हैं, कृष्णः, नीलः, "स्त्री॰ नीला" असितः, श्यामः, कालः, श्यामलः, मेचकः, ये ७ काले वर्ण के नाम हैं, ॥ २३ ॥ पीतः, गौरः, हरिद्राभः, ये ३ पीले वर्ण के नाम हैं, पालाशः, "और भी पलाशः" हरितः, हरित्, ये ३ शिरीष आदि के पत्ते के वर्ण के समान वर्ण अर्थात् हरा के नाम हैं, हरित् तान्त है, रोहितः, लोहितः, "स्त्री॰ हरिता, वा हरिणी, स्त्री॰ रोहिता, वा रोहिणी, और लोहिता, वा लोहिनी" रक्तः, "स्त्री॰ रक्ता" ये ३ रक्त अर्थात् लालरङ्ग के नाम हैं, शोणः, "स्त्री॰ शोणा, वा शोणी" कोकनदच्छविः, ये २ लाल कमल के तुल्य कान्ति वाले के नाम हैं, ॥ २४ ॥ जो थोड़ा लाल है उसे अरुणः, कहते हैं, और जो श्वेत से-मिला लाल है उसे पाटलः, कहते हैं, (एकैकं) श्यावः, कपिशः, ये २ धूसर और अरुण वर्ण के नाम हैं, "(कपिः मर्कटः तद्वद्वर्णोऽस्त्यस्य कपिशः)" धूम्रः, धूमलः, कृष्णलोहितः, ये ३ कृष्ण से मिले लाल वर्ण के नाम हैं, ॥ २५ ॥

पीतावर्ण ।	पु पु पु पु पु पु कडारः कपिलः पिङ्ग-पिशङ्गौ कद्रु-पिङ्गलौ ।
चित्रविचित्र ।	पुन पु पु पु १पु पु चित्रं किर्मीरः कल्माष शबलैता (श्च) कर्बुरे ॥ २६ ॥
	(गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति) ।

॥ इति धीवर्गः ॥

—o—

॥ अथ षष्ठवर्गः ॥

सरस्वती ।	स स स २स ३स स स ब्राह्मी (तु) भारती भाषा गीर् वाग् वाणी सरस्वती ।
बोलना ।	पु स न न न ४न व्याहार उक्ति-लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥
अपशब्द ।	पु पु अपभ्रंशो ऽपशब्दः (स्याच्)
शब्द ।	पु पु (छास्त्रे) शब्द (स्तु) वाचकः ॥ २ ॥

१ एत. २ गिर्. ३ वाच्. ४—स्.

कडारः, कपिलः, पिङ्गः, पिशङ्गः, "स्त्री॰ पिशङ्गी" कद्रुः, "कोई पढ़ता है बभ्रुः" पिङ्गलः, "स्त्री॰ पिङ्गला" ये ६ पीले वर्ण के नाम हैं, और ये अत्यन्त गौड वर्ण बालक के केश में प्रसिद्ध हैं, चित्रं, किर्मीरः, "और भी कर्मीरः" कल्मापः, शबलः, एतः, "स्त्री॰ एता, वा एनी" कर्बुरः, "और भी कर्वरः" ये ६ कर्बुर के अर्थात् चित्र विचित्र के नाम हैं, शुक्ल आदि शब्द गुणमात्र में वर्तमान पुलिङ्ग हैं, और चित्रं यह रूपभेद से नपुंसक है, जैसे इस पट का शुक्ल रूप है, तैसे गुणवान वस्तु में वर्तमान अभिधेय अर्थात् विशेष्य के समान लिङ्ग है, जैसे शुक्ला शाटी, शुक्लः पटः, शुक्लं वस्त्रं, ॥ इति धीवर्गः ॥

ब्राह्मी, भारती, भाषा, गीः, "उसी प्रकार गिरा" वाक्, "और भी वाचा" वाणी, "उसी प्रकार वाणिः", सरस्वती, व्याहारः, उक्तिः, लपितं, भाषितं, वचनं, वचः, ये १३ वचन के नाम हैं, इनमें भी सरस्वती शब्द पर्यन्त वचन के अधिष्ठातृ देवता के नाम हैं, और व्याहार आदि अधिष्ठेय वस्तु अर्थात् वचन के नाम हैं, गीः रेफान्त है, ॥ १ ॥ संस्कृत से अपभ्रंश अर्थात् नीचे गिरे शब्दों को अपभ्रंशः, "और भी अपभ्रंसः" अपशब्दः, ये २ नाम हैं, जैसे, गावी-गोणी-आदि शब्द अपशब्द हैं, (द्वे) शास्त्र व्याकरण आदि शास्त्र में जो वाचक शब्द है उसे शब्दः कहते हैं, जैसे ओत और प्रोत तन्तुओं का वाचक पट है, ॥ २ ॥

वाक्य ।	(तिङ् सुबन्तचयो) वाक्यं न (क्रिया वा कारकाऽन्विता) ।
वेद ।	श्रुतिः स (स्त्री) वेद पु आम्नायस् पु त्रयी
धर्म्म ।	धर्म्म पु (स्तु तद्विधिः) ॥ ३ ॥
वेद भेद ।	(स्त्रियां) ऋक् १स साम २न यजुषी ३न
वेद समुदाय ।	(इति वेदास्त्रयस्) त्रयी स ।
वेदाङ्ग ।	(शिक्षेत्यादि श्रुतेर्) ङ्गम् ४न
वेदारम्भ ।	ओङ्कार पु-प्रणवौ पु (समौ) ॥ ४ ॥
कथा ।	इतिहासः पु पुरावृत्तं पु
स्वर ।	(उदात्ताद्यास्त्रयः) स्वराः पु ।
न्याय ।	आन्वीक्षिकी स दण्डनीतिस् स (तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः) ॥ ५ ॥
कहानी ।	आख्यायिका ५स (पलब्धार्था)
पुराण ।	पुराणं न पञ्चलक्षणम् न ।

१ ऋच्. २ सामन्. ३ यजुस्. ४ अंग. ५—का.

तिङन्त और सुबन्त के पदसमूह को वाक्यं कहते हैं, तिङन्त पदसमूह जैसे, पचति-भवति-पाको भवतीत्यर्थः, सुबन्त पदसमूह जैसे, प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम् । अथवा कारकों से सम्बन्धित क्रिया को वाक्यं कहते हैं, जैसे, देवदत्त गामभिरक्ष शुक्लदण्डेन, यहां अन्वितत्वतो आकांक्षा—योग्यता—सन्निधि के वसते जानना चाहिये, श्रुतिः, वेदः, आम्नायः, त्रयी, ये ४ वेद के नाम हैं, यहां स्त्री इस विशेष विधान से लिङ्गसंकर दोष के लिये नहीं है, तद्विधिः अर्थात् वैदिक विधि यज्ञ आदि को धर्म्मः, "वा धर्मः" कहते हैं, ॥ ३ ॥ त्रयी शब्द में विशेष दिखलाते हुये वेदों के भेद कहते हैं, ऋक्, साम, यजुः, ये तीनों वेद मिल कर त्रयी कहलाते हैं, इनमें ऋक् शब्द स्त्रीलिङ्ग है, शिक्षा, कल्प, और व्याकरण आदि वेद के अङ्ग हैं, "(शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषांगणः, छन्दो विचितिरित्येषः, षडङ्गो वेद उच्यते, कल्पः कल्पसूत्रं)" ओंकारः, प्रणवः, ये २ वेदारम्भ के नाम हैं, ॥ ४ ॥ इतिहासः, पुरावृत्तं, ये २ पूर्व चरित महाभारत आदि के नाम हैं, उदात्तः, आदि पद से अनुदात्तः स्वरितः, ये ३ एकवचन स्वरः, बहुवचन स्वराः कहलाते हैं, आन्वीक्षिकी, यह १ गौतम आदि की बनायी तर्कविद्या अर्थात् न्यायशास्त्र का नाम है, दण्डनीतिः यह १ बृहस्पति का बनाया अर्थशास्त्र अर्थात् नीतिशास्त्र का नाम है, "(अर्थस्य भूम्यादेः प्रापकं शास्त्रं अर्थशास्त्रम्)" ॥ ५ ॥ आख्यायिका, उपलब्धार्था, ये २ अनुभूत वा जाने अर्थ के प्रतिपादक वासवदत्ता आदि ग्रन्थ के नाम हैं, जिसमें पांच लक्षण हैं उसे पुराणं, और पंचलक्षणं कहते हैं, कहा है कि, "(सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्)" ॥ १ ॥

	स
कथा ।	(प्रबन्धकल्पना) कथा स स
दूसारा ।	प्रवह्लिका प्रहेलिका ॥ ६ ॥
	स स
स्मृति ।	स्मृति (स्तु) धर्म्मसंहिता स पु
एकट्ठा करना ।	स स समाहृति (स्तु) सङ्ग्रहः ।
पूरा करना ।	समस्या (तु) समासार्था स स
गौगा ।	किंवदन्ती जनश्रुतिः ॥ ७ ॥
	स स पु पु
कुशल आदि ।	वार्त्ता प्रवृत्ति-र्वृत्तान्त उदन्तः (स्याद्) १पु
नाम ।	(अथा) ह्वयः ।
	स २स ३न न
	आख्या-ह्वे (चा) भिधानं (च) नामधेयं
	४न
	(च) नाम (च) ॥ ८ ॥
	५स ६स ७न
पुकारना ।	हूति राकारणा ह्वानं स
गल्ल वा गप्प ।	पु पु संहूति-(र्बहुभिः कृता) ।
झगड़ा ।	विवादो व्यवहारः (स्याद्)
	पु न
आरम्भ ।	उपन्यास (स्तु) वाङ्मुखम् ॥ ९ ॥

१ आ–. २ आह्वा. ३ अ–. ४–न्. ५–ति. ६ आ–. ७ आ–.

प्रवन्ध अर्थात् वाक्य के विस्तार की कल्पना रुप रचना को कथा कहते हैं, (एकं) जैसे नाटक और रामायण आदि; प्रवह्लिका, "और भी प्रवह्लि, वा प्रवह्ली" प्रहेलिका, "उसी प्रकार प्रहेलिः" ये २ दूसरे से संदिग्ध तथा गुप्त कथन के नाम हैं, जैसे "(पानीयं पातुमिच्छामि त्वत्तः कमललोचने। यदि दास्यसि नेच्छामि नो दास्यसि पिवाम्यहं॥ और भी, व्यक्तीकृत्यकमप्यर्थं स्वरुपार्थस्य गोपनात्। यत्र वाह्यार्थसवन्धं कथ्यते सा प्रहेलिका)"; ॥ ६ ॥ जिसे मनु आदि ने वनाया है उसे धर्म्मसंहिता, कहते हैं, और वही स्मृति भी कहलाती है; समाहृतिः, संग्रहः, ये २ सङ्ग्रह ग्रन्थ के नाम हैं, जो पूरणीयार्थ है उसे समस्या, समासार्था, "और भी समस्यार्था, और असमाप्त्यर्था" ये २ नाम से कहे जाते हैं, जैसे, "(शतचन्द्रं नभस्तलं, तत्पूरणं यथा, दामोदरकराघात विव्हलीकृतचेतसा। दृष्टं चाणूरमल्लेन)"; किंवदन्ती, "और भी किंवदन्तिः" जनश्रुतिः, ये २ चार अक्षर के पद.लोक प्रवाद के वा गौगा के नाम हैं; ॥ ७ ॥ वार्ता, प्रवृत्तिः, वृत्तान्तः, उदन्तः, ये ४ यथास्थित लोक वृत्तान्त कथन के नाम हैं, आह्वयः, आख्या, आह्वा, अभिधानं, "उसी प्रकार स्त्री, अभिधा, अभिख्या, और संज्ञा आदि" नामधेयं, नाम, ये ६ पुकारने के नाम के नाम हैं; ॥ ८ ॥ हूतिः, "और भी आहूतिः", आकारणा, "उसी प्रकार स्त्री, आकरणा, और आकारणा," आह्वानं, ये ३ आह्वान–वा पुकारने के नाम हैं, जो वहुत जनों से करीहूति है उसे संहूतिः, कहते हैं; (एकं) विवादः, व्यवहारः, "और भी व्यवहरणं" ये २ ऋण आदि के देने और लेने के निमित्त विविध प्रकार वाद के नाम हैं; उपन्यासः, वाङ्मुखं, ये २ वचन के आरम्भ के नाम हैं; ॥ ९ ॥

	पु पु
चिन्ता-वा उदाहरण ।	उपोद्घात-उदाहार:
	न पु
सपथ-वा सौगन्ध ।	शपनं शपथ: (पुमान्) ।
	पु पु स
प्रश्न-वा पूछना ।	प्रश्नो ऽनुयोग: पृच्छा (च)
	न १न
उत्तर ।	प्रतिवाक्योत्तरे (समे) ॥ १० ॥
	पु न
सत्यको झूठ करना ।	मिथ्याभियोगो ऽभ्याख्यानम्
	न
झूठ दोष लगाना ।	(अथ) मिथ्याभिशंसनम् ।
	पु
	अभिशाप:
	पु
प्रीति से उत्पन्न-शब्द ।	प्रणाद (स्तु शब्दस्यादनुरागज:) ॥ ११ ॥
	२न स स
यश ।	यश: कीर्त्ति: समाज्ञा (च)
	पु न स स
स्तुति ।	स्तव: स्तोत्रं स्तुति-र्नुति: ।
	न
बार २ ।	आम्रेडितं (द्विस्त्रिरुक्तम्)
	न स
ऊंचे पढ़ना ।	उच्चैर्घुष्टं (तु) घोषणा ॥ १२ ॥
	स
शोक आदि से बोलना ।	काकु: (स्त्रियां विकारो य: शोकभीत्यादिभिर्ध्वने:) ।
	पु ३पु पु पु ४पु
निन्दा ।	अवर्णा-क्षेप-निर्वाद-परीवादा-पवाद (वत्) ॥ १३ ॥
	पु स स स न
	उपक्रोशो जुगुप्सा (च) कुत्सानिन्दा (च) गर्हणे ।

१ उ-. २-स्. ३ आ-. ४ अ-.

उपोद्घातः, उदाहारः, "उसी प्रकार उदाहरणं" ये २ प्रकृत सिद्धि के अर्थ चिन्तन के नाम हैं, और कहा भी है, "(चिन्तां प्रकृतसिध्यर्थामुपोद्घातं प्रचक्षते)"; शपनं, "और भी शापः" शपथः, ये २ शपथ वा सौगंध के नाम हैं; प्रश्नः, "उसी प्रकार प्रश्नं" अनुयोगः, पृच्छा, ये ३ प्रश्न के नाम हैं; प्रतिवाक्यं, "और भी प्रतिवचनं", उत्तरं, ये २ समाधान अर्थात् उत्तर के नाम हैं; ॥ १० ॥ मिथ्याभियोगः, अभ्याख्यानं, ये २ सत्य के मिथ्या करने के नाम हैं; मिथ्याभिशंसनं, अभिशापः, "उसी प्रकार अभिशपनं" ये २ सुरापान आदि मिथ्या पाप के प्रगट करने के नाम हैं; गुण के अनुराग से उत्पन्न शब्द को प्रणादः, कहते हैं, "और भी प्रणदनं"; ॥ ११ ॥ यशः, कीर्त्तिः, "उसी प्रकार कीर्त्तना" समाज्ञा, "और भी समज्ञा, समज्या, और समाख्या" ये ३ कीर्त्ति के नाम हैं; स्तवः, स्तोत्रं, स्तुतिः, नुतिः, ये ४ स्तुति के नाम हैं; दो बेर कहने को आम्रेडितं, कहते हैं, जैसे-सर्पः-सर्पः, (एकं); उच्चैर्घुष्टं, घोषणा, ये २ ऊंचे स्वर से घोषण वा पढ़ने के नाम हैं, शोक-भीति-और काम आदि के ध्वनि से जो विकार उत्पन्न है उसे काकुः, कहते हैं; (एकं); अवर्णः, "वर्णः प्रशंसा इससे विरुद्ध अवर्ण है" आक्षेपः, निर्वादः, परीवादः, "उसी प्रकार परिवादः" अपवादः, ॥ १३ ॥ उपक्रोशः, जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा, गर्हणः, ये १० निन्दा के नाम हैं, अपवादवत् इस वत् प्रत्यय से अवर्ण आदि उपक्रोश तक पुल्लिङ्ग है; ।

	न १पु
कठोर ।	पारुष्य मभिवादः (स्यात्) न २अ
डराना ।	भर्त्सनं (त्व) पकारगीः ॥ १४ ॥
	न
बोलना वा खिझाना ।	(यः सनिन्द उपालम्भ स्तत्रस्यात्) परिभाषणम् ।
	३सन
निन्दा करना ।	(तत्र त्वा) त्तारणा (यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति) ॥ १५ ॥
	४न ५पु
प्रिय बोलना ।	(स्याद्) आभाषण मालापः पु
बकना ।	प्रलापो (ऽनर्थकं वचः) ।
	पु स
बार २ कहना ।	अनुलापो मुहुर्भाषा पु न
रोना ।	विलापः परिदेवनम् ॥ १६ ॥
	पु स
उलटा कहना ।	विप्रलापो विरोधोक्तिः पु
परस्पर कहना ।	संलापो (भाषणं मिथः) ।
	प न
सुन्दर कहना ।	सुप्रलापः सुवचनं पु पु
छिपाना ।	अपलाप (स्तु) निह्नवः ॥ १७ ॥
	६पुस न
दूतका कहना ।	सन्देशवाग वाचिकं (स्याद्)
	(वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे) ।
	पुस
अकल्याणक ।	उषती (वागकल्याणी) स
कल्याणक ।	(स्यात्) कल्या (तु शुभात्मिका) ॥ १८ ॥

१ अ—. २ अ—र्. ३ आ—. ४ आ—. ५ आ—. ६—च.

पारुष्यं, अभिवादः "उसी प्रकार अतिवादः" ये २ कठोर कहने के नाम हैं, "जो अपकार के लिये कहना है अर्थात् चोर है तुझे मारूंगा इस आदि" इसे भर्त्सनं कहते हैं, (एकं); ॥ १४ ॥ जो निन्दा सहित उपालम्भ अर्थात् कथन है उसे परिभाषणं, कहते हैं, (एकं) "उपालम्भ दो प्रकार के हैं, गुण का प्रकाश करना, वा निन्दा का प्रकाश करना, प्रथम जैसे हे महा कुलीन आप को क्या यह उचित है, दूसरा जैसे हे पुंश्चली के लड़के तुझे यही उचित है, इनमें दूसरा परिभाषणं, कहलाता है"; मैथुन के निमित्त पर स्त्री और पुरुष के संयोग के हेतु जो आक्रोश है उसे आत्तारणा, "और भी त्तारणा, वा न॰ आत्तारणं" कहते हैं; ॥ १५ ॥ आभाषणं, आलापः, ये २ परस्पर सम्बोधन पूर्व्वक कथन के नाम हैं; जो अनर्थक वचन है उसे प्रलापः, कहते हैं; अनुलापः, मुहुर्भाषा, ये २ बहुत भाषण के नाम हैं; विलापः, परिदेवनं, ये २ रोदन पूर्व्वक भाषण के नाम हैं; ॥ १६ ॥ विप्रलापः, विरोधोक्तिः, ये २ परस्पर विरुद्ध भाषण के नाम हैं; परस्पर उक्ति और प्रत्युक्ति से जो युक्त भाषण है उसे संलापः, कहते हैं, और "आलापः, यह तो एकही कर सकता है"; सुप्रलापः, सुवचनं, ये २ सुन्दर भाषण के नाम हैं; अपलापः, निह्नवः, ये २ गुप्त—वा छिपाने के नाम हैं, "जैसे वह मिथ्या है, यह कहना अपलापः और निह्नवः, है" ॥ १७ ॥ सन्देशवाक्, वाचिकं, ये २ दूत आदि के मुख से निकले वचन के नाम हैं; उत्तरे अर्थात् इसके आगे वक्ष्यमाण वाक् भेद हैं "उशती आदि सम्यग् अन्त" ये सब त्रिलिङ्ग हैं, जैसे जो उशन शब्द है वह उशन वचन है, जो अकल्याणी वाक् है वह उशती, "उसी प्रकार पुं॰ उषन्, स्त्री॰ उषती, न॰ उषत्, और भी रुशती, पुं॰ रुशन् आदि" कहलाती हैं, (एक और तान्त है); जो शुभात्मिका वाक् है वह कल्या, "उसी प्रकार काल्या" कहलाती है, "(एक और तालव्यान्त है)" ॥ १८ ॥

मधुर कहना।	(अत्यर्थमधुरं) सांत्वं न
ठीक कहना।	न न संगतं हृदयंगमम् । न न
कर्कश कहना।	निष्ठुरं परुषं
ढीला करना।	न १न ग्राम्य मश्लीलं
प्रिय और सत्य क·	न सूनृतं (प्रिये ॥ १९ ॥
	सत्ये)
असम्भव कहना।	न न न (अथ) सकुल-क्लिष्टे परस्परपराहते ।
ग्रस्त।	न (लुप्तवर्णपदं) ग्रस्तं
धमकाया।	न न न न निरस्तं त्वरितोदितम् ॥ २० ॥
थूंक सहित कहना।	(अम्बूकृतं) सनिष्ठेवं न २न
अर्थशून्य।	न ३न अबद्धं (स्याद्) ऽनर्थकम् ।
अवाच्य।	अनक्षर मवाच्यं (स्याद्) न न
असम्भावित।	न ४न आहतं (तु) मृषार्थकम् ॥ २१ ॥
अस्पष्ट।	(अथ) म्लिष्टमविस्पष्टं न ५न
असत्य।	न न ६न ७न वितथं (त्व) नृतं (वचः) ।
सत्य।	सत्यं तथ्य मृतं सम्यग्
	(अमूनि त्रिषु तद्वति) ॥ २२ ॥

१ अ–. २ अ–. ३ अ–. ४ अ–. ५ अ–. ६ ऋत. ७ सम्यच्.

जो अत्यर्थ मधुर है उसे सांत्वं कहते हैं; (एकं) संगतं, हृदयंगमं, ये २ सम्बद्ध वचन के नाम हैं; निष्ठुरं, परुषं, ये २ कर्कश वचन के नाम हैं; ग्राम्यं, अश्लीलं, ये २ शिथिल वचन के नाम हैं, जो प्रिय और सत्य वचन है उसे सूनृतं कहते हैं; (एकं) ॥ १९ ॥ जो परस्पर से पराहत है "जैसे मेरी मा वन्ध्या है" अर्थात् पूर्व और पर से जो विरुद्ध है उसके संकुलं, क्लिष्टं ये २ नाम हैं, जैसे बिना आंखि देखता है, बिना कान सुनता है; जो लुप्त वर्ण पद अर्थात् असंपूर्ण उच्चारित वचन है उसे ग्रस्तं, कहते हैं; (एकं) जो त्वरित उदित वचन है उसे निरस्तं कहते हैं; ॥ २० ॥ निष्ठीव अर्थात् लाला युक्त जो वचन है उसे अम्बूकृतं, सनिष्ठेवं, "वा सनिष्ठीवं" कहते हैं, (एकं) जो अर्थ शून्य वचन है उसे अबद्धं कहते हैं, (एकं) "अबध्यमपि"; "(अबध्यमवधार्हस्यादनर्थकवचस्यपीतिदर्शनात्)"; अनक्षरं, (न प्रशस्तान्यक्षराणि यस्मिन् तत्) अवाच्यं, ये २ कहने के अयोग्य वचन के नाम हैं; मृषार्थकं अर्थात् अत्यन्त अभूतार्थक जो वचन है उसे आहतं कहते हैं, जैसे यह वन्ध्यासुत जाता है; ॥ २१ ॥ म्लिष्टं, अविस्पष्टं, ये २ अव्यक्त वचन के नाम हैं; जो अनृत वचन है जैसे धन होते पर धनहीन है उसे वितथं कहते हैं, (एकं) सत्यं, तथ्यं, ऋतं, सम्यक्, "पुं· सम्यङ्, स्त्री· समीची, न· सम्यक्" ये २ सत्य के नाम हैं, सम्यक् चकारान्त है; पहिले वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे इस वचन की प्रवृत्ति से सत्यादिक को तीनो लिङ्ग हैं, अर्थात् ये सब सत्यवति वस्तु में त्रिलिङ्ग हैं, जैसे सत्या स्त्री, सत्यः पुमान्, सत्यंकुलं, आदि, ॥ २२ ॥

शब्द ।	पु पु पु पु पु पु पु शब्दे निनाद-निनद-ध्वनि-ध्वान-रव-स्वनाः । पु पु पु पु पु पु स्वान-निर्घोष-निर्ह्राद-नाद-निस्वान-निस्वनाः ॥ १ ॥ पु [1]पु पु पु आरवा-राव-संराव-विरावा
खड़खड़ाना ।	पु (अथ) मर्मरः । (स्वनिते वस्त्रपर्णानां)
गहनों का शब्द ।	न (भूषणानां तु) शिञ्जितम् ॥ २ ॥
वीणा आदिका शब्द ।	पु पु पु पु न निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणन (मित्यपि) । पु पु (वीणायाः क्वणिते प्रादेः) प्रक्वाण-प्रक्वणा-(दयः) ॥ ३ ॥
गुल्लः ।	पु पु कोलाहलः कलकलस्
पक्षियों का शब्द ।	न न (तिरश्चां) वाशितं रुतम् ॥
प्रति शब्द के ।	स् पु (स्त्री) प्रतिश्रुत्-प्रतिध्वाने
गानका ।	न न गीतं गान-(मिमे समे) ॥ ४ ॥
	॥ इति शब्दादिवर्गः ॥

---

[1] आ—॰

शब्दः, "और भी शब्दनं" निनादः, निनदः, ध्वनिः, ध्वानः, रवः, "उसी प्रकार रावः" स्वनः, स्वानः, निर्घोषः, निर्ह्रादः, नादः, निस्वानः, निस्वनः, ॥ १ ॥ आरवः, आरावः, संरावः, विरावः, ये १७ शब्द मात्र के नाम हैं; वस्त्र और पत्ते के शब्द को मर्मरः, कहते हैं, "(मर्मरो वस्त्रभेदे च शुष्कपर्णध्वनौ तथा। पुंसि स्त्रियां पुनः प्रोक्ता मर्मरी पीतदारुणीति मेदिनी)" भूषणों के अर्थात् नूपुर आदि के शब्द को शिंजितं "और भी शिञ्जा" कहते हैं (एकं) ॥ २ ॥ निक्वाणः, निक्वणः, क्वाणः, क्वणः, क्वणनं, ये ५ वीणा आदि के शब्द के नाम हैं, प्र. आदि उपसर्ग से परे जो प्रक्वाणः, प्रक्वणः, ये ५ वीणा के ही शब्द में हैं और अन्यत्र नहीं, "आदि शब्द से उपक्वणः, सुक्वणः, आदि जानना चाहिये", ॥ ३ ॥ कोलाहलः, कलकलः, ये २ बहुत लोगों के किये अप्रगट शब्द के नाम हैं, वाशितं "और भी वासितं" रुतं, ये २ पक्षियों के शब्द के नाम हैं, तालव्य भी मध्य में हैं; प्रतिश्रुत्, प्रतिध्वानः, "उसी प्रकार प्रतिस्वनः" ये २ प्रतिशब्द के नाम हैं; गीतं, गानं, ये २ गान वा गायन के नाम हैं, ॥ इति शब्दादिवर्गः ॥

॥ अथ सप्तमवर्गः ॥

	पु १पु पु पु पु २पु
गानेकेस्वर ।	निषाद्-र्षभ-गान्धार-षड्ज-मध्यम-धैवताः ।
	३पु
	पञ्चमश्-(चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः) ॥ १ ॥
	स
सूक्ष्मस्वर ।	काकली (तु कले सूक्ष्मे)
मधुरस्वर ।	(ध्वनौ तु मधुरास्फुटे) ।
	४पु
	कलो
	पु
धीरस्वर ।	मन्द्र (स्तु गम्भीरे)
	पु
उच्चस्वर ।	तारो (ऽत्युच्चैस्)
	(त्रय स्त्रिषु) ॥ २ ॥
	५पु
तुल्यस्वर ।	(समन्वितलयस्त्वे) कतालो
	स स
वीणा ।	वीणा (तु) वल्लकी ।
	स
	विपञ्ची
	स
वीणा विशेष ।	(सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः) परिवादिनी ॥ ३ ॥

१ ऋ—. २ —त. ३ —म. ४ कल. ५ ए—.

अब स्वरों के भेद कहते हैं, निषादः, "और भी निषदः" ऋषभः, गान्धारः षड्जः, मध्यमः, धैवतः, पञ्चमः, ये ७ तन्त्री और कण्ठ से निकले स्वरभेद के नाम हैं, (एकैकं) इनमें गज निषाद स्वर से बोलते हैं, गौ—वा बैल ऋषभ से बोलते हैं, अज आदि गान्धार से बोलते हैं, मोर षड्ज से बोलते हैं, बगले मध्यम से बोलते हैं, अश्व धैवत स्वर से बोलते हैं, कोकिल पञ्चमस्वर से बोलते हैं, "निषीदतिमनो ऽस्मिन्निति, षद्लृ विशरण—गत्यवसादनेषु, से घञ् प्र॰ निषादः स्वरभेदेपि चाण्डाले धीवरान्तरे; ऋषति बलीवर्द्द—कृत—स्वर—सादृश्यं—गच्छतीति, ऋषीयतौ—से—अभच् प्रत्यय हुआ, ऋषभस्त्वौषधान्तरे; गान्धारदेशे भवः अण्—प्र० षड्भ्योजाताः—ड—प्र० नासाकण्ठमुरस्तालु जिह्वादन्ताश्च संस्पृशन्—षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्—षड्ज इति स्मृतः; मध्ये भवः, सेम—प्र० हु० धीमतामयं धैमतः—पृषोदरादिः संज्ञायां सेम को ब हुआ; पंचानां पूरणः पञ्चमः, तस्य पूरणे डट् से डट् प्र० हुआ ॥ १ ॥ सूक्ष्मे कले अर्थात् मधुर स्वरको काकली कहते हैं, एक और स्त्रीलिङ्ग है, "उसी प्रकार काकलिः भी", कल धातु से इनि प्रत्यय हुआ, कुलीनोने काकली स्वरों से अच्छा कहा, यह प्रयोग है, सुनने में मधुर—सुख कर और अव्यक्त—अक्षर ऐसे ध्वनि को कलः, कहते हैं, (एकं) गम्भीर ध्वनि को मन्द्रः, "उसी प्रकार मद्रः" कहते हैं, (एकं) अति ऊंची ध्वनि को तारः, कहते हैं, (एकं) ये ३ नों कल—मन्द्र—तार—तीनों लिङ्ग हैं; ॥ २ ॥ जो अच्छे लय से युक्त और गीत आदि के तुल्य है उसे एक तालः, "उसी प्रकार एक तानः" कहते हैं, "(एकः समस्तालो मानमस्येत्येकतालः)"; (एकं) वीणा, वल्लकी, विपञ्ची, ये ३ वीणा के नाम हैं, वही वीणा जो सात तन्त्री से बंधी होती है उसे परिवादिनि कहते हैं, "(परिवदत्यवश्यं परिवादिनी)" ॥ ३ ॥

वीणा का शब्द ।	ततं[न] (वीणादिकं वाद्यं)
मृदङ्ग आदि ।	आनद्धं[न] (मुरजादिकम्) ।
वंशी आदि ।	(वंश्यादिकं तु) शुषिरं[न]
घण्टा वा झालरि ।	(कांस्यतालादिकं) घनम्[न] ॥ ४ ॥
वाद्य भेद ।	(चतुर्विधमिदं) वाद्यं[न] वादित्रा[न] तोद्य[१न] (नामकम्) ।
मृदङ्ग ।	मृदङ्गा[पु] मुरजा[पु]
मृदङ्ग भेद ।	(भेदाद्) ऽङ्क्या[२पु] लिंग्यो[३पु] र्द्ध्वका[४पु] (स्त्रयः) ॥ ५ ॥
ढोल ।	(स्याद्) यशः[५पु] पटहो ढक्का[स]
नगाडा-वा तुरही ।	भेरी[स] (स्त्री) दुन्दुभिः[पु] (पुमान्) ।
बड़ा नगाड़ा ।	आनकः[पु] पटहो[पुन] (ऽस्त्री स्यात्)
बजाने का दण्ड ।	कोणो[पु] (वीणादिवादनम्) ॥ ६ ॥
वीणा का दण्ड ।	वीणादण्डः[पु] प्रवालः[पु] (स्यात्)
वीणाकीमढ़ीतुम्बी	ककुभ[पु] (स्तु) प्रसेवकः[पु] ।

१ आ–. २ अंक्य. ३ आ–. ४ ऊ–. ५ य–.

वीणा आदि के वाद्य को ततं कहते हैं, जो मृदङ्ग आदि और पटह आदि वाद्य है उसे आनद्धं, "उसी प्रकार अवनद्धं" कहते हैं; वंश्यादिकं, आदिपद से शंख आदि उसे शुषिरं कहते हैं; "और भी सुषिरं" "सुषिर शब्द दन्त्यादि है, प्राचीन तो तालव्यादि कहते हैं"; जो कांस्यमय तालादिक और घण्टा झालरि आदि है उसे घनं कहते हैं, (एकैकं) ॥ ४ ॥ ये ततं आदि चार प्रकार के वाद्य को वादित्रं, और आतोद्यं, नाम कहते हैं, "(वादित्रं आतोद्यं वा नाम यस्य तत्)" जैसा भरथ जीने कहा है, "(ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च। चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितमिति ॥)" मृदङ्गाः, मुरजाः, "एक व. मृदङ्गः, और मुरजः, (मुरात् वेष्ठनात् जाताः मुरजाः)" ये २ मृदङ्ग के नाम हैं, और बहुत प्रकारके हैं इस लिये बहुवचन हैं; अंक्यः, आलिंग्यः, ऊर्ध्वकः, "उसी प्रकार अंकी, आलिङ्गं, और ऊर्ध्वकं" ये ३ मृदङ्ग के भेद के नाम हैं, "(अंके एव निधाय वादनादंक्यः, आलिङ्ग्यवादनादालिंग्यः, ऊर्ध्वीकृतेन मुखेन वादनादूर्ध्वकः)" ये ३ मृदङ्ग के भेद के नाम हैं; ॥ ५ ॥ यश के लिये प्रथम पटह बजाया जाता है वह यशः पटहः है, और उसी को ढक्का कहते हैं, ये २ ढक्का के वा डङ्का के नाम हैं, भेरी, "उसी प्रकार भेरिः" दुन्दुभिः, ये २ दुन्दुभी–वा नगाडा वा तुरही इस प्रसिद्ध के नाम हैं, आनकः, "उसी प्रकार आनकदुन्दुभिः, और आनकदुन्दुभी" पटहः, ये २ पटह के वा बड़ा नगाडा के नाम हैं; वीणा आदि बाजे बजाये जाते हैं जिससे उस धनुषाकार काष्ठ को कोणः कहते हैं; ॥ ६ ॥ वीणा मे जो दण्ड है उसे प्रवालः कहते हैं; (एकं) ककुभः, प्रसेवकः, "और भी प्रसेवः" ये २ वीणादण्ड के नीचे काष्ठ के पात्र शब्द की गम्भीरता के हेतु जो २ चाम से मढे रहते हैं उन के नाम हैं; ।

वीणा का स्वरूप।	पु पु कोलम्बक (स्तु) काये (ऽस्या)
वीणा का बन्धन।	पु न उपनाहे निबन्धनम् ॥ ७ ॥
बाजा का भेद।	पु पु पु पु (वाद्यप्रभेदाः) डमरु-मड्डु-डिण्डिम-झर्झराः ।
	पु पु मर्द्दलः पणवो (ऽन्ये च)
नाचनेवाली।	स १स नर्त्तकी-लासिके (समे) ॥ ८ ॥
विलम्ब-शीघ्र-मध्य	न २पु न (विलम्बितं द्रुतं मध्यं) तत्त्व मोघो घनं (क्रमात्) ।
ताल देना।	पु तालः (कालक्रियामानं)
ताल मिलाना।	पु लयः (साम्यं)
	(अथास्त्रियाम्) ॥ ९ ॥
नाचना।	पुन न न न न न ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं (च) नर्त्तने ।
नाच-गान-बाजा। इनका एक स्वर।	न न तौर्य्यत्रिकं (नृत्यगीत वाद्यं) नाट्य (मिदं त्रयम्) ॥ १० ॥
नाचनेवाला पुरुष।	पु पु पु भ्रकुंसश् (च) भ्रुकुंसश् (च) भ्रूकुंसश् (चेतिनर्त्तकः ।

१—का. २ ओघ.

इस वीणा के तन्त्री रहित दण्ड आदि समुदाय रूप काय को कोलम्बः कहते हैं, (एकं) जहां वीणा के किनारों में तन्त्रियां बांधी जाती हैं उनको उपनाहः, कहते हैं, (एकं) ॥ ७ ॥ डमरू प्रभृति वाद्य विशेष जानने चाहिये, तहां डमरुः, "उसी प्रकार न. डमरुकं" यह कापालिक आदि का बाजा है, वही अच्छा बजाया हुआ मड्डु कहलाता है, डिण्डिमः, तम्बूर यह प्रसिद्ध है, झर्झरः, झांझ यह प्रसिद्ध है, मर्द्दलः, यह मृदङ्ग के तुल्य वाद्य विशेष का नाम है, पणवः, "और भी प्रणवः" यह भी तम्बूर-वा सिंगा आदि का नाम है, और भी हुडुक्क-गोमुख-आदि नाम हैं, नर्त्तकी, "उसी प्रकार नर्त्तकः" लासिका, "और भी लासकः" ये २ नर्त्तकी-वा वेश्या के नाम हैं, और ये वाच्य लिङ्ग हैं, ॥ ८ ॥ जो विलम्ब से नृत्य आदि होते हैं उसे तत्त्वं, "और भी ततत्त्वं, कहते हैं, (एकं) जो द्रुत अर्थात् शीघ्र नृत्य आदि होते हैं उसे ओघः, कहते हैं, (एकं) और जो मध्य अर्थात् न॰ विलम्ब-न॰ द्रुत- उसे घनं, कहते हैं, काल और क्रिया के मान अर्थात् नियम के हेतु को तालः, कहते हैं, (एकं) गीत-वाद्य-हाथ-और पांव आदि के रखने और काल-क्रिया आदि की साम्यता को लयः, कहते हैं, (एकं) ॥ ९ ॥ ताण्डवं, नटनं, नाट्यं, लास्यं, नृत्यं, "उसी प्रकार नृत्तं" नर्त्तनं, ये ६ नृत्य के-वा नाच इस प्रसिद्ध के नाम हैं, इन में ताण्डव यह पद क्लीब और पुल्लिङ्ग है, नृत्य-गीत-वाद्य ये तीन मिल कर तौर्य्यत्रिकं, नाट्यं, ये २ नाट्य-वा नाच कहलाते हैं, "(तूर्य्यं मृदङ्गमुरजादि तत्र भवं तौर्य्यं तौर्य्योपलक्षितं त्रिकमिति विग्रहः)" ॥ १० ॥ भ्रकुंसः, "और भी भ्रकुंसः, भ्रकुशः" भ्रुकुंसः, भ्रूकुंसः, ये ३ स्त्रीवेशधारी नर्तक पुरुष के नाम हैं, ।

	स्त्रीवेषधारी पुरुषे)
	स
नाच की वेश्या ।	(नाट्योक्तौ गणिका) ऽज्जुका ॥ ११ ॥
	१पु
बहनोई ।	(भगिनीपतिरा) वुत्तो
	पु
पण्डित ।	भावो (विद्वान्)
	२पु
	(अथा) वुकः ।
	पु
बाप ।	जनको
	पु पु पु
राजपुत्र ।	युवराज (स्तु) कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥
	पु पु
राजा ।	राजा भट्टारको देवस्
	स
राजकन्या ।	(तत्सुता) भर्तृदारिका ।
	स
बड़ी रानी ।	देवी (कृताभिषेकायां)
	स
और रानी ।	(इतरासु च) भट्टिनी ॥ १३ ॥
	न
सहायता कर्ना ।	अब्रह्मण्य (मवध्योक्तौ)
	पु
राजा का शाला ।	(राजश्यालस्तु) राष्ट्रियः ।
	स स
मा ।	अम्बा माता
	स स
कन्या ।	(ऽथ) बाला (स्याद्) वासूर्
	पु पु
श्रेष्ठ ।	आर्य्य (स्तु) मारिषः ॥ १४ ॥

१ आ–. २ आ–.

नाट्य के प्रकरण में यह अधिकार है कि "अंगहार के पूर्व" अज्जुका आदि संज्ञाओं का नाट्य से अन्यत्र प्रयोग नहीं है, और जो गणिका है वही अज्जुका है, (एकं) ॥ ११ ॥ भगिनी "वाजे भागिनी पढ़ते हैं" के पति को आवुत्तः, कहते हैं, "उसी प्रकार आवुत्तः भी" (एकं) जो विद्वान् है उसे भावः, कहते हैं, "(भावयतीति भाव इति योगव्युत्पत्त्या नाट्यादन्यत्राप्येतादृशानां प्रयोगेन दोषः)" आवुकः, जनकः, ये २ पिता के नाम हैं, युवराजः, कुमारः, भर्तृदारकः, ये ३ राजकुमार–वा राजपुत्र के नाम हैं, ॥ १२ ॥ राजा, भट्टारकः, देवः, ये ३ राजा के नाम हैं, राजा की लड़की भर्तृदारिका है, (एकं) जिसका अभिषेक हुआ है उस रानी को देवी कहते हैं, (एकं) और रानियों को भट्टिनी कहते हैं, (एकं) ॥ १३ ॥ वध के योग्य नहीं ऐसे ब्राह्मण आदि के दोष के प्रकाश करने को अब्रह्मण्यं, "उसी प्रकार अब्राह्मण्यं," कहते हैं, (एकं) राजा के शाले को राष्ट्रियः, कहते हैं, (एकं) अम्बा, माता, ये २ माता के नाम हैं, बाला, वासूः, ये २ कुमारी के नाम हैं, आर्य्यः, मारिषः, "और भी मार्षः, और मार्षकः", ये २ श्रेष्ठ के नाम हैं, ॥ १४ ॥

	स
बड़ी बहिन ।	अन्तिका (भगिनी ज्येष्ठा) स न
नाटक की सन्धि	निष्ठा-निर्वहणे (समे) ।
	स स स
ठीक कहना ।	हण्डे हञ्जे हला (ह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति) ॥ १५ ॥
	पु पु
नृत्यविशेष ।	अङ्गहारो ऽङ्गविक्षेपो पु १पु
अभिप्रायकाप्रकाशक।	व्यञ्जका-ऽभिनयौ (समौ) ।
	२पुसन पुसन
शरीर और मन की चेष्टा ।	(निर्वृत्ते त्वङ्ग सत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वा)-ङ्गिक-सात्त्विके ॥ १६ ॥
रस ।	(शृङ्गार-वीर-करुणा-ऽद्भुत-हास्य-भयानकाः ।
	पु
	बीभत्स-रौद्रे च) रसाः
	पु ३पु ४पु
प्यार ।	शृङ्गारः शुचि रुज्ज्वलः ॥ १७ ॥
	पु पु
वीर ।	उत्साहवर्द्धनो वीरः न स स
करुणा ।	कारुण्यं करुणा घृणा ।
	स स ५स ६पु
	कृपा दया ऽनुकम्पा (स्याद्) ऽनुक्रोशो (ऽप्य)
	पु
हास्य ।	(ऽथो) हसः ॥ १८ ॥

१ अ–. २ आं–. ३–चि. ४ उ–. ५ अ–. ६ अ–.

जो ज्येष्ठा भगिनी है उसे अन्तिका, कहते हैं, "और भी अत्तिका, वा अर्त्तिका" निष्ठा, निर्वहणं, "उसी प्रकार निर्वहणं", ये २ पञ्चसन्धि के नाम हैं, "(मुखं प्रतिमुखं गर्भावमर्श निवर्हणाख्याः पञ्चनाटके सन्धयः)" ये ५ नाटक के सन्धि हैं, समे अर्थात् समानार्थक हैं, और समान लिङ्ग नहीं हैं, नीच सहेली के प्रति आह्वान में हण्डे यह एक है, चेटी के प्रति आह्वान में हञ्जे यह एक है, सखी के प्रति आह्वान में हला यह एक है, ॥ १५ ॥ "अङ्ग का स्थान से स्थानान्तर में लाना" अङ्गहारः, "और भी अङ्गहारिः" "अङ्गुली आदि का विन्यास अर्थात् अङ्गुली आदि से मन के अभिप्राय का दिखलाना अङ्गविक्षेपः, है, ये २ नृत्य विशेष के नाम हैं, व्यञ्जकः, अभिनयः, ये २ हस्त आदि से मनोगत अर्थ के प्रकाश करने के नाम हैं, अङ्ग से सिद्ध अर्थ को आंगिकं, कहते हैं, "भ्रू विक्षेप आदि" सत्त्व अन्तःकरण से निर्वृत्त अर्थात् सिद्ध को सात्त्विकं, ये २ तीनो लिङ्ग हैं, "(स्तम्भः स्वेदो ऽथ रोमाञ्चः स्वरभंगोऽथ वेपथुः। वैवर्ण्यमश्रुप्रलय-इत्यष्टौ सात्त्विकाः गुणाः)" ॥ १६ ॥ नाटक में आठही रस कहे हैं उनके स्वरूप ये हैं, शृङ्गारः, वीरः, करुणा, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, वीभत्सः, रौद्रः, ये ८ एक व॰ रसः, "बहु व॰ रसाः" कहलाते हैं, "च शब्द से शान्तः, नवां रस है, और वात्सल्यं, १० है", शृङ्गारः, शुचिः, उज्ज्वलः, ये ३ शृङ्गाररस के नाम हैं, ॥ १७ ॥ उत्साहवर्द्धनः, वीरः, ये २ वीररस के नाम हैं, कारुण्यं, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोशः, ये ७ करुणारस के नाम हैं, हसः, ॥ १८ ॥

	पु न
	हासो हास्यं (च) पुनसन पुसन
चिढ़ ।	बीभत्सं विकृतं (त्रिष्विदं द्वयम्) ।
	पु न १न न
आश्चर्य्य ।	विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्य्यं चित्र (मप्य) न
डरपोकना ।	(ऽथ) भैरवम् ॥ १९ ॥
	न न न न न न
	दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।
	न न
	भयङ्करं प्रतिभयं न २न
क्रोध ।	रौद्रं (तू) ग्रं (अमी त्रिषु ॥ २० ॥
	चतुर्दश) पुन पु स स न न
भय ।	दर-त्रासौ भीति-र्भीः साध्वसं भयम् ।
	पु
मन का विकार ।	(विकारो मानसो) भावो पु
अर्थ प्रकाशक ।	पु पु पु ऽनुभावो (भावबोधकः) ॥ २१ ॥
गर्व्व ।	गर्व्वोऽभिमानोऽहङ्कारो पु ३स
प्रतिष्ठा ।	मानश्चित्तसमुन्नतिः ।
	पु पु पु ४स
अपमान ।	अनादरः परिभवः परिभाव स्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

१ आ–. २ उ–. ३ चि–. ४ ति–.

हासः, हास्यं, ये ३ हास्य–वा हंसी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "और स्त्री॰ हासिका" बीभत्सं, विकृतं, "उसी प्रकार वैकृतं भी" ये २ बीभत्स के–वा घृणा वा जुगुप्सा रस के नाम हैं, ये २ रस में वर्त्तमान पुल्लिङ्ग और रसवान में त्रिलिङ्ग हैं, विस्मयः, अद्भुतं, आश्चर्य्यं, चित्रं, ये ४ अद्भुत "वा अद्भुतकारी, के नाम हैं, भैरवम्, पुं॰ भैरवः, स्त्री॰ भैरवी" ॥ १९ ॥ दारुणं, भीषणं, भीष्मं, घोरं, भीमं, भयानकं, भयंकरं, प्रतिभयं, ये ९ भय वा भयकारी रस के नाम हैं, रौद्रं, "उसी प्रकार स्त्री॰ रौद्री" उग्रं, ये २ रौद्र वा उग्र रस "बड़े क्रोध के यह मुकुट का मत है" के नाम हैं, और ये अद्भुत आदि उग्र अन्त १४ शब्द रस में पुल्लिङ्ग हैं, क्योंकि शृंगार इस आदि श्लोक में पुल्लिङ्ग कहा गया है, और अभिन्न लिङ्गों को द्वन्द्व का विधान है. तैसे ही ये भी तीनों लिङ्ग अर्थात् विशेष्य लिङ्ग हैं, ॥ २० ॥ रसों को कह कर रस के सहकारी छोटे बड़े भावों को कहते हैं, दरः, त्रासः, "और भी संत्रासः, उत्त्रासः, वित्रासः" भीतिः, "उसी प्रकार भीतं, भिया, भय॰", भीः, साध्वसं भयं, ये ६ भय के नाम हैं, मानसः अर्थात् मनः सम्बन्धी विकार भावः कहलाता है, (एकं) "(भावयति करोति रसानिति भावः)" जो भावबोधक और चित्त के विकारकार का प्रकाशक कटाक्ष आदि है, वह अनुभावः, कहलाता है. (एकं) ॥ २१ ॥ गर्व्वः, अभिमानः, अहङ्कार, ये ३ गर्व्व के नाम हैं, "(अहमिति करणमहङ्कारः)" चित्त की बड़ी उचाई अर्थात् दूसरे से उत्कर्ष के चिन्तन से बड़ाई को मानः, कहते हैं, (एकं) "गर्व्व आदि ५ पर्य्याय हैं यह तो युक्त है, दर्पः, अपलेपः, अवष्टंभः, चित्तोद्रेकः. स्मयः, मदः, ये ६ मद के नाम हैं" अनादरः, परिभवः, परिभावः, "और भी परीभावः" तिरस्क्रिया, ॥ २२ ॥

	स १स २स न ३न
	रीढा ऽवमानना ऽवज्ञा ऽवहेलन मसूर्क्षणम् ।
	न स ४स स स
लज्जा ।	मन्दाक्ष्यं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा स
अन्य से लज्जा ।	(सा) ऽपत्रपा (ऽन्यतः) ॥ २३ ॥
	स ५स
सहना ।	क्षान्ति-स्तितिक्षा स
परधन लेने का चिन्तन ।	ऽभिध्या (तु परस्वविषये स्पृहा) ।
	स ६स
असहन ।	अक्षान्ति-रीर्ष्या
निन्दा वा पैलगाना।	ऽसूया (तु दोषारोपो गुणेष्वपि) ॥ २४ ॥
	न पु पु
वैर ।	वैरं विरोधो विद्वेषो पु ७पु ८स
शोक ।	मन्यु-शोकौ (तु) शुक् (स्त्रियाम्) ।
	पु पु पु
पछतावा ।	पश्चात्तापो ऽनुतापश्च (च) विप्रतीसार (इत्यपि) ॥ २५ ॥
	पु पु पु पु ९पु १०स ११स
क्रोध ।	कोप-क्रोधा-ऽमर्ष-रोष-प्रतिघा रुट्-क्रुधौ (स्त्रियाम्) ।
	न
शील ।	(शुचौ तु चरिते) शीलं पु १२पु
भ्रम वा पागल ।	उन्माद श्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

१ अ—. २ अ—. ३ अ—. ४ त्र—. ५ ति—. ६ ई—. ७ शोक. ८ शुच्. ९ घ. १० रुष. ११ क्रुध. १२ चि—.

रीढा, अवमानना, "और भी विमानना" अवज्ञा, अवहेलनं, "उसी प्रकार अवहेला, और हेला", असूर्क्षणं, ये ९ अनादर के नाम हैं, "और भी असुक्षणं, असूर्क्षणं, असुर्क्षणं, और संसुर्क्षणं" मन्दाक्ष्यं, "उसी प्रकार मन्दास्यं" ह्रीः, त्रपा, व्रीड़ा, "और भी व्रीड़नं, और व्रीड़ितं", लज्जा, "उसी प्रकार लज्या" ये ५ लज्जा के नाम हैं, वही लज्जा जो दूसरे से होय तो अपत्रपा कहलाती है, (एकं), ॥ २३ ॥ क्षान्तिः, तितिक्षा, ये २ दूसरे के अभ्युदय के सहने के नाम हैं, अन्य के धन के लेने के विषय में जो स्पृहा है वह अभिध्या कहलाती है, (एकं) अभिचार अर्थात् जादू आदि के ध्यान को भी अभिध्या कहते हैं, अक्षान्तिः, ईर्ष्या, ये २ पराये ऐश्वर्य्य के असहन के नाम हैं; गुण में दोष का आरोप करना असूया है, (एकं) ॥ २४ ॥ वैरं, विरोधः, विद्वेषः, "और भी द्वेषः" ये ३ वैर के नाम हैं, मन्युः, शोकः, शुक्, ये ३ शोक के नाम हैं, और शुक् चान्त हैं; पश्चात्तापः, अनुतापः, विप्रतीसारः, "वा विप्रतिसारः" ये ३ पश्चात्ताप—वा पछतावा के नाम हैं, ॥ २५ ॥ कोपः, क्रोधः, अमर्षः, "वा आमर्षः" रोषः, प्रतिघः, रुट्, क्रुध्, "और भी रुषा और क्रुधा" ये ७ क्रोध के नाम हैं, इनमें रुट् षान्त और स्त्री॰ है, "रुट्—क्रुध टावन्त भी है, रुषा, क्रुधा, यह शब्दार्णव का मत है" शुद्ध चरित अर्थात् यश आदि के आचरण को शीलं, कहते हैं, (एकं) उन्मादः, चित्तविभ्रमः, ये २ चित्तविभ्रम—वा पगलई के नाम हैं, ॥ २६ ॥

प्रेम ।	१पु स न २न पु प्रेमा (ना) प्रियता हार्द्दं प्रेम स्नेहो
मनोरथ ।	पुन (ऽथ) दोहदम् ।
	स ३स स ४स ५स स स पु इच्छा कांक्षा स्पृहे हा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥
	पु पु ६पु कामो ऽभिलाष स्तर्षे (श्च)
बड़ी चाहना ।	पुस (समहान्) लालसा (द्वयोः) ।
धर्म्म की ।	पु स उपाधि (र्ना) धर्म्मचिन्ता
मनोदुःख ।	पु स (पुंस्या) धि-र्मानसीव्यथा ॥ २८ ॥
स्मरण ।	स स ७स (स्याच्) चिन्ता स्मृति-राध्यानं
मित्र मिलने की जल्दी ।	स ८स उत्कण्ठो-त्कलिके (समे) ।
उत्साह ।	पु पु उत्साहो ऽध्यवसायः (स्यात्)
बड़ा उत्साह ।	पुन (स) वीर्य्य (मतिशक्तिभाक्) ॥ २६ ॥
ठग ।	पुन पु पु ६पु १०न न कपटो (ऽस्त्री) व्याज-दम्भो-पधय श्छद्म- कैतवे ।

१—न. २—न. ३ आ—. ४ ईहा. ५ तृप. ६ त—. ७ आ—. ८ उ—का. ९ उपधि. १० छ—न.

प्रेमा, प्रियता, हार्द्दं, प्रेम, स्नेहः, ये ५ प्रेम के नाम हैं इन में प्रेमाना पुल्लिङ्ग है और स्नेह भी, लिङ्ग कह चुके हैं इस हेतु संकर दोष के लिये नहींहै, "और भी प्रेम क्लीब है" दोहदं, इच्छा, आकांक्षा, "उसी प्रकार कांक्षा", स्पृहा, ईहा, तृट्, "उसी प्रकार तृषा" वाञ्छा, लिप्सा, मनोरथः, ॥ २७ ॥ कामः, अभिलाषः, "वा अभिलासः" तर्षः, ये १२ इच्छा के नाम हैं, तिन में "(दोहदं गर्भिणीच्छायामिच्छामात्रेऽपि दोहदम्)" वह तर्ष बड़ा होय तो लालसा, "वा लालषा" कहलाती है, यह पुलिङ्ग औ स्त्रीलिङ्ग है, उपाधिः, धर्म्मचिन्ता, ये २ धर्म्मचिन्ता के नाम हैं, इन्में उपाधिः पुं॰ है, आधिः, मानसीव्यथा, ये २ मन की पीड़ा के नाम हैं, "और भी आधिः", वा अधिः, यह पुं॰ है, ॥ २८ ॥ चिन्ता, "उसी प्रकार चिंतिया" स्मृतिः, आध्यानं, उसी प्रकार आध्या" ये ३ स्मरण के नाम हैं, "पुं॰ चिंतिः" उत्कण्ठा, उत्कलिका, ये २ उत्कण्ठा के नाम हैं, "(चिन्ता तु स्मृतिराध्यानं स्मरणं सस्पृहे पुनः । उत्कण्ठोत्कलिके तस्मिन्नभिध्यातूभयोरपीति शब्दार्णवः)" उत्साहः, अध्यवसायः, ये २ उत्साह के नाम हैं, वा जिससे असाध्य साधन में उद्यत होता है उसे उत्साहः कहते हैं, वही उत्साह जो अति शक्तिमान् है तो उसे वीर्य्यं, "वा स्त्री॰ वीर्य्या" कहाते हैं, (एकं) ॥ २९ ॥ कपटः, व्याजः, दंभः, उपधिः, छद्म, कैतवं ।

	स १स न कुसृति-र्निकृतिः शाठ्यं
भ्रम वा भूल ।	पु स प्रमादो ऽनवधानता ॥ ३० ॥
खेल ।	न न न न कौतूहलं कौतुकं (च) कुतुकं (च) कुतूहलम् ।
स्त्रियों का रस विशेष ॥	(स्त्रीणां विलास विव्वोक विभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥ २ पु हेला-लीले त्यमी) हावाः (क्रियाः शृङ्गारभावजाः) ।
क्रीड़ा ।	पु पुस पु स स ३न द्रव-केलि-परीहासाः क्रीडा लीला (च) नर्म्म (च) ॥ ३२ ॥
छल ।	पु पु न व्याजो ऽपदेशो लक्ष्यं (च)
लीला ।	स स न क्रीडा लेखा (च) कूर्द्दनम् ।

१ नि–. २ लीलाः ३–न.

कुसृतिः निकृतिः, शाठ्यं, ये ६ शाठ्य के वा ठग के नाम हैं, शठकैतवे धातु है, कपटः पुन्नपुंसक है, प्रमादः अनवधानता, "और भी अनवधानं" ये २ कर्त्तव्य कार्य्य में अनवधानता–वा असावधानी के नाम हैं, ॥ ३० ॥ कौतूहलं, कौतुकं, कुतुकं, कुतूलहलं, ये ४ कौतुक–वा खेल के नाम हैं, विलासः, विव्वोकः, विभ्रमः, ललितं, ॥ ३१ ॥ हेला, लीला ये ६ स्त्रियों के शृङ्गाररस से अच्छा उत्पन्न भाव–अर्थात् क्रिया–और चेष्टा–हावाः, कहलाते हैं (एकैकं) तिन में रामा के नयन–वदन–और भौंह=आदिकों से जो कुछ विशेष रस उत्पन्न होता है उसे विलासः, कहते हैं, गर्व अर्थात् अभिमान से उत्पन्न अनादरात्मक विकार को विव्वोकः, कहते हैं, वाक्–वस्त्र–और आभूषण–आदि का जो स्थान से विपर्य्यास अर्थात् उलटा सुलटा है उसे विभ्रमः, कहते हैं, सब अंगों के अच्छे विन्यास को ललितं, कहते हैं, संख्या पूर्व्वक अभिनय अर्थात् नाच का दिखलाना हेला, है, प्रियभूषण–और वचन–आदि का अनुकरण लीला, कहलाती है; द्रवः, केलिः, "और भी स्त्री॰ केली" परीहासः, "उसी प्रकार परिहासः" क्रीड़ा, लीला, "यहां खेला भी कोई कहता है" नर्म्म, ये ६ क्रीड़ामात्र के नाम हैं, केलिः पुं॰ है, क्योंकि भिन्न लिङ्गों को द्वन्द्व का अभाव है, ॥ ३२ ॥ अभीप्सित अर्थ के सिद्धि के अर्थ अन्य अर्थ का कहना व्याजः है, तहां व्याजः, अपदेशः, लक्ष्यं, "उसी प्रकार लक्षं" ये ३ स्वरूप के छिपाने के नाम हैं, क्रीड़ा, लेखा, कूर्द्दनं, "कोई कुर्द्दनं, पढ़ते हैं" ये ३ बाललीला के नाम हैं, ।

	पु पु पु
पसीना।	घर्म्मो निदाघः स्वेदः (स्यात्)
	पु स
मूर्छा।	प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
	स १पु
कपट।	अवहित्था कारगुप्तिः
	पु पु
दौड़ा दौड़।	(समौ) संवेग-सम्भ्रमौ।
	२न
सशब्द हास।	(स्यादा) च्छुरितकं (हासः सोत्प्रासः) न
थोड़ा हास।	(समनाक्) स्मितम् ॥ ३४ ॥
	न
मध्यम हास।	(मध्यमः स्याद्) विहसितं
	पु न
रोम खड़ा होना।	रोमाञ्चो लोमहर्षणम्।
	न न न
रोना।	क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं
	पुसन न
जमवाई।	जृम्भ (स्तु त्रिपु) जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
	पु पु
आशा भंगक।	विप्रलम्भो विसम्वादो
	न न
गीरना।	रिङ्गण-स्खलने (समे)।
	स न पुन पु पु
सोना।	(स्यात्) निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः सम्वेश (इत्यपि) ॥ ३६ ॥

१ आ–. २ आ–.

घर्म्मः, निदाघः, स्वेदः, "और भी प्रस्वेदः" ये ३ स्वेद के–वा पसीने के नाम हैं, प्रलयः नष्टचेष्टता, ये २ मूर्छा के नाम हैं, ॥ ३३ ॥ अवहित्था, "उसी प्रकार न· अवहित्थं, और आहित्थं" आकारगुप्तिः, ये २ "शोक से उत्पन्न मुख आदि की म्लानि आदि के नाम हैं", वा आकार के गुप्त करने के नाम हैं; संवेगः, "और भी आवेगः" संभ्रमः, ये २ हर्ष आदि से कार्य्य में शीघ्रता के नाम हैं; अभिप्राय के सहित हास को सोत्प्रासः, कहते हैं, "उत्प्रास अर्थात् अधिकता के सहित हास को" आच्छुरितकं, "उसी प्रकार अवच्छुरितं, कहते हैं, (एकं) वह हासमनाक् अर्थात् अल्प होय तो स्मितं, कहते हैं, "(ईषद्विकसितैर्द्दन्तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम्। अलक्षितद्विजद्वारमुत्तमानां स्मितम्भवेत्)" ॥ ३४ ॥ वह हास अधिक और अल्प न होय तो विहसितं, कहलाता है, "(आकुञ्चितं कपोलाक्षं सस्वनं निस्वनं तथा। प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः ॥)" (एकं) रोमाञ्चः, "और भी रोमहर्षः, रोमविक्रिया, रोमोद्गमः, रोमोद्भेदः" लोमहर्षणं, ये २ रोमखडे होने के नाम हैं, क्रन्दितं, "उसी प्रकार क्रन्दनं, और रोदनं" रुदितं, क्रुष्टं, ये ३ रोने के नाम हैं, जृम्भः, "उसी प्रकार स्त्री· जृम्भा" जृम्भणं, ये २ जृम्भा–वा जंभयाई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तिन्मे जृम्भः यह तीनों लिङ्ग है, ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भः, "और भी विप्रलापः" विसम्वादः, ये २ छलयुक्त भाषण से आशा भंग करने के नाम हैं, "वा अंगीकृत के असम्पादन के नाम हैं" रिंगणं, "उसी प्रकार रिंखनं, स्खलनं, ये २ स्वधर्म आदि से उलटे चलने के नाम हैं. "वा किसी के मत से गिरने के नाम हैं और बालकों के तुल्य हस्त पाद से गमन के भी नाम हैं", निद्रा, शयनं, स्वापः, "और भी सुप्तिः" स्वप्नः, संवेशः, ये ५ निद्रा के वा सोना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ३६ ॥

आलस्य ।	स स तन्द्री प्रमीला
भौंहें टेढी कर्ना वा घुर्की देना ।	स १स स भ्रकुटि-भ्रुकुटी भ्रूकुटिः (स्त्रियः) ।
टेढ़ा देखना ।	स अदृष्टिः (स्याद् सौम्येऽक्षिण)
स्वभाव ।	स २स संसिद्धि-प्रकृती (त्विमे) ॥ ३७ ॥
	न पु पु स्वरूपं (च) स्वभावश्-(च) निसर्गश्-(चा)
कांपना ।	पु (ऽथ) वेपथुः ।
	पु कम्पो
उत्सव वा महफिल ।	पु पु पु पु पु (ऽथ) क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥
	॥ इति नाट्यवर्गः ॥

१—टि. २—ति.

तन्द्री, "और भी तन्द्रिः, वा तन्द्रीः, उसी प्रकार तन्द्रा" प्रमीला, ये २ निद्रा के आदि और अन्त में जो आलस्य है उस के नाम हैं, "अथवा अत्यन्त श्रम आदि से सब इन्द्रियों के असामर्थ्य के नाम हैं" भ्रकुटिः, भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः. "और भी भ्रकुटी, भ्रुकुटी, भ्रूकुटी, और पृषोदरादित्व मान कर ऋकार करने से भृकुटी, वा भृकुटिः, भी है" ये ३ क्रोध आदि से उत्पन्न भौंहों के टेढ़ा कर्ने के नाम हैं, भ्रकुंस के समान तीन रूप होते हैं, असौम्ये ऽक्षिण अर्थात् क्रोधयुत चक्षुष को अदृष्टिः, कहते हैं, (एकं) "असौम्ये अर्थात् असुन्दरे वा विरुद्धा दृष्टिः क्रूरदृष्टिरित्यर्थः" संसिद्धिः, प्रकृतिः, ॥ ३७ ॥ स्वरूपं, "उसी प्रकार रूपं" स्वभावः, निसर्गः, ये ५ स्वभाव के नाम हैं, इमे अर्थात् इन दोनों को स्त्रीत्व बोधन के अर्थ कहा, वेपथुः, कम्पः, "उसी प्रकार कम्पनं, और कम्पितं" ये २ कम्प—वा कांपना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; क्षणः, उद्धर्षः, महः, "और भी महस्" उद्धवः, उत्सवः, ये ५ उत्सव—वा खुसी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, महः अदन्त भी है, ॥ ३८ ॥

॥ इति नाट्यवर्गः ॥

॥ अथ अष्टमवर्गः ॥

	न न १न २न
पाताल।	अधोभुवन पाताल बलिसद्म रसातलम् ।
	३पु
	नागलोको
	न न न न
पोलमात्र।	(ऽथ) कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥
	न न न न न स स
	छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।
	पुस ४पु
पृथ्वी में पोल।	गर्त्ता-ऽवटौ (भुविश्वभ्रे)
	पुसन
छेदसहित वस्तु।	(सरन्ध्रे) शुषिरं (त्रिषु) ॥ २ ॥
	पुन पुन न न ५न
अंधेरा।	अन्धकारो (ऽस्त्रियां) ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।
	न
बड़ा अंधेरा।	(ध्वान्ते गाढे)-ऽन्धतमसं
	न
थोड़ा अंधेरा।	(क्षीणे)-ऽवतमसं
चारो ओर अंधेरा।	(तमः ॥ ३ ॥
	न
	विष्वक्) सन्तमसं
	पु पु
नाग।	नागाः काद्रवेयास्
नागेश्वर।	(तदीश्वराः) ।

१—न. २—ल. ३—क. ४—ट. ५—स.

अधोभुवनं, "और भी अधः, (स्) पुं· अधोलोकः आदि" पातालं, वलि-सद्म, रसातलं, नागलोकः, ये ५ पाताल के नाम हैं; कुहरं, शुषिरं, "उसी प्रकार सुषिरं" विवरं, विलं, ॥ १ ॥ छिद्रं, निर्व्यथनं, रोकं, "और भी विरोकं" रन्ध्रं, श्वभ्रं, "वा स्वभ्रं" वपा, शुषिः, "और भी शुषी, और सुषिः, वा शुषिः" ये ११ छिद्र मात्र के नाम हैं; गर्त्तः, अवटः, "उसी प्रकार अर्वाटः" भुवि अर्थात् पृथिवी के भीतर जो श्वभ्र अर्थात् छिद्र है उसके ये २ नाम हैं, "(गर्त्ता ऽवटे कुकुन्दरे इति हैमः)" शुषिरं, यह १ रन्ध्र सहित वस्तु का नाम है, और यह विशेष्य लिङ्ग है ॥ २ ॥ अन्धकारः, ध्वान्तं, तमिस्रं, तिमिरं, तमः, "और भी तमसं, और तमः, तमा, तमं", ये ५ अन्धकार के नाम हैं; तहां अन्धकारः क्लीव पुं· है, अन्धतमसं, "उसी प्रकार अन्धातमसं" गाढे ध्वान्ते अर्थात् अत्यन्त अन्धेरे का नाम है, क्षीणे अर्थात् थोड़े अन्धेरे को अवतमसं, कहते हैं, ॥ ३ ॥ विष्वक् तमः अर्थात् सर्व व्यापी ध्वान्त को सन्तमसं, कहते हैं, (एकं) नागाः, "एक व· नागः" काद्रवेयाः, ये २ नागों के—वा सर्पों के नाम हैं, "(वा ये २ सर्पों से भिन्न देव योनि विशेष के नाम हैं और भी नागरङ्गे सीसपत्रे स्त्रीबन्धे करणान्तरे इति हैमः)" ।

	पु पु शेषो ऽनन्तो
नागराज ।	पु पु वासुकि-(स्तु) सर्पराजो
छोटा सांप ।	पु (ऽथ) गोनसे ॥ ४ ॥
	पु तिलित्सः (स्याद्)
अजगर ।	पु पु १पु अजगरे शयु-र्वाहस (इत्युभौ) ।
विषशून्य ।	पु पु अलगर्द्दो जलव्यालः
डेंड़हा ।	पु पु (समौ) राजिल-डुण्डुभौ ॥ ५ ॥
कराइत ।	पु पु मालुधानो मातुलाहिर्
केंचुली हीन ।	पु पु निर्म्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
सर्प मात्र ।	पु २पु ३पु पु पु पु सर्पः पृदाकु-र्भुजगो भुजङ्गो-ऽहि-र्भुजङ्गमः ॥ ६ ॥
	पु पु ४पु पु पु आशीविषो विषधर श्चक्री व्यालः सरीसृपः ।

१ वा—. २—कु. ३ भु—. ४ चक्रिन्.

तदीश्वराः अर्थात् नागों के ईश्वर अर्थात् मुख्य को शेषः और अनन्तः, कहते हैं; (द्वयं) वासुकिः, सर्पराजः ये २ नागराज के नाम हैं, "और भी बासुकिः"; गोनसः, "वा गोनासः (गोनासगोनसाविति त्रिकाण्डशेषः)" ॥ ४ ॥ तिलित्सः, ये २ सर्प विशेष वा छोटे सांप के नाम हैं; अजगरः, शयुः, वाहसः, ये ३ अजगर के नाम हैं; अलगर्द्दः, "कोई अलगर्द्धः, दूसरे अलिगर्द्दः, पढ़ते हैं", जलव्यालः, ये २ जलसर्प के नाम हैं; राजिलः, डुण्डुभः, "वा दुण्डुभः; और डुडुभः, तवर्ग की तृतीय आदि भी है" ये २ दो मुखवाले सर्प के नाम हैं, "(निर्मुक्तो निर्व्विषः सर्पो राजिलः परिकीर्त्तित इति स्मरणात्)" ॥ ५ ॥ मालुधानः, मातुलाहिः, ये २ खड्ग के आकार सर्प के—वा कराइत इस प्रसिद्ध के नाम हैं; निर्म्मुक्तः, मुक्तकञ्चुकः, ये २ त्यक्तकञ्चुक के नाम हैं, और कञ्चुक त्वचा है; सर्पः, "उसी प्रकार स्त्री॰ सर्पा, और सर्पिणी," पृदाकुः, भुजगः, भुजङ्गः, अहिः, भुजङ्गमः, ॥ ६ ॥ आशीविषः, "और भी आशीर्व्विषः, (आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तया विद्धो न जीवति, उसमें विष रहता है)" विषधरः, चक्री, व्यालः, "और भी व्याड़ः" सरीसृपः "उसी प्रकार सरिसृपः"।

	१पु २पु ३पु पु ४पु
	कुण्डली गूढपा च्चुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
	पु पु पु पु
	दर्व्वीकरो दीर्घपृष्ठो दंदशूको बिलेशयः ।
	पु पु ५पु पु पु
	उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
	पुसन
सर्प सम्बन्धी ।	(त्रिष्वा) हेयं (विषास्थ्यादि) पुस पुस
फण ।	पु पु फटायां (तु) फणा (द्वयोः,) ।
केंचुली ।	(समौ) कञ्चुक-निर्मोकौ पु न पुन
विषमात्र ।	क्ष्वेड-(स्तु) गरलं विषम् ॥ ९ ॥
	पुन पुन पुन
विषभेद ।	(पुंसिक्लीबे च) काकोल-कालकूट-हलाहलाः ।
	पु पु पु पु
	सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥
	पु पु
	दारदो वत्सनाभश्-(च विषभेदा अमी नव) ।
	पु पु
विषवैद्य ।	विषवैद्यो जाङ्गुलिको ६पु पु
सर्प पकड़ने वाला ।	व्यालग्राह्य हितुण्डिकः ॥ ११ ॥
	॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥

१—न्. २—पाद्. ३ च्—स्. ४—न्. ५—न्. ६—हिन्.

कुण्डली, गूढपात्, "और भी गूढपदः, और गूढपादः, (द)" चक्षुःश्रवाः, काकोदरः, फणी, ॥ ७ ॥ दर्व्वीकरः, दीर्घपृष्ठः, दंदशूकः, विलेशयः, "उसी प्रकार विलशयः, उरगः, "और भी उरङ्गः, उरङ्गमः" पन्नगः, भोगी, जिह्मगः, पवनाशनः, ये २५ सर्पों के नाम हैं, ॥ ८ ॥ "(लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा। कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥ १ ॥ अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहि दंष्ट्रिका। लेलिहान आदि ८ सर्पमात्र के नाम हैं, भोगः, यह १ सर्प के शरीर का नाम है, आशीः, आदि २ सर्प के दांत के नाम हैं,)" जो विष अस्थि आदि सर्प से उत्पन्न होता है उसे आहेयं, "स्त्री॰ आहेयी" कहते हैं, (एकं) स्फटा, "वा फटा" फणा, "पुं॰ फणः" ये २ फण के नाम हैं, "उसी प्रकार न॰ फणं" और ये दोनों पुं॰ और स्त्री॰ हैं। कञ्चुकः, निर्म्मोकः, ये २ सर्प की त्वचा—वा केंचुली के नाम हैं, "(निश्चयेन मुच्यतइति निर्म्मोकः)"। क्ष्वेडः, गरलं, विषं, यह पुं॰ भी है, "(पुंसिक्लीबे चेति विषेणाऽपि सम्बध्यत इति उक्तत्वात्)" ये ३ विषमात्र के नाम हैं, ॥ ९ ॥ काकोलः कालकूटः, हलाहलः, "और हालाहलः, वा हालहलः, और भी हाहलः" सौराष्ट्रिकः, "उसी प्रकार सारोष्ट्रिकः" शौक्लिकेयः, ब्रह्मपुत्रः, प्रदीपनः, ॥ १० ॥ दारदः, वत्सनाभः, ये ९ काकोल आदि स्थावर विषभेद के नाम हैं, तहां "काकोल आदि ३ पुं॰ और क्लीब हैं" काकोलः, कालकूटः, "कालमेचकः", ये ३ पृथुमाली दैत्य के रक्त से उत्पन्न के नाम हैं, हलाहलः, यह तालपत्राकृति है, हलाहलं, हालहलं, हालाहलं, ये सब उसी के पर्य्याय हैं, सुराष्ट्र देश में हो उसे सौराष्ट्रिकः, शुक्लिका देश में हो उसे शौक्लिकेयः, सोमल यह प्रसिद्ध है, ब्रह्मा का पुत्र ब्रह्मपुत्रः है, दरद देश में हो वह दारदः, है, वत्सनाभः, वच्छनाग यह प्रसिद्ध है, विषवैद्यः, जाङ्गुलिकः, "उसी प्रकार जाङ्गलिकः, ये २ विषहर वैद्य के नाम हैं। व्यालग्राही, "और भी व्यालग्राहः" अहितुण्डिकः, "उसी प्रकार आहितुण्डिकः, वा आहितुण्डिकः" ये २ सर्प पकड़नेवाले के—वा मदारी—वा गारुड़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥

॥ अथ नवमवर्गः ॥

नरक ।	पु पु पु स (स्यान्) नारक-(स्तु) नरको निरयो दुर्गतिः (स्त्रियाम्) ।
नरक भेद ।	पु १पुस पु पु (तद्भेदास्)-तपना-वीचि-महारौरव-रौरवाः ॥ १ ॥ पु न संहारः कालसूत्रं (चेत्याद्याः)
प्रेत ।	पु (सत्त्वास्तु) नारकाः । पु प्रेता
नरक नदी ।	स वैतरणी (सिन्धुः)
अलक्ष्मी ।	स स (स्याद्) ऽलक्ष्मी (स्तु) निर्ऋतिः ॥ २ ॥
भेजना ।	स स विष्टि-राजूः
पीड़ा ।	स स स कारणा (तु) यातना तीव्रवेदना ।
दुःख ।	स स स न न न पीडा बाधा व्यथा दुःख ममानस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

१ अ—.

नारकः, नरकः, निरयः, दुर्गतिः, ये ४ नरक के नाम हैं; नरकों के भेद ये हैं, तपनः, अवीचिः, महारौरवः, रौरवः, ॥ १ ॥ संहारः, "उसी प्रकार संघातः" कालसूत्रं, ये ६ तपन आदि नरक के भेद हैं; आदि पद से तामिस्र और कुंभीपाक आदि जानिये; जल के समान दिखाई देता है, परन्तु पत्थल के तुल्य पीठ होने से जिसमें लहर न हो उसे अवीचिः, कहते हैं, । रुरवः नाम कच्चे मांसाहारी अतिक्रूर के सम्बन्धी महा नरक को महारौरवः, कहते हैं, रुरवः सर्पसे भी अति हिंसा कारी जन्तु विशेष है इस का सम्बन्धी रौरवः है, "(सम्यक् हन्यते यत्र स संघातः)" कालरूप सूत्र है जिस में वह कालसूत्रं है, (एकैकं) नारकाः अर्थात् नरक में होने वाले सत्त्वाः अर्थात् प्राणिनः प्रेताः, "उसी प्रकार परेताः" कहलाते हैं, नरक की सिन्धु नाम नदी को वैतरणी, "और भी वैतरणिः" कहते हैं, । नरक की अलक्ष्मी अर्थात् अशोभा को निर्ऋतिः, कहते हैं, (एकं) ॥ २ ॥ विष्टिः, आजूः, "उसी प्रकार आजू, वा आजुर" ये २ हठ से नरक में फेंकने के नाम हैं, । कारणा, "और भी कारिका" यातना, "उसी प्रकार याचना" तीव्रवेदना, ये ३ नरक की पीड़ा के नाम हैं, । पीड़ा, बाधा, "वा आबाधा" "(आबाधा वेदना दुःखमिति हलायुधः)" व्यथा, दुखं, अमानस्यं, "उसी प्रकार आमानस्यं" प्रसूतिजं, "(प्रसूतिजममानस्यं कृच्छ्रकष्टं कलाकुलमिति वाचस्पतिः, यहां अमनसोभावः यह—वा मानस्याद्भिन्नमिति विग्रहः)" ॥ ३ ॥

न न १पु
(स्यात्) कष्टं कृच्छ्र माभीलं
(त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्) ॥ ४ ॥

॥ इति नरकवर्गः ॥

॥ अथ दशमवर्गः ॥

पु पु २पु पु पु
समुद्र । — समुद्रो ऽब्धि-रकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
३पु ४पु पु ५पु पु पु
उदन्वान् उदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरो ऽर्णवः ॥ १ ॥
पु पु ६पु ७पु
रत्नाकरो जलनिधि-र्यादःपति-रपांपतिः ।
पु पु
समुद्र के भेद । — (तस्य प्रभेदाः) क्षीरोदो लवणोद-(स्तथापरे) ॥ २ ॥
स बहुव॰ ८न न न न न
जल । — आपः (स्त्री भूम्नि) वा-र्वारि सलिलं कमलं जलं ।
९न न १०न न न न
पयः कीलाल-ममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
न ११न १२न न न
कबन्ध-मुदकं पाथः पुष्करं सर्व्वतोमुखम् ।

१ आ—. २ अ—. ३ —न्वन्. ४ उ—. ५—स्वत्. ६ या—. ७ अ—.
८—र्. ९—स्. १० अ—. ११ उ—. १२—स्.

कष्टं, कृच्छ्रं, आभीलं, ये ६ दुःख के नाम हैं, "यहां ६ ही दुःख के नाम हैं यह किसी का मत है, परन्तु पीड़ा आदि ४ मन की पीड़ा के नाम हैं, अमानस्य आदि २ वैमनस्य अर्थात् मन के विकार के नाम हैं, और कष्ट आदि ३ शरीर पीड़ा के नाम हैं, यह भेद है" इन के मध्य जो दुःख आदि भेद्यगामी अर्थात् विशेष्यगामी हैं वे त्रिलिङ्ग हैं, जैसे सेयं सेवा दुःखा च बहुरूपा, सोयं दुःखःसुतो गुणः, सर्व्वं, दुःखं विवेकिनः, भेद्यगामित्व के अभाव में उन के उक्त लिङ्ग होते हैं. ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः ॥ * समुद्रः, अब्धिः, अकूपारः, "औरभी आकूवारः, कूवारः," और कूपारः, पारावारः, "वा पारापारः, उसी प्रकार अवारपारः" सरित्पतिः, उदन्वान्, उदधिः, सिन्धुः, सरस्वान्", सागरः, अर्णवः, ॥ १ ॥ रत्नाकरः, जलनिधिः, यादःपतिः, अपांपतिः, ये १५ समुद्रमात्र के नाम हैं, उन समुद्रों के ये भेद हैं, कि, क्षीरोदः, लवणोदः, तथा "दधिउद, घृतोद—सुरोद—इक्षुउद—स्वादुउद—लवण—इक्षु—सुरा—सर्पि—दधि—क्षीर—जल—ये सब समान हैं, यह कहागया है" (एकैकं) ॥ २ ॥ आपः, "एकव॰ अप्, और भी न॰ आपस्" वाः, वारि, "वारं" सलिलं, "और सरिलं, वासलं और भी (सरिलं सलिलं जलमिति वाचस्पतिः)" कमलं, जलं, "और भी जड़ं" पयः, कीलालं, अमृतं, जीवनं, "और भी जीवनीयं" भुवनं, वनं, ॥ ३ ॥ कबन्धं, "कमन्धं भी" उदकं, "(और भी उदं, और दकं भी है, प्रोक्तं प्राज्ञैर्भुवनममृतं जीवनीयंदकं चेति हलायुधः कन्दकं, जलं, कं और अन्धमिति त्रिकाण्ड-शेषः, अस्मिन् पक्षे कबन्धं च दकं पाथ इति पाठः) "पाथः, पुष्करं, सर्वतोमुखम्, ।

	१न २न ३न न न न ४न न
	अम्भो-ऽर्णा-स्तोय पानीय नीर क्षीरा-म्बु शंवरम् ॥ ४ ॥
	न पुन
	मेघपुष्पं घनरसस्
	पुसन पुसन
जल विकार ।	(त्रिषु द्वे) आप्यम म्मयम् ।
	पु ५पु पुस ६पुस
लहर ।	भङ्ग स्तरङ्ग ऊर्म्मि-(र्वा स्त्रियां) वीचिर्
	-(ऽथो र्मिषु) ॥ ५ ॥
	७पु पु
हिलकोरा ।	महत्सूल्लोल-कल्लोलौ
	८पु
भंवर ।	(स्यादा)-वर्त्तो-(ऽम्भसां भ्रमः) ।
	न न पु ९स
बून ।	पृषन्ति विन्दु पृषताः (पुमांसो) विप्रुषः (स्त्रियः) ॥ ६ ॥
	न पु
जल का निकलना ।	चक्राणि पुटभेदाः (स्युर्)
	पु पु
नाली-वा नल ।	भ्रमा-(श्च) जलनिर्गमाः ।
	न १०न न न पुसन
तीर ।	कूलं रोध (श्च) तीरं (च) प्रतीरं (च) तटं (त्रिषु) ॥ ७ ॥

१–स. २–स्. ३ तोय. ४ अ–. ५ त–. ६–चि. ७ उ–. ८ आ–. ९–प्. १०–स्.

अम्भः, अर्णः, तोयं, पानीयं, नीरं, "और भी नारं" क्षीरं, अम्बु, शम्बरं, "वा संवरं" दन्त्यादि भी है ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं, घनरसः ये २७ जल के नाम हैं, इनमें आपः स्त्री· और नित्य बहुवचन है, वाः रेफान्त है, पूर्व्व और पर के साहचर्य्य से स्त्री· और क्लीब है, शेष क्लीब हैं, "वारं–नारं–ये २ क्लीब हैं, यहां सर्व्वत्र संसार का चलन–प्रमाण है, नारः–घनरसः–ये २ पुं· हैं, शब्दार्णव के मत से, घनरसं–यह क्लीब भी है, "(घनरसमम्बुक्षीरमिति रत्नकोशात्)" । अप्यं, अम्मयं, "स्त्री· आप्या, अम्मयी" ये २ जलविकार के नाम हैं । भङ्गः, तरङ्गः, ऊर्म्मिः, "और भी स्त्री· ऊर्म्मी" वीचिः, "उसी प्रकार विचिः, और स्त्री· वीची, वा विची" ये ४ लहरियों के नाम हैं, ॥ ५ ॥ उल्लोलः, कल्लोलः, ये २ बड़ी लहरियों के नाम हैं, । जलों का भ्रम अर्थात् मण्डल के आकार घूमना आवर्त्तः, कहलाता है, वा भंवर इस प्रसिद्ध का नाम है, (एकं), । पृषन्ति, "ए·व· पृषत्" विन्दवः पृषताः, "ए·व· पृषतः" विप्लुषः, "ए·व· विप्लुट्, और भी विप्रुट्, (–ष्)", ये ४ जल बिन्दु के नाम हैं, इनमें पृषत् क्लीव है, विन्दु–पृषतो पुं· है; विप्लुष् स्त्री· है, ॥ ६ ॥ चक्राणि, "ए·व· वक्रं, चक्रं, और वक्राणि" पुटभेदाः, भ्रमाः, "ए·व· भ्रमः" जलनिर्गमाः, ये ४ जो जल, चक्र के आकार नीचे जाते हैं, उन के नाम हैं "वा वक्रादि दो जलके नीचे जानेके और भ्रमादि दो जल नाल के नाम हैं" । कूलं, रोधः, (रोधः) तीरं, प्रतीरं, तटं, "स्त्री· तटी" ये ५ तीर–वा किनारे के नाम हैं, । रोधः, सान्त और अदन्त भी है, (रोधः प्रोक्तश्चरोधसीति संसारावर्त्तः), तटं तीनों लिङ्ग हैं ॥ ७ ॥

	न १पुन
इस पार-उस पार ।	पारा-वारे (परार्वाची तीरे) न
दोनों का मध्य ।	पात्रं (तदन्तरम्) ।
	पुन २पुन
द्वीप-वा टापू ।	द्वीपो (ऽस्त्रियाम्) न्तरीपं (यद् न्तर्वारिणि स्तटम्) ॥ ८ ॥
	न
जल मध्य का स्थल ।	(तोयोत्थितं तत्) पुलिनं
	न न
बालू का स्थल ।	सैकतं सिकतामयम् ।
	पु पु पुन पु पु
कीचड़ ।	निषद्वर-(स्तु) जंबाल: पङ्को (ऽस्त्री) शाद-कर्द्दमौ ॥ ९ ॥
	पु पु
बाहा-वा नहर ।	जलोच्छ्वासा: परीवाहा: पु पु
गड़हा ।	कूपका-(स्तु) विदारका: ।
	पुसन
जल ।	नाव्यं (त्रिलिङ्गं नौतार्य्ये)
	स ३स स
नाव ।	(स्त्रियां) नौ स्तरणि स्तरि: ॥ १० ॥
	पुन पु पु
बेड़ा ।	उडुपं (तु) प्लव: कोल:
	४पुन
सोता-वा झर्ना ।	स्रोतो-(ऽम्बुसरणं स्वत:) ।

१ अ—. २ अ—. ३ त—. ४—स.

पार और अवार पारावारवाची तीर क्रम से पारावारे कहलाते हैं, अर्थात् नदी के पार तीर को पारं और इस तीर को अवारं कहते हैं, यह अर्थ है, (एकैकं) पार और अवार दोनों के मध्य को पात्रं, कहते हैं, (एकं) जलों के मध्य जो तट है उसे द्वीपः, और अन्तरीपं, कहते हैं, ये २ नों स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं, किंतु पुं· नपुंसक हैं, "(द्विर्गता आपोऽत्र स द्वीपः, अपामन्तर्गं अन्तरीपं)" ॥ ८ ॥ तोयोत्थितं अर्थात् जल के क्रम से उठे स्थल को पुलिनं, कहते हैं (एकं), सैकतं, सिकतामयं, ये २ बालू से युक्त स्थान के नाम हैं, निषद्वरः, जंबालः, पंकः, शादः, कर्द्दमः, ये ५ कर्द्दम अर्थात् कीचड़ के नाम हैं, इनमें पङ्कः पुं· नपुंसक है, ॥ ९ ॥ जलोच्छ्वासाः, परीवाहाः, "ए·व· परीवाहः, वा परिवाहः" ये २ जल निकलने के मार्ग से बढ़े जल के बहने के—वा झर्ना के नाम हैं, वैसाही प्रयोग है जैसे "(उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणं । तड़ागोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसामिति)" कूपकाः, "ए·व· कूपकः" विदारकाः, "वा विदारिकाः" ये २ सूखी नदी आदि में जल के अर्थ जो गड़हा करते हैं, उन के नाम हैं, "वा सोतों के दो भाग करनेवाली शिला आदि को कूपकाः, कहते हैं, नाव से पार होनेके योग्य जल आदि को नाव्यं, "स्त्री· नाव्या" कहते हैं, (एकं) सो भी तीनों लिङ्ग है, । नौः, "और भी नौका" तरणिः, "और भी तरणी", तरिः, "और तरी" ये ३ नाव के नाम हैं, ॥ १० ॥ उडुपं, "उसी प्रकार उडूपं" प्लवः, कोलः, ये ३ छोटी नाव के—वा घन्नई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, । जो आप से जल निकलता है उसे स्रोतः, "उसी प्रकार स्रोतं" कहते हैं, (एकं) तालव्यादि भी है, ।

	पु १न
खेवा-वा उतराई ।	आतर-स्तरपण्यं (स्याद्)
	स स
डोंगी ।	द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
	पु २पु
नाविक-वा जहाजी ।	सांयात्रिकः पोतवणिक्
	पु पु
पतवार पकड़ने वाला ।	कर्णधार-(स्तु) नाविकः ।
	पु पु
खेवैया ।	नियामकाः पोतवाहाः
	पु पु
मस्तूल ।	कूपको गुणवृत्तकः ॥ १२ ॥
	पु स
डांड़ ।	नौकादण्डः क्षेपणिः (स्याद्)
	न पु
पतवार ।	अरित्रं केनिपातकः ।
	स पु
काठ की कुदार ।	अभ्रिः (स्त्री) काष्ठकुद्दालः
	न न
डोलची ।	सेकपात्रं (तु) सेचनम् ॥ १३ ॥
	न
	(क्लीबे)-ऽर्द्धनावं (नावोऽर्द्धे)
	पुसन
तिर्नवाला ।	(ऽतीत नौके) ऽतिनु (त्रिषु) ।

१ त-. २-ज.

आतरः, तरपण्यं, "उसी प्रकार आतारः, अनुतरः" ये २ पार उतरने के मोल के वा उतराई के नाम हैं, । काष्ठमयी जलके बाहन को द्रोणी, और काष्ठाम्बुवाहिनी, कहते हैं, "उसी प्रकार द्रोणिः, और द्रुणिः वा द्रुणी, और भी द्रोणिका, और अम्बुवाहिनी, और भी अम्बुसेचनी" ये सब डोङ्गी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ११ ॥ सांयात्रिकः, यह एकट्ठे होकर जाना—वा दूसरे द्वीप का जाना संयात्रा है वह प्रयोजन है जिसका वह, और पोतवणिक, ये २ नाव से व्यवहार करने वाले के नाम हैं, । कर्णधारः, नाविकः, ये २ जो कर्णधार पकड़ कर पार उतारता है उसके नाम हैं, । नियामकाः, पोतवाहाः, "ए॰ व॰ नियामकः, पोतवाहः, उसी प्रकार नियामः" ये २ जो नाव के मध्यस्थित काष्ठ के आगे दुष्ट जन्त्वादिक के ज्ञानार्थ ठहर कर लेजाने को समर्थ हैं, उनके नाम हैं, । कूपकः, गुणवृत्तकः, ये २ रस्सी आदि आधार के मध्यस्तम्भ के—वा कूआ— वा मस्तूल के नाम हैं, ॥ १२ ॥ नौकादण्डः, क्षेपणिः, "वा क्षेपणी, और भी क्षिपणिः, और क्षिपणी" ये २ नाव खेवने के दण्ड—वा डांड़ के नाम हैं, । अरित्रं, केनिपातकः, ये २ कर्णधार के—वा पतवार के नाम हैं, । अभ्रिः, "वा अभ्री, और भी अभ्रिः" काष्ठकुद्दालः, "वा काष्ठकूद्दालः, उसी प्रकार कूद्दालः, और कुदालः" ये २ नाव आदि के मलके दूर करने के अर्थ काष्ठ की कुदार के नाम हैं, । सेकपात्रं, सेचनं, ये २ चाम आदि के बनाये जल फेंकने के पात्र के— वा डोलची इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १३ ॥ नाव के अर्धभाग को अर्द्धनावं, यह अर्द्धनाव का नाम है, सो भी क्लीब है, । नौका को जीत कर वर्त्तमान मनुष्य आदि जो बडा तैरने वाला है वह अतिनु, कहलाता है, (एकं) और तीनों लिङ्ग हैं, पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में अतिनौः, होता है, ।

(त्रिष्वा गाधात्)

निर्म्मल ।	पुसन पुसन प्रसन्नो-ऽच्छः
गन्दा ।	पुसन पुसन पुसन कलुषो ऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
गहरा ।	पुसन पुसन पुसन निम्नं गभीरं गंभीरं
थाह ।	पुसन उत्तानं (तद्विपर्य्यये) ।
अथाह ।	पुसन १पुसन अगाध-मतलस्पर्शे
मलाह ।	पु पु पु कैवर्त्ते दास-धीवरौ ॥ १५ ॥
जाल ।	पु पु आनायः (पुंसि) जालं (स्यात्)
सुतरी ।	न न शणसूत्रं पवित्रकम् ।
टोकरी ।	स स मत्स्याधानी कुवेणी (स्यात्)
वंशी ।	न न वडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

१ अ-.

इस के आगे अगाध शब्द पर्य्यन्त तीनों लिङ्ग हैं, अर्थात् विशेष्य लिङ्ग के अनुसार इन का भी लिङ्ग होता है, । प्रसन्नः, "स्त्री॰ प्रसन्ना" अच्छः, "और भी स्वच्छः" ये २ निर्म्मल के-वा पवित्र के नाम हैं, । कलुषः अनच्छः, आविलः, ये ३ मैले के नाम हैं, ॥ १४ ॥ निम्नं, गभीरं, गंभीरं, ये ३ गंभीर वा गहरे के नाम हैं, । गंभीर से भिन्न स्थल को उत्तानं कहते हैं, (एकं) अगाधं, "उसी प्रकार आगाधं" अतलस्पर्शं, ये २ अत्यन्त गंभीर के नाम हैं । कैवर्त्तः, दासः, "वा दाशः" धीवरः, "स्त्री॰ धीवरी" ये ३ कैवर्त्त-वा मलाह के नाम हैं, ॥ १५ ॥ आनायः, जालं, ये २ जाल के नाम हैं, । शणसूत्रं, "और भी सणसूत्रं, और सनसूत्रं," पवित्रकं, ये २ शण के सूत अर्थात् सूतरी के नाम हैं, । मत्स्याधानी, कुवेणी, "उसी प्रकार कुवेणा, और कुवेणिः, और भी कुपिणी" ये २ मछलियों के बांधने के लिये टोकरी के नाम हैं, । वड़िशं, "वा स्त्री॰ वड़िशा, वा वड़िशी" "उसी प्रकार वलिसं, वा वलिसी" मत्स्यवेधनं, "वा स्त्री॰ मत्स्यवेधनी" ये २ मछली पकड़ने की वंशी के नाम हैं, ॥ १६ ॥

मछली ।	पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणो ऽण्डजः । विसारः शकली (चा)-
गलफटी मछली- वा बच्चे ।	(ऽथ) गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
बहु दन्तवाली- वा पहिना ।	सहस्रदंष्ट्रः पाठीन
शिशुमार-वा सूस ।	उलूपी शिशुकः (समौ) ।
तृणचारी-वा भिङ्वा ।	नलमीन श्चिलिचिमः
शहरी ।	प्रोष्ठी (तु) शफरी (द्वयोः) ॥ १८ ॥
छोटी मछली ।	क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानम्
बहुत प्रकार छोटी मछली के ।	(अथो झषाः) । रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुल-स्तिमिः ॥ १९ ॥

१-मन. २-न. ३-न. ४ चि-. ५-रः.

पृथुरोमा, झषः, "उसी प्रकार झसः" मत्स्यः, "स्त्री॰ मत्सी, और भी पुं॰ मत्सः, मत्स्यः, मच्छः" मीनः, वैसारिणः, "और भी विसारी (न्)" अण्डजः विसारः, शकली, "उसी प्रकार शल्की (न्) ये ८ मत्स्य-वा मछली के नाम हैं, । गड़कः, शकुलार्भकः, ये २ मत्स्य विशेष-वा मगर इस प्रसिद्ध वा बच्चे के नाम हैं, ॥ १७ ॥ सहस्रदंष्ट्रः, पाठीनः, ये २ बहुत दन्तवाले मत्स्य विशेष-वा पहिना के नाम हैं, । उलूपी, "और भी उल्लुपी, ऊलुपी, उलपी, और चुलूपी" शिशुकः, ये २ शिशुमार मत्स्य-वा सूइस के नाम हैं, । नलमीनः, "वा तलमीनः, और नड़मीनः,डलयोरभेदात्" चिलिचिमः, "नलमीनश्चिलिचिमिरिति वोपालितः, और भी चिलीचिमिः, चिलिचीमः, वा चिलीचिमः, और चिलिचिमिः, चिलीमः, चिलिमीनकः" ये २ जल के तृणचारी मत्स्य विशेष-वा भिङ्वा के अर्थात् समुद्र की मछली के नाम हैं, । प्रोष्ठी, "पुं॰ प्रोष्ठः" शफरी, "पुं॰ शफरः, कोई सफरी-रः, पढ़ते हैं", ये २ सहरी इस प्रसिद्ध मछली के नाम हैं, ॥ १८ ॥ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः, पोताधानं, ये २ छोटे मत्स्यों के समूह के अण्ड के नाम हैं, अब मत्स्य विशेष कहते हैं और पर्य्याय नहीं हैं; जैसे, रोहितः, "और भी रोहित्, और लोहितः", यह १ रोहू इस प्रसिद्ध का नाम है; मद्गुरः, यह १ मगर इस प्रसिद्ध का नाम है; शालः, "वा सालः" यह १ चक्र चिह्नित मत्स्य वा सौरी का नाम है; राजीवः मत्स्य विशेष वा राया का नाम है; शकुलः, "उसी प्रकार सकुलः" यह १ बड़ा वेगवान्-वा शौरा इस प्रसिद्ध का नाम है, तिमिः, यह १ बड़ी भारी मछली का नाम है, ॥ १९ ॥

तिमिङ्गिल ।	१पु तिमिङ्गिला (दय श्चा)
सर्व जल जीव ।	२न ३पु (ऽथ) यादांसि जलजन्तवः ।
जल जीव भेद ।	पु ४पु ५पु ६पु (तद्भेदाः) शिशुमा-रोद्र-शङ्कवो मकरा (दयः) ॥ २० ॥
केंकड़ा ।	पु पु (स्यात्) कुलीरः कर्कटकः
कछुआ वा-हा ।	पु पु पु कूर्मे कमठ-कच्छपौ ।
ग्राह-वा घड़ियाल	पु पु ग्राहो-ऽवहारो
ग्राह विशेष-वा नाक ।	पु पु नक्र-(स्तु) कुम्भीरो
जल के कीड़े वा केंचुआ ।	स -(ऽथ) महीलता ॥ २१ ॥ पु पु गण्डूपदः किञ्चुलुको
गोह ।	स स निहाका गोधिका (समे) ।
जोंक ।	स स ७स रक्तपा (तु) जलोकायां (स्त्रियां भूम्नि) जलोकसः ॥ २२ ॥

१–ल. २–स्. ३–तु. ४ उद्र. ५ शंकु. ६–र्. ७–कस्.

तिमिङ्गिलः, आदि शब्द से नंघावर्त्तः, तिमिङ्गिलगिलः, आदि, ये एकेक मत्स्य विशेष के नाम हैं; यादांसि, जलजन्तवः, ये २ जलचर जीव के नाम हैं, और उन जल जन्तुओं के भेद विशेष ये हैं; जैसे शिशुमारः, यह शिरस इस प्रसिद्ध का नाम है, उद्रः, यह जलविल्ली इस प्रसिद्ध का नाम है, शङ्कुः, यह मत्स्य विशेष का नाम है, मकरः, यह मगर इस प्रसिद्ध का नाम है. आदि शब्द से सब जलचर जीवों का ग्रहण है; ॥ २० ॥ कुलीरः, "उसी प्रकार कुलिरः" कर्कटकः, "वा कर्कटः, करकटः, और कर्कड़ः" ये २ केंकड़ा के नाम हैं; कूर्म्मः, कमठः, कच्छपः, ये ३ कछुआ वा–हा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ग्राहः, अवराहः, "अवहारः भी" ये २ घड़िआल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(अवह्रियते ऽनेनेति अवहारः, अवहारस्तु युद्धादिविश्रान्तौ ग्राहचौरयोरिति हैमः)", नक्रः, कुम्भीर, "और भी कुम्भीलः" ये २ नाक अर्थात् ग्राह विशेष के नाम हैं "(कुम्भी हस्ती तमीरयतीति कुम्भीरः)" महीलता, ॥ २१ ॥ गण्डूपदः, किञ्चुलुकः, "उसी प्रकार किञ्चिलिकः, और किञ्चलूकः, वा किञ्चुलुः, और भी किञ्चलुकः" ये ३ जलचर के भेद के नाम हैं अर्थात् केंचुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; निहाका, गोधिका, ये २ गोह इस प्रसिद्ध के नाम हैं; रक्तपा, जलौका, "वा जलोका, और जलूका, जलायुका, जलासुका, जलालोका, जलजन्तुका, जलसूची, जलोरगी, जलिकावेणी", जलोकसः, "वा जलौकसी, और भी जलौकसः", "और जलोकसं, और भी एक व॰ जलौकाः", इनमें जलौकसः, यह स्त्रीलिङ्गः और नित्य बहु वचन है, ये ३ जोंक इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २२ ॥

शीपी ।	पु स मुक्तास्फोट: (स्त्रियां) शुक्ति:
शंख ।	पुन पुन शंख: (स्यात्) कंबु-(रस्त्रियाम्) ।
छोटाशंख ।	पु पु क्षुद्रशंखा: शंखनखा:
घोंघा ।	पुस १स शंबूका जलशुक्तय: ॥ २३ ॥
मेघा-वा मेड़क ।	२पु पु पु पु पु ३पु भेके मण्डूक-वर्षाभू-शालूर-प्लव-दर्दुरा: ।
छोटे कीड़े-वा केंचुआ ।	स स शिली गण्डूपदी
मेघी ।	स स भेकी वर्षाभ्वी
कछुही ।	स स कमठी दुलि: ॥ २४ ॥
मत्स्य विशेष की स्त्री ।	स (मद्गुरस्य प्रिया) शृङ्गी
जोंक के भेद ।	पु स दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
जलाशय ।	पु पु जलाशया जलाधारास्
बड़ा जलाशय ।	पु (तत्रा गाधजलो)-ह्रद: ॥ २५ ॥

१-क्ति., २ भेक. ३-र.

मुक्तास्फोट:, शुक्ति: ये २ शुक्तिका-वा सीपी-इस प्रसिद्ध के नाम हैं, शंख:, कंबु:, ये २ शंख के नाम हैं, और पुं· नपुंसक लिङ्ग; हैं, क्षुद्रशंखा:, "ए· व· क्षुद्रशंख:" शंखनखा:, "ए· ब· शंखनख:, और भी शंखनक:", ये २ छोटे शंख के नाम हैं; शंबूका:, जलशुक्तय:, "पुं· शंबूक:, और भी शंबुक:, शंबु:, और शांबुक:, वा शांबूक:" ये २ जलमात्र से उत्पन्न शीपी-वा घोंघा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, और शंबूक: यह पुं· स्त्री लिङ्ग है, ॥ २३ ॥ भेक:, मण्डूक:, वर्षाभू:, "और भी वृष्टिभू:" शालूर:, "दन्त्यादि भी है सालूर:" प्लव:, दर्दुर:, ये ६ भेक-मेड़क-वा मेघा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; शिली, गण्डूपदी, ये २ छोटे जाति के केंचुआ के नाम हैं; भेकी, वर्षाभ्वी, "और भी वर्षाभू:" ये २ छोटी जाति के मेड़क-वा मेघा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कमठी, दुलि:, "वा दुली, और भी डुलि:, और दुड़ि:" ये २ कछुही के नाम हैं, ॥ २४ ॥ शृङ्गी, "और मद्गुरसी, अप्रिया, और भी शृङ्गी:" मद्गुर नाम वाले मत्स्य विशेष की प्रिया का यह एक नाम है, (एकं) दुर्नामा, "और भी दुर्नामन्, और दुर्नाम्नी" दीर्घकोशिका, ये २ जलूका के आकार जलचर विशेष-वा जोंक के भेद के नाम हैं, जलाशया:, जलाधारा:, "ए· ब· जलाशय:, और जलाधार:" ये २ तड़ाग वा तलाव आदि के नाम हैं; उन जलाशय आदि में ही ये वक्ष्यमाण विशेष भेद हैं, अगाध अर्थात् अथाह और अतलस्पर्श अर्थात् बहुत गहिर, जल है जिस जलाशय का उसे ह्रद:, "उसी प्रकार ह्रुद:" कहते हैं, (एकं) ॥ २५ ॥

	पु न
ओड़ान-वा प्याऊ।	आहाव-(स्तु) निपानं-(स्याद् उपकूप जलाशये)।
	१पु २पु पु पुन
कूआ।	(पुंस्ये वा)-ऽन्धुः प्रहिः कूप उदपानं-(तु पुंसि वा) ॥ २६ ॥
	स स
गड़ाड़ी।	नेमि-स्त्रिका (ऽस्य) पु
जगत्-वा मन।	३स न वीनाहो (मुखबन्धनम स्य यत्)।
चौकोन गड़हा।	पुष्करिण्यां (तु) खातं (स्याद्)
	पुन म
सरोवर।	पु ४पुन अखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
तलाव।	पद्माकर-स्तडागो (ऽस्त्री) पु स ५न
बड़ा सरोवर।	पु पुन ६न कासारः सरसी सरः।
छोटा सरोवर।	वेशन्तः पल्वलं-(च) ऽल्पसरो
	स स
बावड़ी।	न स वापी (तु) दीर्घिका ॥ २८ ॥
खाई।	खेयं-(तु) परिखा ७पु
बांध।	आधार-(स्त्व म्भसां यत्र धारणम्)।
	म ८न ९पु
थावला।	(स्याद्) आलवाल-मावाल-मावापो स स
नदी।	(ऽथ) नदी सरित् ॥ २९ ॥

१ अं-. २-हि. ३-णी. ४ त-. ५-स्. ६-स्. ७ आ-. ८ आ-. ९ आ-.

अहावः, निपानं, ये २ कूप के समीप में जो जलाशय है अर्थात् कूप से निकाले जलके ठहरने के अर्थ शिला आदि से बनाया हुआ जो गड़हा है जिस में के जल को गैयां सुख से पीति हैं उसके नाम हैं; अन्धुः, प्रहिः, कूपः, उदपानं, ये ४ कूआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, इन् में उदपानं यह शब्द पुल्लिङ्ग विकल्प से है, ॥ २६ ॥ नेमिः, त्रिका, ये २ कूआ के ऊपर रस्सी आदि के रखने के अर्थ जो लकड़ी का यन्त्र वा गड़ाड़ी है उस के नाम हैं, वीनाहः, "उसी प्रकार विनाहः" यह १ इस कूआ का जो पत्थल आदि से मुख का बन्धन जगत है उस का नाम है; पुष्करणी, खातं, ये २ पुष्करिणी—वा छोटी तलैआ के नाम हैं; अखातं, देवखातकं, "उसी प्रकार अखोतं" ये २ विना बनाये जलाशय के नाम हैं, "और ये २ देवद्वार के जलाशय के नाम हैं यह अन्य का मत है" ॥ २७ ॥ पद्माकरः, तड़ागः, "और भी तड़ाकः, और तटाकः, तटागः भी" कासारः, सरसी, सरः, ये ५ तड़ाग—वा तलाव इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "इन्में तड़ाग और तटाक यह पुं॰ नपुंसक लिङ्ग है, और पद्म आदि २ सपद्म और अगाध जलाशय के नाम हैं, कासार आदि ३ बनाये पद्मा करके नाम हैं, यह मत है" सरसी स्त्री॰ और सरः सान्त और न॰ है; वेशन्तः, पल्वलं, "उसी प्रकार पल्वलः," वेशन्तः, पल्वलः, ये २ स्त्री लिङ्ग नहीं हैं, यह वाचस्पति का मत है, अल्पसरः, ये ३ अल्पसर—वा छोटे तलाव के नाम हैं; वापी, "वा वापिः" दीर्घिका, ये २ बड़ी बावड़ी के—वा बाउली इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २८ ॥ खेयं, परिखा, ये २ किला वा गढ़ से बाहर जो चारो ओर खात किया जाता है उस के वा खांई इस प्रसिद्ध के नाम हैं; जहां जलों का धारण अर्थात् खेत आदि के सींचने के अर्थ संग्रह है उसे आधारः, कहते हैं, वा "बांध यह प्रसिद्ध है," आलवालं "और भी अलवालं" आवालं, आवापः, ये ३ वृक्ष आदि के मूल वा जड़ में जो चारो ओर से जल धारण के अर्थ गोलाकार बनाते हैं उस के नाम हैं; नदी, सरित्, ॥ २९ ॥

	स स स स स
	तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ।
	स स स स स १स
	स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगा-पगा ॥ ३० ॥
	स स स स
गंगा ।	गंगा विष्णुपदी जन्हुतनया सुरनिम्नगा ॥
	स स २स स
	भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसू-(रपि) ॥ ३१ ॥
	स स स ३स
यमुना ।	कालिन्दी सूर्य्यतनया यमुना शमनस्वसा ।
	स स स स
नर्म्मदा ।	रेवा (तु) नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
	स स
नदी विशेष ।	करतोया सदानीरा
	स स
कार्त्य वीर्त्त की नदी ।	बाहुदा सैतवाहिनी ॥
	छ स
शतद्रु ।	शितद्रु-(स्तु) शतद्रुः (स्याद्)
	स ४स
विपाशा ॥	पु पु विपाशा (तु) विपाट् (स्त्रियाम्) ॥ ३३ ॥
शोणभद्र ।	शोणो हिरण्यबाहुः (स्यात्) स
बनाई नदी-वा नहर।	कुल्या-(ऽल्पा कृत्रिमा सरित्) ।
	स स स स
शरावती-वैत्रवती चन्द्रभागा और सरस्वती	शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

१ अ–, आ–. २–तस्. ३–स्त्र. ४–श्.

तरंगिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्रादिनी, "और भी ह्रदिनी" धुनी, "उसी प्रकार धुनिः, और धूनी" स्रोतस्विनी, उसी प्रकार स्रोतस्वती, और स्रोतोवहा भी" द्वीपवती, स्रवन्ती, निम्नगा, आपगा, "और भी अपगा, यह ह्रस्व भी है, (विद्यादगारमागारमपगामापगामपीति द्विरूपकोशः)" ये १२ नदी के नाम हैं; ॥ ३० ॥ गंगा, विष्णुपदी, जन्हुतनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोताः, भीष्मसूः, ये ८ भागीरथी वा गंगा के नाम हैं, त्रिस्रोताः यह सान्त है; ॥ ३१ ॥ कालिन्दी, सूर्य्यतनया, यमुना, "और भी यमी" शमनस्वसा, ये ४ यमुना के नाम हैं, शमनस्वसा यह ऋदन्त है; रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका, "उसी प्रकार मेखलकन्यका" ये ४ नर्मदा के नाम हैं, "मेखल एक ऋषि वा पर्व्वत है उसकी कन्या"; ॥ ३२ ॥ करतोया, सदानीरा, ये २ गौरी विवाह में कन्या दान के जल से उत्पन्न नदी के नाम हैं; बाहुदा, सैतवाहिनी, ये २ कार्त्तवीर्य्यार्जुन से उत्पन्न नदी के नाम हैं, "(बाहुदस्य बहुदानशीलस्य कार्त्तवीर्यस्येयं बाहुदा)" शितद्रुः, "और भी शुतुद्रिः" शतद्रुः, ये २ शतद्रु अर्थात् शतलज इस देश भाषा से प्रसिद्ध नदी के नाम हैं, वशिष्ट के शाप के भय से शत प्रकार की गति वाली नदी शतद्रु है; विपाशा, विपाट्, ये २ पाशमोचनी अर्थात् व्यासा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(वशिष्टे विपाशयति इति विपाट्) शकारान्त है, ॥ ३३ ॥ शोणः, हिरण्यबाहुः, "वा हिरण्यवाहः" ये २ शोणभद्र के नाम हैं, छोटी और बनाई गई नदी वा नहर को कुल्या कहते हैं, (एक) शरावती, वेत्रवती, चन्द्रभागा, "वा चन्द्रभागी, और भी चान्द्रभागा वा–गी" "(चन्द्रभागी च सैवोक्तेति द्विरूपकोशः)" सरस्वती, ॥ ३४ ॥

	स कावेरी (सरितो ऽन्याश्च)
नदियोंके मिलने का स्थान-वा मुख।	पु पु सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः ।
जल निकलने का मार्ग वा रास्ता।	पुस (द्वयोः) प्रणाली (पयसः पदव्यां) । (त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥
देविका में दाविक सरयू में हो सारव।	पुसन पुसन देविकायां सरय्वां च भवे) दाविक-सारवौ ।
कुई वा श्वेत कमल।	न न सौगन्धिकं (तु) कल्हारं
लाल कमल वा कुई।	न न हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥
कुमुद वा कमल विशेष वा फफूला ,	न न (स्याद्) उत्पलं कुवलयं
नील कमल ।	१न (अथ) नीलाम्बुजन्म (च) । न इन्दीवरं (च नीलेऽस्मिन्)
श्वेत कमल के भेद वा फफूला ।	न न (सिते) कुमुद कैरवे ॥ ३७ ॥
धूरि-वा-मकरन्द-वा-इनका मूल ।	न शालूक (मेषां कन्दः स्याद्)
पुरइन ।	स स वारिपर्णी (तु) कुम्भिका ।

१–न.

कावेरी, ये ५ नदियां इन्ही नामों से अर्थात् शरावती–वेत्रवती–चन्द्रभागा–सरस्वती–कावेरी ये, नदी विशेष के नाम हैं, (एकैकं) अन्य नदियां अर्थात् कौशिकी, गण्डकी, गोदा, चर्म्मण्वती, वेणी, आदि हैं इन के मेल को सम्भेदः, सिन्धुसंगमः, ये २ नदी मुख के वा मुहाने के नाम हैं, "(संभिद्यंते मिलन्त्यत्र संभेदः)" पयसः पदव्यां अर्थात् जल निकलने के मार्ग को जो मकर आदि के मुख से बनती है उसे प्रणाली कहते हैं, (एकं) पुं॰ प्रणालः, पनारा इस प्रसिद्ध का नाम है ॥ ३५ ॥ उत्तर अर्थात् आगे आने वाले दाविक, और सारव, ये २ त्रिलिङ्ग हैं, देविका नदी में हो वह दाविकं, और सरयू नदी में हो वह सारवं कहलाता है, (एकैकं) स्त्री लिङ्ग में दाविकी, और सारवी, ये होते हैं; सौगन्धिकं, कल्हारं, "और भी कल्हारं" ये २ सन्ध्याकाल में फूलने वाले श्वेत कमल वा कोई के नाम हैं; हल्लकं, रक्तसन्ध्यकं, ये २ रक्त कमल के नाम हैं; ॥ ३६ ॥ उत्पलं, कुवलयं, "और भी कुवलं, और कुवं, और कुवेलं", ये २ कुमुद के नाम हैं, "अन्य के मत से साधारण कमल के नाम हैं" नीलाम्बुजन्म, इन्दीवरं, ये २ नील उत्पल के नाम हैं, "और भी इन्दिवरं, वा इन्दीवारं" कुमुदं, कैरवं, ये २ श्वेत उत्पल के नाम हैं, "और भी कुमत्, (–द)" (केरवस्य हंसस्येदं प्रियं कैरवम्) अर्थात् हंस के प्यार कमल को कैरवं कहते हैं, ॥ ३७ ॥ इन उत्पल विशेषों के कन्द अर्थात् मूल विशेष को शालूकं, कहते हैं; (एकं) वारिपर्णी, कुम्भिका, ये २ जलकुम्भी–वा जलपुष्प अर्थात् पुरइन के नाम हैं; ।

	स न पु
सेवार।	जलनीली (तु) शैवालं शैवलः
	स
कुमुदिनी।	(ऽथ) कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
	१स
	कुमुदिन्यां
	२स स स
कमलिनी।	नलिन्यां (तु) बिसिनी पद्मिनी (मुखाः)।
	पुन नः ३न न
कमल।	(वा पुंसि) पद्मं नलिन मरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
	न न न न
	सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम्।
	न न न न
	पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
	न न न ४न
	बिसप्रसून राजीव पुष्करा म्भोरुहा णि (च)।
	न न
श्वेत कमल।	पुण्डरीकं सिताम्भोजं
	न
रक्त कमल।	(अथ) रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥
	न न
	रक्तोत्पलं कोकनदं
	पु न
कमल दण्ड।	नालो नालं
	(अथाऽस्त्रियाम्)।

१—नी. २—नी. ३ अ—. ४ अ—ह.

जलनीली, शैवालं, शैवलः, "उसी प्रकार शेवलं, और भी शेवालं, और शेवालः, और भी शे-पालः, और शेयालः, "जलनीलिका" ये ३ शेवाल—वा सेवार इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कुमुद्वती ॥ ३८॥ कुमुदिनी, "उसी प्रकार कुमुदवती" ये २ कुमुदिनी—वा फफूली के नाम हैं; "कुमुद से युक्त देश के भी नाम हैं", नलिनी, "नड़िनी भी, नर कुल हैं जिस देश में वे" बिसिनी, पद्मिनी, "और भी मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी" ये ३ कमलिनी के नाम हैं, मुख शब्द से सरोजिनी प्रभृति हैं; पद्मं, नलिनं, अरविन्दं, महोत्पलं, ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं, कमलं, शतपत्रं, कुशेशयं, पंकेरुहं, तामरसं, सारसं, सरसीरुहं, ॥ ४० ॥ बिसप्रसूनं, राजीवं, पुष्करं, अम्भोरुहं, ये १६ कमल के नाम हैं, वा पुंसि यह पद सोलहों से सम्बन्ध रखता है, "सरसिरुहं, विशप्रसूनं, और विषप्रसूनं, और भी अम्भोरुट्, (रुह)" पुण्डरीकं, सिताम्भोजं, ये २ श्वेत कमल के नाम हैं, रक्तसरोरुहं, ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं, कोकनदं, ये ३ रक्त कमल के नाम हैं, नालः, नालं, "और भी नाली" ये २ कमल—वा पद्म आदि के दंड के नाम हैं; ।

भसीड़ा ।	पुन न मृणालं विसं
कमल समूह ।	पुन (अब्जादि कदम्बे) षण्ड (मस्त्रियाम्) ॥ ४२ ॥
कमल की जड़ ।	पु पुन करहाट: शिफाकंदं
कमल की धूलि ।	पु पुन किञ्जल्क: केशरो (ऽस्त्रियाम्) ।
कमल आदि के नये पत्ते ।	स न संवर्त्तिका नवदलं
कमल गट्टा ।	पु पु बीजकोशो वराटक: ॥ ४३ ॥

॥ इति वारिवर्ग: ॥

(उक्तं स्वर्व्योम दिक्काल धीशब्दादि सनाट्यकम् ।
पातालभोगि नरकं वारिचैषां च सङ्गतम्) ॥ ४४ ॥
(इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
स्वरादि काण्ड: प्रथम: साङ्गोपाङ्ग समर्थित:) ॥ ४५ ॥

॥ इति प्रथमकाण्ड: समाप्त: ॥

मृणालं, "मृणाल:, और मृणाली" विसं, "और भी विशं, वा विषं" ये २ मृणाल अर्थात् भंसीड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वा कमल के मूल के नाम हैं, अस्त्रियाम्–ये क्लीव और पुं· हैं; अब्जादि कदम्बे अर्थात् कमल के समूह को षण्ड कहते हैं, "वा शण्ड:" यह तालव्य और मूर्धन्य", है, "(सनोति–षणुदाने–जमन्ताड्ड इति ड प्रत्यय: षण्ड: स्मृतो क्लीवक्लेशण्डन्तु कानने भवेत्)" यह अजय का मत है, और अस्त्रीलिङ्ग है, ॥ ४२ ॥ करहाट:, शिफाकन्द:, ये २ कमल की जड़ि के नाम हैं, "शिफा जड़ि का अंखुआ है उसके सहित कन्द को शिफाकन्द: कहते हैं, कन्द, मूल है, किसी के मत में शिफा और कन्द: ये पृथक् नाम हैं", किञ्जल्क:, केशर:, "उसी प्रकार केसर:" ये २ कमल के केशर वा रज–वा धूलि के नाम हैं; संवर्त्तिका, नवदलं, "वा संवर्त्त:, और भी संवर्त्ती" ये २ पद्म आदि के नये पत्ते के नाम हैं; बीजकोश:, वराटक:, वा "बीजकोष:" ये २ बीजकोश के नाम हैं, "(बीजानां कमलादाणां कोशोबीजकोश:)" ॥ इति वारिवर्ग: ॥ उक्तं इस पद से कहे वर्गों का संग्रह कर उपसंहार करते हैं, कि हमने स्वर व्योम आदि दश वर्गों को कहा, और शब्द आदि तथा रस गन्ध आदि के ग्रहण के अर्थ आदि शब्द है, और इन स्वर्ग वर्ग आदिकों की संगति के वश से प्राप्त जो देव असुर और मेधा आदिक हैं उनको भी कहा, ॥ ४४ ॥ इस प्रकार अमरसिंह के बनाये ग्रन्थ में जो नाम और लिङ्ग के अनुशासन करने वाले में स्वर आदि शब्दों का समूह अङ्ग और उपाङ्गों के सहित प्रथम काण्ड कहा गया ॥ ४५ ॥

अमरसिंह के कोश में काण्ड त्रय शुभ खानि । प्रथम काण्ड वर्णन कियो देवदत्त मणि जानि ॥

॥ इति अमरकोश टीका में प्रथम काण्ड ॥

अथ द्वितीयकाण्डप्रारम्भः ।

अथ प्रथमवर्गः ।

	वर्गाः पृथ्वी पुर क्ष्माभृ द्वनौषधि मृगादिभिः ।
	नृ ब्रह्म क्षत्र विट् शूद्रैः साङ्गोपाङ्गै रिहो दिताः ॥ १ ॥
	स स १स स स स स
भूमि ।	भू भूमि रचला ऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।
	स स स स स स स
	धरा धरित्री धरणिः क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥
	स स २स ३स स
	सर्व्वंसहा वसुमती वसुधो र्व्वी वसुन्धरा ।
	स स स स स स ४स स
	गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनि र्मेदिनी मही ॥ ३ ॥
	५स स
मट्टी ।	मृ न्मृत्तिका
	स स
अच्छी मट्टी ।	प्रशस्ता तु) मृत्सा मृत्स्ना (च मृत्तिका) ।
	स
सब सस्ययुक्त ।	उर्व्वरा (सर्व्वशस्याढ्या)
	पु स
लोनी मट्टी ।	(स्याद्) ऊषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

१ अ—. २—धा. ३ ऊ—. ४ मे—. ५—द्.

वक्ष्यमाण इस दूसरे काण्ड में अङ्ग और उपाङ्गों से अथवा पृथ्वी पुर आदि नाने पदों से तहां अङ्ग मट्टी आदि—उपाङ्ग बज़ार आदि—पर्व्वत शिला आदि—वृक्ष आदि—पुष्पादि—मृग शब्द जङ्ग-ली पशु मात्र पर है आदि शब्द से पक्षी—कीड़े आदि लिये जाते हैं, और उनके अङ्ग—उपाङ्ग पक्ष आदि शब्दों से हमने वर्ग कहा, अर्थात् कहने का आरम्भ किया, तहां क्ष्माभृत् शैलः, "और भी जो मृगों को वारंवार खाता है वह मृगादी सिंह, आदि हैं ॥ १ ॥ भूः, भूमिः, "और भी भूमी" अचला, अनन्ता, रसा, विश्वंभरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणिः, "उसी प्रकार धरणी" क्षोणी, "और क्षोणिः, और भी क्षौणिः, और क्षौणी" ज्या, काश्यपी, क्षितिः, ॥ २ ॥ सर्वंसहा, "उसी प्रकार सहा" वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कुः, पृथिवी, "और भी पृथवी" पृथ्वी, क्ष्मा, "उसी प्रकार क्षमा" अवनिः, "उसी प्रकार अवनी" मेदिनी, मही, "उसी प्रकार महिः", ये २७ भूमि के नाम हैं "विपुला, गह्वरी, धात्री, गौः, इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा", ये भी ११ पृथिवी के नाम हैं, ॥ ३ ॥ मृत्, मृत्तिका, "और भी मृदा, और मृत्तिः" ये २ मृत्तिका के नाम हैं ॥ मृत्सा, मृत्स्ना, ये २ अच्छी मट्टी के नाम हैं ॥ सब सस्यों से युक्त मृत्तिका, उर्वरा, कहलाती है, ऊषः, क्षारमृत्तिका, ये २ क्षार मृत्तिका के नाम हैं, ऊष दन्त भी है ॥ ४ ॥

ऊसर ।	१पुसन २पुसन ऊषवा-नूषरौ (द्वावप्यन्यलिङ्गौ)
स्थल वा स्थान ।	न न स्थलं स्थली ।
मरुस्थल ।	पु ३पु (समानौ) मरु-धन्वानौ
जङ्गल ।	पुसन पुसन (द्वे) खिला-ऽप्रहते (समे) ॥ ५ ॥
	(त्रिष्व्)
जगत् वा भूतल ।	स पु न न न (ऽथो) जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
लोक वा वर्ष ।	न (लोकोऽयं) भारतं (वर्षं)
सब देश ।	(शरावत्यास्तु यो ऽवधेः ॥ ६ ॥
पूर्व ।	पु देशः प्राग्दक्षिणः) प्राच्य
उत्तर ।	पु उदीच्यः (पश्चिमोत्तरः) ।
म्लेच्छ ।	पु पु प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः (स्यात्)
मध्य ।	स पु मध्यदेश (स्तु) मध्यमः ॥ ७ ॥
आर्य्यावर्त्त ।	पु पु आर्य्यावर्त्तः पुण्यभूमि-(र्मध्यं विंध्यहिमागयोः) ।

१—वत्. २ उ—. ३—धन्वन्.

ऊषवान्, ऊषरः, "और अनूषरः" ये २ क्षार मृत्तिका युक्त स्थल के नाम हैं, और ये दोनों अन्य लिङ्ग हैं, जैसे ऊषवती, ऊषरा, वा, स्थली, ऊषरं, स्थलं, आदि. स्थली, अकृत्रिम स्थान का नाम है, "कृत्रिम को तो स्थला कहते हैं", मरुः, धन्वा, ये २ मरु देश के नाम हैं, मरते हैं प्यास से जिस में वह मरु अर्थात् मारवाड़ है, पुं॰ खिलः "स्त्री॰ खिला, क्लीब खिलं", अप्रहतं,ये २ विना जोती धरती के नाम हैं, और ये तीनों लिङ्ग में तुल्य हैं, "(न प्रहन्यते हलादिभिरिति अप्रहतं)" ॥ ५ ॥ जगती, लोकः, विष्टपं, "और भी पिष्टपं वा पुं॰ पिष्टपः", भुवनं, जगत्, ये ५ भूतल के नाम हैं, "एक महाभूत पृथिवी, पंचमहाभूत और विषयेन्द्रियात्मक जगत्, यह पृथ्वी और जगत् का भेद है", इस जम्बूद्वीप वर्ती दृश्यमान लोक को भारतंवर्ष या भरतवर्षं कहते हैं (भरतस्य राज्ञ इदं भारतं) "वर्ष शब्द पुल्लिङ्ग भी है", (एकं) इसी प्रकार इला वृत्त आदि ८ वर्ष शरावती पर्य्यन्त हैं, ॥ ६ ॥ जो, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, सहित उत्तर देश है, सो प्राच्य देश है, (एकं) और शरावती नदी से लेकर (पश्चिमोत्तरः) अर्थात् पश्चिम सहित जो उत्तर देश है वह (उदीच्य) है (एकं) प्रत्यन्तः, म्लेच्छ देशः, ये २ शिष्टाचार रहित कामरूप आदि देशों के नाम हैं, मध्य देशः, मध्यमः, ये २ मध्य देश के नाम हैं, ॥ ७ ॥ आर्य्यावर्त्तः, पुण्यभूमिः, ये २ विंध्य हिमाचल के मध्यस्थ देश के नाम हैं, (कहा भी है) पूर्व्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र से और दोनों पर्वतों के मध्य देशको बुध लोग आर्य्यावर्त्तः कहते हैं, "हिम है प्रधान जिस में वह हिमागः है, और हिम से भूषित हिमालयः है" ॥

राज्य वा देश ।	१पुस पु नीवृ ज्जनपदो
देश वा नगर ग्राम ।	पु पु २पु देश-विषयौ (तू) पवर्त्तनम् ॥ ८ ॥
	(त्रिष्वागोष्ठान्)
नरसल का देश ।	३पुसन ४पुसन (नडप्राये) नड्वान्नड्वल (इत्यपि) ।
फफूला का देश वा कोईका ।	५पुसन कुमुद्वान् (कुमुदप्राये)
बहुवेतका ।	६पुसन वेतस्वान् (बहुवेतसे) ॥ ९ ॥
घासका ।	पुसन शाद्वलः (शादहरिते)
कीचड़ युक्त ।	पुसन (सजंबाले तु) पङ्किलः ।
सजल ।	पुसन ७पुसन जलप्राय मनूपं (स्यात्)
कच्छ ।	पु (पुंसि) कच्छ (स्तथाविधः) ॥ १० ॥
बालू युक्त ।	स पुसन (स्त्री) शर्करा शर्करिलः
कंकड़युक्त ।	पुसन ८पुसन शार्करः शर्करावति ।
	(देश एवादिमाव्)
बालूका ।	९पुसन (एवमुन्नेयाः) सिकतावति ॥ ११ ॥

१–त. २ उ–. ३–नड्वत्. ४–न. ५–द्वत्. ६–स्वत्. ७ श्र–. ८–त्. ९–त्.

नीवृत्, जनपदः, ये २ राज्य वा देश के वा वस्ती मात्र के नाम हैं, नीवृत् पुल्लिङ्ग है, (नियतं वर्त्ततेऽस्मिन्नीवृत्), देशः, विषयः, उपवर्त्तनं, ये ३ ग्राम के समूह लक्षण देशमात्र के नाम हैं, ॥ ८ ॥ अब, गोष्ठ शब्द पर्य्यन्त वक्ष्यमाण शब्द तीनों लिङ्गों में हैं, नड्वान्, नड्वलः, ये २ नड़प्राय और नड़बहुल अर्थात् नरकुल प्रधान देश के नाम हैं, कुमुद्वान्, यह एक, कुमुद अधिक अर्थात् फफूला प्रधान देश वाचक है, वेतस्वान्, यह बहुत बेंतवाले देश का वाचक है, ॥ ९ ॥ शाद्वलः, यह एक, घासतृणों से हरित देशवाची है, (शादाः सन्त्यस्मिन् शाद्वलः) पंकिलः, यह एक, कोचड़ युक्त देश का नाम है, जलप्रायं, अनूपं, ये २ बहुत जल वाले देश के नाम हैं, (अनुगताः अपोऽत्र अनूपं) तैसाही अनूप सदृश किसी नदी आदि के निकट देश को कच्छः कहते हैं, (एकं) ॥ १० ॥ शर्करा, शर्करिलः, ये २ बालू युक्त देश वाची हैं, इन दोनों में शर्करा स्त्री० है, शार्करः, शर्करावान्, ये २ कङ्कड़ युक्त देश आदि के वाचक हैं, इस रीति सिकतावति में विचार करना चाहिये, सिकता, सिकतिल, ये २ सिकता युक्त देश के वाची हैं, सैकतः, सिकतावान्, ये २ बालू युक्त देश आदि के वाची हैं, ॥ ११ ॥

देश विशेष वा नदी मात्रिक ।	(देशो नद्यम्बु वृष्ट्यम्बु सम्पन्नव्रीहिपालितः । पुसन स्यात्) नदीमातृको
देवमात्रिक ।	पुसन देवमातृक (श्च यथा क्रमम्) ॥ १२ ॥
नीतिमान् राजा ।	१पुसन (सुराज्ञि देशे) राजन्वान्
राजाज्ञायुक्त ।	२पुसन (स्यात्ततो ऽन्यच) राजवान् ।
गैयों का स्थान ।	न न गोष्ठं गोस्थानकं
उनका पहिला स्थान ।	न (तत्तु) गौष्ठीनं (भूतपूर्व्वकम्) ॥ १३ ॥
नदी पहाड़ के निकट का ।	स पु पर्य्यन्तभूः परिसरः
पुल ।	३पु ४सपु सेतु-राली (स्त्रियां पुमान्) ।
वल्मीक ।	पु पु पुन वामलूर (श्च) नाकु (श्च) वल्मीकं (पुन्नपुंसकम्) ॥ १४ ॥
सड़क वा रास्ता ।	न ५न पु ६पु पु स स अयनं वर्त्म मार्गा ध्व पंथानः पदवी सृतिः । स स स स स सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्येकपदी (ति च) ॥ १५ ॥
अच्छा रास्ता ।	पु पु पु अतिपन्थाः सुपन्था (श्च) सत्पथ (श्चा र्चितेऽध्वनि) ।
कुमार्ग ।	पु पु पु ७पु पु व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः (समाः) ॥ १६ ॥

१—न्वत्. २—वन्. ३ सेतुः ४—आलिः. ५—न्, ६—अध्वन्.

नदी के जल और वृष्टि के जलों से सम्पन्न धानों से पालित देश, क्रम से नदीमात्रिकः और देवमात्रिकः कहलाते हैं (एकैकं) ॥ १२ ॥ धर्मशील और सुन्दर राजा जिस देश में है उसे राजन्वान् कहते हैं, उससे भिन्न राजमात्र युक्त देश राजवान्, है (एकं) गोष्ठं, गोस्थानकं, ये २ गैयों के स्थान के नाम हैं, पूर्व जहां गैयां रही थीं उसे गौष्ठीनं कहते हैं, (एकं) ॥ १३ ॥ पर्य्यन्तभूः, परिसरः ये २ नदी और पहाड़ आदि के उपान्त वा निकट भूमि के नाम हैं, सेतुः, आलिः, "उसी प्रकार आली" ये २ सेतु के वा पुल के नाम हैं, स्त्रीलिङ्ग में आली, सेतुः पुमान्, वामलूरः, नाकुः, वल्मीकं, "और भी वल्मीकः", ये ३ वल्मीक वा बिमोट इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १४ ॥ अयनं, वर्त्म, मार्गः, अध्वा, पंथाः, "पथिन्, पथन, वा पथ" पदवी, "उसी प्रकार पदविः", सृतिः, सरणिः, "और शरणिः, सरणी, और शरणी" पद्धतिः, "उसी प्रकार पद्धती", पद्या, वर्त्तनी, "वा वर्त्तनिः, और भी वर्त्मनिः, वा वर्त्मनी", एकपदी, "और भी एकपद्" ये १२ मार्ग वा रास्ता अर्थात् सड़क के नाम हैं, ॥ १५ ॥ अतिपंथाः, सुपंथाः, सत्पथः, ये ३ अच्छे मार्ग के नाम हैं, व्यध्वः, दुरध्वः, विपथः, कदध्वा, कापथः, "उसी प्रकार कुपथ" ये ५ दुष्ट रस्ते के नाम हैं, तहां कदध्वा नान्त है, ॥ १६ ॥

अमार्ग ।	१पु २न अपन्था (स्त्व) पथं (तुल्ये)
चौराहा ।	न न शृङ्गाटक-चतुष्पथे ।
दूर और शूना ।	न प्रान्तरं (दूरशून्योऽध्वा)
कठिन ।	पुन कान्तारो (वर्त्म दुर्गमम्) ॥ १७ ॥
दो कोश ।	पुस न गव्यूतिः (स्त्री) क्रोशयुगं
चार से हाथ ।	न नल्वः (किष्कुचतुःशतम्) ।
राजमार्ग ।	पु न घण्टापथः संसरणं
पुरमार्ग ।	३न (तत्पुरस्यो)-पनिष्करम् ॥ १८ ॥

॥ इति भूमिवर्गः ॥

॥ अथ द्वितीयवर्गः ॥

नगर-वा नगरी ।	४स स सन न न पूः (स्त्री) पुरी-नगर्य्यौ (वा) पत्तनं पुटभेदनम् । न पु स्थानीयं निगमो

१-थिन्. २अ-. ३ उ-. ४-पुर्.

अपंथाः, अपथं, ये २ अमार्ग के नाम हैं, शृङ्गाटकं, चतुष्पथं, ये २ चौराहे के नाम हैं, दूर और शून्य अर्थात् जल छाया आदि से हीन, दूरस्थ मार्ग को प्रान्तरं कहते हैं, (एकं) जो चोर कांट आदि उपद्रव युक्त दुर्गम मार्ग है उसे कान्तारं कहते हैं, "पुंसि कान्तारः", ॥ १७ ॥ दो कोश की गव्यूतिः होती है, दो सहस्र धनुष का एक कोश होता है, और ४ हाथ का एक धनुष होता है, किष्कु अर्थात् चार सौ हाथों का एक नल्वः होता है, घण्टापथः, संसरणं, ये २ राजपथ मात्र के नाम हैं, घण्टा से बोधित गज़ों का पंथाः घण्टापथः है, उस पुर वा नगर के निकलने के मार्ग को उपनिष्करम् कहते हैं, "(बुधैः संसरणं वर्त्म गजादीनामसंकूलं । पुरस्योपस्करं चोक्तमिति भुग्नः)" ॥ १८ ॥ अङ्गोपाङ्ग की अपेक्षा भूमि यहां प्रधान है इस लिये भूमिवर्ग का व्यवहार किया, इस रीति अन्यत्र भी मानना चाहिये ॥ इति भूमिवर्गः ॥ पूः, पुरी, "और भी पुरिः", नगरी, पत्तनं, "उसी प्रकार पट्टनं वा पट्टनी" पुटभेदनं, "और भी पटभेदनम्" स्थानीयं, निगमः, ये ७ नगर के नाम हैं । पूः, पुरी, और नगर्य्यौ ये विकल्प करके स्त्रीलिङ्ग हैं, पक्ष में-पुरं-नगरं-, किसी ने यहां भेद किया है, जैसे जहां अनेक शिल्पी और व्योपारियों का व्यवहार होता है उसे पुर आदि कहते हैं, जहां राजा और राजसेवक बसते हैं वह पुर-पत्तन आदि कहलाता है, और जो प्राकारादि (अर्थात् पर कोटा) से घिरा और विस्तीर्ण है उसे स्थानीयादि नाम कहते हैं,

उपनगर-वा शाखा नगर।	(ऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥ १न तच्च) छाखानगरं
वेश्या का घर।	पु पु वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
बाजार।	पु २स आपण (स्तु) निषद्यायां
हाट आदि।	पुस स विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
भीतर के रास्ते।	स स स रथ्या प्रतोली विशिखा
खाई।	पु पुन (स्याच्च) चयो वप्र (मस्त्रियाम्) ।
घेर।	पु पु पु प्राकारो वरणः शालः
घिरा।	न प्राचीरं (प्रान्ततो वृतिः) ॥ ३ ॥
भीत-वा दीवाल।	स न भित्तिः (स्त्री) कुड्यम्
पत्थर-वा हड्डी आदि की।	न एडूकं (यदन्तर् न्यस्तकीकसम्) ।
घर।	न पुन ३न ४न ५न न गृहं गेहो दवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥

१ शा-. २-छा. ३ उ-. ४-न्. ५-न्.

जो मूल नगर के निकट अन्य पुर है उसे शाखानगरं कहते हैं, (एकं) "मूल नगर राजधानी को कहते हैं, ॥ १ ॥ वेश्याजनों के वासस्थान को वेशः "वा वेषः" कहते हैं. वेश्याजनसमाश्रयः, ये २ वेश्या के निवासस्थान के नाम हैं, "तालव्यान्त भी है (नेपथ्ये गृहमात्रे च वेशो वेश्यागृहेपि चेति, ऐसे तालव्यान्त हैं, रभस कहते हैं, गणिका के गृहमात्र में और सद्म में तालव्य वेश है)" आपणः, निषद्या, ये २ जहां विकने के लिये पदार्थ रक्खे जाते हैं उस के नाम हैं, "हट्ट, वणिक्पथ, पण्य, अजिर, आदि भी", विपणिः, "और भी विपणी" पण्यवीथिका, ये २ विकने के लिये रक्खे पदार्थ के स्थान के पंक्ति के नाम हैं, किसी के मत में चारों के हट्ट नाम हैं, विपणिः स्त्री॰, आपण आदि २ हट्ट के वा बाजार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, विपणि ये २ हट्ट से भिन्न विकने के स्थान के नाम हैं, ॥ २ ॥ रथ्या, प्रतोली, विशिखा, ये ३ ग्राम के भीतरी मार्ग के नाम हैं, चयः, वप्रं, ये २ खाई से खुदी मृत्तिका समूह के ढेर के नाम हैं, प्राकारः, वरणः, शालः, "सालः" ये ३ बांस कांट आदि से घिरे के नाम हैं, नगरादि के किनारे में जो बांस कांट आदि से वेष्टित स्थान है उसे प्राचीरं कहते हैं, "प्राचीनम् यह भी", ॥ ३ ॥ भित्तिः, कुड्यं "उसी प्रकार कुड्यं" ये २ भीत के नाम हैं, और वही कुड्य जिसके भीतर हड्डी हो उसे एडूकं कहते हैं, और भी "एडुकं, वा एडोकं", (एकं) (अन्तर्न्यस्तानि कीकसानि अस्थीनि दार्ढ्यार्थं यत्र तत्, कीकसं कठिन द्रव्यस्योपलक्षणम्), गृहं, गेहं, उदवसितं, वेश्म, सद्म, निकेतनं, ॥ ४ ॥

	न न न न न न निशांत वस्त्य सदनं भवना गार मन्दिरम् ।
	पु पु पु १पु गृहाः (पुंसि च भूम्न्येव) निकाय्य-निलया-लयाः ॥ ५ ॥
कचहरी ।	पु पुस स स वासः कूटी (द्वयोः) शाला सभा
चौक ।	न संजवनं (त्विदम्) ।
	न चतुःशालं
झोपड़ा ।	स २पुन (मुनीनां तु) पर्णशाला टजो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ६ ॥
यज्ञवेदी ।	न ३न चैत्य मायतनं (तुल्ये)
घोड़शाल ।	स स वाजिशाला (तु) मन्दुरा ।
सोनार आदि का घर ।	न स आवेशनं शिल्पशाला
पवशला-प्याऊ ।	स स प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
पाठशाला ।	पु मठ (छात्रादिनिलयो)
मद्यघर ।	स न गञ्जा (तु) मदिरागृहम् ।

१ आ-. २ उ-. ३ आ-.

निशान्तं, वस्त्यं, "(वसेस्तिः, तत्र साधुरिति यत्प्रत्ययः)" "उसी प्रकार पस्त्यं", सदनं "और भी सादनं" भवनं, अगारं, वा "आगारं" मन्दिरं, गृहाः, निकाय्यः, निलयः, आलयः, ये १६ गृह वा घर के नाम हैं, इन्में गृह शब्द नित्य बहुवचन और पुल्लिङ्ग है, चकार से नपुंसक भी है, ॥ ५ ॥ वासः कूटी, शाला, 'उसी प्रकार साला" सभा, ये ४ सभा के स्थान के नाम हैं, तहां कुटिः पुं· स· में है, स्त्रीलिङ्ग में कुटी, कुटिः, "और भी नपुं· कुटीरं" और पुं· कुटः, भी है, गृह आदि सभा पर्य्यन्त २० नाम घर के हैं, संजवनं, "उसी प्रकार संयमनं" चतुःशालं, और भी स्त्री· चतुःशाली" ये २ आपस में सन्मुख और चौकोने शालों के नाम हैं, (चौक ऐसा प्रसिद्ध है) पर्णशालः, उटजः, ये २ मुनि के घर के नाम हैं, उटजः यह घास और पत्तों के बने स्थान को कहते हैं, ॥ ६ ॥ चैत्यं, आयतनं, ये २ यज्ञ के गृह भेद हैं, वाजिशाला, मन्दुरा, ये २ अश्वशाला के नाम हैं, (पागा, मरहठी में है, और स्तबल वा घोड़शाल प्रसिद्ध है), आवेशनं, शिल्पशाला, "और भी शिल्पिशाला, और न· शिल्पशालं, वा शिल्पिशालं" ये २ सोनार के शाला के नाम हैं, प्रपा, पानीयशालिका, ये २ जलशाला के नाम हैं, "(प्याऊ ऐसा प्रसिद्ध है)" ॥ ७ ॥ छात्रों के रहने के स्थान को मठः कहते हैं गंजा, "उसी प्रकार गुञ्जा, मदिरागृहं, आदि २ मद्यस्थान के नाम हैं, ।

	न　　न
घर का मध्य ।	गर्भागारं वासगृहं
	न　　न
सौरि-री ।	अरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
	न　　पु
झरोखा ।	वातायनं गवाक्षः (स्यात्)
	पुन　　पु
मंडप ।	मंडपो (ऽस्त्री) जनाश्रयः ।
	न
धनियों का घर ।	हर्म्यो (दि धनिनां वासः)
	पु
मंदिर वा राजघर ।	प्रासादो (देवभूभुजाम्) ॥ ९ ॥
	पुन　　न
राजगृह ।	सौधो (ऽस्त्री) राजसदनं
	स　　१स
डेरा-वा तम्बू ।	उपकार्य्यो पकारिका ।
	पुन　　पुन　　२पुन
गृहभेद ।	स्वस्तिकः सर्व्वतोभद्रो नन्द्यावर्तो (दयो ऽपि च) ॥ १० ॥
	पुन
	विच्छन्दकः (प्रभेदाहि भवंतीश्वर सद्मनाम्) ।
	न　　न
रनिवास ।	(स्त्यागारं भूभुजाम्) अन्तःपुरं (स्यात्) अवरोधनम् ॥ ११
	पु　　पु
	शुद्धान्त (श्चा) ऽवरोध (श्च)
	पु　　पुन
अटारी ।	(स्याद्) अट्टः चौम (मस्त्रियाम्) ।

१ उ—.　　२—त.

गर्भागारं, वासगृहं, ये २ गृह के मध्य भाग के नाम हैं. अरिष्टं, सूतिकागृहं "और भी
सूतकागृहं", ये २ प्रसव स्थान के नाम हैं. "चारो पर्य्याय के वाचक हैं, यह किसी का मत है
और पाषाण आदि से वन्धी भूमि है जिसमें उसे कुट्टिमं कहते हैं, भूमि के तले के घर का
नाम अर्थात् तलघर, वा तहखाना है, चन्द्रशाला, शिरोगृहं, ये दोनों गृह के धूर ऊपर के
अटारी को कहते हैं", ॥ ८ ॥ वातायनं, गवाक्षः, ये २ झरोखे के नाम हैं, मंडपः, "उसी प्रकार स्त्री.
मडपा" जनाश्रयः, ये २ मंडप के नाम हैं, धनियों के स्थान को हर्म्यं आदि कहते हैं, "हर्म्यं"
आदि पद से स्वस्तिक, आट्टालिक, आदि का संग्रह है, देवता और राजाओं के गृह को प्रासादः
कहते हैं, ॥ ९ ॥ सौधः, राजसदनं, ये २ राज घर के नाम हैं उपकार्य्या, उपकारिका, "और भी
उपकारी" ये २ डेरा—वा तम्बू इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वा ये ४ रों राजघर के नाम हैं, स्व-
स्तिक आदि और ईश्वर सद्म तक ये राजगृह के भेद हैं, तिन में ४ द्वार और तोरण सहित
को स्वस्तिकः कहते हैं, ऊपर के ऊपर गृह को सर्वतोभद्रः, क० गोल घर को नंद्यावर्त्तः क० ॥
१० ॥ बड़े और सुन्दर घर को विच्छन्दकः, "और भी विच्छर्दकः", आदि पद से रुचक, वर्द्ध-
मानः आदि का ग्रहण है, राजाओं की स्त्रियों के घर को अन्तःपुरं, अवरोधनं, कहते हैं ॥ ११ ॥
शुद्धान्तः, अवरोधः, ये ४ रनिवास के नाम हैं, अट्टः, चौमं, "उसी प्रकार चौमं" ये २ हर्म्य
आदि के पीछे के भाग के नाम हैं, ।

दरवाजे के बाहर का चौतरा वा चौपारि।	पु पु पु प्रघाण प्रघणा लिन्दा (बहिर्द्वारप्रकोष्ठके) ॥ १२ ॥
देहली-वा ड्योढ़ी।	स १स गृहावग्रहणी देहल्य
आंगन ।	न २न न स ऽङ्गनं चत्वरा-ऽजिरे ।
चौकठ-वा नीचे की शिला ।	(अधस्ताद्द्वारुणि) शिला
चौकठ के ऊपर का चौकठ ।	स नासा (दारू परिस्थितम्) ॥ १३ ॥
खिड़की ।	न ३न प्रच्छन्न मन्तर्द्वारं (स्यात्)
गुप्त द्वार ।	न न पक्षद्वारं (तु) पक्षकम् ।
घर के छाने के सामान-वा छावने के।	पुन न न पुन वलीक-नीध्रे पटल-प्रान्ते
छावना ।	न ४स (ऽथ) पटलं छदिः ॥ १४ ॥
धरनि-वा कूबा ।	स स गोपानसी (तु) वलभी (च्छादने वक्रदारुणि) ।
कबूतर आदि का घर।	५स पुन कपोतपालिकायां (तु) विटंकं (पुन्नपुंसकम्) ॥ १५ ॥
द्वार-वा मोहार वा पोल ।	स ६नं पु (स्त्री) द्वा द्वारं प्रतीहारः
वेदी-वा चौतरा ।	स स (स्याद्) वितर्द्दि (स्तु) वेदिका ।

१—ली. २—र. ३अ—. ४—स्. ५—का. ६ द्वार.

"उसी प्रकार सोमं" ये २ हर्म्य आदि के पीठ के नाम हैं, "वा ऊपर घर के अंटारी इस प्रसिद्ध गृहविशेष के नाम हैं, यह एक का मत है, प्रघाणः, प्रघणः, "और भी प्रघानः, और प्रघनः" अलिंदः, "(वा आलिंदः, र हैकदेशः आलिंदः प्रघाणः प्रघणस्तथेत्यमरमाला)" ये ३ द्वार के बाहर के प्रकोष्ट के नाम हैं, किसी के मत में द्वार प्रकोष्ट के बाहर वा द्वार के अग्रवर्त्ती चौकोने वा चौपारि इस प्रसिद्ध के नाम हैं" ॥ १२ ॥ गृहावग्रहणी, देहली, ये २ गृहद्वार के अधोभाग के वा देहली अर्थात् चौकठ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अंगनं, "वा आंगणं" चत्वरं, अजिरं, ये ३ प्रांगण अर्थात् आंगन के नाम हैं, शिला यह एक द्वारस्तम्भ के नीचे रक्खे काष्ठ का नाम है, "वा शिली" नासा यह दन्त्यान्त द्वारस्तम्भ के ऊपर स्थित काष्ठ अर्थात् चौकठ वा उतरङ्ग का नाम है, "मस्तक पट्टी वा गणेश पट्टी इस प्रसिद्ध का नाम है" ॥ १३ ॥ प्रच्छन्नं, अन्तर्द्वारं, ये २ गुप्त द्वार अर्थात् खिड़की इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पक्षद्वारं, पक्षकः, ये २ एक ओर के द्वार के नाम हैं, "(प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं तदुच्यत इति कात्यात् पक्षद्वारं पूर्वान्वयीत्यन्ये)", वलीकं, "वलीकः, नीध्रं, "उसी प्रकार नीव्रं" पटलं, प्रांतः इस बोपालिक की उक्ति से पुलिङ्ग भी हैं "और भी पटं, और चालं" ये ३ पटल प्रान्त में गृह के छादन के अर्थ भीत से बाहर गड़े घोड़ा—वा घोरिआ वा छज्जा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पटलं, छदिः, ये २ छावने के नाम हैं, छदिः सान्त और स्त्रीलिङ्ग है, छदिषी, ॥ १४ ॥ गोपानसी, वलभी, "वलभिः, उसी प्रकार वड़भिः, वा वड़भी मूर्द्धन्य मध्य भी है" ये २ छावने के अर्थ जो वक्र-काष्ठ है उस के नाम हैं, कपोतपालिका विटंकं, ये २ घर में काष्ठ आदि में बनाये पक्षियों के गृह के नाम हैं, ॥ १५ ॥ द्वाः द्वारं, प्रतीहारः, "प्रतिहारः", ये ३ द्वार के नाम हैं, इनमें द्वाः स्त्री. और रेफान्त है, वितर्द्दिः, "उसी प्रकार वितर्द्दी" वेदिका, "और भी वेदि, और वेदी" ये २ वेदी के नाम हैं, "वा अंगन आदि में बनाये बैठने के स्थान के नाम हैं", वितर्द्दिः स्त्री. है,

घर के बाहर का फाटक।	पुन न तोरणो (ऽस्त्री) बहिर्द्वारं
नगर का फाटक।	न न पुरद्वारं (तु) गोपुरम् ॥ १६ ॥
सुख से आने जाने के अर्थ बनी मट्टी की सीढ़ी।	१पु (कूटं पूर्द्वारि यद्) धस्तिनख (स्तस्मिन्) (अथ त्रिषु)।
केवाड़।	पुसन पुसन कपाट मररं (तुल्ये)
बेंवड़ा-वा शांकल वा अगरी।	सन (तद्विष्कम्भो) ऽर्गलं (न ना) ॥ १७ ॥
सीढ़ी।	न न आरोहणं (स्यात्) सोपानं
काठ आदि की बनी सीढ़ी।	स २स निःश्रेणि (स्त्व) धिरोहिणी।
वढ़नी-वा झाड़ू।	स स संमार्जनी शोधनी (स्यात्)
कूड़ा-करकट।	पु पु संकरो ऽवकर (स्तथा) ॥ १८ ॥ (क्षिप्ते)
निसरने के-वा निकलने के द्वार।	न न मुखं निःसरणं
अच्छा स्थान।	पु न सन्निवेशो निकर्षणम्।

१ह—. २अ—.

तोरणः, वहिर्द्वारं, ये २ तोरण के नाम हैं. "वा द्वार के बाहर के फाटक के नाम हैं", पुरद्वारं, गोपुरं, ये २ नगर के द्वार के फाटक के नाम हैं, ॥ १६ ॥ पूर्द्वारि अर्थात् नगर द्वार में सुख से आने जाने के अर्थ जो मत्कूट अर्थात् क्रम से ऊंचा बनाते हैं उसे हस्तिनखः कहते हैं, (एकं) कपाटं, और भी "कवाटं, कवाटः, कवाटी, कपाटः, और कपाटी", अररं, पुं· अररः, ' स्त्री· अररी, वा अररिः" ये २ केवाड़ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, और त्रिलिङ्ग हैं. तद्विष्कम्भः, अर्थात् उस कपाट के रोकने के अर्थ जो मुसल है उसे अर्गलं कहते हैं, यह स्त्री· नपुंसक है, स्त्री· में तो अर्गला, वा अर्गली, "तद्विष्कंभः, विष्कंभि (न), ॥ १७ ॥ आरोहणं, सोपानं, ये २ सोपान के नाम हैं, "पायड़ी वा सीढ़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं", निःश्रेणिः, "उसी प्रकार निश्रेणिः, और निःश्रेणी, ये भी, (नियता श्रेणिः पंक्तिरत्र इति निश्रेणिः)", अधिरोहिणी, "और भी अधिरोहणी" ये २ निसरणी के नाम हैं, "अर्थात् काठ की सीढ़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं", संमार्जनी, शोधनी, ये २ वढ़नी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; उस संमार्जनी से दूर किये कूड़े इस प्रसिद्ध के संकरः "उसी प्रकार संकारः", अवकरः, ये २ नाम हैं, ॥ १८ ॥ मुखं, निःसरणं, ये २ गृह आदि से निकलने के द्वार के नाम हैं, "(निःसरन्त्यनेन निःसरणं)" सन्निवेशः, निकर्षणं, ये २ अच्छे वासस्थान के नाम हैं।

ग्राम-वा गांव ।	(समौ) संवसथ-ग्रामौ (पु पु)
घर बनाने की भूमि	वेश्मभू-र्वास्तु (रस्त्रियाम्) ॥ १६ ॥ (स १पुन)
गोंयड़-वा पड़ोस ।	ग्रामान्त उपशल्यं (स्यात्) (पु न)
डांड़-वा सीमा ।	सीम-सीमे (स्त्रियामुभे) । (२स ३स)
अहीरों का गांव ।	घोष आभीरपल्ली (स्यात्) (पु स)
जङ्गलियों का गांव	पक्कणः शवरालयः ॥ २० ॥ (पुन पु)
	॥ इति पुरवर्गः ॥

१ वास्तु. २–मन्. ३–मा.

संवसथः, ग्रामः, ये २ गांव के नाम हैं, वेश्मभूः अर्थात् गृहभूमिः, वास्तुः, कही जाती है, ये २ "गृह बनाने के निमित्त की भूमि के नाम हैं" ॥ १६ ॥ ग्रामान्त में अर्थात् ग्राम समीप के प्रदेश स्थान का उपशल्यं यह एक बाये २ पड़ोस के नाम हैं, सीमा, सीमा, ये २ ग्राम आदि के मर्य्यादा वा हद्द के नाम हैं, "नामन् और सीमन्" ये आदि निपातन हैं, पूर्व नकारान्त और उत्तरटाबन्त हैं, "ये २ स्त्री लिङ्ग हैं" घोषः, आभीरपल्ली, "और भी आभीरपल्लिः", ये २ गोपाल के ग्राम के वा उसके घर के नाम हैं, "(कुटीकग्रामकयोः पल्लिरिति शाश्वतः)" शबर के आलय को शबरालयः, पक्कणः, ये २ "भिल्ल के ग्राम के नाम हैं", शबर बन का चाण्डाल है, ॥ २० ॥

॥ इति पुरवर्गः ॥

॥ अथ तृतीयवर्गः ॥

	पु १पु २पु ३पु पु पु
पर्व्वत ।	महीध्रे शिखरि-क्ष्माभृद्-हार्य्य-धर-पर्व्वताः ।
	पु पु पु ४पु ५पु पु पु
	अद्रि-गोत्र-गिरि-ग्रावा-ऽचल-शैल-शिलोच्चयाः ॥ १ ॥
	पु ६पु
पर्व्वत जो पृथिवी को घेरे है।	लोकालोक श्चक्रवाल
	पु ७पु
त्रिकूट-जिसपर लंका वसी है।	स्त्रिकूट स्त्रिककुत् (समौ) ।
	पु ८पु
अस्ताचल ।	अस्त (स्तु) चरमक्ष्माभृद्
	पु पु
उदयाचल ।	उदयः पूर्व्वपर्व्वतः ॥ २ ॥
	९पु पु पु १०पु ११पु
पर्वतों के भेद ।	हिमवा न्निषधो विन्ध्यो माल्यवान् पारियात्रकः ।
	न १२पु
	गन्धमादन (मन्ये च) हेमकूटा (दयो नगाः) ॥ ३ ॥
	पु पु १३पु १४पु १५पु स १६स
पत्थर ।	पाषाण-प्रस्तर-ग्रावो-पला-श्मानः शिला दृषत् ।
	पुन न न
पहाड़ की चोटी ।	कूटो (ऽस्त्री) शिखरं शृङ्गं
	पु पु पु
बीहड़-वा पर्वत से जल गिरने का स्थान ।	प्रपात (स्त्व) तटो भृगुः ॥ ४ ॥

१—रिन्. २—त्. ३ अ—. ४—वन्. ५ अ—. ६ च—. ७ त्रि—द्. ८—त्. ९—वत्. १०—वत्. ११ पा—. १२—ट. १३—वन्. १४ उ—. १५ अश्मन्. १६—द्.

महीध्रः, "इसी प्रकार महीधरः, और महिध्रः" शिखरी, क्ष्माभृत्, अहार्यः, धरः, पर्वतः अद्रिः, गोत्रः, गिरिः, ग्रावा, अचलः, शैलः, शिलोच्चयः, ये १३ सामान्य पर्वत के नाम हैं, ॥ १ ॥ लोकालोकः, चक्रवालः, "और भी चक्रवाड़ः" ये २ सप्तद्वीप वाली पृथिवी के प्राकार भूत अर्थात् जो घेरे है उस गिरि के नाम हैं, त्रिकूटः, त्रिककुत्, ये २ त्रिकूटाचल अर्थात् जिस पर लङ्का वसी है उस पर्वत के नाम हैं, त्रिककुद दान्त है, अस्तः, चरमक्ष्माभृत्, ये २ अस्ताचल के नाम हैं, उदयः, पूर्वपर्वतः, ये २ उदयाचल पर्वत के नाम हैं, ॥ २ ॥ हिमवान् इस आदि सप्त पर्वत विशेष हैं, आदि पद से मलय चित्रकूट मंदर आदि ग्रहण किये जाते हैं, एकैकं, "पारियात्रिकः, पारियात्रकः, यह भी पाठ है, गंधमादनः यह अन्यत्र पुल्लिङ्ग भी है", ॥ ३ ॥ पाषाणः, प्रस्तरः, ग्रावा, उपलः, अश्मा, शिला, दृषत्, ये ७ पाषाण वा पत्थल के नाम हैं, शिला और दृषत् ये २ स्त्री लिङ्ग हैं, कूटः, शिखरं, शृंगं, ये ३ पर्वत के अग्र भाग शिखर वा चोटी के नाम हैं और पुं. नपुंसक लिङ्ग हैं, "अस्त्री यह पूर्व और उत्तर पदों के साथ संबंध रखता है, शिखर वाची शृंग शब्द क्लीबही है", प्रपातः, अतटः, "वा कोई पढ़ते हैं तटः" भृगुः, ये ३ पर्वत से जल गिरने के स्थान के नाम हैं, "(प्रपतत्यस्मिन्प्रपातः न विद्यते तटो ऽत्रेत्यतटः)" "(प्रपातस्तुतटोभृगुरित्यपि पाठः, तत्र प्रपत्यते यतस्तटात् सतटो भृगुरिति)", ॥ ४ ॥

	पुन
पर्वत का बीच।	कटको (ऽस्त्री नितम्बो ऽद्रेः) पुन पुन पुन
पर्वत का समभूभाग-वा किनारा।	पु न स्नुः प्रस्थः सानु (रस्त्रियो)।
झरने का स्थान।	उत्सः प्रस्रवणं पु पु पु
झरना।	स पुस वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥
गुफा बनाई हुई।	दरी (तु) कन्दरो (वा स्त्री) न न स
बिना बनाई गुफा।	न देवखात-बिले गुहा।
	गह्वरं १पु
भारी पत्थल।	गण्डशैला (स्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः) ॥ ६ ॥
	स पु
खानि।	खनिः (स्त्रियाम्) आकरः (स्यात्) २पु ३पु
पर्वत के पास के छोटे पर्वत।	पादाः प्रत्यन्तपर्व्वताः।
	स
पहाड़के नीचेकी धरती	उपत्यका (ऽद्रेरासन्नाभूमिर्) ४स
ऊपर की धरती।	पु (ऊर्द्धम्) अधित्यका ॥ ७ ॥
पहाड़ से उत्पन्न वस्तु।	धातु (र्मनः शिलाद्यद्रेर्) पुसन
	गैरिकं (तु विशेषतः)।
	पुन पुन
कुंज।	निकुंज-कुंजो (वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे) ॥ ८ ॥
	॥ इति शैलवर्गः ॥

१—ल. २ पाद. ३—त. ४ अ—.

अद्रि के नितम्ब अर्थात् मध्य भाग को कटकः कहते हैं. (एकं), स्नुः, प्रस्थः, सानुः, ये ३ पुन्नपुंसक लिङ्ग सम भूभाग में पर्वत के एक देश के नाम हैं, इनमें स्नुः पुमानही है यह सर्वधर का मत है, "(स्नौतिप्रस्रवत्यंभः स्नुः, प्रतिष्ठन्तेऽस्मिन्निति प्रस्थः, सनोति ददाति सुखमिति सानुः)", उत्सः, प्रस्रवणं, ये २ जहां पानी गिर कर बहुत होता है उस स्थान को कहते हैं, "(प्रस्रवत्यस्मिन्प्रस्रवणं)" वारिप्रवाहः, निर्झरः, झरः, ये ३ झरना के नाम हैं, ये ५ पर्याय हैं यह एक का मत है, ॥ ५ ॥ दरी, कंदरः, "स्त्री. कंदरा, वा कन्दरी", ये २ गृह के आकार पर्वत में बनाये बिल के नाम हैं, देवखातं, बिलं, गुहा, गह्वरं, ये ४ देवखात के वा बिना बनाये बिल के नाम हैं, कोई देवखात आदि को पर्याय कहता है; पर्वत से गिरा स्थूल पाषाण गण्डशैलाः कहलाते हैं, "पर्वत के वक्र प्रदेश से बाहर निकले स्थूलाकार पाषाण दन्तकाः कहलाते हैं", (एकं) ॥ ६ ॥ खनिः, "और भी खानी, वा खानिः", आकरः ये २ रत्न आदि के उत्पत्तिस्थान के वा खानि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पादाः, प्रत्यन्तपर्वताः, ये २ पर्वत के समीपस्थ अल्प पर्वतों के नाम हैं, पर्वत के नीचे निकट की भूमि उपत्यका कहलाती है, (एकं) अद्रि के ऊपर की भूमि अधित्यका है, (एकं) ॥ ७ ॥ अद्रि से उत्पन्न जो मनः शिला आदि हैं वे धातु कहलाती हैं, आदि पद से हरिताल स्वर्ण ताम्र आदि ग्रहण किये जाते हैं, "सो कहा है, (सुवर्णरौप्यताम्राणि हरितालं मनः शिला। गैरिकांजनकासीस सीस लोहाः सहिङ्गुलाः, ॥ गन्धको ऽभ्रक इत्याद्याः धातवो गिरिसंभवा इति)" गैरिकः विशेष से धातु यह प्रसिद्ध है. (एकं) गेरू इस प्रसिद्ध का नाम है; निकुंजः, कुंजः, ये २ लता से आच्छादित गर्भ वाले स्थान के नाम हैं, "विकल्प से २ नों क्लीब भी हैं", आदि पद से तृण आदि का संग्रह है, ॥ ८ ॥

॥ इति शैलवर्गः ॥

॥ अथ चतुर्थवर्गः ॥

वन-वा जङ्गल ।	स १न न न न न अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।
बड़ा वन ।	न २स महारण्य मरण्यानी
घरके निकट का बाग।	पु पु गृहारामा (स्तु) निष्कुटाः ॥ १ ॥
बाग ।	पु ३न आरामः (स्याद्) उपवनं (कृत्रिमं वनमेव तत्)
राजमंत्री और वेश्या का बाग ।	स (अमात्यगणिका गेहोपवने) वृक्षवाटिका ॥ २ ॥
राजक्रीड़ा बाग ।	४पुन न (पुमान्) आक्रीड़ उद्यानं (राज्ञः साधारणं वनम्) ।
रानिओं के साथ राज-क्रीड़ा बाग ।	न (स्यादेतदेव) प्रमदवन (मन्तः पुरोचितम्) ॥ ३ ॥
पंक्ति ।	५स ६स ७स स स वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी
लेखा ।	स स लेखा (स्तु) राजयः ।

१ अ—. २ अ—. ३ उ—. ४ आ—. ५—यी. ६ आ—. ७ आ—.

अटवी, अरण्यं, विपिनं, गहनं, काननं, वनं, ये ६ अरण्य वा वन के नाम हैं, इनमें अटवी स्त्री लिङ्ग है, "एक व० अटविः, और भी अटवी, उसी प्रकार स्त्री. वनी", महारण्यं, अरण्यानी, ये २ बड़े वन के नाम हैं, अरण्यानी स्त्रीलिंग है, गृहारामाः, "ए. व. गृहारामः", निष्कुटाः, ये २ गृह के समीप बनाये बाग के नाम हैं, (कुटाद्गृहान्निष्क्रान्तानिष्कुटाः)" ॥ १ ॥ कृत्रिमं अर्थात् जो बनाने से सिद्ध वन है उसे आरामः कहते हैं, उपवनं, ये २ नाम हैं, राजमंत्री और वेश्याओं का जो गृह में उपवन है उसे वृक्षवाटिका कहते हैं, ॥ २ ॥ जो स्त्रियों वा औरों के साथ क्रीड़ा आदि के अर्थ राजा का साधारण वन है उसे आक्रीड़, और उद्यानं, कहते हैं, "(ज्ञेयमाक्रीडमुद्यानमित्यमरमालायामाक्रीडस्यापि क्लीबत्वमुक्तं)", यह उद्यानं अन्तःपुरोचितं अर्थात् रानियों हीं के क्रीड़ा के जो उचित होय तो उसे प्रमदवनं कहते हैं, (एकं) "वा प्रमदावनम्" ॥ ३ ॥ वीथी, "ङीप के विकल्प से अन्यत्र वीथिः, आली, और आवली", आलिः, आवलिः, पंक्तिः, श्रेणी, "श्रेणिः, और पंक्ती" ये ५ पंक्ति वा पांति के नाम हैं, लेखाः, "उसी प्रकार रेखाः, राजयः, उसी प्रकार एक व० राजिः, और राजी" ये २ लेखा अर्थात् मिली हुयी लकीर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अन्तर सहित पंक्ति है, "निरंतर लेखा है, जैसे विप्रपंक्तिः", भस्मलेखा, वा रेखा, ।

	स १पु
वन समूह ।	वन्या वनसमूहे (स्याद्) पु २पु
अंकुर वा अंखुआ ।	अङ्कुरो ऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
	पु पु ३पु ४पु पु ५पु
वृक्ष वा पेड़ ।	वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादप स्तरुः ।
	पु पु पु ६पु पु पु ७पु
	अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रु-द्रुमा-गमाः ॥ ५ ॥
	पु
वानस्पत्य ।	वानस्पत्यः (फलैः पुष्पात्) पु
बनस्पती ।	स (तैरपुष्पाद्) वनस्पतिः ।
औषधी ।	ओषध्यः (फलपाकान्ताः) ८पुसन पुसन
फलवान ।	(स्याद्) अवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥
	पुसन पुसन ९पुसन
बांझ ।	वन्ध्यो ऽफलो ऽवकेशी (च) १०पुसन पुसन ११पुसन
सफल ।	फलवान् फलिनः फली ।
	पुसन १२पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
फूले हुये ।	प्रफुल्लो-त्फुल्ल-संफुल्ल-व्याकोष-विकच-स्फुटाः ॥ ७ ॥
	पुसन पुसन
	फुल्ल (श्चैते) विकसिते (स्युर्)
	पुन पु १३पु (अवंध्यादयस्त्रिषु) ।
शाखापत्र शून्य ।	स्थाणु (र्वा ना) ध्रुवः शंकुर् पु
छोटा वृक्ष ।	(ह्रस्वशाखाशिफः) क्षुपः ॥ ८ ॥

१–ह. २–द. ३–न्. ४–न्. ५त–. ६–न्. ७अगम. ८अ–. ९न्–. १०–वत्. ११–न्. १२उ–. १३शंकु–.

वनों के समूह को वन्या कहते हैं, (एकं) नया उत्पन्न अंखुआ वा प्ररोह अंकुरः है, (एकं) "उसी प्रकार अंकूरः" ॥ ४ ॥ वृक्षः, महीरुहः, शाखी, विटपी, पादपः, तरुः, अनोकहः, कुटः, "उसी प्रकार कुठः" सालः, "और भी शालः" पलाशी, द्रुः, द्रुमः, अगमः, ये १३ वृक्षों के नाम हैं, ॥ ५ ॥ पुष्पों से उत्पन्न फलों से जाना वृक्ष वानस्पत्यः कहलाता है, (एकं) आम्र आदिक; फूलों के विना उत्पन्न फलों से जाना वृक्ष वनस्पतिः है, पनस अर्थात् कटहर और गूलर आदि; द्रुम मात्र में भी वनस्पतिः है, फल पकना ही अन्त है जिन्हों के वे ओषध्यः हैं, (एकं) धान और यव आदि; "एक व. ओषधिः, और भी ओषधी", "यह १ अन्न का नाम है; अवंध्यः, "अबंध्यः" फलेग्रहि, "उसी प्रकार फलग्रहिः," ये २ अपने समय तक फल धारण करने वाले अर्थात् फरैया वृक्षों के नाम हैं, ॥ ६ ॥ वंध्यः, "बंध्यः" अफलः, अवकेशी, ये ३ ऋतु मे भी फल रहित अर्थात् जो न फरै उसके नाम हैं, फलवान्, फलिनः, फली, ये ३ सफल के नाम हैं, फलिनो ऽदंतः, प्रफुल्लः, उत्फुल्लः, संफुल्लः, व्याकोषः, "उसी प्रकार व्याकोशः, तालव्यान्त भी है, विकचः, स्फुटः, ॥ ७ ॥ फुल्लः, ये ८ विकसित अर्थात् फूले हुए के नाम हैं, अवंध्य आदि अर्थात् अफल इस आदि और विकसितान्त शब्द तीनों लिङ्ग में हैं, स्थाणुः, ध्रुवः, शंकुः, ये ३ छिन्न विटप अर्थात् छांटे वृक्षों के नाम हैं, वाना, अर्थात् स्थाणु शब्द विकल्प से पुलिङ्ग है, "रूप के भेद से क्लीबत्व भी है" शाखा प्रसिद्ध है, शिफा वृक्ष का मूल है, ह्रस्व शाखा और शिफा अर्थात् छोटी जड़ें हैं जिस की वह क्षुपः कहलाता है; ॥ ८ ॥

	पु १पु
शाखाशून्य वा ठूंठ।	(अप्रकाण्डे) स्तम्ब-गुल्मौ स स २स
लता वा बेल।	३स ४स ५पु वल्ली (तु) व्रततिर्लता।
फैली लता।	(लता प्रतानिनी) वीरुद्गुल्मिन्युलप (इत्यपि) ॥ ९ ॥
वृक्ष और पर्वत	पु पु ६पु
आदि की उंचाई।	(नगाद्यारोह) उच्छ्राय उत्सेध (श्चो) च्छ्रय (श्च सः)।
	पुन पु
वृक्ष के भाग।	(अस्त्री) प्रकाण्डः स्कन्धः(स्या न्मूलाच्छाखावधेस्तरोः)१०
शाखा।	स ७स स स
बड़ी शाखा।	(समे) शाखा-लते स्कन्धशाखा-शाले स स
वृक्ष मूल।	पु शिफा-जटे।
बरगद की जटा।	(शाखा शिफा) ऽवरोहः (स्यान्) स
ऊपर गई लता।	८न न पुन (मूला च्चाग्रं गता) लता॥ ११ ॥
वृक्ष की चोटी।	शिरो ऽग्रं शिखरं (वाना) न पु
उस की जड़।	पु ९पु मूलं बुध्नो (ऽंघ्रिनामकः)।
हीर वा सार।	सारो मज्जा (नरि)
छिलका वा बो-	१०स पुन पुन
कला।	न पुन त्वक् (स्त्री) वल्कं वल्कल (मस्त्रियां) ॥१२॥
काठ।	काष्ठं दार्व

१—स्म. २ ल—. ३—ध्. ४ गु—नी. ५ उ—. ६ उ—. ७ लता. ८—स्. ९—न्. १० त्वच्.

स्तंबः. गुल्मः ये २ जिस को प्रकाण्ड अर्थात् शाखा विद्यमान नहीं है उसके नाम हैं; वल्ली, "और भी वल्लिः, वेल्लिः, (वल्ली तु वेल्लिः सरण इति वाचस्पतिः)" व्रततिः, "उसी प्रकार प्रततिः, और व्रतती, (प्रततिर्व्रततीस्तथेति हलायुधः)" लता, ये ३ लता के नाम हैं; वीरुत्, गुल्मिनी, उलपः, ये ३ अति विस्तृत शाखा आदि से बढ़ी लता के नाम हैं; इन में वीरुत् शब्द धान्त और स्त्रीलिङ्ग है; ॥ ९ ॥ नगाद्यारोहः अर्थात् वृक्ष आदि की उंचाई में उच्छ्रायः उत्सेधः, उच्छ्रयः. ये ३ नाम हैं, "आरोह दीर्घ में भी है, (आरोहो दैर्घ्यउच्छ्राये स्त्रीकट्यां मानभिद्यपि, आरोहणे गजारोहः, इति हेमः)" नगाद्यारोह इस आदि से गिरिदेवालय आदि का संग्रह है, उत्सेधः यह भी, प्रकाण्डः, स्कन्धः, ये २ तरु के मूल से लेकर शाखा पर्यन्त भाग के नाम हैं, "तरु के मूल और स्कन्ध का मध्य प्रकाण्ड है"; ॥ १० ॥ शाखा, लता, ये २ शाखा के नाम हैं; स्कन्धशाखा, शाला, ये २ प्रधान शाखा के नाम हैं, "वा स्कन्ध प्रथम उत्पन्न शाखा के नाम हैं"; शिफा, जटा, ये २ तरुमूल के नाम हैं, "अर्थात् वट आदि की शाखा, वाझांड़ के नाम हैं" शाखा और शिफा का मूल अवरोहः है, (एकं) "ऊंचे से नीचे को उतरना वा वरोह इस प्रसिद्ध का नाम है" मूलात् अर्थात् वृक्षमूल से लेकर अग्र पर्यन्त गई लता गुडूची आदि को भी अवरोहः कहते हैं, (एकं) "मूल से ऊपर गई शिफा भी लता है" ॥ ११ ॥ शिरः, अग्रं, शिखरं ये ३ वृक्ष आदि की चोटी कहलाती हैं, शिर आदि तीनों भी पर्य्याय शब्द हैं, यह किसी का मत है, शिखर शब्द, पक्ष में पुल्लिङ्ग है; मूलं, बुध्नः, अंघ्रिनामकः, ये मूल के पर्य्याय संज्ञक हैं, और ये ३ वृक्ष आदि के जड़ वा मूल के नाम हैं; सारः, मज्जा, ये २ वृक्ष आदि के स्थिर अंश के नाम हैं, "वा हीर इस प्रसिद्ध के नाम हैं" इन में मज्जा नान्त और पुंसि है, कहीं टावन्त भी दिखलाई देता है त्वक्, वल्कं, वल्कलं, ये ३ त्वचा वा छिलका के नाम हैं, तहां वल्क आदि दो क्लीव पुंसि हैं; ॥ १२ ॥ काष्ठं, दारु, "(दारुः, अन्यत्र, पुंनपुंसकयोर्दारुरित्युक्तेः)" ये २ काष्ठ मात्र के नाम हैं;

	न १न न २पु ३स
इन्धन ।	इन्धनं (त्वे) ध इध्म मेधः समित् (स्त्रियाम्) ।
	पु पुन
खोंखला ।	निष्कुहः कोटरं (वा ना) स स
मञ्जरी ।	वल्लरि मञ्जरिः (स्त्रियौ) ॥ १३ ॥
	न न न न न पु
पत्ता ।	पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः (पुमान्) ।
	पुन पुन
पल्लव ।	पल्लवो (ऽस्त्री) किसलयं पु पुन
शाखा ।	न न विस्तारो विटपो (ऽस्त्रियाम्) ॥ १४ ॥
फल ।	(वृक्षादीनां) फलं शस्यं न न
गुच्छा ।	पुसन वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
गीलाफल ।	(आमेफले) शलाटुः (स्यात्) पुसन
सूखा ।	पु न (शुष्के) वानं (मुभे त्रिषु) ॥ १५ ॥
नई कली ।	चारको जालकं (क्लीबे) स पु
कली ।	पु पु कलिका कोरकः (पुमान्) ।
फूल का गुच्छा ।	(स्याद्) गुच्छक (स्तु) स्तवकः
	पुन पुन
फूलती कली ।	कुड्मलो मुकुलो (ऽस्त्रियाम्) ॥ १६ ॥

१ एधस्. २ एध. ३–ध.

इन्धनं, एधः, इध्मं, एधः, समित्, ये ५ इन्धन वा सूखे काष्ठ और तृण आदि के नाम हैं, "आदि तीन अग्नि के जलाने के अर्थ तृण और काष्ठ आदि के वा जलावन–इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अन्त्य के दो यज्ञ आदि में होम के निमित्त समिध आदि के नाम हैं यह मत है, इन में आद्य एधः शब्द सान्त और क्लीब है, और तो अदन्त और पुल्लिङ्ग हैं समित् धान्त है, निष्कुहः, कोटरं, ये २ वृक्ष में हुये विवर के नाम हैं, कोटरं विकल्प से पुल्लिङ्ग है; वल्लरिः, मंजरिः, "वल्लरी, और मंजरी" ये २ तुलसी आदि के अभिनव अंकुर के "वा मंजरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं", ॥१३॥ पत्रं, पलाशं, छदनं, दलं, पर्णं, छदः, "और भी पत्रं" ये ६ पत्र के नाम हैं, इन में छदः अदन्त और पुल्लिङ्ग है, "उसी प्रकार छादनं" पल्लवः, किसलयं, "किशलयं भी है" ये २ पत्र आदि से युक्त शाखा के पर्व के नाम हैं, इनमें किसलयं पुं· क्लीब में है, विस्तारः, विटपः, ये २ डार के फैलने के नाम हैं, सो पुं· नपुंसक है, ॥१४॥ वृक्ष आदि के फल को फलं, और शस्यं कहते हैं, "दंत्य आदि भी है सस्यं", प्रसवः अर्थात् पुष्प आदि बान्धे जाते हैं जिससे उसे वृन्तं कहते हैं, वा गुच्छा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(बन्धनं पुष्पफलयोर्वृन्तमाहुकात्यः)" कच्चे आम के फल को शलाटुः कहते हैं; सूखे फल को वानं कहते हैं, (एक) शलाटुः और वानं ये दोनों त्रिलिङ्ग हैं; ॥ १५ ॥ चारकः, जालकं, ये २ नई कली के नाम हैं, इन में जालकं क्लीब ही है, कलिका, "उसी प्रकार कलिः, और कली" कोरकः, ये २ विना फूले फूल के अर्थात् कली इस प्रसिद्ध के नाम हैं, गुच्छकः, "और भी गुत्सकः, उसी प्रकार गुच्छः, वा गुत्सः", स्तवकः, ये २ कलिका आदि से घिरे पल्लव ग्रंथि वा गुच्छा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "वा फूलने के सन्मुख कलिका के नाम हैं, यह किसी का मत है", "(स्तवके हारभेदे च गुत्सः स्तम्बेपि कीर्त्तित इति दन्त्यान्ते रुद्रः, पुष्पादिस्तवके गुच्छ इति तालव्यान्ते रन्तिदेवः)", कुड्मलः, "कुड्मलः" मुकुलः, ये २ कुछ फूलती कलिका के नाम हैं, ॥ १६ ॥

फूल ।	१स न न न न (स्त्रियः) सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं समम् ।
उसका रस वा सहत ।	पु पु मकरन्दः पुष्परसः
उसकी धूलि ।	पु २न परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
	(द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीत क्यादयः स्त्रियाम्) ।
वृक्षों का फल ।	न न न न ३न आश्वत्थ वैणव प्लाक्ष नैयग्रोधैङ्गुदं (फले) ॥ १८ ॥
भटकैया का फल ।	न वार्हतं (च)
जामुनि ।	स न न (फलेजंव्वा) जंबूः (स्त्री) जंबु जांबवम् ।
	(पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा व्रीहयः फले ॥ १९ ॥
	विदार्य्याद्यास्तु मूलेऽपि)
फूल विशेष ।	स (पुष्पेक्लीबेऽपि) पाटला ।

१–नस्. २–जस्. ३ऐ–

सुमनसः, "सुमनाः, और सुमनः", पुष्पं, प्रसूनं, उसी प्रकार "सूनं" कुसुमं, समं "सुमंभा" ये ५ पुष्प के नाम हैं, "(भूम्निस्त्रियां सुमनसः इति रत्नकोशः, सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्रियामिति मेदिनीकोशः)"; मकरंदः, पुष्परसः, ये २ फूल के रस के नाम हैं, परागः, सुमनोरजः, ये २ पुष्प के रेणु के नाम हैं, ॥ १७ ॥ सब वक्ष्यमाण वृक्ष लता ओषधी जातीय स्त्री॰ पुंलिङ्ग भी अश्वत्थ और कपित्थ आदि का कहना प्रसव, पुष्प फल, और मूल में वर्त्तमान को तद्द्विहीन जानना चाहिये, अर्थात् (द्वाभ्यां स्त्रीपुंसाभ्यां हीनं नपुंसकलिङ्गमित्यर्थः) जैसे चम्पकं, आम्रं, सूरणं, इक्ष आदि, तहां विशेष यह है, कि हरीतकी आदि प्रसव में भी स्त्रीलिङ्ग हैं; जैसे हरीतकी का फल हरीतकी है, आदि पद से कोशातकी, कर्कटी, द्राक्षा, अश्वत्थ, का फल आश्वत्थं, वेणु का फल वैणवं, प्लक्ष का फल प्लाक्षं, न्यग्रोध का फल नैयग्रोधं, इंगुदी का फल, ऐंगुदं, विल्व का फल वैल्वं, वृहती का फल वार्हतं, (एकैकं) (प्लक्षादिभ्योऽण् इति पुनरण्विधानात्) ॥ १८ ॥ जम्बूः, जम्बु, जाम्बवं, ये ३ जामुनि के फल के नाम हैं, जाती यूथिका मल्लिका ये आदि फूल में वर्त्तमान अपनेहीं लिङ्ग में हैं, और क्लीव में नहीं हैं, जैसे जात्याः पुष्पं जाती स्त्री॰ व्रीहयःफले स्वलिंगाः, जैसे व्रीहीणां फलानि व्रीहयः पुंसि, इस प्रकार माष मुद्ग यव आदि भी जानना चाहिये, जैसे माषानां फलानि माषाः ॥ १९ ॥ विदारी वृहती अंशुमती आदि मूल मे स्वलिङ्ग हैं, जैसे विदार्य्याः मूलं विदारी, अपि शब्द से फूल में भी स्वलिङ्ग हैं, पाटलापुष्प में वर्त्तमान क्लीव है, जैसे पाटलायाः पुष्पं पाटलं, अपि शब्द से स्वलिंग है, "(पाटलः कुसुमे वर्णेप्याशु व्रीहिश्च पाटल इति शाश्वतात्पुल्लिङ्गोऽपि)" ॥

॥ अथ द्वितीयप्रकरण ॥

पीपल-वा पीपर ।	पु १पु पु पु बोधिद्रुम श्चलदल: पिप्पल: कुञ्जराशन: । पु अश्वत्थे
कैत ।	पु पु २पु ३पु (ऽथ) कपित्थे (स्युर्) दधित्थ-ग्राहि-मन्मथा: ॥ १ ॥
	पु पु ४पु (तस्मिन्) दधिफल: पुष्पफल-दन्तशठा-(वपि) ।
गूलर ।	पु पु पु पु उदुम्बरे जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धक: ॥ २ ॥
कचनार ।	पु पु पु पु कोविदारे चमरिक: कुद्दालो युगपत्रक: ।
सात पत्तेवाला वा छितिवन ।	पु ५पु स पु सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदी विषमच्छद: ॥ ३ ॥
अमिलतास ।	पु पु पु पु आरग्वधे राजवृक्ष-सम्पाक-चतुरङ्गुला: ।
	पु पु पु पु आरेवत-व्याधिघात-कृतमाल सुवर्णका: ॥ ४ ॥
जंभीरी ।	पु पु पु पु पु (स्युर्) जम्बीरे दन्तशठ-जंभ-जंभीर-जंभला: ।
वारुण वा वरना ।	पु पु पु ६पु पु वरुणो वरण: सेतु स्तिक्तशाक: कुमारक: ॥ ५ ॥

१ च–. २–न्. ३–थ. ४–ठ. ५–च्. ६ ति–.

बोधिद्रुमः, "और भी बोधिः" चलदलः, पिप्पलः, कुंजराशनः, अश्वत्थः, ये ५ पीपल वृक्ष के नाम हैं; कपित्थः, "और भी कवित्थः, अमरमाला में पवर्ग तीतृय मध्य भी है", दधित्थः, ग्राही, मन्मथः, ॥ १ ॥ दधिफलः, पुष्पफलः, दंतशठः, ये ७ कपित्थ अर्थात् कैत इस प्रसिद्ध के नाम हैं; उदुम्बरः, "मेदिनी में टवर्ग के तृतीय मध्य है, त्रिकाण्ड शेष में भी ऐसा ही हैं", "उडुम्बरः", जन्तुफलः, यज्ञाङ्गः, हेमदुग्धकः ये ४ उदुम्बर अर्थात् गूलर के नाम हैं; ॥ २ ॥ कोविदारः, चमरिकः, कुद्दालः, युगपत्रकः, ये ४ कचनार इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सप्तपर्णः, विशालत्वक्, शारदी, "उसी प्रकार पुं· शारदः" विषमच्छदः, ये ४ सतवना इस प्रसिद्ध के वा ७ पत्तेवालेके नाम हैं; वा दुःप्राप्य वस्तु के नाम हैं, प्राकृत संज्ञा से व्याख्यान में दोष नहीं है, जो कहा है प्रयोजन के अर्थ वचन की प्रवृत्ति जिससे होती है वह प्राकृत भी अदोष है, और भी (रसवीर्यविपाकेभ्यो मूलात् पुष्पात् फलात् दलात्, आकाराद्देशकालादेर्वनौषध्यर्थमुन्नयेदिति) ॥ ३ ॥ आरग्वधः, "और भी अर्ग्लधः, और आर्ग्वधः" राजवृक्षः, सम्पाकः, "उसी प्रकार शम्पाकः, संपाकः" चतुरंगुलः, आरेवतः, व्याधिघातः, कृतमालः, सुवर्णकः, "सुपर्णकः" ये २ अमिलतास के वा वाहवा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ४ ॥ जम्बीरः, "जम्बिरः", दन्तशठः, जंभः, जंभीरः, जंभलः, "जंभः" ये ५ जम्भीरी नीबू, इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वरुणः, वरणः, सेतुः, तिक्तशाकः, कुमारकः, ये ५ वारुण इस प्रसिद्ध के नाम हैं ॥ ५ ॥

नागकेसर।	पु पु १पु पु पु पुन्नागे पुरुष स्तुङ्गः केसरो देववल्लभः।
नींव।	पु पु पु पु पारिभद्रे निम्बतरु र्मन्दारः पारिजातकः ॥ ६ ॥
बड़ा तेंदुआ-वा तिनिस।	पु पु पु पु २पु तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रु रतिमुक्तकः।
	पु ३पु वञ्जुल श्चित्रकृच्-(चा
आमला।	पु पु ऽथ द्वौ) पीतन-कपीतनौ ॥ ७ ॥
	पु आम्रातके
महुआ।	पु पु पु मधूके (तु) गुडपुष्प-मधुद्रुमौ।
	पु पु वानप्रस्थ-मधुष्ठीलौ
पहाड़ी वा जली महुआ।	पु (जलजेऽत्र) मधूलकः ॥ ८ ॥
पीलुआ।	४पु पु ५पु पीलौ गुडफलः स्रंसी
पहाड़ी पीलुआ।	(तस्मिंस्तु गिरिसंभवे)।
	पु पु अक्षोट-कन्दरालौ (द्वौ)

१ तुं—. २ अ—. ३ चि—त्. ४—लु. ५—न्.

पुन्नागः, पुरुषः, तुङ्गः, केसरः, "और भी केशरः," देववल्लभः, ये ५ नागकेसर के नाम हैं, पारिभद्रः, निम्बतरुः, मन्दारः, पारिजातकः, ये ४ निम्बतरु के "वा कडू निम्ब इस प्रसिद्ध के नाम हैं," ॥ ६ ॥ तिनिशः, स्यन्दनः, नेमी, "नेमिः, और भी नेमिन्, स्त्री॰ नेमी, (पुल्लिङ्गस्तिनिशेनेमिश्च क्रपान्ते स्त्रियामपीति रुद्रः)"; रथद्रुः, अतिमुक्तकः, वञ्जुलः, चित्रकृत्, ये ७ तिशिवन वा वड़ा तेनुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, और ये खदिर सदृश कांट से रहित हैं; पीतनः, कपीतनः, ॥ ७ ॥ आम्रातकः, "और भी अम्रातकः, ये ३ अमला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; मधूकः, "उसी प्रकार मधुकः, और मधु, मधूलः, मधुलः", गुड़पुष्पः, मधुद्रुमः, वानप्रस्थः, मधुष्ठीलः, ये ५ महुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, जल में उत्पन्न यह मधूलकः, (एकं) इसका पूर्व से भी वड़ा पत्ता होता है, "(गिरिजे ऽत्र मधूलकइत्यपि पाठः, गौरशाको मधूकोन्यो गिरिजः सोऽल्पपत्रकइति माधवः,। मधूकोऽन्योमधूलस्तु जलजो दीर्घ पत्रक इति स्वामी); ॥ ८ ॥ पीलुः, गुडफलः, स्रंसी, ये ३ पीलु वृक्ष के नाम हैं, यह गुजरात देश में उत्पन्न होता है, गिरिसंभव में पीलुः, अक्षोटः, उसी प्रकार आक्षोडः, "और आक्षोटः, आक्षोडः, अक्षोडः", कन्दरालः, "और भी कर्परालः", ये २ पर्वत में उत्पन्न पीलु वृक्ष के या अखरोट इस प्रसिद्ध के नाम हैं,।

अंकुहर वा-पिस्ता।	पु पु वंकोठे (तु) निकोचकः ॥ ९ ॥
छिउल ।	पु पु पु पु पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथो
बेंत ।	१पु (ऽथ) वेतसे ।
	२पु पु पु पु पु पु रथा-ऽभ्रपुष्प-विदुल-शीत-वानीर-वञ्जुलाः ॥ १० ॥
जलबेंत ।	पु पु स ३पु (द्वौ) परिव्याध-विदुलौ नादेयी (चा)म्बुवेतसे ।
सहिजन ।	पु पु पु पु पु शोभाञ्जने शिग्रु-तीक्ष्णगन्धका-ऽक्षीव-मोचकाः ॥ ११ ॥
लाल फूल का सहिजन।	पु (रक्तोऽसौ) मधुशिग्रुः (स्याद्)
रीठा ।	पु पु अरिष्टः फेनिलः (समौ) ।
बेल ।	पु पु ४पु पु ५पु बिल्वे शाण्डिल्य-शैलूषौ मालूर-श्रीफला (वपि) ॥ १२ ॥
पाकरि ।	पु पु पु प्लक्षो जटी पर्कटी (स्यान्)
बरगद ।	पु ६पु ७पु न्यग्रोधो बहुपा द्वटः ।

१—स. २ रथ. ३ अं—स. ४—प. ५—ल. ६—पाद. ७ वट,

अंकोठः, "अंकोटः, अंकोलः", निकोचकः, "उसी प्रकार निकोठकः" ये २ अंकोढ़ के वा अङ्कुहर वा—पिस्ता इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ९ ॥ पलाशः, किंशुकः, पर्णः, वातपोथः, ये ४ पलाश वा ढाख वा छीउल वृक्ष के नाम हैं, वेतसः, रथः, अभ्रपुष्पः, "और भी रथाभ्रपुष्पः" विदुलः, शीतः, "शीतं, (शीतं तुषार वा नीर, बहुवारद्रुमेषु चेत्यजयात्)" वानीरः, वंजुलः, ये ७ बेंत के नाम हैं ॥ १० ॥ परिव्याधः विदुलः, नादेयी, अम्बुवेतसः ये ४ जल बेंत के नाम हैं, नादेयी स्त्री॰ है; शोभाञ्जनः, "उसी प्रकार सोभाञ्जनः, वा सोभाञ्जनः, और शोभाञ्जनः", शिग्रुः, तीक्ष्णगन्धकः, "और तीक्ष्णगन्धः", अक्षीवः, "आक्षीवः, और कांक्षीवः", मोचकः, ये ५ सहिजना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ११ ॥ यह सोभाञ्जन रक्त पुष्प है तो मधुशिग्रुः कहलाता है, (एकं) अरिष्टः, फेनिलः ये २ रीठा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "अन्यत्र रिष्टं यह भी है, (रिष्टं क्षेमशुभाभावे पुंसि-खड्गे च फेनिल इति मेदिनी)" बिल्वः, शाण्डिल्यः, शैलूषः, मालूरः, श्रीफलः, ये ५ बिल्व के नाम हैं, ॥ १२ ॥ प्लक्षः, जटी, "जटिन्, स्त्री॰ जटी, वा जटि, जटिः", पर्कटी, पर्कटिन्, और स्त्री॰ पर्कटी, वा पर्कटि (—टिः) ये ३ पाकरि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, जटी, पर्कटी इन् प्रत्ययान्त है पर्कटी ङीष प्रत्ययान्त भी है, किसी के मत में, न्यग्रोधः, बहुपात्, वटः, ये ३ वट के वा बरगद इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ।

	पु पु पु १पु २पु पु
लोध ।	गालवः शावरो लोध्र स्तिरीट स्तिल्व-मार्ज्जनौ ॥ १३ ॥
	पु ३पु पु
आम ।	आम्र श्चूतो रसालो
	पु
सुगन्धवाला आम।	(ऽसौ) सहकारो (ऽतिसौरभः) ।
	पु न पु पु पु
गुग्गुलु ।	कुम्भो लूखलकं (क्लीबे) कौशिको गुग्गुलुः पुरः ॥ १४ ॥
	पु पु पु पु पु
लसोड़ा ।	शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो वहुवारकः ।
	पुन पु पु पु
चिरौंजी ।	राजादनं पियालः (स्यात्) सन्नकद्रु र्धनुःपटः ॥ १५ ॥
	स स स स
खंभारी-वा कंभारी ।	गम्भारी सर्व्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ।
	स स पु
	श्रीपर्णी भद्रपर्णी (च) काश्मर्य्य (श्चाप्य)
	(ऽथद्वयोः) ॥ १६ ॥
बेर ।	पुस पुस पुस
	कर्कन्धू र्बदरी कोलिः
	न न ४न
बेर के फल ।	कोलं कुवल-फेनिले ।

१ ति—. २ ति—. ३ चूत. ४—ल.

गालवः, शाबरः, "और भी सावरः", लोध्रः, तिरीटः, तिल्वः, मार्जनः, ये ६ लोध के नाम हैं, "(तिन में आदि दो श्वेत लोध्र के शेषरक्त लोध्र के नाम हैं)", ॥ १३ ॥ आम्रः. चूतः, रसालः, ये ३ आम के नाम हैं, यह आम्र अति सौरभ होय तो उसे सहकारः कहते हैं, (एकं) कुम्भः, उलूखलकं, "कुम्भं, और उलूखलकं. और भी कुम्भोलुः, और खलकं, उसी प्रकार कुंभोलूखलकं, कुंभोलूखल के सदृश वृक्ष के कोश से निकली वस्तु", कौशिकः, गुग्गुलुः, पुरः, और भी "गुग्गुलः" ये ५ गुग्गुल वृक्ष के नाम हैं, पुरः अदन्त है. ॥ १४ ॥ शेलुः, और भी "सेलुः" श्लेष्मातकः, शीतः, उद्दालः, बहुवारकः, ये ५लसोड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, राजादनं,"उसी प्रकार राजातनः, (नं) राजादनः", पियालः, "(और भी पियालश्च पियालक इति माधवः)" सन्नकद्रुः, "और भी सन्नः, और कद्रुः", धनुः पटः, "धनुः (धनु वा धनुष) और पटः, ये ४ चिरौंजी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १५ ॥ गंभारी, "कंभारी" सर्वतोभद्रा, काश्मरी, और भी "कार्श्मरी" मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्यः, ये ७ खंभारी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, काश्मर्यः अदन्त और पुलिङ्ग है, ॥ १६ ॥ कर्कन्धूः, "पुं. कर्कन्धुः" बदरी, "पुं. बदरः", कोलिः, (स्त्री) "कोली, और कोला" ये ३ बेर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, इनमें कर्कन्धूः द्वयोः अर्थात् स्त्री. और पुल्लिङ्ग में है, कोलं, कुवलं, फेनिलं, ।

	न न स
	सौवीरं बदरं घोण्टा (ऽप्य)
	पु
कंटाय-वा शमी।	(ऽथ स्यात्) स्वादुकण्टकः ॥ १७ ॥
	पु पु पु १पु
	विकंकतः स्रुवावृक्षो ग्रंथिलो व्याघ्रपाद् (अपि)।
	पु पु स स
नारङ्गी।	ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ॥ १८ ॥
	पु पु पु पु
तेंदुआ।	तिन्दुकः स्फूर्ज्जकः कालस्कन्ध (श्च) शितिसारके।
	पु पु पु पु
कडू तेंदुआ।	काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ॥ १९ ॥
	पु पु पुस २पु पु
काली पाढ़रि।	गोलीढो झाटलो घण्टापाटलि मोक्ष-मुष्ककौ।
	पु पु ३पु
तिलक।	तिलकः क्षुरकः श्रीमान्
	पु पु
झाऊ।	(समौ) पिचुल-झावुकौ ॥ २० ॥
	स स स पु पु
कायफर।	श्रीपर्णिका कुमुदिका कुंभी कैटर्य्य-कट्फलौ।
	पु पु ४पु पु
लाललोध।	क्रमुकः पट्टिकाख्यः (स्यात्) पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥ २१ ॥

१—द. २ मोक्ष. ३—त्. ४—न्.

सौवीरं, "यञ् प्रत्यय करने से सौवीर्यं" बदरं, घोंटा, ये ६ बदरीफल के वा बेर इस, प्रसिद्ध के नाम हैं, स्वादुकंटकः, ॥ १७ ॥ विकंकतः, और भी "वैकंकतः" स्रुवावृक्षः, ग्रंथिलः-व्याघ्रपात्, ये ५ विकंकत के अर्थात् कंटाय वा शमी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, यह यज्ञीय वृक्षभेद है; ऐरावतः, नागरंगः, "उसी प्रकार नारंगः, वा नार्यङ्गः", नादेयी, भूमिजम्बुका, ये ४ नागरंग के वा नारङ्गी, इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १८ ॥ तिन्दुकः, और भी "तिन्दुकी" स्फूर्जकः, कालस्कन्धः, शितिसारकः, ये ४ छोटा तेंदुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, काकेन्दुः, कुलकः, काकतिन्दुकः, काकपीलुकः, ये ४ काले तेन्दुआ के फल कुचिला इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १९ ॥ गोलीढः, "उसी प्रकार गोलिहः", झाटलः, घण्टापाटलिः, मोक्षः, मुष्ककः, ये ५ घण्टा पाटलि के अर्थात् काली पाढरि—इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वा घंटा, पाटलिः, ये २ नाम हैं; तिलकः, क्षुरकः, श्रीमान्, ये ३ तिलक वा तालमखाना के नाम हैं, पिचुलः, झावुकः, ये २ झाऊ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, यह तिलक का भेद है, ॥ २० ॥ श्रीपर्णिका, कुमुदिका, कुंभी, कैटर्यः, "कैडर्यः" कट्फलः, ये ५ कायफल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, कुंभी स्त्री० है, क्रमुकः; पट्टिकाख्यः, पट्टी, लाक्षा प्रसाधनः, ये ४ लोहित लोध के नाम हैं, "(पट्टिका आख्यायस्य सः, वा पट्टोऽस्यास्तीतिपट्टी इन्नन्तः, ङीपन्तो वा पठानीलोध प्रसिद्ध है)" ॥ २१ ॥

तूत ।	पु पु पु पु न नूद (स्तु) यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु (च) । न तूल (ञ्च)
कदम्ब ।	पु पु पु पु नीप-प्रियक-कदंबा- (स्तु) हलिप्रिये ॥ २२ ॥
भिलावा ।	पु पु स पुसन वीरवृक्षो ऽरुष्करो ऽग्निमुखी भल्लातकी (त्रिषु) ।
गेंठी ।	पु पु पु पु गर्द्दभाण्डे कन्दराल-कपीतन-सुपार्श्वकाः ॥ २३ ॥ पु प्लक्ष (श्च)
अमिली ।	स स स तिन्तिडी चिञ्चा ऽम्लिका
विजयसार ।	पु (ऽथो) पीतसालके । पु पु पु पु पु सर्ज्जका-ऽसन-बन्धूकपुष्प-प्रियक-जीवकाः ॥ २४ ॥
संखुआ वा शाल वा कोरों ।	पु पु पु पु पु साले (तु) सर्ज-कार्ष्या-ऽश्वकर्णकाः शस्यसम्बरः ।
अर्ज्जुन ।	पु १पु २पु पु पु नदीसर्ज्जो वीरतरु रिन्द्रद्रुः ककुभो ऽर्ज्जुनः ॥ २५ ॥

१—रु. २ द्रं.—

नृदः, "उसी प्रकार तूदः" यूपः, क्रमुकः, ब्रह्मण्यः, ब्रह्मदारु, तूलं, "तूलः भी" ये ६ अश्वत्थ के आकार वृक्ष भेद के वा "सहतूत—इस प्रसिद्ध के नाम हैं"; नीपः, प्रियकः, कदम्बः, "उसी प्रकार कादम्बः" हलिप्रियः, ये ४ कदम्ब इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २२ ॥ वीरवृक्षः, अरुष्करः, अग्निमुखी, भल्लातकी, "पुं. भल्लातकः" ये ४ भिलावा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, गर्दभाण्डः, कन्दरालः, कपीतनः, सुपार्श्वकः, प्लक्षः, ये ५ गेंठी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २३ ॥ तिन्तिड़ी, "तिन्तिली, और तिंतिड़ीकः"—का,—कं, चिञ्चा, अम्लिका, "अम्लीका, आम्लिका आम्लीका" ये ३ अमिली के नाम हैं; पीतसारकः, सर्जकः, असनः, "और भी आसनः, और अशनः", बन्धूकपुष्पः, प्रियकः, जीवकः, ये ६ विजयसार इस प्रसिद्ध के नाम हैं ॥ २४ ॥ सालः, उसी प्रकार "शालः" सर्जः, कार्ष्यः, "और भी कार्श्यः" अश्वकर्णकः, शस्यसंबरः, "वासस्यसम्बरः" ये ५ सालवृक्ष के, वा "संखुआ इस प्रसिद्ध के वा कोरों इस वृक्ष के नाम हैं," नदीसर्जः, वीरतरुः, इन्द्रद्रुः, ककुभः, अर्जुनः, ये ५ अर्जुन वृक्ष के नाम हैं; ॥ २५ ॥

खिरिणी ।	पुन न १स राजादन-फलाध्यक्षे चीरिकायां
गोंदी-वा पांखी ।	(अथ द्वयोः) ।
	पुस पु इङ्गुदी तापसतरुर्
भोजपत्र वृक्ष ।	पु २पु ३पु भूर्ज्जे चर्म्मि-मृदुत्वचौ ॥ २६ ॥
सेमर ।	स स स पु पुस पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलि (द्वयोः) ।
सेमर का गोंद ।	स पु पिच्छा (तु) शाल्मलीवेष्टे
काला सेमर ।	पु पुस रोचनः कूटशाल्मलिः ॥ २७ ॥
करंज ।	पु पु पु पु चिरविल्वो नक्तमालः करज (श्च) करञ्जके ।
कांटेदार कंजा ।	पु पु पु पु प्रकीर्य्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥ २८ ॥
करंज के भेद ।	पु ४स ५स (करञ्जभेदाः) षड्ग्रन्थो मर्कट्य ङ्गारवल्लरी ।
लाल करंज ।	६पु पु पु ७पु रोही रोहितकः प्लीहशत्रु र्दाडिमपुष्पकः ॥ २९ ॥

१—का. २—न्. ३—च, ४—टी. ५ अ—. ६—न्. ७ दा—.

राजादनः, "और भी राजाटनं, वा राजादनफलं, और अध्यक्षं" फलाध्यक्षं, चीरिका, ये ३ खिरिणी इस प्रसिद्ध वृक्ष के नाम हैं; इंगुदी, तापसतरुः, ये २ इङ्गुदी के वा "गोननी वा गोंदी—इस प्रसिद्ध के नाम हैं", द्वयोः इस कहने से पुल्लिङ्ग में इङ्गुदः; भूर्ज्जः, चर्म्मी, मृदुत्वक्, ये ३ भूर्ज वृक्ष के वा भोजपत्र वृक्ष के नाम हैं; ॥ २६ ॥ पिच्छिला, पूरणी, मोचा, स्थिरायुः, शाल्मलिः, "और भी स्त्री॰ शाल्मली, वा पुं॰ स्त्री॰ शाल्मलिः, वा पुं॰ शाल्मलः, ये ५ सेमर इस प्रसिद्ध के नाम हैं", द्वयोः से शाल्मलि शब्द स्त्री॰ पुलिङ्ग है; "(स्थिरमायुर्यस्य सः स्थिर युः, षष्ठिवर्षसहस्राणि वने जीवति शाल्मलिरिति-सचनात्)", शाल्मली के निर्यास को पिच्छा और शाल्मलीवेष्टः, ये २ नाम कहते हैं, वा "मोचर वा गोंद इस प्रसिद्ध के नाम हैं; रोचनः, कूटशाल्मलिः, ये २ काले सेमर—इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २७ ॥ चिरविल्वः, "और भी चिरिबिल्वः" नक्तमालः, "रक्तमालः" करजः, करञ्जकः, ये ४ करंज वृक्ष के वा कंजा के नाम हैं; प्रकीर्य्यः, पूतिकरजः, "उसी प्रकार पूतिकरंजः, पूतीकरंजः, पूतीकरजः" पूतिकः, "पूतीकः" कलिमारकः, "और कलिकारकः" ये ४ कांटेदार कंजा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २८ ॥ षड्ग्रन्थः, "घुडवच" मर्कटी, "कौंच" अंगारवल्लरी, "घुंघुची वा अगिआ" ये ३ करंज के भेद हैं, "अंगार के तुल्य वर्ण जिसका ऐसी वल्लरी अंगारवल्लरी है" रोही, रोहितकः, और भी "रोहीतकः" प्लीहशत्रुः, दाडिमपुष्पकः, ये ४ लाल वा गुलेनार करंज के नाम हैं; ॥ २९ ॥

	स पु
खयर।	गायत्री बालतनयः खदिरो द…
	पु पु
दुर्गन्ध खयर।	अरिमेदो विट्खदिरे
	पु
श्वेत खयर।	कदरः (खदिरे सिते) ॥ ३० ॥
	पु
	सोमवल्को (ऽप्य)
	पु पु
एरण्ड-वा रेंड़।	(ऽथ) व्याघ्रपुच्छ-गन्धर्वहस्तकौ।
	पु पु पु १पु
	एरण्ड उरुबूक (श्च) रुचक श्चित्रक (श्च सः) ॥ ३१ ॥
	पु पु पु पु पु
	चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्ड-वर्द्धमान-व्यडम्बकाः।
	पु
छोटी शमी।	(अल्पा शमी) शमीरः (स्याच्)
	२स स स
शमी।	छमी सक्तुफला शिवा ॥ ३२ ॥
	पु पु पु पु
मयनफर।	पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः।
	पु पु
	शल्य (श्च) मदने
	पु पु
देवदारु।	शक्रपादपः पारिभद्रकः ॥ ३३ ॥
	पुन न न न
	भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु (च) दारु (च)।

१ चि–. २ शमी.

गायत्री, "और भी पुं॰ गायत्रिन्, (–त्री)", बालतनयः, "उसी प्रकार बालपत्रः, और बालदलकः", खदिरः, दन्तधावनः, ये ४ खयर वा कत्था के नाम हैं; अरिमेदः, विट्खदिरः, ये २ दुर्गन्ध कत्थे के नाम हैं, (विट्गंधिः खदिरः विट्खदिरः) कदरः, सोमवल्कः, ये २ श्वेत खयर वा खयरसार के नाम हैं, ॥ ३० ॥ व्याघ्रपुच्छः, गन्धर्वहस्तकः, एरण्डः, उरुबूकः, "उसी प्रकार उरुवुकः", रुचकः, "और रुवुकः, और भी रुवुकः, रुबूकः" चित्रकः, ॥ ३१ ॥ चञ्चुः, पञ्चांगुलः, मंडः, वर्द्धमानः, व्यडंबकः, "उसी प्रकार व्यडंवनः, और भी अमंडः, वा आमंडः", ये ११ एरण्ड के नाम हैं, (मंडयतीति मंडः) "व्याघ्रपुच्छकः"; जो स्वल्प आकार समी है, उसे समीरः, और भी शरीरः, कहते हैं, शमी, शक्तुफला, "वा शक्तुफली" शिवा, ये ३ शमी वृक्ष के नाम हैं ॥ ३२ ॥ पिंडीतकः, मरुवकः, स्वसनः, करहाटकः, शल्यः, मदनः, ये ६ मयनफर वृक्ष प्रसिद्ध के नाम हैं, शक्रपादपः पारिभद्रकः, ॥ ३३ ॥ भद्रदारु, द्रुकिलिमं, पीतदारु, दारु,।

न १पुन
पूतिकाष्ठं (च सप्त स्युर्) देवदारुण्य

पाढ़रि । (ऽथ द्वयोः) ॥ ३४ ॥

पुस स स स स
पाटलिः पाटला ऽमोघा काचस्थाली फलेरुहा ।

स स
कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी

स स
ककुनी । श्यामा (तु) महिला ह्वया ॥ ३५ ॥

स स स स स स
लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ।

स स स पु
विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकः (श्च सा) ॥ ३६ ॥

पु पु पु पु पु
सरिवन । मण्डूकपर्ण-पत्रोर्ण-नट-कट्वङ्ग-टुण्टुकाः ।

पु पु २पु पु पु
श्योनाक-शुकनास-र्क्ष-दीर्घवृन्त-कुटन्नटाः ॥ ३७ ॥

पु पु
शोणक (श्चा) ऽरलो

स ३पुसन
अंवरा । तिष्यफला (त्वा) मलकी (त्रिषु) ।

स स
अमृता (च) वयस्था (च)

पुसन
बहेरा । (त्रिलिङ्गस्तु) विभीतकः ॥ ३८ ॥

१—रु. २ ऋक्ष. ३ आ—.

पूतिकाष्ठं, देवदारु ये ८ देवदारु के नाम हैं, ॥ ३४ ॥ पाटलिः, "उसी प्रकार स्त्री॰ पाटली", पाटला, अमोघा, "वा मोघा", काचस्थाली, "उसी प्रकार काली, और स्थाली" फलेरुहा, कृष्णवृन्ता, कुवेराक्षी, ये ७ पाटल वृक्ष के वा पाढ़रि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, इन में पाटलिः पुं॰ स्त्री॰ दो में है; श्यामा, महिलाह्वया, ॥ ३५ ॥ लता, गोवन्दिनी, गुन्द्रा, प्रियंगुः, फलिनी, फली, विष्वक्सेना, गन्धफली, कारंभा, प्रियकः, ये १२ प्रियंगु वा ककुनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, महिला अर्थात् स्त्री के नाम के समान नाम है जिसका; ॥ ३६ ॥ मण्डूकपर्णः, पत्रोर्णः, नटः, कट्वंगः, टुंटुकः, श्योनाकः, "और भी स्योनाकः, और शोणाकः" शुकनासः, ऋक्षः, दीर्घवृन्तः, कुटंनटः, ॥ ३७ ॥ शोणकः, "शोनकः" अरलः, "उसी प्रकार अरलुः, वा अरटुः" ये १२ सरिवन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; तिष्यफला, आमलकी, "उसी प्रकार पुं॰ आमलकः" अमृता, वयस्था, "वा वयःस्था, और भी कायस्था" ये ४ अंवरा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; विभीतकः, "स्त्री॰ विभीतकी", न॰ विभीतकं, ॥ ३८ ॥

	पु १पु पु पु पु
	(ना) ऽत्त स्तुष: कर्षफलो भूतावास: कलिद्रुम: ।
	स २स स स स स
हरीतकी-वा हरड़	अभया (त्व) व्यथा पथ्या वयस्था पूतना ऽमृता ॥ ३९ ॥
	स स स स स
	हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ।
	पु पु न
सरल ।	पीतद्रु: सरल: पूतिकाष्ठ (ञ्च) पु
कठचम्पा ।	(ऽथ) द्रुमोत्पल: ॥ ४० ॥
	पु पु
	कर्णिकार: परिव्याधो
	पु पु पु
बड़हल ।	लकुचो लिकुचो डहु: ।
	पु पु
कटहल ।	पनस: कंटकिफलो
	पु पु पु
समुद्र फल ।	निचुलो ऽम्बुज इज्जल: ॥ ४१ ॥
	स स स ३स
कठुम्बरि ।	काकोदुम्बरिका फल्गु र्मलपू र्ज्जघनेफला ।
	पु पु पु पु
नीब ।	अरिष्ट: सर्व्वतोभद्र-हिङ्गुनिर्य्यास-मालका: ॥ ४२ ॥
	पु पु
	पिचुमर्द्द (श्च) निम्बे स न स
सीसव-वा सीसम ।	(ऽथ) पिच्छिला ऽगुरु शिंशपा ।

१ तुस. २ अ–. ३ ज–.

अक्षः, तुषः, कर्षफलः, भूतावासः, कलिद्रुमः, ये ६ बहेड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; अभया, अव्यथा, पथ्या, वयस्था, "और भी वयःस्था, और कायस्था" पूतना, अमृता, ॥ ३९ ॥ हरीतकी, हैमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, ये ११ हरीतकी के–वा हर्र इस प्रसिद्ध के नाम-हैं; पीतद्रुः, सरलः, पूतिकाष्ठं, ये ३ सरल "वा सरल देवदारु इस प्रसिद्ध" के नाम हैं, द्रुमोत्पलः, ॥ ४० ॥ कर्णिकारः, परिव्याधः, ये ३ कठचम्पा के नाम हैं; लकुचः, "उसी प्रकार नकुचः" लिकुचः, डहुः, "और भी डहूः" ये ३ बड़हल के नाम हैं, पनसः, "और भी फलसः" कंटकिफलः, "और कंटकी फलः, वा कंटकफलः" ये २ कटहर के नाम हैं, निचुलः, अम्बुजः, इज्जलः, "उसी प्रकार हिज्जलः" ये ३ इज्जल वृक्ष के वा जलवेतस के भेद के वा समुद्रफल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ४१ ॥ काकोदुम्बरिका, फल्गुः, मलपूः, और भी मलपूः (–र्) और मलयूः, (–यूः) (मलात्पापात्पुनातीति)" जघनेफला, ये ४ कान्गूलर के वा कठूम्बरी के नाम हैं; "(जघने बुध्ने फलान्यस्या इति जघनेफला, पूर्वोत्तरसाहचार्य्यात्फल्गुरपि स्त्री॰ मलयूरिति तालव्यान्तम् वा)"; अरिष्टः, सर्व्वतोभद्रः, हिङ्गुनिर्य्यासः, मालकः, ॥ ४२ ॥ पिचुमर्द्दः, "और पिचुमंदः" निम्बः, ये ६ नीब के नाम हैं, "(हिंगुगंधनिर्य्यासोयम्)" पिच्छिला, अगुरु, शिंशपा, "उसी प्रकार अगुरुशिंशपा" ।

	स स
काला सीसव ।	कपिला भस्मगर्भा (सा)
	पु पु
शिरस ।	शिरीष (स्तु) कपीतनः ॥ ४३ ॥
	पु
	भण्डिलो (ऽप्य)
	पु १पु पु
चम्पा-वा चमेली ।	(ऽथ) चाम्पेय श्चम्पको हेमपुष्पकः ।
	स
चमेली की कली ।	(एतस्य कलिका) गन्धफली (स्याद्)
	पु
मवशली ।	(अथ) केसरे ॥ ४४ ॥
	पु
	वकुलो
	पु पु
अशोक ।	वञ्जुलो ऽशोके
	पु पु
अनार ।	(समौ) करक-दाडिमौ ।
	पु पु पु २पु
नागकेसर ।	चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाः (ह्वयः) ॥ ४५ ॥
	स स स स स
जाही ।	जया जयन्ती तर्क्कारी नादेयी वैजयन्तिका ।
	न ३पु स स
अरणी ।	श्रीपर्णी मग्निमन्थः (स्यात्) कणिका गणिकारिका ॥ ४६ ॥
	पुन
	जयो

१ च—. २—नः ३ अ—.

कपिला, भस्मगर्भा; ये ५ सीसव वृक्ष के नाम हैं, "वा शिंशपान्त ये ३ सीसव इस प्रसिद्ध के और जो कपिला अर्थात् कृष्णपुष्पा है वह १ भस्मगर्भा कहलाती है, अर्थात् कालासीसव इस प्रसिद्ध का नाम है" शिरीषः, कपीतनः, ॥ ४३ ॥ भण्डिलः, "और भी भंडिरः, और भंडीलः, वा भंडीरः, वाचस्पति का मत है" ये ३ शिरस के नाम हैं; चांपेयः, चंपकः, हेमपुष्पकः, ये ३ चमेली, वा सोनचमेली के नाम हैं; इस चंपक की कली को १ गन्धफली कहते हैं, तथा च प्रयोगः; "न षट्पदो गन्धफली मजिघ्रदिति"; केसरः, "उसी प्रकार केशरः" ॥ ४४ ॥ वकुलः; ये २ मवशली इस प्रसिद्ध वृक्ष के नाम हैं; वञ्जुलः, अशोकः, ये २ अशोक के नाम हैं; करकः, दाडिमः, "और दालिमः, दाडिम्बः, वा डालिमः, और भी स्त्री. दाड़िमी" ये २ दाड़िम वा अनार इस प्रसिद्ध के नाम हैं; चाम्पेयः, केसरः, नागकेसरः, "उसी प्रकार केशरः; और नागकेशरः; (स्वर्णभसर्पाख्यो नागकेसरः षट् पद प्रिय इति रभसः)" काञ्चना ह्वयः, ये ४ नागकेसर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ४५ ॥ जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका, ये ५ जाही इस प्रसिद्ध के नाम हैं, श्रीपर्णी, अग्निमन्थः, कणिका, गणिकारिका, ॥ ४६ ॥ जयः, ये ५ अरणी के नाम हैं,

	पु पु पु स
कुरैआ।	(ऽथ) कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका।
	पुसन १पुसन पुसन
कुरैआ का फल अर्थात् इन्द्रजव।	(एतस्यैव) कलिङ्गे न्द्रयव भद्रयवं (फले) ॥ ४७ ॥
	२पु पु पु पु
करंवदा।	कृष्णपाकफला-ऽविग्न-सुषेणाः करमर्द्दके।
	पु ३पु पु
तमाल।	कालस्कन्ध स्तमालः (स्यात्) तापिच्छो (ऽप्य)
	पु
म्योड़ी।	(ऽथ) सिन्दुकः ॥ ४८ ॥
	पु ४पु स ५स
	सिन्दुवारे-न्द्रसुरसौ निर्गुण्डी-न्द्राणिके-(त्यपि)।
	स स स पु पु
वन्दाल।	वेणी खरा गरी देवताड़ो जीमूत (इत्यपि) ॥ ४९ ॥
	स स
हाथीशुंडा।	श्रीहस्तिनी (तु) भूरुण्डी
	न स
वेला।	तृणशून्यं (तु) मल्लिका।
	स पु
	भूपदी शीतभीरु (श्च)

१ इ–. २–ल. ३ त–. ४ इ–. ५ इ–का.

कुटजः "और भी कौटजः" शक्रः, वत्सकः, गिरिमल्लिका, ये ४ कुरैआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, कलिंगं, इन्द्रयवं, भद्रयवं, ये ३ इसी कुरैआ के फल इन्द्रयव के नाम हैं, "कलिंगः, इन्द्रयवः, भद्रयवः, कलिंगोंद्रयवः, पुमानित्यमरमाला, कलिंगा, वहांहीं स्त्री काण्ड में पाठ है, ॥ ४७ ॥ कृष्णपाकफलः, "और भी कृष्णपाकः, पाकफलः, कृष्णफलः, पाककृष्णफलः" अविग्नः, "उसी प्रकार आविग्नः" सुषेणः, करमर्द्दकः, ये ४ करौंदा वा खट्टे फल के नाम हैं; कालस्कन्धः, तमालः, तापिच्छः, "और भी तापिंजः" ये ३ तमाल वृक्ष के नाम हैं; सिन्दुकः, ॥ ४८ ॥ "उसी प्रकार सिन्धुकः सिन्दुवारः" सिन्धुवारः, इन्द्रसुरसः, "वा इन्द्रसुरिसः" निर्गुण्डी, "और भी निर्गुण्ठी" इंद्राणिका, ये ५ सिन्दुवार वृक्ष के वा म्योड़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वेणी, खरा, गरी, "अगरी, और खरागरी, वा गरागरी" देवताड़ः, जीमूतः, ये ५ देवताली के वा वन्दाल वृक्ष के जो गुजरात में गोंडी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ४९ ॥ श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी, ये २ सूर्य्यमुखी के भेद वा हाथीशुंडा–वा घुइयां इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तृणशून्यं, "और भी तृणशून्यं, स्त्री॰ तृणशून्या" मल्लिका, भूपदी, शीतभीरुः, "उसी प्रकार शतभीरुः, (मल्लिका शतभीरुश्च गवाक्षी भद्रमल्लिका, शीतभीरुर्म्मदयन्ती भूपदी तृणशून्यकमिति वाचस्पतिः) ये ४ मल्लिका के वा मकरन्द के वा मोगरा वा वेला के नाम हैं,

जङ्गली बेला वा मोगरी ।	(सैवा) स्फोता (वनोद्भवा) ॥ ५० ॥
काले फूल की नेवारी।	शेफालिका (तु) सुवहा निर्गुण्डी नीलिका (च सा) ।
सफेद फूल की ।	(सितासौ) श्वेतसुरसा भूतवेश्य
जूही ।	(ऽथ) मागधी ॥ ५१ ॥
	गणिका यूथिका ऽम्बष्ठा
पीले फूल की ।	(सा पीता) हेमपुष्पिका ।
वासन्ती लता वा वेल ।	अतिमुक्तः पुण्ड्रकः (स्यात्) वासन्ती माधवीलता ॥ ५२ ॥
चमेली ।	सुमना मालती जातिः
नेवारी वा वासन्ती वा वर्षा की वेल।	सप्तला नवमालिका ।
कुन्द ।	माध्यं कुन्दं
दुपहरिआ ।	रक्तक (स्तु) बन्धूको बन्धुजीवकः ॥ ५३ ॥
घीकुआरि ।	सहा कुमारी तरणिर्

१ आ—. २—शी. ३—णि.

वही मल्लिका वनोद्भवा आस्फोता, वा आस्फोटा कहलाती है, एकं जंगली मोगरी—वा बेला इस प्रसिद्ध का नाम है, "(आस्फोतागिरिकर्ण्यां च वनमल्ल्यां च योषितीति मेदिनी)" ॥ ५० ॥ शेफालिका, "और भी शेफालिः, वा शेफाली, और शीफालिका" सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका, ये ४ काले फूल की नेवारी २ वा श्वेतपुष्पा नेवारी, ३ इनमें निर्गुंडी यह १ जो गुच्छे से खुली हो, वा कली, यह श्वेत फूल की नेवारी श्वेत सुरसा, और भूतवेशी भी, कहलाती है, उसी को पर्वत में भूतकेशी कहते हैं, मागधी, ॥ ५१ ॥ गणिका, यूथिका, अम्बष्ठा, ये ४ यूथिका के वा जूही इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वही जूही पीले फूल की है तो हेमपुष्पिका कहलाती है अर्थात् पीले फूल की जूही विशेष, एकं; अतिमुक्तः, पुण्ड्रकः, वासन्ती, माधवीलता, "उसी प्रकार माधवी, और लता" ये ५ अति उजले कुन्द के वा कुन्दभेद के नाम हैं, वा मधुमाधवीलता के नाम हैं, ॥ ५२ ॥ सुमनाः (—नस्) "वा सुमना" मालती, जातिः, "और भी जाती" ये ३ जाती वा चमेली इस प्रसिद्ध के नाम हैं, सप्तला, नवमालिका, "नवमल्लिका भी" ये २ नेवारी के वा नई स्तुति के योग्य माला के नाम हैं, माध्यं, कुन्दं, "वा कुन्दः" ये २ कुन्द के नाम हैं, रक्तकः, बन्धूकः, "और भी बन्धुकः" बन्धुजीवकः, ये ३ दुपहरिआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ५३ ॥ सहा, कुमारी, तरणिः, ये ३ घीउकुआरि के नाम हैं,

कटसरैया वा सेव-ती कांटेदार ।	पु स अम्लान (स्तु) महासहा ।
लाल-पिआवासा-वा कटसरैया, ।	पु (तत्र शोणे) कुरवक
पीला पिआवासा ।	पु (स्तत्र पीते) कुरंटकः ॥ ५४ ॥
काले फूल का-वा झिण्टी ।	पुस स पु (नीलाझिण्टी द्वयोर्) बाणा दासी (चा) ऽर्त्तगल (श्च सा) ।
पियावासा मात्र वा झिण्टी मात्र ।	पु स सैरीयक (स्तु) झिण्टी (स्यात्)
लाल पुष्पका-वा बैजनी	पु (तस्मिन्) कुरवको (ऽरुणे) ॥ ५५ ॥
सोनहरी ।	पु पुस (पीता) कुरंटको (झिण्टी तस्मिन्) सहचरी (द्वयोः) ।
ओढ़उल वा गुड़हर ।	न न ओड्रपुष्पं जवापुष्पं
तिलका ।	न वज्रपुष्पं (तिलस्य यत्) ॥ ५६ ॥
कनइल ।	पु पु पु पु प्रतिहास-शतप्रास-चण्डात-हयमारकाः ।
	पु करवीरे
करील ।	पु पु १पु करीरे (तु) क्रकर-ग्रन्थिला (वुभौ) ॥ ५७ ॥
धतूरा ।	पु पु पु पु पु उन्मत्तः कितवो धूर्त्तो धुस्तूरः कनको (हूयः) ।
	पु पु मातुलो मदन (श्चा)

१-ल.

अम्लानः, महासहा, ये २ पिआवासा, वा कांटेदार सेवती के नाम हैं, "इनमें अम्लान यह एक कुरंटक मात्र का नाम है" कुरवकः, "वा कुरुवकः" यह १ लाल अम्लान का नाम है, और पीले अम्लान अर्थात् पियावासा को कुरंटकः, "वा कुरण्टकः" कहते हैं, ॥ ५४ ॥ बाणा, दासी, अर्त्तगलः, "वा आर्त्तगलः" ये ३ नीले फूल के पिआवासा के नाम हैं, "द्वयोः इस कहने से पुं· बाणः" सैरीयकः, "वा सैरेयकः" झिण्टी, ये २ झिण्टीमात्र के वा पिआवासा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, कुरवकः, यह १ लाल सैरीयक का नाम है, एकं, ॥ ५५ ॥ जो पीले फूल की झिण्टी है उसे कुरण्टकः, कहते हैं, और उसी कुरण्टक को सहचरी कहते हैं, द्वयोः इस कहने से पुं· सहचरः, और सहचारः भी होता है, ओड्रपुष्पं, जवापुष्पं, "उसी प्रकार जपापुष्पं, वा जपा" ये २ गुड़पुष्प-वा ओढ़ौल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वज्रपुष्पं, यह १ तिलपुष्प का नाम है, "(वज्राकारं पुष्पं वज्रपुष्पं)" एकं, ॥ ५६ ॥ प्रतिहासः "वा प्रतीहासः", शतप्रासः, चण्डातः, हयमारकः, करवीरः, ये ५ करवीर के-वा कनइल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, करीरः, क्रकरः, "और भी क्रकचः" ग्रन्थिलः, ये ३ करीर- वा करील इस प्रसिद्ध वृक्ष के नाम हैं, ॥ ५७ ॥ उन्मत्तः, कितवः, धूर्त्तः, धुस्तूरः, "उसी प्रकार धुन्तुरः और धूस्तूरः, धतूरः भी" कनकः, "वा कनकाह्वयः" मातुलः, मदनः, ये ७ धतूर-वा धतूरा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वाजे कनकः सोने को भी कहते हैं,

	पु
धतूर का फल ।	(ऽस्य फले) मातुलपुत्रकः ॥ ५८ ॥
	पु पु पु पु
बिजौरा-नीबू ।	फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ।
	पु पु पु पु
मरुआ-वा दवना ।	समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्झकः ॥ ५९ ॥
	पु
	जम्भीरो (ऽप्य)
	पु पु पु
बबई-वा पर्णास ।	(ऽथ) पर्णासे कठिञ्जर-कुठेरकौ ।
	पु
उजली बबई ।	(सिते) ऽर्ज्जको (ऽत्र)
	१पु पु पु
चीता ।	पाठी (तु) चित्रको वह्नि (संज्ञकः) ॥ ६० ॥
	पु पु २पु पु पु
मदार ।	अर्काह्व-वसुका-स्फोत-गणरूप-विकीरणाः ।
	पु पु
	मन्दार (श्चा) ऽर्कपर्णो
	पु पु
उजला मदार ।	(ऽत्र शुक्ले) ऽलर्क-प्रतापसौ ॥ ६१ ॥
	स पु पु पु पु
बक वा गुम्मा ।	शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बको वसुः ।
	स स स ३स
वन्दा-वा बांदा ।	वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिके (त्यपि) ॥ ६२ ॥

१—न. २ आ—. ३ —का.

मातुलपुत्रकः, यह १ धतूर के फल का नाम है, ॥ ५८ ॥ फलपूरः, बीजपूरः, रुचकः, मातुलुंगकः, ये ४ बिजौरा नीबू के नाम हैं, समीरणः, मरुवकः, प्रस्थपुष्पः, फणिज्झकः, ॥ ५९ ॥ जम्भीरः, "और भी जम्बीरः" ये ५ मरुआ वा दवना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पर्णासः, कठिञ्जरः, कुठेरकः, ये ३ पर्णास—वा बबई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, शाखा और फूल से श्वेत पर्णास—वा बबई को अर्जकः, कहते हैं; पाठी, चित्रकः, वन्हिसञ्ज्ञकः, ये ३ चिता, वा चित्रक के नाम हैं, "वन्हिसञ्ज्ञकः अर्थात् अग्निपर्य्याय का नाम है" ॥ ६० ॥ अर्काह्वः, वसुकः, "वा वसूकः" आस्फोतः, "आस्फोटः भी" गणरूपः, विकीरणः, "वा विकिरणः" मन्दारः, अर्कपर्णः, ये ७ अर्क वृक्ष के—वा मदार—वा आक इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अलर्कः, प्रतापसः, ये २ श्वेत अर्क—वा उजले फूल के मदार के नाम हैं, ॥ ६१ ॥ शिवमल्ली, पाशुपतः, एकाष्ठीलः, "उसी प्रकार स्त्री॰ एकाष्ठीला" बकः, "और भी बुकः" वसुः, "और वसुकः, वा वसूकः" ये ५ बक—वा गुम्मा इस प्रसिद्ध वृक्ष के नाम हैं; वन्दा, "उसी प्रकार वन्दका, वा वन्दाका" वृक्षादनी, वृक्षरुहा, जीवन्तिका, ये ४ वृक्ष के ऊपर उत्पन्न लता विशेष—वा वन्दा वा बांदा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ६२ ॥

॥ अथ तृतीय प्रकरण ॥

	स स स स स
गुरुचि-वा नीमगि-लोय ।	वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तंत्रिका ऽमृता ।
	स स स १स
	जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्य (ऽपि) ॥ १ ॥
	स म स स स स
मूर्व्वा वा धनुष की उपयोगी लता विशेष वा चिनार ।	मूर्व्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रुवा ।
	स स स २स
	मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पिलुपर्ण्य (ऽपि) ॥ २ ॥
	स स स स स स
पाठा-वा पाढ़रि ।	पाटा ऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ।
	स स स स
	एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ॥ ३ ॥
	स स स स
कुटकी ।	कटुः कटम्बरा ऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ।
	स स स स
	मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ४ ॥
	स स स स स
कवांच ।	आत्मगुप्ता जडा ऽव्यंडा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
	स स स स
	ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छु (श्च) मर्कटी ॥ ५ ॥

१—र्णी. २—र्णी.

वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, "और भी गुडुची" तंत्रिका, अमृता, जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी, ये ९ गुडूची—वा गुरुचि इस प्रसिद्ध के—वा नीवगिलोय के नाम हैं; ॥ १ ॥ मूर्व्वा, "और भी मूर्वा" देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, स्रुवा, "उसी प्रकार स्रवा", मधूलिका, मधुश्रेणी, "और भी धनुःश्रेणी, वा धनुः, और श्रेणी" गोकर्णी, पिलुपर्णी, ये १० मूर्व्वा वा धनुष की उपयोगी लताविशेष वा चिनार के नाम हैं, ॥ २ ॥ पाठा, अम्बष्ठा, विद्धकर्णी, "उसी प्रकार अविद्धकर्णी, और अविद्धकर्णा" स्थापनी. श्रेयसी, रसा, एकाष्ठीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिक्तिका, ये १० पाठा के—वा पाढ़रि इस प्रसिद्ध—वा पहाड़ मूल—वा विद्धकर्णी के नाम हैं, ॥ ३ ॥ कटुः, कटम्भरा, "और भी कटुम्भरा, वा कटम्बरा" अशोकरोहिणी, "उसी प्रकार अशोका, और रोहिणी," कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, "और भी कृष्णभेदा" चक्राङ्गी, शकुलादनी, ये ८ केदारकुटकी—वा कुटकी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ४ ॥ आत्मगुप्ता, जड़ा, "और भी अजड़ा" अव्यंडा, "उसी प्रकार अध्यण्डा", कण्डूरा, "वा कण्डुरा" प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बिः, "और शुकशिम्बी, वा शुकशिम्बा" कपिकच्छुः, "और भी कपिकच्छूः" मर्कटी, ये ९ कौंच के—वा जिस के फल पर रोम होते हैं और शरीर में लगने से खाज चलती है—वा कौंवांच इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (मर्कट तुल्य लोमयुक्तत्वान्मर्कटी, यत्स्पर्शेन कण्डूरुत्पद्यते ऽतः कंडूरा)" ॥ ५ ॥

मूषाकर्णी-वा मूसरी।	स १स स स स स चित्रो पचित्रा न्यग्रोधी द्रवंती शम्बरी वृषा। स स स २स प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्य(ऽपि)॥६॥
चिचिढ़ा, वा-आधा झाड़ा।	पु पु पु ३पु अपामार्गः शैखरिको धामार्गव-मयूरको। स स स स प्रत्यक्पर्णी कीशपर्णी किणिही खरमञ्जरी॥७॥
भङ्गराज-वा भंगरैया।	स स स स स फञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका। स पु पु पु अङ्गारवल्ली बालेयशाक-वर्व्वर-वर्द्धकाः॥८॥
मजीठा।	स स स स स मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका। स स स ४स मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्य(ऽपि)॥९॥
धमासा-वा यवासा।	पु पु पु पु पु यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः। स स स स स रोदनी कच्छुरा ऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा॥१०॥
सिंहपुच्छी-वा पिठवनी।	स पु ५स ६स पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्य् घ्रिवल्लिका।

१उ–. २–र्णी. ३–क. ४–ल्ली. ५–र्णी. ६ अं–.

चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शम्बरी, "उसी प्रकार संवरी" वृषा, प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, मूषिकपर्णी, ये १० मूषिकपर्णीके–वा मूसाकर्णी वा मूसरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ६ ॥ अपामार्गः, शैखरिकः, "और शैखरेयः" धामार्गवः, "और भी अधामार्गवः" मयूरकः, प्रत्यक्पर्णी, "वा प्रत्यक्पुष्पी" कीशपर्णी, "उसी प्रकार केशपर्णी, (कपिलोमतुल्यानि लोमशानि पर्णान्यस्याः)" किणीही, खरमञ्जरी, ये ८ अपामार्ग–वा चिचिंढा–वा आधा झाड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ७ ॥ फञ्जिका, "और भी हञ्जिका" ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली, बालेयशाकः, "और भी बालेयः" वर्व्वरः, वर्द्धकः, ये ९ भार्गी के–वा भङ्गराज के–वा भंगरैया इस प्रसिद्ध को नाम हैं; ॥ ८ ॥ मञ्जिष्ठा, विकसा, "वा विकषा" जिङ्गी, समङ्गा, कालमेषिका, "और भी कालमेशिका" मण्डूकपर्णी, भण्डीरी, "और भण्डिरी" भण्डी, योजनवल्ली, "उसी प्रकार योजनपर्णी" ये ९ मञ्जिष्ठा–वा मजीठ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ९ ॥ यासः, यवासः, "उसी प्रकार पासः, और अपवासः," दुःस्पर्शः, धन्वयासः, "और भी धन्वयवासः, और धनुर्यासः" कुनाशकः, रोदनी, "उसी प्रकार चोदनी" कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरालभाः, ये १० धन्वयास–वा धमासा– वा यवासा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १० ॥ पृश्निपर्णी, "वा पृश्निपर्णी" पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, अंघ्रिपर्णीका भी"।

	स स स स १स
	क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशि धावनी गुहा ॥ ११ ॥
	स स स स स
कंटकारी-वा भटकटाई ।	निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ।
	स स स स २स
	प्रचोदनी कुली चुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिके (त्यपि) ॥ १२ ॥
	स स स स स
नील ।	नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ।
	स स स स स स
	रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला (च) नीलिनी ॥ १३ ॥
	पु ३स स स
वकुची ।	अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ।
	स स स ४स
	कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्य् (ऽपि) ॥ १४ ॥
	स ५स स स स स
बड़ी पीपरि ।	कृष्णा पकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ।
	स स स स
	उषणा पिप्पली शौण्डी कोला
	स स
	(ऽथ) करिपिप्पली ॥ १५ ॥
	स स स पु
छोटी पीपरि-वा गज पीपरि ।	कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः (पुमान्) ।
	न स
चाव-वा पीपरि की लकड़ी	चव्य (न्तु) चविका

१ गु-. २-का. ३-जिन्. ४-ली. ५ उ-.

क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशिः, "और भी कलशी, और कलसिः" धावनिः, "वा धावनी", गुहा, ये ६ सिंहपुच्छी के-वा सिंहपुच्छी के आकार की फूलवाली औषधी-वा चाकुलियां इस प्रसिद्ध के-वा पिठवण के नाम हैं; ॥ ११ ॥ निदिग्धिका, पृश्नी, व्याघ्री, बृहती, कंटकारिका, प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका, ये १० कंटकारी-वा भटकटाई इस प्रसिद्ध के नाम हैं. ॥ १२ ॥ नीली, काला, क्लीतकिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, द्रोणी, 'वाजे पढ़ते हैं तूणी. दूसरे तूलो" दोला, "और भी मेला" नीलिनी, ये ११ नीली के-वा नील के-वा वस्त्र आदि के रंगने के लिये काले वर्ण के नाम हैं; ॥ १३ ॥ अवल्गुजः, सोमराजी, "वा स्त्री॰ सोमराजी, (जी)" सुवल्लिः, सोमवल्लिका, कालमेषी, "उसी प्रकार कालमेशी" कृष्णफला, वाकुची, 'वाजे वागुजी, पढ़ते हैं" पूतिफली, ये ८ वाकुची-वा वकुची के नाम हैं; ॥ १४ ॥ कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी चपला, कणा, उषणा, "और भी ऊषणा" पिप्पली, "उसी प्रकार पिप्पलिः" शौण्डी, कोला, ये १० पीपरि के नाम हैं : करिपिप्पली, ॥ १५ ॥ कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिरः, "और वसिरः" ये ५ गजपीपरि के नाम हैं; चव्यं, और भी स्त्री॰ चव्या" चविका, "वा चवी, और भी न॰ पुं॰ चविकं, ये २ चाव-वा पीपरि के लकड़ी के नाम हैं;

	स १स स
घुंघुची-वा लाल ।	काकचिञ्ची गुञ्जे (तु) कृष्णला ॥ १६ ॥
	स २स पुस पु
गोखुरू ।	पलंकषा (त्वि) क्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ।
	पु पु पु
	गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट (इत्यपि) ॥ १७ ॥
	स स स स ३स स
अतीस ।	विश्वा विषा प्रतिविषा ऽतिविषो पविषा ऽरुणा ।
	स. न
	शृङ्गी महौषधं (च)
	स स
दुधिआ ।	(ऽथ) क्षीरावी दुग्धिका (समे) ॥ १८ ॥
	स स स ४स स
शतावरि ।	शतमूली बहुसुता ऽभीरु रिन्दीवरी वरी ।
	स स स स
	ऋष्यप्रोक्ता भीरुपत्री नारायण्यः शतावरी ॥ १६ ॥
	स
	अहेरु (र)
	पु पु ५पु
दारुहलदी ।	(ऽथ) पीतद्रु-कालेयक-हरिद्रवः ।
	स स स स
	दार्व्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्ज्जनी (त्यपि) ॥ २० ॥
	स ६स स स स
बच-वा वचा ।	वचा ग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्व्विका ।
	स
सफेद-बच ।	(शुक्ला) हैमवती

१ गुञ्जा. २ इ–. ३ उ–. ४ इ–. ५–द्रु. ६ उ–.

काकचिञ्ची, गुञ्जा, कृष्णला, "काकचिञ्चिः, वा काकचिञ्चा भी" ये ३ गुञ्जा–वा घुंघुची–वा लाल के नाम हैं; ॥ १६ ॥ पलंकषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकंटकः, गोकंटकः, गोक्षुरकः, वनशृगाटः, ये ७ गोखुरू के नाम हैं; ॥ १७ ॥ विश्वा, विषा, प्रतिविषा, अतिविषा, उपविषा, अरुणा, शृंगी, महौषधं, "(महच्च तदौषधञ्च, महौषधन्तु शुण्ठ्यां स्याद्विषायां लशुनेऽपि चेति)" ये ८ अतिविषा वा अतीस इस प्रसिद्ध के नाम हैं; "वा अतिविष ये प्रसिद्ध हैं" क्षीरावी, दुग्धिका, ये २ दुग्धिका–वा दुधिआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १८ ॥ शतमूली, बहुसुता, अभीरुः, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायण्यः, "एक व. नारायणी" शतावरी, ॥ १६ ॥ अहेरुः, ये १० सहस्रमूली के नाम हैं, "वा शतावरि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, और सब स्त्रीलिङ्ग हैं" पीतद्रुः, कालेयकः, "और भी कालीयकः" हरिद्रुः, दार्वी, पचंपचा, "उसी प्रकार पचंवचा भी" दारुहरिद्रा, पर्ज्जनी, ये ७ दारुहल्दी–वा दारुहलद– के नाम हैं; ॥ २० ॥ वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्व्विका, ये ५ वचा–वा खुरासानवच–वा वचा– के नाम हैं; जो शुक्लवचा है उस का हैमवती नाम है; (एकं);

	स १स स
अडुस-वा विसौंटा।	वैद्यमातृ-सिंह्यौ (तु) वासिका ॥ २१ ॥
	पु पु पु पु पु
	वृषो ऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ।
	स स स स
विष्णुक्रान्ता-वा अपराजिता ।	आस्फोता गिरिकर्णी (स्याद्) विष्णुक्रान्ता ऽपराजिता २२ ॥
	स पु पु २पु पु
तालमखाना ।	इक्षुगन्धा (तु) काण्डेक्षु-कोकिलाक्षे-क्षुर-क्षुराः ।
	पु ३पु ४स स स
सौंफ ।	शालेयः (स्याच्) छीतशिव श्छत्रा मधुरिका मिशी ॥ २३ ॥
	स
	मिश्रेया (प्य)
	पु पु ५स स स
सेहुंड़ ।	(ऽथ) सीहुण्डो वज्रद्रुः स्नुक् स्नुही गुडा।
	स
	समन्तदुग्धा
	पुन स स
वायुविड़ङ्ग ।	(ऽथो) वेल्ल ममोघा चित्रतण्डुला ॥ २४ ॥
	पु पु पुन
	तण्डुल (श्च) कृमिघ्न (श्च) विडंगं (पुन्नपुंसकम्) ।
	स पु
वरिआर-वा वरिअरा ।	वला वाट्यालको
	स स
शन-वा सनई ।	घण्टारवा (तु) शणपुष्पिका ॥ २५ ॥

१—न्दी. २ इ—. ३ शी—. ४ छ—. ५—ह.

वैद्यमाता, सिंही, वासिका, "और भी वाशा, और वाशिका" ॥ २१ ॥ वृषः, "वा वृशः" अटरुषः, "और अटरुपः" सिंहास्यः, वासकः, "उसी प्रकार वाशकः" वाजिदन्तकः; ये ८ अटरुष–वा अड़ूसा–वा अडुस–वा रुस वा विसौंटा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; आस्फोता, "और भी आस्फोटा" गिरीकर्णी, विष्णुक्रान्ता, अपराजिता, ये ४ विष्णुक्रान्ता–वा अपराजिता के नाम हैं; ॥ २२ ॥ इक्षुगन्धा, काण्डेक्षुः, कोकिलाक्षः, इक्षुरः, क्षुरः; ये ५ कोकिलाक्ष–वा तालमखाना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; शालेयः, "वा सालेयः" शीतशिवः, छत्रा, मधुरिका, मिशी, "और भी मिसिः, वा मिसी, और मिशिः" ॥ २३ ॥ मिश्रेया; ये ६ मधुरिका–वा शौंफ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सीहुण्डः, "और भी सिहुण्डः, और शीहुण्डः" वज्रद्रुः, "उसी प्रकार वज्रः" स्नुक्, स्नुही, "वा स्नुहा, और भी स्नुहिः" गुड़ा, "और गुड़ी, उसी प्रकार–पुं॰ गुड़ः" समन्तदुग्धा, ये ६ वज्रद्रुम–वा सेंहुड़ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वेल्लं, अमोघा, "और भी मोघा" चित्रतण्डुला, ॥ २४ ॥ तण्डुलः, "और भी तन्तुलः, (तन्तुकमिसूत्रं लाति गृह्णातीति)" कृमिघ्नः, विडङ्गं; ये ६ विड़ङ्ग–वा वायुविड़ङ्ग के नाम हैं; वला, वाट्यालकः, ये २ वरिआर वा वरिअरा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; घण्टारवा, शणपुष्पिका, ये २ शन–वा शनई के नाम हैं; ॥ २५ ॥

दाख ।	स स स स १स मृद्विका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसे (ति च) ।
निसोत-वा श्वेत त्रिधारा ।	स स स स २स सर्व्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ॥ २६ ॥ स स त्रिभण्डी रोचनी
काला निसोत-वा त्रिधारा ।	स स स श्यामा-पालिन्ध्यौ (तु) सुषेणिका । स स स स काला मसूरविदला ऽर्द्धचन्द्रा कालमेषिका ॥ २७ ॥
जेठीमधु-वा मुलेठी ।	न न स स मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
काला गंगाफल ।	स स ३स स विदारी क्षीरशुक्ले क्षुगन्धा क्रोष्ट्री (च या सिता) ॥ २८ ॥
उजला गंगाफल ।	स ४स ५स (अन्या) क्षीरविदारी (स्यात्) महाश्वेत् र्क्षगंधिका ।
जलपीपरी ।	स स स स लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ॥ २९ ॥
मयूर शिखा-वा अजमोदा ।	स स पु पु पु खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ।

१—सा. २—त्. ३ इ—. ४—ता. ५ ऋ—.

मृद्विका, गोस्तनी, "वा गोस्तना" द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा, ये ५ द्राक्षा के—वा मुनक्का दाख के नाम हैं; सर्व्वानुभूतिः, सरला, "और भी सरणा, सरसा, और सवहा, कोई सुवहा पढ़ते हैं" त्रिपुटा, "और त्रिपुटी" त्रिवृता, त्रिवृत्, ॥ २६ ॥ त्रिभण्डी, रोचनी, "उसी प्रकार रेचनी" ये ७ त्रिवृता—वा श्वेत त्रिधारा—वा निसोत—वा उपविष—आदि नामों से कहे जाते हैं; श्यामा, पालिन्धी, "उसी प्रकार पालिन्दी" सुषेणिका, काला, मसूरविदला, अर्द्धचन्द्रा, कालमेषिका, ये ७ काले निसोत—वा श्याम त्रिधारा के नाम हैं; ॥ २७ ॥ मधुकं, क्लीतकं, यष्टिमधुका, "और भी यष्टी, और यष्टिमधुकं" मधुयष्टिका, ये ४ जेठी मधु के नाम हैं, "वा मुलेठी इस प्रसिद्ध के नाम हैं"; विदारी, क्षीरशुक्ला, इक्षुगन्धा, क्रोष्ट्री, ये ४ कृष्ण भूमिकुष्माण्ड के वा काले भूमिकुष्माण्ड के नाम हैं, ॥ २८ ॥ क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ये ३ उजले भूमिकुष्माण्ड वा उजले कोहंड़ा—वा गंगाफल के नाम हैं; लाङ्गली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी, ये ४ शाकभेद,—वा जलपीपरि इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २९ ॥ खराश्वा, कारवी, दीप्यः, "और भी दीपकः," मयूरः, लोचमस्तकः, "उसी प्रकार लोचमर्कटः" ये ५ मयूर-शिखा—वा अजमोदा के नाम हैं; ।

श्यामलता-वा काला शाम्व।	स स स १स २स गोपी श्यामा शारिवा (स्याद्) अनन्तो त्पलशारिवा ॥ ३० ॥
ऋद्धि।	न ३स स ४स योग्य मृद्धिः सिद्धि-लक्ष्म्यौ
ऋद्धिवाले।	५स वृद्धे (रप्या ह्वया इमे) ॥ ३१ ॥
	॥ अथ चतुर्थ प्रकरण ॥
केला।	स स स स ६स कदली वारणबुसा रम्भा मोचां शुमत्फला।
	स काष्ठीला
वनमूङ्ग।	स स ७स मुद्गपर्णी (तु) काकमुद्गा सहे (त्य पि) ॥ १ ॥
वैगन-वा वनभंटा।	स स स स स वार्त्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी।
रास्ना-वा रासन।	स स स स स नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ २ ॥

१ अ–. २ उ–. ३ ऋ–. ४ लक्ष्मी. ५ वृद्धि. ६ अं–. ७ सहा.

गोपी, "वा गोपा" श्यामा, शारिवा, "उसी प्रकार सारिवा" अनन्ता, उत्पलशारिवा, ये ५ करियाट–वा करिघट–वा गुलीरस वा श्याम लता–वा पीपरि वा शाम्व के नाम हैं; ॥ ३० ॥ योग्यं, ऋद्धिः, सिद्धिः, लक्ष्मीः, ये योग्य आदि ४ वृद्धेः अर्थात् वृद्धाख्य औषधी विशेष–वा लक्ष्मीः सम्पत्ति और शोभा के नाम हैं; "(वृद्धौषधौ च पद्मायां वृद्धिनामौषधेः पि च)" इमे अर्थात् ये योग्य आदि ४ वृद्धि नाम औषधी के नाम वाले हैं; ॥ ३१ ॥ इति तृतीय प्रकरण ॥ अथ चतुर्थ प्रकरणे ॥ कदली, "और भी पुं० कदलः, अजादि मान करटाप्–स्त्री· कदला" वारणबुसा, "उसी प्रकार वारणबुषा, कोई वारबुषा, पढ़ता है" रम्भा, मोचा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, ये ६ कदली के–वा केला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, ये ३ काकमुद्गा–वा मुडोनो–वा वनमूङ्ग इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १ ॥ वार्त्ताकी, "और भी वार्त्ता, वा वार्त्ताकुः, और पुं· वार्त्ताकः,–कु,–की, (–किन्.)" हिङ्गुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, "उसी प्रकार दुःप्रधर्षणी" ये ५ वार्त्ताकी–वा वनभण्टा के–वा वेङ्गन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, गन्धनाकुली, "वाजे पढ़ते हैं नागसुगन्धा", ॥ २ ॥

	स स स स नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा (च सा)।
सालपर्णी-वा सरिवन।	स १स स स स विदारीगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ३ ॥
कपास-वा रूई।	स स पुस २स तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरे (ति च)।
वनकपास-वा नर्मा।	स भारद्वाजी (तु सावन्या)
काकड़ासिंगी वा बैल-घांटी-वा ऋषभ।	स पु पु शृङ्गी (तु) ऋषभो वृषः ॥ ४ ॥
कंकही वा नागवला।	स स स स गाङ्गेरुकी नागवला झषा ह्रस्वगवेधुका।
श्वेत फूल की तुरई।	पु पु धामार्गवो घोषकः (स्यात्) स
पीले फूल की।	स स स महाजाली (स पीतकः) ॥ ५ ॥
चिचिंढ़ा।	ज्योत्स्नी पटोलिका जाली
भूमिजामुनि वा अम्बुवेतस।	स स नादेयी भूमिजम्बुका।
करिहारी।	३स ४स (स्याल्) लाङ्गलिक्य ग्निशिखा
कौआठोंठी वा काकजंघा।	स स काकाङ्गी काकनासिका ॥ ६ ॥

१ अं–. २–रा. ३–की. ४ अ–.

नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा, ये ४ रास्ना–वा रासन–वा लता विशेष के नाम हैं; और नाकुली, यह १ कुक्कुटीकन्द, सुरसा, यह १ स्वादुरस–वा तुलसी, रास्ना, यह १ लता विशेष का नाम है; विदारीगन्धा, "और भी विदारी, वा विदारिगन्धा" अंशुमती, सालपर्णी, "उसी प्रकार शालपर्णी" स्थिरा, ध्रुवा, ये ५ सालपर्णी–वा शालपर्णी, वा सरिवन के नाम हैं ॥ ३ ॥ तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी, "उसी प्रकार कर्पासी" वदरा, ये ४ कार्पासी, वा कपास इस प्रसिद्ध के नाम हैं, और वही कार्पासी बनैली है तो उसे भारद्वाजी कहते हैं; "और भी वनकार्पासः", (एकं) शृङ्गी, ऋषभः, वृषः, ये ३ ऋषभाख्य औषधि विशेष–वा बैल-घांटी इस प्रसिद्ध के–वा काकड़ासिंगी के नाम हैं, ऋषभ बैल के सींग के समान होता है, ॥ ४ ॥ गांगेरुकी, नागवला, झषा, ह्रस्वगवेधुका, ये ४ वला–वा नागवला–वा वला विशेष वा ककही इस प्रसिद्ध के नाम हैं; धामार्गवः, घोषकः, ये २ घोषवली–वा श्वेत तुरई–वा तुरई इस प्रसिद्ध के नाम हैं;–वा अपामार्ग के नाम हैं, घोषकः, यह १ वाद्यविशेष–वा अहीर के झोपड़ा का नाम है; यह घोषवली पीले फूल की है तो महाजाली कहलाती है; "बाजे पढ़ते हैं महाजाली (–लिन्); ॥ ५ ॥ ज्योत्स्नी, "और ज्योत्स्ना भी", पटोलिका, जाली, ये ३ तर्कारी वाले चिचिंढ़ा के नाम हैं; नादेयी, भूमिजम्बुका, ये २ भूजम्बू वा काशतृण विशेष-पुं॰ वेतसवृक्ष–वा नागरंग–वा अम्बुवेतस के नाम हैं, ये नदी में होने वाले त्रिलिंग हैं; लांगलिकी, अग्निशिखा, ये २ करिहारी इस प्रसिद्ध के–वा विष विशेष के नाम हैं; काकाङ्गी, काकनासिका, ये २ काकजंघा वा कौआठोंठी इस प्रसिद्ध के नाम हैं "(काकस्याङ्गं नासेव फलमुण्यं वा स्याः)" ॥ ६ ॥

हंसपदी।	स स गोधापदी (तु) सुवहा
मुसली।	स स मुसली तालमूलिका।
मेढ़ाशृङ्गी-वा सिंगा।	स स अजशृङ्गी विषाणी
गोभी।	स स (स्याद्) गोजिह्वा-दार्व्विके (समे) ॥ ७ ॥
पान-वा ताम्बूल।	स स १स ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्य् (ऽप्य्)
गगनधूरि-वा रेणुका।	स (ऽथ) द्विजा।
	२स स स स स हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ ८ ॥
मूसघर-वा एलुआ।	न ३न न न एलावालुक मैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम्।
	न वालुकं (चा)
पालकी।	स पु पु ४पुसन (ऽथ) पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्द-कुन्दुरु ॥ ९ ॥
नेत्र वाला।	न न न ५न वालं ह्रीवेर वर्हिष्ठा दीच्यं (केशाम्बुनाम च)।

१—वल्ली. २—णु. ३ ऐ—. ४—रू. ५ उ—.

गोधापदी, सुवहा, ये २ हंसपदी—वा रक्त लजालू के—वा करेमुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; मुसली, "और भी मुषली" तालमूलिका, ये २ मुसलीकन्द के—वा मुसली के नाम हैं; अजशृङ्गी, विषाणी, ये २ मेढ़ाशृङ्गी—वा सींग के नाम हैं; गोजिह्वा, दार्विका, "वा दर्व्विका" ये २ गोभी—वा जङ्गली गोभी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ७ ॥ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली, ये ३ नागवेलि—वा पान के नाम हैं; द्विजा, हरेणुः, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी, ये ६ हरेणुका—वा रेणुका के नाम हैं; ॥ ८ ॥ एलावालुकं, ऐलेयं, सुगंधि, हरिवालुकं, "उसी प्रकार हरिवालुकं" वालुकं, ये ५ मूसघर—वा हरिवालुक नाम गन्धद्रव्य—वा एलुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; पालङ्की, "और पालंक्या" मुकुन्दः, "और भी पुं॰—और स्त्री॰ मुकुन्दुः" कुन्दः, "वाजे कुन्दुः पढ़ते हैं" कुन्दुरुः, "उसी प्रकार कुन्दुरः" ये ४ पालकी के शाक—वा पोई के—वा कुन्दरु इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ९ ॥ वालं ह्रीवेरं, "और भी ह्रिवेरं" वर्हिष्ठं, "और भी वर्हिष्ठः", उदीच्यं, "और भी दिव्यं" केशाम्बुनाम, "उसी प्रकार केश और अम्बु" ये ५ नेत्रवाला—वाल —वा केश—वा ह्रीवेर इस प्रसिद्ध के नाम हैं;।

	न १न न २न
शिलाजित् ।	कालानुसार्य्य-वृद्धा-ऽश्मपुष्प-शीतशिवानि (तु) ॥ १० ॥
	न
	शैलेयं
	स स स स
तालीसपत्र ।	तालपर्णी (तु) दैत्या गंधकुटी मुरा ।
	स
	गन्धिनी
	स स स स
साल-वा सालई ।	गजभक्ष्या (तु) सुवहा सुरभी रसा ॥ ११ ॥
	स स स स
	महेरणा कुन्दुरुकी शल्लकी ह्लादिनी (ति च) ।
	स ३स स स
धवई वा आँवला ।	अग्निज्वाला-सुभिक्षे (तु) धातकी धातृपुष्पिका ॥ १२ ॥
	स ४स ५स स ६स
बड़ी इलायची ।	पृथ्वीका चन्द्रवालै ला निष्कुटि र्बहुला
	(ऽथ सा) ।
	७स स स स स
गुजराती इलायची	(सूक्ष्मा) पकुञ्चिका तुत्था कोरंगी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १३ ॥
	पु न न न न ८न
कूट ।	व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं व्याप्यं पाकल मुत्पलम् ।
	स स ६स
शंखकोड़ी ।	शङ्खिनी चोरपुष्पी (स्यात्) केशिन्य
	पु
अंवरी-वा भूमि-अंवला ।	(ऽथ) वितुन्नकः ॥ १४ ॥

१ वृद्धः २—व. ३—त्ता. ४—ला. ५ ए—. ६ ब—. ७ उ—. ८ उ—. ९—नी.

कालानुसार्य्यं, वृद्धं, अश्मपुष्पं, शीतशिवं, शैलेयं, ये ५ शैलेय—वा शिलाजित पत्थर के नाम हैं; ॥ १० ॥ तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी, ये ५ तालीसपत्र—वा मुरा—वा मरोरफली इस प्रसिद्ध के नाम हैं; गजभक्ष्या, "और गजभक्ता" सुवहा, सुरभी, "उसी प्रकार सुरभिः, वा सुरभी", रसा "और भी सुरभीरसा" ॥ ११ ॥ महेरणा, "उसी प्रकार महेरुणा" कुन्दुरुकी, शल्लकी, "और भी सल्लकी, वा सिल्लकी, और शिल्लकी" ह्लादिनी, "उसी प्रकार ह्रादिनी" ये ८ सालई—वा सालवृक्ष इस प्रसिद्ध के नाम हैं; अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातृपुष्पिका, "वा धातुपुष्पिका" ये ४ धातकी—वा धवई—वा धाय इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १२ ॥ पृथ्विका, चन्द्रवाला, एला, निष्कुटिः, "और निष्कुटी" वहुला, ये ५ एला—वा इलायची के, नाम हैं; उपकुंचिका, तुत्या, कोरंगी, त्रिपुटा, त्रुटिः, "वा त्रुटी" ये ५ गुजराती इलायची के नाम हैं; ॥ १३ ॥ व्याधिः, कुष्ठं, पारिभाव्यं, व्याप्यं, "और वाप्यं, वा आप्यं" पाकलं, उत्पलं, ये ५ कूटके नाम हैं, शंखिनी, चोरपुष्पी, केशिनी, ये ३ शंखकोड़ी—वा लाहुला—वा चोरवल्ली वा शंखाहुली इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वितुन्नकः ॥ १४ ॥

	स स स स स स झटाऽमलाऽज्झटा ताली शिवा तामलकी (ति च)
गुलाव-वा स्थल-कमल ।	न न प्रपौण्डरीकं पुण्डर्य्यं
तून-वा तूणी ।	पु पु (अथ) तुन्नः कुवेरकः ॥ १५ ॥
	पु पु पु पु कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षो
धनहरी ।	स (ऽथ) राक्षसी ।
	स स पु पु पु चण्डा धनहरी क्षेम-दुष्पत्र-गणहासकाः ॥ १६ ॥
नख नाम गन्धद्रव्य वा पवारी ।	न न न न व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।
पवारी ।	स स स १स स शुषिरा विद्रुमलता कपोतांघ्रि र्नटी नली ॥ १७ ॥
	स २स धमन्य ञ्जनकेशी (च)
ककून्दनि ।	स ३स हनु र्हट्टविलासिनी ।
	स पु पु न न शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नखं

१ न-. २ अं-. ३ ह-.

झटामला, "कोई झाटा, और मला और भी कोई झाटामला, पढ़ते हैं" अझटा, "उसी प्रकार अमलाज्झटा" ताली, शिवा, तामलकी, ये ६ भूमी अवँरी-वा अवँरा के नाम हैं; प्रपौण्डरीकं, पुण्डर्य्यं, "वा पौण्डर्य्यं" ये २ गुलाव-वा स्थलकमल-वा शालपर्णी के समान पत्ते वाले के नाम हैं; तुन्नः, कुवेरकः, ॥ १५ ॥ कुणिः, "और भी तुणिः" कच्छः, कान्तलकः, नन्दिवृक्षः, "वा नन्दीवृक्षः" ये ६ तुणी-वा तून-वा नन्दिवृक्ष-वा ये अश्वत्थ के आकार पत्र वाले के नाम हैं; राक्षसी, चण्डा, धनहरी, क्षेमः, दुष्पत्रः, गणहासकः, "उसी प्रकार गणाः" ये ६ चोराख्य गन्धद्रव्य-वा धनहरी के नाम हैं; ॥ १६ ॥ व्याडायुधं, "उसी प्रकार व्यालायुधं", व्याघ्रनखं, करजं, चक्रकारकं, ये ४ व्याघ्रनख नाम गन्धद्रव्य वा नखाख्य गन्धद्रव्य के नाम हैं; शुषिरा, विद्रुमलता, कपोतांघ्रिः, नटी, नली, ॥ १७ ॥ धमनी, "वा धमनिः" अञ्जनकेशी, ये ७ नली नाम गन्धद्रव्य-वा पवारी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; हनुः, हट्टविलासिनी, शुक्तिः, शंखः, खुरः, कोलदलं, नखं, "उसी प्रकार स्त्री. नखी" ये ७ ककून्दनि, वा नखाख्य गन्धद्रव्य-वा वेरी के तुल्य पत्र होने से कोलदलं कहते हैं;

अरहर-वा अर्ही वा तूर।	१स (अथ) ढक्की ॥ १८ ॥ स स स न न काची मृत्स्ना तुवरिका मृतालक-सुराष्ट्रजे।
मोथा वा गोया।	न न न न कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १९ ॥ न न न २न प्लव-गोपुर-गोनर्द्द-कैवर्त्तिमुस्तकानि (च)।
कुकरौंधा।	न न न न ३न ग्रन्थिपर्णं शुकं वर्हिपुष्पं स्थौणेय-कुक्कुरे ॥ २० ॥
अस्परक।	स स स स स स मरुन्माला (तु) पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः। स स स स समुद्रान्ता बधूः कोटिवर्षा लंकोपिके (त्यपि) ॥ २१ ॥
जटामासी।	स स स स स तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिसी।

१ आ-. २-क. ३-र.

आढ़की, ॥ १८ ॥ काची, मत्स्ना, तुवरिका, "और भी तूवरी, वा तूवरी, और तूवरिका, वा तूवरीका" मतालकं, "उसी प्रकार मत्तालकं, और मत् (-द) और तालकं" सुराष्ट्रजं, ये ६ अरहर वा रहर वा तुवरिका के-वा तूर-वा खरीमट्टी-वा अर्हो इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कुटन्नटं, दाशपुरं, "और भी दाशपूरं, और दशपुरं, वा दशपूरं" वानेयं, परिपेलवं, "वा कोई परिपेलं, वा पारिपेलं, पढ़ते हैं" ॥ १९ ॥ प्लवं, गोपुरं, गोनर्द्दं, कैवर्त्तीमुस्तकं, "उसी प्रकार कैवर्त्तमुस्तकं, वा कैवर्त्तीमुस्तकम्" ये ८ कैवर्त्तीमुस्तक-वा जलमोथा-वा नागरमोथा-वा छोटा मोथा-वा गोयाके नाम हैं; ग्रन्थिपर्णं, शुकं, वर्हिपुष्पं, "वा वर्हिः पुष्पं, और भी वर्हि (-न) और पुष्पं, उसी प्रकार वर्हं, और शुकवर्हं" स्थौणेयं, कुक्कुरं, ये ५ गठीवन-वा भटोरा-वा कुकरौंधा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २० ॥ मरुन्माला, "और भी मरुत्, और माला" पिशुना, स्पृक्का, "वा पृक्का" देवी, लता, लघुः, समुद्रान्ता, बधूः, कोटिवर्षा, "और भी कोटी, और वर्षा" लंकोपिका, "उसी प्रकार लंकापिका, और लंकायिका" ये १० पिण्डका-वा अस्परक-वा विड़ार-इन प्रसिद्ध शाक विशेष के नाम हैं; ॥ २१ ॥ तपस्विनी, जटामांसी, "और भी जटा, और मांसी" जटिला, लोमशा, मिसी, "वा मिशिः, मिषिः, और मिषी, मसिः, मषिः, मषी, और आमिषी, वा मसी" ये ५ जटामासी के नाम हैं;।

	न १न न न न न
दालचीनी-वा तज	त्वक्पत्र मुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ २२ ॥
	पु पु पु पु
कचूर ।	कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ॥ २३ ॥
	॥ अथ पञ्चम प्रकरण ॥
	स
अन्नमात्र ।	ओषध्यो (जातिमात्रेस्युर्) न
औषध ।	न (अजातौ सर्वम्) औषधम् ।
शाक-वा तर्कारी ।	शाकं (ख्यं पत्र पुष्पादि) पु पु
चौराई ।	(तण्डुलीयो ऽल्पमारिषः ॥ १ ॥
	स स स स २स
इन्द्रपुष्पी ।	विशल्या ऽग्निशिखा ऽनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ।
	स ३स ४स पु
विधारा ।	(स्याद्) ऋक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ॥ २ ॥
	पु
	जुङ्गो स स स स
ब्राह्मी-वा ब्योंटा ।	ब्राह्मी (तु) मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ।

१ उ-. २-र्प्पी. ३-न्त्री. ४ आ-.

त्वक्पत्रं, और भी त्वक् (-च्) और पत्रं, उत्कटं, भृंगं, त्वचं, चोचं, वराङ्गकम्, ये ६ त्वक्पत्र-वा दालचीनी-वा तज इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २२ ॥ कर्चूरकः, "उसी प्रकार कर्बूरकः" द्राविड़कः, काल्पकः, "वा काल्यकः" वेधमुख्यकः, ये ४ कचूर, इस प्रसिद्ध के-वा हरिद्राभ के नाम हैं, ॥ २३ ॥ इति चतुर्थ प्रकरण ॥ अथ पञ्चम प्रकरण ॥ ओषध्य इति, फल का पकना अन्त है जिन्हों के ऐसे व्रीही जव-आदिकों को जाति में ओषध्यः अर्थात् ओषधी शब्द का प्रयोग होता है, बहुवचन की विवक्षा में बहुवचन है नित्य नहीं है, जैसा कहा है कि, ओषधी को रोगहारित्वमात्र जान पड़ता है और कुछ नहीं, तब औषध शब्द का प्रयोग होता है, (क्योंकि ओषधी शब्द से ओषधेरजातौ-इस सूत्र से अण् प्रत्यय का विधान है) और केवल ओषधिरेव ओषधी शब्द वाच्या नहीं है, वरन रोगहरत्त्व से घृत-मधु-त्रिफला-के कढ़ा आदि को औषधत्त्व है, यह सर्व इस विशेषण से जानना चाहिये; और जो पत्र-फूल-आदि हैं वे शाक संज्ञक भोजन के उपयोगी फूल आ द हैं, और आदि पद से फल-पत्र-मूल-आदि का ग्रहण है, कहा भी है, "(मूलपत्रकरीराग्र फलकाण्डाधिरूढकं, त्वक् पुष्पं कवचं चैव शाकं दशविधं स्मृतम्)" इनमें करीर बांस का, अंखुआ है, काण्ड ईख का दण्ड-अधिरूढकं-यह बीजांकुर-कवचं-छत्राक है-और शेष प्रसिद्ध हैं; "ओषधिः, और ओषधी" ये २ अन्नों के नाम हैं, औषधम्, यह १ औषध मात्र का नाम है; शाकं, यह १ शाक-वा तर्कारीमात्र का नाम है; तण्डुलीयः, अल्पमारिषः, ये २ चौराई-वा तण्डुलजा-वा किनकी- वा नटिआशाक विशेष के नाम हैं; ॥ १ ॥ विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पिका, ये ५ अग्निशिखा वा इन्द्रपुष्पी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ऋक्षगन्धा, "वा ऋष्यगन्धा" छगलान्त्री, "वा छागलान्त्री, और भी छगला, और अंत्री" आवेगी, वृद्धदारकः, जुङ्ग, "उसी प्रकार स्त्री॰ जुङ्गा"; ये ५ वृद्धदारक-वा विधारा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २ ॥ ब्राह्मी, "वा ब्रह्मी" मत्स्याक्षी, वयस्था, "और वयःस्था" सोमवल्लरी, "और भी सोमवल्लरिः, और सोमवल्लिका, उसी प्रकार सोमलता, चन्द्रवल्लरी" ये ४ सोमलता-वा उजली दूब-वा ब्राह्मी-वा ब्योंटा के नाम हैं, "और जिसके शुक्ल पक्ष में पत्ते होकर कृष्ण पक्ष में गिर जाते हैं वह सोमवल्ली, और सोमवल्लरी भी कहलाती है"।

	स स स स
मकोय ।	पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥ ३ ॥
	स स स स
मूङ ।	हयपुच्छी (तु) काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
	स स स १स
कुन्दुरू ।	तुण्डिकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्ण्य् (ऽपि) ॥ ४ ॥
	स स स स स
बवई ।	वर्वरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पा ऽजगन्धिका ।
	स स स स
कोलिन्दण ।	एलापर्णी (तु) सुवहा रास्ना युक्तरसा (च सा) ॥ ५ ॥
	स स स स स
अम्लोना-वा अमलोलवा वा चूक।	चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठा ऽम्बष्ठा ऽम्ललोणिका ।
	२पु पु पु ३पु
अम्लवेतस ।	सहस्रवेधी चुक्रो ऽम्लवेतसः शतवेध्य् (ऽपि) ॥ ६ ॥
	स स स स
लजालू ।	नमस्कारी गण्डकाली समङ्गा खदिरी (त्यपि)
	स स स स स
जीवंती-वा डोड़ी।	जीवंती जीवनी जीवा जीवनीया मधु (श्च सा) ॥ ७ ॥
	पु पु पु पु पु
जीवक ।	कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्ग ह्रस्वांग जीवकाः ।
	पु पु पु
चिरायता ।	किराततिक्तो भूनिम्बो ऽनार्य्यतिक्तो
	स
सेंहुड़ के भेद ।	(ऽथ) सप्तला ॥ ८ ॥

१–र्णी. २–न. ३–न.

पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी, हिमावती, ये ४ स्वर्णक्षीरी–वा मकोय इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ३ ॥ हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, "वा मासपर्णी" महासहा, ये ४ माषपर्णी–वा मूङ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; तुण्डिकेरी, "वा तुण्डकेरी" रक्तफला, विंविका, पीलुपर्णी, ये ४ कुन्दुरू के नाम हैं; ॥ ४ ॥ वर्वरा, कवरी, तुंगी, खरपुष्पा, अजगन्धिका ये ५ वर्वरी–वा बवई इस प्रसिद्ध के नाम हैं; एलापर्णी, सुवहा; रास्ना, युक्तरसा, ये ४ एलापर्णी, वा कोलिन्दण इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ५ ॥ चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका, "वा अम्ललोलिका" ये ५ अम्ललोणिका–वा चूक–वा लोनिआ–वा अमलोलवा–इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सहस्रवेधी, चुक्रः, अम्लवेतसः, शतवेधी, ये ४ अम्लवेतस के नाम हैं, वा चांगेरी आदि ९ भी पर्य्याय हैं यह किसी का मत है–वा ये ९ लजालू के नाम हैं यह मुकुट का मत है; ॥ ६ ॥ नमस्कारी, गण्डकाली, "और भी गण्डकारी" समङ्गा, खदिरी, ये ४ लजालू इस प्रसिद्ध औषध वा हाताजोड़ी के नाम हैं; जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, "वा जीवना" मधुः, "और मधुस्रवा, और भी मधुस्रुवा, और स्रवा" ये ५ जीवन्ती–वा दोड़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ७ ॥ कूर्चशीर्षः, मधुरकः, शृङ्गः, ह्रस्वाङ्गः, जीवकः, ये ५ जीवक के–वा अष्ट वर्ग के भीतरी जीवक के नाम हैं; किराततिक्तः, भूनिम्बः, अनार्य्यतिक्तः, "उसी प्रकार चिरीतिक्तः, और चिरातिक्तः" ये ३ चिरायता के नाम हैं; सप्तला, ॥ ८ ॥

	स स स स विमला सातला भूरिफेना चर्मकषे (त्यपि)।
काकोली-वा ककोली।	स स स वायसोली स्वादुरसा वयस्था
इन्द्रदन्ती-वा दंतिआ-वा जयपाल।	पु (ऽथ) मकूलकः ॥ ९ ॥
	पु स १स २स निकुंभो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्यु दुम्बरपर्ण्य (ऽपि)।
अजवाइन।	स ३स स स अजमोदा (तू) ग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ॥ १० ॥
पुष्करमूल।	न न ४न (मूले) पुष्कर-काश्मीर-पद्मपत्राणि (पौष्करे)।
कपिला।	स स स स स अव्यथा ऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥ ११ ॥
कबीला।	पु पु ५पु पु स कांपिल्लः कर्कश श्चन्द्रो रक्तांगो रोचनी (त्यपि)
चक्रवंड़।	पु ६पु पु ७पु प्रपुन्नाड (स्त्वे) डगजो दद्रुघ्न श्चक्रमर्दकः ॥ १२ ॥
	पु पु पद्माट उरणाख्र (श्च)

१-णी. २ उ-. ३ उ-. ४-त्र. ५ चं-. ६ ए-. ७ च-.

विमना, सातला, "वा शातला" भूरिफेना, चर्मकषा, "और भी चर्मकसा" ये ५ सप्तला वा सेंहुड़ के भेद के नाम हैं; वायसोली, स्वादुरसा, वयस्था, "और भी कयस्था, वा कायस्था" ये ३ काकोली-वा ककोड़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; मकूलकः, "वा मुकूलकः" ॥ ९ ॥ निकुंभः, "उसी प्रकार निष्कुम्भः" दन्तिका, "वा दन्तिजा" प्रत्यक् श्रेणी, उदुम्बरपर्णी, ये ५ वज्रदन्ती-वा दंतिया इस प्रसिद्ध के नाम हैं, जिसका बीज जयपाल कहलाता है, वा जमालगोंटा के नाम हैं; अजमोदा, उग्रगन्धा, ये २ अजमोदा-वा अजवायन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ब्रह्मदर्भा, यवानिका, "वा यवानी, और भी यमानी, और यमानिका" ये २ यवानी, वा (ओंवा) वा अवाइन-वा ये ४ रो अजवाइन के नाम हैं; ॥ १० ॥ पुष्करं, काश्मीरं, पद्मपत्रं, "उसी प्रकार पद्मपर्णं" ये ३ पौष्कर मूल-वा पुष्कर मूल के नाम हैं; अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी, ये ५ स्थलकमलिनी-वा कपिला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ११ ॥ कांपिल्लः, "उसी प्रकार कंपिल्लः, वा कंपीलः, और भी कंपिलः, और कांपिल्यः", कर्कशः, चन्द्रः, रक्ताङ्गः, रोचनी, "उसी प्रकार रेचनी", ये ५ गुंडारोचनी-वा कपीला-वा कबीला के नाम हैं, प्रपुन्नाड़ः, "और प्रपुन्नड़ः, वा प्रपुनाड़ः" एड़गजः दद्रुघ्नः, चक्रमर्दकः, ॥ १२ ॥ पद्माटः, उरणाख्रः, "उसी प्रकार उरणाख्यः", ये ६ पुआर वा-पवाड़-(वाकला) वा चकवँड़ इस प्रसिद्ध के नाम हैं,

प्याज ।	पु पु पलाण्डु (स्तु) सुकन्दकः ।
हरा प्याज ।	पु पु लतार्क-दुद्रुमौ (तत्र हरिते)
लहशुन ।	न (ऽथ) महौषधम् ॥ १३ ॥
	न पु पु पु पु लशुनं गृञ्जना-ऽरिष्ट-महाकन्द-रसोनकाः ।
गदहपुन्ना ।	स स पुनर्नवा (तु) शोथघ्नी
बिसखरिआ ।	न न वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥ १४ ॥
पटुआ-वा पटशन ।	पु पु स १स (स्याद्) वातकः शीतलो ऽपराजिता ऽशनपर्ण्य (ऽपि) ।
मालकाकणी ।	स स स स स पारावतांघ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥ १५ ॥
चिरायता का फल ।	न स स स वार्षिकं त्रायमाणा (स्यात्) त्रायंती बलभद्रिका ।
वाराही-वा बिलाइ-कन्द ।	स स २स ३स विष्वक्सेनप्रिया गृष्टि र्वाराही वदरे (त्यपि) ॥ १६ ॥
भंगरैआ ।	पु पु मार्कवो भृंगराजः (स्यात्)
काकजंघा-वा काक-माची ।	स स काकमाची (तु) वायसी ।

१-र्णी. २ वा-. ३-रा.

पलाण्डुः, सुकन्दकः, "और भी सुकन्दुकः, वा मुकुन्दकः", ये २ पलांडू-वा कांदा-वा प्याज इस प्रसिद्ध के नाम हैं; लतार्कः, दुद्रुमः, "और भी दुर्द्रुमः" ये २ हरे पलाण्डु-वा कांदा-वा प्याज के नाम हैं; महौषधं, ॥ १३ ॥ लशुनं, "वा लशूनं" गृंजनः, अरिष्टः, महाकन्दः, रसोनकः, ये ६ लहशुन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; "(वा लहशुन और गृजन को स्वरूप के भेद से भी रसके एक होने से बहुत लोग अभेद मानते हैं)"; पुनरनवा, शोथघ्नी, ये २ गदहपुन्ना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वितुन्नं, सुनिषण्णकम्, ये २ बिसखरिआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १४ ॥ वातकः, शीतलः, "और भी शीतलवातकः, धन्वन्तरि ने कहा है" अपराजिता, अशनपर्णी, "उसी प्रकार शणपर्णी, असनपर्णी, वा आसनपर्णी भी" ये ४ पटुआ-वा पटशण इस प्रसिद्ध के नाम हैं; पारावतांघ्रिः, कटभी, पण्या, "और भी पिण्या" ज्योतिष्मती, लता, ये ५ ज्योतिष्मती-वा मालकाकणी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १५ ॥ वार्षिकं, त्रायमाणा, त्रायन्ती, बलभद्रिका, ये ४ त्रायमाणा-वा चिरायता का फल इस प्रसिद्ध के नाम हैं; विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टिः, "और भी घृष्टिः" वाराही, वदरा, ये ४ वाराहीकन्द-वा विलाईकन्द के नाम हैं; ॥ १६ ॥ मार्कवः, "उसी प्रकार मार्करः" भृंगराजः, "और भी भृंगराजा (-न्), और नपुं॰ भृंगराजः (-स्)", ये २ भृंगराज-वा भंगरैआ के नाम हैं; काकमाची, वायसी, ये २ काकजंघा-वा काकमाची-वा कौआहाड़ीगोड़ी-वा काकप्रिया इस प्रसिद्ध के नाम हैं।

सौंफ ।	स स स स स शतपुष्पा सितच्छत्रा ऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ॥ १७ ॥ स स अवाक्पुष्पी कारवी (च)
आकाशवेल-वा वंवरि-वा लता विशेष ।	स स सरणा (तु) प्रसारिणी । स स १स (तस्यां) कटंभरा राजवला भद्रवले (ति च) ॥ १८ ॥
चक्रवत ।	स स स २स ३स जनी जतूका रजनी जतुकृ चक्रवर्त्तिनी । स संस्पर्शा
कचूर विशेष वा अम्बाहल्दी ।	स स ४स (ऽथ) शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिके (त्यपि) ॥ १९ ॥ पु पु कर्वूरो (ऽपि) पलाशो
करेला ।	पु पु (ऽथ) कारवेल्लः कटिल्लकः । स सुषवी (चा)
परोरा-वा परवर ।	पु पु ५पु पु (ऽथ) कुलकं पटोल स्तित्तकः पटुः ॥ २० ॥
कोहंड़ा-वा गंगा फल ।	पु ६पु कुष्माण्डक (स्तु) कर्कारुः

१-ला. २-तृ. ३ च-. ४-का. ५ ति-. ६-रु.

शतपुष्पा, "वा सतपुष्पा" सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसिः, "और मिशिः वा मिषिः" ॥ १७ ॥ अवाक्पुष्पी, कारवी, ये ७ सौंफ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सरणा "और भी सरणी" प्रसारिणी, कटंभरा, राजवला, भद्रवला, ये ५ प्रसारिणी-वा कुब्जप्रसारिणी-वा आकाशवेल के नाम हैं; ॥ १८ ॥ जनी, "वा जनिः", जतूका, "उसी प्रकार जतुका" रजनी, "याने जननी, पढ़ते हैं" जतुकृत्, चक्रवर्त्तिनी, संस्पर्शा ये ६ चक्रवर्त्तिनी,-वा चक्रवँत् के नाम हैं; शटी, "और सटी, वा षटी", गन्धमूली, "उसी प्रकार गन्धमूला, वा गन्धशटी" षड्ग्रन्थिका, ॥ १९ ॥ कर्वूरः, "कोई कर्वुरः, वा कर्चूरः, पढ़ते हैं", पलाशः, ये ५ कचूर विशेष वा अम्बाहल्दी के नाम हैं; कारवेल्लः, कटिल्लकः, "वा कठिल्लकः", सुषवी "और सुसवी, वा सुशवी" ये ३ करैला के नाम हैं; कुलकं, "और कूलकं भी" पटोलः. तित्तकः, पटुः, ये (पटोल-वा पटवल-) वा परोरा वा परवर इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २० ॥ कुष्माण्डकः, "वा कूष्माण्डकः" कर्कारुः, ये २ कुष्माण्ड-वा कोहँड़ा-वा गंगाफल के नाम हैं;

काकड़ी-वा कँकरी	इर्वारुः कर्कटी (स्त्रियौ) ।
करुई लौकी-वा तुम्बी	इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी (स्यात्) ।
लौकी ।	तुंब्य् लाबू (रुभे समे) ॥ २१ ॥
जेठऊ कँकरी ।	चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा ।
इन्द्रवारुणी वा इनराइन ।	विशाला (त्वि) न्द्रवारुणी ।
सूरन-वा जिमीकन्द।	अर्शोघ्नः शूरणः कन्दो
गांड़रि-वा गंड़री ।	गण्डीर (स्तु) समष्ठिला ॥ २२ ॥
करेमुआ वा कलम्बी आदि ५ शाक के भेद हैं ।	कलंब्यु पोदिका (स्त्री तु) मूलकं हिलमोचिका ।
	वास्तूकं (शाकभेदाः स्युर्)
दूर्व्वा-वा दूब ।	दूर्व्वा (तु) शतपर्व्विका ॥ २३ ॥
	सहस्रवीर्य्या-भार्गव्यो रुहा ऽनन्ता
उजली दूब ।	(ऽथ सा सिता) ।

१ इ—. २—वी. ३ आ—.

इर्वारुः, "और भी ईर्वारुः, ईर्वालुः, उर्वारुः, और एर्वारुः", कर्कटी, "उसी प्रकार कर्कटिः" ये २ काँकड़ी—वा कँकरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; इक्ष्वाकुः, कटुतुम्बी, ये २ कटुतुम्बी—वा कड़ुई लौकी के नाम हैं; तुम्बी, वा तुम्बिः, अलाबूः, "और भी अलाबुः, आलाबुः, और लाबुः" ये २ लौकी के नाम हैं; ॥ २१ ॥ चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा, ये ३ जेठऊ कँकरी के नाम हैं; विशाला, इन्द्रवारुणी, ये २ इन्द्रवारुणी—वा इनरायन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; अर्शोघ्नः, शूरणः, "और भी सूरणः" कन्दः, ये ३ सूरण—वा जिमीकन्द—के नाम हैं; गण्डीरः, समष्ठिला, ये २ गाँड़रि—वा गँड़री के शाक के नाम हैं; ॥ २२ ॥ कलम्बी आदि ५ एकेक शाक के भेद हैं; जैसे, कलम्बी, "और भी कलंबूः, और कलंबः" यह १ करेमुआ के शाक के नाम है, (एकं); उपोदिका, "और भी उपोदकी, उत्पादिका, और अपोदिका, उसी प्रकार पोतकी, पोतिका, और पूतिका", यह १ पोई का नाम है, (एकं), मूलकं, यह १ मूली—वा मुरई इस प्रसिद्ध का नाम है, (एकं) हिलमोचिका, यह १ हिलसा का नाम है; (एकं), वास्तूकं, "वा वास्तुकं" यह १ बथुआ—वा बुथुई का नाम है, (एकं), दूर्व्वा, शतपर्व्विका, "और शतपर्णिका" ॥ २३ ॥ सहस्रवीर्य्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता, ये ६ दूर्व्वा के वा—दूब के नाम हैं; ।

	स स स पु
	गोलोमी शतवीर्य्या (च) गण्डाली शकुलाक्षक: ॥ २४ ॥
	पु पु स पुन
मोथा ।	कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तक (मस्त्रियाम्) ।
	पु स
नागरमोथा ।	(स्याद्) भद्रमुस्तको गुन्द्रा
	स स १स
मोथा विशेष ।	चूडाला चक्रलो च्चटा ॥ २५ ॥
	पु पु पु पु पु
बांस ।	वंशे त्वक्सार-कर्मार-त्वचिसार-तृणध्वजा: ।
	२पु- पु पु पु पु
	शतपर्वा यवफलो वेणु-मस्कर-तेजना: ॥ २६ ॥
	पु
बांस जो पवन से बजते हैं ।	(वेणव:) कीचका (स्ते स्युर्ये स्वनन्त्य निलोद्धता:) ।
	पु ३न न
गांठि वा पोर ।	ग्रन्थि (र्ना) पर्व्व-परुषी
	पु ४पु पु
सरकंडा-वा सरई ।	गुन्द्र स्तेजनक: शर: ॥ २७ ॥
	पु पु पु
नरकुल-वा नरई ।	नड (स्तु) धमन: पोटगलो
	पुन
काश ।	(ऽथो) काश (मस्त्रियाम्) ।
	स पु
	इक्षुगंधा पोटगल:
	पु
बगई-वा बेद ।	(पुंसि भूम्नि तु) वल्वजा: ॥ २८ ॥

१—उ. २—र्वन्. ३—न्. ४ ते—.

गोलोमी, शतवीर्य्या, गण्डाली, शकुलाक्षक:, ये ४ उजली दूर्व्वा—वा दूब इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २४ ॥ कुरुविन्द:, मेघनामा, मुस्ता, मुस्तकं, ये ४ मोथा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; भद्रमुस्तक:, "और भद्रं भी" गुन्द्रा, ये २ नागरमोथा के नाम हैं; चूडाला, चक्रला, "और भी शुक्ला" उच्चटा, ये ३ मोथा विशेष के नाम हैं; ॥ २५ ॥ वंश:, त्वक्सार:, कर्मार:, त्वचिसार:, तृणध्वज:, शतपर्व्वा, यवफल:, वेणु:, मस्कर:, तेजन:, ये १० बांस के नाम हैं, ॥ २६ ॥ और जो बांस पवन से भकोरे और कीडों के किये छेदों में गये वायु से शब्द कर्त्ते हैं वे कीचका:, "एक वचन कीचक:" कहलाते हैं; ग्रन्थि:, पर्व, परु:, "वा परु, (स्), और भी पुं० परु:, (परु)" ये ३ बांस आदि के गांठि—वा पोर के नाम हैं; गुन्द्र:, तेजनक:, शर:, "वा सर:" ये ३ शर—वा तीर—वा सरहरी— वा सरई—वा सरकण्डा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ २७ ॥ नड:, "और नल:" धमन:, पोटगल:, ये ३ नरई—वा नरकुल के नाम हैं; काशं, "वा कास:, और भी स्त्री. काशी, वा काशा", इक्षुगन्धा, पोटगल:, ये ३ काश के नाम हैं; वल्वजा:, "उसी प्रकार एक व० वल्वज:" यह १ बगई वा बेद का नाम है, (वल्वजा: यह १ पुल्लिंग बहुवचनान्त है), ॥ २८ ॥

	पु १पु
ऊख-वा ईख ।	रसाल इक्षुस्
पौंढ़ा१कालापौंढा२।	पु पु (तद्भेदाः) पुण्ड्र कान्तारका (दयः)
	न
गांड़र ।	(स्याद्) वीरणं वीरतरं २पुन
गांडर की जड़-वा खस-खस ।	(मूलेऽस्यो) शीर (मस्त्रियाम्) ॥ २९ ॥
	न न ३न न न
	अभयं नलदं सेव्य मंमृणालं जलाशयम् ।
	न न ४न ५न
	लामज्जकं लघुलय मवदाहे ष्टकापथे ॥ ३० ॥
	न ६स ७पु
तृण ।	(नलादयस्) तृणं (गर्मु च्छ्यामाकप्रमुखा अपि) ।
	पुन पु पु न
डाभ-वा कुश ।	(अस्त्री) कुशं कुथो दर्भः पवित्रं न
रोहिस-वा सुगंधतृण ।	(अथ) कत्तृणम् ॥ ३१ ॥
	न न न न न
	पौर सौगन्धिकं ध्याम देवजग्धक रौहिषम् ।
	स पु पु
पानी के तृण-वा खर ।	छत्रा ऽतिच्छत्र-पालघ्नौ न न
तृण-वा खर विशेष ।	मालातृणक-भूस्तृणे ॥ ३२ ॥
	न न
नये तृण-वा खर ।	शष्पं बालतृणं पु पुन
घास ।	घासो यवसस्

१ इक्षु. २ उ—. ३ सेव्य. ४ अ—. ५ इ—. ६—तृ. ७ श्या—.

रसालः, इक्षुः, ये २ ऊख—वा ईख इस प्रसिद्ध के नाम हैं; इसके भेद ये हैं, पुंड्रः, "वा पौंड्रः" यह १ पौंढा का नाम है; कान्तारकः, यह १ केतारा—वा कालागन्ना इस प्रसिद्ध का नाम है; ये आदि ईख के भेद हैं; वीरणं, वीरतरं, ये २ गाँड़र के नाम हैं; उशीरं, "और उषीरं" यह १ स्त्री लिङ्ग नहीं है, ॥ २९ ॥ अभयं, नलदं, सेव्यं, अमृणालं, "और मृणालं" जलाशयं, लामज्जकं, लघुलयं, "और भी लघु, और लयं" अवदाहं, "और अवदानं भी" इष्टकापथं, उसी प्रकार इष्टं, और कापथं, ये १० गाँड़र के जड़—वा खसखस के नाम हैं, ॥ ३० ॥ नलादयः "वा नड़ादयः" तृणं, अर्थात् तृण की जाति हैं; और जो गर्मुत्—श्यामाक—प्रमुख हैं वे गर्मुत् और श्यामाक तृणधान्य विशेष हैं, प्रमुख शब्द से वक्ष्यमाण कुश आदि, कंगुः, वा ककुनी—कोद्रवः, वा कोदव—आदि भी हैं वे भी तृण जातीय हैं, "यहां प्रमुख शब्द से नीवार आदि मुनि अन्न ग्रहण करने चाहियें और नहीं तो कोदव आदि को हविष्यत्व हो जायगा" कुशं, कुथः, दर्भः, पवित्रं, ये ४ डाभ—वा कुश इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कत्तृणं, ॥ ३१ ॥ पौरं, सौगन्धिकं, ध्यामं, देवजग्धकं, रौहिषं, ये ६ रोहिस—वा सुगन्धतृण—वा तृण विशेष के नाम हैं; छत्रा, अतिछत्रः, पालघ्नः, "(पालं क्षेत्रं हन्तीति पालघ्नः)" मालातृणं, "(मालाकाराणि तृणान्यस्य)" भूस्तृणं, ये ५ पानी के खरके—वा प्रथम २ जलतृण— और तृण विशेष के नाम हैं; ॥ ३२ ॥ शष्पं, "और शस्यं" बालतृणं, ये २ नये खर—वा कोमल तृण के नाम हैं; घासः, जवसं, "और जवसः, ये २ गैया आदि के खाने की घास के नाम हैं;

न १न
तृणमात्र । — तृणं मर्ज्जुनम् ।

स
खरही-वा घूर । — (तृणानां संहतिस्) तृण्या

स
नरई आदिका बटोर। — नड्या (तु नड़संहतिः) ॥ ३३ ॥

२पु पु
तार-ताड़-वा ताल । — तृणराजा (ह्वयस्)-तालो

पु स
नारियर । — नारिकेर-(स्तु) लांगली ।

स पु पु पु पु
सोपारी । — घोण्टा (तु) पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरो

सोपारी का फल । — (ऽस्य तु ॥ ३४ ॥

न
फलम्) उद्वेगम्

पु
(एते च) हिन्ताल (सहितास्त्रयः) ।

पु
खजूर । — खर्ज्जूरः

पुस
कैत । — केतकी

स
तालभेद । — ताली

स
खजूरभेद । — खर्ज्जूरी (च)

पु
तृणद्रुमाः ॥ ३५ ॥

॥ इति वनौपधीवर्गः ॥

---

१ अ—. २—ज.

तृणं, अर्ज्जुनम्, ये २ तृण—वा खर मात्र के नाम हैं; तृण्या, यह १ तृण के समूह—वा खरही वा घूर इस प्रसिद्ध का नाम है; नड्या, यह १ नड़ों के समूह—वा नरई आदि के बटोर का नाम है; ॥ ३३ ॥ तृणराजः, तालः, "उसी प्रकार तलः" ये २ ताल—वा ताड़ वृक्ष के नाम हैं; नारिकेरः. "और नारिकेलः, नाड़िकेलः, नारीकेलः, आदि, और भी स्त्री॰ नारिकेली:, वा नारिकेलिः आदि" लांगली, "उसी प्रकार पुं॰ लांगली (—न्), ये २ नारिकेर—वा नारियर के नाम हैं; घोंटा, पूगः, क्रमुकः, गुवाकः, 'और गूवाकः" खपुरः, ये ५ सोपारी के नाम हैं; ॥ ३४ ॥ उद्वेगम्, यह १ सोपारी के फल का नाम है; ये ताल—नारिकेर—पूग ३ हिंतालः, "और भी हीन्तालः" यह ताल का भेद है और वह तो अल्पप्रमाण का है उसके सहित ये सब ४ हैं, और खर्ज्जूर आदि ४ इस प्रकार ये ८ तृणद्रुमाः, "और एक व॰ तृणद्रुमः" कहलाते हैं, (एकं) तिनमें खर्ज्जूरः, यह खजूर प्रसिद्ध है; केतकी, "और पुं॰ केतकः" यह कैत प्रसिद्ध है, इसी प्रकार ताली, वा ताड़िः, वा ताड़ी, और तालिः यह ताल का भेद है, खर्ज्जूरी, यह खजूर का भेद है; ॥ ३५ ॥ ॥ इति वनौपधीवर्गः ॥

॥ अथ पञ्चम वर्गः ॥

सिंह ।	पु पु पु पु १पु पु सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्य्यक्षः केसरी हरिः ।
बाघ ।	पु २पु पु शार्दूल-द्वीपिनौ व्याघ्रे
चीता ।	पु पु तरक्षु-(स्तु) मृगादनः ॥ १ ॥
शूअर ।	पु पु पु पु ३पु पु पु वराहः शूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरः किटिः ।
	४पु ५पु ६पु पु पु दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोड़ो भूदार (इत्यपि) ॥ २ ॥
बांनर-वा बंदर ।	पु पु पु पु ७पु कपि-प्लवङ्ग-प्लवग-शाखामृग- वलीमुखाः ।
	पु पु पु ८पु मर्कटो वानरः कीशो वनौका
भालू-वा रीछ ।	पु (अथ) भल्लुके ॥ ३ ॥
	पु पु ९पु ऋक्षा ऽच्छभल्ल भाल्लूका
गँयड़ा-वा गैंडा ।	पु पु पु गण्डके खड्ग-खड्गिनौ ।

१—न. २—न. ३—न. ४—न. ५—न. ६—न. ७—ख. ८—कस. ९—क.

सिंहः, मगेन्द्रः, पञ्चास्यः, हर्य्यक्षः, केसरी, "और भी केशरी,(—रिन्)" हरिः, "कण्ठीरवः, मगरिपुः, मगदृष्टिः, मगाशनः" ये ६ सिंह के नाम हैं, "(पंचं विस्तृतमास्यमस्य पंचास्यः)" शार्दूलः, द्वीपी, व्याघ्रः, ये ३ व्याघ्र के—वा बाघ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तरक्षुः, "और भी तरक्षः" मगादनः, ये २ कुक्कुर के आकार और काली रेखा से चित्रित किये मग विशेष के नाम हैं, वा चीता इस प्रसिद्ध के, नाम हैं ॥ १ ॥ वराहः, शूकरः, "उसी प्रकार सूकरः" घृष्टिः, "और गृष्टिः" कोलः, पोत्री, किरः, "और किरिः, स्त्री० किर्याणी", किटिः, दंष्ट्री, घोणी, स्तब्धरोमा, क्रोड़ः, भूदारः, ये १२ सूअर के नाम हैं, ॥ २ ॥ कपिः, प्लवंगः, प्लवगः, "और भी प्लवंगमः, और प्रवंगः, वा प्रवगः", बाजे प्रवंगमः, पढ़ते हैं, शाखामगः, वलीमुखः, "उसी प्रकार वलिमुखः, मर्कटः, वानरः, कीशः, वनौकाः, ये ९ वानर के नाम हैं, (शाखाचारीमगः शाखामगः) भल्लुकः, ॥ ३ ॥ ऋक्षः, अच्छभल्लः, भाल्लूकः, "उसी प्रकार अच्छः, और भल्लः", 'भल्लूकः, भल्लुकः, और भी भाल्लुकः", ये ४ भालू वा रीछ के नाम हैं, गंडकः, खड्गः, खड्गी, ये ३ गैंड़ा के नाम हैं, ।

	पु पु १पु २पु पु
भैंसा।	लुलापो महिषो वाहद्विष-त्कासर-सैरिभाः ॥ ४ ॥
	स पु पु पु
भेड़िआ वा सिआर	(स्त्रियाम्) शिवा भूरिमाय-गोमायु-मृगधूर्त्तकाः।
	पु पु पु पु पु पु
	शृगाल-वञ्चक-क्रोष्टु-फेरु-फेरव-जम्बुकाः ॥ ५ ॥
	पु ३पु पु पु ४पु
बिलार।	ओतु विडालो मार्ज्जारो वृषदंशक आखुभुक्।
	पु पु ५पु ६पु
गोहका बच्चा।	(त्रयो) गौधेर गौधार गौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥
	७पु ८पु
साही।	श्वावित् (तु) शल्यस्
	स न न
साही का रोम।	(तल्लोम्नि) शलली शललं शलम्।
	पु ९पु
मृग विशेष।	वातप्रमी र्वातमृगः
	पु पु पु
भेड़िया वा वीग।	कोक ईहामृगो वृकः ॥ ७ ॥
	पु पु पु १०पु ११पु
हरिण।	मृगे कुरङ्ग-वातायु-हरिणा-ऽजिनयोनयः।
	पुसन
हरिण के चाम आदि।	ऐणेयम् (एण्य,श्चर्माद्यम्)
	पुसन
हरिण के चाम आदि।	(एणस्य) ऐणम् (उभे त्रिषु) ॥ ८ ॥
	स स पु १२पु १३पु
हरिण के भेद।	कदली कन्दली चीन श्चमूरु-प्रियका (व्पि)।

१—त्. २ का—. ३ वि—. ४—ज्. ५—य. ६—ज. ७—ध्. ८ शल्य.
९ वा—. १०—णा. ११—नि. १२ च—. १३—क.

लुलापः, और "लुनायः" महिपः, "स्त्री. महिषी", वाहद्विपत्, कासरः, सैरिभः, ये ५ भैंसा के नाम हैं, ॥ ४ ॥ शिवाः, भूरिमायः, गोमायुः, मृगधूर्त्तकः, शृगालः, "वा सृगालः", वंचकः, क्रोष्टा, फेरुः, फेरवः, जंबुकः, "स्त्री. क्रोष्ट्री, और भी जंबूकः" ये १० भेंड़िया वा सिआर के नाम हैं, ॥ ५ ॥ ओतुः, विड़ालः, "और भी विरालः वा बिलालः" मार्जारः, वृषदंशकः, आखुभुक्, ये ५ बिल्ली के नाम हैं; गौधेरः, गौधारः, गौधेयः, ये ३ गोधिका के बच्चे—वा चन्दनगोह वा बिसखोपड़ा के नाम हैं—॥ ६ ॥ श्वावित्, शल्यः, ये २ साही इस प्रसिद्ध के नाम हैं (श्वानं विध्यति लोम्ना इति श्वाधित्) श्वाविधा, श्वाविधः, शलली, शललं, शलं, ये ३ उस साही के लोम के नाम हैं, वातप्रमीः, "स्त्री. वातप्रमीः, और वातप्रमी" वातमृगः, ये २ जल्द चलने वाले हरिण के नाम हैं, कोकः, ईहामृगः, वृकः, ये ३ भेड़िआ—वा वीग—वा हुंड़ार के नाम हैं, ॥ ७ ॥ मृगः, कुरंगः, वातायुः, "वा वानायुः, वनायुः" हरिणः, अजिनयोनिः, ये ५ हरिण के नाम हैं, हरिणों के चाम और मांस आदि को ऐणेयं कहते हैं, (एकं) हरिण के चाम आदि को ऐणं कहते हैं, (एकं) ये २ ऐणेयं और ऐणं तीनो लिङ्ग हैं, ॥ ८ ॥ कदली, कन्दली, चीनः, चमूरुः, प्रियकः, ।

	पु समूरु (श्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः) ॥ ९ ॥
काले मृग वा ये भी हरिण के भेद हैं।	पु पु पु पु पु १पु कृष्णसार-रुरु-न्यङ्कु-रङ्कु-शम्बर-रौहिषाः । पु पु २पु पु पु पु गोकर्ण-पृषतै-ण-र्श्य-रोहिता श्चमरो (मृगाः) ॥ १० ॥
मृग के वा हरिण के भेद ।	पु पु पु पु पु पु गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।
पशु जाति ।	पु (इत्या दयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः) पशु (जातयः) ॥ ११ ॥
मूस-वा चूहा ।	पु पु ३पु उन्दुरु मूंषिको (प्या) खुरु
छोटे जाति के ।	स स गिरिका वालमूषिका ।
गिरगिट ।	पु पु सरटः कृकलासः (स्यात्)
छिपकली-वा बिस्तुइआ ।	स स मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥
मकरी वा—ड़ी ।	स पु ४पु पु लूता (स्त्री) तंतुवायो-र्णनाभ-मर्कटकाः (समाः) ।

१—प. २ एण. ३ आखु. ४ ऊ—.

समूरुः, ये ९ हरिण के भेद हैं, (एकैकं), ये ९ हरिण और वक्ष्यमाण कृष्णसार आदि अजिनयोनयः कहलाते हैं, जिसलिये कि ये चाम में उपकारी हैं, ॥ ९ ॥ कृष्णसारः, "वा कृष्णशारः" रुरुः, न्यंकुः, रंकुः, शंवरः, "और भी शम्बरः, संबरः", रौहिषः, "और रोहिद्, (—प्)" गोकर्णः, पृषतः, "और पृषत्, स्त्री. पृषती" एणः, ऋश्यः, "और भी ऋष्यः और रिष्यः" रोहितः, "रोहित्, लोहितः" चमरः, ये १२ मृग के भेद हैं, (एकैकं), ॥ १० ॥ गन्धर्वः, शरभः, रामः, सृमरः, गवयः, शशः, ये ६ हरिण के भेद के नाम हैं, "सरभः, भी" इन में गन्धर्वः यह गन्धविशिष्ट है, शरभः लड़ीसरा—वा वानर विशेष यह प्रसिद्ध है, रामः रमणीय रूप मृग का भेद है, सृमरः, भागनेवाला है, गवयः नीलगाह वा वनगैया है, शशः शसा वा खरहा है, (एकैकं), इस आदि और गंधर्व आदि और आदि शब्द से जो यहां नहीं कहे गये हैं वनयोनयः आदि और जो पूर्व कहे मृगेन्द्र आदि सिंह आदि चमर अन्त हैं, और जो वर्गान्तर में वक्ष्यमाण गवय आदि गो हस्ती आदि हैं वे सब पशुजाति हैं वा पशु शब्द वाच्य हैं, (एकं), ॥ ११ ॥ उन्दुरुः, मूषिकः, "और भी उन्दरुः, उसी प्रकार मूषकः, और मूषी" आखुः, ये ३ मूस—वा चूहे के नाम हैं, गिरिका, वालमूषिका, ये २ छोटे जाति के वा मूसों के नाम हैं, सरटः, कृकलासः, "और भी सरद्, और शरटः, कृकलाशः, वा कृकुलासः" ये २ गिर्गिट के नाम हैं, मुसली, गृहगोधिका, "और मुषली, वा मुशली, "उसी प्रकार गृहगोलिका, गृहगोधा, गृहालिका" ये २ छोटी छिपकली, वा गिर्गिट के नाम हैं, ॥ १२ ॥ लूता, तन्तुवायः, "और भी तंत्रवायः" ऊर्णनाभः, "वा ऊर्णनाभिः" मर्कटकः, ये ४ मकरी वा मकड़ी के नाम हैं।

	पु पु
छोटे कीड़े ।	नीलङ्गु (स्तु) कृमि: स १स
कनखजूरा-वा गोजर ।	कर्णजलौका: शतपद्यु (भे) ॥ १३ ॥
	पु पु
केंचुआ ।	वृश्चिक: शूककीट: (स्याद्) पु पु पु
विच्छू-वा वीछी ।	अलि-द्रुणौ (तु) वृश्चिके ।
	पु पु पु
कबूतर ।	पारावत: कलरव: कपोतो पु
बाज ।	(ऽथ) शशादन: ॥ १४ ॥
	२पु पु
	पत्री श्येन पु पु पु
उल्लू ।	उलूके (तू) वायसाराति-पेचकौ ।
	पु पु
भरदूल-वा लवा ।	व्याघाट: (स्याद्) भरद्वाज:
	पु पु
खंड़रिच ।	खञ्जरीट (स्तु) खञ्जन: ॥ १५ ॥
	पु पु
उजली चील्ह ।	लोहपृष्ठ (स्तु) कंक: (स्याद्) पु पु
नीलकंठ ।	(ऽथ) चाष: किकीदिवि: ।
	पु पु ३पु
भूचेंडा ।	कलिङ्ग भृङ्ग धूम्याटा ४पु
कठफोरवा ।	(ऽथ स्याच्) छतपत्रक: ॥ १६ ॥
	पु
	दार्वाघाटो पु पु ५पु
चातक ।	(ऽथ) सारंग स्तोकक श्चातक: (समा:) ।

१–दी. २–न्. ३–ट. ४ श–. ५ चा–.

नीलंगु:, कृमि:, "उसी प्रकार नीलांगु:, और भी क्रिमि:" ये २ छोटे कीड़े के नाम हैं, कर्णजलौका: "और भी कर्णजलौका:, (–कस्)" शतपदी, ये २ कनखजूरा वा गोजर के नाम हैं, ॥ १३ ॥ वृश्चिक:, शूककीट:, ये २ केंचुआ के नाम हैं, अलि:, "वा अली (–न्) और भी आलि:, और आली", द्रुण:, "वा द्रोण:" वृश्चिक:, ये ३ वीछी वा विच्छू के नाम हैं, इन में आलि: इदन्त और इवन्त भी है; पारावत:, "उसी प्रकार पारापत:", कलरव:, कपोत:, ये ३ कबूतर वा वन्यकबूतर के नाम हैं, शशादन:, ॥ १४ ॥ पत्री, श्येन:, ये ३ बाज इस प्रसिद्ध के नाम हैं; उलूक:, "और भी ऊलूक:" वायसाराति:, पेचक:, ये ३ उल्लू के वा घुग्घू के नाम हैं, "दिवांध:, कौशिक:, घूक:, दिवाभीत:, निशाटन:, ये भी ५ उल्लू के नाम हैं", व्याघाट: भरद्वाज:, "उसी प्रकार भारद्वाज:", ये २ लवा–वा भरदूल इस प्रसिद्ध के नाम हैं; खंजरीट:, खंजन:, ये २ चलते पूंछ वाले वा खंड़रिच के नाम हैं, ॥ १५ ॥ लोहपृष्ट:, कंक:, ये २ बाण के उपयोगी पत्रवाले पक्षि भेद के वा उजरी चील्ह–वा कंक:यह १ युधिष्ठिर का नाम है; चाप:, "वा चाष:" किकीदिवि:, "उसी प्रकार किकिदीवि:, किकीदीवि:, और किकिदिवि:, वा किकीदिव:, आदि और भी किकि:, और दिवि:, उसी प्रकार कीकि:, वा दीवि:, ये २ नीलकंठ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कलिंग:, भृंग:, धूम्याट:"(धूमसमूह इवाटतीति धूम्याट:)" ये ३ भूचेंडा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; शतपत्रक:, ॥ १६ ॥ दार्वाघाट:, ये २ कठफोरा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सारंग:, "वा शारंग:" स्तोकक:, "और स्तोक:" चातक:, ये ३ चातक पक्षी के नाम हैं ।

	पु १पु पु २पु
मुर्गा ।	कृकवाकु स्ताम्रचूडः कुक्कुट श्चरणायुधः ॥ १७ ॥
	पु पु
गंवरैया-वा गंवरा।	चटकः कलविंकः (स्यात्) स
गंवरी ।	(तस्यस्त्री) चटका
इनका बच्चा ।	पु (तयोः ।
	पुमपत्ये) चाटकैरः ३स
इनकी बच्ची ।	पुस पुस (स्त्र्यपत्ये) चटके (व हि) ॥ १८ ॥
देशान्तरीयसारस।	कर्करेटुः करेटुः (स्यात्) पु ४पु
तीतरविशेष ।	पु पु पु पु कृकण-क्रकरौ (समौ)।
कोकिला-वा कोयल ।	वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक (इत्यपि) ॥ १९ ॥
	५पु पु पु पु ६पु
कौआ ।	काके (तु) करटा-ऽरिष्ट-वलिपुष्ट-सकृत्प्रजाः ।
	पु ७पु ८पु ९पु १०पु
	ध्वांक्षा-त्मघोष-परभृ-द्बलिभु-ग्वायसा (अपि) ॥ २० ॥
	पु पु
डोम कौआ ।	द्रोणकाक (स्तु) काकोलो पु पु
काला कौआ ।	दात्यूहः कालकण्ठकः ।
	पु ११पु
चील्ह ।	आतायि-पिल्लौ पु १२पु
गीध ।	दाक्षाय्य-गृध्रौ पु १३पु
शुआ-वा शुग्गा ।	कीर-शुकौ (समौ) ॥ २१ ॥
	१४पु पु
कराकुल ।	क्रुङ् क्रौञ्चो

१ ता–.२च–. ३–का. ४–र. ५–क. .६–ज. ७ आ–. ८–भृत्. ९–भुज्. १० वायस. ११ पिल्ल. १२ गृध्र. १३ शुक. १४ क्रुंच्.

कृकवाकुः, ताम्रचूड़ः, कुक्कुटः, चरणायुधः, ये ४ कुक्कुट अर्थात् मुर्ग के नाम हैं, ॥ १७ ॥ चटकः, कलविंकः, ये २ गौरिया के नाम हैं, उस चटक की स्त्री चटका है, (एकं), उन चटक और चटका के पुरुष बच्चे को चाटकैरः कहते हैं, और उन्हों दोनों का स्त्री बच्चा चटका है, (एकं) ॥ १८ ॥ कर्करेटुः, "कर्कराटुः" करेटुः, "करटुः" ये २ अशुभ वादी पक्षी वा देशान्तरीय सहरस के नाम हैं, "वा कोड़िला इस प्रसिद्ध के नाम हैं" कृकणः, क्रकरः, ये २ मुआचिड़ी इस प्रसिद्ध वा तीतर विशेष के नाम हैं, वनप्रियः, परभृतः, कोकिलः, पिकः, ये ४ कोयल पक्षी के वा कोकिला के नाम हैं, ॥१९॥ काकः, करटः, अरिष्टः, बलिपुष्टः, सकृत्प्रजः, ध्वांक्षः, आत्मघोषः, परभृत्, बलिभुक्; वायसः, ये १० कौए के नाम हैं, "चिरंजीवी, एकदृष्टिः, मौकुलिः, मौकली भी है, ये भी ३ कौए के नाम हैं", ॥ २० ॥ द्रोणकाकः, और भी द्रोणः काकोलः, ये २ कौए के भेद के वा डोम कौए के वा काले कौए के, नाम हैं, दात्यूहः, "वा दात्योहः" कालकंठकः, ये २ जलकौए के वा धूमिल कौआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (काले वर्षाकाले कंठो ऽस्य कालकंठकः) आतायी, "(–इन्) वा आतापी, (–इन्), पिल्लः, "चिल्लः" ये २ चील्ह इस प्रसिद्ध के नाम हैं; दाक्षाय्यः, गृध्रः, ये २ गीध के नाम हैं; कीरः, शुकः, ये २ सूये के वा शुग्गा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "और भी शूकः" ॥ २१ ॥ क्रुङ्, क्रौंचः, "उसी प्रकार क्रुंचः, स्त्री· क्रुंचा, और क्रांचा" ये २ कराकुल के नाम हैं;

	पु पु
वगला-वा वकुला।	(५४) वकः कह्नः पु पु
सहरस।	पुष्कराह्व (स्तु) सारसः।
	पु १पु २पु पु
चकवा चकई।	कोक श्चक्र श्चक्रवाको रथांग
	(ह्वयनामकः) ॥ २२ ॥
	पु पु
वत्तक।	कादम्बः कलहंसः (स्याद्) पु ३पु
कुररी।	उत्क्रोश-कुररौ (समौ)।
	पु ४पु ५पु ६पु
हंस।	हंसा (स्तु) श्वेतगरुत श्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥
	पु
राजहंस।	राजहंसा (स्तु ते चञ्चु चरणै र्लोहितैः सिताः)।
	पु
हंस विशेष।	(मलिनै) र्मल्लिका (ख्यास्ते) पु
कालेचरण और चोंचके	धार्त्तराष्ट्राः (सितेतरैः) ॥ २४ ॥
पक्षीविशेष वा देशान्तरीय तीतर।	स ७स ८स शरारि राटि राडि (श्च) स स
वगला के भेद।	बलाका विसकण्ठिका।
	स
हंस की स्त्री।	(हंसस्य योषिद्) वरटा स
सहरस की।	(सारसस्य तु) लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
	९स १०स
चमगुदरि।	जतुका जिनपत्रा (स्यात्) स स
गीदड़।	परोष्णी तैलपायिका।

१ घ्-. २ च-. ३-र. ४-रुत. ५ च-. ६-कस्. ७ श्रा-. ८ श्रा-. ९-क. १० श्र-.

वकः, कह्नः, ये २ वक के अर्थात् वगला इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (केजले ह्वयते शब्दं कुरुते इति कह्नः), पुष्कराह्नः, सारसः, ये २ सहरस के नाम हैं, "वा पुष्करः", कोकः, "कुकः" चक्रः, चक्रवालः, रथांगः, ये ४ चक्रवाक् वा चकवा चकई के नाम हैं, रथांग चक्र के ये आह्वय अर्थात् नामवाले कहलाते हैं; ॥ २२ ॥ कादम्बः, कलहंसः, ये २ मधुर बोलनेवाले हंस के-वा वत्तक- वा वपत इस प्रसिद्ध के नाम हैं; उत्क्रोशः, कुररः, "स्त्री॰ कुररी", ये २ कुररी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, हंसः, "वहुव॰ हंसाः, स्त्री॰ हंसीः", श्वेतगरुतः, चक्रांगः, मानसौकाः, ये ४ हंस के नाम हैं, वहुवचन की विवक्षा में वहुवचनान्त हैं, ॥ २३ ॥ ये देह से शुक्ल चोंच और चरणों से लाल हैं, वे हंस राजहंसाः "एकव॰ राजहंसः" कहलाते हैं, (एकं) कुछ धूमिल चोंच और चरणों से उजले हंसमल्लिकाख्याः, एकव॰ मल्लिकाख्यः, वा मल्लिकः, कहलाते हैं, (एकं) "मल्लिकाक्षाः भी" कृष्णवर्ण चोंच और चरण से जाने गये हंस धार्त्तराष्ट्राः एकव॰ धार्त्तराष्ट्रः कहलाते हैं, (एकं) ॥ २४ ॥ शरारिः, "और भी शरातिः, वा शरालिः, और भी शराटिः, शराली, शराडिः, आडिः, आटिः, "आटी" आडिः, "आडी" ये ३ स्त्रीलिङ्ग पक्षीविशेष वा देशान्तरी तीतर के नाम हैं, वलाका, विसकंठिका, ये २ वगला के भेद के नाम हैं, (विसमिव कंठो ऽस्याः विसकंठिका) हंस की स्त्री वरटा, "और भी वरटी", कहलाती है, और सारस की स्त्री तो लक्ष्मणा "उसी प्रकार लक्षणा", कहलाती है, (एकं) ॥ २५ ॥ जतुका "वा जतूका", अजिनपत्रा, ये २ चमगुदरी पक्षिविशेष के नाम हैं, परोष्णी, "और भी परोष्ठी" तैलपायिका, ये २ लपट कीड़े वा गीदड़ के नाम हैं, ।

मक्खी ।	स स स वर्वणा मक्षिका नीला
मधुमक्खी ।	स स सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
मधुमक्खी के भेद-वा पांखी-वा छोटी मक्खी	स स पतङ्गिका पुत्तिका (स्याद्)
डांस-वा मच्छर ।	पु स दंश-(स्तु) वनमक्षिका ।
मसा ।	स दंशी (तज्जाति रल्पा स्याद्)
बर्रै-वा भिर्र ।	स पुस गन्धोली वरटा (द्वयोः) ॥ २७ ॥
भींगुर ।	स स स स भृङ्गारी भीरुका चीरी भिल्लिका (च समा इमाः) ।
पतङ्ग-वा फनिगा ।	पु पु (समौ) पतङ्ग-शलभौ
जुगुनू-वा सोनकीड़ा ।	पु पु खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
भंवरा ।	पु पु १पु २पु ३पु मधुव्रतो मधुकरो मधुलि-ण्मधुपा-ऽलिनः । पु ४पु ५पु पु पु ६पु द्विरेफ-पुष्पलिड्-भृङ्ग-षट्पद-भ्रमरा-ऽलयः ॥ २९ ॥
मोर-वा मुरैला ।	पु पु ७पु पु ८पु मयूरो वर्हिणो वर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् । पु ९पु १०पु ११पु शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्य (ऽपि) ॥ ३० ॥
मोर की बोली ।	स केका (वाणी मयूरस्य)
मोर पंख के चिह्न ।	पु पु (समौ) चन्द्रक-मेचकौ ।

१—ह. २ म—. ३—न्. ४—ह. ५ भ—. ६ अलि. ७—न्. ८—भुज्. ९—न्. १०—न्. ११—सी (—न्).

वर्वणा, "वा बर्वणा" मक्षिका, "उसी प्रकार मक्षीका" नीला, "वा नीली", ये ३ मक्खी के नाम हैं; सरघा, मधुमक्षिका, ये २ मधुमक्खी के नाम हैं; ॥ २६ ॥ पतङ्गिका, पुत्तिका, ये २ मधुमक्खी के भेद—वा पांखी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; दंशः, वनमक्षिका, ये २ डांस—वा वनमक्खी के नाम हैं; दंशी, यह १ उन डासों की जाति की छोटी मक्खी का नाम है; (एकं) "यह भी डांस इस प्रसिद्ध का नाम है" गन्धोली, "और भी गन्धाली" वरटा, "स्त्री॰ वरटी, पुं॰ वरटः", ये २ गन्धमक्खी—वा बर्रै—वा भिर्र के नाम हैं; ॥ २७ ॥ भृङ्गारी, भीरुका, "भीरिका, भिरुका, भिरिका, भिरीका", चीरी, "उसी प्रकार चीरुका" भिल्लिका, "वा भिल्लीका, भिल्लका, चीलिका चिल्लका", ये ४ कीड़े—वा भींगुर के नाम हैं, (भीरिति रौति भीरुका, चीं इति रौति चीरी) "जो रात को अदृश्य होकर बोलती है वह" ये ४ री समा और एकार्थ के वाचक हैं, समा इस पद से स्त्रीत्व का निश्चय है; पतङ्गः, शलभः, ये २ दीप के पतंग के नाम हैं; खद्योतः, ज्योतिरिङ्गणः, ये २ खद्योत—वा जुगुनू—वा सोनकीड़े के नाम हैं, ॥ २८ ॥ मधुव्रतः, मधुकरः, मधुलिट्, मधुपः, "और भी मधुपायी, (—न्)" अली, द्विरेफः, पुष्पलिट्, भृङ्गः, षट्पदः, भ्रमरः अलिः, ये ११ भंवरे के नाम हैं, "(अमधुकरे मधुकरशब्दो रूढः, मधु किरति विक्षिपतीति वा)" द्विव॰ मधुलिहौ, ब॰व॰ मधुलिहः, ॥ २९ ॥ मयूरः, वर्हिणः, वर्ही, नीलकंठः, भुजंगभुक्, शिखावलः, शिखी, केकी, मेघनादानुलासी, ये ९ मोर के नाम हैं, ॥ ३० ॥ मोर की बोली को केका कहते हैं, (एकं) चन्द्रकः, मेचकः, ये २ मोरपिच्छ के अर्थात् नेत्र के आकार के चिह्न विशेष के नाम हैं, "(वर्हिकण्ठसमं वर्णं मेचकं ब्रुवते बुधाः, यह कात्यका मत है)"।

मोर की चोटी-वा शिखा ।	स स शिखा चूडा पु न न
उस्का पङ्ख ।	शिखण्ड-(स्तु) पिच्छ-बर्हे (नपुंसके) ॥ ३१ ॥
	पु पु पु पु १पु
चिड़िया वा पक्षी।	खगे विहङ्ग-विहग-विहङ्गम-विहायसः ।
	पु २पु पु पु पु ३पु
	शकुन्ति-पक्षि-शकुनि-शकुन्त-शकुन-द्विजाः ॥ ३२ ॥
	४पु ५पु पु ६पु ७पु ८पु
	पतत्रि-पत्रि-पतग-पतत्-पत्ररथा-ऽण्डजाः ।
	९पु १०पु पु पु पु ११पु
	नगौको वाजि-विकिर-वि-विष्किर-पतत्रयः ॥ ३३ ॥
	१२पु १३पु १४पु पु
	नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।
	पु पु पु पु
हारिल ।	(तेषां विशेषा) हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
	पु पु पु पु १५पु
तीतर १ वनमुर्गा २ लवा ३ मोर विशेष ४ चकोर ५ ।	तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवंजीव श्चकोरकः ।
	पु १६पु पु स
टिटहरी-वटेर-आदि।	कोयष्टिक ष्टिट्टिभको वर्त्तको वर्त्तिका (दयः) ॥ ३५ ॥
	१७पु पु १८पुन न न न
पक्ष-वा पङ्ख ।	गरु-त्पक्ष-च्छदाः पत्रं पतत्र (त्रु) तनूरुहम् ।

१—यस्. २—न्. ३—ज. ४—न्. ५—न्. ६—त्. ७—थ. ८—ज. ९—कस्—और—क. १०—न्. ११—त्रि. १२—व. १३—त्मत्. १४—त्. १५ च—. १६ टि—. १७—त्. १८ छ—.

शिखा, चूड़ा, ये २ मोर की शिखा के नाम हैं; शिखण्डः, पिच्छं, बर्हं, "और भी पुं. बर्हः", ये ३ मोर के पिच्छ अर्थात् पङ्ख के नाम हैं; ॥ ३१ ॥ खगः, विहंगः, विहगः, विहंगमः, विहायसः, "एकव. विहायाः", शकुन्तिः, पक्षी, शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजः, ॥ ३२ ॥ पतत्री, पत्री, पतगः, पतन्, पत्ररथः, अण्डजः, नगौकाः, वाजी, विकिरः, विः, "उसी प्रकार स्त्री. वी" विष्किरः, पतत्रिः, ॥ ३३ ॥ नीड़ोद्भवः, गरुत्मान्, पित्सन्, नभसंगमः, ये २७ पक्षी मात्र के नाम हैं, शकुन्तिः, इदन्त है, शकुन्तः, अदन्त है, विः, यह एकाक्षर का पद है, और नभसंगमः, यह पांच अक्षर का पद है, "और भी मत्स्यरंगः"; इन के मध्य विशेष कहेंगे, हारीतः, यह १ देशभाषा में हारिल कहलाता है वा हारिल सुग्गा इस प्रसिद्ध का नाम है, "और भी हारितः", मद्गुः, यह १ जलकाक—वा जलमुर्गा का नाम है, कारण्डवः, यह १ बत्तक का नाम है और यह काक के समान चोंच—दीर्घपाद—और कृष्ण वर्ण होता है, प्लवः, यह १ बत्तक का नाम है, ॥ ३४ ॥ तित्तिरिः, "वा तित्तिरः" यह १ तीतर का नाम है, कुक्कुभः, यह १ वनमुर्गा, का नाम है, लावः, यह १ लवापक्षी का नाम है, जीवंजीवः, यह १ मोर के तुल्य पक्षवाला है, "(जीवं जीवयतीति जीवंजीवः)" इस के देखने से विष का नाश होता है, "जीवजीवः, और भी जीवा-जीवः", चकोरकः, "वा कोरकः" यह १ चकोर पक्षी का नाम है, अर्थात् जो चन्द्रिका से तृप्त होता है, कोयष्टिकः, टिट्टिभकः, "वा टिटिभकः" ये २ टिटहरी के नाम हैं, वर्त्तकः, "उसी प्रकार स्त्री. वर्त्तका" यह १ चित्रविचित्र पक्षवाला पक्षिभेद का नाम है, वा—वर्त्तिका, ये २ बटेर इस प्रसिद्ध पक्षी के नाम हैं, आदि, शब्द से सारिका, कपिञ्जला आदि जानना चाहिये, (एकैकं) ॥ ३५ ॥ गरुत्, पक्षः, "और भी नपुं. पक्षं, और पक्षः, (—स्), छदः, पत्रं, पतत्रं, तनूरुहं, ये ६ पक्ष के नाम हैं, ।

	स न
पङ्क्षकी जड़ ।	(स्त्री) पत्ततिः पक्षमूलं
	स १स
चोंच ।	चञ्चु स्त्रोटि (रुभे समे) ॥ ३६ ॥
	न २न ३म
उड़ना ।	प्रडीनोड्डीन-संडीना (न्येताः खगगतिक्रियाः) ।
	स पुन न
अण्डा ।	पेशी कोषो (द्विहीने) ऽण्डं
	पु पुन
घोसला वा खोंथा ।	कुलायो नीड (मस्त्रियाम्) ॥ ३७ ॥
	पु पु पु पु पु पु पु
बच्चे ।	पोतः पाको ऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।
	न न
जोड़ा ।	(स्त्री पुंसौ) मिथुनं द्वन्द्वं
	न न न
दो ।	युग्मं (तु) युगलं युगम् ॥ ३८ ॥
	पु पु पु पु पु पु
समूह वा झुण्ड ।	समूह-निवह-व्यूह-सन्दोह-विसर-व्रजाः ।
	पु ४पु पु पु पु पु पु
	स्तोमौघ-निकर-व्रात-वार-संघात-सञ्चयाः ॥ ३९ ॥
	पु पु पु ५पु पु
	समुदायः समुदयः समवाय श्चयो गणाः ।
	स ६न न न
	(स्त्रियान्तु) संहति वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

१ त्रो-. २ उ-. ३-न. ४ ओघ. ५ च-. ६ वृ-.

पक्षके मूलको पक्षतिः, और पक्षमूलं, कहते हैं, "पक्षती यह दीर्घान्त भी है" (एकं) चञ्चुः, "उसी प्रकार चञ्चूः" त्रोटिः, "वा त्रोटी" ये २ पक्षियों के चोंच के नाम हैं, ॥ ३६ ॥ प्रडीनं, उड्डीनं, संडीनं, ये ३ चिड़ियों की गति की क्रिया वा गतिविशेष के नाम हैं, इनमें टेढ़े गमन को प्रडीनं-ऊपर के गमन को उड्डीनं-वारं वार के गमन को संडीनं कहते हैं; पेशी, "और पेशिः" कोषः, "वा कोशः, उसी प्रकार पेशीकोषः" अण्डं, ये ३ अण्डों के नाम हैं, इनमें पेशी स्त्री॰ कोशः पुन्नपुंसक है, अण्डं नपुंसकही है; कुलायः, नीडं, ये २ पक्षियों के घर-वा घोंसला के नाम हैं; ॥ ३७ ॥ पोतः, "उसी प्रकार स्त्री॰ पोती" पाकः, "स्त्री॰ पाका" अर्भकः, डिम्भः, पृथुकः, "और भी प्रथुकः", शावकः, शिशुः, ये ७ चिड़ियों के वा बच्चे मात्र के नाम हैं, "उसी प्रकार अर्भका, डिम्भा, पृथुका", स्त्रीपुंसौ, मिथुनं, द्वंद्वं, ये ३ स्त्री पुरुष के जोड़े के नाम हैं, युग्मं, युगलं, युगं, ये ३ दो के नाम हैं, ॥ ३८ ॥ समूहः, निवहः, व्यूहः, सन्दोहः, विसरः, व्रजः, स्तोमः, ओघः, निकरः, व्रातः, वारः, संघातः, सञ्चयः, ॥ ३९ ॥ समुदायः, समुदयः, समवायः, "और भी समावायः" चयः, गणः, संहतिः, वृन्दं, निकुरम्बं, कदम्बकम्, ये २२ झुण्ड-वा समूह के नाम हैं, इनमें संहतिः स्त्रीलिङ्ग है, ॥ ४० ॥

सजातीय प्राणी–वा अप्राणियों का झुण्ड वा समूह।	पु (वृन्दभेदाः समैः) वर्गः
जन्तु समूह।	पु १पु संघ-सार्थौ (तु जंतुभिः)।
सजातीय जन्तु समूह।	न (सजातीयैः) कुलं
टेढ़े जन्तुओं के समूह।	पुन यूथं (तिरश्चां पुन्नपुंसकम्) ॥ ४१ ॥
पशुओं के समूह।	पु (पशूनां) समजो
औरों का झुण्ड।	पु (ऽन्येषां) समाजो
एक धर्म्मवालों का समूह।	(ऽथ सधर्मिणाम्। पु स्यात्) निकायः
अन्न आदि के ढेर वा समूह।	पु २पुस ३पु पुन पुञ्ज-राशी (तु) त्कर: कूट (मस्त्रियाम्) ॥ ४२ ॥
कबूतर--सूआ--मोर--तित्तिर-आदि का स॰	न न न न कापोत शौक मायूर तैत्तिरा (दीनि तद्गणे)।
पलाऊ पक्षी-और मृग।	(गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्) पु पु छेका (स्ते) गृह्यका (श्च ते) ॥४३॥
	॥ इति सिंहादिवर्गः ॥

१–र्थ. २–शि. ३ उ–.

अब वृन्दों के अर्थात् समूहों के विशेष भेद कहते हैं, सजातीय प्राणियों के वा अ॰प्राणियों के समूह को वर्गः, कहते हैं, जैसे मनुष्यवर्गः, शैलवर्गः; और फिर जंतुभिः अर्थात् सजातीय और विजातीय प्राणियों के समूह को संघः, और सार्थः, कहते हैं, जैसे पशुसंघः, वणिक्सार्थः; और फिर सजातीय जंतुओं के समूह को कुलं, कहते हैं, जैसे विप्रकुलं, (एकं) टेढ़े जंतुओं के ही सजातीय समूह को यूथं, कहते हैं, जैसे मगयूथं, (एकं) ॥ ४१ ॥ फिर पशुओं के ही समूह को समजः, कहते हैं, (एकं) पशु से भिन्नों के समूह को समाजः, कहते हैं, जैसे श्रोत्रिय समाजः, अर्थात् वेद के पढ़नेवालों का समूह, सधर्मियों के अर्थात् एक धर्मवालों के समूह को निकायः, कहते हैं, जैसे श्रोत्रिय निकायः; पुंजः, "पिञ्जः, और भी स्त्री॰ पुञ्जिः", राशिः, उत्करः, कूटं, ये ४ धान्य आदि के राशि के नाम हैं, कूटं, पुंनपुंसक है; ॥ ४२ ॥ उन कबूतरों के समूहों को कापोतादीनि कहते हैं, जैसे कबूतरों का समूह कापोतं है, शुकों का समूह शौकं है, इसी प्रकार मयूरों का समूह मायूरं है, तित्तिरों का समूह तैत्तिरं, "इसी प्रकार औलूकम्" है, आदि शब्द से कौवों का समूह काकं है; ये गृह में सक्त हैं अर्थात् खेलने के लिये पिंजरा आदि में स्थापित हैं वे पक्षि और मगछेकः, वहुव॰ छेकाः और गृह्यकः, वहुव॰ गृह्यकाः, कहलाते हैं, ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥

॥ अथ षष्ठम वर्गः ॥

मनुष्य-वा पुरुष ।	मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः । (स्युः) पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
स्त्री ।	स्त्री योषि दबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः । प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला (तथा) ॥ २ ॥
स्त्रीविशेष-१ अच्छे अंग की-२ डरनेवाली-३ कामयुत-४ सुनेत्र-५ बहुत कामवाली-६ प्रणय कोपवाली-७ मन हरनेवाली-८ दुलारी-९अच्छेनितम्ब की १० सुन्दरअंगवाली-११ जिस्से अति चित्त रमै-१२ विहार के योग्य ।	(विशेषाश्चा) १ ऽङ्गना २ भीरुः ३ कामिनी ४ वामलोचना । ५ प्रमदा ६ भाविनी ७ कान्ता ८ ललना (च) ९ नितम्बिनी ३॥ १० सुन्दरी ११ रमणी १२ रामा
रिसही-वा क्रोधी।	कोपना (सैव) भामिनी ।
बहुत उत्तम ।	वरारोहा मत्तकाशि न्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

१—तृ. २ अ—. ३अ—. ४—नी. ५ उ—.

मनुष्याः, मानुषाः, "एक व॰ मनुष्यः, मानुषः, आदि स्त्री॰ मनुषी, मानुषी", मर्त्याः, मनुजाः, मानवाः, "उसी प्रकार माणवः", नराः, पुमांसः "एकव॰ पुमान् (पुंस्)" पंचजनाः, पुरुषाः, पूरुषाः, नरः, ये ११ मनुष्यों के नाम हैं, नृशब्द के एक वचन में ना होता है, और पुमांसः इन आदि के तो प्रायः पुरुष व्यक्ति में भी प्रयोग किये जाते हैं, जैसे पुंस्कोकिलः; ॥ १ ॥ स्त्री, योषित्, "वा जोषित् और भी जोषिता वा योषिता" अबला, योषा, "उसी प्रकार जोषा" नारी, सीमन्तिनी, वधूः, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, "वा महेला, और महीला", ये ११ स्त्रियों के नाम हैं, ॥ २ ॥ अब स्त्रियों के विशेष भेद कहते हैं, अंगना, यह एक अच्छे अंगवाली स्त्री का नाम है, इसी प्रकार रामा पर्य्यंत एकेक के नाम हैं, तिन्में भीरुः। भयशीला है, "भीरूः, और भीलुः, भीलूः भी" कामिनी, जिसके देखने से मन प्रसन्न हो, वामलोचना, सुन्दरनेत्रवाली, प्रमदा, शीघ्र बड़े काम के वेगवाली मद युक्त सुन्दरी, भाविनी, "और भी मानिनी" प्यार के समय कोप करनेवाली, कान्ता, मनके हरन करनेवाली, ललना, प्यार युक्त, वा प्यार के योग्य, का नाम हैं, नितम्बिनी, कटिके पीछे सुन्दर वा मोटे भाग के रखनेवाली, ॥ ३ ॥ सुन्दरी, सुन्दर अंगवाली, "सुन्दरा भी" रमणी, क्रीडा को प्रिय करनेवाली, "रमणा भी" रामा, खेलने वा खेलाने वाली, "उसी प्रकार रमा" कोपना, "कोपिनी" भामिनी, ये २ कोप करनेवाली के नाम हैं, वरारोहा, अच्छे नितम्ब अर्थात् सुन्दर चूतरवाली, मत्तकाशिनी, "और मत्तकासिनी, वा मत्तकाषिणी" उत्तमा, वरवर्णिनी, ये ४ बहुतही उत्तम वा गुणों से बड़े मर्य्यादवाली के नाम हैं ॥ ४ ॥

पटरानी।	(कृताभिषेका) महिषी[स]
राजाकी अन्य स्त्री।	भोगिन्यो[स] (ऽन्या नृपस्त्रियः)।
विवाहिता स्त्री	पत्नी[स] पाणिगृहीती[स] (च) द्वितीया[स] सहधर्मिणी[स] ॥ ५ ॥
	भार्य्या[स] जाया[स] (ऽथ पुंभूम्नि) दाराः[पुबहु॰]
पतिपुत्रयुत स्त्री।	(स्यात्तु) कुटुम्बिनी[स]।
	पुरंध्री[स]
पतिव्रता।	सुचरित्रा[स] (तु) सती[स] साध्वी[स] पतिव्रता[स] ॥ ६ ॥
सवति।	कृतसापत्निका[स] ऽध्यूढा[१स] ऽधिविन्ना[२स]
आप पति को चाहनेवाली।	(ऽथ) स्वयंवरा[स]।
	पतिम्वरा[स] (च) वर्य्या[स]
कुलवन्ती।	(ऽथ) कुलस्त्री[स] कुलपालिका[स] ॥ ७ ॥
कन्या।	कन्या[स] कुमारी[स]

१ अ–. २ अ–.

जिस राजा की स्त्री का अभिषेक हुआ है उसे महिषी कहते हैं, (एकं), जिन राजा की स्त्रियों का अभिषेक नहीं हुआ है उन्हें भोगिन्यः कहते हैं, (एकं), "एकवचन में भोगिनी" पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी, "उसी प्रकार सधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या, जाया, "(जायते ऽस्यां यायायास्तद्धिजायास्त्वं यदस्यां जायते पतिरितिमनुः)" दाराः, "और भी स्त्री॰ ए॰व॰ दारा", ये ७ विवाहिता स्त्री के नाम हैं. इनमें दारा शब्द नित्य पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त है; कुटुम्बिनी, पुरंध्री, "वाज़े पढ़ते हैं पुरंधिः", ये २ पतिपुत्रादि से युक्तके नाम हैं, सुचरित्रा, सती, साध्वी, "वा साधुः" पतिव्रता, ये ४ पतिसेवा में तत्पर के अर्थात् लगी हुई के वा पतिव्रता के नाम हैं, ॥ ६ ॥ कृतसापत्निका, "और कृतसापत्नका, कृतसापत्नी, कृतसापत्नीका, वा कृतसपत्निका", अध्यूढा, अधिविन्ना, ये ३ अनेक विवाह करनेवाले पुरुष की जो प्रथम विवाहित स्त्री है उस के नाम हैं. (कृतं सापत्निकं सपत्नीभावो ऽस्याः सा) स्वयंवरा, पतिंवरा, वर्या, ये ३ जो अपनी इच्छा से पतिवरण में उद्युक्त है उसके नाम हैं, (स्वयं वृणुते स्वयंवरा) कुलस्त्री, कुलपालिका, "और कुलपाली" ये २ कुलवंती के नाम हैं, ॥ ७ ॥ कन्या, "और भी कन्यका" कुमारी, ये २ प्रथम वय में वर्तमान के नाम हैं,

कुछ बड़ी कन्या।	स स स गौरी (तु) नग्निकाऽनागतार्त्तवा।
प्रथम रजस्वला।	स १स (स्यान्) मध्यमा दृष्टरजास्
युवती-वा जवानि।	स स तरुणी युवतिः (समे) ॥ ८ ॥
पतोहू वा पुत्रबहू।	स स स (समाः) स्नुषा-जनी-बध्वश्
कुछ युवा विवाहिता पिताके घर रहती हो।	स स चिरण्टी (तु) सुवासिनी।
धन आदि की चाहने वाली।	स स इच्छावती कामुका (स्याद्)
मैथुन को चाहने वाली	स स वृषस्यन्ती (तु) कामुकी ॥ ९ ॥
जो दूसरे को जाती है रति की इच्छा कर।	स (कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं सा) ऽभिसारिका।
छिनारि।	स स २स ३स ४स ५स पुंश्चली धर्षिणी बंधक्य सती कुलटे त्वरी ॥ १० ॥
	स स स्वैरिणी पांशुला
बिना पुत्र की।	स (ऽथ स्याद्) अशिश्वी (शिशुना विना)।
बिना पति पुत्र की।	स अवीरा (निष्पतिसुता)
राड़-वा विधवा।	स ६स विश्वस्ता-विधवे (समे) ॥ ११ ॥

१—जस्. २—की. ३ अ—. ४—टा. ५ इ—. ६—वा.

गौरी, नग्निका, अनागतार्त्तवा, "और लग्निका" ये ३ जिस के रज नहीं दिखलाई दिया है उस के नाम हैं, (अनागतं अप्राप्तं रजो यस्याः सा); मध्यमा, "उसी प्रकार मध्या" दृष्टरजाः, ये २ प्रथम प्राप्त रज के जोगवाली के नाम हैं, तरुणी. "तलुनी, वा तलनी, और तलूनः", युवतिः,और भी युवती, और युनी, ये २ जवान् स्त्री के नाम हैं. ॥ ८ ॥ स्नुषा, जनी, "वा जनिः", ए॰व॰ वधूः, "वा बधुः", ये ३ पुत्र आदि की भार्या के नाम हैं, "उसी प्रकार वधूटी", चिरण्टी, "उसी प्रकार चिरिंटी" सुवासिनी, "और भी स्ववासिनी" ये २ कुछ युवती और विवाह हुई के नाम हैं, इच्छावती, कामुका, ये २ काम की इच्छावाली के नाम हैं, वृषस्यन्ती, कामुकी, ये २ "घोड़े और बैल के समान" मैथुन की इच्छावाली के नाम हैं, ॥ ९ ॥ जो कान्तार्थिनी है अर्थात् भर्त्ता के किये संकेतस्थान को जाती है वह अभिसारिका कहलाती है, (एकं), पुंश्चली, धर्षिणी, "और भी धर्षणी" वन्धकी, असती, कुलटा, इत्वरी, ॥ १० ॥ स्वैरिणी, पांशुला, "उसी प्रकार पांसुला" ये ८ पुंश्चली के नाम हैं, जिस के लड़के न हो वह अशिश्वी, और जो पति पुत्र से रहित है उसे अवीरा कहते हैं, "पतिपुत्रवती जो है वह वीरा है", यह नाम माला का मत है, विश्वस्ता, "और विश्वस्या" विधवा, ये २ रांड़ स्त्रियों के नाम हैं, ॥ ११ ॥

सखी-वा सहेली।	आलिः सखी वयस्या (च)
सोहागिन-वा अहिवातिन।	पतिवत्नी सभर्तृका।
बूढ़ी।	वृद्धा पलिक्नी
बुद्धिमती।	प्राज्ञी (तु) प्रज्ञा
अति बुद्धिमती।	प्राज्ञा (तु) धीमती॥ १२॥
शूद्र की सजाती।	शूद्री (शूद्रस्य भार्य्या स्यात्) [1]
शूद्र की विजाती।	शूद्रा (तज्जातिरङ्गना)।
अहीरिन।	आभीरी (तु) महाशूद्री (जातिपुंयोगयोः समा)॥ १३॥
बनिआइन।	अर्य्याणी (स्वयम्) अर्य्या (स्यात्)
क्षत्रियाइन।	क्षत्रिया क्षत्रियाण्य् [2] (ऽपि)।
पढ़ानेवाली।	उपाध्याया [3] (प्यु) पाध्यायी
मंत्र का अर्थ कर्नेवाली	(स्याद्) आचार्य्या (ऽपि च स्वतः)॥ १४॥
आचार्य्य की स्त्री।	आचार्य्याणी (तु पुंयोगे)
वैश्य की।	(स्याद्) अर्य्यी
क्षत्रिय की।	क्षत्रियी (तथा)।
पण्डित की	उपाध्याया [4] न्युपाध्यायी [5]
पुरुष और स्त्री लक्षणी।	पोटा (स्त्रीपुंसलक्षणा)॥ १५॥

१ शूद्रा. २–णी. ३ उ–. ४–नी. ५उ–.

आलिः, "वा आली" सखी, वयस्या, ये ३ सखियों के नाम हैं; पतिवत्नी, सभर्तृका, ये २ जिस का पति जीता है उस के नाम हैं; वृद्धा, पलिक्नी, "वा पलिता", ये २ पक्के केशवाली, के नाम हैं, प्राज्ञी, प्रज्ञा, ये २ जो कुछ आप अच्छे प्रकार जानती है उस के नाम हैं, प्राज्ञा, धीमती, ये २ अति बुद्धिमती के नाम हैं, ॥ १२ ॥ जो शूद्र की सजातीय भार्या है उसे शूद्री कहते हैं, (एकं), और शूद्र जाति की अन्य भार्या शूद्रा कहलाती है; आभीरी, महाशूद्री, ये २ गोपालिका के नाम हैं, जाति और पुंयोग में अर्थात् महा शूद्र की जाति वा महा शूद्र की स्त्री इस रूप पुंयोग में भी तुल्य हैं, दोनों स्थान में नामद्वय ङीप प्रत्ययान्त ही हैं; ॥ १३ ॥ अर्याणी, अर्या, ये २ वैश्य जाति में उत्पन्न स्त्री के नाम हैं, अर्थात् आप वैश्य जाति होकर भार्या जिस किसी की हो यह अर्थ है; ऐसे हीं क्षत्रिया, क्षत्रियाणी, ये २ क्षत्रिय जाति में उत्पन्न भार्या जिस किसी की हो; उपाध्याया, उपाध्यायी, ये २ उस के नाम हैं जो आप पढ़ाती है, और जो आप मंत्र की व्याख्या कर्त्ती है उसे आचार्या कहते हैं, (एकं), ये, ३ नों समानार्थक हैं, ॥ १४ ॥ पुंयोगे अर्थात् आचार्य की स्त्री इस रूप अर्थ में आचार्याणी, यह एक है; उसी प्रकार अर्यी अर्थात् वैश्य की स्त्री अर्यी, फिर ऐसे हीं क्षत्रिय की स्त्री क्षत्रियी, (एकं), उपाध्यायानी, उपाध्यायी, ये २ उपाध्याय की भार्या के नाम हैं, अर्थात् पंडित की स्त्री, पुरुष और स्त्रीलक्षण स्तन मूछ दाढ़ी आदि चिह्न से युक्त स्त्री को पोटा कहते हैं, (एकं) ॥ १५ ॥

वीर की स्त्री।	स स वीरपत्नी वीरभार्य्या
वीर की मा।	१स स वीरमाता (च) वीरसूः।
सौरिही।	स स स स जातापत्या प्रजाता (च) प्रसूता (च) प्रसूतिका ॥ १६ ॥
नङ्गी।	स स (स्त्री) नग्निका कोटवी (स्याद)
दूती।	स २स दूती-सञ्चारिके (समे)।
आधी बूढ़ी विधवा।	३स कात्यायन्य् (ऽर्द्धवृद्धा या काषायवसना धवा) ॥ १७ ॥
लौंड़ी-वा सेवकिन।	स सैरिन्ध्री (परवेश्मस्था स्ववशाशिल्पकारिका)।
युवती-सेवकिन।	स असिक्नी (स्यादवृद्धाया प्रेष्या न्तःपुरचारिणी) ॥ १८ ॥
पतुरिआ-वा वेश्या।	स स स स वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा (ऽथ सा जनैः।
बड़ी वेश्या।	स सत्कृता) वारमुख्या (स्यात्)
कुटनी।	स स कुट्टनी शंभली (समे) ॥ १६ ॥
शुभ और अशुभ के जाननेवाली।	स ४स स विप्रश्निका (त्वी) क्षणिका दैवज्ञा
रजस्वला।	स (ऽथ) रजस्वला।

१–तृ. २–का. ३–नी. ४ ई–.

वीरपत्नी, वीरभार्या, ये २ वीर की भार्या के नाम हैं; वीरमाता, वीरसूः, ये २ वीर की माता के नाम हैं; जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका, ये ४ लड़के उत्पन्न करनेवाली के नाम हैं; ॥ १६ ॥ जो नंगी स्त्री है उसे नग्निका और कोटवी कहते हैं, "उसी प्रकार कोट्टवी, बाजे पढ़ते हैं, कोटरी", दूती, "और भी दूतिः" सञ्चारिका, ये २ दूती के नाम हैं, आधी बूढ़ी गेरुये रङ्ग के वस्त्रवाली और पति रहित कात्यायनी कही जाती है, (एक) ॥ १७ ॥ जो दूसरे के घर में स्वतन्त्र रह कर केश के शृङ्गार आदि शिल्पकारिणी है इस तीन विशेषण से युक्त का सैरिन्ध्री यह एक नाम है, "और भी सैरंध्री, सैरिंध्रिः"; जो बूढ़ी न हो आज्ञावर्त्तिनी और रनवांस में रहती हो इस तीन विशेषण से युक्त का असिक्नी नाम है, "और असिता" (प्रेष्यते राज्ञीभिरितिप्रेष्या) ॥ १८ ॥ वारस्त्री, गणिका, वेश्या, "उसी प्रकार वेष्या" रूपाजीवा, ये ४ वेश्या के नाम हैं, (वारस्य वृन्दस्य स्त्री वारस्त्री) रूपही जीविका है जिसका वह रूपाजीवा कहलाती है और वही वेश्या गुण के हेतु जनों से सत्कार पाती वारमुख्या कहलाती है, (वारे वेश्या वृन्दे मुख्या वारमुख्या) कुट्टनी, शंभली, "बाजे पढ़ते हैं, कुटुनी, और भी संभली" ये २ कुटनी के नाम हैं, ॥ १६ ॥ विप्रश्निका, ईक्षणिका, दैवज्ञा, ये ३ शुभ और अशुभ कहनेवाली के नाम हैं; रजस्वला, ।

	१स स २स स ३स
	स्त्रीधर्मिण्य् विरा चेयी मलिनी पुष्पवत्य् (ऽपि) ॥ २० ॥
	४स ५स
	ऋतुमत्य् (ऽप्यु) दक्या (ऽपि)
	६न न ७न
स्त्री का रज।	(स्याद्) रजः पुष्प मार्तवम्।
	स ८स
गर्भिणी की अभिलाष।	श्रद्धालु दौहदवती
	स स
विनारज की।	निष्कला विगतार्त्तवा ॥ २१ ॥
	स ९स १०स स
गर्भिणी वा गाभिनी।	आपन्नसत्त्वा (स्याद्) गुर्विण्य् न्तर्वत्नी (च) गर्भिणी।
वेश्यासमूह।	न
	(गणिकादेस्तु) गाणिक्यं न
गर्भिणी समूह।	गार्भिण्यं न
युवती समूह।	यौवतं (गणे) ॥ २२ ॥
	११स १२स
दहरी।	पुनर्भू र्दिधिषू (रूढा द्विः)
	पु
दहरीपति।	(तस्या) दिधिषुः (पतिः)।
	पु
दहरी विशेष पति।	(सतुद्विजो) ऽग्रेदिधिषुः (सैव यस्य कुटुम्बिनी) ॥ २३ ॥
	पु पु
विना व्याही कन्या का पुत्र।	कानीनः कन्यकाजातः (सुतो)
	पु
सुभगा का पुत्र।	(ऽथ) सुभगासुतः।

१–णी. २ श्रा–. ३–तो. ४–ती. ५ उ–. ६–स्. ७ श्रा–. ८ दो–. ९–णी. १० श्रं–. ११–भू. १२–षू.

स्त्रीधर्मिणी, अविः, "और अवीः" आत्रेयी, "वाजे पढ़ते हैं आर्त्तेयी" मलिनी, पुष्पवती, ॥ २० ॥ ऋतुमती, उदक्या, ये ८ रजस्वला के नाम हैं; रजः, (–ज) पुष्पं, आर्त्तवं, ये ३ स्त्री के रज के नाम हैं; श्रद्धालुः, दोहदवती, ये २ गर्भ के वश से अन्न आदि विशेष अभिलाषावाली के नाम हैं; निष्कला, "उसी प्रकार निष्कली, और निष्फला, वा निष्फली" विगतार्तवा, ये २ रज रहित स्त्री के नाम हैं, (निर्गतं कलं शुक्रमस्याः निष्कला); ॥ २१ ॥ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी, गर्भिणी, ये ४ गर्भिणी स्त्री के नाम हैं; गणिका आदि के गण अर्थात् समूह को गाणिक्यं इस आदि, जैसे गणिका का समूह गाणिक्यं, गर्भिणी का समूह गार्भिण्यं, युवती का समूह यौवतं "और भी यौवनं" होता है, (एकैकं), ॥ २२ ॥ जो दो बेर विवाही गई है उसे पुनर्भूः, दिधिषूः, "वाजे पढ़ते हैं दिधिषुः, उसी प्रकार दिधिषूः", ये २ पहिले एक की स्त्री होकर फिर अन्य की होती है उस के नाम हैं, उस दो वेर करके विवाहित स्त्री के पति को दिधिषुः कहते हैं, वह पुनर्भूः जिस द्विज के कुटुम्ब पुत्र आदि पोष्य वर्ग का पालन करती है वह अग्रेदिधिषुः कहलाता है, द्विज शब्द से तीनों वर्ण का ग्रहण है, ॥ २३ ॥ बिना व्याही कन्यासे उत्पन्न सुत कानीनः, "उसी प्रकार स्त्री॰ कानीनी" कहलाता है, (एकं), सुभगासुतः,।

	पु सैाभागिनेयः (स्यात्)
पराई स्त्री का पुत्र।	पु पारस्त्रैणेय (स्तु परस्त्रियाः) ॥ २४ ॥
बूआ-वा फूफू का।	पु पु पैतृष्वसेयः (स्यात्) पैतृष्वस्त्रीय (श्च पितृष्वसुः । सुतो)
मासी-वा मैासी का।	न (मातृष्वसु श्चैवं)
सौतेली मा का-वा-भाई।	पु पु वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
कुलटाका।	पु पु पु (अथ) वान्धकिनेयः (स्याद्) बन्धुल (श्चा) ऽसतीसुतः ।
	पु पु कौलटेयः कौलटेरो
भिखारिनी का।	(भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
	पु पु तदा) कौलटिनेयो (ऽस्याः) कौलटेयो (ऽपि चात्मजः) ।
पुत्र।	पु १पु पु पु पु आत्मज स्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः
कन्या।	(स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
	स आहुर्) दुहितरं (सर्वे)

१ त-.

सैाभागिनेयः, ये २ सुभगा के पुत्र के नाम हैं; जो पर स्त्री का लड़का है उसे पारस्त्रैणेयः कहते हैं, (एकं) ; ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः ये २ फूआ वा फूफू के लड़के के नाम हैं इसी प्रकार मैासी के लड़कों को भी जानना चाहिये जैसे "मातृष्वसेयः, मातृष्वस्रीयः, स्त्री. मातृष्वसेयी, और मातृष्वस्त्रीया, ये २ मैासी के लड़के के नाम हैं" वैमात्रेयः, विमात्रजः, ये २ सैातेली मा के लड़के के नाम हैं ; ॥ २५ ॥ वान्धकिनेयः, बन्धुलः, असतीसुतः, कौलटेयः, "बाजे कौलटिनेयः, पढ़ते हैं" कौलटेरः, स्त्री॰ कौलटेयी, और कौलटेरा, ये ५ कुलटा के पुत्र के नाम हैं; और जब सती भिक्षुकी है तब उस का पुत्र कौलटिनेयः, कौलटेयः, "स्त्री॰ कौलटेयी, और कौलटेरा", ये २ कुल में भिक्षा के अर्थ जाती है और जार के अर्थ नहीं जाती उस कुलटा के पुत्र के नाम हैं; आत्मजः, तनयः, सूनुः, सुतः, पुत्रः, "और भी पुत्रः" ये ५ पुत्र के नाम हैं, और जब ये आत्मज आदि सब स्त्री में वर्त्तमान हैं तब ॥ २७ ॥ दुहिता को कहते हैं, जैसे, आत्मजा, तनया, सूनुः, सुता, पुत्री, दुहिता, (तृ) "पुत्रिका, वा पुत्रका", ये ५ पुत्री के नाम हैं;

पुत्र और कन्या ।	ऽपत्यं[न] तोकं[न] (तयोः समे) ।
औरस ।	(स्वजाते त्वौ) रसौ[१पु] रस्यो[पु]
पिता ।	तात[पु] (स्तु) जनकः[पु] पिता[२पु] ॥ २८ ॥
माता ।	जनयित्री[स] प्रसू[३स] र्माता[४स] जननी[स]
बहिन ।	भगिनी[स] स्वसा[५स] ।
ननद ।	ननान्दा[६स] (तु स्वसापत्युः)
पोती-वा नातिनि	नप्त्री[स] पौत्री[स] सुतात्मजा[स] ॥ २९ ॥
देवरानी जेठानी ।	(भार्य्या स्तु भ्रातृवर्गस्य) यातरः[स] (स्युः परस्परम्) ।
भौजाई ।	प्रजावती[स] भ्रातृजाया[स]
मामी ।	मातुलानी[स] (तु) मातुली[स] ॥ ३० ॥
पति और स्त्री की मा ।	(पतिपत्न्योः प्रसूः) श्वश्रूः[स]
पति और स्त्री का बाप	श्वशुर[पु] (स्तु पितातयोः) ।
काका वा चाचा ।	(पितुर्भ्राता) पितृव्यः[पु] (स्यात्)
मामा ।	(मातु र्भ्राता तु) मातुलः[पु] ॥ ३१ ॥
शाला वा सार ।	श्यालाः[पु] (स्यु र्भ्रातरः पत्न्याः)

१ औ–. २–तृ. ३–सूः. ४ मातृ. ५–सृ. ६–न्दृ.

अपत्यं, तोकं, ये २ पुत्र कन्या के नाम हैं और क्लीबलिङ्ग में हैं; औरसः, उरस्यः, "कोई पढते हैं "औरस्यः" ये २ सवर्ण विवाहित स्त्री में आप से उत्पन्न पुत्र के नाम हैं और बनाये हुये पुत्रों के नहीं हैं; तातः, जनकः, पिता, ये ३ पिता के नाम हैं, ॥ २८ ॥ जनयित्री, और भी "जनित्री" प्रसूः, माता, जननी, "और जननिः" ये ४ मा के नाम हैं; भगिनी, "उसी प्रकार भग्नी" स्वसा, ये २ बहिन के नाम हैं; जो पति की बहिन है उसे ननान्दा कहते हैं, "ननान्दृ और भी नन्दिनी" नप्त्री, "पौत्री, सुतात्मजा, नप्ता (–प्तृ)", ये ३ पुत्र और कन्या की लड़की के नाम हैं; ॥ २९ ॥ जो भाइयों की स्त्रियां हैं वे परस्पर यातरः कहलाती हैं याता (–तृ) प्रजावती, भ्रातृजाया, ये २ भाई की स्त्री के नाम हैं; मातुलानी, "और भी मातुला, मातुली" ये २ मामा की स्त्री के नाम हैं, ॥ ३० ॥ पति और पत्नी के उत्पन्न करनेवाली मा को श्वश्रूः कहते हैं, (एकं), और उन दोनों पति और पत्नी के पिता उन्हीं दोनों के श्वशुरः कहलाते हैं, (एकं), पिता का भाई पितृव्य कहलाता है, (एकं), माता का भाई मातुल कहलाता है, (एकं), ॥ ३१ ॥ पत्नी के भाई को श्यालाः कहते हैं, "एकव॰ श्यालः, और स्यालः",

	पु पु
देवर ।	(स्वामिनो) देवृ-देवरौ ।
	पु पु
भैने वा भांजा ।	स्वस्रीयो भागिनेयः (स्याज्)
	पु पु
दामाद ।	जामाता दुहितुःपतिः ॥ ३२ ॥
	पु १पु
आजा-वा पितामह	पितामहः पितृपिता
	पु
परआजा-वा प्रपिता० ।	२पु (तत्पिता) प्रपितामहः ।
नाना-वा मातामह ।	(मातुर्) मातामहा (द्येवं)
	पु ३पु
भाई बन्धु-वा जाति ।	सपिण्डा (स्तु) सनाभयः ॥ ३३ ॥
	पु पु पु ४पु
सगा भाई ।	समानोदर्य्य-सोदर्य्य-सगर्भ्य-सहजाः (समाः)
	पु पु पु पु पु ५पु
गोती भाई-वा एक गोत्र ।	सगोत्र-बान्धव-ज्ञाति-बन्धु-स्व-स्वजनाः (समाः) ॥ ३४ ॥
	न
उन सबों का समूह-वा भाव ।	ज्ञातेयं
	स
बन्धु समूह ।	बन्धुता (तेषां क्रमाद्भाव-समूहयोः) ।
	पु पु ६पु ७पु
दुलहा-वा पति ।	धवः प्रियः पति-र्भर्त्ता
	पु ८पु
जार ।	जार-(स्तू)-पपतिः (समौ) ॥ ३५ ॥
	पु
पति के जीते जार से उत्पन्न ।	(अमृते जारजः) कुण्डो

१—तृ. २—हृ. ३—भि. ४—ज. ५—न. ६ पति. ७ भर्तृ. ८ उ-.

पति के छोटे भाई को देवा, और देवरः, कहते हैं, "और भी देवः (—व) उसी प्रकार देवलः भी", स्वस्रीयः, "स्वस्रियः, स्वस्रेयः, स्त्री. स्वस्रीया" भागिनेयः, "स्त्री. भागिनेयी" ये २ बहिन के पुत्रके नाम हैं, दुहिता के पति को दुहितुपतिः और जामाता कहते हैं, 'और भी यामाता (—तृ); ॥ ३२ ॥ पितामहः, पितृपिता, ये २ पिता के पिता के नाम हैं, "स्त्री. पितामही" और पितामह के पिता को प्रपितामहः कहते हैं, "स्त्री. प्रपितामही", (एकं), इसी प्रकार माता के पिता आदि में मातामह आदि जानना चाहिये, जैसे माता का पिता मातामहः, (एकं), उस का पिता प्रमातामहः, (एकं), सपिण्डाः, "एकव. सपिण्डः" सनाभयः, ये २ सात पुरुष अवधि जाति के नाम हैं; "(समान एकः पिंडो देहो मूलपुरुषो निर्वाप्यो वा ऽस्य—सह पिण्डेन वर्त्तते इति सपिण्डाः, समानो नाभिर्मूलपुरुषो ऽस्य सनाभिः)" ॥ ३३ ॥ समानोदर्य्यः, सोदर्य्यः, सगर्भ्यः, सहजः, "और भी सोदरः, और सहोदरः" ये ४ सगे भाई के नाम हैं, सगोत्रः, बांधवः, ज्ञातिः, बन्धुः, स्वः, स्वजनः, ये ६ गोती भाई के नाम हैं, "(समानमेकं गोत्रमस्य सगोत्रः)" द्विव. स्वौ, ब.व. स्वाः, ॥ ३४ ॥ उन सबों के भाव और समूहों का क्रम से ज्ञातेयं और बन्धुता होती है, जैसे ज्ञातीनां भावो ज्ञातेयं, (एकं); बन्धूनां समूहो बन्धुता, (एकं); धवः, प्रियः, पतिः, भर्त्ता, ये ४ पति के नाम हैं, जारः, उपपतिः, ये २ पति से भिन्न पति के नाम हैं, ॥ ३५ ॥ विना पति के मरे जार से उत्पन्न पुत्र कुण्डः कहलाता है, (एकं); (कुण्डयते कुलमनेन इति कुण्डः) कुड़दाहे, स्त्री. कुण्डी,

	पु
पति के मरे जार से उत्पन्न ।	(मृते भर्त्तरि) गोलकः ।
	पु १पु
भतीजा ।	भ्रात्रीयो भ्रातृजो
	पु पु
बहिन भाई ।	भ्रातृ-भगिन्यौ भ्रातरौ (उभौ) ॥ ३६ ॥
	पु पु पु
मा-बाप ।	मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ (च तौ) ।
	पु पु
सासु-ससुर ।	श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ पु
कन्या-पुत्र ।	पुत्रौ (पुत्रश्च दुहिता च) ॥ ३७ ॥
	पु पु पु पु
स्त्री-पुरुष ।	दम्पती जम्पती जायापती भार्य्यापती (च तौ) ।
	पु पु पुन पुन
झरी-वा खेढ़ी वा जेर ।	गर्भाशयो जरायुः(स्याद्)उल्वं(च)कललो(ऽस्त्रियाम्) ।३८।
	पु पु
जन्ममास ।	सूतिमासो वैजननो पु पु
गर्भ ।	गर्भो भ्रूण (इमौ समौ) ।
	स पु पुन पु पुन
हिजरा ।	तृतीयाप्रकृतिः शण्ढः क्लीवं पण्डो नपुंसकम् ॥ ३६ ॥
	न न न
लड़कपन ।	शिशुत्वं शैशवं बाल्यं न न
जवानी ।	तारुण्यं यौवनं (समे) ।

१-ज.

पति के मरने पर जार से उत्पन्न पुत्र गोलकः, कहलाता है, "वा गोलः"; (एकं), भ्रात्रीयः, "उसी प्रकार भ्रातृव्यः" भ्रातृजः, ये २भाई के पुत्र के नाम हैं; भाई और बहिन ये दोनो भ्रातरौ कहलाते हैं, (एकं); उभौ इस पद से, साथ कहना यह सूचित होता है, जैसे (भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ) ॥ ३६ ॥ मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, "प्रसूजनयितारौ", ये द्विवचनान्त ४ मा के साथ पिता के नाम हैं, (माता च पिता च पितरौ) श्वश्रूश्वशुरौ, श्वशुरौ, ये २ साथ कहे सासु और श्वसुर के नाम हैं, इसी प्रकार पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ होता है, (एकं); ॥ ३७ ॥ दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती, ये ४ स्त्री पुरुष के नाम हैं, गर्भाशयः, जरायुः (स्) उल्वं, ये ३ जिस चाम से घिरा गर्भ कुक्षि में रहता है उस चाम के नाम हैं, (गर्भ आशेते ऽत्र गर्भाशयः) कललः, यह एक शुक्र और शोणित के एकत्र होने के प्रसिद्ध से पर्य्याय नहीं कहा, किन्तु अस्त्रीत्व मात्र कहा है, "कोई कहता है कि उल्व और कलल, ये २ पर्य्याय शब्द हैं"; ॥ ३८ ॥ सूतिमासः, वैजननः, ये २ जन्ममास के नाम हैं, "(जिस नवें वा दशवें महीने में उत्पन्न होता है उस का नाम है, और विशेष से उत्पन्न होता है जिस में उसे विजननः कहते हैं, विजननही वैजनन है)"; गर्भः, भ्रूणः, ये २ कुक्षि में स्थित जीव के नाम हैं, तृतीयाप्रकृतिः, "उसी प्रकार तृतीयप्रकृतिः" शण्ढः, "और षण्ढः, वा सण्डः, कोई पढ़ते हैं शण्डः", क्लीवः, पण्डः, नपुंसकः ये ५ नपुंसक के नाम हैं, तिन में प्रथमा प्रकृतिः स्त्री· द्वितीया पुमान् और तृतीया क्लीव है, ॥ ३६ ॥ शिशुत्वं, शैशवं, बाल्यं, ये ३ बालकपने के नाम हैं, तारुण्यं, यौवनं, ये २ युवावस्था के नाम हैं, ।

बुढ़ापा।	न न (स्यात्) स्थाविरं (तु) वृद्धत्वं
बुढ़ापा समूह।	पु न वृद्धसंघे (ऽपि) वार्द्धकम् ॥ ४० ॥
अति बुढ़ापा।	पुन पलितं (जरसा शौक्ल्यं केशादौ)
बूढ़ाई।	स स विस्रसा जरा।
दूध पीने वाले बच्चे	स स स स (स्याद्) उत्तानशया डिंभा स्तनपा (च) स्तनन्धयी ॥ ४१ ॥
बालक।	पु पु बाल (स्तु स्यान्) माणवको
युवा पुरुष।	पु १पु २पु वयस्थ स्तरुणो युवा।
बूढ़ा पुरुष।	३पु पु पु पु पु ४पु प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन् (ऽपि) ॥ ४२ ॥
अति बूढ़ा पुरुष।	५पु ६पु ७पु वर्षीयान् दशमी ज्यायान्
ज्येष्ठ भाई।	पु ८पु पु पूर्व्वज (स्त्व) ग्रियो ऽग्रजः।
छोटा भाई।	९पु पु पु पु पु जघन्यजे (स्युः) कनिष्ठ-यवीयो-ऽवरजा-ऽनुजाः ॥ ४३ ॥
दुर्बल।	पु पु पु अमांसो दुर्बल श्छातो

१ त–. २–न्. ३–स्. ४ जरत्. ५–यस्. ६–न्. ७–यस्. ८ अ–. ९–ज.

स्थाविरं, वृद्धत्वं, वार्धकं, "और भी वार्द्धक्यं" ये ३ बुढ़ाई के नाम हैं, इन में वृद्धसंघः, और वार्धकं ये २ वृद्धों के समूह के नाम हैं, ॥ ४० ॥ केश आदि में जो बुढ़ाई से शुक्लता आती है उसे पलितं "वा पलितः" कहते हैं; आदि पद से रोमों का ग्रहण है, विस्रसा, जरा, ये २ नो भी बुढ़ाई के नाम हैं, (विस्रस्यते ऽनया विस्रसा, जीर्यत्यङ्गमनया जरा) उत्तानशया, "वा पुं॰ उत्तानशयः" डिंभा, स्तनपा, स्तनंधयी, बाजे पढ़ते हैं "स्तनंधया" ये ४ स्तन पीनेवाले बच्चों के नाम हैं, इन का स्त्रीत्व निर्द्देश है, ॥ ४१ ॥ बालः, माणवकः, ये २ बालक के नाम हैं, स्त्री॰ बाला, सोरह वर्ष तक बाल अवस्था है, वयस्थः, तरुणः, युवा, ये ३ युवा के नाम हैं, प्रवयाः, स्थविरः, वृद्धः, जीनः, जीर्णः, जरन्, ये ६ बूढ़े के नाम हैं, ॥ ४२ ॥ वर्षीयान्, दशमी, ज्यायान्, ये ३ अति बूढ़े के नाम हैं, (अतिशयेन वृद्धो वर्षीयान्), द्विव॰ वर्षीयांसौ, पूर्वजः, अग्रियः, "उसी प्रकार अग्रीयः, और भी अग्रिमः, और अग्र्यः" अग्रजः, ये ३ जेठे भाई के नाम हैं, जघन्यजः, कनिष्ठः, "और कनीयान् (–यस्) वा कन्यसः" यवीयान् (–यस्) "उसी प्रकार यविष्ठः," यवीयः, अवरजः, अनुजः, ये ५ छोटे भाई के नाम हैं, ॥ ४३ ॥ अमांसः, दुर्बलः, छातः, और भी "शातः" ये ३ निर्बल के नाम हैं,

बलवान्-वा बलगर	१पु २पु ३पु बलवान् मांसलो ऽंसलः ।
त्वँदार-वा बड़ा पेट	पु पु ४पु पु पु तुंदिल स्तुन्दिक स्तुन्दी वृहत्कुक्षिः पिचिण्डिलः ॥ ४४ ॥
नकचपटा ।	पु पु पु ५पु अवटीटो ऽवनाट (श्चा) ऽवभ्रटो नतनासिके ।
अच्छे केश वाले ।	पु पु ६पु केशवः केशिकः केशी
सिमटे चाम वाले।	पु पु वलिनो वलिभः (समौ) ॥ ४५ ॥
विकल अंग ।	पु पु विकलाङ्ग (स्तु) पोगण्डः
वामन ।	पु पु पु खर्वो ह्रस्व (श्च) वामनः ।
तीखी नाक का ।	७पु पु खरणाः (स्यात्) खरणसो
नकटा ।	पु पु विग्र (स्तु) गतनासिकः ॥ ४६ ॥
लम्बी वा चिपटी नाक ।	८पु पु खुरणाः (स्यात्) खुरणसः
दूर २ जांघ का ।	पु पु प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।
ऊंची जांघ का ।	पु ९पु ऊर्द्ध्वज्ञु रूर्द्ध्वजानुः (स्यात्)
मिली जांघ का ।	पु पु संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

१–त्. २मां–. ३ अं–. ४–न्. ५–क. ६–न्. ७–णस्. ८–णस्. ९ऊ–.

बलवान्, मांसलः, अंसलः, ये ३ बलवान् के नाम हैं, "(अंसो बलमस्यास्तीत्यंसलः)" तुन्दिलः, "तुण्डिलः", तुन्दिकः, तुन्दिभः, "तुण्डिभः" तुन्दी, "तुण्डी" वृहत्कुक्षिः, पिचिण्डिलः, "पिचंडिलः", उसी प्रकार पिछिण्डवान्" (–त्) ये ५ बड़े पेट वाले के नाम हैं "(तुन्दमस्यास्तीति तुन्दिलः)" ॥ ४४ ॥ अवटीटः, अवनाटः, अवभ्रटः, नतनासिकः, ये ४ चिपटी नाकवाले के नाम हैं; केशवः, केशिकः, "केशवान्" केशी, ये ३ अच्छे केशवाले के नाम हैं, (प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य केशवः) वलिनः, वलिभः, और भी 'वलिमान्" (–त्) ये २ बुढ़ाई से सिमटे चामवाले के नाम हैं, "(वलिस्त्वक् संकोचोस्ति यस्य सः वलिनः)" ॥ ४५ ॥ विकलाङ्गः, पोगण्डः, "और भी अपोगण्डः", ये २ जो स्वभाव से छोटे अङ्गका है उस के नाम हैं, खर्वः. ह्रस्वः, वामनः, 'स्त्री. वामनी" ये ३ वामन के नाम हैं, खरणाः, खरणसः, ये २ तीखी नाकवाले के नाम हैं, "खरणाः, सान्त है", विग्रः, गतनासिकः, ये २ नकटा के नाम हैं, ॥ ४६ ॥ खुरणाः, खुरणसः, ये २ लम्बी वा चिपटी नाकवाले के नाम हैं, "(खुरः शफं तद्वन्नासिकास्य) द्विव. खुरणसौ" ; प्रज्ञुः, "और भी प्रज्ञः" और प्रगतजानुकः, "और प्रगतजानुः" ये २ जिस के जंघों के मध्य बड़ा अन्तर है उस के नाम हैं, ऊर्द्ध्वज्ञुः, "और ऊर्द्ध्वज्ञः" ऊर्द्ध्वजानुः, ये २ जिस के बैठे पर जंघा ऊपर को होती हैं उस के नाम हैं, संज्ञुः, "उसी प्रकार संज्ञः" संहतजानुकः, "और संहतजानुः" ये २ मिले हैं जंघे जिस के उस के नाम हैं, ॥ ४७ ॥

बहिरा ।	(स्याद्) एडे[१पु] बधिरः[पु]
कुबरा ।	कुब्जे[२पु] गडुलः[पु]
टूंटा ।	कुकरे[पु] कुणिः[पु] ।
छोटे अंग का ।	पृश्निर्[पु] ल्पतनौ[३पु]
पंगुला ।	श्रोणः[पु] पङ्गौ[पु]
मुड़ुआ ।	मुण्ड[पु] (स्तु) मुण्डिते[पु] ॥ ४८ ॥
कंजा वा कुंज़ा ।	वलिरः[पु] केकरे[पु]
लंगड़ा ।	खोडे[पु] खञ्ज[पु]
	(स्त्रिषु जरा ऽवराः) ।
लहसना ।	जटुलः[पु] कालकः[पु] पिप्लुस्[४पु]
तिलवाला ।	तिलक[पु] स्तिलकालकः[५पु] ॥ ४९ ॥

१—ड. २ कुब्ज. ३ अ—नु. ४—प्लु. ५ ति—.

एड़ः, बधिरः, ये २ बहिरे के नाम हैं; कुब्जः, गडुलः, "और गंडुरः, वा गण्डुलः" ये २ कूबड़े के नाम हैं; कुकरः कुणिः, "और भी कूणिः वा कोणिः" ये २ रोग आदि से दूषित हाथवाले के नाम हैं; पृश्निः, "उसी प्रकार पृष्णिः" अल्पतनुः, ये २ छोटे शरीरवाले के नाम हैं; श्रोणः, पंगुः, "स्त्री. पंगूः, ये २ जांघ से विकल अर्थात् पंगुल के नाम हैं; मुण्डः, "स्त्री॰ मुण्डा" मुण्डितः, ये २ मुड़े हुये के नाम हैं, ॥ ४८ ॥ वलिरः, केकरः, ये २ काना-कयरा-वा ऐंचाताना के नाम हैं, खोड़ः, "उसी प्रकार खोरः, वा खोलः" खञ्जः, ये २ लङ्गड़े के नाम हैं, त्रिषु जरावराः अर्थात् जरा शब्द से पहिले पढ़े उत्तानशय आदि और खञ्ज शब्दान्त तीनो लिङ्ग में हैं वा वाच्य लिङ्ग हैं; जटुलः, कालकः, पिप्लुः, ये ३ काले मसेवाले के नाम हैं, तिलकः, तिलकालकः, ये २ कृष्ण तिलवाले देह में के चिह्न के नाम हैं; ॥ ४९ ॥

॥ द्वितीय प्रकरण ॥

विना रोग का ।	न न अनामयं (स्याद्) आरोग्यं
इलाज की उपाय।	स स चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
औषध-वा इलाज।	न १न २न ३पु पु भेष-जौषध-भैषज्या न्यगदो जायु (रित्यपि) ॥ १ ॥
रोग-वा व्याधि ।	४स स ५पु पु पु पु ६पु (स्त्री) रु ग्रुजा (चो) पताप-रोग-व्याधि-गदा-मयाः ।
क्षयी ।	७पु पु पु (पुमान्) यक्ष्मा क्षयः शोषः
पीनस-वा नाकरोग	पु पु प्रतिश्याय (स्तु) पीनसः ॥ २ ॥
छींक ।	८स न पु (स्त्री) क्षुत् क्षुतं क्षवः (पुंसि)
खांसी ।	पु पु कास (स्तु) क्षवथुः (पुमान्) ।
सूजन ।	पु पु पु शोफ (स्तु) श्वयथुः शोथः
व्यवाई ।	पु स पादस्फोटो विपादिका ॥ ३ ॥
सेंहुआं ।	न ९न किलास-सिध्मे
खाजु ।	स १०न स स कच्छ्वां (तु) पाम पामा विचर्चिका ।

१ औ–. २–ज्य. ३ अ–. ४ रुज्. ५ उ–. ६ आ–. ७–न्. ८–त्. ९–न्. १०–न्.

अनामयं, आरोग्यं, ये २ निरोगी के नाम हैं, "(आमयस्याभावः अनामयं)" चिकित्सा, रुक्प्रतिक्रिया, ये २ रोग दूर करने के उपाय के नाम हैं; भेषजं, औषधं, भैषज्यं "(भेषं रोगं जयतीति भेषजम्)" अगदः, जायुः, ये ५ औषध के नाम हैं, ॥ १ ॥ रुक्, रुजा, उपतापः, रोगः, व्याधिः, गदः, आमयः, ये ७ रोगमात्र के नाम हैं; यक्ष्मा, "उसी प्रकार जक्ष्मा (–न्) वा यक्ष्मः (–क्ष्म) और राजयक्ष्मा (–न्) वा राजयक्ष्म (–न्)" क्षयः, शोषः, ये ३ क्षयी रोग के नाम हैं; प्रतिश्यायः, "और भी प्रतिश्या, और प्रतिस्यायः" पीनसः, "उसी प्रकार अपीनसः और पिनसः" ये २ नाक रोग वा पीनस के नाम हैं "वा यह वारंवार नासाजलस्रावी के नाम हैं" ॥ २ ॥ क्षुत्, क्षुतं, क्षवः, ये ३ छींक इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कासः, "और भी काशः" क्षवथुः, ये २ कास रोग के वा खांसी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; शोफः, श्वयथुः, शोथः, ये ३ शोथ के वा सूजन के नाम हैं; पादस्फोटः, विपादिका, ये २ पादस्फोट के वा व्यवाय इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ३ ॥ किलासं, सिध्म, ये २ श्वेत कुष्ठ के वा सेंहुआं के नाम हैं; "वा सिध्मं"; कच्छूः, पामा "(–मन् और–मा)" "द्विव. पामानौ, और पामे" पामा, विचर्चिका, ये ४ स्त्री लिङ्ग खर्जू विशेष के वा खाज इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ।

खजुआना ।	स स स कण्डूः खर्ज्जूः (श्च) कण्डूया
फोड़ा ।	पु पुस्न विस्फोटः पिटक (स्त्रिषु) ॥ ४ ॥
घाव ।	पुन न १न व्रणो (ऽस्त्रियाम्) ईर्मं मरुः
नसूर ।	पु (क्लीबे) नाडीव्रणः (पुमान्) ।
कोढ़ी ।	पु न कोठो मण्डलकं
श्वेत-कुष्ठ ।	न न कुष्ठं श्वित्रे
बावसीर ।	२न ३न दुर्नामका-ऽर्शसी ॥ ५ ॥
कब्ज ।	पु पु आनाह (स्तु) विबन्धः (स्याद्)
संग्रहणी ।	स स ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।
ऊच्छार-वा उलटी।	स स पु प्रच्छर्द्दिका वमि (श्च स्त्री पुमांस्तु) वमथुः (समाः) ॥ ६ ॥
व्याधियोंके भेद ।	स पु पु पु (व्याधिभेदा) विद्रधिः (स्त्री) ज्वर-मेह-भगन्दराः ।

१—अरुस्. २—क. ३—स्.

कण्डूः, खर्ज्जूः, कण्डूयाः, और भी "कण्डूतिः" ये ३ स्त्री लिङ्ग सूखी खाज के वा खजुआना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; विस्फोटः, पिटकः, "स्त्री॰ पिटका, कः, (का कं)" ये २ फोड़ा के नाम हैं, ॥ ४ ॥ व्रणः, ईर्मं, अरुः, "उसी प्रकार पुं॰ ईर्मः" ये ३ घाव के नाम हैं; जो व्रण सदा गलता है उसे नाड़ीव्रणः कहते हैं; वा नसूर का नाम है (एकं) कोठः, मण्डलकं, कुष्ठं, श्वित्रं, "और श्वेतं, वा श्वेत्रं" ये ४ कोढ़ी के नाम हैं; कोठ आदि दो मंडलाकार कुष्ठ के वा गजचर्म इस प्रसिद्ध के नाम हैं; और कुष्ठ आदि दो श्वेत कुष्ठ के नाम हैं यह एक का मत है" दुर्नामकः, अर्शः, "उसी प्रकार अर्सः (—स्) और भी पुं॰ अर्शः (—र्श) ये २ अर्श रोग के वा बावसीर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "वा मूलव्याधि अर्श है" ॥ ५ ॥ आनाहः, विबन्धः, ये २ मल और मूत्र के निरोध के वा मल बद्धरोग के नाम हैं; ग्रहणीरुक्, प्रवाहिका, "और भी ग्रहणी, और ग्रहणिः" ये २ संग्रहणी रोग के नाम हैं, (प्रकर्षेण वहति बहुस्रवति गुदमस्यां सा प्रवाहिका) प्रच्छर्द्दिका, "उसी प्रकार न॰छर्दिः (—स्), स्त्री॰ छर्दिः (—द) वा छर्दी आदि", वमिः, वमथुः, ये ३ वमन रोग वा उलटी के नाम हैं, और समानार्थक हैं, ॥ ६ ॥ अब व्याधियों के भेद कहते हैं, विद्रधिः, उदर आदि में गण्डभेद वा व्रयथिआ इस प्रसिद्ध का नाम है, ज्वरः, प्रसिद्ध है (मेहति मूत्रयति अनेन) मेहः, "और भी प्रमेहः" यह रक्तमेह शुभ्र प्रमेह इस आदि भेद से बहुत, प्रकार, का है, भगन्दरः, यह गुदा के निकट विस्फोटक विशेष वा फोड़ा का नाम है, "श्लीपदः, पादवल्मीकः, ये २ हाड़ारोग के नाम हैं; केशघ्नः, इन्द्रलुप्तकः, ये २ चांईचूंई के नाम हैं", ।

	स न
पथरी-वा मूत्रकृच्छ्र।	अश्मरी मूत्र कृच्छ्रं (स्यात्)
	(पूर्व्वे शुक्रावधे स्त्रिषु) ॥ ७ ॥
	पु १पु २पु ३पु पु
हकीम- वा वैद्य।	रोगहार्य्यं गदंकारो भिषग्-वैद्यौ चिकित्सके।
	पुसन पुसन पुसन पुसन
रोगरहित।	वार्त्तो निरामयः कल्प उल्लाघो (निर्गतो गदात्) ॥ ८ ॥
	पुसन पुसन
रोग से दुखी।	ग्लान-ग्लास्नू
	४पुसन पुसन पुसन पुसन
रोगी।	आमयावी विकृतो व्याधितो ऽपटुः।
	पुसन पुसन पुसन
	आतुरो ऽभ्यमितो ऽभ्यान्तः
	पुसन पुसन
खँसरावाला।	(समौ) पामन-कच्छुरौ ॥ ९ ॥
	पुसन ५पुसन
दादवाला।	दद्रुणो दद्रुरोगी (स्याद्)
	पुसन पुसन
बावसीरवाला।	अर्शरोगयुतो ऽर्शसः।

१ अ-. २ -षज्. ३ वैद्य. ४-न्. ५-न्.

अश्मरी, मूत्रकृच्छ्रं, ये २ मूत्रकृच्छ्र के नाम हैं, (अश्माकारं शुक्रं राति ददाति इति अश्मरी) इससे आगे शुक्र शब्द से पूर्व मूर्छितान्त ये तीनों लिङ्ग में अर्थात् वाच्यलिङ्ग हैं; ॥ ७ ॥ रोगहारी, (-न्) अगदंकारः, भिषक् (-ज्) वैद्यः, चिकित्सकः, ये ५ वैद्य के नाम हैं, "द्विव॰ रोगहारिणौ, द्विव॰ भिषजौ"; वार्त्तः, "स्त्री॰ वार्त्ता", निरामयः, कल्पः, ये ३ निरोगी के नाम हैं, जो रोग से छूट गया है उसे उल्लाघः कहते हैं, (एकं,) "यह भी पूर्वका पर्याय है" ॥ ८ ॥ ग्लानः, ग्लास्नुः, ये २ रोग आदि के वश से हर्षरहित के नाम हैं; आमयावी, विकृतः, व्याधितः, अपटुः, आतुरः, अभ्यमितः; अभ्यान्तः, ये ७ रोगी के नाम हैं; पामनः, कच्छुरः, ये २ खसरा, के नाम हैं, ॥ ९ ॥ दद्रुणः, और भी "दद्रूणः, स्त्री॰ दद्रूः, दर्द्रुः, वा दद्रूः, वा दद्रुः" दद्रुरोगी, ये २ दादवाले के नाम हैं, अर्शरोग से युत को अर्शसः, कहते हैं, (एकं), वा अर्शरोगयुतः, अर्शसः, ये २ पद हैं, ।

बाईवाला।	१पुसन २पुसन वातकी वातरोगी (स्यात्)
सितरसी।	पुसन पुसन सातिसारोऽतिसारकी ॥ १० ॥
चौंधरी।	पुसन पुसन पुसन पुसन (स्युः) क्लिन्नाक्षे चुल्ल-चिल्ल-पिल्लाः (क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी)।
पागल।	पुसन ३पुसन उन्मत्त उन्मादवति
कफी।	पुसन पुसन ४पुसन श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ११ ॥
कुबड़ा।	पुसन न्युब्जो (भुग्ने रुजा)
तुंदला।	पुसन पुसन (वृद्धनाभौ) तुण्डिल-तुण्डिभौ।
सेहुंआहा।	५पुसन पुसन किलासी सिध्मलो
अन्धा।	पुसन ६पुसन ऽन्धोऽदृङ्
मूर्छित।	पुसन पुसन पुसन मूर्च्छाले मूर्त्त-मूर्च्छितौ ॥ १२ ॥
काम।	न ७न न न न न शुक्रं तेजो-रेतसी (च) बीज-वीर्य्ये-न्द्रियाणि (च)।
पित्त।	पु न मायुः पित्तं
कफ।	पु ८पु कफः श्लेष्मा

१-न. २-न. ३-त. ४-न. ५-न. ६-श्र. ७-स. ८ न-.

वातकी, वातरोगी, ये २ बातरोगवाले के नाम हैं, सातिसारः, अतिसारकी, ये २ सितरसवाले के नाम हैं; ॥ १० ॥ क्लिन्नाक्षः, चुल्लः, चिल्लः, पिल्लः, ये ४ गीले आंखवाले के नाम हैं; उन्मत्तः, उन्मादवान्, ये २ बावले के नाम हैं, अर्थात् वात पित्त कफ के विकार से चित्त विभ्रमवाले के नाम हैं; श्लेष्मलः, श्लेष्मणः, कफी, ये ३ कफवाले के नाम हैं. ॥ ११ ॥ रोग से नष्ट टेढ़ी पीठ और अधोमुखवाले को न्युब्जः कहते हैं; वृद्धनाभिः, तुण्डिलः, "और भी तुन्दिलः" तुन्दिभः, ये ३ वात आदि से ऊंची नाभीवाले के नाम हैं, किलासी, सिध्मलः, ये २ पपड़ी के वा सेहुंआंवाले इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अन्धः, अदृक् (-श्,) ये २ अन्धे के नाम हैं, मूर्च्छालः, मूर्त्तः, मूर्छितः, ये ३ मूर्छावाले के नाम हैं, ॥ १२ ॥ शुक्रं, तेजः, रेतः, बीजं, वीर्यं, इन्द्रियं, ये ६ रेत के अर्थात् वीर्य के नाम हैं, मायुः, पित्तं, ये २ पित्त के नाम हैं, कफः, श्लेष्मा, ये २ कफ के नाम हैं,

	स १स
चाम वा खाल ।	(स्त्रियां तु) त्वग् सृग्धरा ॥ १३ ॥
	न न न न न न
मांस ।	पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्य मामिषम् ।
	न न पुसन
सूखा मांस ।	उत्तप्तं शुष्कमांसं (स्याद्) वल्लूरं (तत्त्रिलिङ्गकम्) ॥१४॥
	न न २न न न न न
रक्त ।	रुधिरे ऽसृ-ग्लोहिता-ऽस्र-रक्त-क्षतज-शोणितम् ।
	पुसन न
करेज ।	वुक्का ऽग्रमांसं
	न ३न
हृदय ।	हृदयं हृन्
	न स स
चर्वी ।	मेद (स्तु) वपा वसा ॥ १५ ॥
	स
गले की पिछली नस	(पश्चाद्ग्रीवा शिरा) मन्या
	स स स
नाड़ी ।	नाडी (तु) धमनिः सिरा ।
	न ४न
तिल ।	तिलकं क्लोम
	न न
गूदा ।	मस्तिष्कं गोर्दं

१ अ-. २ लो-. ३-त् वा-द्. ४-न्.

त्वक्, "(-च) और त्वचा, वा नपुं॰ त्वचं", असृग्धरा, वा "असृग्धारा" ये २ चाम के नाम हैं, ॥ १३ ॥ पिशितं, तरसं, मांसं, पललं, क्रव्यं, आमिषं, "और अमिषं" ये ६ मांस के नाम हैं; उत्तप्तं, शुष्कमांसं, वल्लूरं, "वल्लुरं, स्त्री॰ वल्लूरा" ये ३ सूखे मांस के नाम हैं; ॥ १४ ॥ रुधिरं, असृक्, (-ज्) लोहितं, अस्रं, "वाजे पढ़ते हैं अस्रं", रक्तं, क्षतजं, शोणितं, ये ७ रक्त के नाम हैं; द्वीव॰ "असज्ञौ" वुक्का "वुक्कः, वा वुक्का, (-न्)", स्त्री॰ वुक्का, वा वुक्की, न॰ वुक्कं, वा वुक्क (-न्) और भी वृक्कः, वा वृक्का, वृक्कं, और वूक्कः, वूक्का, वक्कं, वा वक्का, वक्क (-न्) और वूक्का, वूक्क (-न्)" उसी प्रकार अग्रमासं, वा "वुक्काग्रमासं" ये २ हृदय के भीतर जो पद्माकार मांस है उसके नाम हैं वा कलेजा इस प्रसिद्ध के नाम हैं; हृदयं, हृत्, ये २ हृदय के नाम हैं; वा वुक्का आदि ४ समानार्थक हैं, यह एक का मत है, हृदी, हृन्दि; मेदः (-स) वा पुं॰ मेदः (-द), वपा, वसा, ये ३ मांस से उत्पन्न चिकनाहट के वा चर्वी के नाम हैं; ॥ १५ ॥ ग्रीवा का शिर ग्रीवाशिरा है और जो पीछे स्थित ग्रीवाशिरा है उसे मन्या कहते हैं, अर्थात् गले के पीछे की नस का नाम है, नाड़ी, वा "नाडिः" धमनिः, "वा धमनी" शिरा, "वा सिरा" ये ३ नाड़ी के नाम हैं; तिलकं, क्लोम, "और भी क्लोमं (-म)" ये २ मांस के पिंड विशेष के वा तिल के नाम हैं, मस्तिष्कं, गोर्दं, ये २ माथे में उत्पन्न घी के समान चिकनाहट वा गूदा के नाम हैं,

कान आदि का मल।	न पुन किट्टं मलो (ऽस्त्रियाम्) ॥ १६ ॥
आंत।	न १पुन अंत्रं पुरीतद्
पिलही।	पु २पु गुल्म (स्तु) प्लीहा (पुंस्य)
नस।	स (ऽथ) वस्नसा।
	स स्नायुः (स्त्रियां)
कलेजा विशेष।	न ३न कालखण्ड-यकृती (तु समे इमे) ॥ १७ ॥
लार-वा थूंक।	स स स सृणिका स्यन्दिनी लाला
कींचर।	स दूषिका (नेत्रयो र्मलम्)।
मूत।	न पु मूत्रं प्रस्राव
गुह।	पु पु पु पु उच्चारा-ऽवस्करौ शमलं शकृत् ॥ १८ ॥
	न न पुन स स गूथं पुरीषं वर्च्चस्क (मस्त्री) विष्ठा-विषौ (स्त्रियौ)।
कपार।	पु पुन (स्याद्) कर्प्परः कपालो (ऽस्त्री)
हाड़ वा अस्थि।	न न ४न कीकसं कुल्य मस्थि (च) ॥ १९ ॥
पिंजरा-वा पांजर।	पु (स्या च्छरीरास्थ्नि) कंकालः

१-त्. २-न्. ३-त्. ४ अ-.

किट्टं, मलः, ये २ कान आदि के निकले मलके नाम हैं; ॥ १६ ॥ अंत्रं, "वा आंत्रं" पुरीतत्, "उसी प्रकार परितत्" ये २ आंतड़ी के नाम हैं; गुल्मः, प्लीहा, "वा प्लिहा (-न्) और भी स्त्री॰ प्लीहा" ये २ बांयें कोख में स्थित मांसपिंड विशेष वा पिलही के नाम हैं; वस्नसा, स्नायुः, "उसी प्रकार स्नसा" ये २ अङ्ग और प्रत्यङ्ग के सन्धिबन्धन की नाड़ी वा नस इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कालखण्डं, यकृत्, ये २ दाहिने कोख में स्थित मांसपिंड वा कलेजा के नाम हैं, ॥ १७ ॥ सृणिका, "वा सृणीका" स्यन्दिनी, लाला, ये ३ लार वा थूंक इस प्रसिद्ध के नाम हैं; दूषिका, यह एक नेत्रों के मलका नाम है, "और दूषी, वा दूषीका", "सिंघाणं यह एक नाक के मल का नाम है, पिञ्जूषः यह १ कानों के मल का नाम है", मूत्रं, प्रस्रावः, ये २ मूत्र के नाम हैं, उच्चारः, अवस्करः, शमलं, शकृत्, "और सकृत्" ॥ १८ ॥ पुरीषं, गूथं, वर्चस्कं, विष्टा, विट, "विष्, वा विश, और भी विषा" ये ६ विष्ठा के नाम हैं, (उच्चार्यते त्यज्यते इत्युच्चारः, अवकीर्यते अधः क्षिप्यते इति अवस्करः) कर्परः, कपालः ये २ शिर के हड्डी के टुकड़े के नाम हैं, कीकसं, कुल्यं, अस्थि, ये ३ अस्थिमात्र के नाम हैं, ॥ १९ ॥ कंकालः यह एक शरीर में प्राप्त अस्थि के पिंजरे का नाम है,

रीर वा रीड़ ।	स (पृष्ठास्थि तु) कशेरुका ।
खोपड़ी ।	१न स शिरोऽस्थि (तु) करोटिः (स्त्री)
पंशुड़ी ।	२न स पार्श्वास्थनि (तु) पर्शुका ॥ २० ॥
अंग ।	न पु पु पु अङ्गं प्रतीको ऽवयवो ऽपघनो
देह ।	न पु (ऽथ) कलेवरम् । न ३न न न ४न गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ २१ ॥ पु पुन स स ५स कायो देहः (क्लीवपुंसोः स्त्रियां) मूर्त्ति स्तनु स्तनूः ।
पैर की अगाड़ी ।	न न पादाग्रं प्रपदं
पैर वा पांव ।	पु पु पु ६पुन पादः पदं घ्रि श्चरणो (ऽस्त्रियाम्) ॥ २२ ॥
टखना वा पाव की गांठि ।	स पुन (तद्ग्रंथी) घुटिके गुल्फौ
एड़ी ।	पु (पुमान्) पार्ष्णि (र्‌घ स्तयोः)
जंघा ।	स स जंघा (तु) प्रसृता
जानू वा घुटुनू ।	पुन ७पुन ८पुन जानू रुपर्वा ऽष्ठीवद् (ऽस्त्रियाम्) ॥ २३ ॥
निरोह ।	न ९पु सक्थि (क्लीवे पुमान्) ऊरुस्

१—न. २—न्. ३—स्. ४—न्. ५तनू. ६च—. ७ऊ—न्. ८—त्. ९—रु.

कशेरुका, यह एक पीठ के मध्यगत अस्थिदंड का नाम है; वा रीर इस प्रसिद्ध का नाम है, "और कसेरुका", करोटिः, "वा करोटी, और भी नपुं॰ करोटं" यह एक शिर में प्राप्त अस्थिसमुदाय वा खोपड़ी का नाम है; पर्शुका, यह एक पांजरे के अस्थि का नाम है, "और भी पार्शुका, और पर्शुः" ॥ २० ॥ अंगं, प्रतीकः, अवयवः, अपघनः, ये ४ देह के अवयव, अर्थात् हिस्सो के नाम हैं; कलेवरं, गात्रं, वपुः, संहननं, शरीरं, वर्ष्मं, विग्रहः, ॥ २१ ॥ कायः, देहः, मूर्त्तिः, तनुः, (—न और—नुस्) तनूः, ये १२ देह के नाम हैं; पादाग्रं, प्रपदं, ये २ पांव के अग्रभाग के नाम हैं, पादः, "पत्, (—द्) और पदः, (—द) और भी नपुं॰ पादं, और पदं", पत्, अंघ्रिः, "अंघ्रिः" चरणः, ये ४ चरण के नाम हैं, ॥ २२ ॥ पाद के किनारे के गांठि विशेष को घुटिका "और घटिः, वा घुटि, और भी घुटः", और गुल्फ; कहते हैं, (द्वयं), गुल्फ और घुटिका के नीचे के प्रदेश को पार्ष्णिः कहते हैं वा एड़ी इस प्रसिद्ध का नाम है; जंघा, प्रसृता, ये २ जंघा के नाम हैं; "पुं॰ जानुः, ऊरुपर्वा, अष्ठीवान्", न॰ जानु, ऊरुपर्वं, अष्ठीवत्, ये ३ जानु और ऊरु के संधि के नाम हैं, वा घुटुनू इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २३ ॥ सक्थिः, ऊरुः, ये २ जानू के ऊपर भाग के वा निरोह के नाम हैं,

ठेहुनी वा घुठ्नू ।	(तत्संधिः पुंसि) वंक्षणः ।
गुदा ।	गुदं (त्व्) पानं पायु (र्ना)
मूत्रस्थान ।	वस्ति (र्नाभेरधो द्वयोः) ॥ २४ ॥
कटि-वा कमर ।	कटो (ना) श्रोणिफलकं कटिः श्रोणी ककुद्मती ।
स्त्री का चूतर ।	(पश्चान्) नितम्बः (स्त्रीकट्याः)
स्त्रीकी-नाभी-वा पेडू ।	(क्लीबे तु) जघनं (पुरः) ॥ २५ ॥
नितम्ब का गड़हा ।	(कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने) कुकुन्दरे ।
कूल वा कुल्ला ।	(स्त्रियां) स्फिचौ कटिप्रोथाव्
भग लिङ्ग ।	उपस्थो (वक्ष्यमाणयोः) ॥ २६ ॥
योनि ।	भगं योनि (र्द्वयोः)
लिङ्ग ।	शिश्नो मेढ्रो मेहन-शेफसी ।
अण्ड-वा पेल्हर ।	मुष्को ऽण्डकोषो वृषणः
मेंकड़ ।	(पृष्ठवंशाधरे) त्रिकम् ॥ २७ ॥

१–अ. २–च.

उस ऊरु की सन्धि को वंक्षणः कहते हैं, अर्थात् ठेहुनीवा घुठुनू का नाम है (एकं); गुदं, अपानं, पायुः, ये ३ गुदा–वा विष्ठा निकलने के द्वार के नाम हैं; वस्तिः यह एक स्त्री० और पुल्लिंग नाभी के नीचे भग में स्थितमूत्राशय का नाम है, "और भी स्त्री० वस्ती" ॥ २४ ॥ कटः, श्रोणिफलकं, कटिः, श्रोणी, ककुद्मती, उसी प्रकार श्रोणीफलं, "और कटी" वा श्रोणिः, ये ५ कटि के नाम हैं, स्त्री के कमर के पीछे के भाग को नितम्बः कहते हैं, "(निभृतं तम्यते कामुकैः नितम्बः)" स्त्री के कमर के अग्रभाग को जघनं कहते हैं, वा नाभी को कहते हैं, ॥ २५ ॥ नितम्ब में रहनेवाले और पीठ के वांस के अधोभाग में विद्यमान कूप रूप गड़हों को द्वयहीने अर्थात् स्त्री० पुं० से हीन क्लीव में कुकुंदरं कहते हैं, "और भी ककुन्दरं; (एकं); स्फिचौ, कटिप्रोथौ, "एक वचन में कटिप्रोथः, उसी प्रकार कटिः और प्रोथः" ये २ कटि में रहनेवाले मांस पिंड के नाम हैं वा कुल्ला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वक्ष्यमाण भग और शिश्न को उपस्थः कहते हैं, (एकं) ॥ २६ ॥ भगं, योनिः, "और स्त्री० योनी" ये २ स्त्री के उपस्थ के नाम हैं, शिश्नः, मेढ्रः, मेहनं, शेफः (–स्) वा शेपः (–स्), और पुं० शेफः (–फ) शेपः (–प) और शेवः", ये ४ शिश्न के नाम हैं, मुष्कः, अण्डकोषः, "और भी अण्डकोशः" वृषणः, ये ३ अण्डकोश के नाम हैं, पीठ के बांस के नीचे तीन हड्डी से बने स्थान को त्रिकं कहते हैं, वा मेंकड़ कहते हैं, ॥ २७ ॥

	पु पु पुन १न न
पेट ।	पिचिण्ड-कुक्षी जठरो दरं तुन्दं
	पु पु
कुच ।	स्तनौ कुचौ ।
	पुन न
चूंची की ढेपुनी ।	चूचुकं (तु) कुचाग्रं (स्यान्)
	स्रन न
कोरा-वा गोद ।	(न ना) क्रोडं भुजान्तरम् ॥ २८ ॥
	२न न न
छाती ।	उरो वत्स (ञ्च) वक्षश् (च)
	न
पीठ ।	पृष्ठं (तु चरमं तनोः) ।
	पु ३न पुन
कन्धा ।	स्कन्धो भुजशिरो ऽसो (ऽस्त्री)
	न
हंसुली ।	(सन्धी तस्यैव) जत्रुणी ॥ २६ ॥
	न पु
कांख ।	बाहुमूले (उभौ) कक्षौ
	पुन
बगल ।	पार्श्व (मस्त्री तयो रधः) ।
	पुन पुन पुन
मध्य-शरीर-वा कमर।	मध्यम (ञ्चा) ऽवलग्न (ञ्च) मध्यो (ऽस्त्री)
वांह-वा भुजा ।	(द्वौ परौ द्वयोः) ॥ ३० ॥
	पुस पुस पु ४पु
	भुज-बाहू प्रवेष्टो दोः
	पुस पुस
गांठि-वा केहुनी वा, कोहनी ।	(स्यात्) कफोणि (स्तु) कूर्परः ।

१उ—. २—स. ३—स. ४—स.

पिचिण्डः, "और भी पिचण्डः" कुक्षिः, "और कुक्षः" जठरं, उदरं, तुंदं, ये ५ जठर अर्थात् पेट के नाम हैं, स्तनः, कुचः, ये २ छाती में के उठे वा चूंची इस प्रसिद्ध के नाम हैं, चूचुकं, "और भी चुचुकं,—कः" कुचाग्रं, ये २ चूंचों की ढेपुनी वा अग्रभाग के नाम हैं, (चूष्यते पीयते इति चूचुकं); क्रोडं, भुजान्तरं, ये २ गोदी के—वा कोरां के नाम हैं ॥ २८ ॥ उरः, वत्सं, वक्षः, ये ३ छाती के नाम हैं, वा ५ छाती के पर्य्याय हैं. किसी के मत से इनके मध्य क्रोड़ंना नहीं है किन्तु स्त्री॰ नपुंसक है, "स्त्री॰ मे तो क्रोड़ा", वक्षः (—स्) "शरीर का चरम अर्थात् पीछे के भाग को पृष्ठं कहते हैं, (एकं); स्कन्धः (—ध) वा न॰ स्कन्धः (स्)"; भुजशिरः, अंसः, "वा अंशः" ये ३ भुजा के शिर के वा कन्धा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, उस कन्धे की सन्धी को जत्रुणी कहते हैं, "ए.व. जत्रु" (एकं) ॥ २६ ॥ बाहुमूलं, कक्षः, ये २ कक्ष वा कांख के नाम हैं, उन दोनो कांखों के नीचे के भाग को पार्श्वं कहते हैं, मध्यमं, अवलग्नं, "उसी प्रकार विलग्नं" मध्यः, ये ३ शरीर के मध्य के नाम हैं, वा कमर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अस्त्री यह पद मध्यम आदि पदो में भी युक्त होता है, आगे जो भुज और बाहू शब्द पढ़े हैं वे स्त्री॰ और पुंस में हैं ॥ ३० ॥ भुजः, "स्त्री॰ भुजा" पुं॰ और स्त्री॰ बाहुः, "और भी पुं॰ बाहः, स्त्री॰ बाहा" प्रवेष्टः, दोः, "स्त्री॰ दोषा" ये ४ भुजा वा बाहू के नाम हैं, कफोणिः, और कफणिः, स्त्री॰ कफोणी, और कफणी" कूर्परः, "स्त्री॰ कूपरा" ये २ केहुनी वा कोहनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ।

गांठि के ऊपर।	पु (अस्यो परि) प्रगण्डः (स्यात्)
गांठि के नीचे।	पु प्रकोष्ठ (स्तस्य चा प्यधः) ॥ ३१ ॥
मणिबन्ध।	पु (मणिबन्धा दाकनिष्ठं करस्य) करभो (वहिः)।
हाथ।	पु पु १पु पञ्चशाखः शयः पाणिस्
अंगुठा के पास की	स स तर्ज्जनी (स्यात्) प्रदेशिनी ॥ ३२ ॥
अंगुली।	स स अङ्गुल्यः करशाखाः (स्युः)
अंगुठा।	२पु स (पुंस्यं) गुष्ठः प्रदेशिनी।
क्रम से सब-अंगुलियां।	स स स मध्यमा ऽनामिका (चापि) कनिष्ठा (चेति ताः क्रमात्) ॥३३॥
नख-वा नह।	पु पु पुन पुन पुनर्भवः कररुहो नखो (ऽस्त्रि) नखरो (ऽस्त्रियाम्)।
तीन प्रमाणविशेष	पु पु पु प्रादेश-ताल-गोकर्णा (स्तर्ज्जन्यादियुते तते) ॥ ३४ ॥
प्रमाणविशेष।	पुस पु (अंगुष्ठे स कनिष्ठे स्याद्) वितस्ति र्द्वादशांगुलः।

१—णिः. २ अ—.

इस कूर्पर के ऊपर के भाग को प्रगण्डः कहते हैं; उसी कूर्पर के अधोभाग को प्रकोष्ठः कहते हैं; (एकैकं) ॥ ३१ ॥ प्रकोष्ठ और हाथ की सन्धि को मणिवन्धः, कहते हैं, उस मणिवन्ध से लेकर कनिष्ठा पर्य्यन्त हाथ के मोटे बाहर के भाग को करभः कहते हैं; पञ्चशाखः, शयः, "और शमः, पाणिः शमः शयो हस्त इत्यमरमाला", पाणिः, ये ३ हाथ के नाम हैं, तर्ज्जनी, प्रदेशिनी, "और भी प्रदेशनी" ये २ अगूंठे के निकट रहनेवाली अंगुलि के नाम हैं, ॥ ३२ ॥ अंगुल्यः, "ए॰ व॰ अंगुलिः, और भी अंगुली, अंगुरिः, (—री) वा अंगुलः और अंगुलं", करशाखाः, ये २ अगुली मात्र के नाम हैं, वे अंगुलीयां क्रम से अंगुष्ठः, प्रदेशिनी, मध्यमा, अनामिका, "और अनामा" कनिष्ठिका और भी "कन्यसा, कनीनी, वा कनीनिका" इन नामों से कही जाती हैं, (एकैकं) ॥ ३३ ॥ पुनर्भवः "और भी पुनर्नवः", कररुहः, नखः, नखरः, "और भी स्त्री॰ नखरा" ये ४ नख के नाम हैं, तर्ज्जनी आदि तीन अगुंलियों से युत और फैले अंगूठे को प्रादेश आदि क्रम से कहते हैं, जैसे तर्जनी सहित फैले अगूंठे को प्रादेशः, वा प्रदेशः; ऐसेही मध्यमा सहित फैले अंगूठे को तालः, और अनामिका सहित फैले अंगूठे को गोकर्णः ॥ ३४ ॥ कनिष्टा सहित फैले अंगूठे को वितस्तिः, द्वादशाङ्गुलः, ये २ वित्ता—वा वीता—वा विलांद—वा विलस्त के नाम हैं, ।

खुला हाथ-वा चटकना।	पु पु पु (पाणौ) चपेट-प्रतल-प्रहस्ता (विस्तृताङ्गुलौ) ॥ ३५ ॥
दुहत्या चटकना।	पु (द्वौ संहतौ) संहतलः (प्रतलौ वामदक्षिणौ)।
पसर।	पु (पाणि र्निकुब्जः) प्रसृतस्
अंजुरी।	पु (तौ युतावञ्) अञ्जलिः (पुमान्) ॥ ३६ ॥
हाथ।	पु (प्रकोष्ठे विस्तृतकरे) हस्तो
मूठी।	(मुष्ट्या तु बद्धया)।
	पुस सरत्निः (स्याद्)
कानी उंगुली के छोड़ मूठी।	पुस अरत्नि-(स्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना) ॥ ३७ ॥
फैला हाथ।	पु व्यामो (बाह्वोः सकरयो स्ततयो स्तिर्य्यगंतरम्)।
ऊपर उठा हाथ।	पुसन (ऊर्द्ध्वविस्तृतदोः पाणिनृमाने) पौरुषं (त्रिषु) ॥ ३८ ॥
कण्ठ।	पुसन पु कण्ठो गलो
गला।	१स स २स (ऽथ) ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरे (त्यपि)।

१ ग्रीवा-. २-रा.

चपेटः, "और भी चर्पटः, और चपटः", प्रतलः, "उसी प्रकार तलं" प्रहस्तः, ये ३ फैली अंगुली के हाथ के नाम हैं, ॥ ३५ ॥ वाम और दक्षिण दोनो हाथ तर ऊपर होवें तो संहतलः, "वा सिंहतलः" कहते हैं, सव टेढ़ा किया हाथ प्रसृतः कहलाता है, "और भी प्रसृतिः" दो दो प्रसृत मिलें तो अंजलिः, कहलाता है, ॥ ३६ ॥ फैलाया है हाथ जिसमे ऐसे प्रकोष्ठ अर्थात् कूर्पर के नीचे के भाग को हस्तः, अर्थात् हाथ कहते हैं, यह एक चोवीस अंगुल प्रमाण का होता है, वही फिर वंधी मूठी से जाना गया रत्निः कहलाता है, मुंड़ा हाथ इस प्रसिद्ध का नाम है, सरत्निः भी; निष्कनिष्टेन अर्थात् फैली कनिष्ठिका से युक्त मूठी से उपलक्षित हाथ अरत्निः कहलाता है, (एकं) ॥ ३७ ॥ टेढ़े फैले फैले कर सहित वाहुओं के अन्तर को व्यामः कहते हैं, ऊपर को फैलाया है भुजा और पाणी को जिसने उस पुरुष का जो प्रमाण है उसे पौरुषं कहते हैं, यह भी तीनो लिङ्ग है, "स्त्री. पौरुषी" ॥ ३८ ॥ कण्ठः, गलः, "कण्ठी, वा कण्ठा, कण्ठं", ये २ गले के अग्रभाग को कहते हैं, "नटई वा गटई इस प्रसिद्ध के नाम हैं", ग्रीवा, शिरोधिः, कन्धरा, "कन्धरः" ये ३ गले को कहते हैं, ।

रेखा ।	स कम्बुग्रीवा (त्रिरेखा सा)
घांटी ।	पुस १स स ऽवटु घाटा कृकाटिका ॥ ३९ ॥
मुख-वा मुंह ।	न २न न न ३न न न वक्त्रा-स्ये वदनं तुण्ड माननं लपनं मुखम् ।
नाक ।	न स स स स (क्लीवे) घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा (च) नासिका ॥ ४० ॥
ओठ वा होठ ।	पु पु पु ४न ओष्ठा-ऽधरौ (तु) रदनच्छदौ दशनवाससी ।
ठाढ़ी ।	न (अधः स्याच्) चिबुकं
गाल ।	पु पु गण्डौ कपोलौ
कनपटी ।	पुस (तत्परो) हनुः ॥ ४१ ॥
दांत ।	पु पुन पु ५पु रदना-दशना-दन्ता-रदास्
तालू ।	म म तालु (तु) काकुदम् ।
जीभ ।	स स स रसज्ञा रसना जिह्वा
ओठ का किनारा।	न (प्रांतावो ष्ठस्य) सृक्किणी ॥ ४२ ॥
ललाट ।	पु पु ६पु ललाट मलिकं गोधिर्

१ घा–. २ आस्य. ३ आ–. ४–स. ५–द. ६ गोधि.

ग्रीवा जो तीन रेखा से युक्त है वह कम्बुग्रीवा कहलाती है, (एकं); अवटुः, घाटा, कृकाटिका, ये ३ गला और शिर के सन्धि के पीछे के भाग के नाम हैं, वा, गले में ऊंचे के वा घांटी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ३९ ॥ वक्त्रं, आस्यं, वदनं, तुण्डं, आननं, लपनं, मुखं, ये ७ मुख के नाम हैं, "(अस्यन्त्युच्चारयन्ति वर्णाननेन, अस्य ते ग्रासो वा ऽस्मिन् तदास्यं, ण्यत्)" घ्राणं, गन्धवहा, घोणा, नासा, "और नसा, वा नस्या", नासिका, ये ५ नाक के नाम हैं, ॥ ४० ॥ ओष्ठः, अधरः, "ओष्ठौ, अधरौ, और ओष्ठाधरौ" रदनच्छदः, दशनवासः, ये ४ ओष्ठ के नाम हैं, निचले अधर के अधोभाग को चिबुकं कहते हैं, "और भी चिबुः", (एकं); गंडः, कपोलः, ये २ कपोल वा गाल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तिनमें नेत्र और कपोल के मध्यदेश को गंडः कहते हैं, उन कपोलों से पर और चिबुक के अधोभाग को हनुः, "स्त्री॰ हनूः" कहते हैं ॥ ४१ ॥ रदनः, दशनः, (–नं), आदि, दंतः, "वा दत्", रदः, ये ४ दांत के नाम हैं, और बहुवचन हैं; तालु, काकुदं ये २ तारू के नाम हैं, रसज्ञा, रसना, "रशना, और न॰ रसनं" जिह्वा, "पु॰ जिह्वः" ये ३ जिह्वा, वा जीभ के नाम हैं, वाम और दक्षिण दोनों ओष्ठ के किनारों को सृक्किणी कहते हैं, "एकवचन सृक्क (–न), सृक्क (–न्), वा सृक्कि (–न) और सृक्कं, (–क्क) सृक्कं वा सृक्कि और भी स्त्री॰ सृक्कणी", ॥ ४२ ॥ ललाटं, अलिकं, "उसी प्रकार अलीकं, गोधिः, ये ३ भाल वा माथा के नाम हैं,

अर्थ	मूल
भौंह ।	१स (ऊर्द्धं दृग्भ्यां) भ्रुवौ (स्त्रियौ) ।
भौंहों का बीच ।	पुन कूर्चं (मस्त्री) (भ्रुवो र्मध्यम्)
आंखि का तिल ।	स स तारका (ऽक्ष्णः) कनीनिका ॥ ४३ ॥
आंखि ।	न न न २न न न लोचनं नयनं नेत्र मीक्षणं चक्षु रक्षिणी । ३स स दृ-ग्दृष्टी (चा)
आंसु ।	न न न न ४न ऽश्रु नेत्राम्बु रोदनं (चा) ऽस्र मस्रु (च) ॥ ४४ ॥
आंखिका किनारा ।	पु अपांगौ (नेत्रयो रन्तौ)
किनारे से देखना ।	पु कटाक्षो (ऽपाङ्गदर्शने) ।
कान ।	पु ५पु न स पुन ६न कर्ण-शब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः (स्त्री) श्रवणं श्रवः ॥ ४५ ॥
शिर ।	न ७न न ८पु पुन उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्द्धा (ना) मस्तको (ऽस्त्रियाम्) ।
वार-वा वाल ।	पु पु पु पु पु पु चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ४६ ॥
वालों का झुण्ड ।	न न (तद्वृन्दे) कैशिकं कैश्यम्
टेढ़े वाल ।	पु ९पु अलका श्चूर्णकुन्तलाः ।

१भ्रू- २ ई–. ३ दृश्. ४ असु. ५–ह. ६–स्. ७–स्. ८–न. ९ चू–.

आंखों के ऊपर के भाग को भ्रुवौ कहते हैं, (एकं) एकव॰ भ्रूः, नाक के ऊपर भौहों के मध्य को कूर्च कहते हैं, आंखों के मध्य जो कनीनिका कृष्णमण्डल है, उसे तारका और कनीनिका, कहते हैं. ॥ ४३ ॥ लोचनं, नयनं. नेत्रं, ईक्षणं, चक्षुः, "(–स्), चक्षु (–क्षु)" अक्षि, "याजे पढ़ते हैं, अक्षं" दृक्, दृष्टिः,ये ८ नेत्र के नाम हैं, अश्रु, नेत्राम्बु, रोदनं, अस्रं, "वा अश्रं" अस्रु, ये ५ नेत्र के जल के नाम हैं, ॥ ४४ ॥ नेत्रों के अन्तों को अपांगो, कहते हैं, अपांग से देखना और चेष्टा करने को कटाक्षः कहते हैं, (एकैकं), "ए॰व॰ अपांगः, और भी काक्षः" कर्णः, शब्दग्रहः, श्रोत्रं, श्रुतिः, श्रवणं, श्रवः, "वा श्रोत्रं, पु॰ श्रवः (–व)" ये ६ कान के नाम हैं, द्विव॰ श्रवसी, ॥ ४५ ॥ उत्तमांगं, शिरः, "और भी पुं॰ शिरः, (–र)" शीर्षं, मूर्धा, मस्तकः, "उसी प्रकार मस्तः", ये ५ शिर के नाम हैं, ना पुमान्, चिकुरः, "चिकूरः" कुन्तलः, वालः, कचः, केशः, शिरोरुहः, ये ६ केश के नाम हैं. ॥ ४६ ॥ कैशिकं, कैश्यं, ये २ केशों के समूह के नाम हैं, अलकाः, "ए॰व॰ अलकः, (–कं)", चूर्णकुन्तलाः, ये २ टेढ़े केशों के नाम हैं, ।

लिलार पर झुल्फे ।	पु (ते ललाटे) भ्रमरका:
जुलुफ-वा-फी ।	पु पु काकपक्ष: शिखण्डक: ॥ ४७ ॥
पटिया ।	स पु कवरी केशवेशो
जूरा ।	पु (ऽथ) धम्मिल्ल: (संयता: कचा:) ।
चोटी ।	स स स शिखा चूडा केशपाशी
जटा ।	स स (व्रतिन स्तु) जटा सटा ॥ ४८ ॥
जुटुरी ।	स स वेणि: प्रवेणि:
साफ ।	पु १पु शीर्षण्य-शिरस्यो (विशदे कचे) ।
केशसमूह ।	पु पु पु पाश: पक्ष (श्च) हस्त (श्च कलापार्था: कचात्परे) ॥ ४९ ॥
रोम ।	पुन २न ३न तनूरुहं रोम लोम
मोछ ।	४न (तद्वृद्धो) श्मश्रु (पुंमुखे) ।

१–स्य. २–न. ३–न. ४–श्रु वा–श्रुन.

वे अलक ललाट में लम्बमान भ्रमरका: कहलाते हैं, (एकं) काकपक्ष:, शिखण्डक:, "वा शिखाण्डक:, और शिखण्ड:" ये २ कुमार के चूड़ा वा जुलुफी के नाम हैं ॥ ४७ ॥ कवरी, "और पुं· कवर:" वा न· (–रं); केशवेश:, ये २ केश बांधने की रचना के नाम हैं, मोती की माला आदि से बन्धे वा गुथे केश समूह को धम्मिल्ल: कहते हैं, शिखा, चूडा, केशपाशी, ये ३ शिखा के नाम हैं, "केशपाश्यौ" जटा, सटा, "बाजे पढ़ते हैं शटा" ये २ तपस्वी के शिखा के नाम हैं, ॥ ४८ ॥ वेणि:, प्रवेणि:, "और भी वेणी, और प्रवेणी" ये २ सर्प के आकार रचना कर बनाये शृंगार केश के बनावट के नाम हैं, शीर्षण्य:, शिरस्य:, ये २ निर्मल और सुन्दर केश के नाम हैं, कचात् यह अर्थ प्रधान निर्द्देश है और इस कचपर्याय से परे पाश आदि तीन कलापार्था अर्थात् केशसमूहवाची हैं, जैसे कचपाश:, केशपाश:, केशपक्ष:, कुन्तल-हस्त:, आदि ॥ ४९ ॥ तनूरुहं, "उसी प्रकार तनूरुह:" रोम, लोम, ये ३ रोम के नाम हैं, पुरुष के मुख में रोम के बढ़ने पर उस रोम को श्मश्रु कहते हैं, "दाढ़ी वा मोछ इस प्रसिद्ध का नाम है"; ।

॥ तृतीय प्रकरण ॥

	पु पु न १न न
अलङ्कारकीशोभा।	आकल्प-वेशौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ।
	(दशै ते त्रिष्व्)
	२पुसन पुसन
अलङ्कारकरनेवाला	ऽलंकर्त्ता ऽलंकरिष्णु
	पुसन
अलङ्कारयुत।	(श्च) मण्डित ॥ १ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन
	प्रसाधितो ऽलंकृत (श्च) भूषित (श्च) परिष्कृतः ।
	पुसन ३पुसन ४पुसन
अलंकार आदि से-अति शोभित।	विभ्राड् भ्राजिष्णु-रोचिष्णू
	स स
शृङ्गार।	भूषा (तु स्याद्) अलंक्रिया ॥ २ ॥
	पु ५न पु न
अलंकार-वा गहना	अलंकार (स्त्वा) भरणं परिष्कारो विभूषणम् ।
	न
	मण्डनं (चा)
	न पुन
मुकुट।	(ऽथ) मुकुटं किरीटं (पुन्नपुंसकम्) ॥ ३ ॥

१–न. २–र्तृ. ३ भ्रा–. ४–ष्णु. ५ आ–.

आकल्पः, वेशः, "वा वेषः", नेपथ्यं, प्रतिकर्म, प्रसाधनं, ये ५ अलंकार किये की शोभा के नाम हैं, ये अलंकर्त्ता आदि वक्ष्यमाण दश शब्द तीनों लिङ्ग में वा वाच्यलिङ्ग हैं, अलंकर्त्ता, अलंकरिष्णुः, ये २ अलंकार करनेवाले के नाम हैं, '(अलं कर्त्तुं शीलमस्यालंकरिष्णुः)" मण्डित,ः ॥ १ ॥ प्रसाधितः, अलंकृतः. भूषितः, परिष्कृतः, "वा परिस्कृतः" ये ५ अलंकृत के नाम हैं, विभ्राट्, भ्राजिष्णुः, रोचिष्णुः, ये ३ अत्यन्त शोभायमान के नाम हैं, द्विव॰ विभ्राजौ, । भूषा, अलंक्रिया, 'और भी भूषणं" ये २ भूषणक्रिया के नाम हैं, ॥ २ ॥ अलंकारः, आभरणं, परिष्कारः, विभूषणं, "परिस्कारः" मण्डनं, ये ५ अलंकार के नाम हैं, वा गहना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, मुकुटं, "वा मकुटं" किरीटं, ये २ किरीट के नाम हैं ॥ ३ ॥

चोटी की मणि ।	पु न चूडामणिः शिरोरत्नं
हार के बीच की बड़ी मणि ।	पु तरलो (हारमध्यगः) ।
चोटी की सोने की पट्टी ।	स स वालपाश्या पारितथ्या
बन्दी-वा टीका ।	स स पत्रपाश्या ललाटिका ॥ ४ ॥
कर्णभूषण-वा तर्की ।	स न कर्णिका तालपत्रं (स्यात्)
सुवर्ण आदिका भूषण ।	न न कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
कण्ठी-वा कण्ठा ।	न स ग्रैवेयकं कण्ठभूषा
लम्बी कण्ठी ।	न स स लंबनं (स्याल्) ललन्तिका ॥ ५ ॥
सोने की लम्बी कण्ठी ।	(स्वर्णैः) प्रालम्बिका
मोतियों से गुथी ।	१स स (ऽथो) रःसूत्रिका (मौक्तिकैः कृता) ।
मोतियों के हार ।	पु हारो मुक्तावली
सौ लर का हार ।	पु पु देवच्छन्दो (ऽसौ) शतयष्टिकः ॥ ६ ॥
हार के भेद ।	पु पु पु (हारभेदा यष्टिभेदा) गुत्स गुत्सार्द्ध गोस्तनाः ।

१ उ–.

चूडामणिः, शिरोरत्नं, ये २ शिर के मणि के नाम हैं, हार के मध्यगत मणिनायक को तरलः कहते हैं, (एकं) वालपाश्या, पारितथ्या, ये २ सीमन्तभूषण के वा स्वर्णपट्टी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पत्रपाश्या, ललाटिका, ये २ ललाट के भूषण के नाम हैं, ॥ ४ ॥ कर्णिका, तालपत्रं, "वा ताड़पत्र" ये २ कर्णभूषण के नाम हैं, कुंडलं, कर्णवेष्टनं, ये २ कुण्डल के नाम हैं, इनमें कर्णिका स्त्रियां पहिनती हैं, ग्रैवेयकं, "उसी प्रकार ग्रैवेयं और ग्रैवं" कंठभूषा, ये २ गले के भूषण के नाम हैं, लंबनं, ललन्तिका, ये २ नाभी तक लम्बी कंठी के नाम हैं, ॥ ५ ॥ वही ललंतिका सोने से बनाई हुई प्रालम्बिका कहलाती है, फिर वही ललंतिका मोतियों से रची जावे तो उसे उरःसूत्रिका कहते हैं, हारः, मुक्तावलीः, ये २ मोतियों के हार के नाम हैं, वही मुक्तावली सौ लरों वा १०८ लरों और ८१ लरों से रची होवें तो उसे देवच्छंदः, और शतयष्टिकः, कहते हैं, ॥ ६ ॥ यष्टि के भेद और लताओं के भेद से गुच्छ आदि हार के भेद हैं, वे जैसे ३२ यष्टिक, अर्थात् लरों का गुत्स, २४ यष्टिक का गुत्सार्द्ध, ४ यष्टिक का गोस्तनः होता है, "और भी गुच्छः, वा गुच्छार्द्धः" ।

	पु पु
अर्धहार-आदि।	अर्द्धहारो माणवक
	१स
एक लर का।	एकावल्ये (कयष्टिका) ॥ ७ ॥
	स
नक्षत्रमाला।	(सैव) नक्षत्रमाला (स्या त्सप्तविंशतिमौक्तिकैः)।
	पु पु पुन पुन
पहुंची।	आवापकः पारिहार्य्यः कटको वलयो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ८ ॥
	पुन २पुन
विजायठ-बाजूबन्द आदि।	केयूर मङ्गदं-(तुल्ये)
	पुन ३स
अंगूठी।	अङ्गुलीयक मूर्मिका।
	४स
मोहर करनेकी अंगूठी।	(साक्षरां) गुलिमुद्रा (सा)
	पुन न
कंकण वा कड़ा।	कंकणं करभूषणम् ॥ ९ ॥
	स स स स
स्त्रियों की करधनी।	(स्त्रीकट्यां) मेखला काञ्ची सप्तकी रसना (तथा)।
	न
	(क्लीवे) सारसनं (चा)
	पुसन
पुरुषों की करधनी।	(ऽथ पुंस्कट्यां) शृंखलं (त्रिषु) ॥ १० ॥
	न ५पु ६पुन पुन
बिछिया वा पायजेब।	पादांगदं तुलाकोटि मञ्जीरो नूपुरो (ऽस्त्रियाम्)।

१—ली. २ अं—. ३ ऊ—. ४ अं—. ५—टि. ६—म—.

१२ यष्टिक अर्थात् लर का अर्द्धहारः होता है, २० यष्टिक अर्थात् लर का माणवकः होता है, और १ यष्टिक अर्थात् लर का एकावली होती है, ॥ ७ ॥ वही एकावली २७ मोतियों से रची हुई नक्षत्रमाला कहलाती है, (एकैकं) आवापकः, पारिहार्य्यः, कटकः, वलयः, ये ४ कंकण वा पहुंची इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ८ ॥ केयूरं, अंगदं, ये २ विजायठ वा बाजूबन्द इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अंगुलीयकं, "बाजे पढ़ते हैं, अंगुरीयकं" ऊर्मिका, ये २ अंगुली के आभरण वा अंगूठी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वही ऊर्मिका रामनाम आदि अक्षरों से युक्त होवे तो अंगुलिमुद्रा कहलाती है, (एकं) कंकणं, करभूषणं, ये २ कंकण वा कड़े के नाम हैं, ॥ ९ ॥ मेखला, कांची, "और भी कांचिः", सप्तकी, रसना, "और रशना" सारसनं, ये ५ स्त्रियों के कटिभूषण वा करधनी के नाम हैं, शृंखलं, "उसी प्रकार स्त्री शृंखला, पुं॰ शृंखलः", पुरुष के कटिभूषण का यह एक नाम है, ॥ १० ॥ पादांगदं, तुलाकोटिः, वा स्त्री॰ तुलाकोटिः, "वा तुलाकोटी" मंजीरः, "और भी मंजीलः" नूपुरः,

	पु पु हंसकः पादकटकः
घुंघुरू ।	स स किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ॥ ११ ॥
वस्त्रों के बनाने का कारण ।	१स (त्वक्फलकृमिरोमाणि) वस्त्रयोनिर् (दश त्रिषु) ।
अलसी आदि से बने ।	पुसन वाल्कं (क्षौमादि)
कपास से बने ।	पुसन पुसन पुसन फालं (तु) कार्प्पासं वादरं (च तत्) ॥ १२ ॥
रेशम से बने ।	पुसन पुसन कौशेयं कृमिकोशोत्थं
पशुरोम से बने ।	पुसन पुसन राङ्कवं मृगरोमजम् ।
मंड़िहार-वा कोरा	पुसन पुसन पुसन २न अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं (च) नवाम्बरे ॥ १३ ॥
धोये वस्त्र ।	न (त त्स्याद्) उद्गमनीयं (य द्धौतयो र्वस्त्रयो र्युगम्) ।
धोये रेश्मी ।	न न पत्रोर्णं धौतकौशेयं
दुशाला आदि ।	न न बहुमूल्यं महाधनम् ॥ १४ ॥

१–नि. २–र.

हंसकः, पादकटकः, ये ६ नूपुर वा पायजेब इस प्रसिद्ध के नाम हैं, किंकिणी, "और भी किंकिणिः, वा कंकणी" क्षुद्रघण्टिका, ये २ घुंघुरू इस प्रसिद्ध के नाम हैं ॥ ११ ॥ त्वक् आदि चार वस्त्रों के योनि अर्थात् कारण हैं, इन कारणों के चार प्रकार के होने से वस्त्र भी चार प्रकार के हैं, क्षौम आदि यह त्रिना वाल्क फाल आदि निष्प्रवाणि है वे दश तीनो लिङ्ग हैं, औतंत्रकंच च के चकार से एकादश वा तन्त्रकंच यह भी तीनों लिङ्ग है, वक्ष्यमाण दुकूल के साहचर्य्य से क्षौमं क्लीव ही है, किसी के मत में तीनो लिङ्ग है, क्षौम आदि वस्त्रं वकला से बनता है, "वाल्कं" क्षुमा अतसी है इससे बने वस्त्र को क्षौमं, "क्षैमी" और शण से बने वस्त्र को शाणं कहते हैं, फालं, कार्पासं, वादरं, ये ३ कपास के बने वस्त्र के नाम हैं ॥ १२ ॥ कीड़ों के अपान से निकले सूत के किये कुड्मल के आकार कोश को कृमिकोश कहते हैं उससे उत्पन्न वस्त्र को कौशेयं "कौषेयं" कहते हैं, मृगरोम से उत्पन्न वस्त्र को रांकवं कहते हैं, "यहां मृग शब्द से पशुमात्र का ग्रहण है, तिस से कम्बल आदि भी गृहीत होते हैं", अनाहतं, निःप्रवाणि, तन्त्रकं, नवाम्बरं, ये ४ नये वस्त्र के नाम हैं, "कोरे वस्त्र इस प्रसिद्ध के नाम हैं" ॥ १३ ॥ जो धोये हुए वस्त्रों के जोड़े हैं उन्हें उद्गमनीयं कहते हैं, जो धोया कौशेय है उसे पत्रोर्णं कहते हैं, जो बहुत मोल के वस्त्र आदि हैं वे बहुमूल्यं, और महाधनं कहलाते हैं ॥ १४ ॥

रेशमी कपड़े।	न न क्षैामं दुकूलं (स्याद्)
कपड़े का किनारा।	पुसन पुसन (द्वे तु) निवीतं प्रावृतं (त्रिषु)।
दशी।	पुस पुस (स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य) दशाः (स्युर्) वस्तयो (र्द्वयोः) १५।
वस्त्र की लम्बाई।	न १पु पु दैर्घ्य मायाम आरोहः
उस की चौड़ाई।	पु स परिणाहो विशालता।
पुराना कपड़ा।	न न पटच्चर ञ्जीर्णवस्त्रं
फटा वा चिथड़ा।	पु पु (समौ) नक्तक-कर्पटौ ॥ १६ ॥
वस्त्रमात्र।	न २न ३न ४न न ५न वस्त्र माच्छादनं वास श्चेलं वसन मंशुकम्।
अच्छे वस्त्र।	पु पुन सुचेलकः पटो (ऽस्त्री स्याद्)
मोटे वस्त्र।	पुन पुसन वराशिः स्थूलशाटकः ॥ १७ ॥

१ आ–. २ आ–. ३–स. ४ चे–. ५अं–.

क्षैामं, और भी "क्षोमं" दुकूलं, ये २ पट्टवस्त्र के–वा पीताम्बर के नाम हैं, निवीतं, "वा निवृतं, स्त्री॰ निवीता", प्रावृतं, "प्रावृता" ये २ वस्त्र से ढके हुये के वा किनारे के नाम हैं; वस्त्र के दोनों किनारों को दशाः कहते हैं, (एकं) स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनान्त नित्य है, "वस्त्रयोर्द्वयोः इस पाठ में तो, दशाः, वस्तयः, ए॰व॰ "वस्तिः" ये २ वस्त्र के किनारों के नाम हैं, तहां स्त्रीलिङ्ग और बहुत्व में दशाः, स्त्रीपुंन के बहुत्व में वस्तयः कहते हैं, "(दशावस्था दीपवर्त्योर्वस्त्रान्ते भूम्नि योर्षित, वस्तिर्द्वयोर्निरूहेनाभ्यधो भूम्निदशासु चेति मेदिनी)" ॥ १५ ॥ दैर्घ्यं, आयामः, "उसी प्रकार स्त्री॰ आयतिः" आरोहः, "बाजे पढ़ते हैं आनाहः" ये ३ वस्त्र आदि की लम्बाई के नाम हैं, परिणाहः, विशालता, ये २ विस्तार वा चौड़ाई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पटच्चरं, जीर्णवस्त्रं, ये २ जीर्ण वस्त्र के वा पुराने वस्त्र के नाम हैं, नक्तकः, "उसी प्रकार लक्तकः" कर्पटः, ये २ पुराने वस्त्र के खण्ड के वा चिथड़े इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १६ ॥ वस्त्रं, आच्छादनं, वासः, "और भी पुं॰ वासः", चेलं, "चैलं, और स्त्री॰ चेली", वसनं, अंशुकं, ये ६ वस्त्र के नाम हैं. "(अंशुकं शुक्लवस्त्रे स्याद्वस्त्रमात्रोत्तरीययोरिति रभसः)" सुचेलकः, पटः, "और भी स्त्री॰ पटिः, और पटी" ये २ अच्छे वस्त्र के नाम हैं, वराशिः, "उसी प्रकार वरासिः" स्थूलशाटकः, "स्त्री॰ स्थूलशाटका" ये २ मोटे वस्त्र के नाम हैं, ॥ १७ ॥

ओहार-वा बेठन।	पुसन पु निचोल: प्रच्छदपट:
कम्बल ।	पु १पु (समौ) रल्लक-कम्बलौ ।
धोती आदि ।	न २न ३न ४न अन्तरीयो-पसंव्यान-परिधाना न्यधोंशुके ॥ १८ ॥
अंगौका वा दुपट्टा आदि ।	पु ५पु स (द्वौ) प्रावारो त्तरासङ्गौ (समौ) बृहतिका (तथा) ।
	न ६न संव्यान मुत्तरीयं (स्याच्)
अंगिआ वा चोली।	पुस पुन चोल: कुर्पासको (ऽस्त्रीयाम्) ॥ १६ ॥
रजाई-वा ओढ़ना।	पु नीशार: (स्यात्प्रावरणे हिमा निलनिवारणे) ।
उटङ्ग लहंगा ।	पुन (अर्द्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्) चण्डातक (मंशुकम्) ॥ २० ॥
लम्बा लहंगा ।	७पुसन (स्यात्त्रिष्वा) प्रपदीन (न्तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्) ।
चनवा ।	पुन ८पु (अस्त्री) वितान मुल्लोचो
तम्बू डेरा ।	न दूष्या (द्यं वस्त्रवेश्मनि) ॥ २१ ॥
कनात ।	स स स प्रतिसीरा जवनिका (स्यात्) तिरस्करणी (च सा) ।
रोली आदि से अंगसंस्कार ।	६न १०पु परिकर्म्मा ङ्गसंस्कार:

१-ल. २-उ. ३-न. ४ अ-क. ५ उ-ग. ६ उ-. ७ आ-. ८ उ-. ६-न्. १० अ-.

निचोल:, और "निचुल:, स्त्री· निचोली" प्रच्छदपट:, ये २ वीणा आदि के बेठन वा ओहार के नाम हैं, रल्लक:, कम्बल:, ये २ कम्बल के नाम हैं, अन्तरीयं, उपसंव्यानं, परिधानं, अधोंशुकं, ये ४ धोती आदि, देह के अधोभाग में पहिरने के वस्त्र के नाम हैं, (अधो देह-भागस्यांशुकं अधोंशुकं) ॥ १८ ॥ प्रावार:, "वा प्रावर:" उत्तरासंग:, बृहतिका, संव्यानं, उत्तरीयं, ये ५ बायें कांधे पर जो धारण क्रिया जाता है उस के वा दुपट्टे आदि के नाम हैं, चोल:, स्त्री· "चोली" कूर्पासक:, ये २ स्त्रियों के स्तन आदि के ढकने के वस्त्र के वा चोली के नाम हैं, ॥ १६ ॥ पवन और ठंढ का निवारण है जिससे ऐसे ओढ़ने के वस्त्र को नीशार: कहते हैं, "वा रजाई इस आदि प्रसिद्ध का नाम है, "(नितरां शीर्य्यते हिमानिलौयत्रानेन वा)" जो वर स्त्रियों के आधे उरू के आच्छादन वस्त्र है उसे चण्डातकं, कहते हैं, (एकं) वा "लहंगा इस प्रसिद्ध का नाम है" ॥ २० ॥ जो वस्त्र आदि पाद के अग्र पर्य्यन्त प्राप्त होता है उसे आप्रप-दीनं "स्त्री· आप्रपदीना" कहते हैं और वह त्रिलिंग है, (एकं) वितानं, उल्लोच:, ये २ चन्द-वा—वा सामिआना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; दूष्यं इस आदि वस्त्र के बनाये गृह का नाम है "वा डेरा तम्बू रावटी आदि का नाम है दूश्यं भी" ॥ २१ ॥ प्रतिसीरा, जवनिका, "वा यमनिका" तिरस्करिणी, और तिरस्कारिणी" ये ३ पड़दा वा कनात के नाम हैं, परिकर्म, "और भी प्रति-कर्म" अंगसंस्कार:, ये २ रोली आदि से शरीर में संस्कार मात्र के नाम हैं,

पोंछना।	स १स स (स्यात्) मार्ष्टि-र्म्मार्ज्जना मृजा ॥ २२ ॥
उबटन।	न २न उद्वर्त्तनो त्सादने (द्वे समे)
स्नान-वा नहाना।	पु पु आप्लाव आप्लवः ।
	न स्नानं
चन्दनआदि का लेपन।	स न पु चर्च्चा (तु) चार्च्चिक्यं स्थासको
गये गन्ध को फिर करना।	न (ऽथ) प्रबोधनम् ॥ २३ ॥
	पु अनुबोधः
गाल आदि में कस्तूरी आदि से चिह्न बनाना।	स स पत्रलेखा पत्राङ्गुलि (रिमे समे)।
तिलक।	न पुन ३न पुन तमालपत्र-तिलक-चित्रकाणि विशेषकम् ॥ २४ ॥
	(द्वितीयञ्च तुरीयञ्च न स्त्रियाम्)
	(अथ) कुङ्कुमम् ।
कुंकुम।	४न न न न ५न काश्मीरजन्मा ऽग्निशिखं वरं वाह्लीक-पीतने ॥ २५ ॥
	न न न न न रक्त संकोच पिशुनं धीर लोहितचन्दनम् ।

१ मा—. २ उ—. ३—क. ४—न. ५—न.

मार्ष्टिः, मार्जना, मृजा, ये ३ पोंछने आदि से देह के निर्म्मल करने के नाम हैं, ॥ २२ ॥ उद्वर्त्तनं, उत्सादनं, "और भी उच्छादनं" ये २ पीसे द्रव्य से शरीर के मल दूर करने के वा उबटन के नाम हैं, आप्लावः, आप्लवः, स्नानं, ये ३ स्नान वा नहाने के नाम हैं, चर्चा, चार्चिक्यं, स्थासकः, ये ३ चन्दन आदि से देह के विशेष विलेपन के नाम हैं, प्रबोधनं, ॥ २३ ॥ अनुबोधः, "उसी प्रकार अनुरोधः" ये २ गये गन्ध के फिर गन्ध प्रगट करने के नाम हैं, "जैसे कस्तूरिका आदि को मद्य आदि से" पत्रलेखा, पत्रांगुलिः, और भी पत्रावली, ये २ कस्तूरी केशर आदि से कपोल आदि में बनाये पत्रबल्ली के नाम हैं, "पत्ते के आकार पत्रलेखा है जो कलिंग आदि देशों में प्रसिद्ध है"; तमालपत्रं, तिलकं, चित्रकं, विशेषकं, ये ४ ललाट में किये तिलक के नाम हैं; ॥ २४ ॥ यहां द्वितीयं तिलकं और तुरीयं विशेषकं यह दोनो स्त्रीलिङ्ग नहीं हैं किन्तु पुंनपुंसक हैं; कुङ्कुमं, काश्मीरजन्मा, वा काश्मीरजन्म, (—न) अग्निशिखं, वरं, "वा वरं और भी बाह्र" वाह्लीकं, "उसी प्रकार बाह्लिकं, और बरबाह्लिकं" पीतनं, ॥ २५ ॥ रक्तं, संकोचं, पिशुनं, धीरं, लोहितचन्दनम्, "और भी रक्तचन्दनम्, ये ११ कुंकुम के नाम हैं।

	स स न पु पु पु
लाख-वा लाह।	लाक्षा राक्षा जतु (क्लीवे) यावो ऽलक्तो द्रुमामयः ॥ २६ ॥
	न न न
लवङ्ग।	लवंगं देवकुसुमं श्रीसंज्ञम्
	न
पीत चन्दन।	(अथ) जायकम्।
	न न
	कालीयकं (च) कालानुसार्य्यं (स्त्री)
अगुरु।	(ऽथ समार्थकम्) ॥ २७ ॥
	न पुन न न न न
	वंशिका ऽगुरु राजार्हं लोह क्रिमिज जोंगकम्।
	१न २पुन
काला अगुरु।	कालागु र्वगुरुः
	स
अगुरु का भेद।	(स्यात्तन्) मङ्गल्या (मल्लिगंधि यत्) ॥ २८ ॥
	पु पु पु ३पु
यक्षधूप-वा राल।	यक्षधूपः सर्ज्जरसो ऽराल-सर्वरसा (वपि)।
	पु
	बहुरूपो (ऽप्य)
	पु ४पु
धूप।	(ऽथ) वृकधूप-कृत्रिमधूपकौ ॥ २९ ॥
	पु पु पु पु
लोहबान।	तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनो (ऽप्य)
	पु
देवदारुधूप-वा तारपीन का तेल।	(ऽथ) पायसः।

१—रु. २ अ—. ३—स. ४—क.

लाक्षा, राक्षा, "वा रक्षा" जतु, यावः, अलक्तकः, द्रुमामयः, ये ६ लाख के नाम हैं, (द्रुमाणामामयो द्रुमामयः) ॥ २६ ॥ लवंगं, देवकुसुमं, श्रीसंज्ञं, ये ३ लवङ्ग के नाम हैं, (देवानां कुसुमं कुसुमेषु देव इव देवयोग्यं कुसुमं वा) और (लक्ष्मीसंज्ञं लक्ष्मीपर्य्यायनामकम्) जायकम्, "और जापकं" कालीयकं, "वा कालेयकं और कालियकं" कालानुसार्यम्, ये ३ जायक नाम गन्धद्रव्य के वा पीतचन्दन इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (जयति गन्धान्तरं जायकम्) ॥ २७ ॥ वंशिकं, "और वंशकं और भी स्त्री॰ वंशिका" अगुरु, राजार्हं, लोहं, कृमिजं, जोंगकं, ये ६ सम अर्थ और काले अगुरु के पर्यायवाची हैं; कालागुरुः, अगुरुः, ये २ काले अगुरु के नाम हैं; जो अगुरु मल्लिगन्धि है वह मंगल्या कहलाती है; ॥ २८ ॥ यक्षधूपः, सर्ज्जरसः, रालः, सर्वरसः, बहुरूपः, ये ५ यक्षधूप के नाम हैं, "वा राल इस प्रसिद्ध के नाम हैं", "उसी प्रकार अरालः भी पाठ है" वृकधूपः, "वा वकधूपक", कृत्रिमधूपकः, ये २ अनेक पदार्थ मिलाकर बनाये धूप के नाम हैं ॥ २९ ॥ तुरुष्कः, पिण्डकः, सिह्लः, "कोई पढ़ता है शिह्ल" यावनः, ४ ये लोहबान धूप के नाम हैं, पायसः, ।

	पु पु पु १पु
	श्रीवासो वृकधूपो (ऽपि) श्रीवेष्ट-सरलद्रवौ ॥ ३० ॥
	पु २पु स
कस्तूरी ।	मृगनाभि र्मृगमदः कस्तूरी (चा
	न
कबाबचीनी ।	ऽथ) कोलकम् ।
	न न
	कक्कोलकं कोशफलम्
	पुन्
कपूर ।	(ऽथ) कर्पूर (मस्त्रियाम्) ॥ ३१ ॥
	पु ३पु पु स
	घनसार श्चन्द्र (सञ्ज्ञः) सीताभ्रो हिमवालुका ।
	पु पुन स ४पुन
मलयागिरचन्दन ।	गन्धसारो मलयजो भद्रश्री श्चन्दनो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ३२ ॥
	न न पुन
चन्दन विशेष के भेद ।	तैलपर्णिक-गोशीर्षे हरिचन्दन (मस्त्रियाम्) ।
	स न न न
रक्तचन्दन ।	तिलपर्णी (तु) पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ॥ ३३ ॥
	न
	कुचन्दनं (चा)
	न न
जायफल ।	(ऽथ) जातीकोश-जातिफले (समे) ।

१–व. २ मृ–. ३ चं–. ४ चं–.

श्रीवासः, (–स्) वृकधूपः, श्रिवेष्टः, "श्रिपिष्टः", सरलद्रवः, ये ५ सरलद्रव के वा विशेष धूप के नाम हैं. (पयसोद्रुमस्य चीरस्य वा विकारः पायसः) और (सरलस्य देवदारोर्द्रवः सरलद्रवः) ॥ ३१ ॥ मृगनाभिः, "उसी प्रकार मृगः और स्त्री॰ नाभिः" मृगमदः, "और भी मदः" कस्तूरी, ये ३ कस्तूरी के नाम हैं, कोलकं, कक्कोलकं, कोशफलं, ये ३ कंकोलक वा कबाबचीनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, कर्पूरं, ॥ ३१ ॥ घनसारः, चंद्रः, सिताभ्रः, "वा सिताभः" हिमवालुका, ये ५ कपूर के नाम हैं, (चन्द्रसंज्ञः चन्द्रपर्य्यायनामकः) गन्धसारः, मलयजः, भद्रश्रीः, चंदनः, ये ४ मलयागिरचन्दन के नाम हैं, "भद्रश्रियौ" ॥ ३२ ॥ तैलपर्णिकं यह एक धवल शीतल चन्दन विशेष का नाम है, गोशीर्षकं यह एक उत्पल के समान गन्धवाले चन्दन का नाम है, हरिचन्दनं यह एक पीले रंग के चन्दन का नाम है. इस प्रकार तीन भेद हैं, तिलपर्णी, पत्राङ्गं, "और भी पत्रंगं, और पत्तंगं" रञ्जनं, रक्तचन्दनं, ॥ ३३ ॥ कुचन्दनं, ये ५ रक्तचन्दन के नाम हैं, जातीकोशं, "और जातीकोषं", जातिफलं, "उसी प्रकार जातीफलं, "और जातिः, वा जाती, और फलं", ये २ जायफल के नाम हैं; और समानार्थक हैं।

यक्षकर्दम-वा महा सुगन्धि लेप विशेष ।	(कर्पूरागुरुकस्तूरी कक्कोलैर्) यक्षकर्द्दमः ॥ ३४ ॥
पीसे सुगन्धद्रव्य वा चोश्रा-श्ररगजा ।	गात्रानुलेपनी वर्त्ति र्वर्णकं (स्याद्) विलेपनम् ।
सुगन्ध करने वाले द्रव्य वा चूर्ण ।	चूर्णानि वासयोगाः (स्युर्)
वासित वस्तु ।	भावितं वासितं (त्रिषु) ॥ ३५ ॥
गन्धमाला आदि का धारन ।	(संस्कारो गन्धमाल्याद्यै र्यस्स्यात्तद्) अधिवासनम् ।
सिरपर की धरी माला	माल्यं माला-स्रजौ (मूर्द्धि)
सिर के बीच की माला ।	(केशमध्ये तु) गर्भकः ॥ ३६ ॥
सिर से चोटी तक की ।	प्रभ्रष्टकं (शिखालंबि)
सिरसे ललाट तक की ।	(पुरोन्यस्तं) ललामकम् ।
गले तक लटकी वा लम्बी ।	प्रालंब (मृजुलंबि स्यात्कण्ठाद्)
जनेऊ के समान छाती पर लटकी माला ।	वैकक्षकं (तु तत्) ॥ ३७ ॥ (यत्तिर्य्यक् क्षिप्तमुरसि)
चोटी की पहिरी ।	(शिखास्वा) पीड़-शेखरौ ।
माला आदि का बनाना ।	रचना (स्यात्) परिस्पंद
सब वस्तु से परिपूर्ण ।	आभोगः परिपूर्णता ॥ ३८ ॥

१ व–. २ श्रा–. ३–र.

कपूर आदि के समभागों के बनाये पिण्ड के लेप विशेष को यक्षकर्दमः कहते हैं, (एकं) "(कर्पूरागुरुकस्तूरी कंकोलघुसृणानि च । एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकर्द्दम इष्यत इति व्याडिः, घुसृणं, केशरं, अन्यत्स्पष्टं कुंकुमा गुरुकस्तूरी कर्पूरं चन्दनं तथा । महासुगन्धिरित्युक्त नामतो यक्षकर्दम इति धन्वन्तरिः)", ॥ ३४ गात्रानुलेपनी, वर्त्तिः, वा वर्त्ती, वर्णकं, विलेपनं, ये ४ गात्र के अनुलेप योग्य पीसे केशर आदि सुगन्धद्रव्य के उबटन के नाम हैं; चूर्ण, वासयोगः, ये २ पटवस्त्र आदि के सुगंध करनेवाले के नाम हैं, भावितं, वासितं, ये २ गंधद्रव्य से सुगन्धित किये वस्तु के नाम हैं, और ये दोनो त्रिलिंग हैं, ॥ ३५ ॥ गंधमाल्य और धूप आदि से जो संस्कार वस्त्र ताम्बूल आदि का सुगन्ध के बढाने के लिये किया जाता है उसे अधिवासनं कहते हैं, (एकं) माल्यं, माला, स्रक्, ये ३ सिर में धरे फूल माला आदि के नाम हैं, फिर केश के मध्यधरी माला को गर्भकः कहते हैं, ॥ ३६ ॥ जो माला शिखा में लम्बमान है उसे प्रभ्रष्टकं कहते हैं, आगे रक्खी गई वा ललाट पर्य्यन्त फेंकी गई को ललामकं कहते हैं, जो माला कंठ में सीधी लम्बी है उसे प्रालम्बं कहते हैं, और जो माला टेढी जनेव के समान छाती में फैलाई गई है उसे वैकक्षिकं कहते हैं, "(विकक्षमुरस्तत्र भवं वैकक्षकमित्यपि)" ॥ ३७ ॥ आपीडः, शेखरः, ये २ शिखा में रक्खे माल्यमात्र के नाम हैं, रचना, परिस्पन्दः, वा परिस्यन्दः,ये २ माल्य आदि की रचना के नाम हैं, आभोगः, परिपूर्णता, ये २ सब सेवा से परिपूर्ण के नाम हैं ॥ ३८ ॥

तकिआ।	उपधान[न] (न्तू) पवर्हः[१पु]
तोसक-गलीचा आदि।	शय्यायां[२स] शयनीय[न] (वत्)। शयनं[न]
पलङ्ग।	मंच[पु]-पर्य्यङ्क[पु]-पल्यङ्काः[पु] खट्वया[३स] (समाः) ॥ ३९ ॥
छोटी तकिआ-वा गेन्द।	गेण्डुकः[पु] कन्दुकौ[पु]
दीया।	दीपः[पु] प्रदीपः[पु]
पीढ़ा।	पीठ[न] मासनम्[४न]।
डव्वा-वा चौघड़ा।	समुद्गकः[पु] संपुटकः[पु]
पीकदान।	प्रतिग्राहः[पु] पतद्ग्रहः[पु] ॥ ४० ॥
कंघी।	प्रसाधनी[स] कंकतिका[स]
वुकवा।	पिष्टातः[पु] पटवासकः[पु]।
दर्प्पन-वा सीसा।	दर्प्पणे[५पुन] मुकुरा[पु] दर्शौ[पु]
वेना-वा पंखा।	व्यजनं[न] तालवृन्तकम्[न] ॥ ४१ ॥
	॥ इति मनुष्यवर्गः ॥

१ उ—. २ शय्या. ३ खट्वा. ४ आ—. ५—या.

उपधानं, उपवर्हः, ये २ तकिआ के नाम हैं, (उपधीयते शिरो ऽत्र उपधानं) शय्या, शयनीयं, शयनं, ये ३ बिछवना के नाम हैं, मंचः, पर्य्यंकः, पल्यङ्कः, खट्वा, ये ४ पलङ्ग के नाम हैं. ॥ ३९ ॥ गेण्डुकः, "गेन्दुकः, और भी गेंडूकः", कन्दुकः, ये २ खेलने के गेन के वा गाल की तकिआ के नाम हैं, दीपः, प्रदीपः, ये २ दीप के नाम हैं, पीठं, आसनं, ये २ पीढ़ा वा मचिआ वा कुर्सी आदि के नाम हैं, समुद्गकः, "और समुद्गा" संपुटकः, ये २ डव्वा वा चौघड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, प्रतिग्राहः, "वा प्रतिग्रहः" पतद्ग्रहः, ये २ पीकदानी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ४० ॥ प्रसाधनी, कंकतिका, "उसी प्रकार कंकती, वा कंकतं, और भी प्रसाधनं", ये २ हाथीदन्त की बनी वा अन्य की बनी कंघी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पिष्टातः, पटवासकः, ये २ चोआ वा अगंजा की वुकनी वा वुकवा के नाम हैं, दर्पणः, मुकुरः, "और मकुरः, वा मंकुरः", आदर्शः, "वा अदर्शः"; ये ३ दर्पण के वा आरसी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, व्यंजनं, तालवृन्तकं, "वा तालवृन्तं" ये २ तालपत्र आदि के बने पंखा के नाम हैं,

॥ इति मनुष्यवर्गः ॥

॥ अथ सप्तमवर्गः ॥

वंश ।	स १न न २न ३पु पु सन्तति र्गोत्र-जनन-कुलान्य भिजना-ऽन्वयौ । पु पु पु वंशो ऽन्ववायः सन्तानो
वर्ण ।	पु वर्णाः (स्युर्ब्राह्मणादयः) ॥ १ ॥
राजवंश ।	४पु पु राजबीजी राजवंश्यो
कुलीन ।	पु पु बीज्य (स्तु) कुलसंभवः ।
सज्जन ।	पु पु ५पु पु पु ६पु महाकुल-कुली-नार्य्य-सभ्य-सज्जन-साधवः ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी आदि ।	पु पु पु पु ब्रह्मचारी गृही वाणप्रस्थो भिक्षु (श्चतुष्टये) ।
ब्रह्मचर्य आदि वा इन का स्थान ।	पुन आश्रमो (ऽस्त्री)
ब्राह्मण ।	पु ७पु पु पु द्विजात्य ग्रजन्म-भूदेव-वाडवाः ॥ ३ ॥ पु पु विप्र (श्च) ब्राह्मणो

१ गो–. २–ल. ३ अ–. ४–न. ५ आर्य. ६–धु. ७ अ–न्.

संततिः, गोत्रं, जननं, कुलं, अभिजनः, अन्वयः, वंशः, अन्ववायः सन्तानः, ये ९ वंश के नाम हैं, ब्राह्मण आदि वर्णाः, ए॰ व॰ वर्णः, कहलाते हैं, (एकं) ॥ १ ॥ "ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये ४ वर्ण चातुर्वर्ण्य कहलाते हैं", राजबीजी, राजवंश्यः, ये २ राजवंश में उत्पन्न के नाम हैं, द्विव॰ राजवीजिनौ, वीज्यः, कुलसंभवः, ये २ कुलीन कुलमात्र में उत्पन्न के नाम हैं; महाकुलः, "वा माहाकुलः" कुलीनः, "और भी कुल्यः, कौलेयः, और कौलेयकः", आर्य्यः, सभ्यः, सज्जनः, साधुः, ये ६ सज्जन के नाम हैं, ॥ २ ॥ ब्रह्मचर्य्य आदि चार आश्रम शब्द वाच्य हैं, जैसे ब्रह्मचारी, गृही, वाणप्रस्थः, भिक्षुः, अर्थात् यतिः, द्विजातिः, और भी द्विजः, और द्विजन्मा (–न्) अग्रजन्मा, (–न्) भूदेवः, "वा भूमिदेवः" वाडवः, ॥ ३ ॥ विप्रः, ब्राह्मणः, ये ६ ब्राह्मण के नाम हैं, (वड़वायां जातो वाड़वः, वड़वा द्विजयोषिति इति मेदिनी)",

ब्राह्मण के कर्म्म या षट्कर्म्मा ।	१पु (ऽसौ) षट्कर्म्मा (यागादिभिर्युतः) ।
पण्डित ।	२पु ३पु ४पु ५पु पु पु पु विद्वान् विपश्चिद् दोषज्ञः सन् सुधीः कोविदो बुधः ॥ ४ ॥ पु ६पु पु पु ७पु पु पु धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः । ८पु पु ९पु पु १०पु पु धीमान् सूरिः कृती कृष्टि र्लब्धवर्णो विचक्षणः ॥ ५ ॥ ११पु १२पु दूरदर्शी दीर्घदर्शी
वेदज्ञ-या वैदिक।	पु १३पु श्रोत्रिय-च्छान्दसौ (समौ) ।
अध्यापक-वा पढ़ाने वाला ।	पु पु उपाध्यायो ऽध्यापको
पिता आदि ।	पु (ऽथ स्यान्निषेकादिकृद्) गुरुः ॥ ६ ॥
आचार्य्य ।	पु (मन्त्रव्याख्याकृद्) आचार्य्य
यज्ञाध्यक्ष ।	१४पु (आदेष्टा त्वध्वरे) व्रती । १५पु पु यष्टा (च) यजमान (श्च)
आज्ञाकारी यजमान ।	पु (स सोमवति) दीक्षितः ॥ ७ ॥
वारंवार यज्ञ करने-वाला ।	पु पु इज्याशीलो यायजूको

१-न्. २-द्वस्. ३-त. ४दो-. ५सत्. ६-न्. ७-वत्. ८-मत्. ९-न्. १० ल-. ११-न्. १२-न्. १३ छां-. १४-न्. १५ यष्टृ.

असौ ब्राह्मणः अर्थात् यह ब्राह्मण याग आदि से युक्त है तो षटकर्मा कहलाता है, कहा है कि इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा, प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षट्कर्मा विप्र उच्यते इति (एकं) विद्वान्, विपश्चित्, दोषज्ञः, सन्, सुधीः, कोविदः, बुधः, ॥ ४ ॥ धीरः, मनीषी, ज्ञः, प्राज्ञः, "स्त्री॰ प्राज्ञी, और भी पुं॰ प्रज्ञः, संख्यावान्, पंडितः, कविः, "और भी स्त्री॰ कवी" धीमान्, सूरिः, और भी सूरी (-न्) कृती, कृष्टिः, लब्धवर्णः, विचक्षणः, ॥ ५ ॥ दूरदर्शी दीर्घदर्शी, ये २२ पण्डित के नाम हैं, श्रोत्रियः, छान्दसः, ये २ वेद पढ़नेवालों के नाम हैं, उपाध्यायः, अध्यापकः, ये २ अध्यापक के वा पढ़ानेवाले के नाम हैं, निषेक गर्भाधान और पुंसवन आदि कर्म का कर्त्ता पिता आदि गुरुः कहलाते हैं, ॥ ६ ॥ वेदमन्त्र की व्याख्या का करनेवाला आचार्यः कहलाता है, व्याख्यालक्षणतो, (पदच्छेदः पदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना, आक्षेपोथ समाधानं व्याख्यानं पञ्चलक्षणमित्युक्तं, यज्ञ में यो ऋत्विजों को आज्ञा कर्त्ता है वह व्रती कहलाता है, यष्टा, यजमानः, ये ३ आदेष्टा के नाम हैं, वही यजमान सोमवति यज्ञ में आज्ञा कर्ता होय तो दीक्षितः कहलाता है, ॥ ७ ॥ इज्याशीलः, यायजूकः, ये २ यज्ञ करने के स्वभाववाले के नाम हैं, (पुनः पुनः भृशं वा यजते यायजूकः)

विधि से यज्ञ का कर्त्ता	यज्वा (तु विधिनेष्टवान्) । [१पु]
बृहस्पति यज्ञका कर्ता।	(स गीष्पतीष्ट्या) स्थपतिः [पु]
सोमरस पीनेवाला यजमान।	सोमपीती (तु) सोमपः ॥ ८ ॥ [२पु, पु]
सर्वस्व दक्षिणा से विश्वजित् नाम का कर्ता।	सर्ववेदाः (स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः) । [३पु]
अंग सहित वेद का पढ़नेवाला।	अनूचानः (प्रवचने साङ्गेऽधीती) [पु]
गुरु से गृहस्थाश्रम आदि के लिये आज्ञा पानेवाला।	(गुरोस्तु यः ॥ ९ ॥ लब्धानुज्ञः) समावृत्तः [पु]
अभिषव स्नान करने वाला।	सुत्वा (त्वभिषवे कृते) । [४पु]
शिष्य—वा विद्यार्थी।	छात्रा-न्तेवासिनौ शिष्ये [५पु, पु, पु]
नया विद्यार्थी।	शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ १० ॥ [पु, पु]
सपाठी।	(एकब्रह्मव्रताचारा मिथः) स ब्रह्मचारिणः । [पु]
एक गुरु के पास के पढ़नेवाले।	सतीर्थ्या (स्त्वे) कगुरव [पु, ६पु]
अग्नि का बटोरनेवाला।	(श्चितवानग्निम्) अग्निचित् ॥ ११ ॥ [पु]

१—न. २—न. ३—दस. ४—न. ५—त्र. ६ ए—रु.

विधिना सोमेन यजेत इत्यादि याग विधायक जो विधिमात्र हैं उन से जिसने यज्ञ किया है उसे यज्वा कहते हैं, द्विव. यज्वानौ, (एकं); जिसने गीष्पतीष्ट्या अर्थात बृहस्पति के कहे विधि से यज्ञ किया है उसे स्थपतिः कहते हैं, (एकं); सोमपीती, सोमपः, "और भी सोमपाः (—पा)"; ये २ सोम यज्ञ करनेवाले के नाम हैं ॥ ८ ॥ जिसने सर्वस्व दक्षिणा से विश्वजित् नाम यज्ञ किया है उसे सर्ववेदाः कहते हैं, (एकं), अंगसहित शिक्षा आदि से युक्त वेद को जिसने पढ़ा है उसे अनूचानः कहते हैं, (एकं) ॥ ९ ॥ और जिस अनूचान ने गुरु से गृहस्थाश्रम आदि आश्रम के प्राप्ति के लिये अनुज्ञा पाई है उसे समावृत्तः, कहते हैं, (एकं), अभिषव स्नान जिसने किया है उसे सुत्वा कहते हैं, (एकं) छात्रः, अन्तेवासी, (—न्) शिष्यः, ये ३ शिष्य वा चेला के नाम हैं, शैक्षाः, "एक वचन शैक्षः" प्राथमकल्पिकाः, ये २ पढ़ना आरंभ करनेवाले लड़कों के नाम हैं, ॥ १० ॥ समान वेदव्रत—और आचार है जिन्हों का, और एक शाखा के पढ़नेवाले ब्रह्मचारी लोग परस्पर सब्रह्मचारिणः कहलाते हैं; (एकं) समान गुरु हैं जिन्हों के वे परस्पर सतीर्थ्याः ए.व. सतीर्थ्यः और सतीर्थः, एकगुरवः, ए.व. एकगुरुः, कहलाते हैं, जिसने अग्नि का संग्रह किया है उसे अग्निचित् कहते हैं, (एकं) ॥ ११ ॥

	न १
उपदेश की परंपरा	(पारंपर्य्योपदेशे स्याद्) ऐतिह्य मितिह (ऽव्ययम्)।
	स
प्रथम ज्ञान।	उपज्ञा (ज्ञानमाद्यं स्यात्)
	पु
जानकर आरंभ कर्ना।	(ज्ञात्वारंभ) उपक्रमः ॥ १२ ॥
	पु पु पु पु पु २पु पु
यज्ञ।	यज्ञः सवो ऽध्वरो यागः सप्ततंतु-र्मखः क्रतुः।
	(पाठो होमश्चा तिथीनां सपर्य्या तर्प्पणं बलिः ॥ १३ ॥
	पु
महायज्ञ आदि।	एते पञ्च) महायज्ञा (ब्रह्मयज्ञादिनामकाः)।
	स ३स ४स स स स
सभा।	समज्या-परिष-द्गोष्ठी-सभा-समिति-संसदः ॥ १४ ॥
	स न ५सस
	आस्थानी (क्लीवम्) आस्थानं (स्त्रीनपुंसकयोः) सदः।
	पु
यज्ञगृह विशेष।	प्राग्वंशः (प्राग्घविर्गेहात्)
	पु ६पु
यज्ञ दर्शक।	सदस्या विधिदर्शिनः ॥ १५ ॥
	पु पु पु पु
सभा में बैठने वाले।	सभासदः सभास्तारा: सभ्याः सामाजिका (श्च ते)।
	७पु ८पु पु
तीनों वेद के ज्ञाता क्रम से।	अध्वर्य्यू-द्गातृ-होतारो (यजुः सामर्ग्विदः क्रमात्) ॥ १६ ॥

१द्-ह. २स-. ३-द. ४गो-. ५-स. ६-न्. ७-र्यु ८उ-.

ऐतिह्यं, इतिह, ये २ लोकपरंपरा के उपदेश के नाम हैं, इतिह यह अव्यय है, जो प्रथम ज्ञान है उसे उपज्ञा कहते हैं, जैसे ग्रंथ में पाणिनि की उपज्ञा है, (एकं) जान कर जो आरंभ है वह उपक्रमः है, जैसे ग्रंथ का उपक्रम अर्थात् आरंभ है (एकं) ॥ १२ ॥ यज्ञः, सवः, अध्वरः, यागः, सप्ततंतुः, मखः, क्रतुः, ये ७ यज्ञ के नाम हैं, पाठ आदि पांच ब्रह्मयज्ञ आदि नाम से महायज्ञाः ए॰ व॰ महायज्ञः कहलाते हैं, (एकं), इनमें पाठः जो विधि से वेद आदि का पठन है वह ब्रह्मयज्ञ है, होमः वैश्वदेव का होम है सो देवयज्ञ है, घर में आये हुये अतिथियों का अन्न आदि के सपर्या से संतोष करना मनुष्ययज्ञ है, तर्पणं अर्थात् पितरों को अन्न और जल आदि से जो तृप्ति संपादन कर्ना है वह पितृयज्ञ है बलिः अर्थात् जीवों को जो अन्न आदि देना है वह भूतयज्ञ है, (पठनं पाठः भावे घञ्) मनुः "(अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणं, होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञो ऽतिथिपूजनमिति)" समज्या, परिषत्, गोष्ठी, सभा, समितिः संसत्, (-द्) ॥१४॥ आस्थानी, आस्थानं, ए॰व॰ सदः, "स्त्री॰ सदाः" ये ९ सभा के नाम हैं. (समजन्ति गच्छन्त्यस्यां समज्या, गावो ऽनेका वा वाचस्तिष्ठंत्यस्यां गोष्ठी, सह समाना वा भान्त्यस्यां सभा, संयंति गच्छन्त्यस्यां समितिः, संसीदंत्यस्यांसं सत्, आतिष्ठन्त्यस्यामास्थानी. सीदन्त्यस्यां सदः) हवि के गृह से पूर्व देश में सदस्य आदि का जो गृह है उसे प्राग्वंशः कहते हैं, वा यज्ञशाला में पूर्व और पश्चिम के खंभों में रक्खे बड़े काष्ठ को प्राग्वंशः कहते हैं, यज्ञ कर्त्ता है, यज्ञ कर्म में विधि अर्थात् वेदोक्त क्रिया कलाप को जो देखते हैं, वे सदस्याः "ए॰ व॰ सदस्यः, विधिदर्शी" कहलाते हैं. "अर्थात् ऋत्विक विशेष है" (एकं) ॥ १५ ॥ सभासदः, "ए॰व॰ सभासत् (-द्)" सभास्ताराः, सभ्याः, सामाजिकाः, ये ४ सभा में रहनेवालों के नाम हैं, (सभां स्तृणंति सभास्ताराः, सभायां साधवः सभ्याः, समाजं रक्षंति सामाजिकाः) यजुर्वित ऋत्विक अध्वर्युः है, (एकं), सामवित् उद्गाता है, (एकं), ऋग्वेदवित् होतारः, ए॰व॰ होता (-तृ) कहलाता है, (एकं) ॥ १६ ॥

ऋत्विक ।	पु पु (आग्नीध्राद्या धनैर्वार्य्या) ऋत्विजो याजका (श्च ते) ।
यज्ञवेदी ।	पु वेदिः (परिष्कृता भूमिः)
यज्ञ का चौतरा ।	न न (समे) स्थण्डिल-चत्वरे ॥ १७ ॥
यज्ञ का खम्भा विशेष।	पु पु चषालो यूपकटकः
रक्षार्थ टट्टी ।	स कुम्बा (सुगहनावृतिः) ।
खम्भा का शिर ।	न १न यूपाग्रं तर्म
अग्नि निकालनेकी दो लकड़ी ।	२पुस (नि र्म्मथ्य दारुणित्व) रणि-(र्द्वयोः) ॥ १८ ॥
यज्ञाग्नि तीन ।	पु ३पु पु दक्षिणाग्नि-र्गार्हपत्या-हवनीयौ (त्रयो ऽग्नयः) ।

१—न. २ अ.—. ३ गा—.

यजमान धन आदि देकर जिनका वरण कर्ता है वे आग्नीध्राः "ए. व. अग्नीध्रः,
वा आग्नीध्रः", आदि ऋत्विजः, ए. व. ऋत्विक्, (—ज्), याजकाः, ये २ अग्नीध्र आदि कह-
लाते हैं और आदि शब्द से ब्रह्मा उद्गाता होता और अध्वर्यू आदि सोलह कहे जाते हैं,
"ऋतु में जो यज्ञ करते हैं, वे ऋत्विजः कहलाते हैं", यज्ञ के लिये परिष्कृत अर्थात् डमरु के आ-
कार बनाई हुई भूमि को वेदिः कहते है, "और भी वेदी" (एकं), स्थण्डिलं, चत्वरं, ये २ यज्ञ
के अर्थ संस्कार किये भूमि के भाग के नाम हैं, ॥ १७ ॥ यूप के सिर में कंकण के आकार काष्ठ
के विकार को चषालः और यूपकटकः, कहते हैं, यज्ञ के भूमि में अन्त्यज आदि की दृष्टि के
वारण के लिये सुगहनावृत्तिः, "वा स्त्री. सुगहनावृत्तिः" वेष्ठनं अर्थात्, आवरण को कुम्बा
कहते हैं, (एकं), यूपाग्रं, तर्मं, ये २ यूप के अग्रभाग के नाम हैं, अग्नि की सिद्धि के अर्थ
मथन की लकड़ी को अरणिः कहते हैं, "और भी स्त्री. अरणी" ॥ १८ ॥ दक्षिणाग्निः, गार्ह-
पत्यः, आहवनीयः, ये ३ अग्नि यज्ञों में विशेष अग्नि कहलाती हैं, ।

तीनों अग्नि का नाम।	स (अग्निचय मिदं) त्रेता
यज्ञाग्नि विशेष।	पु प्रणीतः (संस्कृतो ऽनलः) ॥ १९ ॥
यज्ञाग्नि के स्थल।	पु पु १पु समूह्यः परिचाय्यो-पचाय्याव् (अग्नौ प्रयोगिणः)।
अग्नि-विशेष।	(यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ॥ २० ॥ पु तस्मिन्) आनाय्यो
अग्नि की प्रिया।	स स स (ऽथा) ऽग्नायी स्वाहा (च) हुतभुक्प्रिया।
अग्नि जलाने की ऋचा वा मन्त्र।	स स (ऋक्) सामधेनी धाय्या (च या स्या दग्निसमिंधने) ॥२१॥
छन्द।	स्न (गायत्री प्रमुखं) छन्दो
यज्ञ की जाउरि वा-खीर।	पु (हव्यपाके) चरुः (पुमान्)।
दधि और दुग्ध मिला।	स आमिक्षा (सा शृतोष्णेया क्षीरे स्याद्दधियोगतः) ॥ २२ ॥
यज्ञ का बिजना-वा बेना।	न धुवित्रं (व्यजनं तद्रचितं मृगचर्म्मणा)।

१ उ–. २–स.

यह तीनों अग्नि का त्रेता एक नाम है, (एकं), मंत्र आदि से संस्कार किये अग्नि को प्रणितः कहते हैं, (एकं), ॥ १९ ॥ समूह्यः, परिच्चाय्यः, उपचाय्यः, ये ३ अग्नि में प्रयोगी हैं अर्थात् अग्नि-धारण के स्थलविशेष के नाम हैं, गार्हपत्य से लेकर दक्षिणाग्नि जहां स्थापित किई जाती है उसे आनाय्यः कहते हैं (एकं); अग्नायी, स्वाहा, हुतभुक्प्रिया, ये ३ अग्नि की प्रिया के नाम हैं, इस स्वाहा शब्द को अव्ययत्व नहीं है, क्योंकि इसे द्रव्यवाचित्व है, इसी से (स्वाहां-तुदहितोपार्थ्यं) यह पयोग संगत होता है, अग्नि को लकड़ी आदि से जगाने में जो ऋचा पढ़ी जाती है उसे सामधेनी और धाय्या भी, कहते, हैं ॥ २१ ॥ गायत्री, वा गायत्री, अनुष्टुप् (–भ्) उष्णिग्. उष्णिक् (–ह), वृहती, ये २ आदि छन्दः कहलाते हैं, एक सान्त और क्लीव है, हव्यपाके अर्थात् अग्नि के मुख में हूयमान अन्न को चरुः कहते हैं, "हव्य का जो पाक है उसे हव्यपाकः कहते हैं, (चर्यते भक्ष्यत इति चरुः) और मीमांसकोने भी त्रिवृच्चरु के अधिकरण में अन्नं परस्य चरु शब्द को स्वीकार किया है", अच्छे पके और गरम दूध में जो दही के योग से विकार उत्पन्न होता है उसे आमिक्षा, वाजे "आमीक्षा" कहते हैं, (एकं) ॥ २२ ॥ मृग के चाम से बनाये पंखे को धुवित्रं कहते हैं, "और धवित्रं भी"।

दही मिला घी।	न पृषदाज्यं (सदध्याज्ये)
खीर।	न पुन परमान्नं (तु) पायसः ॥ २३ ॥
देव और पितरका।	न न हव्य-कव्ये (दैवपित्र्ये अन्ने)
यज्ञपात्र।	पुन पात्रं (स्रुवादिकम्)।
स्रुव के भेद।	स १स स पुस २पु ध्रुवोपभृज्जुहू (र्ना तु) स्रुवो (भेदाः) स्रुचः (स्त्रियः)॥२४॥
यज्ञपशु।	पु उपाकृतः (पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः)।
यज्ञपशु मारना।	न न न परंपराकं शमनं प्रोक्षणं (च वधार्थकम्) ॥ २५ ॥
मारे पशु।	पुसन ३पुसन पुसन (वाच्यलिंगाः) प्रमीतो-पसंपन्न-प्रोक्षिता (हते)।
विशेष हवि-वा साकल्य।	न ४न सान्नाय्यं हविर्
हूना वस्तु।	पुसन (अग्नौ तु हुतं त्रिषु) वषट्कृतम् ॥ २६ ॥

१ उ-त्. २-च. ३ उ-. ४-स्.

दही से युक्त घी पृषदाज्यम् है, (एकं); परमान्नं, पायसः, ये २ खीर के नाम हैं; ॥ २३ ॥ देव और पितर संबंधी अन्न को क्रम से हव्यं और कव्यं कहते हैं, "(हूयन्ते प्रीणयन्ते देवा येन तत् हव्यं, कूयन्ते पितृभ्यः इति कव्यं)" स्रुव चमस आदि पात्रं है, (एकं); ध्रुवा, उपभृत्, जुहूः, स्रुचः, ये ४ स्रुव के भेद हैं, "वा जुहुः" स्रुवः, वा स्रूः, स्रुक् (—च) पुंसि, (एकं); ॥ २४ ॥ जो पशु यज्ञ में मन्त्र संस्कार कर मारा जाता है उसे उपाकृतः कहते हैं, "(एकं); उपक्रियते हिंस्यत इति उपाकृतः)" परंपराकं, शमनं, "शसनं, वा ससनं" प्रोक्षणं, ये ३ वधार्थक हैं, अर्थात् यज्ञ के पशु मारने के वाची हैं, ॥ २५ ॥ प्रमीतः, उपसंपन्नः, प्रोक्षितः, ये ३ यज्ञ के अर्थ मारे हुये पशुमात्र के नाम हैं और वाच्य लिङ्ग हैं, विशेष हवि को सान्नाय्यं और हविः, कहते हैं, अग्नि में हूना हुआ घी आदि वषट्कृतं कहलाता है और वाच्यलिङ्ग है, ॥ २६ ॥

यज्ञान्त स्नान ।	पु (दीक्षान्तो) ऽवभृथो (यज्ञे)
यज्ञीय वस्तु ।	पुस्न (तत्कर्म्मार्हन्तु) यज्ञियम् ।
यज्ञकर्म ।	(विष्व्)
	१न (ऽथ क्रतुकर्म्मे) ष्टं
कर्म्म विशेष ।	न पूर्त्तं (खातादि कर्म्मणि) ॥ २७ ॥
यज्ञशेष भ्राद्धशेष ।	न पु अमृतं विघसो (यज्ञ शेषभोजनशेषयोः) ।
दान ।	पु न न २न न त्यागो विहापितं दान मुत्सर्ज्जन-विसर्ज्जने ॥ २८ ॥
	न न न न विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ।
	न न ३न ४स प्रादेशनं निर्वपण मपवर्ज्जन मंहतिः ॥ २९ ॥
मरे के लिये दान ।	पुस्न. (मृतार्थे न्तदह-दानं त्रिषु स्याद्) और्द्ध्वदेहिकम् ।
पितृदान ।	न पु पितृदानं निवापः (स्याच्)
श्राद्ध ।	५न श्राद्धं (तत्कर्म्मशास्त्रतः) ॥ ३० ॥

१ इष्ट. २ उ–. ३ अ–. ४ अं–. ५ श्राद्ध.

यज्ञदीक्षा के अन्त में यज्ञदीक्षा के समापक अर्थात् समाप्तिबोधक यज्ञपूर्वक स्नान विशेष को अवभृथः कहते हैं, (एकं) तत्कर्मार्ह अर्थात् यज्ञकर्म के योग्य वस्तु "द्विज द्रव्य आदि" को यज्ञियं कहते हैं, और तीनो लिङ्ग हैं "स्त्री॰ यज्ञिया" जो क्रतु कर्म है उसे इष्टं कहते हैं "वा क्रतुयज्ञ है, कर्मदान है इन को इष्टं कहते हैं", (एकं); खातं वापी कूप तडाग और देवालय आदि जो कर्म है उसे पूर्त्तं कहते हैं (एकं) ॥ २७ ॥ यज्ञशेष पुरोडाश आदि को अमृतं कहते हैं (एकं) देव पितर आदि के भोजन के शेष को विघसः कहते हैं, (एकं), "(विघसाशीभवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः, विघसो भुक्तशेषः स्याद्यज्ञशेषमथामृतमिति मनुः)" त्यागः, विहापितं, दानं, उत्सर्जनं, विसर्जनं, ॥ २८ ॥ विश्राणनं, वितरणं, स्पर्शनं, प्रतिपादनं, प्रादेशनं, निर्वपणं, अपवर्ज्जनं, अंहतिः, "वा अंहितिः" ये १३ दान के नाम हैं, ॥ २९ ॥ मरे के अर्थ जो मरण दिन से लेकर दशाह पर्यन्त पिण्डदान आदि है उसे और्ध्वदेहिकं, "और भी और्ध्वदैहिकं, स्त्री॰ और्ध्वदैहिकी" कहते हैं, और तीनो लिंग है, पितृदानं, निवापः, ये २ पितरों के निमित्त जो दान किया जाता है उस के नाम हैं और शास्त्र से वह पितृ सम्बन्धी कर्म श्राद्धं है. (श्रद्धा ऽस्ति अत्र तत् श्राद्धं), ॥ ३० ॥

श्राद्ध विशेष ।	न १न अन्वाहार्य्यं मासिकं
श्राद्ध काल विशेष।	पुन (ऽशो ऽष्टमोऽह्नः) कुतपो (ऽस्त्रियाम्)।
श्राद्ध में ब्राह्मण भक्ति।	स स स स पर्य्येषणा परीष्टि (श्चा) ऽन्वेषणा (च) गवेषणा ॥३१॥
विनय ।	स २स सनि (स्त्व) ध्येषणा
मांगना ।	स स ३स स याञ्चा ऽभिशस्ति याचना ऽर्थना ।
	(षट् तु त्रिष्व)
पूजार्थजल ।	पुसन ऽर्घ्य (मर्घार्थे)
पांव धोने का ।	पुसन पाद्यं (पादाय वारिणि) ॥३२॥
अतिथि के निमित्त कर्म्म ।	पुसन ४पुसन (क्रमाद्) आतिथ्या-तिथेये (अतित्यर्थे ऽत्र साधुनि)।
अतिथि-वा पाहुन।	पुसन पुसन ५पु (स्युर्) आवेशिक आगन्तु रतिथि (र्ना गृहागते) ॥ ३३ ॥

१—कं. २ अ—. ३ या॰. ४ आ—. ५ अ—.

मासिक वा अमावास्या के श्राद्ध को अन्वाहार्य्यं, कहते हैं, "उसी प्रकार अन्वाहार्य्यकं, और अनुहार्य्यं" और मासिकं. (एकं) दिन का अष्टम अंश कुतपः कहलाता है, यहां अंश शब्द मुहूर्त पर है, पर्य्येषणा, परीष्टिः. ये २ श्राद्ध में द्विजभक्ति और सुश्रुषा के नाम हैं, अन्वेषणा, गवेषणा, ये २ धर्म आदि के खोजने के नाम हैं, "किसी के मत में ये ४ धर्म आदि के खोजने के नाम हैं" ॥ ३१ ॥ सनिः, "और भी सनी" अध्येषणा; ये २ गुरु आदि से किसी अर्थ में जो प्रार्थना पूर्वक विनती है उस के नाम हैं; याञ्चा, अभिशस्तिः, "अभिषस्तिः" याचना, अर्थना, ये ४ मांगने के नाम हैं, अर्घ्य, पाद्य, आतिथ्य, आतिथेय, आवेशिक, आगन्तव, ये ६ पद शब्द वाच्य वाच्य लिङ्ग हैं, पूजा और उपचारार्थ जल को अर्घ्यं कहते हैं, (एकं) "स्त्री॰अर्घ्या" पांव के अर्थ जलपाद्यं है, (एकं) "स्त्री॰पाद्या", अति के अर्थवस्तु आतिथ्यं है, "आतिथ्या. स्त्री॰ है", और यहां अतिथि के अर्थ जो साधु है उसे आतिथेयं कहते हैं, (एकं) "स्त्री॰ आतिथेयी" आवेशिकः, "स्त्री॰ आवेशिकी", आगन्तुः, "उसी प्रकार आगान्तुः" अतिथिः, गृहागतः, ये ४ घर में आये हुये के नाम हैं, ना पुमान्, "वा अतिथी", ॥ ३३ ॥

	स स स स स स
पूजा ।	पूजा नमस्या ऽपचितिः सपर्य्या-ऽर्चा-ऽर्हणाः (समाः) ।
	स स स १न
उपासना-वा सेवा।	वरिवस्या (तु) शुश्रूषा परिचर्य्या (ऽप्यु) पासनम् ॥ ३४॥
	स स स न
जाना-वा फिरना ।	व्रज्या ऽटा ऽट्या पर्य्यटनं स
ध्यानी-वा मौनी ।	पु २न चर्य्या (त्वीर्य्यापथेस्थितिः) ।
आचमन ।	उपस्पर्श (स्त्वा) चमनम् न ३न
चुप ।	(ऽथ) मौन मभाषणम् ॥ ३५ ॥
	स ४स स पु
अनुक्रम ।	आनुपूर्व्वी (स्त्रियां) (वा) वृत्-परिपाटी अनुक्रमः ।
	पु
	पर्य्याय (श्चा) पु पु पु
अतिक्रम ।	ऽतिपात (स्तु स्यात्) पर्य्यय उपात्ययः ॥ ३६ ॥
	पु पुन न
व्रत ।	नियमो व्रत (मस्त्री तच्चोपवासादि) पुण्यकम् ।
	न ५पु
चान्द्रायण आदि उपवास ।	उपवस्तं (तू) पवासो पु स
विचार ।	विवेकः पृथगात्मता ॥ ३७ ॥
	न ६स
सदाचार और वेदाभ्यास फल।	(स्याद्) ब्रह्मवर्च्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धि

१—उ. २ आ—. ३ अ—. ४ आवृत. ५ उ—. ६—र्द्धिः.

प्राघूर्णिकः, प्राघुणकः, ये २ अभ्यागत के नाम हैं, अभ्युत्थानं, गौरवं, ये २ उठ कर और सत्कार पूर्वक के नाम हैं" पूजा, नमस्या, अपचितिः, सपर्या, अर्चा, अर्हणा, ये ६ पूजा के नाम हैं, वरिवस्या, शुश्रूषा, परिचर्य्या, "परिसर्य्या" उपासनं, "स्त्री० उपासना" "वा उपास्तिः" ये ४ सेवा के नाम हैं; ॥ ३४ ॥ व्रज्या, अटा, अट्या, पर्य्यटनं, ये ४ पर्यटन अर्थात् फिरने के नाम हैं, "अटापर्यटनं भ्रमः यह रत्नकोश है" ईर्यापथे अर्थात् ध्यान और मौन आदि योगमार्ग में जो स्थिति है उसे चर्य्या कहते हैं, (एकं) उपस्पर्शः, आचमनं, ये २ स्नान और आचमन के नाम हैं. मौनं, अभाषणं, ये २ मौन के नाम हैं, ॥ ३५ ॥ "प्राचेतसः, आदिकविः, मैत्रावरुणः, वाल्मीकः, ये ४ वाल्मीक के नाम हैं, गाधेयः, विश्वामित्रः, कौशिकः, ये ३ विश्वामित्र के नाम हैं, व्यासः, द्वैपायनः, पाराशर्य्यः सत्यवतीसुतः, ये ४ वेदव्यास के नाम हैं", आनुपूर्व्वी, "इसी प्रकार आनुपूर्व्यं, आनुपूर्व्वी, वा आनुपूर्वकं", आवृत्, परिपाटी, "ग०व० परिपाटिः" अनुक्रमः, पर्य्यायः ये ५ अनुक्रम के नाम हैं, परिपाटी यहां द्विवचन होने से णत्व न भया; अतिपातः, पर्य्ययः, उपात्ययः, ये ३ अतिक्रम के नाम हैं, ॥ ३६ ॥ नियमः, व्रतं, ये २ व्रतमात्र के नाम हैं, और वह व्रत उपवास और चान्द्रायण आदिक से उत्पन्न जो पुण्य है उसको जानना चाहिये, उपवस्तं, "उपोषितं, उपोषणं, औपवस्तं", उपवासः, ये २ उपवास के नाम हैं, पृथगात्मता अर्थात् पृथक् स्वरूपत्व को विवेकः कहते हैं, (एकं) जैसे चित् और जड़ का विवेक है. ॥ ३७ ॥ वृत्तं अर्थात् सदाचार का पालन और वेदाध्ययन अर्थात् वेद का अभ्यास इन दोनों की सम्पत्ति को ब्रह्मवर्च्चसं और वृत्ताध्ययनर्द्धिः, कहते हैं, (एकं) "वा ब्रह्मणः अर्थात् तप और स्वाध्याय का जो तेज है वह ब्रह्मवर्च्चसं है, यह स्वामी का मत है"

वेदपाठ के आदि में शान्तिपाठ की अञ्जलि ।	(ऽथाञ्जलिः । पाठे) ब्रह्माञ्जलिः (पु)
अञ्जली से वा पढ़ने के समय मुख से निकले जल के बून्द ।	(पाठे विप्रुषो) ब्रह्मबिन्दवः (१पु) ॥ ३८ ॥
आसन विशेष ।	ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं (न)
विधि ।	कल्पो (पु) विधि (पु)-क्रमौ (पु) ।
मुख्य विधि ।	मुख्यः (पु) (स्यात्प्रथमः कल्पो)
गौण विधि ।	ऽनुकल्प (पु) (स्तु ततो ऽधमः) ॥ ३९ ॥
वेदका पढ़ना ।	(संस्कारपूर्वग्रहणं स्याद्) उपाकरणं (न) (श्रुतेः) ।
प्रणाम ।	(समे तु) पादग्रहण (न) मभिवादन (२न) (मित्यु भे) ॥ ४० ॥
सन्यासी ।	भिक्षुः (पु) परिव्राट् (३पु) कर्मन्दी (४पु) पाराशर्य्य (५पु) (पि) मस्करी (६पु) ।

१–न्दु. २ अ–. ३–ज्. ४–न्. ५–न्. ६–न्.

वेदपाठ करने में जो अञ्जलि है उसे ब्रह्माञ्जलिः कहते हैं, अर्थात् पढ़ने के पहिले हाथों की प्रणव पूर्वक अञ्जलि करते हैं, उसका नाम है (एकं) वेदपाठ में विप्रुषः अर्थात् मुख से वा अञ्जली से निकले जल टुकड़े ब्रह्मबिन्दवः कहलाते हैं, "विप्लुषः भी पाठ है" (एकं) ॥ ३८ ॥ ध्यान और योग के आसनों को ब्रह्मासनं कहते हैं, "एकाग्र मन से जो स्मरण है उसे ध्यानं कहते हैं, और चित्त की वृत्ति का जो निरोध है उसे योगः कहते हैं" कल्पः, विधिः, क्रमः, ये ३ आज्ञा देने के शास्त्र के नाम हैं, जो प्रथम कल्प है अर्थात् आदि विधि है वह मुख्यः कहलाता है, जैसे व्रीहिर्यजेत्, (एकं) मुख्य से पीछे अधम अर्थात् जो गौण विधि है वह अनुकल्पः है, जैसे व्रीही के अभाव में नीवार्यजेत्, (एकं) ॥ ३९ ॥ संस्कार पूर्वक श्रुति के ग्रहण को उपाकरणं कहते हैं, और भी "उपाकर्म (–न्) और उपग्रहणं" "संस्कारः, उपनयनं"; पादग्रहणं, उसी प्रकार "उपसंग्रहणं" अभिवादनं, ये २ नाम और गोत्र के कथन पूर्वक नमस्कार विशेष के नाम हैं, ॥ ४० ॥ भिक्षुः, परिव्राट्, "और परिव्राजकः", कर्मन्दी, पाराशरी, "वा पराशरी (–न्)", मस्करी, ये ५ संन्यासी के नाम हैं, ।

तपस्वी ।	१पु पु २पु तपस्वी तापसः पारिकांक्षी
मुनि ।	पु पुस वाचंयमो मुनिः ॥ ४१ ॥
तपस्या के क्लेश का सहना ।	पु पु तपः क्लेशसहो दान्तो
ब्रह्मचारी ।	पु पु वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ।
ऋषि ।	पुस पु ऋषयः सत्यवचसः
वेद व्रत को पूरा कर गुरु की आज्ञा का पानेवाला ।	पु पु स्नातक (स्त्वा) प्लुतव्रती ॥ ४२ ॥
जितेन्द्रिय ।	पु पु पु (ये) निर्ज्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतय (श्च ते) ।
भूमिशायी ।	३पु (यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते) स्थण्डिलशाय्य (सौ) ॥४३॥

१–न. २–न. ३–यी. (–न)

तपस्वी, तापसः, पारिकांक्षी, ये ३ तपस्या मे युक्त के नाम हैं। (पारिव्रज्यज्ञानं कांक्षतीति पारिकांक्षी) वाचंयमः, मुनिः, ये २ वाणी के नियमवाले के नाम हैं, ॥ ४१ ॥ तपस्या के क्लेश के सहनेवाले को दान्तः कहते हैं, वर्णी, (–न) ब्रह्मचारी, (–न) ये २ ब्रह्मचारी के नाम हैं, ऋषिः, "वा रिषिः, स्त्री॰ ऋषी" सत्यवचाः, ये २ सामान्य ऋषि के नाम हैं, ऋषियों के भेद तो महर्षि, देवर्षि, ब्रह्मर्षि, आदि हैं. स्नातकः, "आप्लवव्रती (–न) और आप्लुतव्रती" ये २ जो वेदव्रत धारण किये हुये और गुरु की आज्ञा से स्नान करनेवाले के नाम हैं; (कहा है, गुरवे तु वरं दत्त्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया, वेदव्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव वेति) ॥ ४२ ॥ जिन्होंने स्ववश किये हैं वा जीते हैं इन्द्रिय समूहों को वे यतिनः, और, यतयः कहलाते हैं, "यती (–न) और यतिः" नियम के वश से भूमि विशेष में जो सोता है वह स्थण्डिलशायी कहलाता है, (एकं) ॥ ४३ ॥

	पु स्थण्डिल (श्चा)
व्यासआदि ऋषि।	१पु पु (ऽथ) विरजस्तमस: (स्युर्) द्वयातिगा: ।
पवित्र।	पु पु पु पवित्र: प्रयत: पूत:
पाखण्डी।	पु २पु पाषण्डा: सर्व्वलिङ्गिन: ॥ ४४ ॥
ब्रह्मचर्य का दण्ड।	पु (पालाशो दण्ड) आषाढो (व्रते)
बांस का।	पु रांभ (स्तु वैणव:) ।
ऋषिपात्र।	पुन स (अस्त्री) कमण्डलु: कुण्डी
ऋषिआसन।	स (व्रतिना मासनं) वृषी ॥ ४५ ॥
मृगचर्म।	न ३न स अजिनं चर्म्म कृत्ति: (स्त्री)
भिक्षा का समूह।	न भैक्षं (भिक्षाकदम्बकम्) ।
वेदाभ्यास।	पु पु स्वाध्याय: (स्याज्) जप:

१–मस्. २–न्. ३–न.

स्थण्डिलः, यह भी १ पृथ्वी में सोनेवाले का नाम है. विरजस्तमसः, द्वयातिगः, ये २ एक सत्त्वगुण में युक्त व्यास आदि के नाम हैं, "(रजस्तमोभ्यां विगतः विरजस्तमाः)" पवित्रः, प्रयतः, पूतः, ये ३ पवित्रता के नाम हैं, पापण्डः, "वा पाखण्डः", सर्वलिङ्गी, ये २ बौद्ध क्षपणक आदि दुःशास्त्रवर्ती के नाम हैं, (पालनाच्च त्रयी धर्मः पाशब्देन निगद्यते, तं खण्डयंति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुनेति) ॥ ४४ ॥ वन में ब्रह्मचारियों को जो पलाश सम्बन्धी दंड है उसे आषाढः कहते हैं, (एकं) वेणुः "वा वैणवः" अर्थात् बांस के दण्ड को रांभः कहते हैं, (एकं) कमण्डलुः, कुंडी, ये २ व्रतियों के जलपात्र के नाम हैं, "क्लीब में कमण्डलु, स्त्री॰ कुंडी" "उसी प्रकार कुण्डिका" व्रतियों का आसन वृषी है, (एकं) वृसी भी पाठ है, ॥ ४५ ॥ अजिनं, चर्म, कृत्तिः, ये ३ मृगों के चाम के नाम हैं, भिक्षा के समूह को भैक्षं कहते हैं, (एकं) स्वाध्यायः, जपः, "वा जापः" ये २ वेदाभ्यास के नाम हैं,

यज्ञोषधी का कूटना ।	स पु न सुत्या ऽभिषवः सवनं (च सा) ॥ ४६ ॥
सर्वपापनाशन ।	१पुसन (सर्वैनसा मपध्वंसि जप्यं त्रिष्व) घमर्षणम् ।
अमावस और पूर्णिमा का यज्ञ विशेष ।	पु पु दर्श (श्च) पौर्णमास (श्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक्) ॥४७॥
नित्यकर्म्म ।	पु (शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म्म तद्) यमः ।
कर्म विशेष ।	पु नियम (स्तु स यत्कर्म्म नित्य मागन्तुसाधनम्) ॥ ४८ ॥
जनेऊ बांयें कान्धे का ।	न न उपवीतं यज्ञसूत्रं (प्रोद्धृते दक्षिणे करे) ।
दहिने कान्धे का ।	न प्राचीनावीत (मन्यस्मिन्)
कंठ में मालाकार ।	न निवीतं (कण्ठलम्बितम्) ॥ ४६ ॥
देवतीर्थ ।	न (अङ्गुल्यग्रे तीर्थं) दैवं

१ अ–.

सुत्या, अभिषवः, सवनं, ये ३ यज्ञ में सोमलता के वा यज्ञोषधी के कूटने के नाम हैं, इन में सुत्या टावन्त है, (सुवन्ति सोममस्यां सुत्या) क्यप् प्रत्ययान्त है, ॥ ४६ ॥ सर्व एनस अर्थात् पापों के नाश करने वाले जप्यं अर्थात् "ऋचा आदि को अघमर्षणं कहते हैं", (एकं) "स्त्री॰ में तो अघमर्षणी" पक्षान्तयोः अर्थात् अमावस्या और पौर्णमासी में विहित याग को क्रम से दर्शः और पौर्णमासः कहते हैं, (एकैकं), ॥ ४७ ॥ शरीरसाधनापेक्षं अर्थात् शरीर मात्र से साध्य नित्य जो कर्म है उसे यमः कहते हैं, (अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्य–परिग्रहो यमा इति) (एकं), जो कर्म आगन्तुसाधन है अर्थात् बाह्य साधन है वा मट्टी जल आदि साधन नित्य और कृत्रिम कर्म है, वह नियम है, (शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाइति) ॥ ४८ ॥ दक्षिण हाथ में जो ब्रह्मसूत्र धारण किया जाता है उसे उपवीतं और यज्ञसूत्रं, कहते हैं, (द्वयं), दूसरे हाथ में वा वाम हाथ में जो ब्रह्मसूत्र धारण किया जाता है उसे प्राचीनावीतं कहते हैं, (एकं) कण्ठ में लम्बित अर्थात् कंठ में सीधा लम्बा किया ब्रह्मसूत्र निवीतं कहलाता है, (एकं) ॥ ४६ ॥ अंगुलियों के आगे देवतीर्थ है, इसी लिये (देवतीर्थेन तर्पयेत्) यहां अंगुलिओं के आगे से देवताओं का तर्पण किया जाता है यह अर्थ जानना चाहिए,

प्रजापतितीर्थ ।	(स्वल्पांगुल्यो र्मूले) कायम्[न] ।
पितृतीर्थ ।	(मध्ये ऽङ्गुष्ठा ङ्गुल्योः) पैत्रं[न]
ब्रह्मतीर्थ ।	(मूले त्वङ्गुष्ठस्य) ब्राह्यम्[न] ॥ ५० ॥
ब्रह्म में मिलना ।	(स्याद्) ब्रह्मभूयं[न] ब्रह्मत्वं[न] ब्रह्मसायुज्य[न] (मित्य पि) ।
देव में मिलना ।	देवभूयादिकं[न] (तद्वत्)
आचार विशेष ।	कृच्छ्रं[न] (सान्तपनादिकम्) ॥ ५१ ॥
संन्यास विशेष ।	(संन्यासवत्यनशने पुमान्) प्रायो[पु]
नष्टाग्नि ।	(ऽथ) वीरहा[१पु] ।
	नष्टाग्निः[पु]
लोभी और दम्भी ।	कुहना[स] (लोभान्मिथ्येर्य्यापथकल्पना) ॥ ५२ ॥
संस्कारहीन ।	व्रात्यः[पु] संस्कारहीनः[पु] (स्याद्)
वेदाभ्यासरहित ।	अस्वाध्यायो[पु] निराकृतिः[पु] ।

१—न.

स्वल्पांगुल्योर्मूले अर्थात् अनामिका और कनिष्ठिका के मूल में कायं, तीर्थ है, (कः प्रजापतिर्देवता ऽस्य कायं, प्राजापत्यं इत्यर्थः) अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य भाग में पैत्रं, उसी प्रकार पित्र्यं वा पैत्र्यं तीर्थ है, अंगुष्ठ के मूल में तो ब्राह्मं, वा ब्राह्म्यं तीर्थ है (एकैकं) ॥ ५० ॥ ब्रह्मभूय, आदि तीन ब्रह्मभाव के नाम हैं, "जैसे ब्रह्म का भाव ब्रह्मभूयं है" इसी प्रकार देवभूयं, देवत्वं, देवसायुज्यं, ये ३ देवभाव के नाम हैं; सान्तपन आदि कृच्छ्रं है (एकं), गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकं, एकरा (त्रोपवासश्च कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतमिति) आदि पद से प्राजापत्य आदि का संग्रह है, ॥ ५१ ॥ संन्यास पूर्वक जो भोजन का त्याग है उसे प्रायः कहते हैं, (एकं) वीरहा, नष्टाग्निः, ये २ नष्ट अग्निवाले के नाम हैं; लोभ से परधन आदि की अभिलाषा से जो मिथ्या पदों से अर्थ के पथ की कल्पना है और दंभ से जो ध्यान आदि का सम्पादन है उसे कुहना कहते हैं; (एकं) ॥ ५२ ॥ संस्कार जो यज्ञोपवीत आदि है इस से गौण काल के उत्तर भी जो संस्कारहीन है उसे व्रात्यः, और संस्कार हीनः, कहते हैं, (एकं) जो अपने वेद से हीन है उसे अस्वाध्यायः, और निराकृतिः कहते हैं, (एकं) ।

वहुरूपिश्रा-वा ठग	धर्म्मध्वजी[१पु] लिङ्गवृत्तिर्[२पु]
ब्रह्मचर्य्यहीन ।	अवकीर्णी[३पु] क्षतव्रतः[पु] ॥ ५३ ॥
सूर्य्योदय और सूर्य्यास्तमेंसोनेवाले	(सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च । अंशुमान्) अभिनिर्मुक्ता[पु]-ऽभ्युदितौ[पु] (तौ यथाक्रमम्) ॥ ५४ ॥
छोटा भाई ।	परिवेत्ता[४पु] (ऽनुजो ऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्) ।
बड़ा भाई ।	परिवित्ति[पु] (स्तु तज्ज्यायान्)
विवाह ।	विवाहो[पु]-पयमौ[५पु] (समौ) ॥ ५५ ॥ (तथा) परिणयो[पु] द्वाहो[६पु] पयामः[७पु] पाणिपीडनम्[न] ।
मैथुन ।	व्यवायो[पु] ग्राम्यधर्म्मो[पु] मैथुनं[न] निधुवनं[न] रतम्[न] ॥ ५६ ॥
त्रिवर्ग ।	त्रिवर्गो[पु] (धर्म्मकामार्थैश्)
चतुर्वर्ग ।	चतुर्वर्गः[पु] (समोक्षकैः) ।
मिले सर्व धर्म ।	(सबलैस्तैश्) चतुर्भद्रं[न]
वर के मित्र वा वलधा-वा सहवाला।	जन्याः[पु] (स्निग्धावरस्य ये) ॥ ५७ ॥

॥ इति ब्रह्मवर्गः ॥

१—न. २—त्ति. ३—न. ४ त्तृ—. ५ उ—. ६ उ—. ७ उ—.

धर्म्मध्वजी, लिङ्गवृत्तिः, ये २ जो जीविका के अर्थ जटा आदि धारण करते हैं उन के नाम हैं; अवकीर्णी, क्षतव्रतः, ये २ नष्ट ब्रह्मचर्य्य के नाम हैं; ॥ ५३ ॥ अंशुमान् सूर्य्य जिस के सोने में अस्त को जाता है उसे क्रम से अभिनिर्मुक्तः कहते हैं, (एकं) फिर जिस के सोने में अंशुमान् उदय होता है उसे अभ्युदितः कहते हैं; (एकं) ॥ ५४ ॥ विना विवाह संस्कार किये जेठे भाई को जो छोटा भाई अपना विवाह संस्कार कर्त्ता है वा किया है उसे परिवेत्ता कहते हैं, (एकं), और उस परिवेत्ता का जेठा भाई परिवित्तिः "और भी परिवृत्तिः, और परिवृस्तिः" कहलाते हैं, (एकं), विवाहः, उपयमः, ॥ ५५ ॥ परिणयः, उद्वाहः, उपयामः, पाणिपीडनं, "और भी पाणिग्रहणं" आदि ये ६ विवाह के नाम हैं; व्यवायः, ग्राम्यधर्मः, मैथुनं, निधुवनं, रतं "और भी रमणं, सुरतं और रतिः" ये ५ मैथुन के नाम हैं; ॥ ५६ ॥ वेदविहित यज्ञ आदि धर्म है, यथाविधि स्त्री का सेवन काम है, और धन अर्थ है, ये ३ मिलकर समुदाय को त्रिवर्गः कहते हैं. "और त्रिगणः भी" (एकं) मोक्ष के सहित धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष, इस समुदाय को चतुर्वर्गः कहते हैं, (एकं) उन धर्म आदिकों से मिले धर्म को चतुर्भद्रं, कहते हैं. (एकं); वर के जो बड़े प्रिय हैं वे वयस्याः, जन्याः, ए·व· जन्यः, कहलाते हैं, (एकं) ॥ ५७ ॥ इति ब्रह्मवर्गः ॥

॥ अथ अष्टमवर्गः ॥

	पु पु पु पु १पु
क्षत्रिय ।	मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
	पु २पु पु ३पु पु पु पु
राजा ।	राज्ञि राट्-पार्थिव-क्ष्माभृ न्नृप-भूप-महीक्षितः ॥ १ ॥
	पु
महाराजा ।	(राजा तु प्रणता शेष सामन्तः स्याद्) अधीश्वरः ।
	४पु पु
महाराजाधिराज ।	चक्रवर्त्ती सार्वभौमो
	पु
छोटा राजा ।	(नृपो ऽन्यो) मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
राजसूय आदि यज्ञ का कर्ता और सब राजाओं का अध्यक्ष वा बादशाह ।	(येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्ये श्वरश्च यः ।
	५पु
	शास्ति यश्चा ज्ञया राज्ञः स) सम्राड्
	न
राजसमूह ।	(अथ) राजकम् ॥ ३ ॥
	न
क्षत्रियों का गणआदि ।	राजन्यकं (च नृपति क्षत्रियाणां गणे क्रमात्) ।

१ राज्, २—ज्. ३—त्. ४—न्. ५—ज्.

मूर्द्धाभिषिक्तः, राजन्यः, बाहुजः, क्षत्रियः, उसी प्रकार क्षत्री (–न्), और क्षत्तः, वा क्षत्रः" विराट्, ये ५ क्षत्रिय के नाम हैं, राजा, (—न्) राट्, पार्थिवः, क्ष्माभृत्, "उसी प्रकार महीभृत्" "क्ष्माभुक्" नृपः, नृपतिः, नरपतिः, आदि भूपः, "और भी भूपालः, भूमिपालः आदि" महीक्षित्, ये ७ राजा के नाम हैं, ॥ १ ॥ सब देशों के सम्पूर्ण प्रणत राजा लोग जिसकी आज्ञा से राज करते हैं उसे अधीश्वरः, कहते हैं, (एकं), चक्रवर्त्ती, सार्वभौमः, ये २ समुद्र पर्य्यन्त क्षितीश के नाम हैं, उससे भिन्न राजा मण्डलेश्वरः कहलाता है, (एकं); ॥ २ ॥ जिसने राजसूय यज्ञ विशेष को किया है जो द्वादश मण्डल का ईश्वर है और जो अपनी इच्छा से सब राजाओं को आज्ञा करता है, ऐसे तीन विशेषण से युक्त राजा समराट्, कहलाता है, (एकं) ॥ ३ ॥ राजाओं के समुदाय को राजकं कहते हैं (एकं); क्षत्रियों के समुदाय को राजन्यकं कहते हैं; ।

मित्र ।	न १पु २पु (अथ) मित्रं सखा सुहृत् ।
मित्रता-वा मिताई	न न सख्यं साप्तपदीनं (स्याद्)
भलापन ।	पु न अनुरोधोऽनुवर्त्तनम् ॥ १२ ॥
जासूस-वा हल-कारा ।	पु पु ३पु ४पु पु यथार्हवर्णः प्रणिधि रपसर्प श्चरः स्पशः । पु ५पु चार (श्च) गूढपुरुषश्
विश्वासी ।	६पुस्त्रन पुस्त्रन (चा) प्तः प्रत्ययित (स्त्रिषु) ॥ १३ ॥
ज्योतिषी ।	पु पु पु पु साम्वत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञ-गणका (वपि) । पु पु ७पु पु (स्युर्) मौहूर्तिक-मौहूर्त-ज्ञानि-कार्त्तान्तिका (अपि) ॥१४॥
शास्त्री ।	पु पु तांत्रिको ज्ञातसिद्धान्तः
मोदी ।	८पु पु सत्री गृहपतिः (समौ) ।
लेखक ।	पु पु पु पु लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चु (श्च) लेखके ॥ १५ ॥

१—खि. २—द्. ३ अ—. ४ च—. ५—प. ६ आप्त. ७—न्, ८—न्.

मित्रं, सखा, सुहृत्, ये ३ मित्र के नाम हैं, "वा मित्त्रं, पुं· मित्रः, स्त्री· मित्रा, स्त्री· सखी"; सख्यं, साप्तपदीनं, ये २ मित्रता के नाम हैं, अनुरोधः, अनुवर्त्तनं, ये २ अनुकूलता के नाम हैं, ॥ १२ ॥ यथार्हवर्णः, प्रणिधिः, अपसर्पः, "वा अवसर्पः" चरः, स्पशः, चारः, गूढ-पुरुषः, ये ७ चार पुरुष वा दूत इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (स्पशते वाधते परान् इति स्पशः), आप्तः, "स्त्री· आप्ता", प्रत्ययितः, और "प्रत्ययिता", ये २ निश्चय ज्ञानवाले के नाम हैं, ॥ १३ ॥ साम्वत्सरः, ज्यौतिषिकः, "वा ज्योतिषिकः", दैवज्ञः, गणकः, "स्त्री· गणकी" मौहूर्त्तिकः, मौ-हूर्त्तः, ज्ञानी, कार्त्तान्तिकः, ये ८ ज्योत्सी के नाम हैं, ॥ १४ ॥ तान्त्रिकः, ज्ञातसिद्धान्तः, ये २ शास्त्रज्ञ के नाम हैं, "(ज्ञातः सिद्धान्तो येन स ज्ञातसिद्धान्तः)" सत्री, "और भी सत्त्री", गृह-पतिः, ये २ गृह के अध्यक्ष के नाम हैं, लिपिकारः, "वा लिपिकरः, और लिविंकरः" अक्षर-चणः, अक्षरचुंचुः, लेखकः, ये ४ लेखक के नाम हैं, "(अक्षरैर्वित्तो ऽक्षरचणः) ॥ १५ ॥

	न न स १स
लिखा-वा अक्षर ।	लिखिता-ऽक्षरसंस्थाने लिपि लिवि (रुभे स्त्रियौ) ।
	पु पु
दूत ।	(स्यात्) सन्देशहरो दूतो
	न
दूत का काम ।	दूत्यं (तद्भावकर्मणि) ॥ १६ ॥
	पु पु पु पु पु
पथिक ।	अध्वनीनो ऽध्वगो ऽध्वन्यः पांथः पथिक (इत्यपि) ।
राज्य के अङ्ग ।	(स्वाम्य-मात्य-सुहृ-त्कोश-राष्ट्र-दुर्ग-बलानि च) ॥ १७ ॥
	न स
	राज्याङ्गानि प्रकृतय:
पुरवासियों का समूह भी ।	(पौराणां श्रेणयो ऽपि च) ।
	पु पु न न न पु
मेल आदि ६ गुण ।	सन्धिर्नो विग्रहो यान मासनं द्वैध माश्रयः ॥ १८ ॥
	पु
	(षड्) गुणा:
	स
शक्तियां ।	शक्तय (स्तिस्रः प्रभावो-त्साह-मन्त्रजाः) ।

१ लि—.

लिखितं. "और लिखनं, वा लेखनं" अक्षरसंस्थानं, "अक्षरविन्यासं" लिपिः, "उसी प्रकार लिपी", लिविः, और "लिवी" ये ४ लिखे हुये अक्षर के नाम हैं, सन्देशहरः, दूतः, "स्त्री॰ दूती", ये २ दूत के नाम हैं, और दूत के काम को दूत्यं, और दौत्यं कहते हैं, ॥ १६ ॥ अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः. पान्थः, पथिकः, ये ५ पथिक के नाम हैं, "स्त्री॰ अध्वनीना, अध्वगा, अध्वन्या, और स्त्री॰ पांथा, पथिकी, पथिका भी और भी पुं॰ पथकः", स्वामी राजा, अमात्य मंत्री, सुहृत् मित्र, कोशः, धन का समूह, राष्ट्रं जनपदवर्त्ती भूमि, दुर्गं दुर्गमस्थान, "पर्वत आदि" बलं सेना, ॥ १७ ॥ ए॰व॰ राज्याङ्गं, और प्रकृतिः, ये ७ राज्य के अङ्ग हैं, "(स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत्, परस्परोपकारीदं सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते इति कामन्दकीये)" ये ही सब प्रकृति वाच्य हैं, और पुरवासिओं का समूह भी प्रकृति शब्द वाच्य है, "पौरश्रेणी के सहित अष्टाङ्ग राज्य है" संधिः अर्थात् स्वर्ण आदि देकर शत्रुओं को प्रीति उत्पन्न करना, दूसरे के राज्य में जलाने और लूट लेने को विग्रहः कहते हैं, शत्रु की ओर जयशील का गमन यानं है, निज शक्ति के रुकने पर काल बिताने के लिये कोट बनाकर उसमें रहना आसनं है, बलवान के साथ मेल और अबल के साथ विग्रह ये २ द्वैधं कहलाते हैं; शत्रु से पीड़ित को बलवान राजा के आश्रयण को आश्रयः कहते हैं, इन के भेद कामन्दक आदि नीतिशास्त्र में देख लेना चाहिये, ॥ १८ ॥ ये संधि, आदि ६ गुणाः, ए॰व॰ गुणः कहलाते हैं, (एकं), प्रभावः, उत्साहः, मन्त्रजः, ये ३ शक्तियां कहलाती हैं; (एकं), इनमें कोश दण्ड और तेज ये प्रभाव शक्ति हैं, विक्रम आदि से उन्नति उत्साह शक्ति है, सन्धिविग्रह आदि को मंत्र से जैसा चाहिये तैसे स्थापन करना मंत्र शक्ति है, किसी के मत में पंचांगमंत्र मंत्र शक्ति है ॥

त्रिवर्ग ।	पु न स पु (क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च) त्रिवर्गो (नीतिवेदिनाम्) ॥ १९ ॥
प्रभाव ।	पु पु (स) प्रतापः प्रभाव (श्च यत्तेजः कोपदण्डजम्) ।
उपाय ।	१पु (भेदो दण्डः साम दानमित्यु) पाय (चतुष्टयम्) ॥ २० ॥
दण्ड ।	न पु पु साहसं (तु) दमो दण्डः
मिलाप ।	२न न साम सान्त्वम् (अथो समौ) ।
भेद करना ।	पु ३पु भेदोपजापाव्
मंत्री आदि के कार्य्य का देखना ।	स उपधा (धर्म्माद्यै र्य्यत्परीक्षणम्) ॥ २१ ॥
सलाह ।	(पञ्च त्रिष्व्) पुस्न ऽपडक्षीणो (यस्तृतीयाद्यगोचरः) ।
एकान्त ।	पुस्न पुस्न पुस्न पुस्न ४न विविक्त-विजन-च्छन्न-निःशलाका-(स्तथा) रहः ॥ २२ ॥ ५अ ६अ रह (श्चो) पांशु (चालिंगे)
एकान्त की बात ।	पुस्न रहस्यं (तद्भवे त्रिषु) ।
विश्वास ।	पु पु (समौ) विस्रंभ-विश्वासौ

१ उ–. २–न्. ३ उ–प. ४–स्. ५–स्. ६ उ–.

क्षयः, स्थानं, वृद्धिः, ये ३ नीतिज्ञों के त्रिवर्ग हैं, अर्थात् नीतिशास्त्रोक्त त्रिवर्ग हैं, (एकं), आठ वर्ग का अपचय क्षयः है, उसी का उपचय वृद्धिः है, उपचय और अपचय से रहित होकर रहना स्थानं है, आठ वर्ग तो (कृषिर्वणिक् पथो दुर्गं सेतुः कुंजरवन्धनं । खनि-र्वनकरादानमित्युक्तः) ये ८ वर्ग हैं, ॥ १९ ॥ कोशः धनसमूह, दण्डः दम, सेना से उत्पन्न तेज प्रताप और प्रभाव है, साम प्रिय वचन आदि, दानं धन आदि का समर्पण करना, भेदः उपस्थित और मिले हुये शत्रुओं को भेद से स्वाधीन करना, दंड देना दण्डः है, ये ४ उपाय चतुष्टय कहलाते हैं, ॥ २० ॥ साहसं, दमः, दण्डः, ये ३ दंड के नाम हैं, साम (–न्) सांत्वं, उसी प्रकार शाम–(न्) और शान्त्वं ये २ मिलाप के नाम हैं, भेदः, उपजापः, ये २ मिले हुये के भेद करने के नाम हैं, धर्म अर्थ काम और भय से परीक्षा पूर्वक, मंत्री आदि के आशय के ढूंढने को उपधा कहते हैं, ॥ २१ ॥ अब अपड़क्षीण आदि निःशलाका अन्त त्रिलिङ्ग हैं अर्थात् पांच शब्द वाच्यलिङ्ग हैं, जो तृतीयादि से नहीं जाना जाता किन्तु दोही से किया मंत्र आदि है वह अपड़क्षीणः, कहलाता है, (शक्षं), विविक्तः, "स्त्री॰ विविक्ता" विजनः, छन्नः, "वा छन्नः" निःशलाकः, रहः, उसी प्रकार पुं॰ रहः (–ह) ॥ २२ ॥ रहः, उपांशुः ये ७ एकान्त के नाम हैं, इन में एक रहः सान्त और क्लीव है, दूसरा रहः और उपांशु ये दोनो अलिंग और अव्यय हैं, एकान्त में हो उसे रहस्यं "स्त्री॰ रहस्या" कहते हैं, विस्रम्भः, "और विश्रम्भः" विश्वासः, ये २ विश्वास के नाम हैं,

अन्याय ।	भ्रेषो (भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥
न्याय ।	अभ्रेष-न्याय-कल्पा (स्तु) देशरूपं समञ्जसम् ।
न्याय से युक्त वस्तु ।	युक्त मौपयिकं लभ्यं भजमाना ऽभिनीत (वत्) ॥ २४ ॥
	न्याय्यं (च त्रिषु षट्)
युक्तायुक्त परीक्षा ।	संप्रधारणा (तु) समर्थनम् ।
आज्ञा-वा हुकुम ।	अपवाद (स्तु) निर्द्देशो निदेशः शासनं (च सः) ॥ २५ ॥
	शिष्टि (श्चा) ज्ञा (च)
मर्य्यादा ।	संस्था (तु) मर्य्यादा धारणा स्थितिः ।
अपराध ।	आगो ऽपराधो मंतु (श्च)
बांधना-वा कैद ।	(समे तू) द्दान-बन्धने ॥ २६ ॥
दूना दण्ड ।	द्विपाद्यो (द्विगुणो दण्डो)
पोत-वा राजभाग ।	भागधेयः करो बलिः ।
मासूल ।	(घट्टादिदेयं) शुल्को (ऽस्त्री)
भेंट-वा नजर ।	प्राभृतं (तु) प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

१ श्री–. २ आज्ञा. ३–स. ४ उ–.

यथोचित स्वरूप से भ्रंश अर्थात् गिरना भ्रेषः है, (एकं); ॥ २३ ॥ अभ्रेषः, न्यायः, कल्पः, देशरूपं, समंजसं, ये ५ नीति के नाम हैं; युक्तं, औपयिकं, लभ्यं, भजमानं, अभिनीतं, ॥ २४ ॥ न्याय्यं, ये ६ न्याय से युक्त द्रव्य के नाम हैं, और ये ६ तीनो लिंग हैं, संप्रधारणा, समर्थनं, ये २ युक्त और अयुक्त की परीक्षा के नाम हैं, अपवादः, निर्द्देशः, निदेशः, शासनं, ॥ २५ ॥ शिष्टिः, "और भी शास्तिः" आज्ञा, ये ६ काम कार्य्य कहने की आज्ञा के नाम हैं, संस्था, मर्य्यादा, धारणा, स्थितिः, ये ४ न्याय मार्ग में रहने के नाम हैं, आगः, अपराधः, मंतुः, ये ३ अपराध के नाम हैं, आगः सान्त और क्लीव है, मन्तुः पुं· है, उद्दानं, बन्धनं, ये २ बन्धन के नाम हैं, ॥ २६ ॥ द्विगुण दण्ड द्विपाद्यः है, "(द्वौ पादौ परिमाणमस्य द्विपाद्यः)" भागधेयः, करः, "और भी कारः" बलिः, ये ३ लोगों से जो राजा को मिलता है अर्थात् पोत के नाम हैं; घाट आदि नदी तीर स्थान में वस्तुओं को पार ले जाने और ले आने में जो राजभाग दिया जाता है वह शुल्क अर्थात् मासूल कहलाता है, (एकं), प्राभृतं, प्रदेशनं, ॥ २७ ॥

कन्यादान में और भाई वन्धुआदिकों केदेने की वस्तु।	न १न २न ३स उपायन मुपग्राह्य मुपहार (स्तथो) पदा । पु न (यौतकादि तु यद्देयं) सदायो हरणं (च तत्) ॥ २८ ॥
वर्त्तमान काल ।	पु न तत्काल (स्तु) तदात्वं (स्याद्)
आने वाला काल।	स (उत्तरः काल) आयतिः ।
तुरंत फल ।	न सांदृष्टिकं (फलं सद्यः)
आनेवाला फल ।	पु उदर्कः (फलमुत्तरम्) ॥ २९ ॥
अदृष्ट फल ।	न अदृष्टं (वह्नितोयादि)
दृष्ट फल ।	न दृष्टं (स्वपरचक्रजम्) ।
अपने सहायकसेभय।	न (महीभुजाम्) अहिभयं (स्वपक्षप्रभवं भयम्) ॥ ३० ॥
कानून चलाना ।	स ४पु प्रक्रिया (त्व) धिकारः (स्याच्)
चवंर ।	न न चामरं (तु) प्रकीर्णकम् ।
राजगद्दी ।	न न नृपासनं (यत्तद्) भद्रासनं
सिंहासन ।	न सिंहासनं (तु तत्) ॥ ३१ ॥

१ उ—. २ उ—. ३ उ—. ४ अ—.

उपायनं, उपग्राह्यं, उपहारः, उपदा, ये ४ नृप गुरु आदि के दर्शन के पहिले समर्पण किये जाने वस्तु वा भेंट नजर के नाम हैं, युतक जो वधू और वर हैं, इनके सम्बन्धी धन को यौतकं कहते हैं, "यौतुकं" वन्धु आदिकों के जो देय धन का देना है वह सदायः "उसी प्रकार सुदायः" और हरणं, कहलाता है, "कन्यादान काल में और व्रतभिक्षा आदि में भी दीयमान द्रव्य के नाम हैं, यह वाचस्पति का मत है, ॥ २८ ॥ तत्कालः, तदात्त्वं, ये २ वर्त्तमान काल के नाम हैं, आनेवाले काल को आयतिः "उसी प्रकार पुं॰ आयतः" कहते हैं, जो सद्यः फल है उसे सान्दृष्टिकं कहते हैं, (एकं) उत्तर काल में होनेवाले फल को उदर्कः कहते हैं, ॥ २९ ॥ अग्नि का उत्पात और अति वृष्टि आदि के किये भय को अदृष्टं कहते हैं, (एकं), "(आदिना हुताशनो जलं व्याधिर्दुर्भिक्षं मरणं तथा अति वृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभादयो गृह्यंते)", अपने और अन्य राज्य से उत्पन्न और चोर आदि से उत्पन्न भय को दृष्टं कहते हैं, राजाओं को अपने सहायकों से उत्पन्न भय को अहिभयं कहते हैं, (एकं), ॥ ३० ॥ प्रक्रिया, अधिकारः, ये २ व्यवस्था के स्थापन करने के नाम हैं, चामरं, "उसी प्रकार चमरं, स्त्री॰ चामरा" प्रकीर्णकं, ये २ चंवर के नाम हैं, नृपासनं, भद्रासनं, ये २ मणि आदि से बनाये राजासन कहलाते हैं, वही, नृपासन सोने से बनाया होय तो उसे सिंहासनं कहते हैं, (एकं) ॥ ३१ ॥

	(हैमं)
छाता।	न १न छत्रं (त्वा) तपत्रं
राजा का छाता।	२न (राज्ञस्तु) नृपलक्ष्म (तत्)।
पूर्ण कलश।	पु पु भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः
झारी।	पु स भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

॥ अथ द्वितीय प्रकरण ॥

सेना निवास।	पु न निवेशः शिविरं (षण्ढे)
पहरा-वा गस्त।	न ३न सज्जनं (तू) परक्षणम्।
सेनांग।	न (हस्त्यश्वरथपादान्तं) सेनाङ्गं (स्याच्चतुष्टयम्) ॥ १ ॥

१ आ–. २–न. ३ उ–.

छत्रं, "वा छत्त्रं" आतपत्रं, ये २ छाता के नाम हैं, राजा का छाता होय तो नृपलक्ष्म कहलाता है, (एकं), भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः, ये २ पूर्ण घट के नाम हैं, भङ्गारः, कनकालुका, ये २ सोने के बने पात्र विशेष "वा झारी" इस प्रसिद्ध के नाम हैं ॥ ३२ ॥ अथ द्वितीय प्रकरण ॥ निवेशः, शिविरं, ये २ सेना के वासस्थान के नाम हैं, सज्जनं, उपरक्षणं, ये २ सेना के रक्षार्थ नियुक्त "वा पहरा–गस्त" इस प्रसिद्ध के नाम हैं, हाथी–घोड़ा–रथ–पैदल, ये ४ सेनाङ्ग कहलाते हैं, ॥ १ ॥

हाथी ।	१पु पु २पु पु पु पु दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदो ऽनेकपो द्विपः । पु पु पु पु पु ३पु मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ २ ॥ पु पु ४पु इभः स्तम्बेरमः पद्मी
हाथियों का राजा।	पु पु यूथनाथ (स्तु) यूथपः ।
मदान्ध ।	पु पु मदोत्कटो मदकलः
हाथी के बच्चे ।	पु पु कलभः करिशावकः ॥ ३ ॥
मदस्रावी हाथी ।	पु पु पु प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः
बिना मद का ।	पु पु (समाव्) उद्वान्त निर्मदो ।
हाथी का झुण्ड ।	पु स हास्तिकं गजता (वृन्दे)
हथिनी ।	स स स करिणी धेनुका वशा ॥ ४ ॥
हाथी का गाल ।	पु पु गण्डः कटो
उसका मद ।	पु न मदो दानं
शूंड़ से निकला जल	पु पु वमथुः करशीकरः ।
उसके शिरके मांसपिंड	पु कुंभौ (तु पिण्डौ शिरसः)

१-न २-न. ३-न. ४-न.

दन्ती, दन्तावलः, हस्ती, द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मतंगजः, गजः, नागः, "और भी नगजः", कुंजरः, वारणः, करी, ॥ २ ॥ इभः, स्तम्बेरमः, पद्मी, "और पद्म" ये १५ हाथी के नाम हैं. "(अतिगर्वितः कुंजो हनुरस्य कुंजरः)" यूथनाथः, यूथपः, ये २ यूथ में मुख्य गज के नाम हैं, मदोत्कटः, मदकलः, ये २ मतवाले हाथी के नाम हैं, कलभः, "स्त्री॰ कलभी" करिशावकः, ये २ हाथी के बच्चे के नाम हैं, ॥ ३ ॥ प्रभिन्नः, गर्जितः, मत्तः, ये ३ टपकते मदवाले हाथी के नाम हैं, उद्वान्तः, निर्मदः, ये २ गत मदवाले हाथी के नाम हैं, "(उद्वमति मदं उद्वान्तः)" हास्तिकं, गजता, ये २ हाथी के समूह के नाम हैं, करिणी, धेनुका, वशा, "हस्तिनी, पद्मिनी, करेणुः, वासिता, आदि" ये ३ हथिनी के नाम हैं, ॥ ४ ॥ हाथी का गंडस्थलः, और कटः, "करटः" कहलाता है, (गर्क), मदः, दानं, ये २ मदजल के नाम हैं. वमथुः, करशीकरः, ये २ हाथी के शूंड़ से निकले जल के कण के नाम हैं, शिर के दो पिण्डों को कुम्भौ, ए॰व॰ कुम्भः, कहते हैं,

कुम्भों का मध्य।	पु (तयो र्मध्ये) विदु: (पुमान्) ॥ ५ ॥
हाथी का ललाट वा माथा।	पु न अवग्रहो ललाटं (स्याद्)
उस्के नेत्रों का गोल।	स न इषिका (त्वचिकूटकम्)।
उस्का देखना।	(अपाङ्गदेशो) निर्य्याणं
उस्के कानों की जड़ि।	स (कर्णमूलं तु) चूलिका ॥ ६ ॥
उस्के ललाट का अधोभाग।	न (अध: कुंभस्य) वाहित्थं
दांतों का मध्य।	न प्रतिमान (मधो ऽस्य यत्)।
कन्धा।	न पु आसनं स्कन्धदेश: (स्यात्)
बूंद समूह।	न न पद्मकं विन्दुजालकम् ॥ ७ ॥
बगल।	पु पु पक्षभाग: पार्श्वभागो
आगे का भाग।	पु दन्तभाग (स्तु यो ऽग्रत:)।
आगे की जंघा का भाग और पाछे की जंघा का भाग।	१न २न (द्वौ पूर्व्वपश्चाज्जंघादिदेशौ) गात्रा ऽवरे (क्रमात्) ॥ ८ ॥
हांकने की लकड़ी।	न न तोत्रं वेणुकम्
हाथी का खूंटा।	न पु आलानं बन्धस्तम्भे
उसकी जंजीर।	पुसन (ऽथ) शृंखले।

१—त्र. २—र.

उन कुम्भों के मध्य आकाशस्थान को विदु: कहते हैं, "बाजे पढ़ते हैं विदू:" (एक) ॥ ५ ॥ गज के ललाट को अवग्रह: "और भी अवग्राह:", कहते हैं, ईषिका, "और इषिका, वा ईषीका, और भी ईशीका" आदि अक्षिकूटकं, ये २ हाथी के नेत्र गोल के नाम हैं, हाथी के नेत्रों के किनारे के देश को निर्य्याणं वा देखने को कहते हैं, (एक) कान के मूल को चूलिका कहते हैं, (एक) ॥ ६ ॥ कुम्भ के अधोभाग को वाहित्थं "वा वातकुम्भ:", कहते हैं, यह ललाट के भी अधोभाग में जानना चाहिये, (एक) इस वाहित्थ के अधोभाग में दांतों के मध्य को प्रतिमानं कहते हैं, (एक) गज का स्कन्धदेश आसनं है. (एक) विन्दु समूह को पद्मकं वा पद्मं कहते हैं, (एक) "(पद्ममिव रक्तत्वात्पद्मकं)" हाथियों के देह में बहुधा लाल विन्दु होते हैं, ॥ ७ ॥ गज के पार्श्वभाग को पक्षभाग:, और पार्श्वभाग:, कहते हैं, आगे का जो भाग है वह दन्तभाग: है, (एक) हाथी के पूर्व जंघा आदि देश गात्रं है, और पश्चात् जंघा आदि देश अवरं है, (एकैकं) ॥ ८ ॥ तोत्रं, वैणुकं, "बाजे पढ़ते हैं वेणुकं", ये २ हांकने के दंड के नाम हैं, बन्धन के आधार खंभे को आलानं कहते हैं, (एक), शृंखलं" "स्त्री• शृंखला", ।

	पु पुन अंदुको निगडो (ऽस्त्री स्याद्)
आंकुश ।	पुन पु अंशुको (ऽस्त्री) शृणिः (स्त्रियाम्) ॥ ९ ॥
उसके कमर वान्धने की रस्सी ।	स स स चूषा कक्ष्या वरत्रा (स्यात्)
तैयार करना ।	स स कल्पना सज्जना (समे) ।
गद्दी-वा झूल ।	स १न पु पु पुस प्रवेण्या स्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो (द्वयोः ॥ १० ॥)
लड़ाई के अयोग्य हाथी और घोड़ा ।	न वीतं (त्वसारं हस्त्यश्वं)
वान्धने का स्थान ।	स स वारी (तु) गजबन्धनी ।
घोड़ा ।	पु पु पु पु पु पु घोटके पीति-तुरग-तुरंगा-ऽश्व-तुरङ्गमाः ॥ ११ ॥
	२पु पु ३पु पु पु पु ४पु वाजि-वाहा-ऽर्व-गन्धर्व-हय-सैंधव-सप्तयः ।
कुलीन ।	पु ५पु आजानेयाः कुलीनाः (स्युर्)
सीखे ।	पु ५पु विनीताः साधुवाहिनः ॥ १२ ॥

१ आ-. २-न. ३-न. ४-स्त्रि. ५-न.

अन्दुकः, "और भी अन्दूकः" निगड़ः, ये ३ हाथी बांधने के सांकल वा जंजीर के नाम हैं; अंकुशः, सृणिः, "वा शृणिः" ये २ अंकुश के नाम हैं, ॥ ९ ॥ चूषा, "उसी प्रकार दूषा, और दूष्या" कक्ष्या, "और भी कक्षा" वरत्रा, ये ३ मध्य वा कमर बांधने की उपयोगी चाम की रस्सी के नाम हैं, (कक्षायां मध्यदेशे भवा कक्ष्या); कल्पना, सज्जना, ये २ नायक के चढ़ने के लिये गज को तैयार करने के नाम हैं; प्रवेणी, "वा प्रवेणिः" आस्तरणं, वर्णः, परिस्तोमः, "ग्राज़े पढ़ते हैं परिष्टोमः" कुथः, "स्त्री॰ कुथा, और भी क्लीवं कुथं" ये ५ गज के पीठ पर के आस्तरण वा बिछावना वा गद्दी के नाम हैं, ॥ १० ॥ हाथी और घोड़ा युद्ध के योग्य न होवें तो वीतं कहलाते हैं; गजबन्धनी गज के आलान अर्थात् बांधने की पृथ्वी वारी कहलाती है, (वार्य्यते ऽनया वारी) (एकं) घोटकः, "और घोटः" पीतिः, "और पीती, और भी वीतिः" तुरगः, तुरंगः, अश्वः, तुरंगमः, ॥ ११ ॥ वाजिः, वाहः, अर्वा, गन्धर्वः, हयः, "स्त्री॰ हयी" सैन्धवः, सप्तिः, ये १३ घोड़े के नाम हैं, अर्वा नान्त है, वाजिनो, ये कुलीन और अच्छी जाति से उत्पन्न हैं ये अश्व आजानेयाः कहलाते हैं, और ये साधुवाही और अच्छे सीखे हैं वे विनीताः कहलाते हैं, "ए॰व॰ आजानेयः, और भी अजानेयः, ए॰व॰ विनीतः", ॥ १२ ॥

घोड़ों के भेद ।	पु पु पु पु वानायुजाः पारशीकाः काम्बोजाः वाह्लिका (हयाः) ।
अश्वमेध यज्ञ का ।	१पु पु ययुर् (अश्वो) ऽश्वमेधीयो
बड़े वेग का ।	पु पु जवन (स्तु) जवाधिकः ॥ १३ ॥
लदुआ ।	पु २पु पृष्ठ्यः स्थौरी
उजला ।	पु (सितः) कर्को
रथ का ।	पु रथ्यो (वोढा रथस्य यः) ।
बछेड़ा ।	पु पु बालः किशोरो
घोड़ी ।	३स ४स स वाम्य् श्वा बड़वा
घोड़ी का झुण्ड ।	न वाड़वं (गणे) ॥ १४ ॥
घोड़ा का मञ्जिल ।	५पुसन (त्रिष्वा) श्वीनं (यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते) ।
घोड़े का मध्यभाग ।	न कश्यं (तु मध्य मश्वानां)
हिनहिनाना ।	स स हेषा ह्रेषा (च निस्वनः) ॥ १५ ॥
गले का बीच ।	पु पु निगाल (स्तु) गलोद्देशो
उनका समूह ।	न ६न (वृन्दे त्व) ऽश्वीय माश्व (वत्) ।

१ ययु. २–न्. ३–मी. ४ अ–. ५ आ–. ६ आ–.

वानायु देश में उत्पन्न वानायुजाः, "वानायुजः, वनायुजः, उसी प्रकार पारस देश में उत्पन्न पारशीकाः, "ए·व· पारशीकः, वा पारसीकः" ये विदेश में होनेवाले अश्व के भेद हैं, (एकैकं) उसी प्रकार कंबोज देश में उत्पन्न होंवे काम्बोजाः, काबुन देश में उत्पन्न होंवे वाह्लिकाः "वाह्लिकः, वा वाह्लीकः" हयाः, अर्थात् घोड़े कहलाते है; अश्वमेध यज्ञ के अर्थ हित अश्व को ययुः कहते हैं, (एकं) जो वेग में अधिक है वह जवनः कहलाता है, (एकं) ॥ १३ ॥ पृष्ठ्यः, स्थौरी, "उसी प्रकार स्थुरी, और स्थोरी" ये २ जल आदि में बोझा लेजानेवाले अश्व के नाम हैं, सफेद अश्व को कर्कः कहते हैं (एकं); जो रथ का लेजानेवाला है वह रथ्यः कहलाता है, इसका बाल-किशोरः कहलाता है, वामी, अश्वा, वड़वा, ये ३ घोड़ी के नाम हैं; और घोड़ियों के समूह को वाड़वं कहते हैं; ॥ १४ ॥ जो एक अश्व से एक दिन में जाया जाता है उस मार्ग को आश्वीनं कहते हैं, (एकं) "आश्वीनः (–ना–नं)" घोड़ों का मध्यभाग कश्यं कहलाता है, घोड़ों का शब्द हेषा, ह्रेषा, "ह्रेषा", कहलाता है, दो ॥ १५ ॥ गलोद्देश अर्थात् गल की सन्धि निगालः है, (एकं) आश्वीयं, आश्वं, ये २ घोड़ों के समूह के नाम हैं, और वत का निर्द्देश दोनों के तुल्यत्व के अर्थ है; ।

	न न न न न
घोड़ों की गति ।	आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ १६ ॥
	स स पुन
	(गतयोऽमूः पंच) धारा
घोड़े की नाक ।	घोणा (तु) प्रोथ (मस्त्रियाम्) ।
	स पुन
लगाम ।	कविका (तु) खलीनो (ऽस्त्री)
	न पु
टाप ।	शफं (क्लीबे) खुरः (पुमान्) ॥ १७ ॥
	पुन न न
पोंछ ।	पुच्छो (ऽस्त्री) लूम-लांगूले
	पु पु
बारयुत पोंछ ।	बालहस्त (श्च) बालधीः ।
	१पुसन पुसन
लोटना ।	(त्रिषू) पावृत्त-लुठितौ (परावृत्ते मुहु र्भुवि) ॥ १८ ॥
	पु पु पु
लड़ाई का रथ ।	(याने चक्रिणि युद्धार्थे) शतांगः स्यंदनो रथः ।
	पु
रथ विशेष ।	(असौ) पुष्परथ (श्चक्रयानं न समराय यत्) ॥ १९ ॥
	पु न न
जनानी रथ ।	कर्णीरथः प्रवहणं डयनं (च समं त्रयम्) ।
	२न पुन
गाड़ा ।	(क्लीबे) ऽनः शकटो (ऽस्त्री स्याद्)
	स
गाड़ी ।	गंत्री (कंबलिवाह्यकम्) ॥ २० ॥
	स न
पालकी ।	शीविका याप्ययानं (स्याद्)

१ उ-. २-स.

ये आस्कन्दित आदि अश्वोंकी पांच गतियां धारा कहलाती हैं,(एकं) जहां वेगसे आर्त्त अश्व नहीं सुनता और न देखता है तैसी गति को आस्कन्दितं कहते हैं; सरपट प्रसिद्ध है; चतुराई से युक्त सीधी गति को धौरितकं कहते हैं, "धोरितकं यह हेमचन्द्र का मत है, दुलकी चाल प्रसिद्ध है", मध्यम वेग से चक्राकार भ्रमण रेचितं है, "पोइया चाल यह प्रसिद्ध है", शरीरके अग्रभाग को समेटकर कुत्सित स्थल आदि में मुख को टेढ़ा कर चलना वल्गितं है, "उछाल यह प्रसिद्ध है" शरीर के पूर्व और पर-भाग को झुकाकर क्रम से रखना प्लुतं है, "चौकड़ी मारना यह प्रसिद्ध है" अश्वकी घोणा अर्थात् नासिका प्रोथं कहलाती है, कविका, "कवि:, वा कवी" खलीनः, "खलिनः" ये२ लोह आदि के बने घोड़े के मुख में लगाने की वस्तु विशेष "वा लगाम यह प्रसिद्ध के नाम हैं" (कवते दन्तेन शब्दायते कविका) शफं, खुरः, "और क्षुरः यह भरतमालामें है" ये२ खुर वा "सुंभ इस प्रसिद्धके नाम हैं" ॥१७॥ पुच्छः, लूमं, लांगूलं, "वा लांगुलः" ये ३ घोड़े की पोंछ के नाम हैं, वालहस्तः, वालधिः ये २ केशसमूह से युक्त पुच्छके अग्रभागके नाम हैं, उपावृत्तः, लुठितः, ये २ थकाहट दूर करने के अर्थ वारंवार भूमि में दोनों पक्षों से लोटने के नाम हैं ॥१८॥ युद्ध है प्रयोजन जिस का ऐसे चक्रयुत यान को शतांगः कहते हैं स्यन्दनः, रथः, ये ३ रथ के नाम हैं, और जो चक्रयुतयान समर के अर्थ नहीं है वह पुष्परथः कहलाता है. यह एक खेलनेके रथ का नाम है, जैसे पुष्य नक्षत्र सुख कर है तैसा रथ भी पुष्परथः, है ॥१९॥ कर्णीरथः, प्रवहणं, "प्रहरणं" डयनं, "डयनं" ये ३ स्त्रियों के जाने आने के अर्थ वस्त्र आदि से ढके रथ विशेष के नाम हैं, जैसे (कर्णीरथस्थां रघुनाथपत्नीं) अनः, शकटः, ये २ शकट अर्थात् गाड़ा के नाम हैं; (शक्नोति भारं वोढुं शकटः) बड़े यत्नों कम्बलोंसे लेजानेके योग्य शकटको गन्त्री, "वा गान्त्री" कहते हैं, "गाड़ी इस प्रसिद्धका नाम है" ॥ २० ॥ शीविका, याप्ययानं, ये २ पुरुषों से लेजाने के योग्य यान विशेष "वा पालकी इस प्रसिद्ध के नाम हैं",

डोली वा हिंडोला।	स स दोला प्रेंखा (द्विकाः स्त्रियाम्)।
बाघ के चाम के परदा से युत रथ।	पुसन पुसन (उभौ तु) द्वैप-वैयाघ्रौ (द्वीपिचर्मावृत्ते रथे) ॥ २१ ॥
कुछ सफेद और पीले कम्बल के परदा से युत रथ।	१पुसन (पाण्डुकम्बलसम्वीतः स्यन्दनः) पाण्डुकम्बली।
कम्बल वस्त्र-दूकूल आदि से युत रथ।	पुसन पुसन (रथे) काम्बल वास्त्रा (द्याः कम्बलादिभि रावृते) ॥ २२ ॥
रथ समूह।	(त्रिषु द्वैपादयो) स स रथ्या रथकट्या (रथव्रजे)।
धुरा-वा धुरी।	स न धूः (स्त्री क्लीबे) यानमुखं
ताडा-वा लढ़ा।	न ३पु (स्याद्) रथांग मपस्करः ॥ २३ ॥
पहिया।	न न चक्रं रथांगं
पुट्ठी-वा हाल।	स पु (तस्यांते) नेमिः (स्त्री स्यात्) प्रधिः (पुमान्)।
	स स पिण्डिका नाभिर्
कुलावा।	पु पुस अक्षाग्रकीलके (तु द्वयोर्) अणिः ॥ २४ ॥

१—न. २ धर्. ३ अ—.

दोला, प्रेंखा, ये २ हिंडोला के वा डोली इस प्रसिद्ध के नाम हैं, आदि शब्द से "खट्वा" आदि दोला हैं; द्वैपः, वैयाघ्रः, "द्वैपः रथः" ये २ द्वीपी अर्थात् व्याघ्र के चाम से ढके रथ के नाम हैं, ॥ २१ ॥ कुछ पीले और सफेद कम्बल से आवृत रथ पाण्डुकम्बली कहलाता है, (एकं) कम्बल वस्त्र आदि शब्द से दूकूल आदि से आवृत रथ काम्बलः, वास्त्रः, दौकूलः, "चार्मः, क्षौमः" ये आदि कहलाते हैं, (एकैकं) ॥ २१ ॥ द्वैप वैयाघ्र आदि वाच्यलिङ्गत्त्व से तीनों लिङ्ग हैं, जैसे द्वैपीरथ्या, द्वैपीरथः, रथ्या, रथकट्या, ये २ रथ समूह के नाम हैं, धूः, "और भी धुरा" यानमुखं, ये २ रथ आदि के अग्रभाग के "वा धुर" इस प्रसिद्ध के नाम हैं, रथांगम्, अपस्करः, ये २ रथ के अवयव मात्र के नाम हैं. ॥ २२ ॥ चक्रं, रथांगं, ये २ चक्र के वा पहिआ वा चाक इस प्रसिद्ध के नाम हैं, नेमिः, "और नेमी" प्रधिः, ये २ उस चक्र के अन्त के उस भाग के नाम हैं जो भूमि को स्पर्श करते हैं, पिण्डिका, "और पिण्डी, वा पिण्डिः भी" नाभिः, "वा नाभीः भी", ये २ चक्रकाष्ठ के आधार हुये गोलाकार चक्र के मध्य के नाम हैं, (नभ्यते हिंस्यते ऽनया नाभिः, स्त्री) अक्ष के अर्थात् नाभि के चलाने के काष्ठ के आगे चक्रधारण के अर्थ जो कील गाड़ते हैं उसे अणिः कहते हैं, "उसी प्रकार आणिः, और स्त्री॰ अणी" ॥ २४ ॥

लोह का परदा ।	स १पु रथगुप्ति र्वरूथो (ना)
जूआ का काठ ।	पु पु कूवर (स्तु) युगन्धरः ।
रथ के नीचे का काठ ।	पु अनुकर्षो (दार्वधःस्थं)
जूआ ।	पु प्रासंगो (ना युगाद्युगः) ॥ २५ ॥
सवसवारी-वा वाहन ।	न न न न न (सर्वं स्याद्) वाहनं यानं युग्यं पत्रं (च) धोरणम् ।
कहार आदि ।	पुन (परम्परावाहनं यत्तद्) वैनीतकम् (ऽस्त्रियाम्) ॥ २६ ॥
पीलवान-वा महावत ।	पु पु पु २पु आधोरणा-हस्तिपका-हस्त्यारोहा-निषादिनः ।
रथवान वा गाड़ी-वान ।	३पु ४पु ५पु पु ६पु पु नियंता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता (च) सारथिः ॥ २७ ॥
	पु पु सव्येष्ठृ-दक्षिणस्थौ (च संज्ञा रथकुटुम्बिनः) ।
रथ पर चढ़कर लड़-नेवाले ।	पु पु रथिनः स्यन्दनारोहाः
घोड़चढ़ा-वा सवार ।	पु पु अश्वारोहा (स्तु) सादिनः ॥ २८ ॥

१ व—. २—न्. ३—तृ. ४—तृ. ५—तृ. ६—तृ.

रथगुप्तिः, वरूथः, ये २ शस्त्र आदि से परिरक्षण के अर्थ रथ को जो लोह आदि से आवरण करते हैं. उस के नाम हैं, "(व्रीयते रथो ऽनेन इति वरूथः)" कूवरः, युगंधरः, ये २ रथ के घोड़े बांधे जाते हैं जिसमें उस काष्ठ के वा जूआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(युगं वोढु-र्बन्धनकाष्ठं धारयतीति युगंधरः)" रथ के नीचे स्थित काष्ठ को अनुकर्षः, "और भी अनुकर्षा (न्)" कहते हैं, जो युग से अन्य युग बैल आदि के कांधे में लगाया जाता है वह प्रासंगः, कहलाता है वा जूआ इस प्रसिद्ध का नाम है, ॥ २५ ॥ सब हाथी घोड़ा आदि वाहन यानादि शब्द वाच्य हैं, जैसे, वाहनं. "और भी वाहनं", यानं, युग्यं, पत्त्रं, "और पत्रं", धारणं, ये ४ सवारी के नाम हैं; और जो परम्परा से वाहन है और नर आदि से ले जाने के योग्य है पालकी आदि वह वैनीतकं कहलाता है, "पुंसि, वैनीतकः, विनीतकमित्यपि" ॥ २६ ॥ आधोरणाः, हस्तिपकाः, हस्त्यारोहाः, निषादिनः, ये ४ हस्तिपक के वा महावत के नाम हैं, नियन्ता, प्राजिता, यन्ता, सूतः, क्षत्ता, सारथिः, ॥ २७ ॥ सव्येष्टा, (ष्टृ), वा सव्येष्टः (ष्ट)", दक्षिणस्थः, ये ८ रथकुटुम्बी के वा सारथी के नाम हैं, रथिनः, स्यन्दनारोहाः, ये २ रथों में चढ़कर युद्ध करनेवालों के नाम हैं, अश्वारोहाः, सादिनः, "ए०व० अश्वारोहः, सादी, (न्)" ये २ अश्वसवार के वा असवार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २८ ॥

लड़नेवाले ।	पु पु १पु भटा योधा (श्च) योद्धार:
सेनारक्षक-वागस्तवाले	पु पु सेनारक्षा (स्तु) सैनिका: ।
फौज वा सेना ।	पु पु (सेनायां समवेताये) सैन्या (स्ते) सैनिका (श्च ते) ॥ २९ ॥
सुबेदार बहादुर।	पु २पु (बलिनो ये सहस्रेण) साहस्रा (स्ते) सहस्रिण: ।
सेनारक्षक सेना ।	पु पु परिधिस्थ: परिचर:
सेनाध्यक्ष ।	पु ३पु सेनानी र्वाहिनीपति: ॥ ३० ॥
बखतर ।	पु पुन कंचुको वारवाणो (ऽस्त्री)
कमरपट्टी ।	(यत्तु मध्ये सकंचुका:) ।
	४न न (वध्नन्ति तत्) सारसनो-ऽप्यधिकांगे
टोप ।	५ पु (ऽथ) शीर्षकम् ॥ ३१ ॥
	न न शीर्षण्य (ञ्च) शिरस्त्रे
कवच ।	न ५न न (ऽथ) तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
	पु पु पु पुन उरश्छद: कंकटको जागर: कवचो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ३२ ॥
झिल्लम आदि पहिने हुये ।	पुसन पुसन पुसन पुसन आमुक्त: प्रतिमुक्त (श्च) पिनद्ध (श्चा) ऽपिनद्ध (वत्) ।
मन्त्र आदि से रक्षित ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन सन्नद्धो वर्मित: सज्जो दंशितो व्यूढकंकट: ॥ ३३ ॥
	(त्रिष्वा मुक्तादयो)
कवचियों का समूह।	न (वर्मभृतां) कावचिकं (गणे) ।

१ योद्ध्र २–न. ३ वा–. ४–न. ५ न.

भटा:, योधा:, योद्धा, ये ३ योधा के नाम हैं; सेनारक्षा:, सैनिका:, ये २ सेनारक्षकों के वा पहरावालों के वा गस्त वालों के नाम हैं, "(सेनां रक्षन्तीति सैनिका:)"; ये सेना में मिले हैं वा रहते हैं वे सैन्या: और सैनिका:, कहलाते हैं, ॥२९॥ ये सहस्र बलियों से सेनावाले हैं वा बली हैं वे २ साहस्रा: और साहस्रिण:, कहलाते हैं, बल सेना है जिस को वह वा सहस्र योधा हैं जिन नायकों के वे २ परिधिस्थ: और परिचर: कहलाते हैं, "वा सुबेदार कहलाते हैं" "(परिधौसेनान्ते तिष्ठतीति परिधिस्थ:)", सेनानी:, वाहिनीपति:, ये २ सेनापति के वा फौजबक्सी के नाम हैं, सेनान्यो ॥ ३० ॥ कंचुक:, वारवाण: "वाणवार: भी" ये २ सन्नाह के वा चोलक आदि के वा बखतर के नाम हैं, कंचुक धारण करनेवाले पुरुष मध्य भाग में दृढता के अर्थ कंचुक के ऊपर जो बांधते हैं वे २ सारसनं, और अधिकांगं कहलाते हैं, शीर्षकं, ॥ ३१ ॥ शीर्षण्यं, शिरस्त्रं, ये ३ युद्ध के टोप इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (शीर्षकं सुखमास्मादिति शीर्षकम्)" तनुत्रं, वर्म, दंशनं, "वा दंसनं" उरच्छद:, कंकटक:, जागर:, "और जगर:" कवच:, ये ७ कवच के नाम हैं, "क्लीवे तु कवचं" ॥ ३२ ॥ आमुक्त:, प्रतिमुक्त:, पिनद्ध:, अपिनद्ध:, ये ४ कंचुक आदि पहिरे हुए के नाम हैं, "(आमुच्यते बध्यतेस्म आमुक्तक:)" सन्नद्ध:, वर्मित:, सज्ज:, दंशित:, व्यूढकंकट:, "बाजे ऊढकंकट:, पढते हैं" ये ५ कवच धारण किये हुयों के नाम हैं, "(सन्नह्यतिस्म सन्नद्ध:)" ॥ ३३ ॥ आमुक्त आदि तीनों लिङ्गों में हैं, आमुक्ताशाटी, आमुक्त: कंचुक:, आमुक्तं वस्त्रं, इसी प्रकार सन्नद्ध और सज्ज, आदि हैं, वर्म के धारण करनेवाले कवचियों के गणे अर्थात समूह को कावचिकं कहते हैं, (षकं):।

प्यादा वा पैदल।	पु पु पु पु १पु पदाति-पत्ति-पदग-पादातिक-पदाजय: ॥ ३४ ॥
प्यादों का समूह।	पु पु न स पद्ग (श्च) पदिक (श्चा) (ऽथ) पादातं पत्तिसंहति: ।
हथिआरवन्द ।	पु पु पु पु शस्त्राजीवे काण्डस्पृष्टा ऽयुधीया ऽयुधिका: (समा:) ॥ ३५ ॥
अच्छे तीरंदाज़ ।	पु पु पु कृतहस्त: सुप्रयोगविशिख: कृतपुंख (वत्) ।
निशाना से चूका।	पु अपराद्धपृषत्को (ऽसौ लक्ष्याद्य श्च्युतसायक:) ॥ ३६ ॥
धनुषधारी ।	२पु ३पु पु पु पु पु धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निष ङ्ग्यस्त्री धनुर्धर: ।
केवल वाणधारी।	४पु पु (स्यात्) काण्डवां (स्तु) काण्डीर:
वर्छीहा ।	पु पु शाक्तीक: शक्तिहेतिक: ॥ ३७ ॥
लट्ठवाज और फरसावाज़ ।	पु पु याष्टीक-पारश्वधिकौ (यष्टिपरशुहेतिकौ) ।
तलवारवाला ।	पु पु नैस्त्रिंशिको ऽसिहेति: (स्यात्)
भालावाला ।	पु पु (समौ) प्रासिक-कौन्तिकौ ॥ ३८॥
ढालवाला ।	५पु पु चर्मी फलकपाणि: (स्यात्)
निशानवाला ।	६पु पु पताकी वैजयन्तिक: ।
सहायक ।	पु पु पु पु अनुप्लव: सहाय (श्चा) ऽनुचरो ऽभिसर: (समा:) ॥ ३९ ॥
अगुआ ।	पु पु पु पु पु पुरोगा-ऽग्रेसर-प्रष्ठा-ऽग्रत:सर-पुर:सरा: ।

१—जि. २—न्. ३—त्. ४—वत्. ५—न्. ६—न्.

पदाति:, "और भी पादात:, पादाति:, पादात:, और पादाविक:", पत्ति:, पदग: पादातिक:, (पादाभ्यां अजति गच्छति पदाजि:),वा व॰व॰पदाजय: ॥३४॥ पद्ग:, पदिक:, ये७ पैदलके नाम हैं, पैदलके समूह को पादातं,और पत्तिसंहति: कहते हैं, शस्त्राजीव:,काण्डस्पृष्ट:,"वा काण्डपृष्ठ:" आयुधीय:, आयुधिक:, ये ४ आयुध से जीविका करनेवालों के नाम हैं, ॥ ३५ ॥ कृतहस्त:, सुप्रयोगविशिख:, कृतपुंख:, ये ३ वाण चलाने में चतुर के नाम हैं, "(कृतो ऽभ्यस्तो हस्तो यस्य स: कृतहस्त:)" लक्ष्य से च्युत है सायक जिसका वह अपराद्धपृषत्क: कहलाता है,(एकं), ॥ ३६ ॥ धन्वी, धनुष्मान्, धानुष्क:, निषङ्गी (–न्) अस्त्री (–न्) धनुर्धर:, ये ६ धनुष धारण करने वाले के नाम हैं, धनुष्मन्तौ, काण्डवान्, काण्डीर:, ये २ वाण धारण करनेवाले के नाम हैं, शाक्तिक:, शक्तिहेतिक:, शक्तिनाम आयुध धारण करनेवाले के नाम हैं, "(शक्ति: प्रहरणमस्य शाक्तिक:)" ॥ ३७ ॥ यष्टि: अर्थात् लाठी से लड़नेवाले याष्टिक: कहलाते हैं, (एकं), परशु:, अर्थात् फरसा से लड़नेवाले पारश्वधिक: कहलाते हैं, (एकं)"फरसी वा गड़ासी इस प्रसिद्ध के नाम हैं. असि: अर्थात् खड्गहेति: शस्त्र है जिसके वह नैस्त्रिंशिक: और असिहेति: कहलाता है, "वा तलवार से लड़नेवाला" कुन्तहेतिक अर्थात् भाला से लड़नेवाला प्रासिक:, और कौन्तिक:, कहलाते हैं, ॥ ३८ ॥ चर्मी, फलकपाणि:, ये २ ढालधारण करनेवाले के नाम हैं, पताकी, वैजयन्तिक:, ये २ पताका वा निशान धारण करनेवाले के नाम हैं, अनुप्लव:, सहाय:, अनुचर:, अभिसर:, ये ४ अनुचर वा सेवक के नाम हैं, ॥ ३९ ॥ पुरोग:, अग्रेसर:, "अग्रसर:" प्रष्ठ:, अग्रत:सर:, पुर:सर:, ।

	पु १पु
	पुरोगमः पुरोगामी
	२पु पु
धीरे२ चलने वाले।	मन्दगामी (तु) मन्थरः ॥ ४० ॥
	पु पु
जल्द-चलने वाले।	जंघालोऽतिजवस्-
	पु पु
हलकारा।	(तुल्यौ) जंघाकरिक-जांघिकौ।
	३पु पु ४पु ५पु पु पु
जल्दबाज।	तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ४१ ॥
	पु
जीतने के शक्य।	जय्यो (यः शक्यते जेतुं)
	पु
जीतने के योग्य।	जेयो (जेतव्यमात्रके)।
	पु ६पु
जीतने वाले।	जैत्र (स्तु) जेता
	(यो गच्छ त्यलं विद्विषतः प्रति) ॥ ४२ ॥
	पु पु पु
शत्रु के सन्मुख लड़ने को जाने वाले।	(सो)ऽभ्यमित्र्यो ऽभ्यमित्रीयो (ऽप्य)ऽभ्यमित्रीण (इत्यपि)।
	पु ७पु
पहलवान्।	ऊर्जस्वलः (स्याद्) ऊर्जस्वी (य ऊर्जो तिशयान्वितः) ॥४३॥
	८पु ९पु
बड़ी छाती वाले।	(स्याद्) उरस्वानु रसिलो
	पु पु १०पु
रथ वाले।	रथिको रथिरो रथी।
	पु ११पु
स्वतन्त्र चलनेवाले।	कामगाम्य नुकामीनो (ह्य)
	पु
वारम्वार चलने वाले।	ऽत्यंतीन (स्तथा भृशम्) ॥ ४४ ॥

१—न. २—न. ३—न. ४—न. ५—न. ६—तृ ७—न. ८—त् ९ उ—. १०—न. ११ अ—.

पुरोगमः, पुरोगामी, ये ७ आगे चलनेवाले वा अगुआ के नाम हैं, (प्रतिष्ठते इति प्रष्ठः) मन्दगामी, मन्थरः, ये २ धीरे २ चलने वाले के नाम हैं, ॥ ४० ॥ जंघालः, "वा जंघिलः" अतिजवः, "और अतिजवनः, भी" ये २ अति वेगवाले के नाम हैं, जंघा, करिकः, जांघिकः, ये ३ जो जंघा के बल से जीते हैं उनके नाम हैं, तरस्वी, त्वरितः, वेगी, प्रजवी, जवनः, जवः, ये ६ जल्दी मात्र के नाम हैं, ॥ ४१ ॥ जो जीतने के शक्य है उसे जय्यः कहते हैं, जैसे राम ने रावण को जीता, (एकं) जेयः, यह एक जीते जाने मात्र के नाम हैं, जैसे जीतने के योग्य मन है, जैत्रः, जेता, ये २ जीतनेवाले के नाम हैं, और जो शत्रुओं की ओर सामर्थ्य से युद्ध करने को सन्मुख जाता है उसे अभ्यमित्र्यः, अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्रीणः, ये ३ नाम से कहते हैं, और जो ऊर्ज अर्थात् पराक्रम के अधिकता से युक्त हैं वे २ उर्जस्वलः, ऊर्जस्वी, कहलाते हैं, ऊर्ज शब्द अदन्त और सान्त है, ॥ ४३ ॥ उरस्वान्, उरसिलः, ये २ बड़ी छातीवाले के नाम हैं, रथिकः, रथिरः, रथी, ये ३ रथवाले के नाम हैं, "रथिनः भी" जो स्वेच्छा पूर्वक जाता है और वही स्वभाव रखता है वह कामगामी 'और भी कामं गामी (—न)" और अनुगामीनः कहलाता है, और जो भृशं गामी अर्थात् अत्यन्त गमन शील है वह एक अत्यन्तीनः कहलाता है, ॥ ४४ ॥

	पु पु पु
बहादुर ।	शूरो वीर (श्च) विक्रान्तो
	१पु पु पु
जीतने वाला ।	जेता जिष्णु (श्च) जित्वरः ।
	पु
रण कुशल ।	सांयुगीनो (रणे साधुः)
	(शस्त्राजीव.दयस्त्रिषु) ॥ ४५ ॥
	स स स स स स
फौज ।	ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतना ऽनीकिनी चमूः ।
	स न न न पुन
	वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं (चा) ऽनीक (मस्त्रियाम्) ॥ ४६ ॥
	पु पु
किला बांधना ।	व्यूह (स्तु) बलविन्यासो
फौज के विशेष भेद।	(भेदा दण्डादयो युधि) ।
	पु पु
किला का पीछा ।	प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः
	पु
फौज का पीछा ।	(सैन्यपृष्ठे) प्रतिग्रहः ॥ ४७ ॥
	स
फौज विशेष ।	(एकेभैकरथा त्र्यश्वा) पत्तिः (पञ्चपदातिका) ।
फौज की संज्ञा विशेष।	(पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्व्वैः क्रमा दाख्या यथोत्तरम्) ॥ ४८ ॥

१–तृ.

शूरः, वीरः "वा वीरः", विक्रान्तः, ये ३ शूरवीर के नाम हैं, जेता, जिष्णुः, जित्वरः, ये ३ जयशील के नाम हैं रण में जो साधु है वह सांयुगीनः कहलाता है अर्थात् युद्ध करने में कुशल है, शस्त्राजीवे यह जो पहिले कहा है तदादि "और सांयुगीनान्त" त्रिषु, अर्थात् इन को वाच्यलिङ्गत्व है, ॥ ४५ ॥ ध्वजिनी, वाहिनी, "वाजे वाहिनी पढ़ते हैं और भी वाहना, सेना, पृतना, और भी पूतना" अनीकिनी, चमूः, वरूथिनी, बलं, "वा बलम्" सैन्यं, चक्रं, अनीकं, ये ११ सेना के नाम हैं, पुंसि अनीकः, ॥ ४६ ॥ सेना को युद्ध के अर्थ रचना विशेष से स्थापन करना व्यूहः है, और बलविन्यासः भी, रण में दण्ड आदि भेद विशेष व्यूह के हैं, जैसे सैन्य का दण्ड के समान टेढ़ा होकर ठहरना दण्डः है, आदि पद से भोग मण्डल आदि हैं, जैसे एक के पीछे एक की आवृत्ति भोग है, सर्प के शरीर के समान अवस्थान मण्डल है, विजातीयों से विना मिले हाथियों का स्थान असंहतः है, इन के भी शकट, मकर, पताका, सर्वतोभद्र, दुर्जयआदि भेद प्रत्येक के हैं, प्रत्यासारः, व्यूहपार्ष्णिः, "वा प्रत्यासरः" ये २ व्यूह के पीछे के भाग के नाम हैं, "(प्रत्यासारयति भागान् प्रत्यासारः)" सैन्यपृष्ठः, प्रतिग्रहः, "और परिग्रहः, वा पतद्ग्रहः" ये २ सेना के पीछे के भाग के नाम हैं, "(प्रतिगृह्यते व्यवष्टभ्यते सैन्यमनेनेति प्रतिग्रहः)" ॥ ४७ ॥ एक इभ हाथी है जिसमें वह एकेभा है, एक रथ है जिसमें वह एकरथा, तीन घोड़े हैं जिस में वह त्र्यश्वा है, पांच हैं पदाति जिस में वह पञ्चपदातिका है, इन चार विशेषण से विशिष्ट सेनापत्तिः कहलाती है, कहा है "एको रथो गजश्चैको नराः पंचपदातयः । त्रयश्चतुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयत इति)" (एकं) पत्त्यङ्गैः अर्थात् पत्ति के अवयव गज आदिकों के तीन गुणों से यथोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि संज्ञा होती हैं ॥ ४८ ॥

	न पुन पु स स स
	सेनामुखं गुल्म-गणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
	स
	अनीकिनी
	१स
अक्षौहिणी ।	(दशानीकिन्य) ऽक्षौहिण्य
	स
सम्पत्ति ।	(ऽथ) सम्पदि ॥ ४६ ॥
	स स स
	सम्पत्तिः श्री (श्च) लक्ष्मी (श्च)
	स २स ३स
विपत्ति ।	विपत्त्यां विपदा-पदौ ।
	न न न ४न
शस्त्र-वा हथिआर।	आयुधं (तु) प्रहरणं शस्त्र मस्त्रम्
धनुष ।	(अथा ऽस्त्रियौ) ॥ ५० ॥
	पुन ५पुन ६न न न न
	धनु-श्चापौ धन्व-शरासन-कोदगड-कार्मुकम् ।
	पु
	इष्वासो (ऽप्य)
	न
राजाकरण का ।	(ऽथ कर्णस्य) कालपृष्ठं (शरासनम्) ॥ ५१ ॥
	पुन पुन
अर्जुन का ।	(कपिध्वजस्य) गाण्डीव-गाण्डिवौ (पुन्नपुंसकौ) ।

१—णी २—द. ३ आपद. ४ अ—. ५ चाप. ६—न.

वे जैसे, तीन पत्तियें से १ सेनामुखं, तीन सेनामुखों से १ गुल्मः, तीन गुल्मों से १ गणः, तीन गणों से १ वाहिनी, तीन वाहिनियें से १ पृतना, तीन पृतना से १ चमूः, तीन चमू से १ अनीकिनी, तीन अनीकिनी से १ दश अनीकिनी, तीन दश अनीकिनी से १ अक्षौहिणी होती है, तैसा कहा है, "(अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्याह्यष्टभिःशतैः । संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः ॥ २१८७० एवमेवरथानान्तु सख्यानं कीर्तितं वुधैः । २१८७० । पञ्चषष्ठिसहस्राणि षट्शतानि दशैवतु, संख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विनारथतुरङ्गमैः ॥ ६५६१० ॥ नृणां शतसहस्राणि सहस्राणि तथा नव । शतानि त्रीणि चान्यानि पंचाशच्च पदातयः ॥ १०६३५० ये एकेक के नाम हैं)", संपत्, "संपद्, और संपदा" ॥ ४६ ॥ संपत्तिः, श्रीः, लक्ष्मीः, ये ४ संपति के नाम हैं, विपत्तिः, "और भी विपदा" विपत्, आपत्, "और आपदा, आपत्तिः", ये ३ आपत्ति के नाम हैं, आयुधं, प्रहरणं, शस्त्रं, अस्त्रं ये ४ शस्त्र मात्र के नाम हैं, ॥ ५० ॥ धनुः, चापः, धन्व, शरासनं, कोदगडं, कार्मुकं, इष्वासः, "धनुः (—स्) वा धनुः (—नु) और धनूः (—नू) उसी प्रकार स्त्री॰ धनुः आदि, धन्व (—न्) वा धन्वं, (—न्व) और भी पुं॰ धन्वा (—न)" ये ७ धनुष के नाम हैं, कर्ण का धनुष कालपृष्ठं है, (एकं) "(कालोयमइव पृष्ठमस्य)" ॥ ५१ ॥ गाण्डीवः, गांडिवः ये २ अर्जुन के धनुष के नाम हैं, "(गाण्डिर्ग्रन्थिरस्यास्ति)" क्लीवे, गांडीवं, गांडिवं, ।

	स स
धनुष का किनारा।	कोटि (रस्या) ऽटनी सन सन
दास्ताना विशेष॥	गोधा-तले (ज्याघातवारणे) ॥ ५२ ॥
	पु न
उसकी मूठि वा मध्य।	लस्तक (स्तु) धनुर्मध्यं स स स पु
धनुष की रस्सी वा म-त्यञ्चा।	न १न मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुण: ।
धनुष के आसन।	(स्यात्) प्रत्यालीढ मालीढ (मित्यादिस्थानपञ्चकम्) ॥ ५३ ॥
	न न न पु न
निशाना।	लक्ष्यं लक्षं शरव्यं (च)
बाण सीखना।	शराभ्यास उपासनम् ।
	पु पु २पु पु पु ३पु
बाण-बातीर।	पृषत्क-बाण-विशिखा-अजिह्मग-खगा-शुगा: ॥ ५४ ॥
	पु पु पु ४पु पु पुस
	कलम्ब-मार्गण-शरा: पत्री रोप इषु (र्द्वयो:) ।
	पु पु
लोहियातीर।	प्रक्ष्वेडना (स्तु) नाराचा: पु पु
उसका पत्त वा फोंक।	पुसन पक्षो वाज: (त्रिषू त्तरे) ॥ ५५ ॥
फेंके बाण।	निरस्त: (प्रहिते बाणे) पुसन पुसन
ज़हरी।	पु पु पु पु पुस (विषाक्ते) दिग्ध-लिप्तकौ ।
तरकस।	तूणोपासङ्ग तूणीर निषङ्गा इषुधि (र्द्वयो:) ॥ ५६ ॥

१—अ:. २—ख. ३ आ—. ४—न.

कोटि:, "वा कोटी" अटनी, "और अटनि:" ये २ इस धनुष के किनारे के नाम हैं गोधा, तला, "वा तलं", ये २ ज्या को आघात अर्थात् जो ताड़न है इस के वारण में चर्म आदि के बने बाहु के बंधन विशेष वा दास्ताना विशेष के नाम हैं", व्यक्ति के द्वित्त्व से द्विवचनान्त हैं; ॥ ५२ ॥ धनुष का मध्य वा मूठि लस्तक: है, (एकं); मौर्वी, ज्या, शिंजिनी, गुण:, ये ४ धनुष के गुण के नाम हैं, रस्सी वा चिल्ला वा रोदा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, (मूर्वा नाम तृण विशेष को बनी मौर्वी है) प्रत्यालीढं, आलीढं, इस आदि पांच धनुषधारियों की स्थिति के भेद हैं, (एकैकं); आदि पद से समपदं, वैशाखं, मण्डलं भी, इनमें वाम जंघा को फैलाकर और दक्षिण जंघा को समेट कर धनुष चलाना प्रत्यालीढ़ है, दक्षिण जंघा फैलाकर वाम जंघा को संकोच कर धनुष चलाना आलीढ़ं है, पावों को बराबर करके ठहरना सम पदं है, बारह अंगुल के अन्तर से पावों को ठहरा कर ठहरना वैशाखं है, मण्डल के आकार पादद्वय का धारण करना मण्डलं है, (एकैकं); ॥ ५३ ॥ लक्ष्यं, लक्षं, शरव्यं, उसी प्रकार "सरव्यं" ये ३ वेध के वा निशाने के नाम हैं; शराभ्यास:, उपासनम्, ये २ बाण चलाने के अभ्यास के नाम हैं, "(शरस्य शरमोक्षस्याभ्यास: शराभ्यास:)", पृषत्क:, बाण:, विशिख:, अजिह्मग:, खग:, आशुग:, ॥ ५४ ॥ कलम्ब:, "और भी कादम्ब:" मार्गण:, शर:, "वा सर:" पत्री, रोप:, इषु:, ये १२ बाण के नाम हैं, प्रक्ष्वेडन:, नाराच:, "और भी स्त्री॰ प्रक्ष्वेड़ना, और प्रक्ष्वेदना भी", ये २ लोहमय बाण के नाम हैं, "(नरानाचामतिनाराच:)" पक्ष:, वाज:, ये २ कंक आदि पक्ष के नाम हैं, उत्तरे अर्थात् निरस्त आदि निष्क्रांत (त्रिषु) अर्थात् त्रिलिङ्ग हैं, ॥ ५५ ॥ फेंके हुये बाण को निरस्त:, कहते हैं; (एकं); दिग्ध:, लिप्तक:, ये २ विष से युक्त बाण के नाम हैं, तूण:, "और भी स्त्री॰ तूणा" उपासंग:, "उसी प्रकार अपासंग:" तूणीर:, निषङ्ग:, इषुधि:, ॥ ५६ ॥

	१स तूण्यां
खड्ग-वा-तलवार।	पु पु पु पु पु खड्गे (तु) निस्त्रिंश-चन्द्रहासा-ऽसि-रिष्टय: ।
	पु पु पु पु कौक्षेयको मण्डलाग्र: करपाल: कृपाण (वत्) ॥ ५७ ॥
मूठी-वा कब्जा।	पु त्सरु: (खड्गादिमुष्टौ स्यात्)
परतला।	स मेखला (तन्निबन्धनम्) ।
ढाल।	पुन न २न फलको (ऽस्त्री) फलं चर्म
हथकड़ा।	पु संग्राहो (मुष्टि रस्य य:) ॥ ५८ ॥
मुद्गर।	पु पु पु द्रुघणो मुद्गर-घनौ
खांड़ा।	स स (स्याद्) ईली करपालिका ।
ढेलवांस।	पु पु भिन्दिपाल: सृग (स्तुल्यौ)
लोहाङ्गी।	पु पु परिघ: परिघातन: ॥ ५९ ॥
फरसा-वा कुल्हार	पुस पुस पुस पु (द्वयो:) कुठार: स्वधिति: परशु (श्च) परश्वध: ।

१ तूणी: २—न.

तूणी, ये ६ इषुधी वा तरकस के नाम हैं; वा तूण, निषंङ, आदि कहलाते हैं, "(इषवोधीयन्ते यस्यां भस्त्रायां सा इषुधिः स्त्रीपुंसयोः)"; खड्गः, निस्त्रिंशः, चन्द्रहासः, असिः, रिष्टिः, "वा ऋष्टिः" कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः, करपालः, "और भी करवालः" कृपाणः, ये ९ खड्ग के वा तरवार इस प्रसिद्ध के नाम हैं "(खण्डयति परं खड्गः)" ॥ ५७॥ खड्ग की मूठि को त्सरुः, "सरुः भी" कहते हैं, "मूठ वा कबजा प्रसिद्ध है" आदि पद से कटार—छूरी आदि ग्रहण होते हैं, उस खड्ग की मूठि के चाम के बनाये बन्धन का मेखला, वा परतला नाम है, जैसे मारनेवाले के हाथ से खड्ग न निकल जावे, फलकः, फलं, "वा फरं" चर्म, ये ३ ढाल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "क्लीवे फलकं" इस फलक की जो मूठि अर्थात् ग्रहणस्थान है, उसे संग्राहः कहते हैं, "वा मूठ यह प्रसिद्ध है" ॥ ५८॥ द्रुघणः, "और द्रुघनः", मुद्गरः, घनः, ये ३ मुद्गर के वा मुङ्दर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ईली, "उसी प्रकार इली, और ईलिः", करपालिका, "और भी करवालिका" ये २ एक धार के बने छोटे खड्ग के वा खांडा वा गुप्ती इस प्रसिद्ध के नाम हैं, भिन्दिपालः, सृगः, ये २ पत्थल आदि के फेकने के उपकारक रस्सी की बनी हुई गोफोण वा ढेलवांस इस प्रसिद्ध के नाम हैं, परिघः, परिघातनः, ये २ लोह से बंधी गदा—मुद्गर—लाठी—इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ५९ ॥ कुठारः, स्वधितिः, परशुः, परश्वधः, "स्त्री॰ कुठारी, और भी पर्शुः, उसी प्रकार परस्वधः, और पर्श्वधः", ये ४ कुठार—वा कुल्हाड़ी—वा कुदाली—वा फौड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ।

	१स स स
छूरी-वा कुठारि	(स्याच्) छुस्त्री (चा) ऽसिपुत्री (च) छुरिका (चा)
	स
	ऽसिधेनुका ॥ ६० ॥
	पुन पु
फर।	(वा पुंसि) शल्यं शंकु (र्ना)
	२ पुन
गुर्ज।	सर्वला तोमरो (ऽस्त्रियाम्)।
	पु
सांग।	प्रास (स्तु)
	पु
भाला-वा वर्छी।	कुन्तः पु स स स
खड्गआदि की नोंक।	कोण (स्तु स्त्रियः) पाल्य श्रि कोटयः ॥ ६१ ॥
	पु पु ३न
फौज की तैयारी-वा जमा।	सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहना (ऽर्थकः)।
	पु
शस्त्र पूजन।	लोहाभिहारो (ऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः) ॥ ६२ ॥
	न
शत्रु पर चढ़ाई।	(यत्सेनया ऽभिगमनमरौ तद्) अभिषेणनम्।
	स स न न न पु
यात्रा-वा प्रस्थान।	यात्रा व्रज्या ऽभिनिर्य्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ६३ ॥
	पु न
फौज का फैलाव।	(स्याद्) आसारः प्रसरणं न ३न
चली फौज।	प्रचक्रं चलिता (ऽर्थकम्)।
	पु
निडर वीर की यात्रा	(अहिता न्प्रत्यभीतस्य रणे यानम्) अतिक्रमः ॥ ६४ ॥

१ शस्त्री. २—न. ३—त.

शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका, असिधेनुका, ये ४ छूरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ६० ॥ शल्यं, शंकुः, ये २ बाण के अग्रभाग वा आयुध विशेष—वा वर्छी वा भाला वा फल इस प्रसिद्ध के नाम हैं. "(शलतीति शल्यं, शलगतौ)" सर्वला, "वा शर्वला", तोमरः, ये २ गुर्जवा मंथनी के आकार शस्त्र— वा लोहे के अस्त्र विशेष के नाम हैं, "(तोगन्ता म्रियते ऽनेन इति तोमरः,)" शल्य आदि ४ भी तोमर के नाम हैं यह किसी का मत है, प्रासः, "और भी प्राशः" कुन्तः, ये २ भाला इस प्रसिद्ध के नाम हैं. कोणः, पालिः, "वा पाली" अश्रिः, "वा अश्री" कोटिः, "वा कोटी" ये ४ खड्ग आदि के किनारे के भाग के वा नोंक इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ६१ ॥ सर्वाभिसारः, सर्वौघः, सर्वसन्नहनं, ये ३ चतुरंग सेनासमूह वा जमाव इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(सर्वसन्नहनमर्थो यस्य)" (सर्वेषामभिसरणं सर्वाभिसारः) अस्त्र के धारण करनेवाले राजाओं का सदा नवमी दशमी में नीराजन अर्थात् आर्त्ती के समय शस्त्र आदि का समर्पण लक्षण जो विधि है वह लोहाभिसारः. "कोई पढ़ते हैं लोहाभिहारः" है, ॥ ६२ ॥ शत्रु के समीप जो सेना सहित गमन है वह अभिषेणनं है. (एकं); यात्रा, व्रज्या, अभिनिर्याणं, प्रस्थानं, गमनं, गमः, ये ६ प्रस्थान के नाम हैं. ॥ ६३ ॥ आसारः, प्रसरणं, "और भी स्त्री· प्रसरणी, प्रसरणिः, और प्रसारणी" ये २ सब जगह फैली हुई वा व्याप्त सेना के नाम हैं, प्रचक्रं, चलितं ये २ चलती सेना के नाम हैं, रण में निडर शूर का जो गमन है वह अतिक्रमः, "वा अभिक्रमः" कहलाता है ॥ ६४ ॥

स्तुति आदि से राजाओं को जगाने वाले	(पु) वैतालिका (१पु) बोधकराश्च
घड़ियाल।	(पु) चाक्रिका (पु) घाण्टिका (घंका:)।
यश गायक।	(स्युर्) मागधा (स्तु) मगधा
भांट।	(पु) वन्दिन: (पु) स्तुतिपाठका: ॥ ९५ ॥
लड़ाई से जो न भागै।	(पु) संशप्तका (स्तु समया त्संग्रामा दनिवर्तिन:)।
धूरि-वा धूलि।	(पुस) रेणु (द्वयो: स्त्रियां) (स) धूलि: (पु) पांशु (र्ना न द्वयो) (स्न) रज: ॥ ९६ ॥
चून-वा बड़ी धूलि	(पुन) चूर्णे (पु) चोद:
अकुलानी फौज।	(पु) समुत्पिञ्ज-(पु) पिञ्जलौ (भृश माकुले)।
झण्डा-वा निशान	(स) पताका (स) वैजयन्ती (स्यात्) (न) केतनं (पुन) ध्वज (मस्त्रियाम्) ॥९७॥
भयावनी रणभूमि	(सा) (न) वीराशंसनं (युद्धभूमि र्या ऽतिभयप्रदा)।
हम पहिले लड़ेंगे।	(अहं पूर्व्व महं पूर्व्व मित्य) ऽहं (स) पूर्व्विका (स्त्रियाम्) ॥९८॥
हमी पुरुष हैं-वा हमी लड़ैंगे।	(स) आहोपुरुषिका (दर्प्पा द्या स्या त्सम्भावना त्मनि) ॥ ९९ ॥

१-र. २-स.

वैतालिका:, बोधकरा:, ये २ राजाओं को स्तुतिपाठ आदि से ये प्रातःकाल जगाते हैं उन के नाम हैं, "(विविधेन तालेन शब्देन चरन्ति येते वैतालिका:)" चाक्रिका:, घाण्टिका:, "ए० व० घाण्टिक: और भी घाटिक:" ये २ वन्दी विशेष में ये घंटा के बजाने से स्तुति करते हैं वे घांटिका: कहलाते हैं, और "(चक्रमस्ति वाद्यत्वेन यस्य स:) ये २ घण्टा बजानेवाले के नाम हैं; मागधा:, मगधा:, "ए०व० मागध:, वा मगध:, और भी मधुक:", ये २ राजाओं के आगे वंश के क्रम की स्तुति करनेवाले के नाम हैं; वन्दिन:, स्तुतिपाठका:, "ए० व० वा वन्दी (—न्) ये २ राजा आदि की स्तुति करनेवाले के वा भांट इस प्रसिद्ध के नाम हैं; चारो एकार्थक हैं यह किसी का मत है; ॥ ९५ ॥ ये समय से अर्थात् सपथ से संग्राम से अपराङ्मुख हैं वे संशप्तका: कहलाते हैं; (एकं) रेणु:, धूलि: "वा धूली" "और भी पुं० धूलि:" पांशु:, "और पांसु:" रज:, "उसी प्रकार पुं० रज: (ज)" ये ४ धूल वा धूरि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ९६ ॥ चूर्णं, चोद:. ये २ पिसी धूलि के नाम हैं, "ये ६ भी धूलि के वाचक हैं यह एक का मत है" समुत्पिंज:, पिंजल:, ये २ अत्यन्त आकुल सैन्य आदि के नाम हैं, पताका, वैजयन्ती, केतनं, ध्वजं, ये ४ पताका के नाम हैं, वा केतन आदि दो पताका के दण्ड के नाम हैं यह एक का मत है. ॥ ९७ ॥ जो युद्धभूमि खंडित गज आदि से अति भयदा है वह वीराशंसनं कहलाती है, (एकं), "(वीरा आशंस्यन्ते ऽत्र वीराशंसनम्, आङ: शसिइच्छायाम्)" अहं पूर्वं अहं पूर्वं में पहिले में पहिले में आगे होऊं यह आग्रह पुरःसरपूर्व युद्ध अहं पूर्विका कहलाता है; (एकं); ॥ ९८ ॥ दर्पात् अर्थात् अभिमानसे अपने विषय में जो सम्भावना और सामर्थ्य का प्रगट करना है वह आहोपुरुषिका कहलाती है, "(अहं पुरुष इत्यहंकारवानहं पुरुषस्तद्भाव: आहो पुरुषिका) (एकं); ॥ ९९ ॥

	स
अभिमानी ।	अहमहमिका (तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्य् हङ्कारः)।
	न १न न न २न न ३न
पराक्रमी ।	द्रविणं तरः-सहो-बल-शौर्य्याणि स्थाम शुष्मं (च) ॥ ७० ॥
	स पु पु
	शक्तिः पराक्रम-प्राणौ
	पु स
अति पराक्रम ।	विक्रम (स्त्व) ऽतिशक्तिता ।
	न
नसा करना ।	वीरपाणं (तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे) ॥ ७१ ॥
	न ४न न न न
लड़ाई ।	युद्ध मायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ।
	न ५न न न न
	मृध मास्कंदनं संख्यं समीकं साम्परायिकम् ॥ ७२ ॥
	पु ६पु पु पु पु
	(अस्त्रियां) समरा-ऽनीक-रणाः कलह-विग्रहौ ।
	पु पु पु पु पु
	सम्प्रहारा-ऽभिसम्पात-कलि-संस्फोट-संयुगाः ॥ ७३ ॥
	पु पु पु पु ७पु
	अभ्यामर्द्द-समाघात-संग्रामा-ऽभ्यागमा-हवाः ।
	पु ८पुस ९स १०स ११स
	समुदायः (स्त्रियः) संय त्समि त्याजि समिद्युधः ॥ ७४ ॥
	न न
वाहु युद्ध ।	नियुद्धं वाहुयुद्धे
	पुन न
वीरों का गर्जन ।	(ऽथ) तुमुलं रणसंकुले ।

१-स्. २-यं. ३-न्. ४आ-. ५आ-. ६अ-. ७आ-. ८-त्. ९-ति. १०आ-. ११-त्.

जो परस्पर में समर्थ हूं मैं समर्थ हूं यह अहंकार है वह अहमहमिका कहलाती है, (शकं) यह ६ अक्षर का पद है; द्रविणं तरः, सहः, वलं, शौर्य्यं, स्याम, शुष्मं, ॥ ७० ॥ शक्तिः, पराक्रमः, प्राणः, "सहः (स्), और पुं॰ 'सहः (ह)' शुष्मं (ष्म) और शुष्म (न्); द्विव॰ तरसी, सहसी. और स्यामनी", ये १० पराक्रम के नाम हैं, विक्रमः, अतिशक्तिता, ये २ अति पराक्रम के नाम हैं, युद्ध होजाने पर रण के परिश्रम की शान्ती के अर्थ अथवा भाविनि अर्थात् होनेवाले रण के उत्साह वढ़ाने के लिये जो वीरों को मद्यपान है वह वीरपाणं कहलाता है, "याने पढ़ते हैं, वीरपानं" ॥ ७१ ॥ युद्धं, आयोधनं, जन्यं, प्रधनं, प्रविदारणं, मृद्धं, आस्कन्दनं, संख्यं, समीकं, सांपरायिकं, "और भी शमीकं, वा संपरायकम्", ॥ ७२ ॥ समरः, अनीकः, रणः, कलहः, विग्रहः, संप्रहारः, अभिसंपातः, कलिः, संस्फोटः, "उसी प्रकार संस्फेटः" संयुगः, ॥ ७३ ॥ अभ्यामर्द्दः, समाघातः, संग्रामः, अभ्यागमः, आहवः, समुदायः, संयत्, समितिः, आजिः, समित्, युत्, (ध) ये ३१ युद्ध के नाम हैं, "द्विव॰ संयती, समिती, युधौ" ॥ ७४ ॥ नियुद्धं, वाहुयुद्धं, ये २ वाहुयुद्ध के नाम हैं, तुमुलं, "और तुमूलं, और भी तुमुरं" रणसंकुलं, ये २ रण के संकुल होने में और परस्पर संवाध में वर्त्तमान के नाम हैं; ।

	स पु
वीरों का गर्जन ।	क्ष्वेड़ा (तु) सिंहनादः (स्यात्) स स
हाथियों का कतार।	न पु (करिणां) घटना घटा ॥ ७५ ॥
वीरों को निन्दा पूर्वक पुकारना ।	क्रन्दनं योधसंरावो न न
हाथियों का गर्जन ।	पु बृंहितं करिगर्ज्जितम् ।
धनुष का शब्द ।	विस्फारो (धनुषः स्वानः) पु १पु
जुझाऊ नगाड़ा ।	पटहा-डम्बरौ (समौ) ॥ ७६ ॥
	न पु पु
हठ ।	प्रसभं (तु) बलात्कारो हठो न न
धोखा देना ।	पुन पु पु (ऽथ) स्खलितं छलम् ।
उत्पात ।	अजन्यं (क्लीवम्) उत्पात उपसर्गः (समं त्रयम्) ॥ ७७ ॥
	स न पु
मूर्छा ।	मूर्छा (तु) कश्मलं मोहो (ऽप्य) पु न
पदार्थों का तहस नहस कर्ना ।	न न ऽवमर्द्द(स्तु) पीडनम् ।
धोखे से दबाना ।	अभ्यवस्कन्दनं (त्व) ऽभ्यासादनं पु पु
जीत वा फते ।	न विजयो जयः ॥ ७८ ॥
	स पु न
वैर मिटाना ।	वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं (च सा) ।
	पु २पु पु ३पु पु पु
भागना ।	प्रद्रावो द्राव संद्राव संदावो विद्रवो द्रवः ॥ ७९ ॥
	पु न
	अपक्रमो ऽपयानं (च) पु
हार ।	(रणे भङ्गः) पराजयः ।

१ आ—. २ उ—. ३—व.

क्ष्वेड़ा, सिंहनादः, ये २ वीरों के सिंहनाद के तुल्य नाद अर्थात् शब्द विशेष के नाम हैं, हाथियों का युद्ध में एकट्ठा होना घटना, और घटा कहलाता है, ॥ ७५ ॥ योधाओं के संराव अर्थात् आक्रोश निन्दापूर्वक शब्द क्रन्दनं कहलाता है, (एकं); हाथियों का गर्जन बृंहितं कहलाता है, (एकं) धनुष का शब्द विस्फारः कहलाता है, "और विष्फारः" (एकं) पटहः, आडम्बरः, ये २ संग्राम के नगाड़ा के शब्द के नाम हैं, ॥ ७६ ॥ प्रसभं, बलात्कारः, हठः, ये ३ बलात्कार वा हठ के नाम हैं; "(प्रगता सभा विचारोऽस्मात्प्रसभं, बलात्करणं बलात्कारः)"; स्खलितं, छलं, ये २ युद्ध मर्य्यादा से विचलने के वा धोखा देने के नाम हैं; अजन्यं, उत्पातः, उपसर्गः, ये ३ उत्पात के नाम हैं, वा शुभाशुभ सूचक के नाम हैं, "(नजने साधु अजन्यम्)" ॥ ७७ ॥ मूर्छा, कश्मलं, "वा कस्मलं" मोहः, ये ३ मूर्छा के नाम हैं; अवमर्द्दः, पीड़नं, ये २ शस्य आदि से सम्पन्न देश का जो परचक्र से पीड़न है उसके नाम है; अभ्यवस्कन्दनम्, अभ्यासादनम् ये २ छल से जीतने के वा डाका इस प्रसिद्ध के नाम हैं; विजयः, जयः ये २ शत्रुओं को जीत कर लब्ध उत्कर्ष के नाम हैं; ॥ ७८ ॥ वैरशुद्धिः, प्रतीकारः, वैरनिर्यातनं, ये ३ वैर के दूर करने के नाम हैं; प्रद्रावः, उद्रावः, संद्रावः, संदावः, विद्रवः, द्रवः, ॥ ७९ ॥ अपक्रमः, अपयानं, ये ८ पलायन के वा भागजाने के नाम हैं, जो रण में भंग अर्थात् हार है वह पराजयः कहलाता है; (एकं); ।

	पुसन पुसन
हारा।	पराजित-पराभूतौ (त्रिषु) पुसन पुसन
छिपा।	नष्ट-तिरोहितौ ॥ ८० ॥
	न न न न
मारे।	प्रमापणं निबर्हणं निकारणं निशारणम्।
	न न न न
	प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिंसनम् ॥ ८१ ॥
	न न न १न
	निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थन मपासनम्।
	न न न न
	निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्ज्जनम् ॥ ८२ ॥
	न न न न
	निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम्।
	न न न २न
	उद्वासन-प्रमथन-क्रथनो ज्जासनानि (च) ॥ ८३ ॥
	पु पु पु पु ३पु पु
	आलंभ-पिञ्ज-विशर-घातो न्मन्थ-वधा (अपि)।
	स पु पु पु पु
मृत्यु वा मौत।	(स्यात्) पञ्चता कालधर्म्मो दिष्टान्तः प्रलयो ऽत्ययः ॥८४॥
	पु पु पुस ४न पु
	अन्तो नाशो (द्वयोर्) मृत्यु-मरणं निधनो (ऽस्त्रियाम्)।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
मृतक-वा मुर्दा।	परासु-प्राप्तपञ्चत्व-परेत-प्रेत-संस्थिताः ॥ ८५ ॥
	पुसन पुसन
	मृत-प्रमीतौ (त्रिष्वे ते) स स स
चिता।	चिता चित्या चितिः (स्त्रियाम्)।

१ अ—. २ उ—न. ३ उ—. ४ म—.

पराजितः, पराभूतः, ये २ निर्जित के वा हारे हुये के नाम हैं; नष्टः, तिरोहितः, ये २ छिपे हुए के नाम हैं; त्रिषु यह कोवे के आंख के समान दोनों ओर सम्बन्ध रखता है; ॥ ८० ॥ प्रमापणं, "कोई पढ़ते हैं प्रमापनं" निबर्हणं, "वा निर्वर्हणं" निकारणं. निशारणम्, "और विशारणं" प्रवासनं, परासनं, निषूदनं, "निसूदनं भी" निर्हिंसनम्, ॥ ८१ ॥ निर्वासनं, संज्ञपनं, निर्ग्रन्थनम्, "कोई पढ़ते हैं. निर्गन्थनम्", अपासनम्, निस्तर्हणं, निहननं, क्षणनं, परिवर्जनं, ॥ ८२ ॥ निर्वापणं, विशसनं. मारणं, प्रतिघातनं, उद्वासनं, प्रमथनम्. क्रथनं. उज्जासनं ॥ ८३ ॥ आलंभः. पिंजः, विशरः, घातः, उन्मंथः, "उन्मथः" वधः, ये ३० प्रमापण आदि वध अन्तवध के नाम हैं; पंचता, "उसी प्रकार पञ्चत्वं" कालधर्मः, दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, ॥ ८४ ॥ अन्तः, नाशः, मृत्युः. "और भी न. मृत्यु", मरणं, निधनः, ये १० मरण के नाम हैं, परासुः, प्राप्तपञ्चत्वः, परेतः, प्रेतः, संस्थितः, ॥ ८५ ॥ मृतः, "उसी प्रकार न. मृतं, और स्त्री. मृतिः", प्रमीतः, ये ७ मृत के नाम हैं; चिता, चित्या, चितिः, ये ३ प्रेतदाह के आधार के वा चिता के नाम हैं; ।

	पुन
मूंड़कटा।	कबन्धो (ऽस्त्री क्रियायुक्त मपमूर्द्धकलेवरम्) ॥ ८६ ॥
	न न
श्मशान।	श्मशानं (स्यात्) पितृवनं
	पु पुन
निर्ज्जीव।	कुणपः शवम् (अस्त्रियाम्) ।
	पु १पु स
बंधुआ-वा कैदी।	प्रग्रहो-पग्रहो वन्द्यां
	स पु
बन्दीखाना वा जेल।	कारा (स्याद्) बन्धनालये ॥ ८७ ॥
	२पु पु
प्राण।	(पुंसि भूम्न्य) ऽसवः प्राणा (श्चैवं)
	पु न
प्राणी।	जीवो ऽसुधारणम् ।
	न पु
आयु-वा उमिरि।	आयु र्जीवितकालो (ना)
	पुन ३न
जीना।	जीवातु-र्जीवनोपधम् ॥ ८८ ॥
	॥ इति-क्षत्रियवर्गः ॥

१ उ–ग्र. २ असु. ३ जी–.

अपमूर्द्ध अर्थात् मस्तक से हीन और नाचता हुआ जो कलेवर "वा धड़" यह प्रसिद्ध है, वह कबन्धः कहलाता है, (एकं) ॥ ८६ ॥ श्मशानं. पितृवनं, "और भी पितृकाननं, पितृवसतिः", ये २ प्रेतभूमि के नाम हैं, "(शवः शेते ऽस्मिन् श्मशानं)"; कुणपः, शवं पुं· शवः" ये २ निर्जीव शरीर के नाम हैं; प्रग्रहः, उपग्रहः, ए· व· वन्दिः. "वा वन्दी" ये ३ चोर आदि के ग्रहण करबन्द करने के वा हवालात इस प्रसिद्ध के नाम हैं; वन्धन के घर को कारा कहते हैं वा जेलखाना यह प्रसिद्ध है, ॥ ८७ ॥ असवः, "ए· व· असुः" प्राणाः, ये २ प्राणों के नाम हैं, पुल्लिङ्ग और वहुवचन हैं, "एवं, इसी प्रकार प्राणाः भी नित्य पुं· वहुवचन भी है, प्राण नाम वायु है यह एक का मत है वह तो वायुमात्र की विवक्षा से है"; जीवः, "और स्त्री· जीवा, क्लीव जीवनं" असुधारणं, ये २ प्राणधारण के नाम हैं; जीवितपर्यन्त काल आयुः और जीवितकालः, कहलाता है, (एकं) "आयुः (स्) पुं· आयुः (यु)"; जीवातुः. जीवनोपधं, ये २ सञ्जीवनौषध के नाम हैं, जीवितकाल वा औषध "वा अन्न वा भक्त वा रक्षण का उपाय जीवातुः कहलाता है"; ना पुमान् है; ॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥

॥ अथ नवमवर्गः ॥

	पु पु पु पु १पु पु
वैश्य-वा बनिआं ।	उरव्या ऊरुजा अर्य्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।
	पु स स स २न न
जीविका ।	आजीवो जीविका वार्त्ता वृत्ति-र्वर्त्तन-जीवने ॥ १ ॥
	स न न
खेती-पशुरक्षा-बनियांपन ।	(स्त्रियां) कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं (चेति वृत्तयः) ।
	स ३स
पराधीनी ।	सेवा श्ववृत्तिर्
	न स
खेती ।	अनृतं कृषिर्
	पु न ४न
फूटा बीनना ।	उञ्छ-शिलं (त्वृ) तम् ॥ २ ॥
	न न
मांगने से जो मिले १ और मांगे बिना मिले २ ।	(द्वे याचितायाचितयो र्यथा संख्यं) मृता-ऽमृते ।
	न पु
बनियई ।	सत्यानृतं वणिग्भावः
	न न
उधार लेना ।	(स्याद्) ऋणं पर्य्युदंचनम् ॥ ३ ॥

१—श्. २व—. ३—त्ति. ४ ऋत.

उरव्यः, ऊरुजः, अर्यः, वैश्यः, भूमिस्पृक् (—श्), विट्, ये ६ वैश्य के नाम हैं; आजीवः, जीविका, वार्त्ता, वृत्तिः, वर्त्तनं, जीवनं, ये ६ जीविका मात्र के नाम हैं; ॥ १ ॥ कृषिः, खेती करना, पशुपाल का कर्म पाशुपाल्यं अर्थात् गौ आदि की रक्षा, बनियों का कर्म वाणिज्यं, "वा वणिज्या, वाणिज्यं" क्रय विक्रय आदि, इस प्रकार तीनों वृत्तियां वैश्यों की जीविका के भेद हैं, "(अथ मृतामृताभ्यां जीवेत मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपिवानश्ववृत्त्या कथंचनेत्यादि मुत्युकान् वृत्तिभेदान् व्युत्पादयति)"; सेवा दूसरे के चित्त का अनुवर्तन करना यह श्ववृत्ति है या कुत्ता की वृत्ति के समान श्ववृत्ति है, "(श्ववृत्तिर्नीचसेवनमिति श्रीभागवते)" (एकं); कृषिः, खेती करना अनृतं कहलाता है; "(अनृतं कर्षणं स्मृतमितिस्मृतेः)" (एकं) उञ्छ और शिल उंछशिलं उंछशिलं समाहारद्वन्द्व है, आपण अर्थात् बजार आदि में गिरे कणों के एकेक का ग्रहण करना उंछः है, खेत आदि में स्वामी के छोड़े हुये कणों का ग्रहण करना शिलं है, ये २ ऋतं कहलाते हैं, 'उंछशिलं भी, उञ्छः, या उञ्छ' "(उञ्छः कणश आदानं कणिशाद्यर्जनं शिलमिति यादवः) शिलं" ॥ २ ॥ चावल आदि प्रतिदिन मांगने पर मृतं, कहलाता है (एकं), "(मृतं तु नित्य याच्ञास्यादित्युक्तेः)" अयाचिते अर्थात् अजगर वर्तन के तुल्य याच्ञा के विना मिलने पर अमृतमित्येकं, वणिक का भाव वाणिज्यं है क्रयविक्रय आदि वह सत्यानृतं कहलाता है, या कुछ सच्च कुछ झूंठ सत्यानृतं कहलाता है; ऋणं, पर्य्युदंचनम्, ॥ ३ ॥

	पु पु न स
ब्याज ।	उद्धारो ऽर्थप्रयोग (स्तु) कुसीदं वृद्धिजीविका ।
	न
मांगने से मिला ।	(याञ्चयाप्तं) याचितकं
	न
वादे से मिला ।	पु पु (नियमाद्) आपमित्यकम् ॥ ४ ॥
महाजन और कर्जी।	उत्तमर्णा-ऽधमर्णौ (द्वौ प्रयोक्तृ-ग्राहकौ क्रमात्) ।
	पु पु पु पु
ब्याजखोर ।	कुसीदिको वार्द्धुषिको वृद्ध्याजीव (श्च) वार्द्धुषिः ॥ ५ ॥
	पु पु पु पु
किशान ।	क्षेत्राजीवः कर्षक (श्च) कृषिक (श्च) कृषीवलः ।
	पुसन पुसन
धान का खेत ।	(क्षेत्रं) व्रैहेय-शालेयं (व्रीहिशाल्युद्भवो चितम्) ॥ ६ ॥
	पुसन पुसन पुसन
जौ २ और साठी का ।	यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं (यवादिभवनं हि यत्) ।
तिल-उरद-अलसी	पुसन पुसन
अणु और भांग का ।	तिलं तैलीन (वन्माषो-मा-णु-भङ्गा द्विरूपता) ॥ ७ ॥
मूंग कोदव चना-गेहुं	पुसन पुसन
क्यराव-कुर्थी-कंकुनी आदिशाक-और	मौद्गीनं कौद्रवीणा (दि शेषधान्योद्भवो चितम्) ।
तरकारी ।	पुसन १पुसन
बो कर जुते खेत ।	बीजाकृतं (तू) प्रकृष्टं

१ उ-.

उद्धारः, ये ३ ऋण के नाम हैं; अर्थ प्रयोगः, कुसीदं, "और कुशीदं, वा कुषीदं", वृद्धि-जीविका, ये ३ ऋण देकर कालान्तर में अधिक लेकर "लोक में ब्याज" इस प्रसिद्ध जीविका के नाम हैं; याञ्चया अर्थात् मांगनें से जो लब्ध है उसे याचितकं कहते हैं, नियम से वा विनियम से प्राप्तं आपमित्यकं, कहलाते हैं. "(नियमः परिवर्त्तः स्यादिति मनुः)" (एकैकं) ॥ ४ ॥ प्रयोक्ता अर्थात् ऋण का दाता उत्तमर्णः कहलाता है, "(उत्तमं ऋणमस्य)", ऋण का ग्राहक अधमर्णः कहलाता है; (एकैकं) कुसीदिकः, वार्द्धुषिकः वृध्याजीवः, वार्द्धुषिः. ये ४ ऋण देकर ऋण की वृद्धि से जो पुरुष जीते हैं उन के नाम हैं,"(कुसीदार्थं प्रयच्छति कुसीदिकः, वृद्धिं गर्ह्यां प्रयच्छति वार्द्धुषिकः)" ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीवः, कर्षकः, "वा कार्षकः" कृषिकः, कृषीवलः, ये ४ खेतीवालों के नाम हैं, "(कृषिरस्यास्तीति कृषीवलः)"; व्रीह्युद्भवोचितं अर्थात् धान के उत्पत्ति के उचित वा धानों के उत्पत्ति के योग्य क्षेत्र व्रैहेयं कहलाता है. (एकं) शालीधान विशेष के उचित क्षेत्र शालेयं कहलाता है, (एकं) ॥ ६ ॥ यव आदि के उत्पत्ति के योग्य जो क्षेत्र है वह यव्यादि कहलाता है, जैसे यवों के भवन अर्थात् उत्पत्ति के योग्य क्षेत्र यव्य कहलाता है; अल्पयव यवक है इस के भवन क्षेत्र को यवक्यं कहते हैं; षष्ठिक अर्थात् साठ रात्रि में जो पकते हैं इनके भवन क्षेत्र को षष्ठिक्यं कहते हैं, (एकैकं) तिलं, तैलीनवत् माष आदि के क्षेत्र विषय में द्विरूपता होती है. जैसे तिलं, तैलीनं, ये २ तिलों के भवन क्षेत्र के नाम हैं, इसी प्रकार माष्यं, माषीणं, ये २ उरद के पैदा होने के खेत के नाम हैं, उमा अतसी इनका क्षेत्र उम्यं, औमीनं ये २ कहलाते हैं, अणुः धान्य का भेद है उसके क्षेत्र को अणव्यं, आणवीनं, ये २ नाम हैं, भंगा मातुलानी उसके क्षेत्र को भंग्यं, भांगीनं कहते हैं, ॥ ७ ॥ व्रीही आदि कहे हुये से शेष मूङ्ग आदि धान्यों के उत्पत्ति के क्षेत्र मौद्गीन आदि हैं, जैसे मूङ्गों के होने का क्षेत्र मौद्गीनं, इसी प्रकार कौद्रवीणं, आदि पद से कौलत्थीनं, चाणकीनं, गौधूमीनं, कालापिनं, प्रैयंगवीनं, इत्यादि. (एकैकं) "शाक, शाकटं, शाक, शाकीनं, ये २ शाक क्षेत्र आदि के नाम हैं; आदौ उप्तं अर्थात् पहिले बोये पीछे जोते खेत उप्तकृष्टं और बीजाकृतं कहलाते हैं, (एकं);

	पुसन पुसन पुसन
जुतेखेत।	सीत्यं कृष्टं (च) हल्य (वत्) ॥ ८ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन
तीनवांह जुते खेत।	त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्य (मपि तस्मिन्)।
	पुसन पुसन
दो बांह जुते खेत।	द्विगुणाकृते (तु सर्व्वं पूर्व्वं) सम्बाकृत (मपीह) ॥ ९ ॥
	पुसन १ पुसन
द्रोणभर जिस्मे बोया जाय और आढ़कभर जिस्में बोया जाय।	(द्रोणाढकादिवापादौ) द्रौणिका आढकिका (दयः)।
	पुसन
खारीभर जिस्मे बोया जाय।	(खारीवापस्तु) खारीक
	(उत्तमर्णादय स्त्रिषु) ॥ १० ॥
	पुन पु न
खेत।	(पुन्नपुंसकयोर्) वप्रः केदारः क्षेत्रम्
	(अस्य तु) ॥
	न न न न
खेतसमूह।	केदारकं (स्यात्) केदार्य्यं क्षेत्रं केदारिकं (गणे) ॥ ११ ॥
	पुन पु
ढेला।	लोष्टानि लेष्टवः (पुंसि)
	पु पु
मुगरी।	कोटिशो लोष्टभेदनः।
	न न न
पैना-वा चाबुक।	प्राजनं तोदनं तोत्रं
	न २न
कुदार-वा कसी।	खनित्र मवदारणम् ॥ १२ ॥

१ आ—. २ अ—.

सीत्यं, कृष्टं, हल्यं, "शीत्यं भी" ये ३ कृष्ट मात्र के वा सीताहल लेखा से जुते खेत के नाम हैं; वा हल से कृष्ट अर्थात् जुता क्षेत्र हल्यं है, ॥ ८ ॥ त्रिगुणाकृतं, तृतीयाकृतं, त्रिहल्यं, त्रिसीत्यं, ये ४ तीन वार जुते क्षेत्र के नाम हैं, त्रिगुणं, "त्रिवारं" कृतं कृष्टं क्षेत्रं त्रिगुणाकृतं है, इसी प्रकार द्विगुणाकृत में सब पूर्व योजन करना चाहिये, जैसे द्विगुणाकृतं, "द्वितीयाकृतं, द्विहल्यं, द्विसीत्यं" सम्बाकृतं ये ५ दो वार जुते क्षेत्र के नाम हैं, इह यहां द्विकृष्टे शंबाकृतं भी नाम है, शम्ब शब्द दो वार जोते खेत में वर्त्तमान है, ॥ ९ ॥ उप्यन्ते अर्थात् बोये जाते हैं जिसमें वह वापः क्षेत्र है, द्रोण आदि से परिमित धान्य का वाप आदि में द्रौणिकादिक कहलाते हैं, जैसे द्रोण के वापः क्षेत्र को द्रौणिकः कहते हैं, आढ़क के वापः क्षेत्र को आढ़किकः कहते हैं, "वा आढ़कीनः, स्त्री॰ आढ़की, आढ़कीना, तथा स्त्री॰ द्रौणी, द्रौणिकी" आदि शब्द से प्रस्थ का वापः प्रास्थिकः, "कौड़विकः" इत्यादि, वापादौ यहां आदि पद से पचादि का ग्रहण है, जैसे द्रोण का पचद्रौणिकः कटाहः है, अर्थात् कड़ाह है. खारी परिमित धान्य जिसमें बोये जाते हैं वह खारीकः कहलाता है, (एवं) उत्तमर्ण आदि और खारीक अन्त वाच्यलिंगत्व से त्रिलिंग हैं; ॥ १० ॥ वप्रः, केदारः, क्षेत्रं, ये ३ क्षेत्र के वा खेत इस प्रसिद्ध के नाम हैं, इस क्षेत्र के गण अर्थात् समूह केदारकं, केदार्य्यं, "और भी केदारं" क्षेत्रं, केदारिकं, ये ४ नाम से कहलाते हैं. ॥ ११ ॥ लोष्टं, लेष्टुः, ये २ मृत्तिकाखण्ड के वा ढेला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कोटिशः, "वा कोटीशः" लोष्टभेदनः, "उसी प्रकार लोष्टघ्नः, और लेष्टुघ्नः" ये ३ लोष्ट के तोड़ने वाले मुग्दर के नाम हैं; प्राजनं, "और प्रवयणं" तोदनं, तोत्रं, "वा तोत्रं" ये ३ वृषभ आदि के ताड़न के उपयोगी तोत्र के वा पयना वा चाबुक इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(तुद्यते अनेन तोत्रं, पन्लद्यं, तोत्रवेत्रेकपाणये)" खनित्रं, अवदारणं, ये २ कुद्दाल आदि के वा कुदारि या कसी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १२ ॥

	न न
हंसुआ ।	दात्रं लवित्रं
	पु न न
जोते की रस्सी ।	आबन्धो योत्रं योक्त्रम्
	न
फार ।	(अथो) फलम् ।
	न न
	निरीषं कूटकं
	पुन पु
	फालः कृषिको
	न न
हर ।	लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
	न पु
	गोदारणं (च) सीरो
	स पु
सइल ।	(ऽथ) शम्या (स्त्री) युगकीलकः ।
	स पु
हरिश ।	ईषा लाङ्गलदण्डः (स्यात्)
	स स
कूंड़ ।	सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
	पु
मेढ़ी ।	(पुंसि) मेधिः (खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने) ।
	पुस पु पु
साठी ।	आशु व्रीहिः पाटलः (स्यात्)
	पु पु
जव ।	सितशूक-यवौ (समौ) ॥ १५ ॥
	पु
हरा जव ।	तोक्म (स्तु तत्र हरिते)

दात्रं, लवित्रं, ये २ हंसुआ वा दातरि इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(लुनाति छिनत्ति अनेन लवित्रम्)" आबन्धः, योत्रं, योक्त्रम्, ये ३ जूआ बान्धने को उपयोगी रस्सी के वा जोते के नाम हैं, फलं, "बाजे पढ़ते हैं हलं" निरीषं, "वा निरीशं" कूटकं फालः, कृषिकः, "वा कृषकः, और भी स्त्री॰ कृषिका" ये ५ हल के नीचे स्थित काष्ठ में जिसका अग्रभाग लोह से बान्धा जाता है उस के वा फार के नाम हैं, वा आद्य ३ जिस काठ में फार गाड़ा जाता है उस के नाम हैं, अन्त्य के २ फार वा फाल के नाम हैं, यह भी मत है; "(फलति विशीर्य्यते भूमिरनेन फालः)"; लांगलं, हलं, "और पुं॰ हालः" ॥ १३ ॥ गोदारणं, सोरः, "वा शीरः" ये ४ हल के नाम हैं; शम्या, युगकीलकः, ये २ खील वा शैल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(शम्यते वृषादिरनया शम्या)" हल के दण्ड को ईषा, "उसी प्रकार ईशा भी" कहते हैं, और लाङ्गलदण्डः, ये २ हरिश के नाम हैं; सीता, "और शीता", लांगलपद्धतिः, ये २ हल से रचित रेखा के वा कूड़ के नाम हैं, ॥ १४ ॥ पशुबन्धने अर्थात् वृषभ आदि के बन्धन के निमित्त जो काष्ठ गाड़ा जाता है उसे मेधिः, खलेदारु, कहते हैं, "वा मेढ़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वा खलहान में धान्य मर्दन के स्थल में जो लकड़ी गाड़ते हैं उस के नाम हैं, और यह पृथक पद है"; आशुः, "बाजे पढ़ते हैं आशुव्रीहिः" व्रीहिः, पाटलः, "और भी पाटलिः" ये ३ सामान्य धान के वा साठी के नाम हैं; सितशूकः, "और शितशूकः", यवः, ये २ जव इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १५ ॥ उस हरित वर्ण यव को तोक्म : कहते हैं; (एकं) "वा निःशूक अर्थात् बिना टूंड़ यव का नाम है",

मटर ।	पु पु कलाय (स्तु) सतीलकः ।
	पु पु हरेणु-खण्डिकौ (चास्मिन्)
कोद्रव ।	पु पु कोरदूष (स्तु) कोद्रवः ॥ १६ ॥
मसूर ।	पु पु मङ्गल्यको मसूरो
मोथी वा वनमूङ ।	पु पु (ऽथ) मपुष्ठक-मपष्ठकौ ।
	पु वनमुद्गे
सरसों ।	पु पु पु सर्षपे (तु द्वौ) तन्तुभ-कदम्बकौ ॥ १७ ॥
उजला सरसों ।	पु सिद्धार्थ (स्त्वेष धवलो)
गेहूं ।	पु पु गोधूमः सुमनः (समौ) ।
कुरथी ।	पु १पु (स्याद्) यावक (स्तु) कुल्माषश्च
चना ।	पु पु चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

१-प.

कलायः, सतीलकः, "वा सतीलः और भी सीतीलकः, वा सतीनकः और सातीनकः" हरेणुः खण्डिकः, ये ४ मटर इस प्रसिद्ध के वा क्षराव्र के नाम हैं; कोरदूपः, कोद्रवः, "और कुद्रवः भी" ये २ कोदव या एक छोटे अनाज के नाम हैं, ॥ १६ ॥ मङ्गल्यकः, मसूरः "वा मसुरः", "और भी स्त्री॰ मसूरा, मसुरा", ये २ मसूर इस प्रसिद्ध के नाम हैं; मपुष्ठकः, "और मुकुष्ठकः, या मकुष्ठकः, और भी मकुष्टकः" मपष्ठकः, "और मयष्टकः वा मपष्ठकः, उसी प्रकार मयुष्ठकः" वनमुद्गः, ये ३ मोथी या मोठ या वनमूङ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, सर्षपः, "वा सरिषपः" तंतुभः, "और तंतुकः, तंतभः भी" कदम्बकः, "और भी कटुस्नेहः" ये ३ सरसव इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ १७ ॥ वह सरसव धवल है तो सिद्धार्थः कहलाता है. (एक) गोधूमः, सुमनः, "और सुमनाः (—नस्) ये २ गेंहूं इस प्रसिद्ध के नाम हैं; यावकः, कुल्माषः, "वा कुल्मासः" ये २ आधे पके यव आदि के वा कुरथी—या गदराये हुये के नाम हैं; चणकः, हरिमंथकः, "और हरिमंथजः" ये २ हराभरा—वा चना के नाम है; ॥ १८ ॥

बांझ तिल ।	पु पु (द्वौ तिले) तिलपेज (श्च) तिलपिञ्ज-(श्च निष्फले) ।
राई ।	पु पु स स स क्षवः क्षुधाभिजननो राजिका कृष्णिका सुरी ॥ १९ ॥
ककुनी ।	स स (स्त्रियौ) कङ्गु-प्रियङ्गू (द्वे)
अलसी ।	स स स अतसी (स्याद्) उमा क्षुमा ।
भांग वा पटुआ का भेद ।	स १स मातुलानी (तु) भङ्गायां
सांवां ।	पु पु व्रीहिभेद (स्त्व) ऽणुः (पुमान्) ॥ २० ॥
टूंड ।	पु न किंशारुः शस्यशूकं (स्यात्)
बालि ।	पुन स कणिशं शस्यमञ्जरी ।
सामान्य धान्य ।	न पु पु धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः
गुच्छा ।	पु पु स्तम्बो गुच्छ-(स्तृणादिनः) ॥ २१ ॥
नरई ।	स न पु नाडी नालं (च) काण्डो (ऽस्य)
प्यार वा पुआरा ।	पुन पलालो (ऽस्त्री स निष्फलः) ।
भुस वा भूसा ।	पु न कडङ्गरो बुसं (क्लीबे)
भूसी ।	२पु (धान्यत्वचि) तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

१ भंगा. २ तुष.

तिलपेजः, तिलपिञ्जः, ये, २ निष्फल तिल के वा बांझ तिल के नाम हैं, क्षवः, क्षुधाभिजननः, "वा क्षुताभिजनः" राजिका, कृष्णिका, आसुरी, "वा असुरी" ये ५ राजसर्षप के वा कृष्णसर्षप के—वा राई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(क्षुतमभिजायते ऽनेन इति क्षुताभिजननः)" ॥ १९ ॥ कङ्गुः, "वा कंगूः" प्रियङ्गुः, "वा प्रियंगूः" ये २ ककुनी वा टांगुन इस प्रसिद्ध के नाम हैं,-अतसी, उमा, क्षुमा, ये ३ अलसी वा जवस वा सन इस प्रसिद्ध के नाम हैं, मातुलानी, भङ्गा, ये २ भांग वा पटुआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, व्रीहिभेदः अणुः ये २ सांवां के नाम हैं, (एकं) ॥ २० ॥ शस्य का शूक सूक्ष्म शूची के तुल्य अग्र किंशारुः, और शस्यशूकं, कहलाता है; (एकं) "टूंड वा अनाज की दाढ़ी" और शस्य की मंजरी अर्थात् नया निकला शिर कणिशं, और शस्यमञ्जरी, यह बालि, कहलाता है, "कणिशं भो" "(कणाः सन्त्यस्य कणिशं)" "(कणिशो धान्यशीर्षकः)" इति तालव्यांते रत्नकोशः)" धान्यं, व्रीहिः, स्तम्बकरिः, ये ३ व्रीहि यव आदि के नाम हैं, तृण यव आदि के गुच्छे को अर्थात् नाल आदि पुञ्ज समूह को स्तम्बः "गुत्सः" कहते हैं ; वा धोर, मीर, आदि प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २१ ॥ इस गुच्छे का जो काण्ड है वह नाड़ी "और भी नाली", नालं "और नाड़ं", काण्डः, कहलाता है, पलालः, यह १ प्यार, वा पुआरा, इस प्रसिद्ध का नाम है, कडंगरः, बुसं, वा "बुषं" ये २ तुच्छ धान्य-वा भूसा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, धान के छिलका को तुषः, वा तुसः, वा भूसी, कहते हैं, (एकं) ॥ २२ ॥

टूंड़ ।	पुन शूको (ऽस्त्री श्लक्ष्णं तीक्ष्णाग्रे)
छीमी ।	स स शमी सिम्बा
	(त्रिषूत्तरे) ।
ढेर-उकांव-कुनांव।	पुसन १पुसन ऋद्धं मावसितं (धान्यं)
ओसाया-वा बसाया।	पुसन पुसन पूतं (तु) बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥
छीमीवाले ।	न (माषादयः) शमीधान्ये
बालि-वा टूंड़वाले।	न शूकधान्ये (यवादयः) ।
जड़हन आदि धान	२पु शालयः (कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी) ॥ २४ ॥
तिनी-वा मुनि अन्न	न पु तृणधान्यानि नीवाराः
स्यहुंआं ।	स ३स (स्त्री) गवेडु-र्गवेधुका ।
मूसल ।	पुन पुन अयोग्रं मुसलो (ऽस्त्री स्याद्)
ओखरी ।	न ४न उदूखल मुलूखलम् ॥ २५ ॥

१आ—. २ शालि. ३ ग—. ४ उ—.

पतला चिकना और तीखा ऐसा जो यव आदि का अग्रभाग है उसे शूकः "वा शूकं" कहते हैं वा अनाज की दाढ़ी, शमी, सिम्बा, "और भी शिंबा, और शिंबिः" ये २ शेंगरी, फली, छिम्मी वा कलाई इन प्रसिद्धों के नाम हैं, उत्तरे अर्थात् ऋद्ध आदि चार अपने विशेष्य के लिङ्ग के समान लिङ्गवाले हैं, ऋद्धं, आवसितं, "और भी अवसितं" ये २ तृण दूर किये पके दायें धान्य के ढेर के नाम हैं, पूतं, बहुलीकृतं, ये २ भूस दूर किये धान्य के नाम हैं, शूप आदि से स्वच्छ किये के यह एक का मत है ॥ २३ ॥ शमी में होनेवाले धान्य माष आदि अर्थात् उरद मूङ आदि भेद हैं, जैसा रत्नकोश में कहा है, "(मुद्गो माषो राजमाषः कुलत्थश्चणकस्तिलः । कलायस्तूवर इति शमीधान्यगणः स्मृत इति)" (शकं), शूक सहित धान्यशूक धान्य है उस में यव गोधूम आदि जानना चाहिये, (शकं) बड़े नाल और बहुत जल से उत्पन्न ब्रीहि विशेष कलमः कहलाता है, इस की अपेक्षा कुछ अल्प मर्य्याद का और साठ रात्रि में पकनेवाला षष्ठिकः कहलाता है आदि शब्द से राजशालि आदि हैं, (शकं) ये माष यव शालि कलम और षष्ठिक आदि पुल्लिंग हैं, ॥ २४ ॥ तृणधान्यं, और नीवारः, ये २ जंगली धान वा तीनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, बहुवचन से श्यामाक आदि ग्रहण किये जाते हैं, (शकं), गवेडुः, "गवेधुः वा गवेडुका", गवेधुका, ये २ मुनिअन्न विशेष वा स्यहुंआं वा चेना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, अयोग्रं, मुसलः, "ऐसा प्रकार मुषलः" ये २ मूसल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, उदूखलं, उलूखलं, ये २ ऊखल वा ओखली के नाम हैं ॥ २५ ॥

सूप ।	न पुन प्रस्फोटनं शूर्प्पं (मस्त्री)
चलनी ।	स पु चालनी तितउः (पुमान्) ।
थैली-वा बोरा ।	पु पु स्यूत-प्रसेवौ
ओड़ा डलवा वा छाबड़ा ।	पु पु काण्डोल-पिटौ
झांपी ।	पु पु कट-किलिञ्जकौ ॥ २६ ॥
	(समानौ)
रसोई का घर ।	१स न पुन रसवत्या (न्तु) पाकस्थान-महानसे ।
रसोई का अध्यक्ष ।	पु पौरोगव (स्तदध्यक्षः)
रसोईदार ।	पु पु सूपकारा (स्तु) बल्लवाः ॥ २७ ॥
	पु पु पु पु पु आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।
पूआ आदि बनाने वाले	पु पु पु आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार (इमे त्रिषु) ॥ २८ ॥
चूल्हि-वा चूल्हा ।	न न २स स ३स अश्मन्त मुद्धान मधिश्रयणी चुल्लि रन्तिका ।
अंगेठी ।	स ४स ५स अङ्गारधानिका ऽङ्गारशकट्य (पि) हसन्त्य (पि) ॥ २९ ॥

१—ती. २ अ—. ३ अं—. ४—टी. ५—न्ती.

प्रस्फोटनं, शूर्प्पं, 'वा सूर्प्पं" ये २ सूप इस प्रसिद्ध के नाम हैं, चालनी, "और भी न॰ चालनं" तितउः, ये २ चालनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(तनोतिसारं तितउः)" स्यूतः, "उसी प्रकार स्योतः, और स्यूनः, वा स्योनः", प्रसेवः, ये २ धान्य आदि के भरने के लिये गोन बोरा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, काण्डोलः, पिटः, "और भी पिटकः, वा पेटकः" ये २ बांस के बने पात्र विशेष वा टोरा—आदि के नाम हैं. कटः, किलिञ्जकः, ये २ बांस के बने करंडा—वा बोरी आदि प्रसिद्ध के नाम हैं, "(कटत्यावृणोतीति कटः)" ॥ २६ ॥ समानौ यह स्यूत आदि युगलों से संबन्ध रखता है, रसवती, पाकस्थानं, महानसं, ये ३ पाकस्थान के—वा पाकशाला—वा रसोई के घर के नाम हैं, उस पाकस्थान का अध्यक्ष पौरोगवः कहलाता है, सूपकारः, वल्लवः, ॥ २७ ॥ आरालिकः, आन्धसिकः, सूदः, औदनिकः, गुणः, ये ७ पाक करनेवाले के—वा रसोईदार के नाम हैं, आपूपिकः, कान्दविकः, भक्ष्यकारः, "वा भक्ष्यंकारः, भक्षकारः भी" ये ३ भक्ष्यकार के नाम हैं, भक्ष्यं तेल से पक्के आदि हैं, ये पौरोगव आदि वाच्यलिंग हैं, ॥ २८ ॥ अश्मन्तं, उद्धानं, "और असमंतं," "और उध्मानं, वा उद्धारं" अधिश्रयणी, चुल्लिः, "और चुल्ली" अन्तिका "वा अन्दिका" ये ५ चूल्ह के नाम हैं, अंगारधानिका, अंगारशकटी, हसन्ती, ॥ २९ ॥

	१स हसन्य (प्य)
अंगार ।	पुन (ऽथ न स्त्री स्याद्) अङ्गारो
लुकाठ-वा लुक्का	न न ऽलात मुल्मुकम् ।
खपरी ।	न पु (क्लीवे) ऽम्बरीषं भ्राष्ट्रः (ना)
भट्ठी-वा भाड ।	पुसन स कन्दू (र्वा) स्वेदनी (स्त्रियाम्) ॥ ३० ॥
मटका-वा कूंडा ।	पु पु अलिञ्जरः (स्यान्) मणिकः
करवा-वा गडुआ	२स स ३स कर्कर्य्या लु-र्गलन्तिका ।
वटुआ-वा वटलोही ।	पु स स न पिठरः स्थाल्यु खा कुण्डं
घड़ा वा गगरी ।	पुसन कलश (स्तु-स्त्रिपुंद्वयोः) ॥ ३१ ॥
	पुन पुन ४पुन घटः कुट-निपाव्
सरया-वा परई-दीआ।	पुन पुन (अस्त्री) सरावो वर्द्धमानकः ।
तावा ।	न न ऋजीषं पिष्टपचनं
कटोरा-वा खोरा ।	पुन पुन कंसो (ऽस्त्री) पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

१—नी. २—री. ३ग—. ४ निप.

हसनी, ये ४ अंगेठी के नाम हैं, अंगारः, अलातं, उल्मुकं. ये ३ अच्छे जलते काष्ठ के नाम हैं, वा आद्य १ अंगार का नाम है, अन्त्य २ अधजली लकड़ी के नाम हैं, यह भी मत है; अम्बरीषं, वा अम्बरीषं, भ्राष्ट्रः ये २ चने आदि के भूजने के पात्र के—वा खपरा—वा कड़ाह—इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कन्दूः, वा कंदुः, स्वेदनी, ये २ मद्य बनाने के उपयोगी के—वा भट्ठी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ३० ॥ अलिञ्जरः, "वा अलञ्जरः" मणिकः, ये २ वड़े घड़े के नाम हैं वा मटका इस प्रसिद्ध के नाम हैं; कर्करी, आलुः, "आलः, और आलुः, वा आरुः" गलन्तिका, ये ३ चावल आदि के धोने के पात्र—वा छोटा कलशा—वा कलशी वा गडुआ के नाम हैं; पिठरः, "और भी स्त्री॰ पिठरी" स्थाली, और न॰ स्थालं" उखा, वा उपा, कुण्डं वा स्त्री॰ कुण्डी, ये ४ स्थाली के—वा हांडी वा हण्डा वा वटलोही आदि के नाम हैं; कलशः, वा कलसः, स्त्री॰ कलशिः, —शी,—सिः, वा—सी, नपु॰ कलसं—शं, ॥ ३१ ॥ घटः, कुटः, निपः, "घटी" ये ४ कलश के वा घट के नाम हैं, सरावः "वा शरावः" वर्द्धमानकं, ये २ ढकना—वा मलैया वा—सरावा आदि के नाम हैं; ऋजीषं, "और भी ऋचीषं", पिष्टपचनं, ये २ तवा—वा कड़ाही—हण्डा आदि के नाम हैं; कंसः, "वा कंशः, और भी कांस्यं" पानभाजनं, ये २ पानपात्र—वा कटोरा, वा कटोरी— वा आबखोरा—आदि के नाम हैं; ॥ ३२ ॥

कुप्पा । कुप्पी ।	स कुतूः (कृत्तेः स्नेहपात्रं) पु (सैवाल्पा) कुतुपः (पुमान्) ।
सब वर्त्तन ।	न न पुन न न (सर्वम्) आवपनं भाण्डं पात्रा-मत्रे (च) भाजनम् ॥ ३३ ॥
कर्छुलि । दर्वी-कर्छुलि का भेद ।	स स स दर्विः कम्बिः खजाका (च स्यात्) पुस १पु तद्दू-द्रुसहस्तकः ।
साग । साग का दण्ड ।	न न २पु (अस्त्री) शाकं हरितकं शिग्रु पु पु (अस्य तु नाडिका) ॥ ३४ ॥
इस्का मसाला ।	कडम्ब-(श्च) कलम्ब-(श्च) पु पु वेसवार उपस्करः ।
चूक । मिर्च्च ।	न पुन न तिन्तिडीक (ञ्च) चुक्र (ञ्च) वृक्षाम्लम् न (अथ) वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
	न न न न न मरीचं कोलकं कृष्णा मूषणं धर्म्मपत्तनम् ।
जीरा । काला जीरा ।	पु पु स स जीरको जरणो ऽजाजी कणा (कृष्णे तु जीरके) ॥ ३६ ॥
	स स स स ३स ४स सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः काला पकुञ्चिका ।
अदरख । धनियां ।	न न आर्द्रकं शृङ्गवेरं (स्याद्) स न (अथ) छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

१ दा–. २–ग्रु. ३ काला. ४ उ–.

कृत्तेः अर्थात् चाम का बना स्नेह–तैल–घृत–आदि के रखने का पात्र कुतूः कहलाता है, वा कुप्पा–आदि कहलाते हैं, (एक) वही कुतूः अल्पा होय तो कुतुपः कहलाता है, "वा कुप्पी इस प्रसिद्ध का नाम है" सब सूत आदि और पिठर आदि, पात्र मात्र, आवपनादि संज्ञक हैं, आवपनं, भाण्डं, पात्रं, अमत्रं, भाजनं ये ५ बासन वा वर्त्तन इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ३३ ॥ दर्विः, कम्बिः, "और भी दर्वी, और कम्बी" खजाका, "उसी प्रकार पुं॰ खजः" ये ३ दर्वी के वा–चिमचा–वा कर्छी–वा कलछुलि के नाम हैं, "(खजति मथ्नाति पाकं खजाका)" तर्द्दूः, दारुहस्तकः, ये २ दर्वी के भेद के वा काठ के बने हाथ–वा चिमचे के नाम हैं, शाकं, हरितकं, शिग्रुः, "वा सिग्रुः", ये ३ वथुआ आदि शाक के नाम हैं, "(शक्यते भोक्तुमनेन शाकम्)"; इस शाक की नाड़िका अर्थात् नाल ॥ ३४ ॥ कडम्बः, कलम्बः, ये २ शाक के डंठे के नाम हैं; वेसवारः, "और भी वेशवारः, वा वेषवारः" उपस्करः, ये २ शाक आदि के संस्कार के अर्थ बनाये हुए हरदी सरसो और मरिचा आदि के चूर्ण वा मसाला प्रसिद्ध के नाम हैं "(आत्रेयसंहिता में कहा है, चित्रकं पिप्पलीमूलं, पिप्पली चव्यनागरं, धान्याकं रजनी श्वेततंडुलाश्च समांशकाः॥ वेसवार इति ख्यातः शाकादिषु नियोजयेदिति। दश पल हरदी के, बीस पल धनिआं के, पांच पल शुद्ध जीरा के, अढाई पल मेथी के, ये चार भूंजे हुये लेने चाहिये, तीन पल मरिचा के आधा पल हींग का, ये सब एकट्ठा मिला कर कूटा हुआ वेसवार कहलाता है यह अन्य का मत है;) तिंतिड़ीकं, "तिंतिडिकं भी" चुक्रं, वृक्षाम्लं, ये ३ तिंतिड़ीक के वा अमिली वा खट्टे के वा चूका शाक विशेष के नाम हैं, "वा अमला इस प्रसिद्ध के नाम हैं"; वेल्लजं, ॥ ३५ ॥ मरीचं, "वा मरिचं" कोलकं, कृष्णां, ऊषणं, "वा उषणं" धर्मपत्तनम्, ये ६ काली मिरच के नाम हैं, जीरकः, जरणः, अजाजी, कणा, ये ४ जीरा के नाम हैं, ॥ ३६ ॥ सुषवी, "उसी प्रकार सुशवी, वा सुसवी" कारवी, पृथ्वी, पृथुः, काला, उपकुंचिका, ये ६ कालेजीरे के नाम हैं, आर्द्रकं, शृंगवेरं, ये २ आदी के नाम हैं, "वा सोंठि की पहिली अवस्था के नाम हैं", छत्रा, वितुन्नकम्, ॥ ३७ ॥

	न न
	कुस्तुम्बुरु (च) धन्याकम्
	स न
सोंठि ।	(अथ) शुण्ठी महौषधम् ।
	सन न न
	(स्त्रीनपुंसकयोर्) विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥
	न न १न २न
कांजी ।	आरनालक-सौवीर-कुल्माषा-ऽभिषुतानि (च) ।
	न न ३न न
	अवन्तिसोम-धान्याम्ल-कुञ्जलानि (च) काञ्जिके ॥ ३९ ॥
	न न न पुन न
हींग ।	सहस्रवेधि जतुकं वाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ।
	स स स स स स
हींग वृक्ष की पत्ती ।	तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥
	स स स स स
हरदी ।	निशाह्वा काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।
	न न
समुद्र नून ।	(सामुद्रं यत्तु लवण) मक्षीवं वसिर (ञ्च तत्) ॥ ४१ ॥
	पुन न न न
सैन्धव ।	सैन्धवो (ऽस्त्री) शितशिवं माणिमन्थ (ञ्च) सिन्धुजे ।

१—प. २—न. ३—ल.

कुस्तुम्बुरु, "उसी प्रकार तुम्बरु, और स्त्री· कुस्तुम्बुरी और तुम्बुरी" धन्याकं, "और भी धान्यकं, धनिकं, धनीयकं, धनेयकं, धान्यं, और स्त्री· धन्या" ये ४ धनियां के नाम हैं, "वा कोथिंबिरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं"; शुंठी, "वा शुण्ठिः" महौषधम्, "और भी स्त्री· महौषधी" विश्वं, स्त्री· "विश्वा", नागरं, विश्वभेषजम्, ये ५ सोंठि के नाम हैं, "(विश्वस्य दोषस्य भेषजम्)" ॥ ३८ ॥ आरनालकं, सौवीरं, कुल्माषं, "वा कुल्मासः, कुल्माषः, और कुल्माषाभिषुतं" अवन्तिसोमं, धान्याम्लं, कुञ्जलं, कांजिकं, "और भी कांचिकं, वा कांजीकं, स्त्री· कांजिका" ये ८ कांजिक के नाम हैं. "वा खट्टे माण के-वा कुछ माष के और चावल आदि के मिले हुये खट्टे माण के नाम हैं, ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि, जतुकं, वाह्लीकं, "वा वाह्लिकं" हिंगु, रामठं, "और रमठं" ये ५ हिंगु वृक्ष के निर्य्यास के वा हींग इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(सहस्त्रं विध्यति गन्धेन सहस्त्रवेधि)" उस हींग की पत्री तत्पत्री, "हिंगुपत्री, वाजे पढते हैं त्वक्पत्री", कारवी, पृथ्वी, वाष्पिका, "वा वार्ष्णिका" कवरी "और भी कर्वरी", पृथुः, ये ५ हिङ्गुवृक्ष की पत्ती के नाम हैं; ॥ ४० ॥ निशाह्वा, "और निशा" काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी, ये ५ हरदी के नाम हैं, "निशाह्वा अर्थात् निशा के पर्य्यायवाची हैं, इसी से रजनी, रात्रिः, ये आदि भी इस के नाम हैं"; अक्षीवं, "वा अक्षिवं", वसिरं, "और भी वशिरं" ये २ समुद्र नून के नाम हैं; ॥ ४१ ॥ सैंधवः, शितशिवं, "और सितशिवं, वा शीतशिवं, और शीतसिवं" मणिमंथं सिंधुजं, "और भी माणिमन्थं", ये ४ सैंधव—या पहाड़ी नोन के नाम हैं; ।

सांभर ।	न न रौमकं वसुकं
खारी ।	न न न पाक्यं विड (ञ्च) कृतके (द्वयम्) ॥ ४२ ॥
सोंचर ।	न न न सौवर्चले ऽच्च-रुचके
काला नोन ।	न तिलकं (तत्र मेचके) ।
राब-वा खांड़ ।	स न मत्स्यण्डी फाणितं (खण्डविकारे)
पक्कीचीनी-वा मिश्री।	स स शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
दही दूध मिला पदार्थ ।	स स कूर्चिका क्षीरविकृतिः (स्याद्)
शिखरन वा चटनी	स स रसाला (तु) मार्जिता ।
कढ़ी ।	न न (स्यात्) तेमनं (तु) निष्ठानं (त्रिलिङ्गा वासितावधेः) ॥ ४४ ॥
शूल पर भुने मांस।	पुसन पुसन १पुसन शूलाकृतं भटित्रं (स्याच्) छूल्यं
बटुआ में पके ।	पुसन पुसन उख्यं (तु) पैठरम् ।

१ शूल्यः

रौमकं, "और भी रौमं" वसुकं; "वसूकं" ये २ सांभर नोन इस प्रसिद्ध के नाम हैं पाक्यं, विडं, कृतकं ये ३ कृतक के अर्थात् बनाये हुये नोन के नाम हैं, "(क्षारमट्टी को पकाकर लवण बनाते हैं अर्थात् खारी नोन यह प्रसिद्ध है)"; ॥ ४२ ॥ सौवर्चलं, अक्षं, रुचकं, ये ३ मधुर लवण के भेद के वा सोंचर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तिन में कृष्ण वर्ण के सौवर्चल को तिलकं कहते हैं, (एकं) यों वैद्योंने कहा है "(कृष्णसौवर्चलगुणालवणे गन्धवर्जिते)" इति; मत्स्यण्डी, फाणितं, ये २ राब—खांड़—वा कच्ची चीनी के नाम हैं; खंड़विकारः, शर्करा, सिता, ये ३ पक्की चीनी—वा सफेद चीनी के नाम हैं, ये ५ भी शर्करा के नाम हैं यह किसी का मत है; ॥ ४३ ॥ दही आदि से जो क्षीर का विकार है उसे कूर्चिका, और क्षीरविकृतिः, कहते हैं, "वा कुर्चिका" जो किसी ने कहा है "(दध्नासह पयः पक्वं यत्तत्स्याद्दधिकूर्चिका। तक्रेण पक्वं यत्क्षीरं सा भवेत्तक्रकूर्चिकेति)" (एकं); रसाला, मार्जिता, ये २ दधि—मधु—शर्करा—मरिचा—आर्द्रादि के किये चाटने के योग्य—वा चटनी के नाम हैं; तेमनं, निष्ठानं, ये २ दही आदि के बने छंकके व्यंजन के वा कढ़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं; इस के परे वासित अन्त त्रिलिङ्ग और वाच्यलिंग हैं; ॥ ४४ ॥ शूलाकृतं, भटित्रं, शूल्यं, ये ३ शूलसंस्कार किये मांस आदि के नाम हैं, "(शूलेन पक्वं शूलाकृतम्)" शूलं लोहशलाका, उख्यं, पैठरं, ये २ स्थाली में पके अन्न आदि के नाम हैं; ।

रसिस्राव ।	पुसन १पुसन प्रणीत मुपसम्पन्नं
पूरी आदि ।	पुसन पुसन प्रयस्तं (स्यात्) सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥
पनिहा व्यञ्जन ।	पुसन पुसन (स्यात्) पिच्छिलं (तु) विजिलं
बीना अन्न ।	पुसन पुसन संमृष्टं शोधितं (समे) ।
चिकना ।	पुसन पुसन पुसन चिक्कणं मसृणं स्निग्धं
छौंका ।	पुसन पुसन (तुल्ये) भावित-वासिते ॥ ४६ ॥
मुरमुरा वा हावुस ।	न पु २पु आपक्कं पौलि(रभ्यूषो
धान का लावा ।	पुवहु पुनवहु लाजाः (पुंभूम्नि चा)ऽक्षतम् ।
चिउड़ा ।	पु पु पृथुकः (स्याच्) चिपिटको
बहुरी ।	सवहु धाना (भ्रष्टयवे स्त्रियाम्) ॥ ४७ ॥
बरा-वा पूआ ।	पु पु पु पूपो ऽपूपः पिष्टकः (स्यात्)
दही साना सत्तू ।	पु ३पुवहु करंभो दधिसक्तवः ।

१ उ–. २ अ–. ३–क्तु.

प्रणीतं, उपसम्पन्नं, ये २ रस आदि से सम्पन्न मांस वा व्यंजन आदि के नाम हैं; प्रयस्तं सुसंस्कृतं, ये २ प्रयत्न से सिद्ध घृतपक्क आदि के नाम हैं; ॥ ४५ ॥ पिच्छिलं, विजिलं, "और भी विजिनं, और विज्जलं, वा विजयिनं" ये २ मांड युक्त दही आदि के–वा साढ़ी सुद्धा दही–या मट्ठा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, संमृष्टं, शोधितं, ये २ केशकीड़ा आदि के दूर करने से शोधे अन्न आदि के नाम हैं; चिक्कणं, मसृणं, स्निग्धं, ये ३ चिकने के नाम हैं, भावितं, वासितं, ये २ पुष्प आदि द्रव्यांतर से वासित के नाम हैं, जैसे धूप से भावित तिल हैं; ॥ ४६ ॥ आपक्कम्, पौलिः, अभ्यूषः, "और भी अभ्युषः, और अभ्योषः", ये ३ आधे पके गेहूं यव आदि घृत वा अग्नि में भूंजे वा किये पक्वान्न के नाम हैं, लाजाः, भूंजे धान के नाम हैं यह पुल्लिंग और बहुवचन है, इसी प्रकार अक्षताः भी, 'अक्षताः यवाः यह पुराण है" वा अक्षतं, यह एक गीले चावल का नाम है, यह मुकुट का मत है "स्त्री· लाजा, बहु–अक्षताः"; पृथुकः, चिपिटकः, "चिपिटः, चिपुटः, उसी प्रकार चिपिटः", ये २ गीले भुने हुये ब्रीही के तण्डुल के वा चिउड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, धाना, यह एक भुने हुये यव के नाम हैं, नित्य स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन है. ॥ ४७ ॥ पूपः, अपूपः, पिष्टकः, ये ३ पिसे हुये तंडुल से बने भक्ष्य भेद के नाम हैं वा बड़ा–या पूआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं, दही से युक्त सक्तु दधिसक्तवः, करंभः "और भी करम्भः" कहलाता है, "(केन जलेन रम्यते करंबः)"; ।

भात।	स न न न १पुन पु भिस्सा(स्त्री)भक्त मन्धो ऽन्न मोदनो(ऽस्त्री स)दीदिविः॥४८॥
जला अन्न वा भात	स स भिस्सटा दग्धिका
मांड-मैल।	पुन (सर्वरसाग्रे) मण्ड (मस्त्रियाम्)।
माण।	पु २पु पु मासरा चाम निस्रावा (मण्डे भक्तसमुद्भवे)॥ ४९॥
लप्सी वा गीला भात।	स ३स स स स यवागू रुष्णिका श्राणा विलेपी तरला (च सा)।
गव्य।	पुसन गव्यं (त्रिषु गवां सर्वं)
गोबर।	४सन ५पुन गोविड् गोमय (मस्त्रियाम्)॥ ५०॥
उपला।	पुन (तत्तुशुष्कं) करीषो (ऽस्त्री)
दूध।	न न ६न दुग्धं क्षीरं पयः (समम्)।
घी आदि।	न पयस्य (माज्यदध्यादि)
पतलादही।	न द्रप्स्यं (दधि घनेतरत्)॥ ५१॥
घी।	न ७न ८न ९न घृत माज्यं हविः सर्पिर्
नवनीत-वा नयनू।	न न नवनीतं नवोद्धृतम्।

१ ओ—. २ आ—. ३ उ—. ४—ष्. ५ गो—. ६—स्. ७ आ—. ८—स्. ९—स्.

भिस्सा, "वा भिक्षा", भक्तं, अन्धः, "अन्धः (स) अन्नं, ओदनः, दीदिविः, ये ६ अन्न वा भात के नाम हैं, ॥ ४८ ॥ भिस्सटा, "और भिस्सिटा, वा भिक्षिटा, भिक्षिष्टा, भिक्षिका" दग्धिका, ये २ जले भात वा अन्न के नाम हैं, सब रसों का और द्रवद्रव्यों का अग्र अर्थात् अग्रिमद्रव मण्ड कहलाता है, मासरः, आचामः, निस्रावः, "उसी प्रकार विस्रावः" ये ३ भात के मांण के नाम हैं, ॥ ४९ ॥ यवागूः, उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला, ये ५ गीले भात वा किसी के मत से लप्सी के नाम हैं, गैयों के सब अर्थात् गैया में होनेवाले सब, क्षीर—दही—घी—आदि गव्यं कहलाता है, (एकं) गोविट्, गोमयं, ये २ गाय के गोवर के नाम हैं, ॥ ५० ॥ वह गोमय सूखा हो तो करीषं कहलाता है, उपला उपली—इस प्रसिद्ध के नाम हैं; दुग्धं, क्षीरं, पयः, ये ३ दूध इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पय का विकार जो घी—दही—आदि है वह पयस्यं कहलाता है, (एकं); आदि पद से तक्र और नवनीत का ग्रहण है; जो घन से इतरत् अर्थात् भिन्न वा पतला दही है उसे द्रप्स्यं, "और भी द्रप्स्यं, और द्रप्सं वा सरं" कहते हैं, "दगरी दही इस प्रसिद्ध का नाम है", ॥ ५१ ॥ घृतं, आज्यं, हविः, सर्पिः, ये ४ घी के नाम हैं, नवनीतं, नवोद्धृतं, ये २ नवनीत वा नयनू—माखन—आदि के नाम हैं, अर्थात् दही मथने से उस काल उत्पन्न हुआ है;।

टटका नयनू ।	न (तत्) हैयंगवीनं (यत् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम्) ॥ ५२ ॥
गोरस वा मंठा ।	न न १न पु दण्डाहतं कालशेय मरिष्ट (मपि) गोरसः ।
मंठा के भेद ।	न २न न तक्रं (ह्यु) दश्वि न्मथितं (पादाम्ब्वर्द्धाम्बुनिर्जलम्) ॥ ५३ ॥
दही का जल ।	न (मण्डं दधिभवं) मस्तु
पेयुस ।	पु पीयूषो (ऽभिनवं पयः) ।
भूख ।	स स ३स अशनाया बुभुक्षा क्षुद्
कवर ।	पु ४पु ग्रास (स्तु) कवलो (ऽर्थकः) ५४ ॥
साथ पीना ।	स न सपीतिः (स्त्री) तुल्यपानं
साथ खाना	स न सग्धिः (स्त्री) सहभोजनम् ।
प्यास ।	स स ५स पु उदन्या (तु) पिपासा तृट् तर्षो
खाना वा भोजन ।	स न जग्धि (स्तु) भोजनम् ॥ ५५ ॥
	न पु पु पु पु जेमनं लेप आहारो निघसो न्याद (इत्यपि) ।

१ अ–. २ उ–त्. ३–धं. ४–ल. ५–स्.

पूर्व दिन के गोक्षीर के दही से उत्पन्न घृत को हैयंगवीनं कहते, हैं, (एकं), ॥ ५२ ॥ दण्डाहतं, कालशेयं, "वा कालसेयं" अरिष्टं, गोरसः, ये ४ दण्ड से मथे मंठा वा गोरस मात्र के नाम हैं, उस्में विशेष यह है, कि दही का चतुर्थांश जल देकर दण्ड से मथा हुआ तक्रं कहलाता है; आधा जल जिस गोरस में दिया गया उसे उदश्वित् कहते हैं, और जल रहित दही मथनमात्र से मथितं कहलाता है, (एकैकं) ॥ ५३ ॥ दही से उत्पन्न पहिला मंडमस्तु कहलाता है, "दही के ऊपर के भाग को वा वस्त्र से निकाले दही के जल को मस्तु कहते हैं यह भी किसी का मत है, अभिनवंपयः अर्थात् सात दिवस तक की नई प्रसूत गोक्षीर को पीयूषः, "और भी पेयूषः" कहते हैं, (एकं), अशनाया, बुभुक्षा, क्षुत्, ये ३ क्षुधा के नाम हैं, "क्षुत् (–ध्) और भी क्षुधा", ग्रासः, कवलः, ये २ ग्रास या कवर के नाम हैं; कवलार्थकः, यह भी पाठ है, ॥ ५४ ॥ सपीतिः, तुल्यपानं, ये २ साथ पीने के नाम हैं, सग्धिः, सहभोजनं, ये २ सहभोजन के वा साथ भोजन के नाम हैं; उदन्या, पिपासा, तृट्, "तृषा, तृष्णा" तर्षः ये ४ प्यास, के नाम हैं, जग्धिः, भोजनं, ॥ ५५ ॥ जेमनं, "वा जमनं", लेपः, "लेहः", आहारः निघसः, "उसी प्रकार विघसः" न्यादः, ये ७ भोजन के नाम हैं; ।

अघाया ।	सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः
जूंठा ।	फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
।	कामं प्रकामं पर्य्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
अहीर ।	गोपे गोपाल गोसंख्य गोधुगाभीर वल्लवाः ॥ ५७ ॥
चौपाये ।	(गोमहिष्यादिकं) पादबन्धनं
गोस्वामी ।	(द्वौ) गवीश्वरे । गोमान् गोमी
गैयों का समूह ।	गोकुल (न्तु) गोधनं (स्याद्) गवांव्रजे ॥ ५८ ॥
जहां पहिले गैयों ने खाया ।	(त्रिष्वा) शितंगवीनं (तद्यावो यत्राशिताः पुरा) ।
बैल ।	उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
	अनड्वान् सौरभेयो गौर्
बैल का समूह ।	(उक्ष्णां संहतिर्) औक्षकम् ।
गैयों का झुण्ड ।	गव्या गोत्रा (गवां)
बछड़ों का समूह, धेनुओं का समूह ।	(वत्सधेन्वोर्) वात्सक-धैनुके ॥ ६० ॥

१—मं. २ इष्टं. ३ आ—. ४—त्. ५—न्. ६ आ—. ७—डुह्. ८ गो.

सौहित्यं, तर्पणं, तृप्तिः, ये ३ तृप्ति के नाम हैं, खाया पीछे शेष को त्याग किया वह भुक्तसमुज्झितं है वही फेला कहलाती है "और फेलिः, और भी पुं॰ फेलकः" ॥ ५६ ॥ कामं, प्रकामं, पर्य्याप्तं, निकामं, इष्टं, यथेप्सितं, ये ६ यथेप्सित वा चाह के नाम हैं, और ये सब क्रियाविशेषण हैं, जैसे यथाकामं भुंक्तेस्म; गोपः, गोपालः, गोसंख्यः, गोधुक्, (ह) और भी गोदुहः, आभीरः, "वा अभीरः भी" वल्लवः, ये ६ गोपाल वा अहीर के नाम हैं, ॥५७॥ गोमहिष्यादिकं अर्थात् गैया भैंस आदि को पादबन्धनं कहते हैं, "बाजे पढ़ते हैं यादबन्धनं, यहां गैया आदि यादवं है" आदि पद से खर-अजा आदि का ग्रहण है; गवीश्वरः, गोमान्, गोमी, ये ३ गैयों के स्वामी के नाम हैं, "गोमन्तौ, गोमिनौ"; गोकुलं, गोधनं "बाजे पढ़ते हैं धनं" गवांव्रजः, ये ३ गैयों के समूह के नाम हैं, ॥ ५८ ॥ जहां पहिले गैयां खिलाई गई उस स्थान को आशितंगवीनं, "आशितंगवीनः, (ना—नं) वा अशितंगवीनः, (ना—नं), वा उपितंगवीनः, (ना—नं)", कहते हैं, और तीनों लिंग हैं, उक्षा, भद्रः-बलीवर्दः, "और वरीवर्दः, वा वलीवर्दः" ऋषभः, वृषभः, वृषः, ॥ ५९ ॥ अनड्वान्, "स्त्री॰ अनड्वाही, और अनडुही" सौरभेयः, गौः, ये ९ वृषभ वा बैल के नाम हैं, वृषभों का समूह औक्षकं कहलाता है, (एकं) गवांसंहतिः अर्थात् गैयों के समूह का गव्या, गोत्रा, ये २ नाम हैं, बछड़ों का समूह वात्सकं कहलाता है, धेनुओं का समूह धैनुकं कहलाता है, (एकैकं), क्रम से जानना ॥ ६० ॥

	पु
बड़ा बैल।	(वृषो महान्) महोक्षः (स्याद्) पु पु
बूढ़ा बैल।	वृद्धोक्ष-(स्तु) जरद्गवः।
	पु
कलोर।	(उत्पन्न उक्षा) जातोक्षः
	पु
नया बछड़ा।	(सद्योजात स्तु) तर्णकः ॥ ६१ ॥
	पु पु
बछड़ा।	शकृत्करि (स्तु)-वत्सः (स्याद्) पु पु
तरुण बछड़ा।	दम्य-वत्सतरौ (समौ)।
	पु
स्वच्छन्द बैल।	आर्षभ्यः (षण्डतायोग्यः) पु १पु २पु
सांड़।	षण्डो गोपति रिट्चरः ॥ ६२ ॥
	पु
कान्धा।	(स्कन्धप्रदेशस्तु) वहः स पु
सास्ना—वा गले में लटका चाम।	सास्ना (तु) गलकम्बलः।
	पु पु
नाथे बैल।	(स्यात्) नस्तित (स्तु) नस्योतः
	पु पु
निकालने का काठ	प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
जोतने के योग्य।	पु पु ३पु
	(युगादीनां तु वोढारो) युग्य-प्रासंग्य-शाकटाः।
	पु पु
हलवाह।	(खनति तेन तद्वोढा ऽस्येदं) हालिक-सैरिकौ ॥ ६४ ॥
	पु पु पु पु
जोतू।	धुर्वहे धुर्य्य-धौरेय-धुरीणाः (स) धुरन्धरः।

१—ति. २ द्र—. ३—ट.

महान् वृषः अर्थात् बड़ा बैल महोक्षः कहलाता है, वृद्धोक्षः, जरद्गवः, "स्त्री॰ जरद्गवी", ये २ वृद्ध वृषभ के नाम हैं, उत्पन्न बलीवर्द भाव को प्राप्त उक्षा जातोक्षः, कहलाता है, सद्य उत्पन्न बछड़ा तर्णकः कहलाता है, (एकं) ॥ ६१ ॥ शकृत्करिः, "वा सकृत्करिः" वत्सः, ये २ बछड़े के नाम हैं; दम्यः, वत्सतरः, ये २ स्पष्ट तारुण्यवाले बछड़े के नाम हैं; षण्डता गोपतित्व है उस के योग्य को आर्षभ्यः कहते हैं. (एकं), षण्ढः, "शण्ढः, वा शण्डः" गोपतिः, इट्चरः, "और भी इट्वरः" ये ३ स्वेच्छाचारी अर्थात् सांड़ के नाम हैं "(षणोति गर्भं ददातीति षंडः, इच्छया चरतीति इट्चरः)" ॥ ६२ ॥ इस वृषभ का स्कन्ध देश वहः कहलाता है, "कंधा यह प्रसिद्ध है; सास्ना, गलकम्बलः, ये २ गैया के कण्ठ में लम्बे चाम के नाम हैं; नस्तितः, नस्योतः, ये २ नथे बैल के नाम हैं; प्रष्ठवाट्, (ह)" युगपार्श्वगः, "वा युगपार्श्वकः" ये २ बैल के ढीला करने के अर्थ जो ग्रीवा के साथ काठ बांधते हैं, उस के नाम हैं; ॥ ६३ ॥ युग का लेजानेवाला युग्यः कहलाता है, बछड़ों को दमन के समय जो काठ डालते हैं वह प्रासंगः है, उस का लेजानेवाला प्रासंग्यः कहलाता है, शकट का लेजानेवाला शाकटः कहलाता है, (एकैकं) तेन खनति इस आदि अर्थ में हालिक और सैरिक कहलाते हैं, जैसे हल से जो खनता है वह हालिकः है, इसी प्रकार हल का लेजानेवाला हालिकः वा हल का यह हालिकः कहलाता है, फिर सीर से खनता, सीर का लेजानेवाला, वा सीर का यह सैरिकः कहलाता है. सीर हल का पर्य्याय है, ये जोतू बैल के वा हलवाह के नाम हैं, ॥ ६४ ॥ धूर्वहः, "वा धूर्धरः", धुर्य्यः, धौरेयः, धुरीणः, धुरंधरः, ये ५ धुरंधर वा बलवान् बैल के नाम हैं।

एक कोई बोझा ले-जानेवाला।	पु १पु २पु (उभाव्) एकधुरीणै कधुरावेक धुरावहे ॥ ६५ ॥
सब बोझ का ले-जानेवाला।	पु पु (सतु) सर्व्वधुरीणः (स्याद्योवै) सर्वधुरावहः ।
गैया।	स स स ३स स स माहेयी सौरभेयी गौरु स्रा माता (च) शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥ ४स ५स स अर्ज्जुन्य घ्या रोहिणी (स्याद्)
उत्तम गैया।	स (उत्तमा गोषु) नैचिकी ॥ ६७ ॥
चित्र विचित्र गैया।	स स (वर्णादिभेदा त्संज्ञाः स्युः) शवली धवला (दयः) ।
दो वर्ष की बछिया।	स स द्विहायनी द्विवर्षा (गौर्) स ६स
एक वर्ष की बछिया।	एकाब्दा (त्वे) कहायनी ॥ ६८ ॥
चार वर्ष की।	स स चतुरब्दा चतुर्हायणी
तीन वर्ष की।	स स (एवं) त्र्यब्दा त्रिहायणी ।
वंध्या।	स स वशा वन्ध्या
पतित गर्भा।	स स ऽवतोका (तु) स्रवद्गर्भा
गर्भिणी।	स (ऽथ) सन्धिनी ॥ ६९ ॥
बिना समय बैल के पास जाने वाली।	(आक्रांता वृषभेण) ७स ८स (ऽथ) वेह द्गर्भोपघातिनी ।

१ ए–र. २ ए–. ३ उस्रा. ४–नी. ५ अ–. ६ ए–. ७–त्. ८ ग–.

एकधुरीणः, एकधुरः, एकधुरावहः, ये ३ जो एकही धुरा को लेजाता है उस के नाम हैं, ॥ ६५ ॥ और जो सब धुराओं को लेजाता है उसे सर्वधुरीणः कहते हैं, (एकं) माहेयी, सौरभेयी, गौः, उस्रा, माता, शृंगिणी, ॥ ६६ ॥ अर्ज्जुनी, अघ्या, रोहिणी, ये ९ गैयों के नाम हैं, गावी, मातरी; जो गैयों में उत्तमा है उसे नैचिकी, "और नीचिकी, वा नीचिका, निचिकी" कहते हैं, वर्ण–अवयव–प्रमाणों के भेद से शवली धवला आदि गैयों की संज्ञा हैं; शवली चित्रवर्णा है, "शबला भी" धवला शुक्लवर्णा, "और धवली"; आदि पद से कृष्णा काली, कपिला भूरी, आदि अवयव भेद से लम्बकर्णी, चक्रशृंगी, आदि, प्रमाण भेद से हृस्वा छोटी, दीर्घा बड़ी, वामनी अति छोटी, आदि हैं (एकैकं) ॥ ६७ ॥ वयोभेद से संज्ञा भेद है, दो वर्ष प्रमाण है जिस का वह गौ द्विहायनी कहलाती है, (एकं) एक है अब्द वर्ष जिस का वह एकाब्दा गौ एकहायनी है, (एकं) ॥ ६८ ॥ चतुरब्दा गौ चतुरहायनी है, (एकं) त्रिवर्षा गौ त्रिहायनी कहलाती है, (एकं) वशा, वन्ध्या, ये २ बांझ वा बहिला इस प्रसिद्ध के नाम हैं; अवतोका, "वतोका भी" स्रवद्गर्भा, ये २ अकस्मात् पतितगर्भा के नाम हैं, वृषभ से मैथुन के अर्थ जो आक्रान्त है वह सन्धिनी कहलाती है, ॥ ६९ ॥ "(संधा गर्भाधानमस्त्यस्याः संधिनी)" (एकं) वृषभ के उपगमन से गर्भ की उपघातिनी वेहत्, और गर्भोपघातिनी, कहलाती है, (एकं) "वेहत् वृषोपगतेति भागुरिः" ।

बैल के पास जाने का उचित समय।	स १४ काल्या पसर्य्या (प्रजने)
गाभिन कलोर-वा श्रोसर।	स स प्रष्ठौही बालगर्भिणी ॥ ७० ॥
सीधी गैया।	स स (स्याद्) अचण्डी (तु) सुकरा
बहुत बच्चा देने वाली।	स स बहुसूतिः परेष्टुका।
बकेनि।	स स चिरसूता वष्कयणी
तुर्त की ब्याई।	स स धेनुः (स्यान्) नवसूतिका ॥ ७१ ॥
दूहने में सुशीला।	स स सुव्रता सुखसन्दोह्या
मोटे थन वाली।	स स पीनोध्नी पीवरस्तनी।
दश सेर दूध की।	स स द्रोणक्षीरा द्रोणदुघा
जो गिरों धरी गई।	स धेनुष्या (बन्धके स्थिता) ॥ ७२ ॥
प्रति वर्ष बच्चा देने वाली।	स समांसमीना (सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते)।
थन।	२न न ऊध (स्तु क्लीवम्) आपीनं
खूंटा।	पु पु (समौ) शिवक-कीलकौ ॥ ७३ ॥
रस्सी।	३सन न (नपुंसि) दाम संदानं
डोरी।	स स पशुरज्जु (स्तु) दामनी।

१ उ-. २-स. ३-न. .

प्रजन जो गर्भ ग्रहण का काल है उसमें काल्या अर्थात् प्राप्तकाला जो गौ है वह काल्या, और उपसर्य्या, कहलाती है बालाही गर्भिणी बालगर्भिणी, प्रष्ठौही और बालगर्भिणी हैं. ॥ ७० ॥ अचण्डी, सुकरा, ये २ सीधी गैया के नाम हैं, बहुसूतिः, परेष्टुका, ये २ बहुत प्रसव करनेवाली के नाम हैं; चिरसूता, वष्कयणी, "उसी प्रकार वस्कयनी, और वष्कयिणी, वा अवष्कयणी, और भी वष्कयणी आदि", ये २ दीर्घ काल से प्रसव करनेवाली वा बकेना के नाम हैं; धेनुः, नवसूतिका, ये २ नूतन प्रसूता के नाम हैं; ॥ ७१ ॥ सुव्रता, सुखसंदोह्या, "सुखसंदुह्या" ये २ सुशीला के नाम हैं; पीनोध्नी, पीवरस्तनी, ये २ मोटे थनवाली के नाम हैं; द्रोणक्षीरा. द्रोणदुघा, ये २ द्रोणपरिमित दूध देनेवाली के नाम हैं; जो बंधक धरी गई ऋण देने तक ऋण दाता के दूहने के अर्थ वह धेनुष्या कहलाती है, (एक); ॥ ७२ ॥ जो वर्ष २ में बच्चा देती है वह समांसमीना अर्थात् बरसायन या बरसोड़ी कहलाती है, यह एक पंच अक्षर का पद है. ऊधः, "और भी उधः, और ओघः" आपीनं, ये २ गौ के थन वा आपीन के नाम हैं; शिवकः. कीलकः, ये २ गैयों के बांधने के लिये गड़े खूंटे के नाम हैं, ॥ ७३ ॥ दाम. "दामा (मन्) वा दामा (मा)", संदानं, ये २ बांधने की रस्सी के नाम हैं. पशुरज्जुः, दामनी, "उसी प्रकार सामनी, और दन्यनी भी" ये २ जिस बहुत गांठयुत एक रस्सी में बहुत पशु बांधे जाते हैं उनके नाम हैं; ।

मथनी वा रई—छोढ़ी।	पु पु पु पु पु वैशाख-मन्थ-मन्थान-मन्थाना मन्थदण्डके ॥ ७४ ॥
खंभा।	पु पु कुठरो दण्डविष्कम्भे
मथानी वा महेंड़ा।	स स मन्थनी गर्गरी (समे)।
ऊंट।	पु पु पु पु उष्ट्रे क्रमेलक-मय-महाङ्गाः
बच्चे।	पु पु करभः शिशुः ॥ ७५ ॥
छोटे बच्चे काठ में बंधे।	१पु (करभाः स्युः) शृंखलका (दारवैः पादबन्धनैः)।
बकरी।	स स अजा छागी
बकरा।	पु पु पु पु पु स्तुभः च्छाग-वस्त-च्छगलका अजे ॥ ७६ ॥
भेंड़ा।	पु २पु ३पु ४पु पु ५पु पु मेढ्रो-रभ्रो-रणो-र्णायु-मेष-वृष्णय एडकाः।
ऊंट समूह।	न ६न ७न (उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यात्) औष्ट्रको रभ्रका जकम् ॥ ७७ ॥
गदहा।	८पु पु पु पु पु चक्रीवन्त-(स्तु) बालेया रासभा गर्द्दभाः खराः।
साहूकार।	पु पु पु पु ९पु वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वणिजो वणिक् ॥ ७८ ॥
	पु १०पु पु पण्याजीवो (ह्या) पणिकः क्रयविक्रयिक (श्च सः)।

१—क. २ उ—. ३ उ—. ४ ऊ—. ५—ष्णि. ६ औ—. ७ आ—. ८—त. ९—ज्. १० आ—.

वैशाखः, मन्थः, "मन्था (—न)", मन्थानः, मन्थाः, मन्थदण्डकः, ये ५ मंथन दण्ड के वा रई वा छोढ़ी इस प्रसिद्ध के नाम हैं. ॥ ७४ ॥ कुठरः, "और भी कुटरः" दण्डविष्कम्भः, ये २ जिस खम्भे में मथने का दण्ड बांधते हैं उस के नाम हैं, मंथनी, गर्गरी, ये २ मथने के पात्र के नाम हैं, "(मंथते ऽस्यां मथनी)" कलशी भी पाठ है, उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः, महाङ्गः, ये ४ ऊंट के नाम हैं. ऊंट का शिशु करभः कहलाता है, ॥ ७५ ॥ काष्ठमय पादबन्धन से युक्त करभाः शृंखलका कहलाते हैं, (एकं) अजा, छागी ये २ बकरी वा छेड़ी के नाम हैं; स्तुभः, "और भी तभः और स्तभः, वा शुभः" छागः, "वा छगः" वस्तः, छगलकः, "छगलः, और छागलः", अजः, ये ५ बकरा—वा बोकरा—इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ७६ ॥ मेंढ्रः, उरभ्रः, उरणः, ऊर्णायुः, मेषः, वृष्णिः, एडकः, "स्त्री॰ एडका:" ये ७ भेड़ा के नाम हैं, ऊंटों के वृन्द को औष्ट्रकं, उरभ्रों के वृन्द को औरभ्रकं कहते हैं; अजों के वृन्द को आजकं, क्रम से एकेक जानना ॥ ७७ ॥ चक्रीवान्, वालेयः, रासभः, "और भी राशभः" गर्दभः, खरः, ये ५ गदहों के नाम हैं, वैदेहकः, "वा वैदेहः" सार्थवाहः, नैगमः, वणिजः, "वा वाणिजिकः", और भी वाणिजः, वणिक्, ॥ ७८ ॥ पण्याजीवः, आपणिकः, क्रयविक्रयिकः, ये ८ क्रयविक्रयों से वर्त्तमान साहूकार के नाम हैं, वा व्यवहारिआ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ।

व्योपारी वा बेचने वाला ।	१पु पु विक्रेता (स्याद्) विक्रयिक:
लेनेवाला ।	पु पु क्रायक-क्रयकौ (समौ) ॥ ७९ ॥
बनियांपन ।	न स वाणिज्यं (तु) वणिज्या (स्यात्)
मोल ३	न पु २पु मूल्यं वस्नो (ऽप्य) वक्रय: ।
मूर ।	स पुन न नीवी परिपणो मूलधनं
ब्याज-वा नफा ।	पु पु लाभो (ऽधिकं) फलम् ॥ ८० ॥
लेन-देन ।	न पु पु पु परिदानं परीवर्तो नैमेय निमया (वपि) ।
धरोहर ।	पु ३पु (पुमान्) उपनिधि न्यास:
फेरदेना ।	न प्रतिदानं (तदर्पणम्) ॥ ८१ ॥
बेचने को योग्य वस्तु	पुसन (क्रये प्रसारितं) क्रय्यं
लेने की वस्तु ।	पुसन पुसन क्रेयं क्रेतव्य (मात्रके) । पुसन पुसन पुसन विक्रेयं पणितव्यं (च) पण्यं (क्रय्यादयस्त्रिषु) ॥ ८२ ॥
बयाना ।	न पु स (क्लीबे) सत्यापनं सत्यंकार: सत्याकृति: (स्त्रियाम्) ।

१-तृ. २ अ-. ३ न्या-.

विक्रेता, विक्रयिक:, ये २ वस्त्र पात्र आदि देकर मूल्य देनेवाले के वा बेचनेवाले के नाम हैं. "(विक्रयेण जीवति विक्रयिक:)" क्रायक:, क्रयक:, ये २ मूल्य देकर वस्त्र आदि के लेनेवाले के नाम हैं. ॥ ७९ ॥ वाणिज्यं, "वा वणिज्यं" वणिज्या. ये २ बनियों के कर्म के नाम हैं, "(वणिजां कर्म वाणिज्यं)" मूल्यं, वस्न:, अवक्रय:, ये ३ विकने की वस्तुओं के मोल के नाम हैं. "(वसति अस्मिन् वस्तुप्राप्तिरिति वस्न:)" नीवी "और नीवि:" परिपण:, मूलधनं, ये ३ क्रय और विक्रय आदि व्यवहार में जो मूलधन है उसके नाम हैं, "(परिपण्यते वृद्ध्यर्थं प्रयुज्यते इति परिपण:)" मूलधन से अधिक निष्पन्न हुआ कालान्तर में वह लाभ:, और फलं, कहलाता है, "नफा इस प्रसिद्ध का नाम है" ॥ ८० ॥ परिदानं, "कोई पढ़ते हैं प्रतिदानं" परीवर्त्त:, "और परिवर्त:" नैमेय: "उसी प्रकार नैमेय:" निमय:, "वा विमय:, और विनिमय:" ये ४ अदलबदल, लेनदेन-सराफेरी आदि के नाम हैं, उपनिधि:, न्यास:, ये २ धरोहर के नाम हैं. "वा यासी" प्रतिदानं, "कोई पढ़ते हैं परिदानं" उसको फेर देने का नाम है ॥ ८१ ॥ क्रये, अर्थात् क्रयविक्रय के स्थान में ग्राहक लोग लेवें इस बुद्धि से जो फैलाई वस्तु है उसे क्रय्यं कहते हैं, क्रेतव्य मात्र जहां कहीं है उसे क्रेयं, क्रेतव्यं, कहते हैं, इसी प्रकार विक्रेयं, पणितव्यं, पण्यं ये ३ विकने की वस्तु के नाम हैं, ये क्रय्य आदि तीनों लिंग अर्थात् वाच्यलिंग हैं, ॥ ८२ ॥ सत्यापनं, "और भी स्त्री० सत्यापना", सत्यंकार:, सत्याकृति:, ये ३ अवश्य मुझे लेना चाहिये इस आदि रूप के सत्य करने के नाम हैं, ।

	पु पु
बेंचना ।	विपणो विक्रयः
गिन्ती १ से ले १८ तक।	(संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ॥ ८३ ॥
२० से ले परार्द्ध पर्य्यन्त ।	विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ।
	संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तः तासु चानवतेः स्त्रियः ॥ ८४ ॥
	पंक्तेः शतसहस्रादिक्रमाद्दशगुणोत्तरम्) ।
	न न न १न
तोल-वा नाप ।	यौतवं द्रुवयं पाय्य (मिति) माना (र्थकं त्रयम्) ॥ ८५ ॥
	स स पु
तोल के भेद ।	(मानं) तुला-ऽङ्गुलि- प्रस्थैर् २पु
घुंघुची से मासा तक ।	(गुञ्जाः पञ्च) द्यमाषकः ।
	पु पुन
तोला ।	(ते षोडश) ऽक्षः कर्षो (ऽस्त्री) न
चार तोला ।	पलं (कर्षचतुष्टयम्) ॥ ८६ ॥
	पुन पुन
८० घुंघुची भर वा मोहर ।	सुवर्णो बिस्तौ (हेम्नो ऽक्षे) पु
पल ।	कुरुविस्त (स्तु तत्पले) ।

१—न. २—श्रा.

विपणः, विक्रयः, ये २ बेचने के नाम हैं, श्रादश अर्थात् दश शब्द पर्य्यन्त एक श्रादि श्रष्टादश अन्त संख्याशब्द संख्येय में वर्त्तमान तीनों लिङ्ग हैं, जैसे एकाशाटी, एकः पटः, एकं वस्त्रं, दश स्त्रियः, दश पुरुषाः, दश कुलानि, "न क्रि विप्र का एक है इस श्रादि" इसी प्रकार श्रष्टादश पर्य्यन्त उदाहरण बनाने चाहिये, तिनमें चतुर शब्द पर्य्यन्त वाच्यलिङ्ग हैं, शेष त्रिलिङ्ग समान हैं, हि शब्द से इनकी संख्येय में ही वृत्ति है श्रौर संख्या में नहीं है, यह सूचित होता है, ॥ ८३ ॥ विंशत्याद्याः अर्थात् विंशति से लेकर परार्द्ध पर्य्यंत सब संख्या सदा एकत्व श्रौर नित्य एक बचनान्त हैं, संख्येय श्रौर संख्या में वर्त्तमान हैं, तहां संख्येय में जैसे एकोनविंशतिः पटाः, विंशत्यापुरुषैः कृतं, संति शतं गावः इत्यादि, संख्या में जैसे पटानां विंशतिः, "वा विंशतो" गवांशतं, संख्या के अर्थ में द्विवचन श्रौर बहुवचन होता है, श्रौर संख्यांतरार्थ में वर्त्तमान विंशत्यादि संख्या के द्विवचन श्रौर बहुवचन भी होते हैं,—जैसे—द्वेविंशती, गवांशतानि, तिस्रो विंशतयः इत्यादि, उस विंशति श्रादि में नब्बे पर्य्यंत स्त्रीलिङ्ग हैं, ॥ ८४ ॥ पंक्तिः दशसंख्या उससे लेकर दशगुण उत्तर हैं जिस में तैसी संख्या क्रम से शत—सहस्र श्रादि होता हैं, जैसे दशगुण पंक्ति शत होता है, शत दशगुण सहस्रं होता है, इसी रीति अयुत श्रादि, जैसा कहा है, "(एक दश शत सहस्रायुत लक्ष प्रयुत कोटयः क्रमशः । अर्बुदमब्जं खर्व निखर्व महापद्म शंकवस्तस्मात् । जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः । संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैरिति)" यौतवं, "श्रौर भी यौवतं" द्रुवयं, पाय्यं, मानं, ये ४ मानार्थक वा प्रमाणार्थक हैं, "(मानमर्थो यस्य तत्)" ॥ ८५ ॥ वह प्रमाण तुला अंगुली श्रौर पत्थर श्रादि से भिन्न २ होते हैं, तुला तराजू तुलामानं—अंगुलिमानं—प्रस्थमानं—ये त्रिविध हैं, येही ३ उन्मान—प्रमाण—परिमाणशब्दों से क्रम से व्यवहार किये जाते हैं, जो कहा है, "(ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः । श्रायामस्तु प्रमाणं स्यात् संख्याभिन्ना तु सर्वतः)" पंचगुञ्जाः श्राद्यमाषकः, "श्रौर भी माषः, श्रौर मासः", अर्थात् ५ गुंजा का एक मासा, वे सोलह मासे का एक अक्षः, श्रौर कर्षः होता है, ये २ तोला कहलाते हैं, चार कर्ष का एक पल होता है, ॥ ८६ ॥ सुवर्णः, बिस्तः, ये २ सुवर्ण के अक्ष वा कर्ष के नाम हैं, वा अस्सी गुंजा से तुले सुवर्ण के नाम हैं, उस सुवर्ण के पल को कुरुविस्तः कहते हैं, (एकं) ।

	स
१०० पल ।	तुला (स्त्रियां पलशतं)
	पु
२० तुला ।	भार: (स्याद्विंशति स्तुला) ॥ ८७ ॥
	पुन
१० भार ।	आचितं (दशभारा: स्यु:)
	पुन
गाड़ी भर भार ।	(शाकटो भार) आचित: ।
	पु पु
रुपया ।	कार्षापण: कार्षिक: (स्यात्)
	पु
पैसा ।	(कार्षिके ताम्रिके) पण: ॥ ८८ ॥
	पुन पु स पु पु
बहुत प्रकार के प्रमाण विशेष ।	(अस्त्रियाम्) आढक-न्द्रोणौ खारी वाहो निकुंचक: ।
	पु पु
	कुडव: प्रस्थ (इत्याद्या: परिमाणार्थका: पृथक्) ॥ ८९ ॥
	पु
चौथाई ।	पाद (स्तुरीयो भाग: स्याद्)
	पु पु पु
बांट ।	अंश भागौ (तु) वण्टक: ।
	न न न न १न न न
धन ।	द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थ मृक्थं धनं वसु ॥ ९० ॥
	न न न २पु पु पु
	हिरण्यं द्रविणं द्युम्न मर्थ-रै-विभवा (अपि) ।
	पु न
चान्दी-सोना ।	(स्यात्) कोश-(श्च) हिरण्य-(ञ्च हेमरूप्ये कृताकृते) ॥९१॥

१ ऋ-. २ अ-.

शतपलों की एक तुला होती है, (एकं) बीस तुला का एक भार:, उसी प्रकार भर:, भी होता है, "(भ्रियत इति भार:)" ॥ ८७ ॥ दशभारा: आचितं है, जो शाकट: अर्थात् शकट से लेजाने के योग्य भार है वह भी आचित:, वाजे पढ़ते हैं पुराण:, कहलाता है; कार्षापण:, "वाजे पढ़ते हैं, कार्षापणक:" कार्षिक:, ये २ राजत कर्षपरिमित रुप या रुपया इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ताम्र संम्बन्धी कर्ष प्रमाण को पण:, या पैसा कहते हैं, ॥ ८८ ॥ इस प्रकार तुला मान कहा गया और अंगुलिमान हस्त आदि है वह तो नृवर्ग में कहचुके हैं, अब प्रस्थमान कहते हैं; आढ़क आदिशब्द परिमाणार्थक और परिमाण विशेष के वाचक पृथक् प्रत्येक भिन्न हैं, तिन में चौथाई द्रोण का एक आढ़क होता है, ४ आढ़क का एक द्रोण, १६ द्रोण की एक खारी, "उसी प्रकार खारि:, और पुं॰ खार:", "२० द्रोण का एक कुम्भ" १० कुम्भ का एक वाह:, "खारी का चतुर्थांश एक माणी, चौथाई माणी का एक द्रोण, चौथाई द्रोण का एक आढ़क, चौथाई कुड़व का एक निकुञ्चक", चौथाई प्रस्थ का एक कुड़व:, और चौथाई आढ़क का एक प्रस्थ होता है, इस आदि परिमाणार्थक पृथक २ हैं, "कुड़व: यह एक पाव सेर इस प्रसिद्ध का, तथा प्रस्थ यह एक सेर इस प्रसिद्ध का नाम हैं, और भी स्त्री॰ आढ़की, और आढ़किका, और कुड़प:, या कुटप:" ॥ ८९ ॥ रुपये आदि के चतुर्थ भाग को पाद: कहते हैं, अर्थात् पावली, कहते हैं; अंश:, "या अंस:" भाग:, वण्टक:, ये ३ भाग मात्र के वा बांट इस प्रसिद्ध के नाम हैं; द्रव्यं, वित्तं, स्वापतेयं, रिक्थं, ऋक्थं, धनं, वसु, ॥ ९० ॥ हिरण्यं, द्रविणं, द्युम्नं अर्थ:, रा:, (रै) विभव:, ये १३ धन के नाम हैं; कोश:, हिरण्यं, "वाजे पढ़ते हैं कोष:, या कोषं" ये २ सुद्ध, बने-या अनबने-चान्दी, सोने के नाम हैं; ९१ ॥

	न
ताम्रादि ।	(ताभ्यां यदन्यत्तत्) कुप्यं न
तामा रूपा का मेल।	न न १न पु रूप्यं (तद्द्वय माहतम्)।
मरकत मणि ।	गारुत्मतं मरकत मश्मगर्भ हरिन्मणिः ॥ ९२ ॥
	न पु पु
पद्मराग वा माणिक्य।	शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागो न
मोती ।	स (ऽथ) मौक्तिकम् ।
	मुक्ता पु पुन
मूंगा ।	(ऽथ) विद्रुमः (पुंसि) प्रवालं (पुंनपुंसकम्) ॥ ९३ ॥
	न पुस
रत्नमात्र ।	रत्नं मणि (र्द्वयो रश्मजातौ मुक्तादिके ऽपि च) ।
	न न न न २न न
सोना ।	स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम्) ॥ ९४ ॥
	न न न ३न न
	तपनीयं शातकुंभं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ।
	न न न न
	चामीकरं जातरूपं महारजत-काञ्चने ॥ ९५ ॥
	न न न ४पुन
	रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनद मष्टापदो (ऽस्त्रियाम्) ।
	५पुन
सोने का गहना ।	(अलङ्कार सुवर्णं यच्) छृङ्गीकनक (मित्यदः) ॥ ९६ ॥
	न न न न न
चांदी ।	दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्ज्जूरं श्वेत (मित्यपि) ।

१ अ—. २—न. ३—न. ४ अ—. ५ श—.

ताभ्यां अर्थात् हेमरूप से जोताम्र आदि भिन्न है वह कुप्यं कहलाता है; अर्थात् हिरण्यं और अरूप्यञ्च कुप्यं "वा अकुप्यं" है और तद्द्वयं अर्थात् कुप्यं, और अकुप्यं आहतं "अर्थात् मुद्रा बनाया होय तो" रूप्यं कहलाता है; गारुत्मतं, मरकतं, अश्मगर्भं, हरिन्मणिः, ये ४ पन्ना वा मरकत मणि के नाम हैं; ॥ ९२ ॥ शोणरत्नं लोहितकः, पद्मरागः, ये ३ पद्मराग के वा माणिक्य के नाम हैं; मौक्तिकं, मुक्ता, ये २ मोती के नाम हैं; "(मुच्यते शुक्तिभिर्मौक्तिकम्)" विद्रुमः, प्रवालः, ये २ मूंगा के नाम हैं; ॥ ९३ ॥ रत्नं, मणिः, "और भी स्त्री॰ मणी" ये २ अश्मजातौ अर्थात् पत्थर को जाति में—मरकत मणि की जाति में—वा मोती आदि की जाति में वर्त्तमान हैं, आदि शब्द से मूंगा में भी वर्त्तमान हैं, "(रमन्ते अस्मिन् रत्नम्)" और भी "(कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकं एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः॥ सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्त्तप्रवालकं। रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते इति वा मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकं पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मकं तथा। प्रवालमुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव) ॥ स्वर्णं, सुवर्णं, कनकं, हिरण्यं, हेम, हाटकं, ॥ ९४ ॥ तपनीयं, शातकुम्भं, "वा शातकौम्भं" गांगेयं, भर्म, "और भी भर्मं" कर्बुरं, "और कर्बूरं उसी प्रकार कर्चुरं" चामीकरं, जातरूपं महारजतं, कांचनम्, ॥ ९५ ॥ रुक्मं, "वा रुग्मं", कार्त्तस्वरं, जाम्बूनदं, अष्टापदः, ये १९ सुवर्ण वा सोना इस प्रसिद्ध के नाम हैं, जो अलंकार कुण्डल आदि सुवर्ण का है उसे शृङ्गी कनकं कहते हैं, "बाजे पढ़ते हैं शृङ्गी वा शृङ्गिः, और भी न॰ शृङ्गि और कनकं" ॥९६॥ दुर्वर्णं. रजतं, रूप्यं, खर्ज्जूरं, "वा खर्ज्जुरं" श्वेतं, ये ५ रजत वा रूप के नाम हैं।

अर्थ	लिङ्ग	मूल
पीतल।	स पुन	रीतिः (स्त्रियाम्) आरकूटो (न स्त्रियाम्)
तामा।	न	(अथ) ताम्रकम् ॥ ९७ ॥
	न न न न न	शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टं वरिष्ठो दुम्बराणि (च)।
लोहा।	पुन न न न १न. न	लोहो (ऽस्त्री) शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसा-ऽयसी ॥ ९८ ॥
	पुन	अश्मसारो
लोहमल-वा कीट।	पुन पुन	(ऽथ) मण्डूरं सिंहान (मपि तन्मले)।
सब धातु।	न	(सर्वं स्यात्तैजसं) लोहं
फाल।	स	(विकार स्त्वयसः) कुशी ॥ ९९ ॥
कांच।	पु पु	क्षारः काचो
पारा।	पु पु पु पुन	(ऽथ) चपलो रसः सूत (श्च) पारदे।
भैंस का सींग।	न	गवलं (माहिषं शृङ्गम्)
अबरख।	न २न न	अभ्रकं गिरिजा-ऽमले ॥ १०० ॥
सुरमा।	न न न न	स्रोतोऽञ्जन (न्तु) सौवीरं कापोताञ्जन-यामुने।
तूतिया।	न न न न	तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नक-मयूरके ॥ १०१ ॥

१–स. २ ल.

रीतिः, और भी "रीती और क्लीब रेत्यं" आरकूटः, "उसी प्रकार आरः" ये २ पीतल के नाम हैं; ताम्रकं. ॥ ९७ ॥ शुल्वं, "वा शुल्वं" म्लेच्छमुखं, द्व्यष्टं, और "द्विष्टं" वरिष्ठं, उदुंबरं, और उदुम्बरं या औदुम्बरं" ये ८ तामे के नाम हैं; लोहः, "और लोहं, वा लोहः" शस्त्रकं, तीक्ष्णं, पिण्डं, कालायसं, "उसी प्रकार कृष्णायसं, यह रत्नमाला का मत है" अयः, "अय (स्) और भी आयसं" ॥ ९८ ॥ अश्मसारः, ये ७ लोह के नाम हैं; मण्डूरं, सिंहानं, "और सिंहाणं, वा सिंहाणं, सिंघाणं", ये २ लोहमल के वा कीट इस प्रसिद्ध के नाम हैं; सब तैजस सुवर्ण रजत आदि लोहं, "वा लोहं कहलाता है; जो लोह का विकार वा लोह की बनी वस्तु है उसे कुशी वा फाल कहते हैं ॥ ९९ ॥ क्षारः, काचः, ये २ कांच के नाम हैं; चपलः, रसः, सूतः, पारदः, "और भी पारतः, वा पारः" ये ४ पारा के नाम हैं; जो महिष की सींग है उसे गवलं कहते हैं; अभ्रकं, गिरिजामलं, ये २ अभ्रक के नाम हैं; "गिरिजं, अमलं", इस मत में ३ हैं, ॥ १०० ॥ स्रोतोऽञ्जनं, सौवीरं, कापोताञ्जनं, "और कपोताञ्जनं" यामुनं, ये ४ सुरमा के नाम हैं; "(सुवीरदेशे भवं सौवीरं)"- तुत्थाञ्जनं, "और भी तुत्थं" शिखिग्रीवं, वितुन्नकं, मयूरकं, ॥ १०१ ॥

रसोंत-वा रसाञ्जन ।	स स न कर्परी दार्विका (क्वाथोद्भवं) तुत्यं न रसाञ्जनम् । न न रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं
गन्धक ।	१पु पु गन्धाश्मनि (तु) गन्धकः ॥ १०२ ॥ पु सौगन्धिक-(श्च)
काला सुरमा ।	स २स स चक्षुष्या-कुलाल्यौ (तु) कुलत्थिका ।
अञ्जन विशेष ।	न न न न रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ॥ १०३ ॥
हरताल ।	न न न न न पिञ्जरं पीतकं ताल मा(ल) (द्वे) हरितालके ।
शिलाजित ।	न ३न न ४न न गैरेय मर्थ्यं गिरिज मश्मज (च) शिलाजतु ॥ १०४ ॥
गन्धरस ।	पु पु पु पु पु पु बोल-गन्धरस-प्राण-पिण्ड-गोप-रसाः (समाः) ।

१–न. २–ली. ३ अ–. ४ अ–.

कर्परी, "खर्परी, वा खर्परं" ये ५ तूतिया के वा उसके अंजन के नाम हैं, वा मोचरस इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(तुदति अक्षिरोगान् तुत्यं)" दार्विका अर्थात् दारु हरदी का हुआ क्वाथ "समभाग बकरी के दूध से संस्कार किया" तुत्यं तुत्याञ्जनं, रसांजनं कहलाता है, "दार्विका भी" तुत्थं रसाञ्जनं, रसगर्भं, तार्क्ष्यशैलं, ये ४ रसोंत वा एक प्रकार के अञ्जन वा कज्जल के नाम हैं; गन्धाश्मा, गन्धकः, "और गंधिकः" ॥ १०२ ॥ सौगन्धिकः, "वा सुगंधिकः" ये ३ गन्धक के नाम हैं; चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका, "और कुलत्था, उसी प्रकार कुलं" ये ३ तूतिया विशेष वा नीला सुरमा वा काजल के नाम हैं, "(चक्षुर्विहिता चक्षुष्या, कुले तिष्ठति लत्प्रतिकृतिः कुलत्थिका)" रीतिपुष्पं, पुष्पकेतु, "पौष्पकं, और पुष्पकं" कुसुमाञ्जनं "और भी पुष्पाञ्जनं" ये ४ जलाये हुये पीतल से उत्पन्न जस्ता के फूल के नाम हैं, ॥ १०३ ॥ पिञ्जरं, पीतकं, "और भी पीतनं" तालं, आलं, "वा अलं और भी नालं" हरितालकं, ये ५ हरताल के नाम हैं; गैरेयं, अर्थ्यं, गिरिजं, अश्मजं, शिलाजतु, ये ५ शिलाजतु के वा शिलाजित इस प्रसिद्ध के नाम हैं; "(अर्थ्यते रसायनार्थिभिरर्थ्यम्, शिलायां अवल्लाज्जातकृतिस्त्वाच्छिलाजतु)" ॥ १०४ ॥ बोलः, गन्धरसः, "वा रसगन्धः", प्राणः, पिण्डः, गोपः, "और गोसः, और भी पिण्डगोसः" रसः, "वा शशः, और भी गोसशशः" ये ६ गन्धरस के नाम हैं; ।

	पु पु पु
समुद्रफेन ।	हिण्डीरो ऽब्धिकफः फेनः
	न न
सेन्दुर ।	सिन्दूरं नागसम्भवम् ॥ १०५ ॥
	न न न १न
सीसा ।	नाग-सीसक-योगेष्ट-वप्राणि न न
रांग ।	त्रपु पिच्चटम् ।
	न न
	रङ्ग-वंगे पु २पु
रूई ।	(प्यथ) पिचु-स्तूलो न
कुसुम ।	(ऽथ) कमलोत्तरम् ॥ १०६ ॥
	न न न
	(स्यात्) कुसुंभं वह्निशिखं महारजन (मित्यपि) ।
	पु पु
कम्बल ।	मेषकम्बल ऊर्णायुः न ३न
खरगोश-वा चौघड़ा का रोम ।	शशोर्णं शशलोमनि ॥ १०७ ॥
	न न ४न
सहत ।	मधु चौद्रं माक्षिका (दि) न न
मोम ।	मधूच्छिष्टं (तु) सिक्थकं
	स म स स
मैनशिर ।	मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ॥ १०८ ॥
	स स स
नेपाली मैनशिर ।	नेपाली कुनटी गोला पु पु
यवाखार ।	यवक्षारो यवाग्रजः ।

१—प्र. २ तूल. ३—न. ४—क.

हिण्डीरः, "डिण्डीरः, वा पिण्डीरः, और भी डिण्डिरः" अब्धिकफः, "वा समुद्रफेनः" फेनः ये ३ समुद्रफेन के नाम हैं; सिन्दूरं, नागसम्भवम्, ये २ सेंदुर के नाम हैं, "(नागात् सीसात्सम्भवो ऽस्य नागसम्भवम्)" ॥ १०५ ॥ नागं, सीसकं, योगेष्टं, वप्रं, "वर्द्धं, यह मुकुट का अर्थ, है", और भी त्रप्रं ये ४ सीसा के नाम हैं, त्रपु, पिच्चटं, रंगं, वंगं, ये ४ वंग—कथीर—वा रांग, इस प्रसिद्ध के नाम हैं; पिचुः, तूलः, "और पिचुलः, और भी पिचुतूलः, वा तूलपिचुः" ये २ कपास या रूई के नाम हैं, कमलोत्तरम्, ॥ १०६ ॥ कुसुंभं, वह्निशिखं, महारजनम्, ये ४ कुसुम के नाम हैं, "(रज्यते यस्यापनेन रजनं, महच्च तद्रजनं च महारजनम्)" मेषकम्बलः, ऊर्णायुः, ये २ कम्बल के नाम हैं, शशोर्णं, शशलोम, ये २ खरगोश के लोम वा रोंओं के नाम हैं, ॥ १०७ ॥ मधु, चौद्रं, माक्षिकं, ये ३ मधु—वा सहत इस प्रसिद्ध के नाम हैं, मधूच्छिष्टं, सिक्थकं, ये २ मोम के नाम हैं, "(मधुना उच्छिष्यते मधूच्छिष्टम्)" मनःशिला, "उसी प्रकार मनःसिला, और भी पुं- मनःशिलः" मनोगुप्ता, मनोह्वा, "और मनोज्ञा" नागजिह्विका, ये ४ मनःशिला या मैनशिर के या खानि से निकले गये विष के नाम हैं, ॥ १०८ ॥ नेपाली, कुनटी, "वाले पढ़ते हैं कुरटी, वा कलटी", गोला, ये ३ नेपाल देश में उत्पन्न मनःशिला के नाम हैं, किसी के मत में ७ मनःशिला के हैं, यवक्षारः, यवाग्रजः, ।

	पु पाक्यो।
सज्जी।	पु पु पु (१थ) सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ॥ १०९ ॥
सोंचर।	न न सौवर्चलं (स्याद्) रुचकं
वंशलोचन।	स स त्वक्क्षीरा वंशरोचना।
श्वेतमिर्च शोभाञ्जन।	न न शिग्रुजं श्वेतमरिचं
ऊख की जड़ि।	न मोरटं (मूलमैक्षवम्) ॥ ११० ॥
पिपरा मूल।	न न १न ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटिकाशिर (इत्यपि)।
जटामासी।	स पु गोलोमी भूतकेशो (ना)
पतङ्ग।	न न पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ॥ १११ ॥
मिले सोंठि-मिर्च-पीपरि।	न न न त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं
फला।	स न त्रिफला (तु) फलत्रिकम्।
	॥ इति वैश्यवर्गः ॥

१—स.

पाक्यः ये ३ जवाखार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, सर्जिकाक्षारः, "वा सर्जिकाक्षारः, और भी सर्जिका और क्षारः" कापोतः, सुखवर्चकः, ये ३ क्षारभेद वा सज्जीखार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १०९ ॥ सौवर्चलं, रुचकं, ये २ क्षार के भेद वा सोंचरखार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ये ५ भी सर्ज्जिकाक्षार के भेद हैं, "यह सुभूति आदि का मत है" त्वक्क्षीरा, "वंशलोचना, यह हेमचन्द्र का मत है" वंशरोचना, ये २ वंशलोचन के नाम हैं; शिग्रुजं, श्वेतमरिचं, ये २ सैाभांजन के बीज के नाम हैं, ऊख वा इक्षु के मूल को मोरटं कहते हैं; (एकं) ॥ ११० ॥ ग्रन्थिकं, पिप्पलीमूलं, चटिकाशिरः, (—र्) "और चटकाशिरः (स्) वा पुं॰ चटिकाशिरः, और भी चटका और शिरः" ये ३ पिप्पलीमूल के वा पिपरामूल इस प्रसिद्ध के नाम हैं, गोलोमी, भूतकेशः, ये २ जटामासी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पत्राङ्गं, रक्तचन्दनं, ये २ रक्तचन्दन सदृश रक्तसार के वा पतङ्ग इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ १११ ॥ त्रिकटु, त्र्यूषणं, "वा त्र्युषणं" व्योषं, ये ३ सोंठि पीपरि और मिरच इन के मिले हुये के नाम हैं, त्रिफला, "और त्रिफली, वा तृफला" फलत्रिकं, ये २ हरड़—अंवरा—बहेरा—के मिलेजुले के नाम हैं, ॥ ११२ ॥

॥ इति वैश्यवर्गः ॥

॥ अथ दशमवर्गः ॥

शूद्र ।	शूद्रा[पु] (श्चा) ऽवरवर्णा[पु] (श्च) वृषला[पु] (श्च) जघन्यजाः[पु]।
चण्डाल से लेकर उग्र तक ।	(आचण्डालात्तु) संकीर्णा[पु] (अम्बष्ठ करणादयः) ॥ १ ॥
शूद्र स्त्री और वैश्य से उत्पन्न ।	(शूद्राविशो स्तु) करणो[पु]
वैश्य स्त्री और ब्राह्मण से उत्पन्न ।	ऽम्बष्ठो[पु] (वैश्याद्विजन्मनोः) ।
शूद्र स्त्री क्षत्री से उत्पन्न ।	(शूद्रा क्षत्रिययोर्) उग्रो[पु]
क्षत्री स्त्री और वैश्य से उत्पन्न ।	मागधः[पु] (क्षत्रियाविशोः) ॥ २ ॥
वैश्य स्त्री और क्षत्री से उत्पन्न ।	माहिष्यो[पु] (ऽर्य्याक्षत्रिययोः)
क्षत्रिया स्त्री और शूद्र से उत्पन्न ।	क्षत्ता[१पु] (ऽर्य्याशूद्रयोः सुतः) ।
ब्राह्मणी स्त्री और क्षत्रिय से उत्पन्न ।	(ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्) सूतः[पु]
ब्राह्मणी में वैश्य से उत्पन्न ।	(स्याताम्) वैदेहको[पु] (विशः) ॥ ३ ॥

१–त्तृ.

शूद्रः, अवरवर्णः, वृषलः, जघन्यजः, ये ४ शूद्र के नाम हैं. ब्राह्मणी में शूद्र से उत्पन्न चण्डाल है चण्डाल पर्यन्त वक्ष्यमाण अम्बष्ठ करण आदि, "आदि पद से उग्र आदि ग्रहण किये जाते हैं" संकीर्णाः, प्रतिलोम और अनुलोम से उत्पन्न होने से मिश्राः कहलाते हैं; (एकं) ॥ १ ॥ शूद्र जाति की स्त्री और वैश्य से उत्पन्न सुतलेखन वृत्तिवाला करणः कहलाता है, वैश्या स्त्री और ब्राह्मण से उत्पन्न सुत वैद्यक वृत्तिवाला अम्बष्ठः कहलाता है, शूद्रा स्त्री और क्षत्रिय से उत्पन्न सुत शस्त्रवृत्ति रखनेवाला उग्रः कहलाता है, क्षत्रिया स्त्री में वैश्य से उत्पन्न राजा आदि की स्तुतिपाठ करनेवाला मागधः कहलाता है (एकैकं) ॥ २ ॥ अर्य्या वैश्या स्त्री में क्षत्रिय से उत्पन्न सुतमाहिष्यः कहलाता है, और ज्योतिष–शकुनशास्त्र–और स्वरशास्त्र आदि इस की जीविका है, अर्य्या क्षत्रिया स्त्री में शूद्र से उत्पन्न पुत्र क्षत्ता कहलाता है, पाप और धन का संचय करना इसकी वृत्ति है, ब्राह्मणी में क्षत्रिय से उत्पन्न पुत्र सूतः कहलाता है, उस को गजबन्धन–घोड़ों का चलाना–गाड़ी–रथ आदि की सारथी आदि कर्म जीविका है, ऐसी ब्राह्मणी में वैश्य से उत्पन्न वैदेहकः कहलाता है, चौंसठि कलाकर्म की शिक्षा आदि उसकी जीविका है, "(पण्यां गजानां राज्ञां च कुर्यात्सद्वृत्तादिच्छया। उपजीव्यन्तु तास्त्वियेति)" ॥ ३ ॥

शूद्र और वैश्य स्त्री में वैश्य और क्षत्रिय से उत्पन्न।	रथकार (स्तु माहिष्यात् करण्यां यस्य सम्भवः)।
ब्राह्मणी में शूद्र से उत्पन्न।	(स्याच्) चण्डाल (स्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः)॥४॥
चितेरा आदि।	कारुः शिल्पी
सब का सजातीय समूह।	(संहते स्तेद्वयोः) श्रेणिः (सजातिभिः)।
उन कुलों के प्रधान।	कुलकः (स्यात्) कुलश्रेष्ठी
माली।	मालाकार (स्तु) मालिकः ॥ ५ ॥
कुम्भार।	कुंभकारः कुलालः (स्यात्)
राज।	पलगण्ड (स्तु) लेपकः।
कोरी-वा जोलाहा	तन्तुवायः कुविन्दः (स्यात्)
दर्जी।	तुन्नवाय (स्तु) सौचिकः ॥ ६ ॥
रंगसाज।	रङ्गाजीव श्चित्रकरः
शिकिलीगर।	शस्त्रमार्जो ऽसिधावकः।
चमार।	पादूकृ च्चर्मकारः (स्याद्)
लोहार।	व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
सोनार।	नाडीन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारके।

१—न्. २—न्. ३ चि—. ४—त्. ५ च—.

करण्यां अर्थात् शूद्र और वैश्य की कन्या में माहिष्यात् अर्थात् वैश्य और क्षत्रिय के लड़के से उत्पन्न रथकारः कहलाता है, इस की जीविका रथकर्म और ईन्धन आदि से, है, ब्राह्मणी में वृषल अर्थात् शूद्र से उत्पन्न चण्डालः, "और भी चाण्डालः", कहलाता है, मृतक वस्त्र और निन्द्य मांस से इस की जीविका है, ॥ ४ ॥ कारुः, "उसी प्रकार स्त्री॰ कारुः" शिल्पी, ये २ चित्रकार आदि के नाम हैं, (तक्षाच तंतुवाय श्च नापितो रजकस्तथा। पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनोमता इत्यपि)" उन सजातियों के समूह को श्रेणिः, कहते हैं, "और भी स्त्री॰ श्रेणी" कुलकः, "वा कुलिकः" कुलश्रेष्ठी, ये २ शिल्पियों के कुल में प्रधान के नाम हैं, उसी प्रकार कुलः, और श्रेष्ठी, अब कारीगढ़ और शिल्पियों के भेद कहते हैं; मालाकारः, मालिकः, ये २ माली इस प्रसिद्ध के नाम हैं; "(पुष्पमालापण्यमस्यमालिकः)" ॥ ५ ॥ कुम्भकारः, कुलालः, ये २ कुम्भार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पलगण्डः, लेपकः, ये २ राज के वा ईंट के कारीगढ़ के नाम हैं; तंतुवायः, "और तन्त्रवायः वा तन्द्रवायः, और भी तन्त्रवापः" कुविन्दः, "वा कुपिन्दः", ये २ वस्त्र बनाने वाले के वा जोलाहा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तुन्नवायः, सौचिकः, ये २ दर्जी के नाम हैं; ॥ ६ रङ्गाजीवः, चित्रकरः, ये २ चित्रकार वा चितेरा के नाम हैं, "(रङ्गं श्वेतपीतरक्तादिकमाजीवति-रङ्गाजीवः)" शस्त्रमार्जः, असिधावकः, ये २ शिकिलीगढ़ इस प्रसिद्ध के नाम हैं; पादूकृत्, "वा पादुकृत्" चर्मकारः "और भी चर्मरः", ये २ चमार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(पादूः पादत्राणि करोतीति पादूकृत्)" व्योकारः, लोहकारकः, ये २ लोहार इस प्रसिद्ध के नाम हैं, व्यो यह अव्यय लोह बीज वाची श्रीभोज के मत में है ॥ ७ ॥ नाडिन्धमः, स्वर्णकार, कलादः, "वा कणादः" रुक्मकारकः, ये ४ स्वर्णकार के वा सोनार इस प्रसिद्ध के नाम कारः

चुरिहार ।	(स्याच्) शाङ्खिकः[१पु] काम्बविकः[पु]
ठठेर ।	शौल्विक[पु] स्ताम्रकुट्टकः[२पु] ॥ ८ ॥
बढ़ई ।	तक्षा[३पु] (तु) वर्द्धकि[पु] स्त्वष्टा[४पु] रथकार[पु] (श्च) काष्ठतट्[५पु] ।
गांव का बढ़ई ।	(ग्रामाधीनो) ग्रामतक्षः[पु]
प्रधान बढ़ई ।	कौटतक्षो[पु] (ऽनधीनकः) ॥ ९ ॥
नाऊ वा नाई ।	क्षुरि[६पु]-मुण्डि[७पु]-दिवाकीर्त्ति[पु]-नापिता[पु]-ऽन्तावसायिनः[८पु] ।
धोबी ।	निर्णेजकः[पु] (स्याद्) रजकः[पु]
कलवार ।	शौण्डिको[पु] मण्डहारकः[पु] ॥ १० ॥
गड़ेरिया ।	जाबालः[पु] (स्याद्) अजाजीवो[पु]
पण्डा वा पुजारी ।	देवाजीवो[९पु] (तु) देवलः[पु] ।
इन्द्रजाल ।	(स्यान्) माया[स] शाम्बरी[स]
इन्द्रजाली ।	मायाकार[पु] (स्तु) प्रातिहारिकः[पु] ॥ ११ ॥
नट ।	शैलालिन-(स्तु)[१०पु] शैलूषा[पु] जायाजीवाः[पु] कृशाश्विनः[११पु] ।
	भरता[पु] (इत्यपि) नटाश्[पु]
कथक ।	चारणा-(स्तु)[पु] कुशीलवाः[पु] ॥ १२ ॥

१ शां—. २ ता—. ३—न्. ४ त्वष्टृ. ५—द्. ६—न्. ७—न्. ८—न्. ९—न्. १०—न्. ११—न्.

शांखिकः, काम्बविकः, ये २ शंखसीपी आदि के भूषण बनाने वाले के नाम हैं, "चुरिहार प्रसिद्ध है" शौल्विकः, ताम्रकुट्टकः, "और सौल्विकः" ये २ ताम्रादि के भूषण बनाने वाले या ठठेर के नाम हैं, "(शुल्वं ताम्रं तद् घट्टनं शिल्पमस्य शौल्विकः)" ॥ ८ ॥ तक्षा, वर्द्धकिः, त्वष्टा, रथकारः, काष्ठतट्, ये ५ बढ़ई के नाम हैं, "(काष्टं वर्द्धयति छिनत्ति इति वर्द्धकिः)" तक्षाणा-त्वष्टारो, "(काष्टं तक्ष्णोतीति काष्टतट्)" काष्टतक्षो, जो ग्रामाधीन तक्षा है वह ग्रामतक्षः कहलाता है, "गांव का बढ़ई" अनधीनकः अर्थात् स्वाधीन जो तक्षा है वह कौटतक्षः कहलाता है, (एकैकम्,) ॥ ९ ॥ क्षुरी, मुण्डी, दिवाकीर्त्तिः, नापितः, अन्तावसायी, ये ५ नापित या नाई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, निर्णेजकः, रजकः, "स्त्री॰ रजकी" ये २ धोबी के नाम हैं, शौण्डिकः, मण्डहारकः, ये २ कलाल या कलवार के नाम हैं, "(शुण्डा सुरासापण्यमस्य शौण्डिकः)" ॥ १० ॥ जाबालः, अजाजीवः, ये २ गड़ेरिया के नाम हैं, देवाजीवो, "या देवाजीवः" देवलः, ये २ पण्डा या पुजारी के नाम हैं, "(देवं लक्षणया तत् स्वंलाति गृह्णातीति देवलः)" माया, शांबरी, "और साम्बरी या शांबरी", ये २ इन्द्रजाल के नाम हैं, "(शम्बराख्यस्यासुरस्येयं शाम्बरी)" मायाकारः, और मायावी (न्) या मायी (न्) प्रातिहारिकः, "और प्रतिहारः, प्रातिहारः, या प्रातिहारकः" ये २ इन्द्रजालिक के नाम हैं, ॥ ११ ॥ शैलाली, शैलूषः, जायाजीवः, कृशाश्वी, भरतः, "और भारतः" नटः, ये ६ नट के नाम हैं, "(नटति नृत्यतीति नटः)" चारणः, कुशीलवः, ये २ कथक के या भांड़ के नाम हैं, "(कुत्सितं शीलमस्य कुशीलवः)" ॥ १२ ॥

मृदङ्ग बजाने वाला ।	मार्दङ्गिका मौरजिकाः
ताड़ी बजाने वाला ।	पाणिवादा-(स्तु) पाणिघाः ।
बांसुड़ी बजाने वाला ।	वेणुध्माः (स्युर्) वैणविका
वीणा बजाने वाला ।	वीणावादा-(स्तु) वैणिकाः ॥ १३ ॥
चिड़ीमार ।	जीवान्तकः शाकुनिको
जालिक ।	(द्वौ) वागुरिक जालिकौ ।
कसाई ।	वैतंसिकः कौटिक-(श्च) मांसिक-(श्च समं त्रयम्) ॥ १४ ॥
मजूर ।	भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिको (ऽपि सः) ।
संदेसिहा ।	वार्तावहो वैवधिको
बोझिआ ।	भारवाह-(स्तु) भारिकः ॥ १५ ॥
नीच ।	विवर्णः पामरो नीचः प्राकृत-(श्च) पृथग्जनः ।
	निहीनो ऽपसदो जाल्मः क्षुल्लक-(श्चे) तर-(श्च सः)॥१६॥
दास-वा टहलुआ ।	भृत्ये दासेर-दासेय दास-गोप्यक-चेटकाः ।
	नियोज्य-किङ्कर-प्रैष्य-भुजिष्य-परिचारकाः ॥ १७ ॥

१—ज. २ क—. ३ द्व—.

मार्दंगिकाः, मौरजिकाः, "उसी प्रकार मौरविकाः", ये २ मृदंग बजाने में चतुर के वा मृदंगी के नाम हैं, पाणिवादाः, पाणिघाः, ये २ जो हाथ से मृदंग आदि की ध्वनि का अनुकरण करते हैं उन के वा हाथ के तालधारियों के नाम हैं, वेणुध्माः, वैणविकाः, ये २ वंशी बजानेवाले के नाम हैं, वीणावादाः, वैणिकाः, ये २ वीणा बजानेवाले के नाम हैं ॥ १३ ॥ जीवान्तकः, "वा जीवन्तिकः" शाकुनिकः, ये २ पक्षियों के मारनेवाले के वा चिड़ीमार के नाम हैं, वागुरिकः, जालिकः ये २ जो जाल से मृगों को बान्धते हैं उन के नाम हैं, "(वागुरामृगबन्धनीतया चरति वागुरिकः)", वैतंसिकः, कौटिकः, मांसिकः, ये ३ जो मांस विक्रय से जीते हैं उन के वा कसाई इस प्रसिद्ध के नाम हैं, "(वीतंसेन मृगपक्ष्यादि बन्धनोपायेन चरति वैतंसिकः, मांसं पण्यमस्य मांसिकः,)" ॥ १४ ॥ भृतकः, भृतिभुक्, कर्मकरः, वैतनिकः, ये ४ वेतन से जो जीते हैं "वा चाकर मजूर इस प्रसिद्ध के नाम हैं" "(भृतिं वेतनं भुंक्ते भृतिभुक्)" वार्त्तावहः, वैवधिकः, "और विवन्धिकः" ये २ वार्त्ता—वा सन्देश के ले जानेवाले के नाम हैं, भारवाहः, भारिकः, "उसी प्रकार भारी (न) ये २ बोझा लेजानेवाले के नाम हैं ॥ १५ ॥ विवर्णः, पामरः, नीचः, प्राकृतः, पृथक्जनः, निहीनः, अपसदः, "वा अपशदः" जाल्मः, क्षुल्लकः, "उसी प्रकार खुल्लकः", इतरः, ये १० नीच के नाम हैं, ॥ १६ ॥ भृत्यः, दासेरः, दासेयः, दासः, "वा दाशः, स्त्री॰ दासी (—शी)" गोप्यकः, "और गोप्यः" चेटकः, "वा चेटः, और भी चेडः, चेडकः, स्त्री॰ चेटिका, चेटी, चेडी", नियोज्यः, किङ्करः, "स्त्री॰ किङ्करा, वा किङ्करी" प्रैष्यः, "और भी प्रेषः, और प्रेष्यः" भुजिष्यः, परिचारकः, ये ११ दास—वा टहलुआ के नाम हैं, ॥ १७ ॥

अन्य का पलुआ।	पु पु पु पु पराचित-परिस्कन्द-परजात-परैधिताः ॥ १८ ॥
सुस्त।	पु १पु पु पु पु पु मन्द स्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतको ऽलसो ऽनुष्णः।
चतुर वा तेज।	पु पु पु २पु पु पु दक्षे (तु) चतुर-पेशल-पटवः सूत्थान उष्ण-(श्च) ॥१९॥
चाण्डाल।	पु पु पु पु पु चण्डाल-प्लव-मातङ्ग-दिवाकीर्त्ति-जनङ्गमाः।
	पु पु ३पु पु पु निषाद-श्वपचा वन्तेवासि-चाण्डाल-पुक्कसाः ॥ २० ॥
म्लेच्छ भेद।	पु पु पु पु (भेदाः) किरात-शबर-पुलिन्दा म्लेच्छ (जातयः)।
व्याधा।	पु पु पु ४पु व्याधो मृगवधाजीवो मृगयु-र्लुब्धको (ऽपि सः) ॥ २१ ॥
कुक्कुर।	पु पु पु पु कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः।
	पु पु ५पु शुनको भषकः श्वा (स्याद्)
पागल कुत्ता।	पु अलर्क-(स्तु स योगितः) ॥ २२ ॥
सिकारी कुत्ता।	पु (श्वा) विश्वकद्रु-(र्मृगया कुशलः)
कुतिया।	स स सरमा शुनी।

१ तु–. २ पटु. ३ अ–सिन्. ४ लु–. ५ श्वन्.

पराचितः, "पराजितः भी, परैराजीयते स्म" परिस्कन्दः, "उसी प्रकार परिष्कन्दः, परिष्कचः, परिस्कन्दः, परिस्कचः" परजातः, "और परजितः" परैधितः, ये ४ दूसरे से पाले हुये के नाम हैं, "(परैराचीयते वर्ध्यते पराचितः)" ॥ १८ ॥ मन्दः, तुन्दपरिमृजः, "वा तुन्दपरिमार्जः" आलस्यः, शीतकः, अलसः, अनुष्णः, ये ६ आलसी के नाम हैं, "(अलसमस्त्यस्य अलसः, अलस एव आलस्यः)" दक्षः, चतुरः, पेशलः, "वा पेसलः, और पेषलः", पटुः, सूत्थानः, उष्णः, ये ६ दक्ष के वा तेज के नाम हैं, "(उष्णत्वं शीघ्रकारित्वमस्यास्तीत्युष्णः)" ॥ १९ ॥ चण्डालः, प्लवः, मातङ्गः, दिवाकीर्तिः, जनङ्गमः, "और जलङ्गमः भी" निषादः, "और निशादः भी" श्वपचः, "उसी प्रकार श्वपक् (च्), श्वपाकः" अन्तेवासी, चाण्डालः, पुक्कसः, "और भी पुक्कशः, पुक्कषः" ये १० चाण्डाल के नाम हैं, और इस में भीतरी भेद कुछ है वह आदर नहीं किया गया, ॥ २० ॥ किरातः, शबरः, पुलिन्द, "वा पुलिन्दः" ये ३ म्लेच्छ जाति चाण्डालों के भेद हैं, "(किरति शरान् किरातः)" ये सब वनों में रहते हैं, व्याधः, मृगवधाजीवः, मृगयुः, लुब्धकः, ये ४ व्याधा के नाम हैं, "(विध्यति मृगान् व्याधः)" ॥ २१ ॥ कौलेयकः, सारमेयः, कुक्कुरः, "और कुक्कुरः, वा कुकुरः" मृगदंशकः, शुनकः, "शुनः, और शुनिः" भषकः, श्वा, "और भी श्वानः" ये ७ कुत्ते के नाम हैं, सयोगितः अर्थात् प्रयोग से मतवाला या पागल कुत्ता अलर्कः, "उसी प्रकार अलकः, कहलाता है" (एकं) ॥ २२ ॥ जो मृगया अर्थात् शिकार करने में चतुर है वह कुत्ता विश्वकद्रुः कहलाता है, (एकं) सरमा, शुनी, ये २ कुतिया के नाम हैं;।

	पु पु पु
गांव का सूअर ।	विट्चरः शूकरो ग्राम्यो
	पु
बकरा-वा युवा पशु ।	वर्क्कर-(स्तरुणः पशुः) ॥ २३ ॥
	न न पु स
सिकार ।	आच्छोदनं मृगव्यं (स्याद्) आखेटो मृगया (स्त्रियाम्) ।
	१पु
दहिने अङ्ग में घाव वाला मृग ।	(दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्) दक्षिणेर्मा (कुरङ्गकः) ॥ २४ ॥
	२पु ३पु पु पु पु पु
चोर ।	चौरै-कागारिक-स्तेन-दस्यु तस्कर-मोषकाः ।
	४पु ५पु पु पु
	प्रतिरोधि-परास्कन्दि-पाटच्चर-मलिम्लुचाः ॥ २५ ॥
	स न न न
चोरी ।	चौरिका स्तैन्य-चौर्य्ये (च) स्तेयं न
चोरी का माल ।	पु लोप्त्रं (तु तद्धनम्) ।
व्याधों की सामग्री।	वीतंस-(स्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम्) ॥ २६ ॥
	पु न
फन्दा ।	उन्माथः कूटयन्त्रं (स्याद्) स स
जाल ।	वागुरा मृगबन्धनी ।
	न पु स पुसन पु
रस्सी ।	शुल्वं वराटकः (स्त्री तु) रज्जु (स्त्रिषु) वटी गुणः ॥ २७ ॥

१—न. २—र. ३ ऐ—. ४—न. ५—न.

विट्चरः, शूकरः, ग्राम्यः, ये ३ सूअर के नाम हैं, वा जो ग्राम्य शूकर है वह विट्चरः कहलाता है, (एकं) "गांव का सूअर यह प्रसिद्ध है" जो तरुण पशु अजा आदि है वह वर्क्करः, "स्त्री॰ वर्क्करी, बकरा यह प्रसिद्ध वा युवा पशु मात्र का नाम है"; ॥ २३ ॥ आच्छोदनं, मृगव्यं, आखेटः, मृगया, ये ४ सिकार इस प्रसिद्ध के नाम हैं; लुब्धयोगात् अर्थात् लुब्धक के सम्बन्ध से दक्षिणारुः दक्षिण पार्श्व में अरुः अर्थात् घाव है जिसके वह कुरंगकः दक्षिणेर्मा कहलाता है, (एकं), द्विव॰ दक्षिणेर्माणौ, ॥ २४ ॥ चौरः, "और भी चोरः, स्त्री॰ चौरी" ऐकागारिकः, "स्त्री॰ ऐकागारिकी" स्तेनः, "और भी स्तैन्यः" दस्युः, तस्करः, मोषकः, प्रतिरोधी, "और प्रतिरोधकः", परास्कन्दी, पाटच्चरः, "उसी प्रकार पटच्चरः" मलिम्लुचः, ये १० चोर के वा डाकू के नाम हैं; ॥ २५ ॥ चौरिका, "और भी चोरिका" स्तैन्यं, चौर्य्यं, स्तेयं, ये ४ चोरी के नाम हैं, "(चौरस्य भावः चौरिका)" चोर के धन को लोप्त्रं कहते हैं, "और लोत्रं, वा लोतं", (एकं) मृग और पक्षियों के बान्धने के निमित्त जो उपकरण पाश और जाल आदि है वह वीतंसः कहलाता है, "और भी वितंसः" ॥ २६ ॥ उन्माथः, कूटयन्त्रं, ये २ मृग और पक्षियों के बन्धन के अर्थ जो छल से यन्त्र स्थापन करते हैं उसके नाम हैं, वा फन्दा कहलाता है; वागुरा, मृगबन्धनी, ये २ मृगबन्धन जाल के नाम हैं, शुल्वं, "शुल्बं, वा शुल्लं, और भी पुं॰ शुल्बः, और स्त्री॰ शुल्वा वा शुल्बी" "उसी प्रकार सुम्बं," वराटकः, "वा वराटः, मतान्तर में वटाकरः" रज्जुः, वटी, "उसी प्रकार वटीगुणः", गुणः, ये ५ रस्सी के नाम हैं, ॥ २७ ॥

	न न
रहट-वा पुरवट ।	उद्घाटनं घटीयन्त्रं (सलिलोद्वाहनं प्रहेः) ।
	१पुन पु
राछ ।	(पुंसि) वेमा वायदण्डः न पु
सूत ।	स २स सूत्राणि (नरि) तन्तवः ॥ २८ ॥
बीनना ।	वाणि-र्व्यूतिः (स्त्रियौ तुल्ये) न
लीपना आदि ।	स स पुस्तं (लेप्यादिकर्म्मणि) ।
गुड्डई-गुड्डुआ ।	पाञ्चालिका पुत्रिका (स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता) ॥ २९ ॥
	पु पु स स
प्यटाढ़ी ।	पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा स
बहंगी ।	३स (ऽथ) विहङ्गिका ।
	भारयष्टिस् न पु
शिकहर वा छींका ।	(तदालम्बि) शिक्यं काचो स
जूता ।	(ऽथ) पादुका ॥ ३० ॥
	स ४स
	पादू रुपानत् (स्त्री) स
मोजा ।	(सैवा) ऽनुपदीना (पदायता) ।
	स स स
चाम की रस्सी ।	नद्ध्री वद्ध्री वरत्रा (स्याद्) स
जेरवन्द ।	(अश्वादे स्ताड़नी) कशा ॥ ३१ ॥

१—न. २ व्यू—. ३—ष्टि. ४ उ—ह.

प्रहेः अर्थात् कूप से जिस यन्त्र से जल ऊपर को निकालते हैं उस यन्त्र के "वा रहट—डोल—मोट—वा काष्ठ आदि के बने जल उठाने के पात्र के" उद्घाटनं, घटीयन्त्रं, ये २ नाम हैं, वेमा, "उसी प्रकार वेमः, या वेम" वायदण्डः, "वा वापदण्डः" ये २ वस्त्र बीनने के दण्ड के या जोलाहा के राछ वा असबाव के नाम हैं "(वयतितं तूननेन इति वेमा, वेमानौ, ऊयते इति वायः,वानं तदर्थो वायदण्डः)" सूत्राणि, तंतवः, "एक वचन सूत्रं, तन्तुः, और भी सूत्रतन्तुः" ये २ सूत इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ २८ ॥ वाणिः, "और वेणिः" व्यूतिः, "वा व्युतिः" "(विशिष्टा ऊतिर्व्यूतिः)" ये २ बीनने के नाम हैं, लेप्यं अर्थात् मट्टी से पुत्तलिका आदि करना, आदि पद से काष्ठ की पुत्तलिका कर्म्म का ग्रहण है, उसका पुस्तं यह एक नाम है, "(कहा है कि, मृदा वा दारुणा वा ऽथ वस्त्रेणाप्यथ चर्म्मणा । लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते इति)" वस्त्र दन्त आदि से बनाई पुत्रिका पाञ्चा लिका "और पञ्चालिका" कहलाती है, "पञ्चभिर्वर्णैरल्यते भूष्यते इति पञ्चालिका" ॥ २९ ॥ पिटकः, पेटकः, पेटा, "पेड़ा, वा पोड़ा" मञ्जूषा, "याञ्जे पद्यते मञ्जूषा" ये ४ सन्दूक वा पेटाढ़ी के नाम हैं, विहंगिका, "वा विहङ्गमाः" भारयष्टिः, ये २ खूंटी वा बहंगी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, शिक्यं, काचः, "उसी प्रकार शिक्(च) ये २ छींका वा शिकहर इस प्रसिद्ध के नाम हैं, पादुका, ॥ ३० ॥ पादूः, उपानत्, ये ३ पादत्राण वा जूता—जोड़ा इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वही उपानत जो पाव में बंधी है उसे अनुपदीना कहते हैं वा मोजा बूट इस प्रसिद्ध के नाम हैं, नध्री, वध्री, वरत्रा, "और वाद्ध्री, वा वद्ध्री" ये ३ चाम की बनी रस्सी—वा बाधी—वा चर्म्मबन्धनी—इस प्रसिद्ध के नाम हैं,अश्व आदि के ताड़नी रस्सी कशा, "और भी कषा, वा कसा" कहलाती है, वा जेरवन्द इस प्रसिद्ध के या चाबुक के नाम हैं, आदि पद से ऊंट—गदहा, बैल आदि का ग्रहण है, ॥ ३१ ॥

इतर वा नीचवीणा	स स स चाण्डालिका (तु) कण्डोलवीणा चाण्डालवल्लकी ।
सोनार का कांटा ।	स स नाराची (स्याद्) एषणिका
कशौटी ।	पु पु पु शाण-(स्तु) निकष: कष: ॥ ३२ ॥
रेती ।	पु १पु व्रश्चन: पत्रपरशु:
सलाई ।	स स ईषिका तूलिका (समे) ।
धातुगलानेकीघरिया	स स तैजसावर्त्तनी मूषा
भाथी ।	स स भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥
बर्मा ।	स स आस्फोटनी वेधनिका
कतरनी	स स कृपाणी कर्त्तरी (समे) ।
बांकी ।	पु २पु वृक्षादनो वृक्षभेदी
टांकी ।	पु पु टङ्क: पाषाणदारण: ॥ ३४ ॥
आरा ।	पुन न क्रकचो (ऽस्त्री) करपत्रं
चमार का चक्कू ।	स स (स्याद्) आरा चर्मप्रभेदिका ।

१—पु. २—न.

चाण्डालिका "और चण्ड लिका" कण्डोलवीणा, "उसी प्रकार कटोलवीणा" चाण्डालवल्लकी, ये ३ नीच वा अन्त्यज वीणा के नाम हैं, नाराची, एषणिका, ये २ सोनार का कांटा वा तराजू आदि के नाम हैं, शाण:, निकष:, कष:, "वाजे पढ़ते हैं शान:, निकस:, और कस:" ये ३ कशौटी वा शान इस प्रसिद्ध के नाम हैं, ॥ ३२ ॥ व्रश्चन:, पत्रपरशु:, ये २ सोना आदि के काटने की रेती—वा टांकी—आदि के नाम हैं ईषिका, "और भी इषीका, और ईषीका, वा इषिका" तूलिका, "उसी प्रकार तुलि:, वा तुली" ये २ चित्रकार की कूंची—वा चित्रकार की लेखनी, इस प्रसिद्ध के नाम हैं, तैजसावर्त्तनी, मूषा, "और भी मुषा, और मूषी, वा मूषिका" ये २ धातु गलाने की घरिया के वा कुल्हड़ी के नाम हैं, "(तैजसमावर्त्यते यत्र सा तैजसावर्त्तनी स्वर्णादिपाकार्थ: पात्रविशेष: मूषा स्यात्)" भस्त्रा, चर्मप्रसेविका, "वा पुं. चर्मप्रसेवक:" ये २ धौंकनी वा भाथी के नाम हैं, ॥ ३३ ॥ आस्फोटनी, "और लास्फोटनी" वेधनिका, ये २ मणि आदि के वेध करने के उपयोगी शस्त्रभेद के—वा बर्म्मा—बर्म्मी के नाम हैं, कृपाणी, कर्त्तरी, ये २ स्वर्ण पात्र आदि के काटने के उपयोगी शस्त्रविशेष के वा कतरनी इस प्रसिद्ध के नाम हैं, वृक्षादन:, वृक्षभेदी, ये २ बढ़ई की रुखानी— वा बसूला—वा बांकी के नाम हैं; टङ्क:, "वा तङ्क:" पाषाणदारण:, ये २ पत्थल तोडने के अर्थ घन भेद के—वा कुल्हाड़ी—वा टांकी के नाम हैं, ॥ ३४ ॥ क्रकच:, करपत्रं, "और क्रकर:" ये २ आरा—वा—आरी के नाम हैं, आरा, चर्मप्रभेदिका, ये २ चाम के काटने के अर्थ शस्त्र विशेष के—वा चमार के चक्कू के नाम हैं, ।

	स स स
लोहकी प्रतिमा ।	सूर्म्मी स्थूणा लोहप्रतिमा
	न
कारीगढ़ी वा सबकी चतुराई ।	शिल्पं (कर्म कलादिकम्) ॥ ३५ ॥
	न न स स स
प्रतिबिम्ब ।	प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।
	स १स २पु
	प्रतिकृति रर्चा (पुंसि) प्रतिनिधिर्
	स ३न
मिसाल ।	उपमो पमानं (स्यात्) ॥ ३६ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन ४पुसन
बराबर ।	(वाच्यलिङ्गाः) सम-स्तुल्यः सदृचः सदृशः सदृक् ।
	पुसन पुसन
	साधारणः समान (श्च)
सदृश ।	(स्युरुत्तरपदे त्वमी) ॥ ३७ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन ५पुसन
	निभ-सङ्काश-नीकाश-प्रतीकाशो-पमा (दयः) ।
	स स स ६स ७न न
मजूरी ।	कर्मण्या (तु) विधा-भृत्या-भृतयो भर्म्म वेतनम् ॥ ३८ ॥
	न न न पु पु
	भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण (इत्यपि) ।
	स स स ८स ९स
मदिरा ।	सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रु द्वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥

१ अ–. २–धि. ३ उ–. ४–गृ. ५ उपम. ६–ति. ७–नृ. ८–त्. ९ व–.

सूर्म्मी, "वा सूर्म्मिः और भी स्युर्म्मी, वा स्युर्म्मिः, और शूर्म्मी, शूर्म्मिः, वा शूर्म्मी" स्थूणा लोहप्रतिमा, ये ३ लोह की प्रतिमा–वा मूर्ति के नाम हैं, कलागीत–नृत्य–आदि जो कर्म है वह शिल्पं कहलाता है, आदि पद से रथकार आदि कर्म का ग्रहण है, ॥ ३५ ॥ प्रतिमानं, प्रतिबिम्बं, प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृतिः, अर्चा, प्रतिनिधिः, ये ८ प्रतिमा–वा मूर्त्ति के नाम हैं, "(प्रतिकृत्यमीयते ऽनेनेति प्रतिमानम्. मामाने)" उपमा, उपमानं, ये २ उपमा देने के नाम हैं और "(येनोपमीयते याचोपमितिस्तयोरेते नामनी इत्यर्थः, केचित्तु पूर्वान्वितेत्याहुः)" ॥ ३६ ॥ समः, तुल्यः, सदृक्षः, सदृशः, सदृक्, साधारणः, "स्त्री॰ साधारणी, वा साधारणा. समानः. ये सम आदि ७ समानांतर के वाची और ये वाच्यलिङ्ग हैं, और ये निभ–सङ्काश नीकाशः "और भी निकासः" और प्रतीकाशः, "प्रतिकाशः, उसी प्रकार प्रतिकासः, वा प्रतीकासः" आदि उत्तर पद में स्थित–सदृश के पर्याय और वाच्यलिङ्ग हैं, जैसे पितृनिभः पुत्रः. यह नित्यसमास है, पित्रा सदृशः यह अर्थ है, मातृनिभाकन्या मातुः सदृशी यह अर्थ है, आदि पद से भूत–रूप–कल्प–आदि का ग्रहण है, "जैसे पितृभूतः–पितृरूपः–पितृकल्पः" कर्मण्या, विधा, भृत्या, भृतिः, भर्म्म, वेतनं, ॥ ३८ ॥ भरण्यं, "और भी स्त्री॰ भरण्या" भरणं, मूल्यं, निर्वेशः, पणः, ये ११ वेतन के–वा दरमाहा–वा कमाई–या महीना के–नाम हैं, सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्रुत्, वरुणात्मजा, ॥ ३९ ॥

	स स १स ३स स
	गन्धोत्तमा-प्रसन्ने-रा-कादम्बर्य्यः परिस्रुता ।
	ध न न
	मदिरा कश्य-मद्ये (चाप्य) पु
मद्य पीने में रुचि बढ़ाने वाला ।	न न ऽवदंश-(स्तु भक्षणम्) ॥ ४० ॥
मद्यपानस्थान ।	शुण्डापानं मदस्थानं पु पु
मद्यपीने का समय ।	पु पु न न मधुवारा मधुक्रमाः ।
महुआ का ।	मध्वासवो माधवको मधु माध्वीक (मुद्वयोः) ॥ ४१ ॥
	न ३पु ४पुन
गुड़ आदि का ।	मैरेय मासवः शीधुर् पु पु
उस्का काढ़ा ।	न पु मेदको जगलः (समौ) ।
उस्का बनाना ।	सन्धानं (स्याद्) अभिषवः न पु
उस्का बीज ।	पु पु किण्वं (पुंसि तु) नग्नहूः ॥ ४२ ॥
उस्का फूल ।	कारोत्तरः सुरामण्ड न स
उस्की सभा ।	पुन न आपानं पानगोष्ठिका ।
मदिरा पीने का बर्तन	चषको (ऽस्त्री) पानपात्रं पुन ५न
मद्य पीना ।	सरको (ऽप्य) नुतर्षणम् ॥ ४३ ॥

१ हूरा. २-री. ३ श्रा-. ४-धु. ५ श्र-.

गन्धोत्तमा, प्रसन्ना, इरा, "श्रौर भी प्रसन्नेरा" कादम्बरी, परिस्रुता, मदिरा, कश्यं, मद्यं, ये १३ मद्य के-वा उत्तम मदिरा के-नाम हैं, "(कदम्बे जातो रसः कादम्बस्तं राति गृह्णातीति कादम्बरी, तत्र गौड़ी पैष्टी च माध्वी च विज्ञेया त्रिविधा सुरेति वचनात्)" सुरा श्रादि २ गौड़ी श्रादि त्रिविध मद्य के नाम हैं, श्रौर शेष मदिरा मात्र के नाम हैं; यह किसी का मत है; मदिरापान में रुचि बढ़ाने के लिये जो व्यञ्जन खाया जाता है वह श्रवदंशः कहलाता है, "वा भूंजे चना श्रादि के खाने को कहते हैं"; ॥ ४० ॥ शुण्डापानं, मदस्थानं, ये २ मद्यगृह-वा कलवारखाना-वा मद्यशाला के नाम हैं; "(पीयते ऽस्मिन्निति पानं)" मधुवारः, मधुक्रमः, ये २ मधुपान के समय वा क्रम के-वा मद्यासक्त के-नाम हैं, "(मधुनोवारः समयः मधुवारः)" मध्वासवः, माधवकः, "श्रौर माध्वकं, वा मार्द्वीकं", मधु, माध्वीकं, "श्रौर भी मधुमाध्वीकं" "(मृद्विका द्राक्षा तस्याः विकारः)" ये ४ मधुक-वा महुआ के पुष्प से उत्पन्न मदिरा के नाम हैं, "दो दो पर्याय हैं यह भी मत है, श्रौर मार्द्वीक इस पाठ में मध्वादि द्वय दाख के रस के नाम हैं, ॥ ४१ ॥ मैरेयं, श्रासवः शीधुः ये ३ ईख श्रौर शाक श्रादि से उत्पन्न मद्य विशेष के नाम हैं; मेदकः, जगलः, ये २ मदिरा के कढ़ा-वा काढ़ा के नाम हैं, "वा मद्य भेद के नाम हैं", सन्धानं, श्रभिषवः, ये २ मद्यसन्धान वा बनाने के नाम हैं; फल वंश श्रौर श्रङ्कुर श्रादि जो दीर्घ काल तक उत्तम मद्य बनाने के श्रर्थ स्थापन करते हैं उसके नाम हैं; किण्वं, "वा कण्वं", नग्नहूः, "श्रौर भी क्लीव नग्नहु" ये २ चावल श्रादि द्रव्य के श्रौटाने से उठे खमीर से बने सुरा बीज के नाम हैं; नग्नहु ; ॥ ४२ ॥ सुरा का जो मण्ड श्रर्थात् श्रग्रभाग है वह कारोत्तरः, श्रौर सुरामण्डः, कहलाता है, "श्रौर कारोत्तमः" श्रापानं, पानगोष्ठिका, ये २ पानार्थ सभा के नाम हैं, "श्रासंभूयपिवन्त्यत्र श्रापानम्" चषकः, पानपात्रं, ये २ मद्यपान के पात्र के नाम हैं; सरकः, श्रनुतर्षणं, "श्रौर भी पुं· श्रनुतर्षः" ये २ मद्यपान के नाम हैं, "मुकुट के मत से चारो पान पात्र के नाम हैं"; ॥ ४३ ॥

जुआरी।	पु १पु पु पु पु धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्त्तो द्यूतकृत् (समाः)।
ज़ामिन।	पु पु (स्युर्) लग्नकाः प्रतिभुवः
फड़वाज़।	पु पु सभिका द्यूतकारकाः ॥ ४४ ॥
जूआ।	पुन स न पु द्यूतोऽ(स्त्रियाम्) अक्षवती कैतवं पण (इत्यपि)।
वाज़ी।	पु पु पणोऽ(क्षेषु) ग्लहो पु पु पु
पासा।	ऽक्षा-(स्तु)देवनाः पाशका-(श्च ते)॥४५॥
गोटियों का चलना।	पु परिणाय-(स्तु शारीणां समन्तान्नयने) (ऽस्त्रियौ)।
चौपड़।	पुन पुन अष्टापदं शारिफलं न पु
जीवों की वाज़ी।	प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥ ४६ ॥
	(उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन् येऽत्र यौगिकाः।
	ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्ता ऊह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते)॥ ४७ ॥
	॥ इति शूद्रवर्गः ॥
	इत्यमरसिंहकृतौ नाम लिङ्गानुशासने।
	द्वितीयः काण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥
	॥ * ॥ * ॥ इति द्वितीयःकाण्डः ॥ * ॥ * ॥

१—न्.

धूर्त्तः, "धार्त्तः, भी, धावनेन आर्त्तः" अक्षदेवी, कितवः, अक्षधूर्त्तः, द्यूतकृत्, ये ५ जूआ खेलनेवाले केनाम हैं, वा जुआरी के नाम हैं; "अक्षैर्दीव्यति अक्षदेवी"; लग्नकः, प्रतिभूः, ये २ ऋण आदि में प्रतिनिधि भूतके—या ज़ामिन इस प्रसिद्ध के नाम हैं; "(प्रतिप्रतिनिधिर्भवतीति प्रतिभूः)"; सभिकाः, द्यूतकारकाः, "एक वचन सभिकः, द्यूतकारकः" ये २ जूआ करानेवाले के नाम हैं; ॥४४॥ द्यूतः, अक्षवती, कैतवं, पणः, ये ४ जूआके नाम हैं, "(अक्षाः पाशकाः सन्त्यस्यां सा अक्षवती)"; पणः, ग्लहः, ये २ जूआ जीतनेपर भाषा बन्धसे जो ग्राह्य है उसके वा वाज़ीके नाम हैं; अक्षः, देवनः, पाशकः ये ३ पाशा के नाम हैं, ॥ ४५ ॥ शारीणां अर्थात् चौपड़की नर्द्द गोटियों कोइधर उधर लेजाना परिणायः, "और भी परीणायः" कहलाता है, (एकं), अस्त्रियौ इस पदका अष्टापद आदिके साथ सम्बन्ध है, अष्टापदं, शारिफलं, ये २ चौपड़की गोटियोंके विधिसे रखनेके लिये वस्त्रके बने कोष्ट युक्त वस्त्र आदि के नाम हैं, "वा चौपड़ के घर के नाम है; और २ कोशकारों के मत में काठ हाथीदांत के बने जूआ खेलने के सामानके नाम हैं"; प्राणियोंका अर्थात् मेंढ़ा—मुर्गा, और बुलबुल आदियोंका जूआ जो परस्पर युद्ध लक्षण क्रीड़ा विशेष है वह प्राणिद्यूतं, कहलाता है; और अप्राणियों का किया जो सो तो लोक में समाह्वयः कहलाता है; (एकं), ॥ ४६ ॥ अब यहां किसी शब्दों के लिङ्गभेद के विधान के अभाव से प्राप्त जो अपूर्णत्व है उसका परिहार करते हैं, उक्ता इस पद से इस शूद्रवर्ग में यौगिक जो कुम्भकार और मालाकार प्रभृति शब्द हैं, काव्य पुराण आदि में पुल्लिङ्गही में बहुत प्रयोग के दर्शन से एकही लिङ्ग में कहे गये हैं और वे अन्यत्र स्त्रीत्व आदि विशिष्ट विशेष्य वृत्ति के होने पर ताद्धर्म्यात् अर्थात् विशिष्टों का विशेष्य धर्म होने से लिङ्गान्तर में वर्त्तमानोंको स्त्रीलिङ्ग आदि में भी वे जाननीय हैं, अपि शब्द से रूढ़ भी करण कुनाल आदि जाति वचन से पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में भी वर्त्तते हैं, यह जानना चाहिये, जिसका अवयवार्थ जाना जाय सक्ता है वह यौगिक है, और जिसका अवयव शक्ति के बिना समुदाय शक्ति मात्र से अर्थ बोध होता है वह रूढ़ है, तिनमें यौगिक लिङ्गान्तर में, जैसे, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलं, इसी प्रकार, मालाकारी, मालाकारं अयौगिक जैसे, करणी, कुलाली।

अमरसिंह के कोश में काण्डत्रय शुभखानि। द्वितीय काण्ड वर्णन कियो देवदत्त निधि जानि ॥

॥ इति श्रीमत्पण्डित देवदत्त त्रिपाठिविरचिता अमरकोश द्वितीयकाण्डटीका समाप्तिमगात् ॥

॥ अथ तृतीयकाण्डस्य प्रथमवर्गः ॥

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णै-र्नानार्थै-रव्ययै-रपि ।
लिङ्गादिसंग्रहै-र्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥
स्त्रीदाराद्यै-र्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दा स्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

	१पुसन २पुसन पुसन
भाग्यमान ।	सुकृती पुण्यवान् धन्यो पुसन पुसन
उदार ।	महेच्छ-(स्तु) महाशयः ।
	पुसन पुसन
सीधा ।	हृदयालुः सुहृदयो पुसन पुसन
उद्योगी ।	महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
ज्ञाता ।	प्रवीणे निपुणा-ऽभिज्ञ-विज्ञ-निष्णात-शिक्षिताः ।
	पुसन पुसन ३पुसन पुसन
	वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल (इत्यपि) ॥ ४ ॥
	पुसन पुसन
मान्य ।	पूज्यः प्रतीक्ष्यः पुसन पुसन
संशयी ।	सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

१—न. २—वत्. ३—न.

अब तृतीय काण्ड की व्याख्या करते हैं इस सामान्य काण्ड में वर्ग इस क्रम से हैं १ विशेष्यनिघ्न जिस में उन का वर्णन है जो विशेषण हैं जैसे सुकृती आदि; २ सङ्कीर्ण जिस में विशेषण तो हैं परन्तु उन के विशेष्य कई अर्थों में हैं जैसे कर्मपरायण कारीगरी—जूआ—वा और किसी काम में चतुर को कह सकते हैं; ३ नानार्थ जिस में एकही के कई अर्थ हैं जैसे लोक, भुवन—और मनुष्य दोनों का वाचक है; ४ अव्यय जिस में अव्ययों के अर्थ हैं जैसे आङ् थोड़ा—मर्य्यादा—और वाक्य का बोधक है; ५ लिङ्गसंग्रह जिस में प्रत्ययों से लिङ्गज्ञान है जैसे शेफालिका के टाप् से स्त्रीलिङ्ग है ॥ १ ॥ पहिले काण्डों में रूप आदि के भेदही से बहुधा लिङ्ग का बोध होता है, तीसरे काण्ड में जो शब्द आये हैं वे गुण—द्रव्य—और क्रियावाचक हैं, और विशेष्यनिघ्न हैं, इन का लिङ्ग और वचन विशेष्य के आधीन हैं, जैसे पुं॰ सुकृती—स्त्री॰ सुकृतिनी—कुलं सुकृति, कहे जाते हैं, दारा शब्द के साहचर्य्य से सुकृतिनोदाराः; द्रव्य दण्ड आदि है तद्विशिष्ट जैसे दण्डिनीस्त्री—दण्डिनोदाराः—दण्डिकुलं; क्रियापचन आदि है तद्विशिष्ट जैसे पाचिका स्त्री—पाचका दाराः—पाचकं कुलं; आदि ॥ २ ॥ सुकृती, पुण्यवान्, धन्यः, "स्त्री॰ सुकृतिनी, पुण्यवती, धन्या" ये ३ भाग्यमान के नाम हैं. "(सुकृतमस्यास्तीति सुकृती) महेच्छः, महाशयः, ये २ उदार चित्तवाले दयालु के नाम हैं; हृदयालुः, सुहृदयः, "और भी हृदयी(-न), हृदयिकः, हृदयवान् (-वत्) वासहृदयः यह भी पाठ है" ये २ अच्छे चित्तवाले के नाम हैं; महोत्साहः, महोद्यमः, ये २ बड़े दुरापकृत्य में अध्यवसित वा स्थिर क्रिय के नाम हैं, "(महान् उद्यमो ऽस्य महोद्यमः)" ॥३॥ प्रवीणः, निपुणः, अभिज्ञः, विज्ञः, निष्णातः, शिक्षितः, वैज्ञानिकः, "वा विज्ञानिकः" कृतमुखः, कृती, कुशलः, "उसी प्रकार कुपलः" ये १० प्रवीण-वा चतुर-वा विद्वान्-के नाम हैं, "(कृतं कर्म्म प्रशस्तमस्यास्तीति कृती)" ॥ ४ ॥ पूज्यः, प्रतीक्ष्यः, ये २ पूज्य के नाम हैं, जैसे रघुवंश में कहा है "(भक्तिः प्रतीक्ष्येषु कुलोचितातेइति)" सांशयिकः, संशयापन्नमानसः, ये २ संशययुत मनवाले के नाम हैं; जैसे स्थाणु है वा पुरुष है यह भ्रमरूप संशय है, "(संशयविषयीभूतो ऽर्थः सांशयिकः)"; ।

दक्षिणा के योग्य।	पुसन पुसन पुसन दक्षिणीयो दक्षिणार्ह-(स्तत्र) दाक्षिण्य (इत्यपि) ॥ ५ ॥
अति दानी।	पुसन पुसन पुसन पुसन (स्युः) वदान्य-स्थूललक्ष्य-दानशौण्डा बहुप्रदे।
बड़ी उमर वाला।	पुसन १पुसन जैवातृकः (स्याद्) आयुष्मान्
शास्त्री।	पुसन २पुसन अन्तर्वाणि-(स्तु) शास्त्रवित् ॥ ६ ॥
पारखी।	पुसन पुसन परीक्षकः कारणिको
वरदान देनेवाला।	पुसन पुसन वरद-(स्तु) समर्द्धकः।
हर्षित।	पुसन पुसन ३पुसन पुसन हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥
उदास।	४पुसन ४पुसन ४पुसन दुर्मना विमना अन्तर्मनाः (स्याद्)
प्रीतियुत।	पुसन ५पुसन उत्क उन्मनाः।
सरलचित्त।	पुसन पुसन ६पुसन दक्षिणे सरलो-दारौ
दाता भोक्ता।	पुसन सुकलो (दातृभोक्तरि) ॥ ८ ॥
लीन।	पुसन ७पुसन (तत्परे) प्रसिता-सक्ताव्
अभीष्ट में लगा।	पुसन पुसन इष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः।

१–तृ. २–द्. ३–नस्. ४–स्. ५–स्. ६ उ–. ७ आसक्त.

दक्षिणीयः, दक्षिणार्हः, दाक्षिण्यः, "और दक्षिण्यः" ये ३ दक्षिणा पाने के योग्य के नाम हैं; ॥ ५ ॥ वदान्यः, "वा वदन्यः" स्थूललक्ष्यः, "वा स्थूललक्षः" दानशौण्डः बहुप्रदः, ये ४ दानशूर–वा महादानी के नाम हैं, "(मां याचस्वेति वदति वदान्यः, स्थूलैर्महद्भिर्लक्ष्यते (स्थूललक्ष्यः)"; जैवातृकः, "स्त्री· जैवातृका" आयुष्मान्, ये, २ बड़े आयुष वाले के नाम हैं, "(अतिशयितमायुरस्यायुष्मान्)"; अन्तर्वाणिः, शास्त्रवित्, ये २ शास्त्रज्ञ के–वा पण्डित के नाम हैं, "(अन्तर्यामापि शब्दयतीति अन्तर्वाणिः, वण शब्दे)"; ॥ ६ ॥ परीक्षकः, कारणिकः, ये २ प्रमाणों से अर्थ निश्चय करनेवाले के वा परीक्षक के नाम हैं, "(करणैश्चरति कारणिकः)"; वरदः, समर्द्धकः ये २ मनोरथ पूर्ण करनेवाले के–या वर देनेवाले के–नाम हैं; हर्षमाणः, विकुर्वाणः, प्रमनाः, "और भी प्रमणाः (–स्) हृष्टमानसः, ये ४ प्रसन्न चित्त वाले के नाम हैं; ॥ ७ ॥ दुर्मनाः, विमनाः, अन्तर्मनाः, ये ३ सान्त हैं और व्याकुल चित्तवाले के नाम हैं, "(दुःस्थितं मनोऽस्य दुर्मनाः)"; उत्कः, उन्मनाः, ये २ उत्कण्ठित मनवाले के–या बड़ी चाहनावाले के–नाम हैं, "(उद्गतं मनोऽस्य उन्मनाः)"; दक्षिणः, सरलः, उदारः, ये ३ सरल चित्त–या सीधे चित्तवाले के नाम हैं, "दक्षति वर्धते ऋज्वाशयत्वाद्दक्षिणः)" जो दाता और भोक्ता है उसे सुकलः कहते हैं, (एक); ॥ ८ ॥ तत्परः, प्रसितः, आसक्तः, "वाज़े पढ़ते हैं आविष्टः", ये ३ किसी विषय में आसक्त चित्तवाले के नाम हैं, "(तत्परं उत्तमं यस्य स तत्परः)" इष्टार्थोद्युक्तः, "वाज़े पढ़ते हैं उद्युक्तः" उत्सुकः, ये २ अभिमत अर्थ में लगे हुये के नाम हैं; ।

प्रसिद्ध ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन प्रतीते प्रथित-ख्यात-वित्त-विज्ञात-विश्रुताः ॥ ९ ॥
गुण से प्रसिद्ध ।	पुसन १पुसन (गुणैः प्रतीते तु) कृतलक्षण-हतलक्षणौ ।
धनी ।	पु पु २पु इभ्य आढ्यो धनी
स्वामी-वा मालिक ।	३पु ४पु ५पु ६पु स्वामी (त्वी) श्वरः पति रीशिता ॥ १० ॥
	पु ७पु ८पु पु पु पु अधिभू-र्नायको नेता प्रभुः परिवृढो धिपः ।
भरेपुरे ।	पुसन पुसन अधिकर्द्धिः समृद्धः (स्यात्)
कुटुम्ब का पालक ।	पु कुटुम्बव्यापृत-(स्तु यः) ॥ ११ ॥
	पुन पु (स्याद्) अभ्यागारिक-(स्तस्मिन्) उपाधि (र्हि पुमानयम्) ।
बड़ा सुन्दर ।	पु (वराङ्गरूपो पेतो यः) सिंहसंहननो (हि सः) ॥ १२ ॥
दुख में भी खुशी से कार्य्य का कर्त्ता ।	पुसन निर्वार्य्यः (कार्य्यकर्त्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसम्पदा) ।
गूंगा ।	पुसन पुसन अवाचि मूको
पितृतुल्य ।	पुसन पुसन (ऽथ) मनोजवः (स) पितृसन्निभः ॥ १३ ॥
अलंकृत कन्या का दाता ।	पु (सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स) कूकुदः ।

१ आ–. २–न्. ३–न्. ४ ई–. ५–ति. ६ ईशितृ. ७ ना–. ८–तृ.

प्रतीतः, प्रथितः, ख्यातः, वित्तः, विज्ञातः, विश्रुतः, ये ६ प्रसिद्ध के नाम हैं, "(प्रथते स्म प्रथितः, प्रथप्रख्याने)" ॥ ९ ॥ कृतलक्षणः, आहतलक्षणः, "वाज़े पढ़ते हैं आहितलक्षणः" ये २ शौर्य्य आदि से प्रसिद्ध के नाम हैं, "लक्षण, नाम और चिह्न को कहते हैं", "(आहतमभ्यस्तं लक्षणमस्य आहतलक्षणः)"; इभ्यः, आढ्यः, धनी, "स्त्री॰ इभ्या, आढ्या, धनिनी", ये ३ बड़े धनी के नाम हैं, "(बहुधनमस्यास्तीति धनी)"; स्वामी, ईश्वरः, पतिः, ईशिता, "स्त्री॰ ईश्वरा, वा ईश्वरी" ॥ १० ॥ अधिभूः, नायकः, नेता, प्रभुः, परिवृढः, अधिपः, ये १० प्रभु वा अध्यक्ष के नाम हैं, ईशितारौ, अधिभुवौ, नेतारौ; अधिकर्द्धिः, समृद्धः, ये २ अच्छे सम्पन्न के नाम हैं, "(अधिका ऋद्धिर्यस्य स अधिकर्द्धिः)" कुटुम्बव्यापृतः, ॥ ११ ॥ अभ्यागारिकः, उपाधिः, ये ३ कुटुम्बपोषण आदि व्यापार से युक्त के नाम हैं, "(अभ्यागारे नियुक्तः अभ्यागारिकः)" अङ्ग शरीर के अवयव, रूप लावण्य आदि वर अङ्ग रूप से युक्त जो है उसे सिंह संहननः कहते हैं, (एकं) ॥ १२ ॥ जो व्याकुल अवस्था में भी मन लगाकर काम करता है वह निर्वार्य्यः, "वा निर्धार्य्यः" कहलाता है, (एकं) अवाक्, मूकः, ये २ मूक–वा गूंगा–के नाम हैं, "अवाक् (च्)" "(मूयते बध्यते वागस्य)" मनोजवः, "वाज़े पढ़ते हैं, मनोजवसः" पितृसन्निभः, ये २ पितृतुल्य के नाम हैं ॥ १३ ॥ ब्याह करनेवाले को जो आदर पूर्वक अलंकृत कन्या देता है वह कूकुदः, "वा कुकुदः" कहलाता है, (एकं) ।

लक्ष्मीवान् ।	१पुहन पुहन पुहन २पुहन लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रील: श्रीमान्
स्नेही ।	पुहन पुहन स्निग्ध-(स्तु) वत्सलः ॥ १४ ॥
दयालु ।	पुहन पुहन पुहन पुहन (स्याद्,) दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः (समाः) ।
स्वतन्त्र ।	पुहन पुहन ३पुहन पुहन पुहन स्वतन्त्रो ऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥
परतन्त्र ।	पुहन पुहन ४पुहन ५पुहन परतन्त्रः पराधीनः परवान् नाथवान् (अपि) ।
आधीन मात्र ।	पुहन पुहन पुहन पुहन पुहन अधीनो निघ्न आयत्तो ऽस्वच्छन्दो गृह्यको (ऽप्यसौ) ॥१६॥
बुहारने वाला ।	पुहन पुहन खलपूः (स्याद्) बहुकरो
सुस्त ।	पुहन ६पुहन दीर्घसूत्र-श्चिरक्रियः ।
अविचारी ।	पुहन ७पुहन जाल्मो ऽसमीक्ष्यकारी (स्यात्)
आलसी ।	पुहन कुण्ठो (मन्दः क्रियासु यः) ॥१७॥
कार्य्यकारी ।	पुहन पुहन कर्म्मक्षमो ऽलंकर्म्मीणः
कार्य्य कर्ने में लगा ।	८पुहन क्रियावान् (कर्म्मसूद्यतः) ।
सदा काम में लगा ।	पुहन पुहन (स) कार्म्मः कर्म्मशीलो (यः)
पूरा कार्य्य करने वाला ।	पुहन पुहन कर्म्मशूर-(स्तु) कर्म्मठः ॥ १८ ॥

१—त्. २—त्. ३—न्. ४—त्. ५ ना—त्. ६ चि—. ७—न्. ८—त्.

लक्ष्मीवान्, लक्ष्मणः, श्रीलः, "और श्लीलः" श्रीमान्, ये ४ लक्ष्मीवान् के नाम हैं; स्निग्धः, वत्सलः, ये २ स्नेह युक्त के नाम हैं; ॥ १४ ॥ दयालुः, कारुणिकः, कृपालुः, सूरतः, "और भी सुरतः" ये ४ दयाशील के नाम हैं; स्वतन्त्रः, अपावृतः, स्वैरी, "और स्वैरः" स्वच्छन्दः, निरवग्रहः, "और भी निर्यन्त्रणः, और निरंकुशः" ये ५ स्वच्छन्द—वा स्वतन्त्र के नाम हैं, "(स्वः आत्मा तन्त्रं प्रधानं यस्य स स्वतन्त्रः)"; ॥ १५ ॥ परतन्त्रः, पराधीनः, परवान्, नाथवान्, ये ४ पराधीन के नाम हैं, "(परः, स्वाम्यस्यास्तीति परवान्)" परवन्तौ; अधीनः, निघ्नः, आयत्तः, अस्वच्छन्दः, गृह्यकः, ये ५ आधीन मात्र के नाम हैं, "(न स्वच्छन्दोऽस्यास्वच्छन्दः)" ये ६ भी एकार्थक हैं, किसी के मत में, ॥ १६ ॥ खलपूः, बहुकरः, "स्त्री॰ बहुकरी, और बहुकरा" ये २ बुहारी आदि से पवित्र करने वाले के नाम हैं, "(खलं चत्वरं पुनाति मार्जयति इति खलपूः)" खलप्वौ; दीर्घसूत्रः, चिरक्रियः, ये २ जो स्वल्प काल से साध्य कार्य्य को चिरकाल में करता है उसके वा आलसी विशेष के नाम हैं, "(चिरेण क्रिया ऽस्य चिरक्रियः)"; जाल्मः, असमीक्ष्यकारी, ये २ जो गुण और दोष को बिना विचार किये कार्य्य करता है, उसके नाम हैं, जो क्रिया में मन्द—अलस—और मूढ़ है उसे कुण्ठः कहते हैं, (एकं) ॥ १७ ॥ कर्मक्षमः, अलंकर्म्मीणः, ये २ कार्य्य करने में समर्थ के नाम हैं, "(कर्म्मणे क्रियायै अलं समर्थः अलं कर्म्मीणः)"; जो कार्य्यों में उद्युक्त है वह क्रियावान् कहलाता है, कार्म्मः, "स्त्री॰ कार्म्मी" कर्म्मशीलः, ये २ जो कर्म्म में नित्य प्रवृत्त रहता है उसके नाम हैं, कर्म्मशूरः, कर्म्मठः, ये २ जो प्रयत्न से आरब्ध कर्म्म को परिसमाप्त करता है उसके नाम हैं, "(कर्म्मणि घटते कर्म्मठः)" ॥ १८ ॥

मजूर ।	१पुस्न २पुस्न भरण्यभुक् कर्म्मकर:
बिना मजूरी का काम कर्त्ता ।	पुस्न कर्म्मकार-(स्तु तत्क्रिय:) ।
मृतकस्नायी ।	पुस्न पुस्न अपस्नातो मृतस्नात
मांस मछरी खाने वाला ।	३पुस्न पुस्न आमिषाशी (तु) शौष्कल: ॥ १६ ॥
भूखा ।	पुस्न पुस्न ४पुस्न ५पुस्न बुभुक्षित: (स्यात्) क्षुधितो जिघत्सु रशनायित: ।
पराचजीवी ।	पुस्न पुस्न परान्न: परपिण्डादो
खवैया ।	पुस्न पुस्न पुस्न भक्षको घस्मरो ऽद्मर: ॥ २० ॥
मरभुखा ।	पुस्न पुस्न आद्यून: (स्याद्) औदरिको (विजिगीषाविवर्जिते) ।
पेटू ।	पुस्न पुस्न (उभाव्) आत्मम्भरि: कुक्षिम्भरि: (स्वोदरपूरके) ॥२१॥
सर्वभक्षी ।	पुस्न ६पुस्न सर्व्वान्नीन-(स्तु) सर्व्वान्नभोजी
लोभी ।	पुस्न पुस्न गृध्नु-(स्तु) गर्द्धन: । पुस्न पुस्न ७पुस्न लुब्धो ऽभिलाषुक-स्तृष्णक्
अतिलोभी ।	पुस्न पुस्न (समौ) लोलुप लोलुभौ ॥ २२ ॥

१—ज. २ क—. ३—न. ४—त्सु. ५ अ—. ६—न. ७ तृष्णाक्.

भरण्यभुक्, "वा कर्मण्यभुक्, (—ज.)" कर्म्मकर:, ये २ जो वेतन लेकर काम करते हैं उनके नाम हैं; "(तत्कर्म्मैव क्रिया यस्य स तत्क्रिय:)" बिना वेतन के जो क्रियावान् है वह कर्मकार: कहलाता है, (एकं), अपस्नात:, मृतस्नात:, ये २ मृतक के निमित्त जो स्नान करते हैं उनके नाम हैं; आमिषाशी, शौष्कल, "और शाष्कुल:, वा शुष्कल:" ये २ मांस मछरी खाने वाले के नाम हैं; ॥ १६ ॥ बुभुक्षित:, क्षुधित:, जिघत्सु:, अशनायित:, ये ४ खाने की इच्छा करने वाले के नाम हैं, "(अशनस्य इच्छा अशनाया सा सञ्जाताऽस्येति अशनायित:)"; परान्न:, परपिण्डाद:, ये २ परान्न से उपजीवन करनेवाले के नाम हैं; भक्षक:, घस्मर:, अद्मर:, ये ३ भक्षणशील के नाम हैं, "(अत्तीत्यद्मर:)"; ॥ २० ॥ आद्यून:, औदरिक:, ये २ बड़ी इच्छा सहित के वा भूख से अत्यन्त पीड़ित के नाम हैं; आत्मम्भरि:, कुक्षिम्भरि:, ये २ अपने पेट भरनेवाले के वा पेटभरू—वा पेटू के नाम हैं, "(आत्मानं बिभर्त्ति आत्मम्भरि:)"; ॥ २१ ॥ सर्व्वान्नीन:, सर्व्वान्नभोजी, ये २ जो सर्व वर्णों के अन्न को खाता है उसके—वा परमहंस आदि के नाम हैं; गृध्नु:, गर्द्धन:, ये २ आकांक्षाशील के नाम हैं, लुब्ध:, अभिलाषुक:, तृष्णक्, "और भी तृष्णक:, और तृषित:, वा तर्षित:", ये ३ अभिलाषाशील के वा पांचो लोभी के नाम हैं, "(लुभ्यति स्म लुब्ध:)"; लोलुप:, लोलुभ:, ये २ बड़े लोभी के नाम हैं, "(गर्हितं लुम्पति लोलुप:" ॥ २२ ॥

	पुसन १पुसन
सिरी-वा पागल ।	उन्मद-(स्तू) न्मदिष्णुः (स्यात्) पुसन पुसन
अन्यायी ।	अविनीतः समुद्धतः ।
	पुसन पुसन २पुसन पुसन
मतवाला ।	मत्ते शौण्डो-त्कट-क्षीबाः
	पुसन ३पुसन पुसन
कामी ।	कामुके कमिता ऽनुकः ॥ २३ ॥
	पुसन ४पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	कम्रः कामयिता ऽभीकः कमनः कामनो ऽभिकः ।
	पुसन ५पुसन पुसन पुसन
आज्ञाकारी ।	विधेयो विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
	पुसन पुसन
वश्य ।	वश्यः प्रणेयो पुसन पुसन पुसन
नम्र-वा सीधा ।	पुसन पुसन ६पुसन निभृत-विनीत-प्रश्रिताः (समाः) ।
ढीठ ।	धृष्टे धृष्णग् वियात-(श्च)
	पुसन पुसन
बुद्धिमान् ।	प्रगल्भः प्रतिभान्वितः ॥ २५ ॥
	पुसन पुसन
सलज्ज ।	(स्याद्) अधृष्टे (तु) शालीनो
	पुसन पुसन
अचर्जी ।	विलक्षो विस्मयान्विते ।
	पुसन पुसन
व्याकुल ।	अधीरे कातरस्- ७पुसन पुसन पुसन पुसन
डरपोंकना ।	त्रस्नौ भीरु-भीरुक-भीलुकाः ॥ २६ ॥

१ उ–. २ उ–. ३–तृ. ४–तृ. ५–न. ६ वि–. ७–स्नु.

उन्मदः, "वा उन्मादः, वाले पढ़ते हैं सोन्मादः, वा मून्मादः, और मून्मदः" उन्मदिष्णुः. ये २ उन्मादशील के–वा पागल के नाम हैं; अविनीतः, समुद्धतः, ये २ दुर्विनीत–वा गंवार के नाम हैं; मत्तः, शौण्डः, उत्कटः, क्षीबः, क्षीवन् यह नान्त भी है" ये ४ मतवाले के नाम हैं; कामुकः, कमिता, अनुकः, ॥ २३ ॥ कम्रः, कामयिता, अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः, ये ९ कामुक–वा पुरश्चन के नाम हैं; विधेयः, विनयग्राही, "वा वचनग्राही (न)" वचनेस्थितः, आश्रवः, ये ४ वचन ग्रहण करनेवाले वा आज्ञाकारी के नाम हैं, "(प्रवृत्तौ निवृत्तौ वा विधातुं शक्यः विधेयः, वचने तिष्ठति स्म वचनेस्थितः)"; ॥ २४ ॥ वश्यः, प्रणेयः, ये २ वश में प्राप्त के नाम हैं, "(प्रकर्षेण नेतुं शक्यः प्रणेयः)" यहां विधेय आदि ६ भी वशंगत के नाम हैं किसी के मत में; निभृतः, विनीतः, प्रश्रितः, ये ३ विनीत वा सीखे हुये के नाम हैं, "(नितरां अभारिनिभृतः) वा प्रसृतः"; धृष्टः, धृष्णक् (–ज्), "और भी धृष्णुः" वियातः, ये ३ अविनीत वा अविहित के नाम हैं, "(विरुद्धं यातं चेष्टितं यस्य सवियातः)"; प्रगल्भः, प्रतिभान्वितः, ये २ बुद्धिमान् के नाम हैं; ॥ २५ ॥ अधृष्टः, शालीनः, ये २ सलज्ज के नाम हैं; विलक्षः, विस्मयान्वितः, ये २ पराये धर्मशील आदि में प्राप्त आश्चर्य्य के नाम हैं, अधीरः, कातरः, "कातरा,–रं" ये २ भय–क्षुधा–और प्यास से व्याकुल के नाम हैं, "(कुपत्तरति कातरः, हृदय में कुशब्द का फावेश हुआ है)" त्रस्नुः, "वा त्रस्तः" भीरुः, "भीतः भी" भीरुकः, भीलुकः, ये ५ भयशील के या डरे हुये के नाम हैं ॥ २६ ॥

	१पुसन २पुसन
कहनेवाला।	आशंसु-राशंसितरि
	३पुसन पुसन
लेनेवाला।	गृहयालु-र्गृहीतरि ।
	पुसन
श्रद्धावान्।	श्रद्धालुः (श्रद्धया युक्ते)
	पुसन पुसन
गिरनेवाला।	पतयालु-(स्तु) पातुकः ॥ २७ ॥
	४पुसन
लोकलज्जा शील।	(लज्जाशीले) ऽपत्रपिष्णुर्
	५पुसन ६पुसन
वन्दना करनेवाला।	वन्दारु-रभिवादके ।
	पुसन ७पुसन पुसन
हत्यारा।	शरारु-र्घातुको हिंस्रः
	पुसन पुसन
बढ़नेवाला।	(स्याद्) वर्द्धिष्णु-(स्तु) वर्द्धनः ॥ २८ ॥
	पुसन ८पुसन
उछलनेवाला।	उत्पतिष्णु-(स्तू) त्पतिता
	पुसन पुसन
गहना की इच्छावाला।	ऽलंकरिष्णु-(स्तु) मण्डनः
	पुसन ९पुसन १०पुसन
होने की इच्छावाला।	भूष्णु-र्भविष्णु-र्भविता
	पुसन ११पुसन
वर्त्तनेवाला।	वर्त्तिष्णु-र्वर्तनः (समौ) ॥ २९ ॥
	पुसन पुसन
निकारनेवाला।	निराकरिष्णुः क्षिप्नुः (स्यात्)
	पुसन पुसन
मेघ-वा चिक्कण।	सान्द्रस्निग्ध-(स्तु) मेदुरः ।
	१२पुसन पुसन १३पुसन
जनैया।	ज्ञाता (तु) विदुरो विन्दुर्
	१४पुसन पुसन
फूलनेवाला।	विकासी (तु) विकस्वरः ॥ ३० ॥

१—सु. २ आ—तृ. ३—लु. ४—ष्णु. ५—रु. ६ अ—. ७ घा—. ८ उ—तृ. ९ भ—. १० भ—तृ. ११ व—. १२—तृ. १३—न्दु. १४—न्.

आशंसुः, आशंसिता, ये २ वांछाशील के नाम हैं; गृहयालुः, गृहीता (—तृ) "वा ग्रहीता (—तृ) ये २ ग्रहणशील के नाम हैं; श्रद्धा आस्तिक्य बुद्धि है इससे युक्त को श्रद्धालुः कहते हैं, (एकं); पतयालुः, पातुकः, ये २ पतनशील के—वा गिरनेवाले के नाम हैं, "(पतयति तच्छीलः पतयालुः)" ॥ २७ ॥ लज्जाशीलः, अपत्रपिष्णुः, ये २ लोकलज्जा युक्त के नाम हैं, "(लज्जाशीलमस्य लज्जाशीलः)" वन्दारुः अभिवादकः, ये २ वन्दनशील के नाम हैं, "(वन्दते तच्छीलः वन्दारुः)"; शरारुः, घातुकः, हिंस्रः, ये ३ हिंसाशील के नाम हैं, "(शृणाति तच्छीलः शरारुः)"; वर्द्धिष्णुः, वर्द्धनः, ये २ वर्द्धनशील के नाम हैं, "(वर्द्धते तच्छीलः वर्द्धिष्णुः)"; ॥ २८ ॥ उत्पतिष्णुः, उत्पतिता, ये २ उत्पतनशील के नाम हैं, "(उत्पतति तच्छीलः उत्पतिष्णुः)", अलंकरिष्णुः, मण्डनः, ये २ अलंकरणशील के नाम हैं; भूष्णुः, भविष्णुः, भविता, ये ३ भवनशील के नाम हैं; वर्तिष्णुः, वर्त्तनः, ये २ वर्त्तनशील के नाम हैं; ॥ २९ ॥ निराकरिष्णुः, क्षिप्नुः, "वा क्षिपणुः" ये २ निराकरणशील के नाम हैं; सान्द्रघन है वही स्निग्ध सान्द्रस्निग्ध हो मेदुरसान्द्रस्निग्ध मेदुरः कहलाता है अर्थात् महा अन्धकार, (एकं) इस का लक्ष्य, मेघैर्मेदुरमम्बरं है, ज्ञाता, विदुरः, विन्दुः, ये ३ ज्ञाता के नाम हैं, "(वेदनशीलः विदुरः)"; विकासी, "और भी विकाशी (न्)" विकस्वरः, "वा विकश्वरः, वा विकाषी (न्) और विकष्वरः, ये २ विकासशील के नाम हैं; ॥ ३० ॥

जानेवाला ।	विसृत्वरो (पु॰स॰न॰) विसृमरः (पु॰स॰न॰) प्रसारी (१पु॰स॰न॰) (च) विसारिणि (२पु॰स॰न॰) ।
सहनशील ।	सहिष्णुः (पु॰स॰न॰) सहनः (पु॰स॰न॰) क्षन्ता (३पु॰स॰न॰) तितिक्षुः (पु॰स॰न॰) क्षमिता (४पु॰स॰न॰) क्षमी (५पु॰स॰न॰) ॥ ३१ ॥
क्रोधी ।	क्रोधनो (पु॰स॰न॰) ऽमर्षणः (पु॰स॰न॰) कोपी (६पु॰स॰न॰)
बड़ा क्रोधी ।	चण्ड-(स्त्व) (पु॰स॰न॰) ऽत्यन्तकोपनः (७पु॰स॰न॰) ।
जागनेवाला ।	जागरूको (पु॰स॰न॰) जागरिता (८पु॰स॰न॰)
निद्रित ।	घूर्णितः (पु॰स॰न॰) प्रचलायितः (पु॰स॰न॰) ॥ ३२ ॥
सोनेवाला ।	स्वप्नक् (९पु॰स॰न॰) शयालु-(पु॰स॰न॰) निद्रालुर् (१०पु॰स॰न॰)
सोया ।	निद्राण-(पु॰स॰न॰) शयितौ (पु॰स॰न॰) (समौ) ।
विमुख ।	पराङ्मुखः (पु॰स॰न॰) पराचीनः (पु॰स॰न॰)
अधोमुखी ।	(स्याद्) अवाङ् (११पु॰स॰न॰) (अप्य्) ऽधोमुखः (पु॰स॰न॰) ॥ ३३ ॥
देवपूजक ।	(देवानञ्चति) देवद्र्यङ् (१२पु॰स॰न॰)
चारों ओर का जानेवाला ।	विष्वद्र्यङ् (१३पु॰स॰न॰) (विष्वगञ्चति)
साथ का जानेवाला ।	(यः सहाञ्चति) सध्र्यङ् (१४पु॰स॰न॰) (स)
तिर्छा जानेवाला ।	(स) तिर्यङ् (१५पु॰स॰न॰) (यस्तिरो ऽञ्चति) ॥ ३४ ॥

१—न्. २—इन्. ३ तृन्. ४—उ. ५—न्. ६—न्. ७ अ—. ८—तृ. ९—क्. १० नि—लु. ११—च्. १२—च्. १३—च्. १४—च्. १५—च्.

विसृत्वरः, विसृमरः, प्रसारी, विसारी, ये ४ विसरणशील के—वा जानेवाले के नाम हैं; सहिष्णुः, सहनः, क्षन्ता, तितिक्षुः, क्षमिता, क्षमी, ये ६ क्षमाशील के नाम हैं; ॥ ३१ ॥ क्रोधनः, अमर्षणः, कोपी "और भी कोपनः" ये ३ कोपशील के नाम हैं, "(अवश्यं कुप्यति कोपी)"; चण्डः, अत्यन्तकोपनः, ये २ अत्यन्त क्रोधशील के नाम हैं; जागरूकः, जागरिता, ये २ जागरणशील के नाम हैं; घूर्णितः, प्रचलायितः, ये २ निद्रा से घूर्णित के नाम हैं, "प्रचलाजाता स्येति प्रचलायितः"; ॥ ३२ ॥ स्वप्नक्, शयालुः, निद्रालुः, ये ३ निद्राशील के नाम हैं, स्वप्नजौ; निद्राणः, "उसी प्रकार निद्रितः" शयितः, ये २ सुप्त के नाम हैं, पराङ्मुखः, पराचीनः, ये २ विमुख के नाम हैं, "(पराञ्चत्यनभिमुखो भवति मुखमस्य पराङ्मुखः)" अवाङ्, "स्त्री॰ अवाची" अधोमुखः, "स्त्री॰ अधोमुखी" ये २ अधोमुख के नाम हैं, "(अवांचत्यधोमुखो भवति अवाङ्)" अवाञ्चौ; ॥ ३३ ॥ जो देवानञ्चति गच्छति पूजयति वा वह देवद्र्यङ् कहलाता है, (एकं), "स्त्री॰ देवद्रीची क्लीब देवद्र्यक्" और जो विष्वगञ्चति अर्थात् चारों ओर से जाता है वह विष्वद्र्यङ् कहलाता है, "स्त्री॰ विष्वद्रीची, क्लीब विष्वद्र्यक् और भी विश्वद्र्यङ् (—च्), —द्रीची, —द्र्यक्" फिर जो सहाञ्चति अर्थात् तुल्य जाता है वह सध्र्यङ् कहलाता है; (एकं) सध्र्यञ्चौ, "स्त्री॰ सध्रीची, क्लीब सध्र्यक्, और भी सम्यङ्, (—च्)", और जो तिरोऽञ्चति गच्छति, अर्थात् तिर्छा जाता है, वह तिर्यङ् कहलाता है, (एकं), "स्त्री॰ तिरश्ची" ॥३४॥

	पुसन पुसन १पुसन
वक्ता ।	वदो वदावदो वक्ता
	पुसन पुसन
बड़ा वक्ता ।	वागीशो वाक्पतिः (समौ) ।
	पुसन २पुसन
नैयायिक ।	वाचोयुक्तिपटु-र्वाग्मी
	पुसन ३पुसन
बहुभाषी ।	वावदूको-(ऽति) वक्तरि ॥ ३५ ॥
	पुसन पुसन पुसन ४पुसन
अवाच्य का कहने वाला ।	(स्यात्) जल्पाक-(स्तु) वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
	पुसन पुसन पुसन
अप्रिय का ।	दुर्मुखे मुखरा-ऽबद्धमुखौ
	पुसन पुसन
प्रियवक्ता ।	शक्नुः प्रियम्वदे ॥ ३६ ॥
	पुसन ५पुसन
जो साफ न बोले ।	लोहलः (स्यात्) अस्फुटवाग्
	६पुसन पुसन
कुवादी ।	गर्ह्यवादी (तु) कद्वदः ।
	पुसन पुसन
दोषवादी ।	(समौ) कुवाद-कुचरौ
	पुसन पुसन
क्रूरवादी ।	(स्याद्) असौम्यस्वरो ऽस्वरः ॥ ३७ ॥
	पुसन पुसन
शब्दकर्त्ता ।	रवणः शब्दनो
	७पुसन पुसन
आशिषसे स्तुति कर्त्ता ।	नान्दीवादी नान्दीकरः (समौ) ।

१–त्तृ. २—न्. ३–त्तृ. ४–च्. ५–च् ६–न्. ७–न्.

वदः, वदावदः, वक्ता, ये ३ वक्ता के नाम हैं; वागीशः, वाक्पतिः, ये २ उत्तम और उग्र बोलनेवाले के नाम हैं; वाचोयुक्तिपटुः, "वा वाचोयुक्तिः, और पटुः", वा गुमी (न्) वाग्मी (न्) ये २ नैयायिक के नाम हैं; वावदूकः, अतिवक्ता, ये २ बहुभाषी के नाम हैं ॥ ३५ ॥ जल्पाकः, "स्त्री॰ जल्पाकी" वाचालः, वाचाटः, बहुगर्ह्यवाक्, ये ४ जो बहुत अवाच्य कहता है उसके नाम हैं; दुर्मुखः, मुखरः, अबद्धमुखः, ये ३ अनर्गल मुख वाले के नाम हैं, "(निन्दितं मुखमस्य मुखरः, न बद्धं नियमितं मुखमस्य अबद्धमुखः)"; शक्नुः, "और भी शक्रः, शक्रः, और शक्तः" प्रियंवदः, ये २ प्रिय बोलनेवाले के नाम हैं, "(शक्नोति वक्तुमिति शक्त इतिस्वामी, शक्रइति सर्वधरः)"; ॥ ३६ ॥ लोहलः, अस्फुटवाक्, ये २ अस्फुट बोलनेवाले के नाम हैं, "(न स्फुटा वागस्यास्फुटवाक्)"; गर्ह्यवादी, कद्वदः, ये २ कुत्सित भाषी के नाम हैं, "(गर्ह्यं निन्दितं वदति गर्ह्यवादी)"; कुवादः, कुचरः, ये २ दोष कथनशील के नाम हैं, "(कुत्सितं चरति कुचरः)"; असौम्यस्वरः, अस्वरः, ये २ काक आदि के स्वर के समान अपस्वर से युक्त के नाम हैं; ॥ ३७ ॥ रवणः शब्दनः, ये २ शब्दशील के नाम हैं; नान्दीवादी, नान्दीकरः, "वा नान्दिकरः" ये २ स्तुति विशेष वादी के नाम हैं, "(नान्दीं वदति तच्छीलः नान्दीवादी, कहा भी है आशीर्वचनसंयुक्तास्तुतिर्यस्मात्प्रवर्त्तते । देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति कीर्त्यते इति, भरतः)"; ।

	पुसन पुसन
महा मूढ़ ।	जडो ऽज्ञ पुसन
गूंगा और बहिरा ।	एडमूक-(स्तु वक्तुं श्रोतुम् शिक्षिते) ॥ ३८ ॥
	पुसन पुसन
चुप रहने वाला ।	तुष्णींशील-(स्तु) तुष्णीको
	पुसन १ पुसन पुसन
नङ्गा ।	नग्नो ऽवासा दिगम्बरे ।
	पुसन पुसन
निकाला ।	निष्कासितो ऽवकृष्टः (स्याद्)
	पुसन पुसन
धिक्कारी ।	अपध्वस्त-(स्तु) धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
	पुसन पुसन
टूटे अहङ्कार के ।	आत्तगर्वो ऽभिभूतः (स्याद्) पुसन पुसन
	दापितः साधितः (समौ) ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन
निरादर किया हुआ ।	प्रत्यादिष्टो निरस्तः (स्यात्) प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
	पुसन पुसन
निकाला हुआ ।	निकृतः (स्याद्) विप्रकृतो
	पुसन पुसन
ठगा गया ।	विप्रलब्ध-(स्तु) वञ्चितः ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन
टूटे मन वाले ।	मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हत-(श्च सः) ॥ ४१ ॥
	पुसन पुसन
निन्दित ।	अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो
	पुसन पुसन पुसन
बंधुआ ।	बद्धे कीलित-संयतौ ।

१—स.

जड़ः, "स्त्री॰ जड़ा" अज्ञः, ये २ अत्यन्त मूढ़ के नाम हैं, "इष्ट और अनिष्ट—सुख और दुःखों को जो मोह से यहां नहीं जानता है और परवश है वह पुरुष यहां जड़ संज्ञक कहलाता है" और जो कहने सुनने के लिये शिक्षित नहीं है वह एड़मूकः कहलाता है, "अनेड़मूकः भी" "(नास्त्येड़ो मूको ऽस्मादिति अनेड़मूकः)" एड़ोवधिरः, "(त्रिलिंगो ऽनेड़मूकः स्याच्छठे वाक् श्रुतिवर्जित इतिरभसः)"; ॥ ३८ ॥ तूष्णीं शीलः, तूष्णीकः, ये २ तूष्णीं भाव से युक्त के नाम हैं, "(तूष्णीं शीलमस्य तूष्णीं शीलः)" नग्नः, अवासाः, दिगम्बरः, ये ३ नग्न के नाम हैं, अवाससौ, निष्कासितः, "निःकासितः भी" अवकृष्टः, ये २ निकाले हुये के नाम हैं; अपध्वस्तः, धिक्कृतः, ये २ निर्भर्त्सित के—या धिक्कारे हुये के नाम हैं; ॥ ३९ ॥ आत्तगर्वः, "आत्तगन्धः भी", अभिभूतः, "और भी अभिहतः" ये २ टूटे अभिमानवाले के नाम हैं, "किसी के मत में ४ ये भी पर्य्याय शब्द हैं"; दापितः, "उसी प्रकार दायितः" इस को दयदाने धातु है, साधितः, ये २ धन आदि के दाता के नाम हैं, "(धनादिकं दापयतीति दापित इति राजमुकुटः)"; प्रत्यादिष्टः, निरस्तः, प्रत्याख्यातः, निराकृतः, ये ४ अनादर किये गये के नाम हैं, ॥ ४० ॥ निकृतः, विप्रकृतः, ये २ निकाले हुये—या विप्रकृत के नाम हैं; विप्रलब्धः, वञ्चितः, ये २ ठगे गये के नाम हैं; मनोहतः, प्रतिहतः, प्रतिबद्धः, हतः, ये ४ हतमनोभंग के नाम हैं, या टूटे मनवाले के नाम हैं, ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्तः, प्रतिक्षिप्तः, ये २ कृताक्षेप के—या निन्दाप्राप्त के नाम हैं, "(कस्यचिच्छौर्य्यादिकं प्रतिस्पर्धमानस्य दुर्वचनमधिक्षेपः, इतिराजमुकुटः)" बद्धः, कीलितः, संयतः, ये ३ रज्जू आदि से नियद्ध या कैदी के नाम हैं; ।

विपत्ति में परा।	पुमन पुमन आपन्न आपत्प्राप्तः (स्यात्)
डरा।	पुमन पुमन कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
अपवादी।	पुमन पुमन पुमन आचारितः चारितो ऽभिशस्ते
चञ्चल।	पुमन पुमन सङ्कसुको ऽस्थिरे।
कष्टित।	पुमन १पुमन व्यसनार्त्तो-परक्तो (द्वौ)
शोकादि से व्याकुल	पुमन पुमन विहस्त-व्याकुलौ (समौ) ॥ ४३ ॥
शोकादि से गात्रभंग।	पुमन पुमन विक्लवो विह्वलः
मरणासन्न बुद्धि।	पुमन पुमन (स्यात्) विवशो ऽरिष्टदुष्टधीः।
बेंत मारने के योग्य।	पुमन पुमन कश्यः कशार्हे
मारने के योग्य।	पुमन २पुमन पुमन सन्नद्धे (त्वा) ततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥
वैर के योग्य।	पुमन पुमन द्वेष्ये (त्व) ऽक्षिगतो
शिरकाटनेकेयोग्य।	पुमन पुमन वध्यः शीर्षच्छेद्य (इमौ समौ)।
माहुरदेनेके योग्य।	पुमन विष्यो (विषेणयो वध्यो)
मूसलसे मारने के योग्य।	पुमन मुसल्यो (मुसलेन यः) ॥ ४५ ॥

१ उ-क्त. २ आ-न्.

आपन्नः, आपत्प्राप्तः, ये २ आपद प्राप्त के नाम हैं, "(आपद्यते स्म आपन्नः)"; कान्दिशीकः, भयद्रुतः, ये २ जो भयभीत होकर कहने लगे कहां जाऊं क्या करूं वा भय से भागे हुये के नाम हैं, "(कांदिशं गच्छामीति चिन्तयन् पलायितः कांदिशीकः)"; ॥ ४२ ॥ आचारितः, चारितः, अभिशस्तः, ये ३ चोरी छिनारा आदि लोकापवाद से दूषित के नाम हैं, "(आचारो मैथुनं प्रत्याक्रोशो जातोस्य आचारितः)" सङ्कसूकः, अस्थिरः, ये २ चल प्रकृति के नाम हैं, "(संकसतीति संकसूकः कसगतौ धातुः)" व्यसनार्त्तः, उपरक्तः, ये २ व्यसनपीड़ित के नाम हैं; विहस्तः, व्याकुलः, ये २ शोक आदि से इतिकर्त्तव्यता में मूढ़ के नाम हैं, "(विक्षिप्तो हस्तो यस्य स विहस्तः)"; ॥ ४३ ॥ विक्लवः, विह्वलः, ये २ शोक आदि से गात्रभंग प्राप्त के नाम हैं, "(विह्वलतीति विह्वलः, ह्वलचलने धातुः)" विवशः, अरिष्टदुष्टधीः, ये २ आसन्न मरण से दूषित बुद्धि के नाम हैं, "(अरिष्टेन दुष्टा धीर्यस्य सः)" कश्यः, कशार्हः, ये २ कशाघात-वा बेंत मारने योग्य के नाम हैं, "वा ताड़न योग्य के नाम हैं"; निकट आकर और बांधकर मारनेवाले को आततायी कहते हैं; (एकं) "आततं यथा तथा ऽयितुं शीलमस्य इति आततायी, अयगतौ धातुः)"; ॥ ४४ ॥ द्वेष्यः, अक्षिगतः, ये २ द्वेषार्ह के नाम हैं, "(द्वेष्टुमर्हः द्वेष्यः)" वध्यः, शीर्षच्छेद्यः, ये २ वध वा मूड़ काटने के योग्य के नाम हैं, "(वधमर्हति वध्यः)"; जो विषसे वध्य है वह विष्यः, कहलाता, है, (एकं) और फिर जो मूसल से वध्य अर्थात् मारने योग्य है वह मुसल्यः, "वा मुषल्यः कहलाता है", (एकं) ॥ ४५ ॥

पुण्यात्मा ।	पुसन १पुसन शिश्विदानो ऽकृष्णकर्म्मा
दोषादिविनाविचारे मारने को उद्यत ।	पुसन २पुसन चपल-श्चिकुर: (समौ) ।
केवल दोषदर्शी ।	३पुसन ४पुसन दोषैकदृक् पुरोभागी
कपटी ।	पुसन पुसन पुसन निकृत-(स्त्व) ऽनृजु: शठ: ॥ ४६ ॥
चुगुल ।	पुसन पुसन कर्णेजप: सूचक: (स्यात्)
दुष्ट ।	पुसन पुसम पुसन पिशुनो दुर्ज्जन: खल: ।
हिंसक ।	पुसन पुसन पुसन पुसन नृशंसो घातुक: क्रूर: पापो
छली ।	पुसन पुसन धूर्त्त-(स्तु) वञ्चक: ॥ ४७ ॥
मूर्ख ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन अज्ञ-मूढ-यथाजात-मूर्ख-वैधेय-बालिशा: ।
कृपण ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन कदर्य्ये-कृपण-क्षुद्र-किम्पचान-मितम्पचा: ॥ ४८ ॥
दरिद्र ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन नि:स्व (स्तु) दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतो (ऽपि स:)
याचक ।	पुसन पुसन पुसन पुसन ५पुसन वनीयको याचनको मार्गणो याचका-ऽर्थिनौ ॥ ४९ ॥

१-न. २ चि-. ३-श. ४-न. ५-न.

शिश्विदान:, अकृष्णकर्मा, "बहुत पढ़ते हैं कृष्णकर्मा (न)" ये २ पुण्यकर्मा के नाम हैं, "शिश्विदान:, कृष्णकर्मा इस पाठ में ये २ पापकर्मा के नाम हैं, यहां श्वितावर्णे धातु है, "(श्वेतितुमिच्छति शिश्विदान:)"; चपल:, चिकुर:, ये २ जो विना विचारे झटपट वध आदि कार्य करता है उसके नाम हैं; दोषैकदृक्, पुरोभागी, ये २ दोषमात्र देखनेवाले के नाम हैं, "(दोष एकस्मिन् दृक् ज्ञानं यस्य स दोषैकदृक्)"; निकृत:, अनृजु:, शठ:, ये ३ कपटी के नाम हैं; "(निकृन्तति इति निकृत:)" "कृतीछेदने धातु:"; ॥ ४६ ॥ कर्णेजप:, सूचक:, ये २ कान में दूसरे की निन्दा करनेवाले के नाम हैं, "वा भूले पदार्थ के बोधक के नाम हैं"; पिशुन:, दुर्ज्जन:, खल:, ये ३ परस्पर भेद करानेवाले के नाम हैं; पिशुन: यह सूचक का पर्य्याय भी है; नृशंस:, घातुक:, क्रूर:, पाप:, ये ४ परद्रोहशील के नाम हैं, "(नृन् शंसति हन्तीति नृशंस:)"; धूर्त्त:, वञ्चक:, ये २ प्रतारणशील के वा छली के नाम हैं, "(धूर्वति हिंसतीति धूर्त्त:)"; ॥ ४७ ॥ अज्ञ:, मूढ:, "और भी मुग्ध:" यथा जात:, मूर्ख:, वैधेय:, "स्त्री॰ वैधेयी" बालिश:, ये ६ मूर्ख के नाम हैं, "(जातं जन्मकालविशेषमनतिक्रम्य वर्त्तते तदस्यास्तीति यथा जात:)"; कदर्य्य:, कृपण:, क्षुद्र:, किम्पचान:, मितंपच: "किसी के मत मे, किम्पच:, और अनमितपच:" ये ५ जो अधर्म से पुत्र दारा आदि को पीड़ा देता हुआ लोभ से धन का संचय करता है उसके नाम हैं, (कुत्सितोऽर्य्य: स्वामी कदर्य्य: न मितं पचोऽमितं पच: तद्भिन्नोऽनमितं पच:)"; ॥ ४८ ॥ नि:स्व:, दुर्विध:, दीन:, दरिद्र:, दुर्गत:, "दुस्थ:" ये ५ दरिद्र के नाम हैं, "(स्वान्निष्क्रांतो नि:स्व:)"; वनीयक:, "वनीपक: भी" याचनक:, मार्गण:, याचक:, अर्थी, ये ५ याचक-वा मांगनेवाले के नाम हैं; ॥ ४९ ॥

अभिमानी ।	१पुस्न २पुस्न अहङ्कारवा नहंयुः (स्यात्)
शुभयुक्त ।	पुस्न पुस्न शुभंयु-(स्तु) शुभान्वितः ।
देवता ।	पुस्न दिव्योपपादुका (देवाः)
मनुष्य पशु आदि ।	पुस्न (नृगवाद्या) जरायुजाः ॥ ५० ॥
कीटादि ।	पुस्न स्वेदजाः (कृमिदंशाद्याः)
पक्षी सर्प्पादि ।	पुस्न (पक्षिसर्प्पादयो) ऽण्डजाः ॥ ५१ ॥
	* * ॥ इति प्राणिवर्गः ॥ * *

१—वत्. २ अ—.

अहङ्कारवान्, अहंयुः, ये २ अहङ्कारी के नाम हैं; शुभंयुः, शुभान्वितः, ये २ शुभयुक्त के नाम हैं; अकस्मात् ये उत्पन्न होते हैं वे उपपादुका कहलाते हैं स्वर्ग में होते हैं वे दिव्याः कहलाते हैं, नारक व्यावृत्यर्थ दिव्य पद है, दिव्य ही उपपादुका दिव्योपपादुका माता और पिता आदि दृष्ट कारण निरपेक्ष दुर्दृष्ट सहकृत गुणों से ज्ञात ये देवता हैं वे दिव्योपपादुका कहलाते हैं, (एकं) नृगवाद्याः जरायुजाः, कहलाते हैं, (एकं) आद्य शब्द से अश्व आदि ग्रहण किये जाते हैं, "(गर्भाशयो जरायुस्ततो जाताः जरायुजाः)" ॥ ५० ॥ कृमिदंश आदि स्वेदजाः कहलाते हैं, (एकं) आद्य शब्द से मशक आदि ग्रहण किये जाते हैं, स्वेद के हेतु होने से उष्मा स्वेद है, उससे उत्पन्न को स्वेदजः कहते हैं, पक्षी सर्प आदि अण्डजाः कहलाते हैं; (एकं), "(अण्डेभ्यो जाता अण्डजाः)" आदि पद से मत्स्य आदि का ग्रहण है, ॥ ५१ ॥

॥ इति प्राणिवर्गः ॥

॥ अथ द्वितीयवर्गः ॥

	पु
वृक्ष-लता-घास-आदि।	उद्भिद (स्तरुगुल्माद्याः)
	१पुसन पुसन २पुसन
	उद्भि दुद्भिज्ज मुद्भिदम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
सुन्दर।	सुन्दरं रुचिरं चारु सुसमं साधु शोभनम् ॥ १ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ।
	पुसन
परम सुन्दर।	(तद) ऽसेचनकं (तृप्ते र्नास्त्यंन्तो यस्य दर्शनात्) ॥ २ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
प्यारा।	अभीष्टे ऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ।
	पुसन पुसन ३पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
अधम।	निकृष्ट-प्रतिकृष्टा-ऽर्व-रेफ-याप्या-ऽवमा-ऽधमाः ॥ ३ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	कुपूय-कुत्सिता-ऽवद्य-खेट-गर्ह्या-ऽणकाः (समाः) ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन
मैली वस्तु।	मलीमसं (तु) मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ॥ ४ ॥

१-द. २ उ-. ३-न्.

तरु-गुल्म-आदि उद्भिदः कहलाते हैं, ये उत्पन्न होते पृथिवी को फोड़ते हैं इसलिये उद्भिदः कहलाते हैं, आद्य शब्द से तृण आदि का ग्रहण है; (एकं) उद्भित्, उद्भिज्जं, "या उद्भिजं" उद्भिदं, ये ३ उद्भिद अर्थात् जो भूमि फोड़कर उत्पन्न होते हैं उनके नाम हैं, सुन्दरं, "स्त्री॰ सुन्दरी, और सुन्दरा" रुचिरं, चारु, सुसमं, "या सुषमं", साधु, शोभनं, ॥ १ ॥ कान्तं, मनोरमं, "और भी मनोहरं, और मनोहारि (न्)" रुच्यं, मनोज्ञं, मंजु, मंजुलं, "सौम्यं, भद्रकं, रम्यं, रमणीयं, और रामणीयकं" ये १२ सुन्दर के नाम हैं, जिस के देखने से दृष्टि और मन की तृप्ति का अन्त नहीं है, और फिर जो बहुबार देखा गया भी अधिक प्रीति को उत्पन्न करता है वह असेचनकं "या आसेचनकं" कहलाता है, ॥ २ ॥ अभीष्टं, अभीप्सितं, हृद्यं, दयितं, वल्लभं, प्रियम, ये ६ प्यारे-या अभीष्ट के या चाहे हुये के नाम हैं, "(अभ्याप्तुमिष्टे स्म अभीप्सितं)" निकृष्टः, प्रतिकृष्टः, अर्वा, रेफः, "या रेपः, (रेपःस्यान्निन्दिते क्रूर इति विश्वः)" याप्यः, अवमः, "अरमः, भी", अधमः, ॥ ३ ॥ कुपूयः, "कपूयः भी" कुत्सितः, अवद्यः खेटः, गर्ह्यः, अणकः, "या आणकः, और भी अनकः" ये १३ अधम के नाम हैं, "(खेटति त्रासयतीति खेटः)" अर्वा नान्त हैं, अर्वन्तौ; मलीमसं, मलिनं, कच्चरं, मलदूषितं, ये ४ अपवित्र के नाम हैं या मलयुक्त के नाम हैं, "(कुत्सितं चरति कच्चरम्)" ॥ ४ ॥

	पुसन पुसन पुसन
पवित्र-वा साफ़ ।	पूतं पवित्रं मेध्यं (च)
	पुसन पुसन
स्वभाव से पवित्र ।	वीध्रं (तु) विमला (त्मकम्) ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन १पुसन
मलरहित ।	निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्य मनवस्करम् ॥ ५ ॥
	पुसन पुसन
निर्बल ।	असारं फल्गु
	पुसन पुसन पुसन पुसन
खाली ।	शून्य-(न्तु) वशिकं तुच्छ-रिक्तके ।
	न पुसन पुसन पुसन २पुसन
मुख्य ।	(क्लीबे) प्रधानं प्रमुख-प्रवेका-ऽनुत्तमो-त्तमाः ॥ ६ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	मुख्य-वर्य्य-वरेण्या-(श्च) प्रवर्हो ऽनवरार्द्ध्य (वत्) ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन ३पुसन
	परार्द्ध्या-ऽग्र-प्राग्रहर-प्राग्र्या-ऽग्र्या-ऽग्रीय-मग्रियम् ॥ ७ ॥
	४पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
श्रेष्ठ ।	श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः (स्यात्) सत्तम-(श्चा) ऽतिशोभने ।
	पु पु ५पु पु
श्रेष्ठार्थवाचक ।	(स्युरुत्तरपदे) व्याघ्र-पुंगव-र्षभ-कुञ्जराः ॥ ८ ॥
	पु पु पु
	सिंह-शार्दूल-नागा (द्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः) ।

१ अ–. २ उ–. ३ अ–. ४–यस्. ५ ऋ–.

पूतं, पवित्रं, मेध्यं, ये ३ पवित्र के नाम हैं; वीध्रं, विमलं, ये २ स्वभाव से निर्मल के नाम हैं, "विमलात्मकं, और विमलार्थकं, ये भी पाठ हैं; निर्णिक्तं, शोधितं, मृष्टं, निःशोध्यं, अनवस्करं, ये ५ जिनके मल दूर किये गये हैं उनके नाम हैं; ॥ ५ ॥ असारं, फल्गु, ये २ निर्बल के नाम हैं; शून्यं "वा शुन्यं" वशिकं, तुच्छं, रिक्तकं, ये ४ रिक्त–वा खाली के नाम हैं; प्रधानं, प्रमुखः, प्रवेकः, अनुत्तमः, उत्तमः, ॥६॥ मुख्यः, "और भी मुखः", वर्य्यः, वरेण्यः, प्रवर्हः, अनवरार्द्ध्यः, परार्द्ध्यः, अग्रः, प्राग्रहरः, प्राग्र्यः, अग्र्यः, अग्रीयः, अग्रियः, "और भी अग्रणः,–णी–णि", ये १७ प्रधान के नाम हैं; "(मुखमिव मुख्यः)" "(अवरस्मिन्नर्द्धेभवः, अवरार्द्ध्यःन अवरार्द्ध्यः अनवरार्द्ध्यः)" इनमें प्रधान शब्द नित्य क्लीब है, पूर्वोत्तर शब्द तुल्यार्थक हैं, यह वत् से ज्ञापित है, ॥ ७ ॥ श्रेयान्, श्रेष्ठः, पुष्कलः, सत्तमः, अतिशोभनः, ये ५ अत्यन्त शोभन के नाम हैं; "(अतिशयेन सन् सत्तमः)" श्रेयांसौ ; ये व्याघ्र आदि शब्द उत्तर पद में वर्त्तमान होंय तो श्रेष्ठार्थ के वाचक हैं, जैसे पुरुषोयं व्याघ्र इव शूरः, पुरुषव्याघ्रः, अर्थात् पुरुष श्रेष्ठ इत्यर्थः, "मुनिपुंगवः, पुरुषर्षभः, मनुष्यकुञ्जरः, नृपसिंहः, नृपशार्दूलः, आदि", आदि शब्द से सोम चन्द्र, मुख, आदि का ग्रहण है, क्योंकि व्याघ्रादि आकृतिगण है, और उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे इस सूत्र से विशेष्य के पूर्व्व निपात होने पर व्याघ्र आदिक को उत्तरपदत्व है, ॥ ८ ॥

	पुसन न १न
अप्रधान।	अप्राग्र्यं (द्वयहीने द्वे) अप्रधानो-पसर्ज्जने ॥ ९ ॥
	पुसन पुसन २पुसन ३पुसन पुसन ४पुसन
विस्तीर्ण।	विशङ्कटं पृथु बृह द्विशालं पृथुलं महत्।
	पुसन ५पुसन पुसन
	वड्रो रु विपुलं
	पुसन ६पुसन पुसन पुसन
मोटा।	पीन-पीव्नी (तु) स्थूल-पीवरे ॥ १० ॥
	पुसन पुसन पुसन
थोड़ा।	स्तोका-ऽल्प-चुल्लकाः
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
सूक्ष्म:वा महीं।	सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु।
	स स पु पु पु ७पु
	(स्त्रियां) मात्रा त्रुटी (पुंसि) लव-लेश-कणा-ऽणव: ॥११॥
	पुसन पुसन ८पुसन ९पुसन १०पुसन
बहुत थोड़ा।	अत्यल्पे ऽल्पिष्ठ मल्पीय: कणीयो ऽणीय (इत्यपि)।
	पुसन पुसन पुसन ११पुसन पुसन पुसन
अधिक।	प्रभूतं प्रचुरं प्राज्य मदभ्रं बहुलं बहु ॥ १२ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन १२पुसन पुसन
	पुरहं पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूय-(श्च) भूरि (च)।
	पुसन
सौ से अधिक।	पर:शता (द्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्) ॥ १३ ॥

१ उ-. २-त्. ३ वि-. ४-त्. ५ उ-. ६-न्. ७-गु. ८ अ-स्. ९-स्. १०-स्. ११ अ-. १२-स्.

अप्राग्र्यं, अप्रधानं, उपसर्ज्जनम्, ये ३ अप्रधान के नाम हैं. "(प्राग्र्याक्षिचमप्राग्र्यम्)" और इनमें अप्रधान, और उपसर्ज्जन ये २ द्वयहीने, अर्थात् द्वय स्त्रीपुंसौ ताभ्यां हीने क्लीबे इत्यर्थ:. ॥ ९ ॥ विशङ्कटं, "स्त्री॰ विशङ्कटा, वा-टी", पृथु, बृहत्, विशालं, पृथुलं, महत्, वड्रं, "और भी" वर्भ्र, उरु, विपुलं, ये ९ विस्तीर्ण वा फैले के नाम हैं; पीनं, पीव, "स्त्री॰ पीवरी" स्थूलं, पीवरं, ये ४ स्थूल के नाम हैं, ॥ १० ॥ स्तोक:, अल्प:, चुल्लक:, ये ३ अल्प के नाम हैं; सूक्ष्मं, श्लक्ष्णं, दभ्रं, कृशं तनु, मात्रा, त्रुटी, "वा त्रुटि:" लव:, लेश:, कण:, "और भी स्त्री॰ कणी, वा कणीका", अणु:, ये ११ सूक्ष्म के नाम हैं, और स्तोक शब्द से लेकर अणु शब्द पर्य्यन्त किसी के मत में एकार्थक हैं; ॥ ११ ॥ अत्यल्पं, अल्पिष्ठं, अल्पीय:, कणीय:, "और भी कनीय:", अणीय:, ये ५ अत्यल्प के नाम हैं; प्रभूतं, प्रचुरं, प्राज्यं, अदभ्रं, बहुलं, बहु, ॥ १२ ॥ पुरहं, "उसी प्रकार पुरुहं"; पुरु, भूयिष्ठं, स्फारं, "स्फिरं यह भी" भूय:, "और भी भूमन्" भूरि, ये १२ बहुत अर्थात् बहुत के नाम हैं, जिन संख्येयों की संख्या शत और सहस्र से पर अर्थात् अधिक है वे क्रम से पर:शता:, और पर:सहस्रा:, कहलाते हैं, (एकैकं), "विशेष्यनिघ्नस्य से वाच्यलिङ्गता है, जो जैसे है. पर:शतानां विदुषां समाज इति"; "पर:शत:-ता,-तं, क्लीब परंशतं, अधिक पर:सहस्र:, "(परं सहस्रं. परोसहस्र:)", इत्यादि ॥ १३ ॥

	पुसन पुसन
गिनने के योग्य ।	गणनीये (तु) गणेयं
	पुसन पुसन
गिना ।	संख्याते गणितम्
	पुसन पुसन
सब ।	(अथ) समं सर्वम् ।
	पुसन १पुसन पुसन पुसन पुसन २पुसन पुसन
	विश्वमशेषं कृत्स्न-समस्त-निखिला-ऽखिलानि निःशेषम् १४
	पुसन पुसन पुसन ३पुसन पुसन
	समग्रं सकलं पूर्ण मखण्डं (स्याद्) अनूनके ।
	पुसन पुसन पुसन
सघन वा गझिन ।	घनं निरन्तरं सान्द्रं
	पुसन पुसन पुसन
विरल-वा अलग२।	पेलवं विरलं तनु ॥ १५ ॥
	पुसन पुसन ४पुसन पुसन पुसन
समीप-वा पास ।	समीपे निकटा-सन्न-सन्निकृष्ट-सनीड (वत्) ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	सदेशा-ऽभ्यास सविधः समर्य्याद सवेश (वत्) ॥ १६ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन अ
	उपकण्ठा-ऽन्तिका-ऽभ्यर्णा-ऽभ्यग्रा (अप्य) ऽभितो (ऽव्ययम्) ।
	पुसन पुसन ५पुसन
संयुक्त-वा मिला ।	संसक्ते (त्व) ऽव्यवहित मपटान्तर (मित्यपि) ॥ १७ ॥
	पुसन पुसन
अति निकट ।	नेदिष्ठ मन्तिकतमं
	पुसन पुसन
दूर ।	(स्याद्) दूरं विप्रकृष्टकम् ।

१ अ- २ अ-ल. ३ अ-. ४ आ-. ५ अ-.

गणनीयं, गणेयं, "वा गण्येयं" ये २ गणने के योग्य-वा शक्य के नाम हैं; संख्यातं गणितं, ये २ जिसकी संख्या की गई है उसके नाम हैं; समं, सर्वं, विश्वं, अशेषं, कृत्स्नं, समस्तं, निखिलं, अखिलं, निःशेषं, ॥ १४ ॥ समग्रं, सकलं, पूर्णं, "उसी प्रकार पूर्वं यह भी पाठ है" अखण्डं, अनूनकं, "वा अनूनं" ये १४ समग्र-वा सम्पूर्ण के नाम हैं; घनं, निरन्तरम्, सान्द्रं, ये ३ निबिड़-वा सघन वा गझिन के नाम हैं, "(निर्गतमन्तरमस्मात्तन्निरन्तरम्)"; पेलवं, विरलं, तनु, ये ३ विरल-वा अलग २ के नाम हैं; ॥ १५ ॥ समीपः, निकटः, आसन्नः, सन्निकृष्टः, सनीड़ः, सदेशः, अभ्यासः, "वा अभ्याशः" सविधः, समर्य्यादः, सवेशः, "और भी सवेधः" ॥ १६ ॥ उपकण्ठः, अन्तिकः, अभ्यर्णः, अभ्यग्रः, अभितः, ये १५ समीप के नाम हैं; इनमें अभितः अव्यय है, "(समानं नीड़ं वासस्थानमस्य सनीड़ः, उपगतः कण्ठः सामीप्यमस्य उपकण्ठः)"; संसक्तं, अव्यवहितं, अपटान्तरम्, "उसी प्रकार अपटान्तरम्" ये ३ संलग्न-वा मिले के नाम हैं, "(न व्यवधीयते स्मेत्यव्यवहितम्)"; ॥ १७ ॥ नेदिष्ठं, अन्तिकतमं, "और भी अन्तिमं" ये २ अति निकट के नाम हैं, दूरं, विप्रकृष्टकम्, "और विप्रकृष्टं" ये २ दूर के नाम हैं; ।

अति दूर ।	१ पुसन पुसन पुसन दवीय-(श्च) दविष्ठ-(ञ्च) सुदूरं
लम्बा ।	पुसन २पुसन दीर्घ मायतम् ॥ १८ ॥
गोल ।	पुसन पुसन पुसन वर्तुलं निस्तलं वृत्तं
झुका हुआ ऊंचा ।	पुसन ३पुसन बन्धुरं (तू) न्नतानतम् ।
ऊंचा ।	पुसन पुसन ४पुसन ५पुसन ६पुसन ७पुसन उच्च-प्रांशू-न्नतो-दग्रो-च्छ्रिता-स्तुङ्गे
छोटा ।	पुसन (ऽथ) वामने ॥ १९ ॥ पुसन८पुसन पुसन पुसन न्यङ्नी च-खर्व-ह्रस्वाः (स्युर्)
औंधे मुख ।	पुसन पुसन ९पुसन अवाग्रे ऽवनतानतम् ।
टेढ़ा ।	पुसन पुसन पुसन १० पुसन पुसन पुसन अरालं वृजिनं जिह्म मूर्म्मिम त्कुञ्चितं नतम् ॥ २० ॥ पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्र (मित्यपि)
सीधा ।	११ पुसन १२ पुसन पुसन ऋजाव जिह्म-प्रगुणौ
आकुल ।	पुसन १३पुसन १४पुसन व्यस्ते (त्व) प्रगुणा-कुलौ ॥ २१ ॥
नित्य ।	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन शाश्वत-(स्तु) ध्रुवो नित्य-सदातन-सनातनाः ।

१-सु. २ आ-. ३ उ-. ४ उ-. ५ उ-. ६ उ-. ७ तु-. ८ नीच. ९ आ-. १० ऊ-त्.
११-ऋ. १२ अ-. १३ अ-. १४ आ-.

दवीयः, दविष्ठं, सुदूरं, ये ३ अत्यन्त दूर के नाम हैं, दवीयांसि; दीर्घं, आयतं, ये २ दीर्घ-वा लंबाई के नाम हैं; ॥ १८ ॥ वर्तुलं, निस्तलं, वृत्तं, ये ३ वर्तुल-वा गोल के नाम हैं; जो स्वभाव से ऊंचा और किसी उपाधि के कारण कुछ झुका है उसे वन्धुरं, "वा बन्धूरं भी" और उन्नतानतं, कहते हैं, (तुयं) उच्चः, प्रांशुः, उन्नतः, उदग्रः, उच्छ्रितः, तुङ्ग, "और भी उत्तुङ्गः" ये ६ उन्नत के-वा ऊंचे के नाम हैं, "(उच्चैस्त्यमस्य उच्चः, उन्नति स्म उन्नतः)"; वामनः, ॥ १९ ॥ न्यक्, "न्यङ्, स्त्री० नीची, क्लीब न्यक्" नीचः, खर्वः, "वा खर्वः, भी" ह्रस्वः, ये ५ ह्रस्व-वा छोटे के नाम हैं, न्यक् चान्त है; अवाग्रं, अवनतं, आनतं, "और भी नतं" ये ३ अधोमुख के नाम हैं, "(अवनतमग्रमस्य अवाग्रं)"; अरालं, वृजिनं, जिह्मं, ऊर्मिमत्, कुञ्चितं, नतं, ॥ २० ॥ आविद्धं, कुटिलं, भुग्नं, वेल्लितं, वक्रं, ये ११ वक्र-वा टेढ़े के नाम हैं, "(कुटिं कौटिल्यं लाति गृह्णातीति कुटिलम्)"; ऋजुः, अजिह्मः, प्रगुणः, ये ३ अवक्र-वा सीधे के नाम हैं, "(जिह्मो न जिह्मः अजिह्मः)"; व्यस्तः, अप्रगुणः, आकुलः, ये ३ आकुल के नाम हैं, "(प्रगुणः न अप्रगुणः)"; ॥ २१ ॥ शाश्वतः, ध्रुवः, नित्यः, सदातनः, सनातनः, ये ५ नित्य-वा ध्रुव के नाम हैं, "(शश्वद्भवः शाश्वतः)"; ।

	पुसन पुसन १पुसन
अति स्थिर ।	स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेयान्
	(एकरूपतया तु यः) ॥ २२ ॥
	पुसन
स्थिर ।	(कालव्यापी स) कूटस्थः पुसन पुसन
वृक्ष आदि ।	स्थावरो जङ्गमेतरः ।
	पुसन २पुसन पुसन पुसन ३पुसन पुसन
चलनेवाले ।	चरिष्णु-जङ्गम-चर-त्रस मिङ्ग-चराचरम् ॥ २३ ॥
	पुसन पुसन पुसन
कांपनेवाले ।	चलनं कम्पनं कम्प्रं पुसन पुसन पुसन
चंचल ।	चलं लोलं चलाचलम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन
	चञ्चलं तरलं (चैव) पारिप्लव-परिप्लवे ॥ २४ ॥
	पुसन पुसन
अधिक ।	अतिरिक्तः समधिको पुसन पुसन
बड़ा मिलापी ।	दृढसन्धि-(स्तु) संहतः ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
कठिन ।	कक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ २५ ॥
	पुसन ४पुसन ५पुसन
	जठरं मूर्तिम न्मूर्तं पुसन पुसन ६पुसन
बहुत बढ़े हुये ।	प्रवृद्धं प्रौढ मेधितम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
पुराने ।	पुराणे प्रतनं प्रत्न-पुरातन-चिरन्तनाः ॥ २६ ॥

१–स्. २ ज–. ३ ङ्गं–. ४–त्. ५ मू–. ६ ए–.

स्थास्नुः, स्थिरतरः, स्थेयान्, ये ३ अति स्थिर के नाम हैं, "(स्थानशीलः स्थास्नुः)" स्थेयांसि; जो एकरूपता से अर्थात् एकही स्वभाव से काल का व्यापक आकाश आदि है वह कूटस्थः कहलाता है, "(कूटो निश्चलः सन् तिष्ठतीति कूटस्थः)"; स्थावरः, जंगमेतरः, ये २ अचर वा वृक्ष आदि के नाम हैं; चरिष्णुः, जंगमं, चरं, त्रसं, इंगं, चराचरम्, ये ६ चर वा चलनेवाले के नाम हैं, "(चरणशीलः चरिष्णुः)"; ॥ २३ ॥ चलनं, कम्पनं, कम्प्रं, "और भी चपलं, और चटलं" ये ३ कंपनशील के नाम हैं, चलं, लोलं, चलाचलं, चञ्चलं, तरलं, पारिप्लवं, परिप्लवं, ये ७ चंचल के नाम हैं; ॥ २४ ॥ अतिरिक्तः, समधिकः, ये २ अधिक—वा बढ़े हुये के नाम हैं, "(सम्यगधिकः, समधिकः)"; दृढसन्धिः, संहतः, ये २ पक्के मेलवाले के नाम हैं, कक्खटं, "और भी खक्खटं" कठिनं, क्रूरं, कठोरं, "वा कठोलं" निष्ठुरं, दृढं, ॥ २५ ॥ जठरं, "स्त्री॰ जठरा, और भी जरठः,–ठा,–ठं", मूर्त्तिमत्, मूर्त्तं, ये ६ कठिन के नाम हैं, "(मूर्त्तिः काठिन्यमस्यास्तीति मूर्त्तिमत्)"; प्रवृद्धं, प्रौढं, एधितं, ये ३ बहुत बढ़े हुये के नाम हैं; पुराणं, "स्त्री॰ पुराणा, वा–णी" प्रतनं, प्रत्नं, पुरातनं, चिरंतनं, ये ५ पुरातन—वा प्राचीन के नाम हैं; ॥ २६ ॥

पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
नया । प्रत्यग्रो ऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
पुसन
नूत्न-(श्च) पुसन पुसन पुसन पुसन
कोमल । सुकुमारं (तु) कोमलं मृदुलं मृदु ॥ २७ ॥
१पुसन २पुसन ३पुसन पुसन
पीछे । अन्वग न्वक्ष मनुगे ऽनुपदं (क्लीब मव्ययम्) ।
पुसन पुसन
प्रत्यक्ष । प्रत्यक्षं (स्याद्) ऐन्द्रियकम्
पुसन ४पुसन
अप्रत्यक्ष । अप्रत्यक्ष मतीन्द्रियम् ॥ २८ ॥
पुसन पुसन ५पुसन ६पुसन
एकाग्रचित्त । एकतानो ऽनन्यवृत्ति-रेकाग्र-कायना (अपि) ।
७पुसन पुसन ८पुसन
(अप्ये) कसर्ग एकाग्र्यो (ऽप्ये) कायनगतो (ऽपि च) ॥ २९ ॥
९पुसन पुसन पुसन पुसन १०पुसन
आदि । पुंस्यादिः पूर्व्व-पौरस्त्य-प्रथमा-द्या
(अथा स्त्रियाम्) ।
पुसन पुसन पुसन ११पुसन पुसन पुसन
अन्त । अन्तो जघन्यं चरम मन्त्य-पाश्चात्य-पश्चिमाः ॥ ३० ॥
पुसन पुसन
व्यर्थ । मोघं निरर्थकं पुसन पुसन पुसन १२पुसन
साफ़ । स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्त मुल्वणम् ।

१-च. २ अ-. ३ अ-. ४ अ-. ५ ए-. ६ए-न. ७ ए-. ८ ए-. ९ प्रादि. १० आद्य. ११ अ-. १२ उ-.

प्रत्यग्रः, अभिनवः, नव्यः, नवीनः, नूतन, नवः, नूत्नः, ये ७ नूतन-या नये के नाम हैं, "(प्रतिनवमग्रमस्येति प्रत्यग्रः)" सुकुमारं, कोमलं, मृदुलं, मृदु, ये ४ कोमल के नाम हैं, ॥ २७ ॥ अन्वक्, "अन्वीची, अन्वङ्", अन्वक्षं, अनुगं, अनुपदं, ये ४ पश्चात् इस अर्थ में षष्ठ्यर्थाभाव समास से क्लीब और अव्यय हैं, "(पदस्य पश्चादनुपदम्)"; प्रत्यक्षं, "उसी प्रकार समक्षं, भी" ऐन्द्रियकं, ये २ इन्द्रिय से ग्राह्य के नाम हैं, "(इन्द्रियेणानुभूतं ऐन्द्रियकं)" अप्रत्यक्षं. "और भी अनध्यक्षं, उसी प्रकार परोक्षं", अतीन्द्रियं, ये २ इन्द्रियों से अग्राह्य जो धर्म आदिक हैं उनके नाम हैं; ॥ २८ ॥ एकतानः, अनन्यवृत्तिः, एकाग्रः, एकायनः, एकसर्गः, एकाग्र्यः, एकायनगतः, ये ७ एकाग्र के नाम हैं, "(एकं तानयतीति एकतानः) तनुश्रद्धोपकरणयोः धातुः"; ॥ २९ ॥ आदिः, पूर्व्वः, पौरस्त्यः, प्रथमः, आद्यः, "और भी आदिमः, और [illegible]" ये ५ आदि के नाम हैं, "(आ प्रथमं दीयते गृह्यते इति आदिः)" तत्रादिः पुंल्लिंग; अन्तः, जघन्यं, चरमं, अन्त्यं, पाश्चात्यं, पश्चिमं, ये ६ अन्त के नाम हैं, इनमें अन्त शब्द पुं नपुंसक भी है, जैसे स्वच्छन्दा स्त्री कुलस्यान्तः, "पाठ पढ़ते हैं, पाश्चात्त्यः, और भी पश्चिमः" ॥ ३० ॥ मोघं, निरर्थकं, ये २ व्यर्थ के नाम हैं, "(निर्गतो ऽर्थो यस्मात्तन्निरर्थकं)"; स्पष्टं, स्फुटं, प्रव्यक्तं, उल्बणं, ये ४ स्पष्ट के नाम हैं; ।

साधारण ।	पुसन न साधारणं (तु) सामान्यम्
असहाय ।	१पुसनं २पुसन पुसनं एकाकी (त्वे) क एककः ॥ ३१ ॥
भिन्न ।	पुसनं पुसन पुसन पुसन पुसन ३पुसन भिन्ना (र्थका) अन्यतर एक स्त्वो-ऽन्ये-तरा (वपि) ।
बहुत प्रकार का ।	पुसनं पुसनं उच्चावचं नैकभेदम्
जल्दी ।	पुसनं ४पुसनं उच्चण्ड मविलम्बितम् ॥ ३२ ॥
मर्मभेदी ।	पुसनं ५पुसनं अरुन्तुद-(स्तु) मर्म्मस्पृग्
अबाध ।	पुसनं पुसन अबाध (न्तु) निरर्गलम् ।
उलटा ।	पुसनं पुसनं पुसन ६पुसनं प्रसव्यं प्रतिकूलं (स्याद्) अपसव्य मपष्ठु (च) ॥ ३३ ॥
बायां अंग ।	पुसनं पुसनं वामं (शरीरं) सव्यं (स्याद्)
दहिना ।	पुसनं पुसन अपसव्यं (तु) दक्षिणम् ।
संकठ ।	पुसन पु सङ्कटं (ना तु) सम्बाधः
दुःप्रवेश ।	पुसन पुसनं कलिलं गहनं (समे) ॥ ३४ ॥
संकुल ।	पुसनं पुसन ७पुसनं सङ्कीर्णं सङ्कुला-कीर्णे
मूड़ा ।	पुसन पुसनं मुण्डितं परिवापितम् ।

१-न्. २ एकं. ३ हूं-र. ४ अ-. ५-शृ. ६ अ-. ७ आ-.

साधारणं, "स्त्री॰ साधारणी,-णा" सामान्यं, ये २ एक भी अनेक सम्बन्धि साधारण के नाम हैं, जातिवाची सामान्य तो क्लीब ही है; एकाकी, एकः, एककः, ये ३ असहाय के नाम हैं; ॥ ३१ ॥ भिन्नः, अन्यतरः, "एकतरः भी पाठ है" एकः, त्वः, "और भी त्व, और त्वत्" अन्यः, इतरः, ये ६ भिन्नार्थक हैं-वा भिन्नार्थ के वाचक हैं, त्व शब्द सर्व्व शब्द के तुल्य है, त्वौ, त्वे; उच्चावचं, नैकभेदं, ये २ बहुविध के नाम हैं, उच्चण्डं, अविलम्बितम्, "वा अविलम्बनम्" ये २ तूर्ण वा जल्दी के नाम हैं, ॥ ३२ ॥ अरुंतुदः, मर्म्मस्पृक्, ये २ मर्मभेदी के नाम हैं, मर्म्मस्पृशौ; अबाधं, निरर्गलम्, ये २ निर्बाध के नाम हैं-वा बाधारहित के नाम हैं, "(न बाधाऽस्य अबाधं)"; प्रसव्यं, प्रतिकूलं, अपसव्यं, अपष्ठु, ये ४ विपरीत के नाम हैं, "(प्रगतं सव्यात्प्रसव्यम्)" ॥ ३३ ॥ जो वाम शरीर है वह वामं, और सव्यं कहलाता है, (द्वयं); और जो दक्षिण शरीर है वह अपसव्यं, "वा अवसव्यं" और दक्षिणं कहलाता है, (द्वयं); सङ्कटं, सम्बाधः, ये २ अल्प अवकाश वाले रस्ते आदि के नाम हैं; कलिलं, गहनं, ये २ दुःख से साध्य रस्ते आदि के नाम हैं, जैसे, गहनं शास्त्रं, दुर्ज्ञानमित्यर्थः, ॥ ३४ ॥ सङ्कीर्णं, सङ्कुलं, आकीर्णं, "और शङ्कीर्णं, भी" ये ३ जन आदि से अत्यन्त मिश्रित के नाम हैं, जैसे, सङ्कीर्णवर्गः. "किसी के मत में तो ये सब पूर्व्व के पर्य्याय हैं, सङ्कीर्णक्षपिपलीनाम् इस प्रयोग से"; मुण्डितं, परिवापितं, ये २ मूंड़न किये हुये के नाम हैं; ।

गठियाया ।	पुसन पुसन पुसन ग्रन्थितं सन्दितं दृब्धं
फैला ।	पुसन पुसन पुसन विसृतं विस्तृतं ततम् ॥ ३५ ॥
भूला ।	पुसन पुसन अन्तर्गतं विस्मृतं (स्यात्)
प्राप्त ।	पुसन पुसन प्राप्त-प्रणिहिते (समे) ।
कंपा ।	पुसन पुसन १पुसन पुसन २पुसन पुसन वेल्लितं प्रेंखिता-धूत-चलिता-कम्पिता धुते ॥ ३६ ॥
भेजा ।	पुसन पुसन पुसन पुसन ३पुसन पुसन ४पुसन नुत्त-नुन्ना-ऽस्त-निष्ठ्यूता-विद्ध-क्षिप्ते-रिताः (समाः) ।
घिरा ।	पुसन पुसन परिक्षिप्तं (तु) निवृतं
चुराया ।	पुसन ५पुसन मूषितं मुषिता (ऽर्थकम्) ॥ ३७ ॥
फैला ।	पुसन पुसन प्रवृद्ध-प्रसृते
फेंका ।	पुसन पुसन न्यस्त-निसृष्टे
गुणा ।	पुसन ६पुसन गुणिता-हते ।
बढ़ा ।	पुसन ७पुसन निदिग्धो-पचिते
छिपा ।	पुसन पुसन गूढ-गुप्ते
धूलि लगा ।	पुसन पुसन गुण्डित-रूषिते ॥ ३८ ॥
रसीला ।	पुसन पुसन द्रुता-ऽवदीर्णे
उठाया ।	पुसन ८पुसन उद्गूर्णो-द्यते
छींका में धरा ।	पुसन पुसन काचित-शिक्यिते ।

१ आ-. २ आ-. ३ आ-. ४ ई-. ५-त. ६ आ-. ७ उ-. ८ उ-.

ग्रन्थितं, "वा ग्रथितं, और भी गुम्फितं, और गुफितं" सन्दितं, "वा मर्दितं, उसी प्रकार मथितं" दृब्धं, ये ३ गुम्फित के-वा गुथे हुये के नाम हैं; विसृतं, विस्तृतं, ततं, ये ३ फैले हुये के नाम हैं, (विस्तीर्यते स्म विस्तृतम्)"; ॥ ३५ ॥ अन्तर्गतं, विस्मृतं, ये २ विस्मृत वा भूल के नाम हैं वा भूले विषय के नाम हैं; प्राप्तं, "और व्याप्तं" प्रणिहितं, ये २ मिले हुये वस्तु के नाम हैं, "प्राप्यते स्म प्राप्तं"; वेल्लितः, प्रेंखितः, आधूतः, चलितः, आकंपितः, धुतः, ये ६ थोड़े कम्पित के नाम हैं, "(वेल्ल्यते स्म वेल्लितः)", ॥ ३६ ॥ नुत्तः, नुन्नः, अस्तः, निष्ठ्यूतः, "वा निष्ठ्यूत" आविद्धः, क्षिप्तः, ईरितः, ये ७ प्रेरित के नाम हैं, "(नुद्यते स्म नुत्तः)"; परिक्षिप्तं, निवृतं, ये २ प्राकार आदि से चारों ओर वेष्टित-वा घेरे हुये के नाम हैं, "(निव्रीयते स्म निवृतम्, वृञ् वरणे धातुः)"; मूषितं, मुषितं, ये २ चोरित या चुराये हुए प्रसिद्ध के नाम हैं, "(मुष्यते स्म मुषितं)"; ॥ ३७ ॥ प्रवृद्धं, प्रसृतं, ये २ फैले हुये के नाम हैं, "(प्रसरति स्म प्रसृतं)" न्यस्तं, निसृष्टं, ये २ निक्षिप्त के-वा धरेगये के नाम हैं, "(निसृज्यते स्म निसृष्टं, सृज विसर्गे धातुः)" गुणितं, आहतं, ये २ गुणे हुये के नाम हैं, "(जैसे, पंचभिराहताश्चत्वारो विंशतिः)" निदिग्धं, उपचितं, ये २ समृद्ध के-वा बढ़े हुये के नाम हैं, "(निदिह्यते स्म निदिग्धं)" "(दिहउपचये धातुः)" गूढं, गुप्तं, ये २ गोपनयुत के-वा गुप्त वस्तु के नाम हैं, "(यथा मंत्रा गुप्ता विधातव्याः)" गुण्डितं, "वा गुण्ठितं गुडवेष्टने" रूषितं, ये २ धूलि से लिप्त के नाम हैं, ॥ ३८ ॥ द्रुतं, अवदीर्णं, ये २ द्रवीभूत के-वा पिघले हुये पदार्थ के नाम हैं; उद्गूर्णं, उद्यतं, ये २ उत्तोलितस्य शस्त्रादेः-वा उठाये हुये शस्त्र आदि के नाम हैं; काचितं, शिक्यितं, ये २ छींके में रक्खे पदार्थ के नाम हैं; ।

सूंघा।	पुसन पुसन घ्राण-घ्राते
चन्दन आदि लगा।	पुसन पुसन दिग्ध-लिप्ते
कूप आदि से निकाला।	पुसन १पुसन समुदक्तो-द्धृते (समे) ॥ ३९ ॥
नदी आदिसे घिरा	पुसन पुसन पुसन पुसन २पुसन वेष्टितं (स्यात्) वलयितं सम्वीतं रुद्धमा वृतम् ।
टूटे।	पुसन पुसन रुग्न-भुग्ने
तीखे।	पुसन पुसन ३पुसन पुसन (ऽथ) निशित-क्ष्णुत-शातानि तेजिते ॥ ४० ॥
पके।	पुसन पुसन (स्याद्) विनाशो न्मुखं पक्वं
लज्जित।	पुसन पुसन पुसन ह्रीण-ह्रीतौ-(तु) लज्जिते।
वरण किये।	पुसन पुसन पुसन वृत्ते (तु) वृत-वावृत्तौ
मिलाये।	पुसन पुसन संयोजित उपाहितः ॥ ४१ ॥
मिलने के योग्य।	पुसन पुसन पुसन प्राप्यं गम्यं समासाद्यं
बहते।	पुसन पुसन पुसन पुसन स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुतम् ।
जोड़ेहुये।	पुसन पुसन सङ्गूढः (स्यात्) सङ्कलितौ
निन्दित।	पुसन पुसन ऽवगीतः ख्यातगर्हणः ॥ ४२ ॥

१ उ–. २ आ–. ३ शात.

घ्राणं, घ्रातं, ये २ नासिका से ग्रहण किये पुष्प आदि के मर्हक के नाम हैं; दिग्धं, लिप्तं, ये २ विलिप्त के–वा तेल आदि के मलने के नाम हैं; समुदक्तं, उद्धृतं, ये २ कूप आदि से निकाले हुये जल आदि के नाम हैं; ॥ ३९ ॥ वेष्टितं, वलयितं, संवीतं, रुद्धं, आवृतं, ये ५ नदी आदि से नगर आदि के वेष्टित के वा घेरे के नाम हैं; रुग्नं, भुग्नं, ये २ व्यथित के–वा काष्ठ आदि के बने हस्त पाद आदि के–वा भग्न के नाम हैं; निशितं, "और भी निशातं" क्ष्णुतं, शातं, तेजितं, ये ४ शान आदि से तीखे किये शस्त्र आदि के नाम हैं, "(निशायते स्म निशातं, शोतनूकरणे धातुः)" ॥ ४० ॥ विनाशोन्मुखं, पक्वं, ये २ निकट विनाश होने वाले के नाम हैं, "(पच्यते स्म पक्वं)"; ह्रीणः, ह्रीतः, लज्जितः, ये ३ प्राप्त लज्जावाले के नाम हैं; वृत्तः, वृतः, वावृत्तः, "वाज़े पढ़ते हैं व्यावृत्तः, और भी आवृत्तः" ये ३ कृतवरण के–वा वरण किये हुये के नाम हैं. "जो कहा है कि, (पैरोहित्याय भगवान् वृतः काव्यः किलासुरैरिति)"; संयोजितः, "वा संयोगितः भी" उपाहितः, ये २ संयोग से प्राप्त के नाम हैं; ॥ ४१ ॥ प्राप्यं, गम्यं, समासाद्यं, ये ३ प्राप्त होने के शक्य वा योग्य के नाम हैं, "(समासाद्यते प्राप्यते यत्तत्समासाद्यम्)"; स्यन्नं, रीणं, स्नुतं, स्नुतं, ये ४ टपकते हुये के नाम हैं, "(स्यन्दते स्म स्यन्नं, स्यन्दूप्रस्रवणे)"; सङ्गूढः, संकलितः, ये २ संयोज्य अंक आदि के नाम हैं, जैसे दो–तीन–और पांच–ये संकलित किये दश होते हैं; अवगीतः, ख्यातगर्हणः, ये २ निन्दित के नाम हैं, "(अवगीयते निन्द्यते स्म अवगीतः)" ॥ ४२ ॥

नाना प्रकार ।	पुसन पुसन पुसन पुसन विविधः (स्याद्) बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ।
धिक्कारे ।	पुसन पुसन अवरीणो धिक्कृत-(श्चाप्य) पुसन पुसन
घिसे ।	ऽवध्वस्तो ऽवचूर्णितः ॥ ४३ ॥
महज क्रिये ।	पुसन पुसन अनायासकृतं फाण्टं पुसन पुसन
बाजते ।	स्वनितं ध्वनितं (समे) ।
बंधे ।	पुसन पुसन पुसन १पुसन पुसन पुसन बद्धे सन्दानितं मूत मुदितं सन्दितं सितम् ॥ ४४ ॥
अच्छे पके ।	पुसन पुसन निष्पक्वे क्वथितं पुसन
पके घी आदि ।	(पाके क्षीराज्यपयसां) शृतम् ।
बुझे ।	पुसन निर्वाणो (मुनि वह्न्यादौ) पुसन
पवन रहित ।	निर्वात-(स्तु गते ऽनिले) ॥ ४५ ॥
पके ।	पुसन पुसन पक्वं परिणते पुसन पुसन
हगे ।	गूनं हन्नं पुसन पुसन
मूते ।	पुसन पुसन मीढ (न्तु) मूत्रिते ।
मोटे ।	पुष्टे (तु) पुषितं पुसन पुसन
क्षमायुक्त ।	सोढे क्षान्तम् पुसन २पुसन
उलटी किये ।	उद्वान्त मुद्गते ॥ ४६ ॥

१ उ-. २ उ-.

विविधः, बहुविधः, नानारूपः, पृथग्विधः, ये ४ अनेक रूपवाले के नाम हैं, "(नानारूपं यस्य स नानारूपः)" अवरीणः, धिक्कृतः, ये २ निन्दितमात्र के नाम हैं; अवध्वस्तः, "और भी अपध्वस्तः" अवचूर्णितः, ये २ चूर्णीकृत के-वा पिसे हुये के नाम हैं; ॥ ४३ ॥ अनायासकृतं, और फाण्टं ये २ अनायास से किये हुये कषाय-वा काढ़ा विशेष कहलाते हैं, (द्वयं); स्वनितं, ध्वनितं, ये २ शब्द किये के नाम हैं; बद्धं, सन्दानितं, मूतं, "और मूर्णं, यह मुकुट का मत है" उदितं, "उद्दितं भी" सन्दितं, सितं, ये ६ बंधे हुये के नाम हैं, "(मूङ् बन्धने से क्त प्रत्यय होने पर मूतं, दो अवखण्डने धातु उत्पूर्वक और संपूर्वक बन्धनार्थक है तो इन से उद्दितं, और सन्दितं, ये सिद्ध भये)"; ॥ ४४ ॥ निष्पक्वं, क्वथितं, ये २ सम्पूर्ण पके हुये कषाय आदि के नाम हैं; दूध आदि के पकजाने पर शृतं कहते हैं, जैसे शृतंक्षीरं. पक्वमित्यर्थः; निर्वाणः, यह शब्द मुनि और वन्हि आदि में प्रयुक्त होता है वात में नहीं, जैसे निर्वाणो मुनिः निर्मुक्तः इत्यर्थः, निर्वाणो वन्हिः निर्गतः इत्यर्थः, आदि शब्द से निर्वाणो हस्ती "निमग्नः इत्यर्थः, (एकं); अनिल अर्थात् पवन के निकलजाने पर निर्वातः कहते हैं, (एकं); ॥ ४५ ॥ पक्वं, परिणतं, ये २ पाकको प्राप्त के नाम हैं; गूनं, हन्नं, ये २ पुरीषोत्सर्ग किये -वा दिशा फिरे के नाम हैं, "(हदयत स्म, हदपुरीषोत्सर्गे धातुः)"; मीढं, मूत्रितं, ये २ कृतमूत्रोत्सर्ग वा लघुशंका किये के नाम हैं; पुष्टं, पुषितं, ये २ पोषण किये हुये वा मोटे के नाम हैं; सोढं, क्षान्तं, ये २ क्षमा में प्राप्त के नाम हैं; उद्वान्तः, "उसी प्रकार उद्वानं, यह मुकुट है, और उद्धानं, वा उद्धान्तं, यह रामनाथ है," उद्गतः, ये २ वमन से त्याग अन्न आदि के नाम हैं; ॥ ४६ ॥

	पुसन पुसन
इन्द्रियजीत ।	दान्त-(स्तु) दमिते
	पुसन पुसन
मिटजाने ।	शान्तः शमिते
	पुसन पुसन
मांगे ।	प्रार्थिते ऽर्द्दितः ।
	पुसन पुसन
जाने ।	ज्ञप्त-(स्तु) ज्ञपिते
	पुसन १पुसन
ढंके ।	छन्न श्छादिते
	पुसन पुसन
पूजे ।	पूजिते ऽञ्चितः ॥ ४७ ॥
	पुसन पुसन
पूरे ।	पूर्ण-(स्तु) पूरिते
	पुसन पुसन
क्लेशित ।	क्लिष्टः क्लिशिते
	पुसन पुसन
समाप्त ।	ऽवसिते सितः ।
	पुसन २पुसन पुसन पुसन
जरे ।	प्रुष्ट प्लुष्टौ षितौ दग्धे
	पुसन पुसन पुसन
सूक्ष्म किये ।	तष्ट-त्वष्टौ तनूकृते ॥ ४८ ॥
	पुसन ३पुसन पुसन
छेदे ।	वेधित-च्छिद्रितौ विद्धे
	पुसन पुसन पुसन
विचारे ।	विन्न-वित्तौ विचारिते ।
	पुसन पुसन पुसन
निस्तेज ।	निःप्रभे विगता-ऽरोकौ
	पुसन पुसन पुसन
पिघले घी आदि ।	विलीने विद्रुत-द्रुतौ ॥ ४९ ॥
	पुसन पुसन पुसन
सिद्ध ।	सिद्धे निर्वृत्त-निष्पन्नौ
	पुसन पुसन पुसन
फारे ।	दारिते भिन्न-भेदितौ ।
	पुसन पुसन ४पुसन
बीने वस्त्र आदि ।	ऊतं स्यूत मुतं (चेति त्रितयं तन्तुसन्तते) ॥ ५० ॥

१ छा-. २ उ-. ३ छि-. ४ उ-.

दान्तः, दमितः, ये २ दम में प्राप्त के—वा इन्द्रियों को रोके हुये के नाम हैं, जैसे दमितमिन्द्रियम्; शान्तः, शमितः, ये २ शमन में प्राप्त के नाम हैं, जैसे शान्तो रोगः निवर्तितः इत्यर्थः; प्रार्थितः, अर्द्दितः, ये २ याचित के वा मांगे हुये के नाम हैं; ज्ञप्तः, ज्ञपितः, ये २ बोध में प्राप्त के—वा जाने हुये के नाम हैं; छन्नः, छादितः, ये २ आच्छादित—वा ढंके हुये के नाम हैं; पूजितः, अञ्चितः, और "अर्च्चितः, अर्च्चपूजायां धातुः" ये २ पूजित के नाम हैं, ॥ ४७ ॥ पूर्णः, पूरित, ये २ पूर्ण के नाम हैं; क्लिष्टः, क्लिशितः, ये २ क्लेश में प्राप्त के नाम हैं, अवसितः, सितः, ये २ समाप्त के नाम हैं, षोन्तकर्मणि धातुः; प्रुष्टः, प्लुष्टः, उषितः, दग्धः, ये ४ दग्ध—वा जले हुये के नाम हैं; तष्टः, त्वष्टः, तनूकृतः, ये ३ मोटे के सूक्ष्म करने के नाम हैं, "(अतनुस्तनुरकारि तनूकृतः, यथा तष्टं काष्ठं शस्त्रेणाल्पीकृतमित्यर्थः)"; ॥ ४८ ॥ वेधितः, छिद्रितः, विद्धः, ये ३ वेधे हुये के नाम हैं, (यथा कर्णौ विद्धौ); विन्नः, वित्तः, विचारितः, ये ३ प्राप्तविचार के नाम हैं; निष्प्रभः, विगतः, अरोकः, ये ३ दीप्ति हीन के नाम हैं; विलीनः, विद्रुतः, द्रुतः, ये ३ द्रवीभूत घृत आदि के नाम हैं; ॥ ४९ ॥ सिद्धः, निर्वृत्तः, निष्पन्नः, ये ३ सिद्ध के नाम हैं, दारितः, भिन्नः, भेदितः, ये ३ भेद को प्राप्त के नाम हैं; ऊतं, स्यूतं, उतं, ये ३ तन्तु अर्थात् सूत के विस्तार करने के नाम हैं; "(यथा प्रोतः पटः तंतुभिरनुस्यूतः इत्यर्थः)"; ॥ ५० ॥

	पुसन पुसन पुसन १पुसन पुसन पुसन
पूजे ।	(स्याद्)अर्हिते नमस्यितं नमसितमपचायिताऽर्चिताऽपचितम्
	पुसन पुसन २पुसन ३पुसन
सेवित ।	वरिवसिते वरिवस्यित मुपासित (श्चो) पचरित (श्च) ॥५१॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
तपे ।	सन्तापित-सन्तप्तौ-धूपित-धूपायितौ (च) दून-(श्च)।
	पुसन पुसन ४पुसन पुसन पुसन पुसन
हर्षित ।	हृष्टे मत्त स्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ॥ ५२ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
कटे ।	छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
चूये ।	स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ॥ ५३ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन ५पुसन पुसन
पाये ।	लब्धं प्राप्तं विन्नं भावित मासादितं (च) भूतं (च) ।
	पुसन पुसन ६पुसन पुसन पुसन
ढूंढे ।	अन्वेषितं गवेषित मन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ॥ ५४ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन ७पुसन
गीले ।	आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्न मुत्तं (च) ।
	पुसन पुसन पुसन ८पुसन पुसन पुसन
रखाये ।	त्रातं त्राणं रक्षित मवितं गोपायितं (च) गुप्तं (च) ॥५५॥
	पुसन ९पुसन पुसन पुसन पुसन
अपमानकिये ।	अवगणित मवमता-ऽवज्ञाते ऽवमानितं (च) परिभूते ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन १०पुसन
त्यागे ।	त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूत मुत्सृष्टम् ॥ ५६ ॥
	पुसन पुसन ११पुसन पुसन १२पुसन १३पुसन पुसन
कहे ।	उक्तं भाषित मुदितं जल्पित माख्यात मभिहितं लपितम् ।

१ अ-. २उ-. ३उ-. ४तृ-. ५आ-. ६अ-. ७उ-. ८अ-. ९अ-. १०उ-. ११उ-. १२आ-. १३अ-.

अर्हितं, नमस्यितं, नमसितं, अपचायितं, अर्चितं, अपचितं, ये ६ पूजित के नाम हैं, वरिवसितं, वरिवस्यितं, उपासितं, उपचरितं, ये ४ सुश्रूषित के नाम हैं, ॥ ५१ ॥ सन्तापितं, सन्तप्तं, धूपितं, धूपायितं, दूनं, ये ५ सन्तापित—वा दुखी के नाम हैं, "(इन अकर्मक धातुओं से कर्त्ता अर्थ में क्त प्रत्यय करने से भी येही रूप होते हैं)" हृष्टः, मत्तः, तृप्तः, प्रह्लन्नः, प्रमुदितः, प्रीतः, ये ६ प्रसन्न के नाम हैं, ॥ ५२ ॥ छिन्नं, छातं, लूनं, कृत्तं, दातं, दितं, छितं, वृक्णं, ये ८ खण्डित के नाम हैं; स्रस्तं, ध्वस्तं, भ्रष्टं, स्कन्नं, पन्नं, च्युतं, गलितं, ये ७ च्युत के नाम हैं, "(इन धातुओं से गत्यर्थाकर्मक इस सूत्र से कर्त्ता में क्त प्रत्यय होने से भी येही रूप होते हैं)" ॥ ५३ ॥ लब्धं, प्राप्तं, विन्नं, भावितं, आसादितं, भूतं, ये ६ प्राप्त के नाम हैं; अन्वेषितं, गवेषितं, अन्विष्टं, मार्गितं, मृगितं, ये ५ खोजने के नाम हैं, "(यथा, इतस्ततो गवेषितो ऽपि चोरो न दृष्टः)" ॥ ५४ ॥ आर्द्रं, सार्द्रं, क्लिन्नं, तिमितं, स्तिमितं, समुन्नं, उत्तं, ये ७ क्लिन्न के—वा गीले इन प्रसिद्ध के नाम हैं, "(यथास्तिमितलोचना ऽश्रुभिः)" त्रातं, त्राणं, रक्षितं, अवितं, गोपायितं, गुप्तं, ये ६ रक्षित के नाम हैं; ॥ ५५ ॥ अवगणितं, अवमतं, अवज्ञातं, अवमानितं, परिभूतं, ये ५ अपमान प्राप्त के नाम हैं; त्यक्तं, हीनं, विधुतं, समुज्झितं, धूतं, उत्सृष्टं, ये ६ उत्सृष्ट—वा त्यक्त के नाम हैं, ॥ ५६ ॥ उक्तं, भाषितं, उदितं, जल्पितं, आख्यातं, अभिहितं, लपितं, ये ७ उदित के—वा कथित के नाम हैं;।

	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन १पुसन पुसन
ज्ञाने ।	बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्न मवसिता-ऽवगते ॥५७॥
	पुसन २पुसन ३पुसन ४पुसन पुसन
अङ्गीकृत ।	ऊरीकृत मुररीकृत मङ्गीकृत माश्रुतं प्रतिज्ञातम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन ५पुसन ६पुसन
	सङ्गीर्णं सम्विदितं संश्रुतं समाहितो-पश्रुतो-पगतम् ॥ ५८ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन ७पुसन
स्तुति किये ।	ईलित-शस्त-पणायित-पनायित-प्रणुत-पणित-पनितानि ।
	पुसन पुसन पुसन ८पुसन ९पुसन
	अपिगीर्णं वर्णिता-ऽभिष्टुते-डितानि स्तुता-(र्थानि) ॥५९॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
खायेगये ।	भक्षित-चर्वित-लिप्त-प्रत्यवसित-गिलित खादित-प्सातम् ।
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
	अभ्यवहृता-ऽन्न-जग्ध-ग्रस्त-ग्लस्ता-ऽशितं भुक्तम् ॥ ६० ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
अतिशयार्थक ये ६ शब्द हैं ।	क्षेपिष्ठ-क्षोदिष्ठ-प्रेष्ठ-वरिष्ठ-स्थविष्ठ-बंहिष्ठाः ।
	(क्षिप्र-क्षुद्रा-भीप्सित-पृथु-पीवर-बहुल-प्रकर्षार्थाः) ॥ ६१ ॥
	पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन पुसन
तैसे ये भी ६ हैं ।	साधिष्ठ-द्राघिष्ठ-स्फेष्ठ-गरिष्ठ- ह्रसिष्ठ-वृन्दिष्ठाः ।
	(बाढ-व्यायत-बहु-गुरु-वामन-वृन्दारका-तिशये) ॥ ६२ ॥
	॥ इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥

१ अ–. २ उ–. ३ अ–. ४ आ–. ५उ–. ६ उ–. ७–त. ८ ईडित. ९ स्तुत.

बुद्धं, बुधितं, मनितं, विदितं, प्रतिपन्नं, अवसितं, अवगतं, ये ७ अवगत वा जाने हुये के नाम हैं; ॥ ५७ ॥ ऊरीकृतं, "और उरीकृतं", उररीकृतं, अंगीकृतं, आश्रुतं, प्रतिज्ञातं, संगीर्णं, सम्विदितं, संश्रुतं, "और भी प्रतिश्रुतं" समाहितं, उपश्रुतं, उपगतं ; ये ११ अंगीकृत के नाम हैं ; ॥ ५८ ॥ ईलितं, शस्तं, पणायितं, पनायितं, प्रणुतं, पणितं, पनितं, अपिगीर्णं, "और गीर्णं" वर्णितं, अभिष्टुतं, ईडितं, स्तुतं, ये १२ स्तुत्यर्थक वा स्तुति प्राप्त के नाम हैं ॥ ५९ ॥ भक्षितं, चर्वितं, लिप्तं, "उसी प्रकार लीढं" प्रत्यवसितं, गिलितं, "और गिरितं" खादितं, प्सातं; अभ्यवहृतं, अन्नं, जग्धं, "और भी जग्द्धं" ग्रस्तं, ग्लस्तं, अशितं, भुक्तं, ये १४ खादित वा खाये हुये के नाम हैं, "(प्सा भक्षणे प्सातं, अद्यते स्म अन्नं)" ॥ ६० ॥ क्षेपिष्ठ आदि क्षिप्र आदिकों के प्रकर्षार्थक हैं अर्थात् प्रकर्ष अर्थ हैं जिन्हों के वे प्रकर्षार्थ कहलाते हैं, तैसे अतिशय विशिष्ट क्षिप्रादिकों में क्रम से वर्त्तते हैं, जैसे अतिशयेन क्षिप्रः क्षेपिष्ठः, अतिशयेन क्षुद्रः क्षोदिष्ठः, यहां प्रेष्ठ आदि चारों में भी प्रिय-उरु-स्थूल-बहुल-येही इष्ठन् प्रत्यय के प्रकृति हैं, और अभीप्सितादि का निर्द्देश तो उसके पर्य्यायत्त्व से है, अतिशयेन प्रियः प्रेष्ठः, अतिशयेन उरुः वरिष्ठः, अतिशयेन स्थूलः स्थविष्ठः, अतिशयेन बहुलः बंहिष्ठः, इस आदि एकेक के नाम हैं ॥ ६१ ॥ बाढ आदि के अतिशय अर्थ में साधिष्ठ आदि होते हैं, और यहां व्यायत-बहु-वामन ये ३ दीर्घ स्फिर ह्रस्वों के पर्य्याय हैं, जैसे अतिशयेन बाढः साधिष्ठः, अतिशयेन व्यायतः दीर्घः, द्राघिष्ठः, अतिशयेन बहुलः स्फिरः, स्फेष्ठः, अतियेन गुरुः गरिष्ठः, अतिशयेन वामनः, ह्रस्वः, ह्रसिष्ठः, अतिशयेन वृन्दारकः मुख्यः, वृन्दिष्ठः, "वृन्दारक मुख्य को कहते हैं" ॥ ६२ ॥ ॥ इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥

॥ अथ तृतीयवर्गः ॥

(प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः सङ्कीर्णे लिङ्ग मुन्नयेत्) ।

क्रिया । बार २ चलना ।	कर्म[१न] क्रिया[स] (तत्सातत्ये गम्ये स्युर्) अपरस्पराः[पुसन] ॥ १ ॥
साकल्य वचन । आसंग वचन ।	(साकल्यासङ्गवचने) पारायण[न] परायणे[पुसन] ।
स्वतंत्रता । बिना कारण स्थिति ।	यदृच्छा[स] स्वैरिता[स] (हेतु शून्या त्वास्था) विलक्षणम्[न] ॥ २ ॥
शान्ति । इन्द्री निग्रह ।	शमथ[पु]-(स्तु) शमः[पु] शान्तिर्[२स] दान्ति[स]-(स्तु) दमथो[पु] दमः[पु] ।
सुकर्म । काम्यदान ।	अवदानं[न] (कर्मवृत्तं) काम्यदानं[न] प्रवारणम्[न] ॥ ३ ॥

१-न्. २-न्ति.

पहिले दो काण्डों में स्वर्ग आदि नाम प्रकरणों से सजातीय गुथे हुये हैं, और इस काण्ड में भी सुकृती आदि नाम विशेष्यनिघ्नके लिङ्गोंसे कहे गये हैं; अब पूर्व्वोक्तोंको परस्पर मिलजाने के भय से ये शब्द पहिले नहीं कहे हैं उनके सङ्ग्रह के लिये (सङ्कीर्ण) प्रकरणका आरम्भ करते हैं; यहां तो कर्म्म क्रिया आदि भाववचन और अपरस्पर आदि निर्व्विशेष्य (निघ्न) स्तम्बघ्न आदि करण वचन, तैसे (समूहवचन), आपूपिक आदि, इसी प्रकार संकीर्णों से वा सङ्कीर्णार्थों से और सङ्कीर्णलिङ्गों से कथन हैं इसलिये यह सङ्कीर्णवर्ग है (भिन्नजाति और अर्थोंका एकत्र होनाही संकर है) सो यहां बहुधाविद्यमान है इस कारण यहांही उसका मुख्य व्यवहार है, न कहो कि यहां सङ्कीर्णत्व में विशेष विधान के अभावसे क्योंकर लिङ्गज्ञान हो सकता है, ऐसी आशंका पर उसका उपाय कहा, (प्रकृति इन पदोंसे) संकीर्ण नामवाले इस वर्गमें वक्ष्यमाण लिङ्गसंग्रह की रीति से प्रकृति के अर्थ और प्रत्ययार्थों से तथा आद्य शब्दसे कहीं रूपभेद आदिसे भी लिङ्ग जाने, तहां प्रकृत्यर्थ से, जैसे अपरस्पराः यहां विभक्तिकी प्रकृति होनेसे प्रकृति है उसका निरन्तर क्रियासम्बन्धसे क्रिया योग है, अपरत्वादि गुण योग भी है, इसी प्रकार गुणद्रव्य और क्रियायोगकी उपाधियोंसे परगामियों को अभिधेय लिङ्गत्व है, प्रत्ययार्थसे जैसे, स्फाति प्रभृतियों को क्तिन् आदि प्रत्ययान्तो को स्त्री भावसे आप अनिक्तिन् इन प्रत्ययोंके वक्ष्यमाणत्वसे स्त्रीलिङ्गत्व है. तैसे कि प्रत्ययान्त सन्धि प्रभृतियोंको (घोःकिः) इस वक्ष्यमाणत्वसे पुंस्त्व है, रूप भेदसे कर्म्म आदिकोंको क्लीवत्व आदि हैं, साहचर्य्य से भी डिम्भे डमरविप्लवौ यहां डिम्भको पुंस्त्व है. संकीर्ण यह उपलक्षण है, वर्गान्तरोंमें भी मुतप्रोति आदि अनिश्चित लिंगोंको प्रकृति प्रत्यय आदिकोंसे लिङ्गके निश्चयसे, क्रम क्रिया २ क्रियायोंको, तत् शब्दसे क्रियाका परामर्श करते हैं, क्रियाके निरन्तर गम्यमान रहने पर अपरस्पराः यह एक नाम है, अपरस्पराः सार्थाः गच्छन्ति, अपर और पर समूह निरन्तर जाते हैं यह अर्थ है, निरन्तर क्यों कहा, अपरस्पराः सकृद्गच्छन्ति, वाच्यलिङ्गत्व से अपरस्परा योषितः, अपरस्पराणि कुलानि, निर्द्दिष्टं कर्म सातत्यं, सुधियोंने अपरस्परं यह भागुरिके कहने से कहा, उनके निरन्तर में क्रिया को और क्रियावालोंको नैरन्तर्य्यमें वह है, जैसे क्रिया सातत्य में अपरस्परं गच्छन्ति और क्रियावालों के सातत्य में तो लिङ्गत्रय होताही है, ॥ १ ॥ साकल्य वचन को पारायणं, और आसङ्ग वचन को परायणं कहते हैं, "तुरायणं, वा त्वरायणं भी पाठ है, तुरस्य अयनं" आसंगः आसक्तिस्तद्वचनं, क्रम से एक एक के नाम हैं. यदृच्छा, स्वैरिता, "और भी स्वैरता" ये २ स्वच्छन्दता वा स्वतन्त्रताके नाम हैं, हेतुशून्या अर्थात् कारणरहित आस्थास्थितिः विलक्षणं है, (एकं) ॥ २ ॥ शमथः, शमः, शान्तिः, ये ३ चित्तशान्ति के नाम हैं, दान्तिः, दमथः, दमः, ये ३ इन्द्रियनिग्रह के नाम हैं, धार्मभूतकर्म्म वा भूतपूर्व चरित्र अवदानं, "और भी अपदानं, कहलाता है, "वा प्रशस्त कर्म्म के नाम हैं" (एकं); काम्यदानं अर्थात् काम्य जो तुलापुरुष आदिका दान है उसे प्रवारणं, कहते हैं, (एकं); "उसी प्रकार प्रहारणं, यह भरतमाला में, हैं प्रवारणं महादानमिति त्रिकाण्डशेषः", ॥ ३ ॥

	स न
वशीकरण ।	वशक्रिया संवदनं १न न
उच्चाटन ।	न न मूलकर्म (तु) कार्म्मणम् ।
कांपना ।	विधूननं विधुवनं
	न न न
अघाया ।	तर्प्पणं प्रीणना ऽवनम् ॥ ४ ॥
	स न न
रक्षा करना ।	पर्य्याप्तिः (स्यात्) परित्राणं हस्तवारण (मित्यपि) ।
	न न २स
सीना ।	सेवनं सीवनं स्यूतिर् पु न स
फूटना ।	न ३पु विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
गाली ।	आक्रोशन मभीषङ्गः
	पु सन
अनुभव ज्ञान ।	संवेदो वेदना (न ना) ।
	न ४स
सर्व्वत्र व्याप्त ।	सम्मूर्छन मभिव्याप्तिर् स स सन सन
भिक्षा ।	न न याञ्चा भिक्षा ऽर्थना ऽर्द्दना ॥ ६ ॥
काटना ।	वर्द्धनं छेदने न न
कुशलानन्द ।	न (ऽथ द्वे) आनन्दन-सभाजने ।
	आप्रच्छनम्
	५पु पु
उत्तमोपदेश ।	(अथा) म्नायः सम्प्रदायः पु स
हानि ।	क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

१—न्. २—ति. ३ अ—. ४—प्ति. ५ आ—.

वशक्रिया, संवदनं, "और भी संवदना, वा संवननं" ये २ मणिमंत्र आदि से वशीकरण के नाम हैं, "स्यात्संवदनमालोचे वशीकारे नपुंसकमिति मेदिनी"; मूलकर्म्म, कार्मणं, ये २ औषधी के मूलों से उच्चाटन आदि कर्म्म कहलाते हैं; विधूननं, विधुवनं, "और विधुननमिति जटाधरः" ये २ कांपने के नाम हैं; तर्प्पणं, प्रीणनं, अवनं, ये ३ तृप्ति के, नाम हैं; ॥ ४ ॥ पर्य्याप्तिः, परित्राणं, हस्तवारणं, "वा हस्तधारणं" ये ३ वधोद्यत के वारण के नाम हैं, अर्थात् रोकने के नाम हैं; सेवनं, सीवनम्, स्यूतिः, ये ३ सूची क्रिया के वा सीने के नाम हैं, "सेवस्तु सेवनं, स्यूतिरिति पाठो वा" विदरः, स्फुटनं, "और स्फोटनं यह भरतमाला है" भिदा, ये ३ द्विधा भाव के वा फूटना इस प्रसिद्ध के नाम हैं; ॥ ५ ॥ आक्रोशनं, अभीषङ्गः, "उसी प्रकार अभिषङ्गः भी" ये २ गाली देने के नाम हैं; संवेदः, वेदना ये २ अनुभव ज्ञान के नाम हैं, इनमें वेदना पुल्लिङ्ग नहीं है, "इसलिये वेदनं यह भी है"; सम्मूर्छनं, अभिव्याप्तिः, ये २ सर्वतोव्याप्त के नाम हैं, अर्थात् सब जगह फैला हुआ; याञ्चा, भिक्षा, अर्थना, अर्द्दना, ये ४ याचना वा मांगने के नाम हैं; ॥ ६ ॥ वर्द्धनं, छेदनं, ये २ काटने के नाम हैं; आनन्दनं "और आमन्त्रणं" सभाजनं, "और भी स्वभाजनं, यह राजमुकुट है" आप्रच्छनं, ये ३ स्वागत संप्रश्न आदि से विहित आनन्द के नाम हैं; आम्नायः, सम्प्रदायः, ये २ गुरुपरंपरा से प्राप्त अच्छे उपदेश के नाम हैं; क्षयः, क्षिया, ये २ अपचय वा हानि के नाम हैं; ॥ ७ ॥

लेना ।	ग्रहे[पु] ग्राहो[पु]
इच्छा ।	वशः[पु] कान्तौ[१स]
रक्षा ।	रक्ष्णा[पु]-स्त्राणे[२न]
शब्द ।	रणः[पु] क्कणे[पु] ।
छेदना ।	व्यधो[पु] वेधे[पु]
पकाना ।	पचा[स] पाके[पु]
बुलाना ।	हवो[पु] हूतौ[३स]
वरदान ।	वरो[पु] वृतौ[४स] ॥ ८ ॥
तराना ।	ओषः[पु] प्लोषे[पु]
नीति ।	नयो[पु] नाये[पु]
जीर्ण ।	ज्यानि[स] जीर्णौ[५स]
भ्रम ।	भ्रमो[पु] भ्रमौ[६स] ।
बढ़ती ।	स्फाति[स] वृद्धौ[७स]
प्रसिद्धता ।	प्रथा[स] ख्यातौ[८स]
छूना ।	स्पृष्टिः[स] पृक्तौ[९स]
झरना ।	स्रवः[पु] स्रवे[स] ॥ ९ ॥

१-ति. २ त्रा-. ३-ति. ४-ति. ५ जीर्णि. ६-मि. ७ वृद्धि. ८-ति. ९-क्ति.

ग्रहः, ग्राहः, ये २ ग्रहण के नाम हैं; वशः, कान्तिः, ये २ इच्छा के नाम हैं; रक्षणः, "बाज़े पहले हैं रक्षा" त्राणः, ये २ रक्षण के नाम हैं; रणः, "और भी वणः" क्कणः, ये २ शब्दकरने-वा बोलने के नाम हैं; व्यधः, वेधः, ये २ वेधन के नाम हैं; पचा, पाकः, ये २ पचन के वा पचाने के नाम हैं; हवः, हूतिः, ये २ पुकारने के नाम हैं; वरः, वृत्तिः, ये २ वेष्टन वा घेर-वा वरदान और भक्ति के नाम हैं, "तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः सवरोमत इति" ॥ ८ ॥ ओषः, प्लोषः, "और भी प्रोषः" ये २ दाह वा जलाने के नाम हैं; नयः, नायः, ये २ नीति, के नाम हैं; ज्यानिः, जीर्णिः, ये २ जीर्णता के नाम हैं; भ्रमः, भ्रमिः, ये २ भ्रान्ति के नाम हैं; स्फातिः. वृद्धिः, ये २ वृद्धि के नाम हैं; प्रथा, ख्यातिः, ये २ प्रख्याति वा प्रसिद्ध के नाम हैं, स्पृष्टिः, पृक्तिः, ये २ स्पर्श के नाम हैं, स्रवः, स्रवः, "और स्रायः, और भी स्रयः" ये २ बहने वा टपकने के नाम हैं, ॥ ९ ॥

बढ़ना ।	स १स ऋधा समृद्धौ
फरकना ।	न न स्फुरणं स्फरणे
सच्चा ज्ञान ।	२स स प्रमितौ प्रमा ।
जन्म ।	स पु प्रसूतिः प्रसवे
घी आदि का टपकना ।	पु पु श्च्योते प्राघारः
ग्लानि ।	पु पु क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥
बड़ाई ।	पु पु उत्कर्षोऽतिशये
मिलाप ।	स पु सन्धिः श्लेषे
प्रयोजन ।	पु पु विषय आशये ।
हुक्म वा आज्ञा करना ।	३स न क्षिपायां क्षेपणं
लीलना ।	स ४स गीर्णि गिरौ
उद्यम ।	न ५पु गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥
उठाना ।	पु पु उन्नाय उन्नये
आश्रय ।	पु न श्रायः श्रयणे
जीत ।	न पु जयने जयः ।

१–द्धि. २–ति. ३–पा. ४ गिरि. ५ उ–.

ऋधा, "बाज़े पढ़ते हैं विधा" समद्धिः, ये २ वृद्धि के नाम हैं; स्फुरणं, "और स्फुलनं वा स्फोरणं, और भी स्फुरः वा स्फुरणा" स्फरणं, "उसी प्रकार स्फारणं" ये २ स्फुरण वा स्मरण के नाम हैं; प्रमितिः, प्रमा, ये २ यथार्थ ज्ञान के नाम हैं; प्रसूतिः, प्रसवः, ये २ गर्भ विमोचन वा उत्पत्ति के नाम हैं; श्च्योतः, "और च्योतः" प्राघारः, ये २ घृत आदि के टपकने के नाम हैं; क्लमथः, क्लमः, ये २ ग्लानि के नाम हैं; ॥ १० ॥ उत्कर्षः, अतिशयः, ये २ प्रकर्ष वा बड़ाई के नाम हैं; संधिः, श्लेषः, ये २ मेल के नाम हैं; विषयः, आशयः, "वा आश्रयः" ये २ आश्रय के नाम हैं; क्षिपा, क्षेपणं, ये २ प्रेरण वा फेंकना वा आज्ञा–वा हुकुम–के नाम हैं; गीर्णिः, गिरिः, "और भी गिलिः, और गिलनं" ये २ निगरण वा निगलना वा लीलने के नाम हैं; गुरणं, "उसी प्रकार गूरणं, और गोरणं" उद्यमः, ये २ उद्योग करने के नाम हैं; ॥ ११ ॥ उन्नायः, उन्नयः, ये २ ऊपर ले जाने के नाम हैं; "और तर्क के भी नाम हैं"; श्रायः, श्रयणं, ये २ सेवा वा आश्रय के नाम हैं; जयनं, जयः "बाज़े पढ़ते हैं जयनं, जयः" ये २ जय वा जीत के नाम हैं; ।

कहना ।	पु पु निगादो निगदे
खुशी ।	पु पु मादो मद
उद्वेग ।	पु पु उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥
मीजना ।	न पु विमर्द्दनं परिमले
अंगीकार ।	१पु २पु ऽभ्युपपत्तिर् नुग्रहः ।
न मानना ।	पु निग्रह-(स्तद्विरुद्धः स्याद्)
लड़ाई में पुकारना।	पु ३पु अभियोग-(स्त्व)-भिग्रहः ॥ १३ ॥
मूठी वांधना ।	पु पु मुष्टिबन्ध-(स्तु) संग्राहो
लूटना ।	पु पु पु डिम्बे डमर-विप्लवौ ।
वांधना ।	न स ४पु बन्धनं प्रसितिः श्चारः
संताप ।	पु ५पु ६पु स्पर्शः स्प्रष्टा पतप्तरि ॥ १४ ॥
अपकार ।	पु पु निकारो विप्रकारः (स्याद्)
अभिप्राय के योग्य।	पु ७पु पु आकार स्त्विङ्ग इङ्गितः ।

१–त्ति. २ अ–. ३ अ–. ४ चार. ५–ष्टृ. ६ उ–प्तृ. ७ इ–.

निगादः, निगदः, ये २ कथन के नाम हैं; मादः, मदः, ये २ हर्ष के नाम हैं; उद्वेगः, उद्भ्रमः, ये २ उद्वेजन के नाम हैं; वा उद्भ्रम के नाम हैं; ॥ १२ ॥ विमर्द्दनं, परिमलः, ये २ कुंकुम आदि से मर्द्दित वा मीजने के नाम हैं; "(परिमलो विमर्देपीति विश्वः)" अभ्युपपत्तिः, अनुग्रहः, ये २ अंगीकार के नाम हैं; अनुग्रह से विरुद्ध जो है उसे निग्रहः, "वा विग्रहः, और भी निरोधः, और विरोधः" कहते हैं, (एकं) अभियोगः, अभिग्रहः, ये २ कलह में पुकारने के नाम हैं, ॥ १३ ॥ मुष्टिबंधः, संग्राहः, ये २ मूठी से दृढ़ ग्रहण के नाम हैं; डिम्बः, डमरः, "और डामरः" विप्लवः, ये ३ परस्पर लड़ाई "वा लूटने वा प्रलय करने के नाम हैं"; बन्धनं, प्रसितिः, चारः, "वाज़े पढ़ते हैं स्चारः" ये ३ बन्धन के नाम हैं, (चारः, स्पशः); स्पर्शः, "और भी स्पशः" स्प्रष्टा, "वा स्पर्ष्टा भी" उपतप्ता, ये ३ उपताप नाम रोग विशेष–वा सन्तप्त के नाम हैं, "(स्पृशतीति स्पर्शः)"; ॥ १४ ॥ निकारः, विप्रकारः, ये २ अपकार के नाम हैं, आकारः, इङ्गः, इङ्गितः, ये ३ अभिप्राय के अनुरूप चेष्टित के नाम हैं; ।

	पु पु
प्रकृति का बदलना	परिणामो विकारो (द्वे समे)
	स १स
विरुद्ध करना।	विकृति-विक्रिये ॥ १५ ॥
	पु २पु
छीन लेना।	अपहार-(स्त्व) पचय:
	पु पु
बटोरना।	समाहार: समुच्चय: ।
	पु न
लेना।	प्रत्याहार उपादानं
	पु पु
खेलमें पांवसे चलना।	विहार-(स्तु) परिक्रम: ॥ १६ ॥
	पु न
चोरी करना।	अभिहारो ऽभिग्रहणं
	पु न
युक्ति से शस्त्रादि निकालना।	निर्हारो ऽभ्यवकर्षणम् ।
	पु पु
नकल करना।	अनुहारो ऽनुकार: (स्याद्)
	पु
खर्च।	(अर्थस्यापगमे) व्यय: ॥ १७ ॥
	पु स
बहना।	प्रवाह-(स्तु) प्रवृत्ति: (स्यात्)
	पु
बाहरजाना।	प्रवहो (गमनं बहि:) ।
	पु पु पु पु पु पु
संयम।	वियामो वियमो यामो यम: संयाम-संयमो ॥ १८ ॥
	३न पु
हिंसा।	हिंसाकर्म्मा ऽभिचार: (स्याज्)
	स पुस
जागना।	जागर्य्या जागरा (द्वयो:) ।

१–या. २ अ–. ३–न.

परिणाम:, विकार:, ये २ प्रकृति के उलटा होने–वा विकार के नाम हैं, जैसे मट्टी का विकार घट है; विकृति:, विक्रिया, ये २ विरुद्ध क्रिया के नाम हैं, और किसी के मत से ये ४ एकार्थक हैं जैसे कुण्डल कनक का हो विकृति अर्थात् परिणाम है; ॥ १५ ॥ अपहार:, अपचय:, ये २ अपहरण के नाम हैं; समाहार:, समुच्चय:, ये २ राशिकरण के नाम हैं; प्रत्याहार:, उपादानं, ये २ इन्द्रिय से खींचने के नाम हैं; विहार:, परिक्रम:, ये २ पांव से चलने के नाम हैं, जो कहा है, (सुरांगना नाम वनोपरिक्रमइति) ॥ १६ ॥ अभिहार:, "उसी प्रकार अभ्याहार:" अभिग्रहणं, ये २ चोरी करने के नाम हैं; निर्हार:, अभ्यवकर्षणं, ये २ बाण आदि के निकालने के नाम हैं; अनुहार:, अनुकार:, ये २ नकल करने के नाम हैं, "जैसे भन् भन् ये पावजेव की नकल हैं"; अर्थ जो धन आदि है उस के अल्प होने का व्यय:, नाम है; ॥ १७ ॥ प्रवाह:, प्रवृत्ति:, ये २ जल आदि की बराबर गति के नाम हैं; और जो बाहर जाना है वह प्रवह: कहलाता है; वियाम:, वियम:, याम:, यम:, संयाम:, संयम:, ये ६ योगांग वा संयम के नाम हैं; ॥ १८ ॥ हिंसाकर्म्म, अभिचार:, ये २ हिंसा के नाम हैं; जागर्य्या, "और भी जागिया, और जागर्त्ति:, यह राजमुकुट का मत है, उसी प्रकार जागरणं" जागरा, ये २ जागने के नाम हैं; ।

	पु पु पु
विघ्न ।	विघ्नो ऽन्तरायः प्रत्यूहः पु पु
पास का आश्रय ।	पु पु (स्याद्) उपघ्नो ऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥
उपभोग ।	निर्वेश उपभोगः (स्यात्) पु स
परिवार ।	न पु परिसर्पः परिक्रिया ।
बड़ा वियोग ।	विधुर (न्तु) प्रविश्लेषो पु १पु पु
अभिप्राय ।	न न ऽभिप्राय श्छन्द आशयः ॥ २० ॥
सङ्क्षेप ।	संक्षेपणं समसनं स न
बिगाड़ ।	स पु पर्य्यवस्था विरोधनम् ।
सब ओर फैलना ।	परिसर्य्या परीसारः स २स स
आसन ।	(स्याद्) आस्या (त्वा) सना स्थितिः ॥ २१ ॥
	पु पु पु
विस्तार ।	विस्तारो विग्रहो व्यासः पु
शब्दविस्तार ।	न न (स च शब्दस्य) विस्तरः ।
अङ्ग मींजना ।	(स्यान्) मर्द्दनं सम्वाहनं पु न
लोप ।	विनाशः (स्याद्) अदर्शनम् ॥२२॥
	पु पु
परिचय ।	संस्तवः (स्यात्) परिचयः पु न
घाव का फैलना ।	पु पु प्रसर-(स्तु) विसर्पणम् ।
धनादि का संग्रह ।	नीवाक-(स्तु) प्रयामः (स्यात्)
	पु न
परोस ।	सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ।

१ छ—. २ आ—.

विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः, ये ३ विघ्न के नाम हैं ; उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः, ये २ निकट के आश्रय के नाम हैं, "वा आश्रय के नाम हैं"; ॥ १९ ॥ निर्वेशः, उपभोगः, ये २ उपभोग के नाम हैं ; परिसर्पः, परिक्रिया, ये २ परिजनं आदि से घिरे हुये के नाम हैं ; विधुरं, प्रविश्लेषः, ये २ अत्यन्त वियोग के नाम हैं ; अभिप्रायः, छन्दः, "और भी न० छन्दः (स)", आशयः ये ३ अभिप्राय के नाम हैं ; ॥ २० ॥ संक्षेपणं, समसनं, ये २ अविस्तार वा सङ्क्षेप के नाम हैं; पर्यवस्था, "और प्रत्यवस्था" विरोधनं, ये २ विरोध—वा बिगाड़ के नाम हैं ; परिसर्य्या, "वा परीसर्य्या" परीसारः, "वा परिसारः" ये २ चारों ओर गमन के नाम हैं ; आस्या, आसना, स्थितिः, ये ३ आसन के नाम हैं ; ॥ २१ ॥ विस्तारः, "और विस्तरः" विग्रहः, व्यासः, ये ३ विस्तार के नाम हैं ; शब्द सम्बन्धी विस्तार को विस्तरः कहते हैं. (कर्क) मर्द्दनं, सम्वाहनं, ये २ अंगमर्दन के नाम हैं, जैसे पादसंवाहनं ; विनाशः, अदर्शनं, ये २ तिरोधान वा अन्तर्धान वा लोप के नाम हैं ; ॥ २२ ॥ संस्तवः, परिचयः, ये २ परिचित के नाम हैं, प्रसरः, विसर्पणं, ये २ फोड़ा आदि के बढ़ने के नाम हैं, नीवाकः, प्रयामः, ये २ धन और धान्य आदि में अन्नों के आदरातिशय के नाम हैं, "नितरामुच्यते नीवाकः"; सन्निधिः, "और भी सन्निधं" सन्निकर्षणं, ये २ अति निकट वा पड़ोस—वा परोस के नाम हैं ॥ २३ ॥

अन्न काटना ।	पु पु न लवो ऽभिलावो लवने
अन्नादि साफ़ करना ।	पु न पु निष्पावः पवने पवः ।
प्रसङ्ग वा अवसर ।	पु पु प्रस्तावः (स्याद्) अवसरः
नरी बनाना ।	पु न त्सरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
प्रथम गर्भ ।	पु पु प्रजनः (स्याद्) उपसरः
प्रेम ।	पु पु प्रश्रय-प्रणयौ (समौ) ।
बुद्धिशक्ति ।	स १पु धीशक्ति-र्निष्क्रमो-
कोट का रस्ता ।	पुन पु (ऽस्त्री तु) संक्रामो दुर्गसञ्चरः ॥ २५ ॥
युद्ध का बढ़ाव ।	पु पु प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः
उद्योग ।	पु पु प्रक्रमः (स्याद्) उपक्रमः ।
प्रथमारंभ वा आरंभमात्र ।	न २पु पु (स्याद्) अभ्यादान मुद्घात आरम्भः
वेग ।	पु ३पुस्त्री सम्भ्रम-स्त्वरा ॥ २६ ॥

१ नि—. २ उ—. ३ त्व—.

लवः, अभिलावः, लवनं, ये ३ धान्य आदि के काटने के नाम हैं; निष्पावः, पवनं, पवः, ये ३ धान्य आदि के पवित्र करने वा उसाने—वा पसाने के नाम हैं; प्रस्तावः, अवसरः, ये २ प्रसङ्ग वा अवसर के नाम हैं, जैसे अवसर पठिता वाणी इत्यादि; त्सरः, "वा तसरः" सूत्रवेष्टनं, ये २ जुलाहे के बनाये सूत लपेटने वा नरी इस प्रसिद्ध के नाम हैं. ॥ २४ ॥ प्रजनः, उपसरः, ये २ पहिले पहिल गर्भ ग्रहण के नाम हैं; प्रश्रयः, प्रणयः, "और भी प्रसरः" ये २ प्रेम के नाम हैं; धीशक्तिः, निष्क्रमः, ये २ बुद्धिसामर्थ्य के नाम हैं, "(निष्क्रमो बुद्धिसंपत्ताविति विश्वः, शुश्रूषाश्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा। ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणा इति)"; संक्रामः, "और संक्रम" दुर्गसंचरः, ये २ कोट के मार्ग के वा कोट में प्रवेश करने के नाम हैं, "(संक्रमते संक्राम्यते वा अनेन संक्रमः)"; और "इसी प्रकार सञ्चारः" ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रमः, "वा प्रत्युत्क्रान्तिः" प्रयोगार्थः, "कोई प्रयुद्धार्थः भी पढ़ते हैं" ये २ युद्ध के लिये अत्यन्त उद्योग के नाम हैं; प्रक्रमः, उपक्रमः, ये २ प्रथम आरम्भ के नाम हैं, अभ्यादानं, उद्घातः, "और भी उपोद्घातः" आरम्भः, ये ३ आरम्भ मात्र के नाम हैं, जैसे उद्घातः प्रणवो यासामिति, और प्रक्रम आदि पांचो भी किसी के मत से एकार्थक हैं; सम्भ्रमः, त्वरा, "और त्वरिः" ये २ अच्छे वेग के नाम हैं; "(आवेगस्तु त्वरात्वरिरिति वाचस्पतिः)" ॥ २६ ॥

	पु पु
कार्य्य का रुकना ।	प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भो
	पु न
गिरना ।	ऽवनाय-(स्तु) निपातनम् ।
	पु पु
साक्षात्कार ।	उपलम्भ-(स्त्व) ऽनुभवः
	पु न
तिलक करना ।	समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
	पु पु
स्नेह तोड़ना ।	विप्रलम्भो विप्रयोगो
	पु १न
अति दान ।	विलम्भ-(स्त्व) तिसर्ज्जनम् ।
	पु २स
अति प्रसिद्ध ।	विश्राव-(स्तु) प्रविख्यातिर्
	स पु
पदार्थों का देखना ।	अवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥
	पु पु पु
पढ़ना ।	निपाठ-निपठौ पाठे
	पु पु न
गीला करना ।	तेम-स्तेमौ समुन्दने ।
	पु ३पु पु
क्लेश ।	आदीनवा-स्रवौ क्लेशे
	पु पु पु
मेल ।	मेलके सङ्ग-सङ्गमौ ॥ २९ ॥
	न न न स पु
ढूंढ़ना ।	सम्वीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।
	पु पु पु न
लिपटना ।	परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
	न न ४न ५न ६न
देखना ।	निर्वर्णनं (तु) निध्यानं दर्शना लोकने क्षणम् ।

१ अ–. २–ति. ३ आ–. ४–न. ५ आ–. ६ ई–.

प्रतिबन्धः, प्रतिष्टम्भः, "उसी प्रकार विष्टम्भः" ये २ कार्य्य प्रतिघात के नाम हैं; जैसे "मणि और मंत्र आदि के प्रतिबन्ध से अग्नि की अनुष्णता होती है"; अवनायः, और "अवनयः भी" निपातनं, "वा नियातनं" ये २ नीचे लेजाना वा गिरने के नाम हैं; उपलम्भः, अनुभवः, ये २ साक्षात्कार के नाम हैं, समालम्भः, विलेपनं, ये २ रोली आदि से तिलक करने के नाम हैं, ॥ २७ ॥ विप्रलम्भः, विप्रयोगः, ये २ स्नेहियों के स्नेह तोड़ने के नाम हैं; विलंभः, अतिसर्ज्जनम्, ये २ अति-दान के नाम हैं; विश्रावः, प्रविख्यातिः, "और भी प्रतिख्यातिः" ये २ बड़े प्रसिद्ध के नाम हैं; अवेक्षा, प्रतिजागरः, ये २ वस्तुओं के देखने के नाम हैं, "वा रक्षण के नाम हैं"; ॥ २८ ॥ निपाठः, निपठः, पाठः, ये ३ पठन के नाम हैं; तेमः, स्तेमः, समुन्दनम्, ये २ गीले करने के नाम हैं; आदीनवः, आस्रवः, क्लेशः, "वा आस्रवः" ये ३ क्लेश के नाम हैं, "(आस्रवन्तीन्द्रियाण्यनेनेति आस्रवः)" मेलकः, सङ्गः, सङ्गमः, "और भी सङ्गमं, और साङ्गमः" ये ३ संगम वा मिलने के नाम हैं; ॥ २९ ॥ संवीक्षणं, "उसी प्रकार अन्वीक्षणं, और अन्वेषणं, वा गवेषणं", विचयनं, मार्गणं, मृगणा, मृगः, "याज्ञे मृगया पढ़ते हैं" ये ५ तात्पर्य्य से वस्तुओं के खोजने के नाम हैं; परिरंभः, "वा परीरम्भः" परि-ष्वङ्गः, संश्लेषः, उपगूहनं, ये ४ आलिङ्गन के नाम हैं, ॥ ३० ॥ निर्वर्णनं, निध्यानं, दर्शनं, आलोकनं, "याज्ञे पढ़ते हैं आलोकः, और लक्षणं" ईक्षणं, ये ५ निरीक्षण के वा देखने के नाम हैं, ।

निराकरण ।	न न पु स प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥
प्रहर के सोनेवाले।	पु पु उपशायो विशाय-(श्च पर्य्याय-शयनार्थकौ) ।
घिनाना ।	न स स स अर्त्तनं (च) ऋतीया (च) हृणीया (च) घृणा (र्थकाः) ॥३२॥
उलटापुलटा ।	पु पु पु पु (स्याद्) व्यत्यासो विपर्य्यासो व्यत्यय-(श्च) विपर्य्यये ।
अतिक्रम ।	पु पु पु पु पर्य्ययो ऽतिक्रम-(स्तस्मिन्न) ऽतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
सेवकों को भेजना।	न (प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्) प्रतिशासनम् ।
यज्ञ में ब्राह्मणों की स्तुति स्थान ।	पु (स) संस्तावः (क्रतुषु या स्तुतिभूमि र्द्विजन्मनाम्)॥ ३४ ॥
ठीहा ।	पु (निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स) उद्घनः ।
खन्ता-वा खन्ती।	पु पु स्तम्बघ्न-(स्तु) स्तम्बघनः (स्तम्बो येन निहन्यते) ॥३५॥
बर्मा ।	पु आविधो (विध्यते येन तत्र)
बराबर लगे वृक्ष।	पु (विष्वक्समे) निघः ।
अन्न आदि का निकालना ।	पु पु उत्कार-(श्च) निकार-(श्चद्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ) ॥३६॥

प्रत्याख्यानं, निरसनं, प्रत्यादेशः, निराकृतिः, ये ४ निराकरण वा निरादर करने के नाम हैं, ॥ ३१ ॥ उपशायः, विशायः, ये २ पर्य्याय से अर्थात् क्रम से प्रहर आदि के शयन अर्थ के वाचक हैं; अर्त्तनं, ऋतीया, हृणीया, "उसी प्रकार हृणिया, और भी रोज्या, उसी प्रकार ह्रिणीया, वा हृणीया" घृणा, ये ४ निन्दा के नाम हैं वा किसी के मत में करुणा के नाम हैं, "(घृणा जुगुप्सा कृपयोरिति विश्वः)" ॥ ३२ ॥ व्यत्यासः, विपर्य्यासः, व्यत्ययः, विपर्ययः, "और विपर्य्यायः" ये ४ व्यतिक्रम के वा उलटा पुलटा करने के नाम हैं, पर्य्ययः, "और पर्य्यायः" अतिक्रमः, अतिपातः, उपात्ययः, ये ४ अतिक्रम के नाम हैं; ॥ ३३ ॥ बुलाकर जो सेवकों को कुछ आज्ञा करना है उस अर्थ का वाचक प्रतिशासनं है, और यज्ञों में वेद के गानेवाले ब्राह्मणों के स्तुति के स्थान को संस्तावः कहते हैं, "(यज्ञे समिस्तुव इति घञ्)"; ॥ ३४ ॥ जिस काष्ठ में काष्ठ रख कर और गढ़ के पतला करते हैं वह काष्ठरूप आधार उद्घनः, कहलाता है, और स्तम्ब जो तृण का गुच्छा है वह जिस शस्त्र विशेष से काटा जाता है वह स्तम्बघ्नः, और स्तम्बघनः, "और भी स्तम्बहननं,-नी" कहलाता है; ॥ ३५ ॥ जिस शस्त्र विशेष से पदार्थों को वेधते हैं उस को आविधः कहते हैं; "भ्रमर के डंक आदि को विन्धना कहते हैं", विष्वक्समे अर्थात् चारों ओर से समान वृक्ष को निघ्नः कहते हैं; "(तुल्यारोहपरिणाहवृक्षादेः)" उत्कारः, निकारः, ये २ धान्य के स्वच्छ करने के लिये ऊपर निकालने के नाम हैं, ॥ ३६ ॥

	पु १पु पु २पु
खाना-डांकना-छींक-डेंकार।	निगारो द्गार-विक्षावो-द्ग्राहा-(स्तु गरणादिषु)।
	३स ४स ५स पु
निवृत्ति।	आरत्य-वरति-विरतय उपरामे
	पुस
थूकना।	(वा स्त्रियां तु) निष्ठेव: ॥ ३७ ॥
	स ६न न
	निष्ठ्यूति-र्निष्ठेवनं निष्ठीवन-(मित्यभिन्नानि)।
	न स
वेग।	जवने जूति:
	स न
अन्त।	साति-(स्त्व) ऽवसाने (स्याद्)
	पु स
ज्वर।	(अथ) ज्वरे जूर्त्ति: ॥ ३८ ॥
	पु न
पशुओं को ललकारना।	उदज-(स्तु) पशुप्रेरणम्
	पु
शाप।	अकरणि-(रित्यादय: शापे)।
	७न
औपगव समूह।	(गोत्रान्तेभ्य स्तस्य वृन्दमित्यौ) पगवका (दिकम्) ॥ ३९॥
	न न
पूआ-पूरी का समूह।	आपूपिकं शाष्कुलिक-(मेवमाद्यमचेतसाम्)।

१ उ- २ उ-. ३-ति. ४ अ-. ५-ति. ६ नि-. ७ औ-क.

निगार आदि शब्द गरण आदि अर्थ में, हैं जैसे गरणे अर्थात् भोजन अर्थ में निगार:, "लीलना या निगलना" इस प्रसिद्ध का नाम है; उद्गरणे अर्थात् वमन में उद्गार:, और शब्द में विक्षाव:, यह छींक इस प्रसिद्ध का नाम है, उद्ग्रहणे अर्थात् उर्ध्वीकृत्य ग्रहणे उद्ग्राह: डेंकार -या हेंकार इस प्रसिद्ध का नाम है, (एकैकं) आरति:, अवरति:, विरति:, उपराम: "वा उपरम:" ये ४ उपरति या उपराम के नाम हैं; निष्ठेव: "स्त्री॰ निष्ठेवा, वा क्लीव निष्ठेवं" ॥ ३७ ॥ निष्ठ्यूति:. निष्ठेवनं. निष्ठीवनं, ये ४ मुख से कफ फेंकने के नाम हैं, और ये अभिन्न और एकार्थक हैं; जवनं, जूति:, उसी प्रकार यूति:, या ऊति:, और अवनम् ये २ वेग के नाम हैं; साति:, अवसानं, ये २ अन्त के नाम हैं; ज्वर:, जूर्त्ति:, ये २ ज्वर के नाम हैं; ॥ ३८ ॥ उदज:, पशुप्रेरणं, ये २ पशुओं अर्थात् गैया आदिकों के प्रेरण वा ललकारने के नाम हैं, शापे अर्थात् आक्रोश योत्यत्वे अकरणि: इस आदि होते हैं, जैसे "अजननि:, अजीवनि:, अवग्राह:, निग्राह:, आदि (तस्याजीवनिर्भूयात्)" गोत्रान्तेभ्य: अर्थात् अपत्यार्थ प्रत्ययान्त औपगव आदि शब्दों से तस्यवृन्दं इस अर्थ में औपगवादिकं होता है, जैसे उपगोरपत्यानि पुमांस: औपगवास्तेषां समूह: औपगवकं, आदि शब्द से गार्गकं, दाक्षकं, इस आदि होते हैं. ॥ ३९ ॥ यहां से लेकर वर्ग समाप्त पर्यन्त वृन्दं इस का अधिकार करते हैं, अचेतन जड़ अपूप आदि के वृन्दों के आपूपिकं, शाष्कुलिकं, साक्तुकं, आदि प्रयोग होते हैं, ।

मनुष्य- वा लड़कों का समूह ।	(माणवानान्तु) माणव्यं (न)
मित्रों का समूह ।	(सहायानां) सहायता ॥ ४० ॥ (स)
हर-वा हलोंका स० ।	हल्या (हलानां) (स)
ब्राह्मणों का स० ।	ब्राह्मण्य-वाडव्ये (तु द्विजन्मनाम्) । (न न)
पशु और पीठों का स० ।	(द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां) पार्श्वं पृष्ठ्य (मनुक्रमात्) ॥ ४१ ॥ (न न)
खलिहानों का स० ।	(खलानां) खलिनी खल्या (ऽप्य) (स स)
मनुष्यों का स० ।	(ऽथ) मानुष्यकं (नृणाम्) । (न)
ग्राम-जन-धूम्रां-पाश-बड़ी काश का समूह ।	ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या (पृथक् पृथक्) ॥ ४२ ॥ (स स स स स)
सहस्र-कारीष-चार्मण-और अथर्वणों का स० ।	(अपि) साहस्र कारीष चार्म्मणा थर्वणा (दिकम्) । (न न न १न)

॥ * * ॥ इति सङ्कीर्णवर्गः ॥ * * ॥

१ आ—णा.

माणवानां समूहो माणव्यं, "बाज़े पढ़ते हैं मानव्यं" माणवाः बालाः, सहायाः सखायः तेषां समूहः सहायता, हलानां समूहो हल्या, (एकैकं), ॥ ४० ॥ ब्राह्मण्यं, वाड़व्यं, ये २ ब्राह्मणों के समूह के नाम हैं; पर्शुकाः अस्थिविशेषास्तेषां समूहः पार्श्वं; पृष्ठानां समूहः पृष्ठ्यं, "यज्ञ के विषय में इन का स्मरण है" ये २ क्रम से होते हैं; ॥ ४१ ॥ खलिनी, खल्या, ये २ खलिहान के समूह के नाम हैं; मनुष्यों के समूह को मानुष्यकं कहते हैं; ग्रामों के समूह को ग्रामता; जनों के समूह को जनता; धूमों के समूह को धूम्या; पाशों के समूह को पाश्या; गल वा गला अर्थात् काशों के समूह को गल्या, पृथक् पृथक् कहते हैं; ॥ ४२ ॥ सहस्रों के समूह को साहस्रं; करीषों के अर्थात् सूखे गोबरों के समूह को कारीषं, चर्म वा चर्मियों के समूह को चार्मणं वा चार्मिणं, चर्मी खड्गधारी; वर्म कवच वालों के समूह को वार्मणं वार्मिणं, और अथर्वणों के समूह को आथर्वणं एक एक को कहते हैं, आदि शब्द से आंगारं, चैत्रं, इस आदि कहे जाते हैं; ॥

॥ इति सङ्कीर्णवर्गः ॥

॥ अथ चतुर्थ वर्गः ॥

(नानार्थाः केऽपि कान्तादि वर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।
भूरि प्रयोगा ये येषु पर्य्याये ष्वपि तेषु ते) ॥ १ ॥

१ आकाश और २ स्वर्ग ।	(आकाशे त्रिदिवे) नाको (पु)
१ स्वर्गादि और २ जन ।	लोक-(स्तु भुवने जने) । (पु)
१ छन्द और २ कीर्ति ।	(पद्ये यशसि च) श्लोकः (पु)
१ तीर और २ तलवार ।	(शरे खड्गे च) सायकः ॥ २ ॥ (पु)
१ सियार और २ वरुण ।	जम्बुको (क्रोष्टु वरुणौ) (पु)
१ चिउरा और २ लड़के ।	पृथुको (चिपिटार्भकौ) । (पु)
१ प्रकाश और २ दर्शन ।	आलोको (दर्शनोद्योतौ) (पु)
१ तुरही और २ पटह ।	(भेरी पटहम्) आनकौ ॥ ३ ॥ (पु)
१ गोदी और २ चिह्न	(उत्सङ्ग-चिह्नयोर्) अङ्कः (पु)
१ चिह्न और २ अपवाद ।	कलङ्को (ऽङ्कापवादयोः) । (पु)

न कहो किमर्थ अनेकार्थ का आरम्भ करते हैं क्योंकि उन का प्रागुक्त वर्गों में अभिधान है, जो यहां कहेंगे तो किस प्रकार प्रागुक्त हैं इस पर कहते हैं, नानार्था इति, यहां वक्ष्यमाण कान्तादि वर्गों में ही कोई २ नानार्थ कहे हैं और प्रागुक्त पर्य्यायों में नहीं कहे हैं, जैसे मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसिकः कंशिरोम्बुनोरिति, भूरि बहुत प्रयोग जहां कहीं काव्य आदिकों में कवियों ने बाहुल्य से किये हुये ये नाक लोक आदि शब्द हैं वे पहिले कहे हुए में जिन के पर्य्यायों में देख पड़ते हैं उन्हीं के पर्य्यायों में और अपि शब्द से यहां भी कान्तादिक वर्गों में भी कहे हैं, जैसे नाक शब्द प्रचुर प्रयोगत्व से पहिले स्वर्ग और आकाश अर्थ में कहा हुआ भी फिर यहां कहा, और जंबुक शब्द तो शृगाल के पर्य्याय में ही कहा है वरुण के पर्य्यायों में बहुत प्रयोग के अभाव से नहीं कहा, और यहां तो जंबुको क्रोष्टुवरुणौ यह दोनों जगह कहे जाते हैं ; ॥ १ ॥ नाकः यह एक ककारान्त आकाश और स्वर्ग का नाम है, "(न अकं दुःखमत्र नाकः)" लोकः यह एक स्वर्ग आदि भुवन और जन का नाम है, "(लोक्यते इति लोकः)" श्लोकः यह एक अनुष्टुप् आदि छन्द और कीर्त्ति का नाम है, "(श्लोक्यते इति श्लोकः, श्लोकसंघाते)" यश में जैसे, पुण्यश्लोको हरिः, सायकः "वा शायकः मतांतर में शारकः" यह एक बाण और खड्ग का नाम है, ॥ २ ॥ क्रोष्टा, सियार और वरुण प्रसिद्ध ये २ जम्बुक शब्दवाच्य हैं चिपिटः भूंजे धान के बने चिउड़ा यह प्रसिद्ध है, अर्भकः शिशु, ये २ पृथुकः कहलाते हैं, दर्शनं, उद्योतः प्रकाश, ये २ आलोक पद वाच्य हैं, भेरी, पटहं वाद्य विशेष, ये २ आनकः कहलाते हैं "(आनकः पटहो भेर्यां मृदंगे ध्वनदम्बुदे इति मेदिनी)" ॥ ३ ॥ उत्संग अर्थात् गोदी और चिह्न को अंकः कहते हैं ; चिह्न और दोषारोप को कलंकः कहते हैं ; "(कलंकोंके ऽपवादे च कालाय सुमलेऽपि चेति मेदिनी)" ; ।

१ सर्प्प और २ बढ़ई ।	पु तक्षकः (नागवर्द्धक्योः)
१ स्फटिक और २ सूर्य्य ।	पु अर्कः (स्फटिकसूर्य्ययोः) ॥ ४ ॥
१ वायु २ ब्रह्मा ३ सूर्य्य ।	पु (मारुते वेधसि व्रध्ने पुंसि) कः
१ शिर २ पानी ३ सुख ।	न कं (शिरोऽम्बुनोः) ।
१ तिन्नी २ संक्षेप ३ भात ।	पु (स्यात्) पुलाक-(स्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके) ॥ ५ ॥
१ उल्लू २ हाथी की पोंछ के पास का मांस ।	पु (उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च) पेचकः ।
१ करवा २ ओला ३ अनार ।	पुन (कमण्डलौ च) करकः
१ बुद्ध २ गणेश ३ गरुड़ ।	पु (सुगते च) विनायकः ॥ ६ ॥
१ हाथ २ बीता ।	पु किष्कु-(हस्ते वितस्तौ च)
१ बिच्छू २ आठवीं राशि ।	पु (शूककीटे च) वृश्चिकः ।
१ बिगड़ा २ अंक ।	पु (प्रतिकूले) प्रतीक-(स्त्रिष्वेकदेशे च पुंस्ययम्) ॥ ७ ॥

तक्षकः, यह एक, नाग विशेष और बढ़ई का नाम है, अर्कः, यह एक, स्फटिक और सूर्य्य का नाम है, "(अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके रवौ ताम्रे दिवस्पतामिति मेदिनी)" ॥ ४ ॥ कः यह एकाक्षर, का पद पवन–ब्रह्मा और सूर्य्य का नाम है, उस का रूप तो, कः, कौ, काः, इस आदि देव शब्द के तुल्य होते हैं, कं यह एकाक्षर शिर–और जल का नाम है, सुख का भी नाम है "(को ब्रह्मणि समोरात्मयमदंक्षेषु भास्करे, मयूराग्नौ च पुंसिस्यात्सुखशीर्षजलेषु कमिति मेदिनी)" पुलाकः, यह एक तण्डुल–शून्य–तुच्छ धान्य–संक्षेप अविस्तार–भक्तसिक्थक–अन्नावयव–का नाम है, ॥ ५ ॥ उलूकः पक्षिभेद और करिणः गज की पोंछ के मूल के निकट गुदाच्छादक मांस के पिंड को पेचकः कहते हैं, (एकं); कमण्डल–वर्षा का पत्थर–और दाड़िम आदि को करकः कहते हैं, सुगत बुद्ध–विघ्नराज–और गरुड़ को विनायकः कहते हैं, ॥ ६ ॥ हस्त प्रमाण और वितस्ति अर्थात् द्वादश अंगुल को किष्कुः कहते हैं, शूककीटे अर्थात् शूक सदृश रोम से व्याप्त कीट विशेष–भ्रमर वा केकड़ा–वृक्ष विशेष–और अष्टमराशि को वृश्चिकः कहते हैं, प्रतिकूल को प्रतीकः कहते हैं, तहां प्रतिकूल अर्थ में प्रतीक शब्द त्रिलिङ्ग है और अवयव में पुल्लिङ्ग है ॥ ७ ॥

१ चिरायता २ गन्धतृण ३ कुकुरमुता ।	(स्याद्) भूतिक[न] (न्तु भूनिम्बे कतृणे भूस्तृणे ऽपि च)।
१ तुरई २ चिचिंडा ।	(ज्योत्स्निकायां च घोषे च) कोषातक्य[१स] (ऽथ कट्फले ॥ ८ ॥
१ कायफल २ दूधिया खयर ।	सिते च खदिरे) सोमवल्कः[पु] (स्याद्) (ऽथ सिह्लके ।
१ लोहबान २ तिल्ली की खल वा पीना	तिलकल्के च) पिण्याको[पुन]
१ हींग २ काबुल देश ३ काबुली घोड़ा ।	बाह्लीकं[न] (रामठे ऽपि च) ॥ ९ ॥
१ इन्द्र २ गुग्गुल ३ उल्लू ४ सर्पग्राही ५ विश्वामित्र ६ स्याना ।	(महेन्द्रगुग्गुलूलूक-व्यालग्राहिषु) कौशिकः[पु] ।
१ रोग २ ताप ३ शङ्का ।	(रुक्तापशंकास्वा) तङ्कः[२पु]
१ थोड़ा २ नीच ३ छोटा ।	(स्वल्पे ऽपि) क्षुल्लक[पुमन]-(स्त्रिषु) ॥ १० ॥

१–कौ· २ आ–.

भूनिम्ब चिरायता· कत्तृण और भूस्तृणगन्ध विशेष और वृक्ष विशेष का वाचक भूतिकं है. ज्योत्स्निका अर्थात् तुरई और घोष अर्थात् अपामार्ग वा चिचिंडा का वाचक कोषातकी, "और कोषातकी, वा कोषातकः" है; ॥ ८ ॥ कटफले अर्थात् कायफल वृक्षभेद और शुभ्र खदिर को सोमवल्कः कहते हैं; सिह्लक के पर्यायभेद और तिलकल्क अर्थात् स्नेह रहित तिल चूर्ण वा तिल्ली की खरी–वा खल–वा–पीना को पिण्याकः कहते हैं, रामठ अर्थात् हींग–व शब्द से बाह्लीकदेश–अश्व–घोड़ा–को बाह्लीकं, "बाह्लिकं, वाह्लिकं, वा बह्लीकं" कहते हैं, ॥ ९ ॥ महेन्द्र–गुग्गुल–उल्लू–सर्पग्राही–विश्वामित्र–स्याना–और कोशकारादि, जैसे "(कौशिको नकुले व्यालग्राहि गुग्गुलकर्षयोः, विश्वामित्रे च कोशज्ञो लूकयोरपि कौशिक इति विश्वः)" इन अर्थों का वाचक कौशिकः "और स्त्री· कौशिकी, वा कौषिकः–को" है. रुक्रोग, तापः सन्ताप, शंका· भय–वा सन्देह इन अर्थों का वाचक आतङ्कः है, स्वल्प–अपि शब्द से नीच–कनिष्ठ–दरिद्र–इन अर्थों का वाचक क्षुल्लकः है, "स्त्री· क्षुल्लका, और भी खुल्लकः–का"; ॥ १० ॥

१ चन्द्रमा २ दीर्घायु ३ कुश ।	पु जैवातृकः (शशाङ्के ऽपि)
१ घोड़े का खुर २ बतक ।	पु (खुरेऽप्य श्वस्य) वर्त्तकः ।
१ बाघ २ अग्नि ३ दिग्गज ४ उजला कमल ।	पु (व्याघ्रे ऽपि) पुण्डरीको (ना)
१ अजवायन २ मोर की चोटी ३ प्रकाश ।	पु (यवान्यामपि) दीपकः ॥ ११ ॥
१ वानर २ भेड़िआ ३ कुत्तादि ।	१पु शालावृकाः (कपि-क्रोष्टु-श्वानः)
१ सोना २ गेरू ।	न (स्वर्णे ऽपि) गैरिकम् ।
१ अप्रिय कार्य्य २ पीड़ा ।	न (पीडार्थेऽपि) व्यलीकं (स्याद्)
१ अप्रिय २ झूंठ ।	न अलीकं (त्वप्रिये ऽनृते) ॥ १२ ॥
१ स्वभाव २ वंश ।	न (शीलान्वयाव) ऽनूके (द्वे)
१ खण्ड २ बकला ।	न शल्के (शकल-वल्कले) ।

१-क्.

जैवातृकः, यह एक चन्द्रमा-दीर्घायु-और कुश का नाम है; वर्त्तकः, यह एक अश्व का खुर-और अपि शब्द से पक्षि भेद का नाम है; पुण्डरीकः, यह १ व्याघ्र-अपि शब्द से अग्नि-और दिग्गज आदि का नाम और पुल्लिङ्ग है; और शुभ्रकमल आदि का नाम और क्लीब है; यवानी औषधी का भेद-अपि शब्द से मोर की शिखा प्रकाश आदि का वाचक दीपकः, "वा दीप्यकं भी" है, "(दीपकं वागलङ्कारे वाच्यवद्दीप्ति कारके। दीपकश्चाजमोदायां यवानी बर्हिचूडयोरिकोशान्तरम्)" ॥ ११ ॥ शालावृकाः, यह १ वानर-सियार-श्वान-बिल्ली-मृग-भेड़िया वा महाभारत में प्रेत, आदि का नाम है; गैरिकं, यह एक सोना-गेरू-और धातु विशेष का नाम है, "(गैरिकं धातुरुक्मयोरिति मेदिनी)"; व्यलीकं, यह एक अप्रिय कार्य्य-व्यथा-वैलक्ष्य-आदि का नाम है; अलीकं यह एक मिथ्या-अप्रिय कार्य्य-क्रोधजनक आदि का नाम है; ॥ १२ ॥ अनूकं, यह एक शील अर्थात् स्वभाव-अन्वय अर्थात् वंश का नाम है, "(अनूकं तु कुले शीले पुंसि स्याद्गतजन्मनीति मेदिनी)" शल्कं, यह एक शकलं, अर्थात्, खंड-वल्कलं अर्थात् त्वचा का नाम है; ।

१, १०८ कर्ष सोना २ छाती के भूषण ३ मोहर।	(साष्टे शते, सुवर्णानां हेम्न्युरो भूषणे पले ॥ १३ ॥ पुन दीनारेऽपि च) निष्को (ऽस्त्री)
१ विष्टा २ पाप ३ हाथी दांत ४ घी तेल आदि का शेष ५ दम्भ	पुन कल्को (ऽस्त्री समलैनसोः। दम्भेऽप्य)
१ त्रिशूल २ शिवधनुष ३ धूलि की वर्षा।	पुन (ऽथ) पिनाको (ऽस्त्री शूलशङ्करधन्वनोः) ॥१४॥
१ हथिनी २ नई ब्याई गाय।	स धेनुका (तु करेण्वां च)
१ मेघ समूह २ देवी।	स (मेघजाले च) कालिका।
१ नरक यातना २ वृत्ति।	स कारिका (यातनावृत्त्योः)
१ तर्की २ हाथी के सूंड़ का आगा ३ कमल बीज।	स कर्णिका (कर्णभूषणे ॥ १५ ॥

सुवर्ण के आठ अधिक सौ कर्षों का एक निष्कः कहलाता है, "(सहाष्टाभिर्वर्त्तत इति साष्टं)" ऐसे सुवर्ण मात्र के बने वक्षस्थल के भूषण को जो सुवर्ण के पल का बना हो और दीनारे अर्थात् अच्छे व्यवहार के योग्य द्रव्य को भी निष्कः, कहते हैं, "(पलं कर्षचतुष्टयम्, गुंजानामशीतिः कर्षः)" (एकं) ॥ १३ ॥ कल्कः, यह १ शमलं अर्थात् विष्ठा और एनः अर्थात् पाप और दम्भ का भी वाचक है; "(त्रिषु पापाशये कल्कोऽस्त्री विट्किट्टेभ दन्तयोरिति विश्वः कल्कोऽस्त्री घृततैलादिशेषे दम्भे विभीतक इति मेदिनी)" (एकं) पिनाकः, यह १ रुद्रचाप-धूलि की वर्षा-और त्रिशूल का नाम है, और स्त्री लिङ्ग नहीं है, (एकं) ॥ १४ ॥ धेनुका, यह एक हथिनी-और नवप्रसूत गैया का नाम है; कालिका, यह एक मेघसमूह-और देवता विशेष का नाम है; कारिका, यह एक नट की स्त्री-यातना अर्थात् क्लेश या नरक-विवरण श्लोक-कविता-क्रिया आदि का नाम है;

	करिहस्ताङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां)
	(त्रिषूत्तरे)।
१ देवता २ मनोज्ञ ३ श्रेष्ठ।	पुसन वृन्दारकौ (रूपिमुख्यौ)
१ मुख्य २ अन्य ३ केवल।	पुसन एके (मुख्यान्य केवला:) ॥ १६ ॥
१ मायावी और २ दूर से देखने-वाला।	पुसन पुसन (स्यात्) दाम्भिक: कौक्कुटिको (यश्चा दूरेरितेक्षण:)।
१ मुहदेखा २ जो मालिक का कार्य्य न कर सके।	पुसन लालाटिक: (प्रभोर्भालदर्शी कार्य्याक्षमश्च य:) ॥ १७ ॥
१ राजा २ चूतर ३ कङ्कण ४ चक्र।	पुन (भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु) कटको (ऽस्त्रियाम्)।
१ सूई की नोंक २ छोटा शत्रु ३ रोंए खड़े होना।	पु (सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च) कण्टक: ॥ १८ ॥
	॥ इति कान्तवर्ग: ॥

कर्णभूषण करिहस्तांगुली अर्थात् गजशुण्ड का अग्रभाग—और कमल के मध्य कोश अर्थात् बीज को कर्णिका कहते हैं, "(कर्णिका करिहस्ताग्रे करमध्याङ्गुलावपि, क्रमुकादि च्छटांशेब्ज वराटे कर्णभूषण इति मेदिनी)"; (एके) इस के अनन्तर खान्त शब्द के पूर्व जितने शब्द कहे गये हैं वे तीनों लिङ्गों में हैं; "वृंदारकः सुरे पुंसि मनोज्ञ श्रेष्ठयोस्त्रिष्विति मेदिनी" अर्थात् वृन्दारक, यह १ देवता वाची पुल्लिङ्ग है रमणीय और मुख्य वाची त्रिलिङ्ग है; एकः यह १ मुख्य—अन्य—और केवल का नाम है; ॥ १६ ॥ दाम्भिकः, यह १ मायावी—वा छली का नाम है; जो दूर से देखता है वह कौक्कुटिकः कहलाता है; और जो सेवक क्रोध—और प्रसाद के अर्थ प्रभु के ललाट ही को देखता है और जो प्रभु के कार्य्य करने को असक्त है ये दोनों लालाटिकः कहलाते हैं, "(लालाटिकः, सदालस्ये प्रभुभावनिदर्शिनीत्यजयः)"; ॥ १७ ॥ अब यहां से भूभन्नितम्ब इस आदि ये अमूलक ही श्लोक हैं, इसलिये इन की व्याख्या नहीं है, "(भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम्। सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कंटकः, ॥ १ ॥ पाको पंक्तिशिशूमध्यरते नेतरि नायकः। पर्य्यंकः स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः ॥ २ ॥ आर्द्रायामपि लुब्धकः यह भी पाठ है, पेटकस्त्रिषु वृन्देपि गुरौ देश्ये च देशिकः। खेटकौ ग्रामफलको धीवरेपि च जालिकः ॥ ३ ॥ पुष्परेणौ च किञ्जलकः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेपि च। स्यात्कल्लोलेप्युत्कलिका वार्द्धकं भाववृन्दयोः ॥ ४ ॥ करिण्यां चापि गणिकादारकौ बालभेदको। अन्धेप्यनेड़मूकः स्यात् टंकौ दर्पाश्मदारणौ)" ॥ ५ ॥ ये ५ श्लोक क्षेपक हैं, ॥ इति कान्तवर्गः ॥

॥ द्वितीयप्रकरण ॥

अर्थ	मूल
१ शोभा २ किरण ३ ज्वाला ।	पु मयूख-(स्त्विट्कर ज्वालास्व)
१ भौंरा २ बाण ।	पु (ऽलिबाणौ) शिलीमुखौ ।
१ निधिभेद २ ललाट की हड्डी ३ शङ्ख ।	पु शंखः (निधौ ललाटास्थि कम्बौ न स्त्री)
१ शून्य २ इन्द्रियादि ।	न (न्द्रिये ऽपि) खम् ॥ १९ ॥
१ किरण २ ज्वाला ३ चोटी आदि ।	१स (घृणिज्वाले अपि) शिखे

॥ इति खान्ताः ॥

॥ तृतीय प्रकरण ॥

अर्थ	मूल
१ पर्वत २ वृक्ष ।	२पु ३पु (शैलवृक्षौ) नगा वगौ ।
१ वायु २ बाण ।	पु आशुगौ (वायुविशिखौ)
१ शर २ सूर्य्य ३ पक्षी ।	पु (शरार्कविहगाः) खगाः ॥ २० ॥
१ पाखी २ सूर्य्य ३ पक्षी ।	पु पतङ्गौ (पक्षिसूर्य्यौ च)
१ सुपारी २ समूह ।	पु पूगः (क्रमुक-वृन्दयोः) ।

१—स्त्री. २ नग. ३ अग.

अथ खान्त वर्ग कहते हैं, त्विट् शोभा—करः किरण—और ज्वाला इन का वाचक मयूखः है; अलि भौंरा—और बाण शर इन का वाची शिलीमुखः है, शङ्खः, यह १ निधिभेद—ललाट की हड्डी—और शङ्ख का नाम है, खं, यह १ इन्द्रियपुर—क्षेत्र—शून्य—बिन्दु—आकाश—संवेदन—देवलोक—कल्याण में नपुंसक है यह मेदिनी के मत से इतने अर्थ का वाचक है; ॥ १९ ॥ शिखा, यह १ पद घृणिः किरण और ज्वाला—अपि शब्द से चूड़ा—प्रपद—मोर की चूड़ा—इन का वाचक है ॥ इति खान्तवर्गः ॥ गान्त कहते हैं, शैल और वृक्ष शब्द नग और अग के वाचक हैं; आशुगः, यह १ पवन—और बाण का नाम है; खगः, यह १ तीर—सूर्य—चिड़ियों का नाम है, "(अर्क यह यहाँ का उपलक्षण है)" ॥ २० ॥ पतङ्गः, यह १ पक्षी—सूर्य—च शब्द से धानभेद का नाम है; पूगः, यह १ क्रमुकः वृक्षभेद—वृन्द समूह का नाम है; और क्रमुक के फल को पूग कहते हैं, क्लीब है, ।

१ हरिण २ मृगशिर ३ ढूंढ़ना ।	पु (पशवो ऽपि) मृगा
१ प्रवाह २ ज़ोर से चलना ।	पु वेग: (प्रवाह-जवयोरपि) ॥ २१ ॥
१ फूल की धूरि २ गन्ध-चूर्ण ३ ग्रहण ४ धूरि आदि ।	पु पराग: (कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि) ।
हाथी ।	पु पु (गजे ऽपि) नाग-मातङ्गाव्
१ तिलक २ नेत्रान्त ३ अङ्गहीन ।	पु अपाङ्ग-(स्तिलके ऽपि च) ॥ २२ ॥
१ स्वभाव २ त्याग ३ निश्चय ४ अध्याय ५ सृष्टि ।	पु सर्ग: (स्वभावनिर्मोचनिश्चयाध्यायसृष्टिषु) ।
१ शस्त्र बांधना २ उपाय ३ ध्यान ४ सङ्गति ५ युक्ति ।	पु योग: (सन्नहनोपायध्यानसङ्गतियुक्तिषु) ॥ २३ ॥
१ स्त्री सुख २ हाथी ३ घोड़ा आदि ।	पु भोग: (सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययो:) ।
१ चातक २ हरिण ३ विचित्र रङ्ग ।	पु (चातके हरिणे पुंसि) सारंग: (शवले त्रिषु) ॥ २४ ॥

पशव: हरिण आदि—अपि शब्द से मृगशीर्ष—और ढूंढ़ने का वाचक मृग:, है; प्रवाह बहना—जव: शीघ्रता—अपि शब्द से विष्ठा आदि के निकलने का वाचक वेग:, है ॥ २१ ॥ फूल की धूलि—स्नान के अर्थ गन्ध द्रव्य का चूर्ण विशेष—रजस् मट्टी की धूलि—आदि शब्द से सुरत आदि के परिश्रम की शान्ति के अर्थ कामशास्त्र आदि से कहे कपूर आदि के चूर्ण को पराग: कहते हैं, अपि शब्द से उपराग को भी पराग:, कहते हैं; नाग:, मातङ्ग:, ये २ गज के नाम हैं, अपि शब्द से काद्रवेय—नागकेशर—नागवल्ली—हास्तिनपुर—मेघमुस्तक आदि का वाचक नाग शब्द पुल्लिङ्ग है, सीसा—और लवंग—का वाची नाग शब्द क्लीव है, अपि शब्द से चाण्डाल को भी मातङ्ग:, कहते हैं; अपाङ्ग:, यह १ तिलक का नाम है, अपि शब्द से नेत्र का अन्त—और अङ्गहीन को भी अपाङ्ग: कहते हैं; ॥ २२ ॥ सर्ग:, यह १ स्वभाव: प्रकृति—निर्मोच त्याग—निश्चय—अध्याय काव्य आदि में विश्रामस्थान—सृष्टि, निर्माण—इन अर्थों का वाचक है, निश्चय में जैसे "(गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एषत इति रघु:)"; योग:, यह १ सन्नहनं कवच वा शस्त्र बांधना—उपाय: साम—आदि—ध्यानं चित्तवृत्ति निरोध—संगति: संगम—युक्ति इन अर्थों का वाचक है; ॥ २३ ॥ भोग:, यह सुख स्त्री आदि से वा मोल स्त्री से—आदि शब्द से हाथी—घोड़ा—आदि के काम करने वालों के भृति अर्थात् पालन—सर्प का फण और देह आदि का वाचक है, "(पालने ऽभ्यवहारे च निर्वेशे पणयोपितामिति विश्व:)"; सारङ्ग:, यह १ चातक पक्षी विशेष—हरिण—का वाचक है, और चित्र विचित्र शरीर का वाचक सारङ्ग शब्द त्रिलिङ्ग है, "उसी प्रकार शारङ्ग: भी", "(सारङ्ग: पुंसि हरिणे चातके च मतंगजे, शवले त्रिष्विति मेदिनी)" ॥ २४ ॥

१ वानर २ मेंडक ३ सारथी ।	(कपौ च) प्लवगः (पु)
१ शाप २ अनादर ।	(शापे त्व) ऽभिषङ्गः (पु) (पराभवे) ।
१ जूआ आदि ।	(यानाद्यङ्गे) युगः (पु) (पुंसि)
१ दो २ सत्ययुगादि ।	युगं (न) (युग्मे कृतादिषु) ॥ २५ ॥
१ स्वर्ग २ बाण ३ गैया बैलादि ।	(स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।
	लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि) गौर् (पुस)
१ चिह्न २ शिश्नादि ।	लिङ्गं (न) (चिह्न शेफसोः) ॥ २६ ॥
१ प्रभुता २ शिखरादि	शृङ्गं (न) (प्राधान्यसान्वोश्च)
१ मस्तक २ योनि ।	वराङ्गं (न) (मूर्द्धगुह्ययोः) ।
१ श्री २ इच्छा ३ ऐश्वर्यादि ।	भगं (न) (श्री-काम-महात्म्य-वीर्य्य-यत्ना-र्क-कीर्त्तिषु) ॥ २७ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

प्लवगः, यह १ कपौ वानर—च शब्द से भेक—वा मेंडक—सारथी—आदि का वाचक है; अभिषङ्गः, यह १ शापे चिल्लाना—पराभवे तिरस्कार—इन अर्थों का वाचक है; युगः, यह एक यान सवारी—आदि शब्द से रथ—शकट—आदि के अवयव अर्थात् जूआ का वाचक है; युगं, यह एक युग्मे २ कृत—त्रेता—आदि युग—चार हाथ—और औषध विशेष का वाचक है; ॥ २५ ॥ गौः, यह एक स्वर्ग—इषुः बाण—पशुः गैया और बैल—वाक् वाणी—वज्र हीरा आदि—दिक् दिशा—नेत्र लोचन—घृणिः किरण—भू पृथिवी—जल पानी—लक्ष्य दृष्ट्या अर्थात् प्रयोगानुसार गो शब्द पूर्वोक्त अर्थों का वाचक पुल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्गों में जानना चाहिये, जैसे सुरभिः स्त्री॰—वृषभः पुं॰ है; चिह्नं चीह्न—शेफः शिश्न—इन अर्थों का वाचक लिङ्गं यह शब्द है, और अनुमान—हर मूर्ति के भेद का भी नाम है, "(लिङ्गं चिह्नेऽनुमाने च सांख्योक्तप्रकृतावपि । शिवमूर्तिविशेषेऽपि मेहनेऽपि नपुंसकमिति मेदिनी)"; ॥ २६ ॥ शृङ्गं यह एक प्राधान्यं प्रभुत्व—सानुः शिखर—च शब्द से पशु के अवयव विशेष का नाम है, "(शृङ्गं प्रभुत्वे शिखरे चिह्ने क्रीडाम्बुयन्त्रके । विषाणोत्कर्षयोश्चापि शृङ्गः स्यात्कूर्चशीर्षक इति मेदिनी)"; वराङ्गं, यह एक मूर्द्धा मस्तक—गुह्यं योनि, का वाचक है; भगं, यह एक श्रीः संपत् और शोभा—कामः इच्छा—माहात्म्यं ऐश्वर्य—वीर्यं पराक्रम—यत्नः प्रयत्न अर्कः सूर्य—कीर्त्ति यश—और योनि इन अर्थों का वाचक है, "(भगं श्रीयोनिवीर्येच्छा ज्ञानवैराग्यकीर्तिषु । माहात्म्यैश्वर्ययत्नेषु धर्मे मोक्षे ऽथ-नारयोरिति मेदिनी)" ॥ २७ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

॥ चतुर्थ प्रकरण ॥

१ मारना २ अस्त्र ।	पु परिघः (परिघाते ऽस्त्रे ऽप्य)
१ समूह २ जल का वेग ।	पु ओघो (वृन्दे ऽम्भसां रये) ।
१ मोल २ पूजा का जल ।	पु (मूल्ये पूजाविधाव्) ऽर्घो
१ पाप २ दुःख ३ शिकारादि ।	न (ऽंहो दुःखव्यसनेष्व्) ऽघस् ॥ २८ ॥
१ इष्ट २ अल्प ।	पुसन (विष्विष्टे ऽल्पे) लघुः

॥ पञ्चम प्रकरण ॥

१ सिकहर वा छींका २ काच ३ नेत्ररोग ।	पु काचाः (शिक्यमृद्भेददृग्रुजः) ।
१ विपरीत २ बड़ाई ३ ठगना ।	पु (विपर्य्यासे विस्तरे च) प्रपञ्चः
१ अग्नि २ आषाढ़ ३ मन्त्री आदि ।	पु (पावके) शुचिः ॥ २९ ॥ (मास्यमात्ये चाप्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु) ।
१ इच्छा २ किरणादि ।	स (अभिष्वङ्गे स्पृहायाञ्च गभस्तौ च) रुचिः (स्त्रियाम्) ॥ ३० ॥

परिघः, यह एक परिघाते अर्थात् चारों ओर से मारना–शस्त्रे लोहमय लाठी–अपि शब्द से योग भेद का नाम है; ओघः, यह एक वृन्दे समूह–अम्भसांरये जल के प्रवाह का नाम है, परंपरा–और नृत्यभेद–का भी नाम है; अर्घः, यह एक मूल्ये व्यवहारके योग्य–पूजा के उपहार वा जल का नाम है; अघं, यह एक अंहः पाप–दुःखं जन्म जरा मरण आदि–व्यसनं मृगया द्यूत आदि–विपत् राग द्वेष आदि का–वाचक है; ॥ २८ ॥ लघुः, यह एक इष्टे मनोज्ञ वा रमणीय–अल्पे थोड़ा–अपि शब्द से निःसार भी–इन अर्थों का वाचक है, और त्रिलिङ्ग है, ॥ इति घान्ताः ॥ काचाः, शिक्यं दही दूध आदि के पात्र के लटकाने के अर्थ रस्सी समूह का बना आश्रय विशेष–मृद्भेद मट्टी का भेद–जो कहा है "(काचः काचो मणिर्मणिरिति)" दृग्रुज नेत्र रोग–ये ३ काचाः कहलाते हैं; विपर्य्यासे विपरीतता–विस्तरे बड़ाई–च शब्द से प्रतारण ठगना–इन का वाचक प्रपञ्चः है; पावके अग्नि अर्थ का वाचक शुचिः है, ॥ २९ ॥ मासि आषाढ़–अमात्ये सचिव–अप्युपधे अर्थात्–धर्म्म आदि के परीक्षण से शुद्ध चित्त–इन अर्थों में शुचिः पुं॰ है, "(शुचिर्ग्रीष्माग्निशृङ्गारेष्वाषाढ़े शुद्धमंत्रिणि । ज्येष्ठे च पुंसि धवले शुद्धे ऽनुपहते त्रिष्विति मेदिनी)" मेध्ये पवित्र–सिते शुभ्र–इन अर्थों में त्रिलिङ्ग है; अभिष्वङ्गे अर्थात् क्रोध की इच्छा–स्पृहायां अति आसक्ति–गभस्तौ किरणों में–च शब्द से प्रकाश और शोभा में स्त्री॰ रुचिः, शब्द है; ॥ ३० ॥ ॥ इति चान्ताः ॥

॥ षष्ठ प्रकरण ॥

१ प्रसन्न २ रीछ ३ स्फटिक ।	(प्रसन्ने भल्लुकेप्य्) ऽच्छो (पु)
१ पल्लव २ हार ।	गुच्छः (पु न) (स्तवक-हारयोः) ।
१ पहिरना २ वस्त्र का किनारा ३ नाव ४ जल का किनारा ।	(परिधाना-ञ्चले) कच्छो (पु) (जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः) ॥ ३१ ॥

॥ सप्तम प्रकरण ॥

१ मोर २ गरुड़ ३ नकुल ।	(केकि-तार्क्ष्याव्) ऽहिभुजो (पु)
१ दांत २ ब्राह्मण ३ पक्षी ।	(दन्तविप्राण्डजा) द्विजाः (पु) ।
१ विष्णु २ शिव ३ भेंड़ा आदि ।	अजा (पु) (विष्णुहरच्छागा)
१ गैयों का स्थान २ रस्ता ३ समूह ।	(गोष्ठा ऽध्वनिवहा) व्रजाः (पु) ॥ ३२ ॥
१ बुद्ध २ यमराज ३ युधिष्ठिर ।	धर्म्मराजो (पु) (जिन-यमौ)
१ हाथीदांत २ सघन वन ।	कुञ्जो (पु न) (दन्ते ऽपि न स्त्रियाम्) ।

प्रसन्ने प्रसन्न–और भल्लुके भालू–का नाम अच्छः है; अपि शब्द से स्फटिक को भी अच्छः कहते हैं; स्तवकः फूल का गुच्छा–वा पल्लव हार मोतों की माला के भेद का गुच्छः नाम है; कच्छः, यह नक्र पुन्नाग द्रुम–परिधानाञ्चले अर्थात् पहिरने के वस्त्र का किनारा–नाव का अङ्ग विशेष–इन अर्थों का वाचक पुं० है, और जलप्राय देश के तट का वाची त्रिलिङ्ग है; ॥ ३१ ॥ इति छान्ताः ॥ केकी मोर–तार्क्ष्य गरुड़–और नकुल–इन का वाचक अहिभुज् है; दन्त दांत–विप्र ब्राह्मण यह उपलक्षण है, क्षत्री वैश्यों का–अण्डजाः पक्षिणः ये द्विजाः कहलाते हैं, "(विप्र क्षत्रिय विट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्या द्विजाः स्मृताः)"; विष्णु भगवान् –हर शिव–छाग भेंड़ा–काम–ब्रह्मा–रघुराजा के पुत्र इन का वाचक अजाः, है, "(अजो हरे हरे कामे विधौ छागे रघोः सुत इति विश्वः)"; गोष्ठं गैयों का स्थान–अध्वा मार्गः–निवहः समूहः, इन अर्थों का वाचक व्रजाः है, ॥ ३२ ॥ जिनः बुद्ध–यमः धर्मराज युधिष्ठिर में भी धर्मराज शब्द है–इन का वाचक धर्मराजः है, हाथीदांत–और अपि शब्द से निकुञ्ज–या सघन वन को कुञ्जः कहते हैं; ।

१ खेत २ नगर का द्वार।	न वलजे (क्षेत्रपूर्द्वारे)
उत्तम स्त्री।	स्त्री वलजा (वल्गुदर्शना) ॥ ३३ ॥
१ सम भूमि भाग २ संग्राम।	१स्त्री (समे क्ष्मांशे रणे ऽप्या) जिः
१ पुत्र-कन्या २ रैयत।	स्त्री प्रजा (स्यात्सन्ततौ जने)।
१ शंख २ चन्द्रमा ३ धन्वन्तरि ४ कमलादि।	पु अब्जौ (शंख-शशाङ्कौ च)
१ अपने २ नित्य।	पुस्त्रीन (स्वके नित्ये) निजं (त्रिषु) ॥ ३४ ॥

॥ अष्टम प्रकरण ॥

१ आत्मा २ प्रवीण।	पु (पुंस्यात्मनि प्रवीणे च) क्षेत्रज्ञो (वाच्यलिङ्गकः)।
१ बुद्धि २ नाम ३ हाथ आदि से अर्थ बताना ४ गायत्री ५ सूर्य्य की स्त्री।	स्त्री संज्ञा (स्याच्चेतनानाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना)। ॥ ३५ ॥
१ वैद्य २ पण्डित।	पु दोषज्ञो (वैद्यविद्वांसौ)
१ विद्वान् २ बुध।	पु ज्ञो (विद्वान्सोमजो ऽपि च)।

१ आजिः

क्षेत्र खेत—और नगर द्वार—का वाचक वलजं, है, "(वलजं गोपुरे क्षेत्रे सस्य संगरयोरपीति मेदिनी)"; वल्गुदर्शना अर्थात् अच्छी प्रिय स्त्री वलजा, कहलाती है; ॥ ३३ ॥ समे क्ष्मांशे अर्थात् सम भूभाग—रणे संग्राम—इन का वाचक आजिः है; संततिः सन्तान—और जन—का वाचक प्रजा शब्द है; शंख प्रसिद्ध—शशाङ्क चन्द्रमा—च शब्द से धन्वन्तरि वैद्य—कमल "अर्बुदमब्जं खर्व्वं निखर्व्व—शत कोटि संख्या में भी" इन का वाचक अब्जः, है; स्वके आत्मीये नित्ये चिरस्थायी—जैसे धर्म्मोनिजः नित्यः—इन का वाचक त्रिलिङ्ग निज शब्द है, ॥ इति जान्ताः ॥ ३४ ॥ क्षेत्रज्ञः, यह आत्मनि पुरुष—वाची पुं॰ है; और प्रवीण, वाची वाच्यलिङ्ग है; चेतना बुद्धि, नाम अभिधान, और हस्त आदि अर्थात् हाथ, भौंह, लोचन आदि से जो अर्थ की सूचना वा चेष्टा करनी है, इन सब का संज्ञा नाम है; "गायत्री, और सूर्य्य की स्त्री॰ को भी संज्ञा कहते हैं" ॥ ३५ ॥ वैद्य, और विद्वान् को, दोषज्ञः कहते हैं; विद्वान्, और सोमज अर्थात् चन्द्रमा का पुत्र बुधज्ञः, कहलाता है; ॥ इति ञान्ताः ॥

॥ नवम प्रकरण ॥

१ काक २ हाथी का गाल आदि ।	(काके-भगण्डौ) करटौ (पु)
१ हाथी का गाल २ कमर ३ चटाई	(गजगण्डकटी) कटौ (पु) ॥ ३६ ॥
१ चंदुला २ दुष्टचर्म ३ महादेव ।	शिपिविष्ट-(स्तु खलती दुश्चर्म्मणि महेश्वरे) । (पु)
१ विश्वकर्म्मा २ सूर्य्य ३ वढ़ई ।	(देवशिल्पिन्यपि) त्वष्टा । (१पु)
१ भाग्य २ काल ।	दिष्टं (दैवे ऽपि न द्वयोः) ॥ ३७ ॥ (न)
१ रस ।	(रसे) कटुः (पु)
१ अकार्य्य २ अहंकार ३ तीक्ष्ण ।	कट्व-(कार्य्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः) । (२न)
१ क्षेम २ अशुभ ३ शुभ ।	रिष्टं (क्षेमाशुभाभावेष्व) (न)
१ शुभ २ अशुभ ३ सौरि का घर ४ मदिरा ५ मरण का चिह्न ।	ऽरिष्टे (तु शुभाशुभे) ॥ ३८ ॥ (न)
१ माया २ निश्चल ३ यन्त्रादि ।	(मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ।

१—ष्टृ. २ कटु.

[illegible] प्रसिद्ध—कुम्भगण्ड हाथी का कपोल वा गाल करटः, कहलाता है, "(करटो गजगण्डेस्यात्कुसुंभे निंद्यजीवने । एकादशाहादि श्राद्धे दुर्दुरूटेपि वायसे । करटो वाद्यभेद इति मेदिनी)"; गजगण्डः हाथी का कपोल—और कटिः कमर वा श्रोणि चटाई को कटः, कहते हैं, "कटी—स्त्री॰ कटिः, और कटः भी" ॥ ३६ ॥ रोग से विना केश का खलति—दुष्ट चाम से युक्त—और [illegible] को—शिपिविष्टः, "और—शिपविष्टः, वा शिविपिष्टः" कहते हैं; देवशिल्पी विश्वकर्मा—वा [illegible]—अपि शब्द से सूर्य्य भेद—और वढ़ई को त्वष्टा कहते हैं, "वा तष्टा (ष्टृ)" [illegible] अर्थात् पूर्व्व जन्म कृतकर्म—में दिष्टं यह नपुंसक है, अपि शब्द से काल का वाची पुं॰ है ॥ ३७ ॥ रसे अर्थात् पीपरि आदि के रसभेद को कटुः, कहते हैं, नहीं करने के योग्य कार्य्य को कटु, कहते हैं यह क्लीव है; मत्सर अभिमान—और तीक्ष्ण तेज का वाची कटु [illegible] है; क्षेम कल्याण—अशुभ अमङ्गल—अभाव अर्थात् अशुभ के अभाव को रिष्टं कहते हैं शुभ और अशुभ को अरिष्टं कहते हैं, और सूतिका के गृह को भी अरिष्टं कहते हैं [illegible] सूतिकागारआसवे। शुभे मरणचिन्हे चेति मेदिनी"; ॥ ३८ ॥ माया [illegible] का [illegible] कूटं यह शब्द है और स्त्रीलिङ्ग नहीं है, अन्यथा आकार का [illegible] निश्चल और अधिकार आकाश आदि है, यंत्रं मृगबंधन विशेष, कैतवं [illegible] ;।

	पुन अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे) कूट-(मस्त्रियाम्) ॥ ३९ ॥
१ छोटी इलायची २ काल ३ अल्प ४ संशय।	स (सूक्ष्मैलायां) त्रुटिः (स्त्रीस्यात्काले ऽल्पे संशये ऽपि सा) ।
१ अर्त्ति २ धन्वा की नोक २ बड़ाई ३ कोन ४ करोड़ ।	१स (अत्युत्कर्षाश्रयः) कोट्यो
१ जड़ २ लिपटे वार।	स (मूले लग्नकचे) जटा ॥ ४० ॥
१ फल २ सम्पदा ।	स व्युष्टिः (फले समृद्धौ च)
१ ज्ञान २ नेत्र ३ देखना ।	स दृष्टि-(ज्ञाने ऽक्ष्णि दर्शने) ।
१ यज्ञ २ इच्छा ।	स इष्टि-(यागे च्छयोः)
१ निश्चित २ बहुत।	स सृष्टि-(निश्चिते बहुले त्रिषु) ॥ ४१ ॥
१ दुःख २ महावन।	पुसन कष्टे (तु कृच्छ्रगहने)
	(दक्षामन्दागदेषु तु) ।
१ दक्ष २ तीक्ष्ण ३ निरोग ।	पुसन पटु-(द्वौ वाच्यलिङ्गौ च)

१-टि.

अयोघनः लोह गढ़ने का आयुध विशेष, वा घन वा हथौड़ा शैलशृंगे पर्व्वत का शिखर वा चोटी सीराङ्गं हलका अग्रभाग, ॥ ३९ ॥ सूक्ष्म एला छोटी इलायची को त्रुटिः, कहते हैं; काले-कालभेद में अल्पे अति अल्प में-संशये सन्देह में भी त्रुटिः, शब्द कहा जाता है; अर्त्तिः धनुष का अग्रभाग-उत्कर्षः बड़ाई-अश्रिः कोन-का धार-"और करोड़" इन को कोटिः कहते हैं, "(संख्याभेदेपि कोटिः स्यात्कोटिरश्री च चापाग्रे संख्याभेद-प्रकर्षयोः)" यह विश्वकोश है, मूले जड़-और लग्न कचे अर्थात् मिले जुले केशों को जटा कहते हैं; ॥ ४० ॥ फल में-और फल साध्य समृद्धि में-अर्थात् इन का वाचक व्युष्टिः, है; ज्ञाने बोध-अक्ष्णि नेत्रदर्शने देखना-वा शास्त्र-इन को दृष्टिः, कहते हैं; यागः यज्ञ-इच्छा चेष्टा-वा अभिलाष-इन को इष्टिः, कहते हैं, "(इष्टिर्मताभिलाषेपि संग्रहश्लोकयागयोरिति मेदिनी)" निश्चिते निश्चय-बहुले अधिक-छोड़ा-निर्मित बनाया हुआ-इन को सृष्टिः, "वा सृष्टं" कहते हैं, और त्रिलिङ्ग हैं, ॥ ४१ ॥ कृच्छ्रं दुःख-गहनं महावन-वा नहीं जाने के योग्य-देश इन को कष्टं, कहते हैं, दक्षः उद्योगी-अमन्दः तेज-अगदः निरोग-इन को पटुः, वा पटवः, कहते हैं, और ये दोनों कष्ट और पटु वाच्य लिङ्ग अर्थात् त्रिलिङ्ग हैं;

॥ इति टान्ताः ॥

॥ दशम प्रकरण ॥

१ शिव २ मोर।	पु नीलकण्ठः (शिवे ऽपि च) ॥ ४२ ॥
१ पेट के भीतर का कोठा २ कोठिला ३ घर का मध्य।	(पुंसि) कोष्ठो (ऽन्तर्जठरं कुसूलो ऽन्तर्गृहन्तथा)।
१ सिद्धि २ नाश ३ अन्त।	स निष्ठा (निष्पत्तिनाशान्ताः)
१ बड़ाई २ मर्य्यादा ३ दिशा।	१स काष्ठा (त्कर्षे स्थितौ दिशि) ॥ ४३ ॥
१ अत्युत्तम २ अति वृद्ध ३ बड़ा भाई ४ महीना।	पुसन (त्रिषु) ज्येष्ठो (ऽतिशस्ते ऽपि)
१ बालक २ छोटा-भाई।	पुसन कनिष्ठो (ऽतियुवा-ल्पयोः)।
१ लाठी २ दण्ड करना आदि।	पुन दण्डो (ऽस्त्री लगुडे ऽपि स्याद्)
१ मट्टी की गेंद २ मीठा।	पु गुडो (गोलेक्षुपाकयोः) ॥ ४४ ॥
१ सर्प्प २ बाघ।	पु (सर्प्पमांसात्पशू) व्याडौ

१ काष्ठा.

शिव-अपि शब्द से मोर को भी नीलकण्ठः, कहते हैं, ॥ ४२ ॥ अन्तर्जठरं-पेट के भीतर जिसे कोठा कहते हैं कुसूल धान्यागार-कोठिला यह प्रसिद्ध-अन्तर्गृह घर का मध्य-इन को कोष्ठः, कहते हैं, और पुल्लिङ्ग है; निष्पत्तिः निष्पादन-वा सिद्धि-नाशः अदर्शन-अन्त प्रध्वंस-वा नाश-इन को निष्ठा, कहते हैं; उत्कर्षः बड़ाई-स्थितिः मर्य्यादा दिशि दिशा-और काल विशेष-इन को काष्ठा कहते हैं, ॥ ४३ ॥ अतिशये अति प्रशस्त-सुयोग्य-अपि शब्द से अति वृद्ध-अथवा बड़ा भाई-महीना-इन को ज्येष्ठः कहते हैं और त्रिलिङ्ग है; अति युवा बालक-और छोटे भाई को कनिष्ठः, कहते हैं; ॥ इति ठान्ताः ॥ लगुडे लाठी-अपि शब्द से दण्ड करना-प्रमाण विशेष-यम-सेना-किसी विशेष-वृक्ष की शाखा-कोना मथानी-अभिमान-घोड़ा-और सूर्य के निकट के ग्रह को भी दण्डः, कहते हैं, गोलः मट्टी आदि का-इक्षुपाकः ईख-या ऊख का विकार-इन को गुडः, कहते हैं; ॥ ४४ ॥ सर्प सांप मांसात् पशुः व्याघ्र-इन को व्याडः कहते हैं, "(मांसमत्तीति मांसात् सचासौ पशुश्चेति)" इसके समास में व्यालः भी होता है, उसको भी कहते हैं, ॥

१ गैया २ धरती ३ बाणी ४ बुध की स्त्री ।	१स स (गोभूवाचस्त्वि) डा इला: ।
१ बांस की शलाका २ विष ३ सिंहनाद ।	स क्ष्वेडा (वंशशलाकापि)
१ घरी-वा-ड़ी २ नाड़ी ।	स नाडी (काले ऽपि षट्क्षणे) ॥ ४५ ॥
१ दण्डा २ बाणा-दि ।	पुन काण्डो (ऽस्त्री-दण्ड-बाणा-र्व-वर्गा-वसर-वारिषु) ।
१ घोड़े का गहना आदि ।	न (स्याद्) भाण्ड-(मश्वाभरणे ऽमत्रे मूलवणिग्धने) ॥ ४६ ॥

॥ एकादश प्रकरण ॥

१ अत्यर्थ २ प्रति-ज्ञा ३ दृढ़ ।	न (भृश-प्रतिज्ञयोर्) बाढं
१ अतिशय २ दुःख ।	न प्रगाढं (भृश-कृच्छ्रयोः) ।
१ समर्थ २ मोटा ।	पुसन (शक्त-स्थूलौ त्रिषु) दृढौ
१ छोड़े २ मिले ३ सेना विशेष ।	पुसन व्यूढौ (विन्यस्त-संहतौ) ॥ ४७ ॥

१ इड़ा.

गौः धेनु–भू पृथिवी–वाणी–ड और ल को एकत्व होने से–इन को इड़ा, वा इला कहते हैं, और बुध की स्त्री को भी इला कहते हैं; वंशशलाका अर्थात् बांस की शलाका को–वा पिंजरा आदि के अर्थ वेणुशलाका–अपि शब्द से विष वाचक पुल्लिङ्ग, "सिंहनाद में स्त्रीलिङ्ग–इन अर्थों का वाचक क्ष्वेड़ा, शब्द है; काल समय में षट् क्षण मिते काले अर्थात् छ क्षण प्रमाण के समय में–अपि शब्द से शिरा आदि में भी–इन अर्थों का वाचक नाड़ी, शब्द है; ॥ ४५ ॥ दण्ड आदि ६ अर्थों का वाचक काण्ड शब्द है, और पुन्नपुंसक लिङ्ग है, जैसे दण्ड लाठी–बाण, शर–अर्वा कुत्सित वा निन्दित–वर्ग परिच्छेद–जैसा प्रथम काण्ड में कहा है, अवसर प्रस्ताव, वारि जल–सोना आदि के बने अश्व के आभरण–वा भूषणमात्र–अमत्रे पात्र–और वणिक का मूल धन–इन को भाण्डं कहते हैं; ॥ ४६ ॥ इति डान्ताः ॥ भृशं अत्यर्थ–प्रतिज्ञा स्वीकार–पोढ़ इन अर्थों का वाचक बाढं है; भृशं अतिशय–कृच्छ्र कष्ट–वा दुःख–उस का कारण–पाप–कष्ट देने वाला–प्राजापत्य आदि व्रत–मूत्र कृच्छ्ररोग–इन अर्थों का वाचक प्रगाढं, है, और दृढं को भी प्रगाढं, कहते हैं; शक्त समर्थ–और स्थूल दृढ़–वा मोटा–इन का वाचक दृढः, है, विन्यस्त त्याग–छोड़ा–वा रक्खा और संहत दृढ़–वा परस्पर मेल–सेना का विशेष संस्थापन–इन का वाचक व्यूढः है, ॥ ४७ ॥ इति ढान्ताः ॥

अर्थ	मूल
१ बालक २ स्त्री का गर्भ।	पु भ्रूणो (ऽर्भके स्त्रैणगर्भे)
१ बाणासुर २ तीर।	पु बाणो (बलिसुते शरे)।
१ छोटा टुकड़ा २ अन्न का अंश।	पु कणो (ऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे)
१ समूह २ शिवसेवक।	पु (संघाते प्रमथे) गणः ॥ ४८ ॥
१ जूआ की बाज़ी आदि।	पु पणो (द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धने ऽपि च)।
१ धनुष की रस्सी २ रसगन्धादि।	पु (मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशुक्लसन्ध्यादिके) गुणः ॥ ४९ ॥
१ चुपचाप रहना आदि।	पु (निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः) क्षणः।
१ ब्राह्मणादि ४, २ शुक्लादि।	पु वर्णो (द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ)
१ अक्षर।	पुन वर्णं-(न्तु वा ऽक्षरे) ॥ ५० ॥
१ सूर्य्य २ सूर्य्य का सारथी आदि।	पु अरुणो (भास्करे ऽपि स्याद्वर्णभेदे ऽपि च त्रिषु)।
१ शिव २ खम्भा ३ वृक्षादि।	पु स्थाणुः (शर्वे ऽप्य)
१ काक २ द्रोणाचार्य्य ३ परिमाण विशेषादि।	पु (ऽथ) द्रोणः (काके ऽपि च)
१ संग्राम २ शब्द।	पु (रवे) रणः ॥ ५१ ॥

एक छोटा लड़का—और स्त्री का गर्भ—भ्रूणः कहलाता है; महाराज बलि का पुत्र बाण और शर अर्थात् तीर को बाणः, कहते हैं; अतिसूक्ष्म धान्यांशे अर्थात् अन्न का बहुत छोटा टुकड़ा कणः कहलाता है; समूह और रुद्र के अनुचर को गणः कहते हैं; ॥ ४८ ॥ द्यूतं पासा आदि से खेल—आदि शब्द से मुर्गा आदि से युद्ध आदि—छोड़े अर्थ आदि—भर्ता अर्थात् नौकरी—वस्तु का मोल—या बेचने की चीज़ें—धनं द्रव्ये—काकिणी चार—इन को पणः, कहते हैं, और अपि शब्द से व्यवहार और स्तुति को भी पणः कहते हैं, मौर्वी धनुष की रस्सी—द्रव्याश्रिते रसगंध आदि—आदि शब्द का प्रत्येक में सम्बन्ध से सत्त्व रज आदि—शौर्य्य चातुर्य्य आदि—सन्धिविग्रह आदि—सन्ध्या आदि को गुणः कहते हैं; ॥ ४९ ॥ निर्व्यापारस्थितौ अर्थात् चुपचाप ठहरना—काल विशेषे अर्थात् काल विशेष मुहूर्त का द्वादशभाग—उत्सवे पुत्रजन्म आदि को क्षणः कहते हैं, "पर्व भी क्षणः है" विप्र क्षत्रिय आदि—शुक्ल पीत आदि—स्तुति वर्णन आदि—इन को वर्णः, कहते हैं; और अक्षर को भी वर्णः, कहते हैं, यह विकल्प से पुल्लिङ्ग और नपुंसक है, "(वर्णो द्विजादि शुक्लादि यशो गुण कथासु च। स्तुतौ ना न स्त्रियां भेद रूपाक्षरविलेपनेष्विति मेदिनी)" ॥ ५० ॥ भास्कर सूर्य्य—वर्णभेद—कपिल—अपि शब्द से सूर्य्य का सारथी—सन्ध्याराग—इन को अरुणः, कहते हैं; शिव—अपि शब्द से स्तम्भ आदि—और ठहरी वस्तु—इन को स्थाणुः कहते हैं, काके कौआ—अपि शब्द से अश्वत्थामा के पिता—और परिमाण विशेष—इन को द्रोणः, कहते हैं, संग्राम—रवे शब्द और सूर्य्य को रणः, कहते हैं, ॥ ५१ ॥

१ नाई २ मुख्यादि।	(पु) ग्रामणी-(र्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु)।
१ भेंड़ा-खरहा-ऊंटादि का रोम।	(स) ऊर्णा (मेषादि लोम्निस्या दावर्त्ते चान्तराभ्रुवोः) ॥ ५२ ॥
१ मृगी २ सोने की प्रतिमा आदि।	(स) हरिणी (स्यान्मृगीहेम प्रतिमाहरिताचया)।
१ मृग २ पाण्डुर वर्ण।	(पुमन) (त्रिषुपाण्डौ च) हरिणः
१ खम्भा २ लोहे की प्रतिमा।	(स) स्थूणा (स्तम्भे ऽपि वेश्मनः) ॥ ५३ ॥
१ वाञ्छा २ प्यास।	(स) तृष्णे (स्पृहा-पिपासे द्वे)
१ निन्दा २ दया।	(स) (जुगुप्सा-करुणे) घृणे।
१ बज़ार की गली २ दुकानादि।	(स) (वणिक् पथे ऽपि) विपणिः
१ मदिरा २ पश्चिम की दिशा।	(स) (सुराप्रत्यक् च) वारुणी ॥ ५४ ॥
१ हाथी २ हथिनी।	(स) करेणु-(रिभ्यां स्त्रीनेभे)
१ बल २ धन।	(पुन) द्रविण-(न्तु बलं धनम्)।
१ घर २ रक्षा करने वाला।	(न) शरणं (गृह-रक्षित्रोः)
१ कमल २ अग्निमन्थ।	(न) श्रीपर्णं (कमले ऽपि च) ॥ ५५ ॥

नापितः नाई–श्रेष्ठः मुख्य–ग्रामाधिपः गांव का प्रधान–इन को ग्रामणीः कहते हैं; मेष भेंड़ा का रोम–भेंड़ों का घेर–आदि पद से खरहा–ऊंट आदि के रोम को ऊर्णा, वा उर्णा, कहते हैं, "(सोर्णा तु चक्रवर्त्यादीनां महारोगिनां च महापुरुषलक्षणभूता मृणालतन्तु-सूक्ष्मा शुभ्रायता प्रशस्ता वार्त्ता प्रायेण भवति)" ॥ ५२ ॥ मृगी–सुवर्ण की पीली प्रतिमा–इन का नाम हरिणी है, पाण्डौ पाण्डुरवर्ण–च शब्द से मृगभेद–इन को हरिणः, कहते हैं, घर का खम्भा–अपि शब्द से लोह की बनी प्रतिमा–इन को स्थूणा कहते हैं, ॥ ५३ ॥ स्पृहा वाञ्छा–पिपासा पीने की इच्छा–इन को तृष्णा कहते हैं, जुगुप्सा निन्दा–करुणा दया–इन को घृणा, कहते हैं, वणिक्पथे वज़ार का रास्ता–वज़ार–"व्यवहार के योग्य वस्तु–इन को विपणिः, कहते हैं, सुरा मदिरा–प्रत्यक् पश्चिम की दिशा–इन को वारुणी, कहते हैं, ॥ ५४ ॥ इभ्यां–हथिनी को–करेणुः, वा स्त्री करेणू, कहते हैं, वह स्त्रीलिङ्ग है, और इभे–हाथी वाची करेणुः पुल्लिङ्ग है, बल–पराक्रम–और धन को–द्रविणं, कहते हैं, घर–और रक्षा करने वाले को–शरणं, कहते हैं, कमल–अग्निमन्थ वृक्ष विशेष–को श्रीपर्णी, कहते हैं, ॥ ५५ ॥

१ विष २ युद्ध ३ तेज ४ लोह।	न (विषाभिमरलोहेषु) तीक्ष्णं (क्लीबे खरे त्रिषु)।
१ हेतु २ मर्य्यादादि।	न प्रमाणं (हेतुमर्य्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु) ॥ ५६ ॥
१ जिससे क्रिया की जायादि।	न करणं (साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि)।
१ जीवों के जन्मादि।	न (प्राण्युत्पादे) संसरणं-(मसम्बाध-चमूगतौ ॥ ५७ ॥ घण्टापथे)
१ उगिला अन्नादि।	न (ऽथ वान्तान्ने) समुद्धरणं-(मुन्नये)। (अतस्त्रिषु)
१ पशु का सींग २ हाथीदांत।	पुसन विषाणं (स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः) ॥ ५८ ॥
१ क्रम से उतार पृथ्वी आदि।	पुसन प्रवणः (क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे)।
१ व्याप्त २ अशुद्धादि।	पुसन सङ्कीर्णो (निचिताशुद्धाव्)
१ शून्य २ ऊसर।	पुसन इरिणं (शून्यमूषरम् ॥ ५९ ॥

विष-अभिमरयुद्ध-"या मरण की निरपेक्षा से जो युद्ध का उत्साह है"-तेज और लोहा को-तीक्ष्णं कहते हैं, यह क्लीब है, और खरे तीग्म-तेजस्पर्श-को तीक्ष्णं, कहते हैं यह त्रिलिङ्ग है, "(तीक्ष्णं सामुद्रलवणे विषलोहाजिमुष्कके। क्लीबं यवाग्रजे पुंसि तिग्मात्मत्यागिनो-स्त्रिष्विति मेदनी)" हेतुः धूम आदि-मर्य्यादा सीमा-शास्त्र ६ दर्शन-इयत्ता प्रमाण-प्रमाता ज्ञाता-इन को प्रमाणं, कहते हैं; ॥ ५६ ॥ साधकतमं क्रियासिद्धि में अत्यन्त उपकारक-क्षेत्रं अनाज के उत्पत्ति का स्थान-गात्र देह-इन्द्रिय कर्ण नासिका आदि-अपि शब्द से कर्म आदि-इन को करणं कहते हैं; प्राणियों की उत्पत्ति-विना रोक सेना का गमन-घण्टापथ सड़क-और नगर मार्ग इन को संसरणं, कहते हैं; ॥ ५७ ॥ वान्तान्न उगिला अन्न-और उन्नय घास पात आदि का ऊपर लाना-उखाड़ डालना-इन को समुद्धरणं, और उद्धरणं भी कहते हैं; इन के आगे वक्ष्यमाण णान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं; पशु को सींग-और हाथी का दांत-इन को विषाणं, कहते हैं, "(स्त्री॰ विषाणी)" ॥ ५८ ॥ क्रम से निम्न गम्भीर-या क्रम से उतार पृथ्वी-प्रह्वनम्र-चतुष्पथ चौराहा इन को प्रवणः कहते हैं; निचित व्याप्त-अशुद्ध-अमिश्र-मिले हुए या नीच-को संकीर्णः, कहते हैं, "(संकीर्णो संकटे व्याप्ते कुत्रचिद्वर्णसंकरे इत्यजयः)" शून्यं निर्जन देश-ऊषरं स्थलभेद-या ऊसर धरती-को इरिणं, या ईरिणं, कहते हैं, ॥ ५९ ॥

॥ इति णान्ताः ॥

१ देव २ सूर्य्यादि ।	(देव-सूर्य्यौ) विवस्वन्तौ [१पु]
१ नद २ समुद्र ।	सरस्वन्तौ (नदा-र्णवौ) [२पु] ।
१ पक्षी २ गरुड़ ।	(पक्षि-तार्क्ष्यौ) गरुत्मन्तौ [३पु]
१ गीध २ पक्षी मात्र ।	शकुन्तौ (भास-पक्षिणौ) [४पु] ॥ ६० ॥
१ अग्नि २ धूममयी तारा ।	(अग्न्यु-त्पातौ) धूमकेतू [५पु]
१ मेघ २ पर्व्वत ।	जीमूतौ (मेघ-पर्व्वतौ) [पु] ।
१ हाथ २ नक्षत्र विशेष ।	हस्तौ (तु पाणि-नक्षत्रे) [पु]
१ पवन २ देवता ।	मरुतौ (पवना-मरौ) [६पु] ॥ ६१ ॥
१ हाथीवान् २ गाड़ीवान् ।	यन्ता (हस्तिपके सूते) [७पु]
१ धारण २ और पालन करने वालाआदि ।	भर्त्ता (धातरि पोष्टरि) [८पुसन] ।
१ पीने का पात्र २ लड़का आदि ।	(पानपात्रे शिशौ) पोतः [पु]
१ परेत २ मृतकादि ।	प्रेतः (प्राण्यन्तरेमृ ते) [पु] ॥ ६२ ॥

१–त्. २–त्. ३–त्. ४–न्त्. ५–तु. ६–त–वा–त्. ७–न्तृ. ८–र्तृ.

देव अमर–परमेश्वर–राजा–और सूर्य्य–दिवाकर–मंदारवृक्ष–दानव–इन को विवस्वान्, कहते हैं; नदः सरित विशेष–अर्णव समुद्र–इन को सरस्वान्, कहते हैं; पक्षी चिड़िये–तार्क्ष्यः– गरुड़–इन को गरुत्मान्, कहते हैं; भासः पक्षिभेद–प्रकाश–गोष्ठ–कुक्कुट–कौआ–और पक्षीमात्र को शकुन्तः, कहते हैं; ॥ ६० ॥ अग्निः–उत्पातः धूममयी तारा–वा ग्रहभेद–इन को धूमकेतुः, वा केशः कहते हैं; मेघ–और पर्व्वत को–जीमूतः, कहते हैं; पाणिः हाथ–नक्षत्र त्रयोदश इन को हस्तः, कहते हैं; पवन बतास–वा वायु–अमर देवता–इन को मरुत्, वा मरुतः, कहते हैं, ॥ ६१ ॥ हस्तिपक हाथीवान्–और सूत सारथी को यन्ता कहते हैं; धाता धारण करने वाला–पोष्टा पालन करने वाले–को भर्त्ता, कहते हैं, "स्वामी को भी भर्त्ता कहते हैं", पानपात्रे मद्य आदि पीने का पात्र–शिशु बालक–नाव इन को पोतः, कहते हैं, "रहने के स्थान को भी पोतः, कहते हैं"; प्राणयन्तर जीवभेद–और मृत मरे को प्रेतः, कहते हैं; ॥ ६२ ॥

१ ग्रहभेद २ पताका।	(ग्रहभेदे ध्वजे) केतुः (पु)
१ राजा २ पुत्र।	(पार्थिवे तनये) सुतः (पु)।
१ कारीगर २ कंचुकी आदि।	स्थपतिः (पु) (कारुभेदे ऽपि)
१ पहाड़ २ राजा।	भूभृद् (१पु) (भूमिधरे नृपे) ॥ ६३ ॥
१ राजा २ क्षत्रिय मात्र।	मूर्द्धाभिषिक्तो (पु) (भूपे ऽपि)
१ स्त्री का रज २ वसन्तादि समय।	ऋतुः (पु) (स्त्रीकुसुमे ऽपि च)।
१ विष्णु २ शिव।	(विष्णावप्य) ऽजिता (पु)-ऽव्यक्तौ (२पु)
१ बढ़ई २ सारथी।	सूत (पु)-(स्त्वष्टरि सारथौ) ॥ ६४ ॥
१ पण्डित २ प्रकाशितादि।	व्यक्तः (पुस्त्रन) (प्राज्ञे ऽपि)
१ तर्कादि शास्त्र २ उदाहरण।	दृष्टान्ताव् (३पु) (उभे शास्त्रनिदर्शने)।
१ सारथी २ ड्योढ़ीदारादि।	क्षत्ता (४पु) (स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे) ॥ ६५ ॥
१ प्रकरणादि।	वृत्तान्तः (पु) (स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्त्तयोः)।

१-त्. २-क्त. ३-न्त. ४-तृ.

ग्रहभेद-और ध्वजा वा पताका-को केतुः, कहते हैं; राजा-और पुत्र-को सुतः स्त्री॰ सुता, कहते हैं; कारुभेद अर्थात् शिल्पी वा कारीगर के भेद-और अपि शब्द से कंचुकी-अभीष्ट यज्ञकारी-को स्थपतिः, कहते हैं; पर्व्वत-और राजा को भूभृत्, कहते हैं; ॥ ६३ ॥ राजा-अपि शब्द से राजप्रधान-और क्षत्रियमात्र-को मूर्द्धाभिषिक्तः, कहते हैं; स्त्री कुसुम-वा रज-और-हेमन्त आदि ऋतु को भी ऋतुः कहते हैं; विष्णु-भगवान् को अजितः अव्यक्तः कहते हैं, अपि शब्द से शंकर को भी अजितः, कहते हैं; त्वष्टरि सूर्य्य-कारीगर-सारथी-"वा गाड़ीवान्" आदि को सूतः, कहते हैं; ॥ ६४ ॥ प्राज्ञ विद्वान्-स्फुट-प्रकाशित-दृश्य-स्थूल-आदि को व्यक्तः, कहते हैं; शास्त्र-न्याय शास्त्र आदि-निदर्शन उदाहरण-आदि को दृष्टान्तः, वा इन दोनों को दृष्टान्तौ कहते हैं; सारथी-द्वारपाल-"वा ड्योढ़ीदार-" क्षत्रिया-शूद्रा-इन के लड़के को क्षत्ता कहते हैं, वैश्या के लड़के को भी कहते हैं, "(क्षत्ता शूद्रात्क्षत्रियाजे इति विश्वकोशात्)" च शब्द से दासीपुत्र को भी क्षत्ता कहते हैं; ॥ ६५ ॥ प्रकरण प्रस्ताव-प्रकार भाव-वा अभिप्राय-कार्त्स्न्य सम्पूर्ण-वार्त्ता गाथा-इन को वृत्तान्तः कहते हैं; ।

१ समरादि ।	आनर्त्तः [पु] (समरे नृत्यस्थान-नीवृद्विशेषयोः) ॥ ६६ ॥
१ यमराजादि ।	कृतान्तो [पु] (यम-सिद्धान्त-दैवा-कुशलकर्म्मसु) ।
	(श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ॥ ६७ ॥
१ श्लेष्मपित्तादि २ रसादि ।	इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च) धातवः [१पु] ।
१ राजधानी रनिवासादि ।	(कक्षान्तरे ऽपि) शुद्धान्तो [पु] (नृपस्यासर्वगोचरे) ॥ ६८ ॥
१ बर्छी-वा सांग २ बल-वा ताक़त ।	(कासू-सामर्थ्ययोः) शक्तिर् [स]
१ कठिनता २ शरीर ।	मूर्त्तिः [स] (काठिन्य-काययोः) ।
१ बड़ाई २ लता वा वेलि ।	(विस्तार-वल्ल्योर्) व्रततिर् [स]
१ रात २ घर ।	वसती [२स] (रात्रि-वेश्मनोः) ॥ ६९ ॥
१ क्षयपूजाआदि ।	(क्षया-र्चयोर्) अपचितिः [स]
१ दान २ अन्तादि ।	साति-[स] (दाना-वसानयोः) ।

१—तु. २—ति वा—ती.

समर सङ्ग्राम—वा लड़ाई—नृत्यस्थान नाच का मण्डप—नीवृद्विशेष जनपद—वा देश विशेष—इन को आनर्त्तः कहते हैं; वह पश्चिम सागर के तीरस्थ द्वारावती है; ॥ ६६ ॥ यमः धर्म्मराज—सिद्धान्त वादीप्रतिवादी से निर्णीत अर्थ—दैवं पूर्व्व जन्म कृतकर्म—अकुशल कर्म पाप—इन को कृतान्तः कहते हैं; श्लेष्म आदि धातु शब्द वाच्य—आदि पद से पित्त आदि का सङ्ग्रह है रसः आहार के परिणाम से उत्पन्न भाग विशेष—रसरक्त आदि इस आदि पद से वसामज्जा आदि का संग्रह है—महाभूतानि पृथिव्यादीनि पांच—इन के गुण गन्धादि—॥ ६७ ॥ इन्द्रियाणि चक्षुः आदि—अश्मविकृतिः मनः शिला आदि—शब्दयोनिः भूसत्तायामित्यादि—इन को धातवः कहते हैं; राजा के कक्षान्तरे अर्थात् राजधानी का स्थान विशेष—और असर्व्व गोचर जो सब साधारण के जाने के योग्य नहीं है—अपि शब्द से अन्तःपुर वा रनवास—और अशौच का अन्त—इन को शुद्धान्तः कहते हैं; ॥ ६८ ॥ कासूः लोहे का भाला—वा बर्छी—प्रकाश—वा शाङ्ग—वा आयुध विशेष—और सामर्थ्य—को—शक्तिः, वा शक्ती कहते हैं; काठिन्यं दृढ़ता— काय शरीर—इन को मूर्त्तिः, कहते हैं; विस्तार बड़ाई—वल्ली लता—को व्रततिः, "वा व्रततिः", कहते हैं; रात—और वेश्म घर को वसतिः, कहते हैं; ॥ ६९ ॥ क्षयः हानि—अर्थ प्रयोजन—याचना भी—"अर्चा पूजा" इन को अपचितिः, कहते हैं; दान देना—हाथी के मद का जल—पालन—अवसानं अन्त—वा विराम—इन को सातिः, कहते हैं, "वाऽ़े सतिः, और संतिः भी कहते हैं" ।

१ दुःख २ धन्वा का किनारा।	स अर्त्तिः (पीडा-धनुष्कोट्योर्)
१ सामान्य जाति २ जन्म।	स जातिः (सामान्य-जन्मनोः) ॥ ७० ॥
१ लोकाचार २ टपकना।	१स (प्रचार-स्यन्दयोः) रीतिर्
१ उपद्रवादि २ विदेश।	स ईति-(डिम्ब-प्रवासयोः)।
१ उदय २ लाभ।	स (उदये ऽधिगमे) प्राप्तिः
१ अग्नित्रयादि २ दूसरा युग।	स त्रेता (त्व ऽग्नित्रये युगे) ॥ ७१ ॥
१ नारद की वीणा २ महत्त्व गुण युक्त भार्य्या।	स (वीणाभेदे ऽपि) महती
१ भस्म २ ऐश्वर्य्यादि।	स भूति-(र्भस्मनि सम्पदि)।
१ सर्पों की नदी और नगरी।	२स (नदी नगर्यो-र्नागानां) भोगवत्य (ऽथ सङ्गरे ॥ ७२ ॥
१ समर २ सङ्ग ३ सभा।	स संगे सभायां) समितिः
१ क्षय २ वास ३ पृथ्वी।	स (क्षय-वासावपि) क्षितिः।
१ सूर्य्य का तेज २ शस्त्र ३ अग्नि की ज्वाला।	३स (रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च) हेतयः ॥ ७३ ॥
१ लोक २ छन्द विशेष ३ पृथ्वी ४ जन।	स जगती (जगतिच्छन्दो विशेषे ऽपि क्षितावपि)।

१—ति. २—तो. ३—ति.

पीड़ा दुःख—और धनुष का अग्रभाग—इन को अर्त्तिः, कहते हैं, "आर्त्तिः भी पाठ है" एक प्रकार—वा सामान्य गोत्त्व आदि—मालती पुष्प विशेष—"वा चमेली" और जन्म—इन को जातिः, कहते हैं, ॥ ७० ॥ प्रचारः लोकाचार—स्यन्दः टपकना—इन को रीतिः, कहते हैं, "(रीतिः प्रचारे स्यन्दे च लोहकिट्टारकूटयोरिति विश्वः)" डिम्ब—शिशु—अण्ड—प्लीह रोग—और विप्लव—फिर यह सात ७ प्रकार का है, जैसे अति वृष्टिः—अनावृष्टिः—शलभाः—मूषकाः—शुकाः—स्वचक्रं—परचक्रं भी—ये ७ ईतियां कहलाती हैं, और प्रवास अर्थात् विदेश को ईतिः कहते हैं, उदये उत्पत्ति—"वा बढ़ती"—अधिगमे लाभ—इन को प्राप्तिः कहते हैं, अग्नित्रये अर्थात् दक्षिणाग्नि—गार्हपत्याग्नि—आहवनीयाग्नि—और दूसरे युग को आकारान्तात्रेता शब्द कहते हैं, ॥ ७१ ॥ वीणाभेदे नारद की वीणा—अपि शब्द से महत्त्व गुण युक्त भार्य्या को भी महती कहते हैं, भस्म राख—और अणिमादिक ऐश्वर्य्य—को भूतिः कहते हैं, नागों की—नदी—नगरी—को भोगवती कहते हैं, "भोगवान् (—वत्)" "पातालगंगा—सर्प शरीर—वामाध्यक्ष—नाभि—वा साईं—को भी भोगवती कहते हैं, संगर संग्राम—"वा लड़ाई" ॥ ७२ ॥ संगमेलन—सभा जन समूह—को समितिः, कहते हैं, क्षय नाश—ह्रास—और वासः निवास—को क्षितिः, कहते हैं, अपि शब्द से मेदिनी वाचक क्षिति शब्द है रवे रर्चिः सूर्य्य की प्रभा—शस्त्र अस्त्र—"वा हथियार—" वह्निज्वाला आगि का जलना—इन को हेतिः, वा हेतयः, कहते हैं, ॥ ७३ ॥ जगति लोक में—छन्दोविशेषे द्वादशाक्षरपदयुक्त विशेष छन्द में—क्षिती पृथिवी में—और अपि शब्द से जन का भी वाचक जगती शब्द है, ।

१ दश अक्षर के चरण का छन्द २ पांति ।	स पंक्ति-(श्छन्दो ऽपि दशमं)
१ प्रभाव २ उत्तर काल ।	१स (स्यात्प्रभावे ऽपि चा) यतिः ॥ ७४ ॥
१ जाना २ सेना का भेदादि ।	स पत्ति-(र्गतौ च)
१ पक्ष २ पक्षी का पक्षमूल ३परिवा आदि ।	स (मूले तु) पक्षतिः (पक्षभेदयोः) ।
१ भग २ लिङ्ग ३ मंत्री आदि ।	स प्रकृति-(र्योनि-लिङ्गे च)
१ कौशिकी २ जीविका आदि।	२स (कौशिक्याद्याश्च) वृत्तयः ॥ ७५ ॥
१ वालू २ वालू युक्त देशादि ।	स सिकताः (स्युर्वालुकापि)
१ चारों वेद २ कानादि ।	स (वेदे श्रवसि च) श्रुतिः ।
१ बड़ी प्यारी स्त्री २ वा स्त्री मात्र ।	स वनिता (जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति) ॥ ७६ ॥
१ भूमि का बिल २ गुफ़ा ।	स गुप्तिः (क्षितिव्युदासे ऽपि)
१ धारण २ धैर्य्य ।	स धृति-(र्द्धारण-धैर्य्ययोः) ।
१ भटकटैया २ वनभटा आदि ।	स वृहती (क्षुद्रवार्त्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि) ॥ ७७ ॥

१ आ-. २-त्ति.

दशमं छन्दः अर्थात् दशाक्षर का पाद-और अपि शब्द से पत्र की पांती को पंक्तिः, कहते हैं; प्रभावः प्रताप-और आने वाले उत्तर काल को भी आयतिः,कहते हैं, "(आयतिः, संयमे दैर्घे प्रभावागामि कालयोरिति विश्वः)" ॥ ७४ ॥ गतौ जाना-बीर का भेद-वा सैन्य का भेद-इन को पत्तिः, कहते हैं, पक्षभेदयोः यह षष्ठी है, और पक्ष शब्द मासार्द्धवाची और खगावयववाची है, इस लिये द्विवचन है, मासार्द्ध का मूल परिवा-और पक्षी के पक्ष का मूल नीचे के भाग को पक्षतिः, कहते हैं; योनि-और लिङ्ग-च शब्द से प्रधान तत्त्व-राजमंत्री-और स्वभाव को प्रकृतिः, कहते हैं; कौशिकी नदीविशेष जिसे विश्वामित्र की बहिन ने बनाई है-आद्य शब्द से आरभटी-सात्त्वती-भारती-च शब्द से जीविका-और सूत्र के विवरण को वृत्तिः, कहते हैं; ॥ ७५ ॥ वालुका वालू अपि शब्द से बालू युक्त देश-और ठिकरा से युक्त को स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त सिकताः, कहते हैं; चारों वेद-श्रवसि कर्ण-सुनना-च शब्द से प्रसिद्ध को भी श्रुतिः, कहते हैं, "(श्रुतिः श्रोत्रे तथाम्नाये वार्त्तायां श्रोत्रकर्म्मणीति विश्वः)"; जनित उत्पन्न अत्यन्त अनुराग है जिस्में उसे और योषिति अर्थात् स्त्री मात्र को वनिता कहते हैं; ॥ ७६ ॥ क्षितिव्युदासे अर्थात् पृथिवी के भीतर का बिल-वा गुफ़ा-बन्दीख़ाना-अपि शब्द से रक्षण को गुप्तिः, कहते हैं, "(गुप्तिः कारागृहे प्रोक्ता भूगर्त्ते रक्षणेऽधमे इति विश्वः)" "बिल बनाने के लिये धरती के खनने को भी गुप्तिः कहते हैं यह सुभूति का मत है"; धारण रखना-धैर्य्य धीरता-"तुष्टि सन्तोष-वा योगभेद-अध्वर यज्ञ को भी" धृतिः, कहते हैं; क्षुद्रवार्त्ताकी ओषधि विशेष-वा भटकटैया-वा वनभटा-वा वैंगन-और छन्दोभेदे नवाक्षर के चरण के छन्द को वृहती, कहते हैं, "महती विपुला वह भी वृहती कहलाती है"; ॥ ७७ ॥

१ स्त्री २ हथिनी ।	स वासिता (स्त्री-करिण्योश्च)
१ जीविका २ वार्तादि ।	स वार्त्ता (वृत्तौ जनश्रुतौ) ।
१ लघु २ असार ३ रोग रहित ।	न वार्त्तं (फल्गुन्यरोगे च त्रिषु)
१ पानी २ घी ३ सुधा ४ यज्ञ शेष ।	(ऽप्सु च) न घृता-ऽमृते न ॥ ७८ ॥
१ चांदी २ सोना ।	न कलधौतं (रूप्य-हेम्नोर्)
१ हेतु २ चिह्न ।	न निमित्तं (हेतु-लक्ष्मणोः) ।
१ शास्त्र २ सुना हुआ ।	न श्रुतं (शास्त्रा-वधृतयोर्)
१ सत्ययुग २ अलमर्त्य ।	(युग-पर्य्याप्त्योः) न कृतम् ॥ ७९ ॥
१ बड़ा भय २ बड़ा साहस ।	न अत्याहितं (महाभीतिः कर्मजीवानपेक्षि च) ।
१ न्याय २ पृथिव्यादि ५-३ सत्यादि ।	(युक्ते क्ष्मादावृते) न भूतं (प्राण्यतीते समे त्रिषु) ॥ ८० ॥
१ श्लोक २ यश ३ भूत कालादि ।	न वृत्तं (पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले) ।
१ राज्य २ बड़ा आदि ।	न महद् (राज्यं च)
१ अपवाद २ निन्दित ।	न ऽपगीतं (जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु) ॥ ८१ ॥

स्त्री योषित्–करिणी हथिनी–को वासिता, और अवमात्र–तथा पक्षी के शब्द को वासितं, कहते, हैं, यह नपुंसक है; वृत्तिः जीविका–जनश्रुतिः वृत्तान्त–वा [illegible]–को वार्त्ता, कहते हैं; फल्गुनि लघु–वा असार–वा तत्वहीन को क्लीब वार्त्तं, कहते हैं [illegible] और अरोग रोग रहित का वाचक वार्त्तं, त्रिलिङ्ग है; घृत–और अमृत–का वाची अप्सु सप्तम्यन्त शब्द अर्थात् जल हैं, च शब्द से घृत और जल का वाची क्लीब है, और भी अमृतं यह घृत–पीयूष–यज्ञशेष–का वाचक है; ॥ ७८ ॥ रूप्यं रजत–या चान्दी–हेम सुवर्ण–को [illegible]लधौतं, कहते हैं; हेतुः कारण–लक्ष्म चिह्न को निमित्तं, कहते हैं; शास्त्रं ६ शास्त्र–अव[illegible]तं सुना हुआ–को श्रुतं, कहते हैं; युग प्रथम युग–पर्य्याप्ति अलमर्त्य को–कृतम्, कहते [illegible] ॥ ७९ ॥ महाभीतिः बड़ा भय–जीवानपेक्षि कर्म अर्थात् बड़े साहस के कर्म को अत्याहि[illegible] कहते हैं; युक्ते न्याय्य क्ष्मादौ क्षिती आदि पांच–तत्त्वे सत्य–प्राणिनि जन्तु–अतीते गत[illegible]समे सदृश–इन को भूतं, कहते हैं, "(भूतं क्ष्मादौ पिशाचादौ न्याय्ये सत्योपमानयोरिति वि[illegible]:)" ॥ ८० ॥ पद्ये श्लोक–चरित्रे यश–अतीते बीत गया–दृढे गाढ़–निस्तले गोल–वा वर्त्तु[illegible]–इन को वृत्तं कहते हैं, और तीनों लिङ्ग हैं, राज्यं राज–च शब्द से बड़े को भी महत्, कहते हैं, "(महाराज्ये विशाले चेति विश्वः)"; जन्ये जनों के अपवाद–और गर्हिते निन्दित को अपगीतं कहते हैं, और त्रिलिङ्ग है; ॥ ८१ ॥

१ रूपा २ उजला ३ द्वीप विशेष।	न श्वेतं (रूप्ये ऽपि)
१ रत्नों की माला २ सोना ३ चान्दी-आदि।	न रजतं (हारे रूप्ये सिते त्रिषु)।
	(त्रिष्विती) १पुसन
१ जङ्गम २ भुवन।	जगद् (इङ्गे ऽपि)
१ नीलादिरङ्ग २ रुधिर।	पुसन रक्तं (नील्यादिरागि च) ॥ ८२ ॥
१ सित २ पीत ३ निर्म्मल।	पुसन अवदातः (सिते पीते शुद्धे)
१ बद्ध २ अर्ज्जुन।	पुसन (बद्धार्ज्जुनौ) सितौ।
१ उचित २ संस्कारी ३ असहनशील।	पुसन (युक्ते ऽतिसंस्कृते मर्षिण्य) ऽभिनीतौ
१ बनायेपदार्थ २ शास्त्र लक्षण युक्तादि।	पुसन (ऽथ) संस्कृतम् ॥ ८३ ॥
१ विनासीमा २ विष्णु ३ शेष।	(कृत्रिमे लक्षणोपेते ऽप्य) पुसन ऽनन्तो (ऽनवधावपि)।
१ प्रसिद्ध २ हर्षितादि।	पुसन (ख्याते हृष्टे) प्रतीतो
१ कुलीन २ पण्डितादि।	पुसन ऽभिजात-(स्तु कुलजे बुधे) ॥ ८४ ॥

१–त.

रूप्यं रूपा–वा चान्दी–अपि शब्द से श्वेतद्वीप और शुभ्र को भी श्वेतं कहते हैं, "(श्वेतं रूप्ये ऽन्यवच्छुक्ले श्वेतो द्वीपाद्रिभेदयोरिति विश्वः)"; हारः रत्नों की माला विशेष–रूप्यं रूपा–सितं शुभ्र–हेम्नि सुवर्ण–को रजतं कहते हैं, और शुभ्र का वाची त्रिलिङ्ग है, "सोना को महारजतं कहते हैं"; इस रजत शब्द से आगे जितने तान्त शब्द हैं वे त्रिलिङ्ग हैं; इङ्गे जङ्गम–और भुवन–को जगत्, कहते हैं; नील्यादि रंग से युक्त और रुधिर को रक्तं, कहते हैं, "(रक्तो नुरक्ते निल्यादिरंजिते लोहिते त्रिषु। क्लीवन्तु कुंकुमे ताम्रे इति मेदिनी)" ॥ ८२ ॥ सितं उजला–पीतं पीला–शुद्ध निर्मल–को अवदातः, कहते हैं; अर्ज्जुनः शुक्ल–और बद्ध अर्थात् कैदी को सितः, कहते हैं; युक्ते न्याय्य–वा उचित–अति संस्कृते संस्कार प्राप्त–वा भूषित–मर्षिणि सहनशील–अति सिंगार युक्त–को अभिनीतः, कहते हैं; ॥ ८३ ॥ कृत्रिम बनाये घट आदि–लक्षणोपेते शास्त्र के लक्षण से युक्त–और संस्कार से युक्त वा अलङ्कार से युक्त को–संस्कृतं, कहते हैं; अनवधौ विना सीमा– अपि शब्द से शेष आदि को अनन्तः, कहते हैं, "उसी प्रकार विष्णु–वा सर्पों के राजा को भी अनन्तः, कहते हैं, और इन अर्थों में पुल्लिङ्ग है, "(अनन्तः केशवे शेषे पुमाननवधौ त्रिषु इति मेदिनी। अनन्तं खे निरवधाविति हैमः)"; ख्याते प्रसिद्ध–हृष्टे हर्षित–"और भी जाना हुआ", वा मर्य्याद प्राप्त, को प्रतीतः, कहते हैं; कुलजे कुलीन–बुधे पण्डित–"और श्रेष्ठ को" अभिजातः, कहते हैं, ॥ ८४ ॥

१ पवित्र २ एकान्तादि ।	पुसन विविक्तौ (पूत-विजनौ)
१ मोहित २ बढ़ा हुआ आदि ।	पुसन मूर्छितौ (मूढ-सोच्छ्रयौ) ।
१ खट्टा २ निठुर ।	(द्वौ चाम्ल-परुषौ) पुसन शुक्तौ
१ शुक्ल २ कृष्णवर्ण ।	पुसन शिती (धवल-मेचकौ) ॥ ८५ ॥
१ सच्चा २ साधु ३ विद्यमानादि ।	(सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्ते ऽभ्यर्हिते च) १पुसन सन् ।
१ पूजित २ शत्रुपीड़ितादि ।	पुसन पुरस्कृतः (पूजिते ऽरात्यभियुक्ते ऽग्रतः कृते) ॥ ८६ ॥
१ निवास २ वायुरहितादि ।	पुसन निवातावू (आश्रया-वातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म्म यत्) ।
१ उत्पन्न २ अभिमानी ३ बढ़ाहुआ ।	(जातोन्नद्धप्रवृद्धाःस्युर्) पुसन उच्छ्रिता
	पुसन उत्थिता-(स्त्वमी ॥ ८७ ॥
१ वृद्धिमान् २ प्रवृत्त ३ उत्पन्न ।	वृद्धिमत्प्रोद्यतो त्पन्ना)
१ सत्कारयुत २ पूजित ।	पुसन आदृतौ (सादरा-र्चितौ) ।
	इति तान्ताः ॥

१ सत्–

पूतं पवित्र–विजनः एकान्त–और छोड़ा गया–इन को विविक्तः, कहते हैं; मूढः मोह को प्राप्त–सोच्छ्रयः वृद्धियुक्त–और अचेतन–वा अज्ञान–को मूर्छितः, कहते हैं; अम्लं खट्टा–वा चुक्र जो तीन रात का रक्खा हो वा खट्टा मठा–परुषः निठुर–ये दो शुक्तः, कहलाते हैं, "शुक्तं पूताम्लनिष्ठुर इति मेदिनी"; धवलः श्वेत–मेचकः कृष्णवर्ण–को शितिः–ती–ति, "और भी सितिः" कहते हैं, ॥ ८५ सत्ये सच्चा वा सत्ययुग–साधौ योग्य–वा उत्तम कुल जात–वा उचित–विद्यमाने वर्त्तमान काल–प्रशस्ते प्रशंसनीय वा श्रेष्ठ–अभ्यर्हिते पूजित–इन को सन्, कहते हैं, "स्त्री सती" धर्म मात्र में क्लीब है और धर्मयुक्त में सत् त्रिलिङ्ग है; पूजिते मान्य–अरात्यभियुक्ते शत्रु से जीते हुये–और अग्रतः कृते अगाड़ी किये हुये को पुरस्कृतः, कहते हैं; ॥ ८६ ॥ आश्रयः निवास–अवातः वातवर्ज्जित–को निवातः, कहते हैं, और जो शस्त्र से अभेद्य है वर्म अर्थात् कवच, वा बख्तर, उसे भी निवातः, कहते हैं, जैसे निवात कवचो धीरः, "निवातो दृढसन्नाहः इति अजयः"; जातः उत्पन्न–उन्नद्धः दृप्तः–वा अभिमानी–प्रवृद्ध बढ़ा हुआ–इन को उच्छ्रितः, वा ये उच्छ्रिताः, कहलाते हैं; ये वक्ष्यमाण वृद्धिमत् आदि उत्थिताः, कहलाते हैं, ॥ ८७ ॥ वृद्धिमत् वृद्धिमान्–प्रोद्यत प्रवृत्त–वा लगा हुआ–और उत्पन्न जन्म–को उत्थितः, कहते हैं, "यहां कहीं किसीने उदास्थिताः इस आदि कहा है वे असम्बद्ध होने से आदर के योग्य नहीं हैं; सादर सत्कारयुत–अर्चित पूजित, को आदृतः, कहते हैं;

॥ इति तान्ताः ॥

॥ त्रयोदश प्रकरण ॥

१ वाच्य २ धन ३ प्रयोजनादि ।	पु अर्थो (ऽभिधेयो रै-वस्तु-प्रयोजन-निवृत्तिषु) ॥ ८८ ॥
१ कूपादि जलाशय २ शास्त्रादि ।	न (निपाना-गमयोस्) तीर्थम् (ऋषिजुष्टजले गुरौ) ।
१ शक्तिमान २ सम्बन्धार्थादि ।	पुसन समर्थ-(स्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बन्धार्थे हिते ऽपि च) ॥ ८९ ॥
१ क्षीणराग २ अतिवृद्ध ।	पु दशमीस्थौ (क्षीणराग-वृद्धौ)
१ मार्ग २ पंक्ति ।	स वीथी (पदव्यपि) ।
१ सभा २ उपाय ।	स (आस्थानी-यत्नयोर्) आस्था
१ कंगूरा २ परिमाणभेद ।	पुन प्रस्थो (ऽस्त्रीसानु-मानयोः) ॥ ९० ॥

॥ इति थान्ताः ॥

॥ चतुर्दश प्रकरण ॥

१ अभिप्राय २ आधीन ।	१पु (अभिप्राय-वशौ) छन्दौ
१ मेघ २ वर्ष ।	पु अब्दौ (जीमूत-वत्सरौ) ।

१—न्द.

अभिधेयः वाच्य—वा कहने के योग्य—राः धन—वस्तु तत्त्व—प्रयोजन उद्देश्य—वा हेतु—निवृत्तिः निवर्त्तन—वा उपराग—वा विराग—इन को अर्थः, कहते हैं; ॥ ८८ ॥ निपानं कूप के पास का जलाशय—आगमः वोद्ध शास्त्र से भिन्न शास्त्र—ऋषिजुष्टजले ऋषियों से सेवित जल—गुरौ उपाध्याय—अयोध्या—काशी—आदि को तीर्थं कहते हैं, "(तीर्थं शास्त्राध्वरक्षेत्रोपाय नारीरजःसु च। अवतारर्षि जुष्टाम्बु पात्रोपाध्याय मंत्रिष्विति मेदिनी)"; शक्तिस्थे शक्तिमान—सम्बन्धार्थे सम्बन्ध अर्थ में—जैसे समर्थः पदविधिः, हिते अनुकूल को समर्थः, कहते हैं; ॥ ८९ ॥ क्षीणरागः दूर हो गया है राग रस जिस का—और वृद्धः अति वृद्ध को दशमीस्थः, कहते हैं, "(दशमीस्थो नष्टबीजे स्थविरे चेति विश्वः)"; पदवी मार्ग—वा रास्ता—अपि शब्द से पांती को भी वीथी, कहते हैं, आस्थानी सभा—यत्नः उपाय—इन को आस्था, कहते हैं; सानु पर्वत का अग्रभाग—मानं परिमाण भेद—इन को प्रस्थः, कहते हैं; ॥ ९० ॥ "(शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मता वित्यन्यत्)"; ॥ इति थान्ताः ॥ अभिप्रायः आशय—वशो ऽधीनः—वा वशीभूत—इन को छन्दः, कहते हैं "(छन्दोवशे ऽभिप्राये च दृषत् पाषाणमात्रके ॥ निर्णयणार्थ्यपट्टे ऽपीति हेमः)"; जीमूतः मेघ—वत्सरः वर्ष—इन को अब्दः, कहते हैं, "(अब्दःसम्वत्सरे मेघे गिरिभेदे च मुस्तकः इति विश्वः)"; ।

१ निन्दा २ आज्ञा ।	पु अपवादो (तु निन्दाज्ञे)
१ सुत २ भाई बन्धु ।	पु दायादौ (सुत-बान्धवौ) ॥ ९१ ॥
१ किरण २ चरण ३ चौथाई ।	पु पादा-(रश्म्यं-ङ्घ्रि-तूर्य्यांशाः)
१ चन्द्र २ अग्नि ३ सूर्य्य ।	१पु (चन्द्रा-ग्न्य-र्काः) तमोनुदः ।
१ जनवाद २ सिद्धान्त ।	पु निर्व्वादो (जनवादे ऽपि)
१ कीचड़ २ बालतृण ।	पु शादो (जम्बाल-शष्पयोः) ॥ ९२ ॥
१ कष्ट युत शब्द २ रोया ३ रक्षकादि ।	२पु (आरावे रुदिते त्रातर्य्या) क्रन्दो (दारुणे रणे) ।
१ अनुग्रह २ प्रसन्नता ३ काव्यगुण ।	पु (स्यात्) प्रसादो (ऽनुरोधे ऽपि)
१ व्यञ्जन २ रसोइया-वा-बाला ।	पु सूदः (स्याद्व्यञ्जने ऽपि च) ॥ ९३ ॥
१ गोष्ठाध्यक्ष २ कृष्णादि ।	पु (गोष्ठाध्यक्षे ऽपि) गोविन्दो
हर्षादि ।	३पु पु (हर्षे ऽप्या) मोद (वत्) मदः ।
१ प्रधान २ राजचिह्नादि ।	पुन (प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे) ककुदो (ऽस्त्रियाम्) ॥ ९४ ॥

१-द. वा-द. २ आ-. ३ आ-.

निन्दा गुणों में दोष लगाना-आज्ञा शासन-वा हुकुम- इन को अपवादः, कहते हैं, "वा अववादः"; सुतः पुत्र-बान्धवः ज्ञाति-वा भाई आदि-इनको दायादः, कहते हैं; ॥ ९१ ॥ रश्मिः किरण-अंघ्रिः चरण-वा वृक्षमूल-और चौथाई-को पादः, कहते हैं; चन्द्रः चान्द-अग्निः आग-अर्कः सूर्य्य-इन को तमोनुद, वा तमोनुत्, कहते हैं; जनवादे लोकवाद-अपि शब्द से निर्णीत वाद-वा सिद्धान्त-को निर्वादः, कहते हैं; जम्बालः कीचड़-शष्पः बालतृण-को शादः कहते हैं, ॥ ९२ ॥ आरावे आर्त्त शब्द-रुदिते रोया-त्रातरि रक्षक-दारुणे-रणे भयानक युद्ध-वा बड़ी लड़ाई को आक्रन्दः, कहते हैं; अनुरोधे अनुवर्त्तन-"वा अनुरागे प्रीति-वा अनुग्रह वा काव्यगुण" इन को प्रसादः, कहते हैं, "(प्रसादो ऽनुग्रहे काव्यप्राणस्वास्थ्य-प्रसत्तिष्विति मेदिनी)"; व्यञ्जने तर्कारी आदि- वा शाकभेद-वा सूपकार रसोई का कर्त्ता-इन को सूदः, कहते हैं; ॥ ९३ ॥ गोष्ठ गैयों का स्थान-उस का अध्यक्ष-गोपाल आदि-वा कृष्ण-को गोविन्दः, कहते हैं, "वृहस्पति को भी गोविन्दः, कहते हैं" दकारान्त आमोदः, शब्द हर्ष का वाची है, और अपि शब्द से अति निर्हारी अर्थात् जो दूर से मन को सुगन्धित करता है उस गन्ध को भी आमोदः, कहते हैं; तैसे ही मदः, शब्द भी हर्ष में-अपि शब्द से गर्व अभिमान-गज का मदस्राव-वीर्य्य-आदि का वाचक है; प्राधान्ये मुख्य-राजलिङ्गे छत्र चंवर-आदि-वृषाङ्गे बैल का अङ्ग विशेष-राजप्रधान को-ककुद, वा ककुत् (-द्) कहते हैं, ॥ ९४ ॥

१ ज्ञान २ सम्भाषणादि ।	१स (स्त्री) सम्विज् (ज्ञानसम्भाषा क्रियाकारा जिनामसु) ।
१ धर्म्म २ एकान्तादि ।	२स (धर्मे रहस्यु) पनिषत्
१ शरदृतु २ वर्ष ।	३स (स्यादृतौ वत्सरे) शरत् ॥ ६५ ॥
१ व्यवसाय २ रक्षादि ।	न पदं (व्यवसितिचाण-स्थान-लक्ष्मां-ह्रि-वस्तुषु) ।
१ गैयों के स्थानादि ।	न गोष्पदं (सेविते माने)
१ स्थान २ कार्य्य ।	न (प्रतिष्ठाकृत्यम्) आस्पदम् ॥ ६६ ॥
१ इष्ट २ मधुर ।	४पुसन (विष्विष्ट-मधुरौ) स्वादु
१ अतीक्ष्ण २ कोमल ।	५पुसन मृदू (चातीक्ष्ण-कोमलौ) ।
१ मूर्ख २ अल्पादि ।	६पुसन (मूढा-ल्पा-पटु-निर्भाग्या) मन्दाः (स्युर्)
१ नया २ अधीर ।	पुसन (द्वौ तु) शारदौ ॥ ६७ ॥ (प्रत्यग्रा प्रतिभौ)
१ पण्डित २ ढीठ ।	पुसन (विद्व-त्सुप्रगल्भौ) विशारदौ ।

॥ इति दान्ताः ॥

१-द. २-उ-द. ३-द. ४-दु. ५-दु. ६-न्द.

ज्ञान विद्या-सम्भाषा रीति पूर्वक कहना-क्रियाकारः कर्म का नियम-आजिः युद्ध-नाम-संज्ञा-इन को संवित्, कहते हैं, "(संवित्संभाषणे ज्ञाने संयमे नाम्नितोषणे । क्रियाकारे प्रतिज्ञायां संकेताचारयोरपीति हेमः)"; धर्म्म श्रुति स्मृति से विहित कर्म्म-वा शास्त्र कथित कर्म करने से उत्पन्न होनहार फल का साधन भूत शुभ पुण्य-वा दान आदि-रहसि एकान्त-वा गोप्य-वेदान्त को भी उपनिषद्, कहते हैं; ऋतौ छ ऋतु वसन्त आदि-और वत्सरे वर्ष को शरत् कहते हैं; ॥ ६५ ॥ व्यवसितिः व्यवसाय-वा उद्यम-त्राण रक्षण-स्थान स्थिति-लक्ष्म चिह्न-अंह्रि चरण-वस्तु पदार्थ-शब्द भेद-सुबन्त और तिङन्त रूप-इन को पदं, कहते हैं; सेविते गैयों से सेवित देश माने गैयों के खुर के प्रमाण लम्बाई-चौड़ाई आदि के गड़हा-को गोष्पदं, कहते हैं, प्रतिष्ठा स्थान-वा मर्य्यादा-कृत्यं कार्य्य-को आस्पदं, कहते हैं; ॥ ६६ ॥ इस के आगे वर्ग समाप्ति पर्य्यन्त दान्त शब्द त्रिलिङ्ग हैं; इष्टः मनोहर-मधुर रस गुड़-आदि इन को स्वादुः कहते हैं, "(स्वादुर्मनोज्ञे मिष्ठे चेति विश्वः)" अतीक्ष्णः अतिग्मः-कोमलः अकठिन को मृदुः, वा मृदू, कहते हैं, मूढः मूर्ख-अल्पा मन्दोदरी-अपटुः असमर्थ-निर्भाग्यः भाग्यहीन-इन को मन्दः, वा मन्दाः कहते हैं, ॥ ६७ ॥ प्रत्यग्रः अभिनव-वा अत्यन्त नया-अप्रतिभः अप्रगल्भ-वा अधीर-ये दो शारदौ कहलाते हैं; विद्वान् पण्डित-प्रगल्भः ढीठ-को विशारदः, कहते हैं, "(विशारदो बुधे धृष्टे इति हेमः)" ॥ इति दान्ताः ॥

	॥ पञ्चदश प्रकरण ॥
१ नापविशेष २ बरगद ।	(व्यामो वटश्च) न्यग्रोधाव् (पु)
१ देह २ उंचाई ।	उत्सेधः (पु) (काय उन्नतिः) ॥ ९८ ॥
१ध्यानादि २रास्ता	(पर्य्याहारश्च मार्गश्च) विवधो (पु) वीवधो (पु) (च तौ) ।
यज्ञीय वृक्षादि ।	परिधि (पु) -(र्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्य्यके) ॥ ९९ ॥
गिरोंधरीवस्त्वादि	(वन्धकं व्यसनं चेतः पीडाधिष्ठानम्) आधयः (२पु) ।
समाधानादि ।	(स्युः समर्थन-नीवाक-नियमाश्च) समाधयः (३पु) ॥ १०० ॥
दोष का उत्पादनादि ।	(दोषोत्पादे) ऽनुबन्धः (पु) (स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ।
	मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्त्तने) ॥ १०१ ॥
विष्ण्वादि ।	विधु (पु) -(र्विष्णौचन्द्रमसि)
सीमादि ।	(परिच्छेदे विले) ऽवधिः (पु) ।

१–ध. २–धि. ३–धि.

फैलाये दोनों भुजों के गोल का परिमाण व्याम वा व्यामः–वटः बरगद का वृक्ष–इन दोनों को न्यग्रोधः, कहते हैं; कायः देह–उन्नतिः उचाई–को उत्सेधः, कहते हैं; ॥ ९८ ॥ परितः चारों ओर से आह्रियते एकत्र किया जाता जो ध्यान आदि है–मार्गः पंथा–ये दोनों विवध. और वीवध संज्ञक कहलाते हैं, और तंडुल आदि के संग्रह–भार बोझे को भी कहते हैं; यज्ञिय तरु अर्थात् पलाश आदि की शाखा चन्द्र सूर्य्य के समीपस्थ मेष वृष आदि के सन्निकर्ष मे जायमान वेष्टन के आकार मण्डल–वा चन्द्र सूर्य्य सभा–परिवेष नाम मण्डल–इन को परिधिः, कहते हैं, ॥ ९९ ॥ उत्तम रणगृहे अर्थात् धनी वा महाजन के घर ऋण देने पर्य्यन्त विश्वास के अर्थ जो वस्तु गिरों धरी जाती है उसे वन्धकं, कहते हैं, व्यसनं आपत्ति –वा दुःख–चेतः पीड़ा वा मानसी व्यथा–अधिष्ठानं अध्यासन–वा आश्रय–इन को आधयः, कहते हैं; समर्थनं शंका का परिहार–वा समाधान–नीवाकः वचन का अभाव नियमः अंगीकार–इन को समाधयः, कहते हैं, ॥ १०० ॥ दोष का उत्पादन दोषोत्पाद है तहां प्रकृति आदिकों में प्रकृति प्रत्यय, आगम और आदेशों में जो नश्वर है अर्थात् इत्संज्ञालोपों से जो अदर्शनशील अक्षर है उसे–और जो मुख्य पिता माता आदि को आज्ञाकारी शिशु है उसे–और प्रकृतस्य प्रकरण में प्राप्त विषय का अनुवर्त्तन अर्थात् बड़े लोगों से इष्ट की प्राप्ति करना –इन को अनुबन्धः, कहते हैं, ॥ १०१ ॥ विष्णु भगवान्–और चन्द्रमा को विधुः, कहते हैं, "(विधुः समासि कर्पूरे हृषीकेशे च राक्षसे इति विश्वः)" परिच्छेदे सीमा–विले गड्हा–वा बिल–इन को अवधिः कहते हैं, ।

१ विधान २ भाग्य ३ ब्रह्मा ।	पु विधि-(विधाने दैवे च)
१ प्रार्थना २ हलकारा ।	पु प्रणिधिः (प्रार्थने चरे) ॥ १०२ ॥
१ पण्डित २ बूढ़ ३ बुध ।	पु पु बुध-वृद्धौ (पण्डिते ऽपि)
१ समूह २ काण्ड ३ राजा आदि ।	पु स्कन्धः (समुदये ऽपि च) ।
१ सिन्धु देशादि ।	पु (देशे नदविशेषे ऽब्धौ) सिन्धु-(र्ना सरिति स्त्रियाम्) ॥१०३॥
१ विधान २ प्रकाशादि ।	स विधा (विधौ प्रकारे च)
१ रम्य २ सज्जन ।	१पुसन साधू-(रम्ये ऽपि च त्रिषु) ।
१ भार्य्या २ पतोहू ३ स्त्रीमात्र ।	स वधू-(जाया स्नुषा स्त्री च)
चूना आदि ।	स सुधा (लेपो ऽमृतं स्नुही) ॥ १०४ ॥
१प्रतिज्ञा २मर्य्यादा	स सन्धा (प्रतिज्ञा मर्य्यादा)
१आदर २आकांक्षा	स श्रद्धा (सम्प्रत्ययः स्पृहा) ।

१-धु.

विधाने कर्त्तव्य कार्य्य-और दैवे पूर्व्व जन्म का किया शुभ वा अशुभ कर्म्म-च शब्द से ब्रह्मा को भी-विधिः, कहते हैं; प्रार्थने मांगना-वा बिनती-और चरे अपने और दूसरे राज की बात जानने वाला-वा हलकारा-इन को प्रणिधिः, कहते हैं, ॥ १०२ ॥ पण्डित-अपि शब्द से, सौम्य सुन्दर बुध-और बूढ़े को बुधः, और वृद्धः, कहते हैं; समुदये समुदाय-वा समूह-अपि शब्द से कांडे शाखा-राजा-कांध-इन को स्कन्धः, कहते हैं, "(स्कंधः प्रकाण्डे कायेंऽसे विज्ञानादिषु पञ्चसु। नृपे समूहे व्यूहेचेति हैमः)"; देशे देशभेद-अब्धौ समुद्र-नद विशेषे नदविशेष-अर्थात्-सिन्धु-भैरव-शोणभद्र-ब्रह्मपुत्र-आदि-और हाथी के मदस्राव को सिन्धुः, कहते हैं, सो पुल्लिङ्ग है, और सामान्य नदी वाची तो स्त्रीलिङ्ग है, ॥ १०३ ॥ विधौ विधान-वा आज्ञा-हुकुम- प्रकारे जैसे दो प्रकार-वा किस प्रकार-इस आदि-इन को विधा कहते हैं, रम्ये रमणीय-वा सुन्दर-अपि शब्द से व्याज से जीविका वाला-और सज्जन को साधुः, कहते हैं, "हलकारा को भी साधुः कहते हैं"; जाया भार्य्या-स्नुषा पुत्र की पत्नी-इन को और स्त्री मात्र को-वधूः, कहते हैं; देवालय आदि जिस से लिपे जाते हैं, चूना आदि-अमृत मोक्ष-सुधा-जल-वा घृत-स्नुही-सेहुंड़ वृक्ष-इन को सुधा कहते हैं, "(सुधा प्रासादभाक्द्रव्यं सुधा विद्युत्सुधा ऽमृतं। सुधाहि भोजनं ज्ञेयं सुधाधात्री सुधास्नुहीति मञ्जरी)", ॥ १०४ ॥ प्रतिज्ञा स्वीकार-मर्य्यादा बड़ाई-इन को सन्धा कहते हैं, जैसे सत्यसन्धः; सम्प्रत्ययः-आदर-वा-विश्वास-स्पृहा आकांक्षा-इन को श्रद्धा, कहते हैं; ।

१मद्य २पुष्परसादि	न मधु (मद्ये पुष्परसे क्षौद्रे च)
१अन्धा २अंधेरा।	न ऽन्धं (तमस्यपि) ॥ १०५ ॥
	(अतस्त्रिषु)
१मूर्ख २अहंकारी	पुस्त्न समुन्नद्धो (पण्डितं मन्य-गर्व्विते)।
१निन्दित २आज्ञा आदि।	पुस्त्न ब्रह्मबन्धु-(रधिक्षेपे निर्द्देशे)
आश्रितादि।	(ऽथावलम्बित: ॥ १०६ ॥
	पुस्त्न अविदूरो ऽप्य) ऽवष्टब्ध:
१ख्यात २भूषित।	पुस्त्न प्रसिद्धौ (ख्यात-भूषितौ)।

॥ इति धान्ता: ॥

॥ षोडश प्रकरण ॥

१सूर्य्य २अग्नि।	१पु (सूर्य्य-वह्नी) चित्रभानू
१किरण २सूर्य्य।	२पु भानू (रश्मि-दिवाकरौ) ॥ १०७ ॥

१–नु. २–नु.

मद्ये–मदिरा–वा मादक द्रव्य–वा फूल का रस–क्षौद्रे मधु–वा महत–जलै मीठा–विष्णुकर्ण से उत्पन्न दैत्यभेद–कुंभी नसीका भर्ता–वसन्त ऋतु–चैत्रमास–आत्मा के रस से उत्साह युत–दूध–वृक्षभेद–वा अशोक वृक्ष–इन को मधु कहते हैं; तमसि अन्धेरा–अपि शब्द से–आंखहीन–और जल–को अन्धं, कहते हैं; ॥ १०५ ॥ इस के आगे धान्त वर्ग पर्यन्त त्रिलिङ्ग हैं. अहंकारी पण्डिताई का–वा जो अपने तईं पण्डित मानता है वह पंडितंमन्य: है–और गर्व्वित–वा अभिमानी को समुन्नद्ध:, कहते हैं; अधिक्षेपे निन्दा के प्रयोग में–जैसे ऐब्रह्मबन्धो दुर्बुद्धेर्मति–विप्र के आचार से हीन–वा निन्द्य कर्मकारी–और निर्द्देशे आज्ञा–वा उपदेश–वा बेतन–वा दिखलाना उस आदमी के भूल का–इन को ब्रह्मबन्धु:, "स्त्री. ब्रह्मबन्धू:, कहते हैं" "उसी प्रकार क्षत्रबन्धु:" "(ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्द्देशे च द्विजन्मनामिति विश्व:)" ॥ १०६ ॥ अवलम्बित: आश्रित–अविदूर: निकट–वा संचित–जीता हुआ–वा रुका हुआ–अपि शब्द से ग्रस्त को भी अवष्टब्ध:, कहते हैं; ख्यात: प्रसिद्ध–वा कथित–और भूषित: अलंकृत–वा वस्त्र और आभूषण से युक्त–इन को प्रसिद्ध:, कहते हैं; ॥ इति धान्ता: ॥ चित्र विचित्र किरण हैं, जिन की ऐसे सूर्य–और वह्नि आग्नि–को चित्रभानु:, कहते हैं; रश्मि: किरण–वा घोड़े की रस्सी–वा लगाम–और दिवाकर: सूर्य–को भानु:, कहते हैं; ॥ १०७ ॥

१ धाता २ देह ।	[१पु] भूता-त्मानौ (धातृ-देहौ)
१ मूर्ख २ नीच ।	(मूर्खनीचौ) [पु] पृथग्जनौ ।
१ पर्व्वत २ पत्थर ।	[२पु] ग्रावाणौ (शैलपाषाणौ)
१ बाण २ पक्षी ।	[३पु] पत्त्रिणौ (शर-पक्षिणौ) ॥ १०८ ॥
१ वृक्ष २ पर्व्वत ।	(तरु-शैलौ) [४पु] शिखरिणौ
१ अग्नि २ मोर ।	[५पु] शिखिनौ (वह्नि-बर्हिणौ) ।
१ वाञ्छा २ अनुकूल ।	[६पु] प्रतियत्नाव् (उभौ लिप्सो-पग्रहाव्)
१ सारथी २ सवार ।	(अथ) [७पु] सादिनौ ॥ १०९ ॥
	(द्वौ सारथि-हयारोहौ)
१ अश्व २ बाण ३ पक्षी ।	[८पु] वाजिनो (ऽश्वेषु पक्षिणः) ।
१ कुल २ जन्मभूमि ।	(कुले ऽप्य्) [पु] ऽभिजनो (जन्मभूम्यामप्य्)
१ वर्ष २ किरण ३ धानभेद ।	[पु] (ऽथ) हायनाः ॥ ११० ॥

१-त्मन्. २-वन्. ३-न्. ४-न्. ५-न्. ६ त्न. ७-न्. ८-न्.

धाता ब्रह्मा-वा चतुर्मुख-वा विष्णु-वा पालक-और देह शरीर-को भूतात्मा, कहते हैं; मूर्खः मूढ़-और नीचः हीन जाति-को पृथग्जनः, कहते हैं, "पृथक् कार्य्याजनः पृथग्जनः"; शैलः पर्व्वत-और पाषाणः पत्थर-को ग्रावा, कहते हैं, "(ग्रावा प्रस्तरे जलदे गिराविति विश्वः)"; शरः जल-वा बाण-और पक्षी चिड़िये-इन को पत्री कहते हैं, "(पत्री श्येने रथे काण्डे खगद्रुरथिकादिष्विति विश्वः)"; ॥ १०८ ॥ तरुः वृक्ष-और शैलः पहाड़-को शिखरी, कहते हैं, "शिखरिणी स्त्री"; वह्नि अग्नि-बर्ही मयूर-को शिखी कहते हैं; लिप्सा चाहना-उपग्रहः अनुकूल-उभौ ये दोनों प्रतियत्नः, वा प्रतियत्नौ कहलाते हैं, "(प्रतियत्नस्तु संस्कारलिप्सोपग्रहणेषु चेति मेदिनी)"; ॥ १०९ ॥ सारथी रथ का हांकने वाला-वा गाड़ीवान-वा कोचवान-और हयारोहः घोड़चढ़ा-वा सवार-को सादी वा सादिनौ कहते हैं, "(सादी तुरङ्गमारोहे निषादिरथिनोरपीति हेमः)" अश्वः घोड़ा-इषुः बाण-पक्षी पखेरु-इन को वाजिनः, कहते हैं, "एक वचन में वाजी" कुले कुलमुख्य-जन्मभूम्यां जन्मस्थान-अपि शब्द से ख्यातः प्रसिद्ध, को अभिजनः, कहते हैं, "(अभिजनः कुले ख्याते जन्मभूम्यां कुलध्वजे इति विश्वः)" ॥ ११० ॥ अथ अव-

	(वर्षा-र्चि-र्व्रीहिभेदाः स्युश्)
१ चन्द्र २ अग्नि ३ सूर्य्य ४ प्रह्लाद का पुत्र ।	पु (चन्द्रा-ग्न्य-र्कौ) विरोचनाः ।
१ क्लेश २ पापादि ।	पु (क्लेशे ऽपि) वृजिनो
१ सूर्य्य २ देवों का वढ़ई ।	१पु विश्वकर्मा-(ऽर्क-सुरशिल्पिनोः) ॥ १११ ॥
यत्नादि ।	२पु आत्मा (यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्मवर्ष्म च) ।
इन्द्रादि ।	पु (शक्रघातुक मत्तेभवर्षुकाब्दा) घनाघनाः ॥ ११२ ॥
१ द्रव्यादि कृत अहङ्कारादि ।	पु अभिमानो (ऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणय-हिंसयोः) ।
मेघादि ।	पु घनो (मेघे मूर्त्तिगुणे त्रिषु मूर्त्ते निरन्तरे) ॥ ११३ ॥
१ सूर्य्य २ राजा ३ स्वामी ।	पु इनः (सूर्य्ये प्रभौ)
चन्द्रादि ।	३पु राजा (मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे) ।

१-मन्. २-त्मन्. ३-जन्.

वर्षः वरष-अर्चिः ज्वाला-वा किरण-और व्रीहिभेदः धान का भेद-वा साठी-वा अन्नमात्र-को हायनाः, कहते हैं; चन्द्रः-चांद-अग्निः आगि अर्कः सूर्य्य-और प्रह्लाद के पुत्र को भी-विरोचनः, कहते हैं; क्लेशे वाल-वा क्लेश दुःख वरुण-वा विष्णु को वृजिनः, कहते हैं, "पाप को भी क्लीव वृजिनं कहते हैं"; अर्कः सूर्य्य-सुरशिल्पी देवतों का कारीगर-वा राज-जो स्थान आदि बनाता है, उसको विश्वकर्मा कहते हैं, ॥ १११ ॥ यत्नः परिश्रम-वा उद्योग-धृतिः तुष्टि-वा धारणा-वा सुख-बुद्धिः ज्ञान-वा सांख्योक्त सुख और दुःख आदि आठ प्रकार के धर्म वाले प्रकृति के परिणाम का भेद-स्वभावः स्वकीय धर्म-निज गुण वा-ब्रह्म परमेश्वर-वा जगदीश-वर्ष्म देह-इन को आत्मा, कहते हैं, "(आत्मा कलेवरे यत्ने स्वभावे परमात्मनि । चित्ते धृतौ च बुद्धौ च पर्य्यावर्त्तनेऽपि चेति धरणिः)"; शक्रः इन्द्र-घातुकः हिंसाकारी-वा क्रूर-वा घातुक हो मत्त इभ हाथी कर्मधारय समास करने पर घातुक मत्तेभ एक पद हुआ-तब घातुकमत्तेभः अर्थात् क्रूर मत वाला हाथी-वर्षुकः वर्षा करने वाला-अब्दः वर्षः वा बरस वर्षुकही अब्द इस प्रकार कर्मधारय करने पर-वर्षुकाब्दः वर्षा या अब्द-बरस-इन को घनाघनः, वा घनाघनाः, कहते हैं, यह चार अक्षरका पद है, ॥ ११२ ॥ ऋत्यादिदर्पे अर्थः धन-वा वस्तु-आदि दर्पः अभिमान-ज्ञाने विवेक-वा विद्या-प्रणयः स्नेह-हिंसाप्राणवियोग-इनको अभिमानः, कहते हैं, मेघे बादल-वा जलधर-मूर्त्तिः देह-वा आकार-मूर्त्ति गुणे कठिनता-वा प्रतिमा-मूर्त्ते कठिन-निरन्तरः सान्द्र-वा सघन को घनः, कहते-हैं, "(घनं स्यात् कांस्यतालादिवाद्यमध्यमनृत्ययोः । नामुस्ताब्दोघदार्ढ्येषु विस्तारे लोहमुद्गरे ॥ त्रिषु सान्द्रे दृढे चेति मेदिनी)" ॥ ११३ ॥ सूर्य्ये सूर्य्य-प्रभौ अध्यक्ष-इन को इनः, कहते हैं, "वा प्रभौ राजा-वा स्वामी या पति-भतार-आदि को भी इनः, कहते हैं", मृगाङ्कः चन्द्रमा-क्षत्रिये क्षत्री जाति-वा राजपूत-नृपे नृप-वा राजमात्र-को राजा, कहते हैं, "(राजा प्रभौ च नृपतौ क्षत्रिये रजनीपतौ । यक्षे शक्रे च पुंसिस्यादिति मेदिनी)"; ।

१ नर्त्तकी २ दूती ।	[१स] वाणिन्यौ (नर्त्तकी-दूत्यौ)
१ स्रवन्ती २ नदी ३ सेना ।	[स] (स्रवन्त्यामपि) वाहिनी ॥ ११४ ॥
१ वज्र २ बिजुली ।	[२स] ह्लादिन्यौ (वज्र-तडितौ)
१ वृक्षका बांदा २ स्त्री मात्र ३ वा प्यारी ।	[स] (वन्दायामपि) कामिनी ।
१ खाल २ देह ।	[स] (त्व-ग्देहयोरपि) तनुः
गलघण्टिका आदि ।	[स] सूना (ऽधोजिह्विकापि च) ॥ ११५ ॥
यज्ञादि ।	[पुन] (क्रतु-विस्तारयोरस्त्री) वितानं (त्रिषु तुच्छके । मन्दे)
कार्य्यादि ।	[न] (ऽथ) केतनं (कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे) ॥ ११६ ॥
१ वेद २ चैतन्य ३ तपस्या ।	[३न] (वेदस्तत्वं तपो) ब्रह्म
१ ब्राह्मण २ विधाता ।	[४पु] ब्रह्मा (विप्रः प्रजापतिः) ।

१–नी. २–नी. ३–न. ४–न.

नर्त्तकी नाचने वाली–वा दूती–मत्ता तमवाली–को वाणिनी, कहते हैं, "(वाणिनी नर्त्तकी मत्ता विदग्धा वनितासुचेति मेदिनी)"; स्रवन्त्यां नदी–वा औषधी भेद–अपि शब्द से सेना–को वाहिनी, कहते हैं; ॥ ११४ ॥ वज्रं कुलिश–तड़ित् बिजुली–को ह्रादिनी कहते हैं; वन्दायां लता–वा वृक्ष–अपि शब्द से स्त्रीमात्र–वा विलासिनी–को कामिनी, कहते हैं; त्वग् छिलका–वा चाम–देहः काय–वा शरीर को तनुः, कहते हैं, "(तनुः काये त्वचि स्त्रियस्त्रिष्वल्पे विरले कृश इति मेदिनी)"; अधोजिह्विका गलकंठिका वा–गलघण्टिका–रोगविशेष–अपि शब्द से पुत्री–और वधस्थान–को सूना कहते हैं, ॥ ११५ ॥ क्रतुः यज्ञ–विस्तार बड़ाई–तुच्छ के सून्य–मंद आलसी वा अभागा–और असमर्थ को वितानः, कहते हैं, पहिले के २ अर्थों में वितान स्त्री लिङ्ग नहीं है; और अगले अर्थों में त्रिलिङ्ग है, "मन्द अर्थ में जैसे वितानभूतहृदयः" कृत्ये कार्य्य –केतौ ध्वजा–वा पताका–उपनिमन्त्रणे आमन्त्रण–मित्रों का नेवता–वा जाफत–और निवास –इन को केतनं, कहते हैं; ॥ ११६ ॥ वेदः तीनो वेद–वा ज्ञान–शास्त्र ज्ञान–उस का साधन भी–तत्त्वं चैतन्य–वा परमात्मा–तपः तपस्या–वा तप ऋतु ग्रीष्म ऋतु–"वा ब्रह्म–जैसे ब्रह्मचारीति" वेद आदि तीन अर्थ में ब्रह्म शब्द क्लीव है, और विप्र ब्राह्मण–और प्रजापतिः विधाता–इन दो अर्थों का वाची पुल्लिङ्ग है, "ऋत्विग् यज्ञ कराने वाला–और योग युक्त भी"

उत्साहन वा ऊपर को उठाना आदि।	(उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि) गन्धनम्^न ॥ ११७ ॥
दूधी का जावनादि।	आतञ्चनं^न (प्रतीवाप जवनाप्यायनार्थकम्)।
चिह्नादि।	व्यञ्जनं^न (लाञ्छनं श्मश्रु-निष्ठाना-वयवेष्वपि) ॥ ११८ ॥
लोकापवादादि।	(स्यात्) कौलीनं^न (लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्)।
निकलनादि।	(स्याद्) उद्यानं^न (निःसरणे वनभेदे प्रयोजने) ॥ ११९ ॥
१ अवकाश २ स्थिति।	(अवकाशे स्थितौ) स्थानं^न
खेल-आदि।	(क्रीडादावपि) देवनम्^न।
पौरुष।	उत्थानं^न (पौरुषे तन्त्रे सन्निविष्टोद्गमे ऽपि च) ॥ १२० ॥
	व्युत्थानं^न (प्रतिरोधे च विरोधाचरणे ऽपि च)।

उत्साहने ऊपर को उठाना—हिंसा क्रूर कर्म—सूचने आशय प्रकाश करना—इन को गन्धनम्, कहते हैं. ॥ ११७ ॥ प्रतीवापः दूध में जावन देना—जवनं वेग—आप्यायनं प्रीणन—वा तृप्ति करना—इन अर्थों का वाचक—आतञ्चनं है; लाञ्छनं चिह्न—श्मश्रु मोछ वा मोछ दाढ़ी, निष्ठानं गीला करना—वा भत्या अचादि का सेवन—अवयवः स्त्री पुरुष के अङ्गों का भेद—इन अर्थों को व्यञ्जनं, कहते हैं, ॥ ११८ ॥ लोकवादः लोकापवाद—पशुः मृग आदि—अहिः सर्प—वा वृत्रासुर—वा सूर्य—पक्षी चिड़िया—इन के युद्ध को कौलीनं, कहते हैं, "कुलीनत्व को भी कौलीनं, कहते हैं"; निःसरणे घर आदि मे निकलना—वनभेदे—उपवन—प्रयोजने अर्थ—वा कार्य—वा हेतु—को उद्यानं, कहते हैं; ॥ ११९ ॥ अवकाशे अवसर—वा सावकाश— वा सुविहिता—स्थितौ स्थान—वा ठिकाना—वा घर—इन को स्थानं, कहते हैं, "स्थानं नित्यावकाशयोः। सादृश्ये संनिवेशेऽपि हेमः"; क्रीड़ा खेल—आदि पद से व्यवहार—दीप्ति—जीतने की इच्छा—स्तुति—वा क्रीड़ा याग—इन को देवनं, कहते हैं, "पाशा को भी देवनः, विश्व के मत से है"; पौरुषे उद्योग—वा पुरुषार्थ—पराक्रम आदि—तन्त्र कुटुम्ब कार्य—वा सिद्धान्त—उत्तम औषध—प्रधान—पक्ष साधन आदि—संनिविष्टोद्गमे बैठे हुये को उठाना—इन को उत्थानं, कहते हैं, ॥ १२० ॥ प्रतिरोधे तिरस्कार—वा बाध—प्रतिबन्ध—निरोध—चोरी आदि—विरोधाचरणे विरुद्ध करना—स्वतन्त्र करना—इन को व्युत्थानं, कहते हैं, ।

१मारण पारा आदि का २मृतक का संस्कारादि ।	(मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्त्थदापने ॥ १२१ ॥ न निवर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च) साधनम् ।
१वैरशुद्धि२दानादि	न निर्य्यातनं (वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च) ॥ १२२ ॥
१ विपदि दुःख २ भ्रंशादि ।	न व्यसनं (विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे) ।
पलक-वा बरौनी आदि ।	१न पक्ष्मा (ऽक्षिलोम्नि किञ्जल्के तंत्वाद्यंशेऽप्यणीयसि) १२४
तिथि भेदादि ।	२न (तिथिभेदे क्षणे) पर्व
१बरौनी २रास्ता ।	३न वर्त्म (नेत्रच्छदेऽध्वनि) ।
१ अकार्य्य २ गुह्य ।	न (अकार्य्य गुह्ये) कौपीने
१सङ्गति २सुरतादि	न मैथुनं (सङ्गतौ रते) ॥ १२४ ॥
परमात्मा सम्बंधी बुद्धि आदि ।	न प्रधानं (परमात्माधीः)
१बुद्धि २ चिह्न ।	न प्रज्ञानं (बुद्धि-चिह्नयोः) ।

१ पक्ष्मन्. २—न्. ३—न्.

१ मारणे मारना—वा वध करना—२ मत संस्कारे मतक्रिया—वा कर्म दाहादि—३ गतौ गति—वा जाना ४ द्रव्ये धातुमात्र वा पीतल—वा पृथिवी आदि पञ्चभूत—५ अर्त्थदापने धन आदि का देना—॥ १२१ ॥ ६ निवर्त्तनं अर्त्थ की सिद्धि—७ उपकरणं परिकर—वा उपाय—व्यञ्जन आदि—वा शयन को खटिआ आदि—८ अनुव्रज्या अनुगमन—वा पीछे जाना—इन आठों को "और सैन्य—मेढ़ को भी" साधनं, कहते हैं; वैरशुद्धौ वैर का प्रतीकार—वा वैर लेना—दाने देना—वा त्याग—न्यासार्पणे धरोहर का लौटा देना—इन को निर्यातनं, कहते हैं ॥ १२२ ॥ विपदि दुःख—२ भ्रंशे नाश—वा पतन—दोषे दोष इस का सब के साथ सम्बन्ध है—कामज दोषतो अहेर—जूआ—स्त्री—मद्यपान—इन में आसक्त—कोपज दोषतो वाक् पारुष्यादि अर्त्थात् कठोर बोलना—इन को व्यसनं, कहते हैं, "(व्यसनंत्वशुभे सक्तौ पानस्त्री मृगयादिषु । दैवानिष्टफले पापे विपत्तौ निष्फलोद्यमे इति मेदिनी)"; अक्षिलोम्नी बरौनी—किञ्जल्के केसर—कमल वा फूल मात्र की धूलि—तंत्वाद्यंशेऽप्यणीयसि बड़े सूक्ष्म सूत आदि के अंश का नान्त पक्ष्म शब्द वाचक है, ॥ १२३ ॥ तिथिभेदे तिथियों का भेद शुक्लपक्ष की अष्टमी कृष्णपक्ष की १४ और दर्श आदि—क्षणे उत्सव—वा अवसर—मध्य—दशलवपरिमितकाल—को पर्व, कहते हैं, "(पर्व प्रस्तावोत्सवयोर्ग्रंथादौ विषुवदादिषु । दर्शप्रतिपत्सन्धौ च तिथिग्रंथविशेषयोरिति हैमः)"; नेत्रच्छदे नेत्र के ढकने के चर्म का पुट—अध्वनि मार्ग—को वर्त्म कहते हैं, अकार्य्यगुह्ये करने के अयोग्य गुह्ये उपस्थि के ढकने के वस्त्रभेद को—कौपीनं, कहते हैं; सङ्गतौ भार्य्या आदि के सम्बन्ध को—और रते सुरत को—मैथुनं, कहते हैं; ॥ १२४ ॥ परमात्माधीः परमात्मा परब्रह्म की धीः बुद्धिः महामात्र—वा प्रकृति को—प्रधानं, कहते हैं; बुद्धि और चिह्न को, प्रज्ञानं, कहते हैं; ।

१ फूल २ फल ।	प्रसूनं[न] (पुष्पफलयोर्)
१ कुल २ नाश ।	निधनं[न] (कुल-नाशयोः) ॥ १२५ ॥
१ रोना २ पुकारना	क्रन्दने[न] (रोदना-ह्वाने)
१ देह २ प्रमाण ।	वर्ष्म[१न] (देह-प्रमाणयोः) ।
१ गृह २ देहादि ।	(गृह-देह-त्विट्-प्रभावा) धामान्य[२न]
चौराहा आदि ।	(ऽथ चतुष्पथे ॥ १२६ ॥
	सन्निवेशे च) संस्थानं[न]
१ चिह्न २ प्रधान ।	लक्ष्म[३न] (चिह्न-प्रधानयोः) ।
१ छिपाना २ ढांपना	आच्छादने[न] (सम्पिधान मपवारण मित्युभे) ॥ १२७ ॥
साधनादि ।	आराधनं[न] (साधने स्याद् वाप्तौ तोषणे ऽपि च) ।
रथादि ।	अधिष्ठानं[न] (चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि) ॥ १२८ ॥
१ मणि २ स्वजाति श्रेष्ठ ।	रत्नं[न] (स्वजातिश्रेष्ठे ऽपि)
१ पानी २ जङ्गल ।	वने[न] (सलिल-कानने) ।

१-न. २ धामन्. ३-न.

पुष्प फूल-और फल जो तुरन्त उत्पन्न हुवे हैं, इन को प्रसूनं कहते हैं, "(प्रसूनो वाच्य-वज्जाते क्लीबं तु फलपुष्पयोरिति मेदिनी)" कुलवंश-और नाश मरण-वा नाश-इन को नि-धनं, कहते हैं, "और ज्योतिषोक्त लग्न से अष्टम स्थान को भी निधनं कहते हैं", ॥ १२५ ॥ रोदनं रोना-आह्वानं, बुलाना वा चिल्लाना-इन को क्रन्दनं, कहते हैं, देहः स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीर-प्रमाणं इयत्ता-वा इतना-वा यथार्थ ज्ञान-इन को वर्ष्म, कहते हैं, "(वर्ष्म देहः प्रमाणाकृतिसुन्दराकृतिषु स्मृतमिति मेदिनी)"; गृहः घर-देहः त्रिविध शरीर-त्विट् तेज-वा उंजिआला-प्रभावः प्रताप-वा कोषदण्ड आदि से उत्पन्न तेज-इन को धाम, कहते हैं, "(धामरश्मौ गृहे देहे स्थाने जन्मप्रभावयोरिति हैमः)"; चतुःपथे शृंगाटक-वा चौराहा-सन्नि-वेशे अवयव का विभाग-इन को संस्थानं कहते हैं, "संस्थानं त्वाकृतौ मतौ। चतुष्पथे सन्निवेश इति हैमः"; ॥ १२६ ॥ चिह्न वा निशान-और प्रधान को लक्ष्म कहते हैं; संपि-धानं तिरोधान-वा छिपाना-अपवारणं वस्त्र आदि से परिवृत्ति-वा ढांपना-इन दोनों को आच्छादनं, कहते हैं; वस्त्र को भी आच्छादनं कहते हैं; ॥ १२७ ॥ साधने सिद्ध करने में -अवाप्तौ लाभ-वा मिलना-तोषणे संतोष करने में-इन को आराधनं, कहते हैं; चक्रं रथ का अङ्ग-गाड़ी आदि-पुरि नगर-अध्यासनं आक्रमण-वा चढ़ाई-इन को अधिष्ठानं, कहते हैं; ॥ १२८ ॥ स्वजाति श्रेष्ठे अपनी जाति में श्रेष्ठ-वा उत्तम-अपि शब्द से मणि-को भी रत्न कहते हैं, जैसे स्त्रीरत्नं, सलिलं जल-काननं अरण्य-इन दोनों को वनं, कहते हैं; ।

	पुसन
१ विरल २ अल्पादि	तलिनं (विरले स्तोके)
	पुसन (वाच्यलिङ्गा स्तथोत्तरे) ॥ १२९ ॥
१ पण्डित २ समादि	समानाः (स-त्समै-के स्युः) पुसन
१ खल २ चुगुलादि	पिशुनौ (खल-सूचकौ) ।
	पुसन १पुसन
१ अल्प २ निन्द्यादि	हीन-न्यूनाव् (ऊन-गर्ह्यौ) २पुसन
१ शीघ्रकारी २ बीर	(वेगि-शूरौ) तरस्विनौ ॥ १३० ॥
	पुसन
१ अपराधी २ अभि-ग्रस्तादि ।	अभिपन्नो (ऽपराद्धो ऽभिग्रस्त-व्यापद्गतावपि) ।
	॥ इति नान्ताः ॥
	॥ सप्तदश प्रकरण ॥
	पु
भूषणादि ।	कलापो (भूषणे वर्हे तूणीरे संहते ऽपि च) ॥ १३१ ॥
	पु
परिच्छदादि ।	(परिच्छदे) परीवापः (पर्य्युप्तौ सलिलस्थितौ) ।
	पु
दूहनेवाला आदि	(गोधुग्गोष्ठपती) गोपौ ३पु
१ शिव २ विष्णु ।	(हर-विष्णू) वृषाकपी ॥ १३२ ॥
	पु
१ बाफ़ २ आंशु ।	बाष्पाव् (उष्माश्रु) ४पुन
१ अन्न २ वस्त्र ।	कशिपू (त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्) ।

१–न. २–न. ३–पि. ४–पु.

१ विरले–अन्तर सहित–२ स्तोके–अल्प–"३ शय्या–४ विरस–५ तुच्छ"–इन को तलिनं कहते हैं, "स्वच्छ को भी" तलधातु प्रतिष्ठा में है इस से इनि प्रत्यय किया है–जैसे तलिनं वाच्यलिङ्ग है तैसेहीं आगे आनेवाले नान्त वर्ग समाप्त पर्य्यन्त वाच्य लिङ्ग हैं; ॥ १२९ ॥ १ सन्–पण्डित–२ समः सदृश–३ एकः मुख्य ४ दूसरा नहीं–इन को समानः, वा समानाः, कहते हैं, एक अर्त्थ में जैसे समानोदरौ बन्धू–एकोदरा वित्यर्त्थः; १ खलः दुर्ज्जन–२ सूचकः नीच–३ वा कान में कहने वाला–इन को पिशुनः, कहते हैं, "(पिशुनं कुंकुमेपि च। कपिवक्रे च काकेनासूचकक्रूरयोस्त्रिष्विति मेदिनी)" १ ऊनः–अल्प–२ गर्ह्यः–निन्द्य–इन दोनों को हीनः, और न्यूनः, कहते हैं; १ वेगी वेगयुक्त–२ शूरः–बली–इन को तरस्वी, कहते हैं; ॥ १३० ॥ १ अपराद्धः–अपराधवान्–२ अभिग्रस्तः–शत्रुओं से जीता हुआ–३ आपद्गतः–विपत्ति से युक्त–इन को अभिपन्नः, कहते हैं; ॥ इति नान्ताः; ॥ भूषणे–अलंकार मात्र–२ वर्हे–मयूर की शिखा–३ तूणीरे–इषुधि–वा भाथा–वा तरकस–४ संहते समुदाय–"५ कांची वा करधनी" इन को कलापः, कहते हैं; ॥ १३१ ॥ परिच्छदः–पटमंडप आदि उपकरण–२ पर्य्युप्तः–सर्वत्र बोना–३ सलिलस्थितौ–जलाधार–वा बान्ध आदि–को परीवापः, कहते हैं; १ गांदोग्धीतो गोधुक्–गोपाल–२ गोष्ठपती–गोशाला के अध्यक्ष–को गोपः, कहते हैं, "(गोपो ग्रामौघगोष्ठाधिकृतयोर्वल्लभे नृपे इति विश्वः)"; हरः–शिव–और विष्णुः भगवान्–को वृषाकपी, कहते हैं, "अग्नि को भी" ॥ १३२ ॥ उष्ण–गरम–अश्रु नेत्र का जल–वा आंशु–इन को बाष्पः, कहते हैं; अन्नं–भोजन–आच्छादनं वस्त्र–इन दोनों को कशिपुः, कहते हैं; वक्ष्यमाण अस्त्रियां यह पद कशिपु और तल्प दोनों में अन्वित होता है; ।

१ पलंग २ अटारी ३ स्त्री।	पुन तल्पं (शय्या-ट्ट-दारेषु)
१ तृणादिका गुच्छा २ विस्तारादि।	(स्तम्बे ऽपि) पुन विटपो (ऽस्त्रियाम्) ॥ १३३ ॥
१ बुध २ सुन्दर।	पुपन प्राप्तरूप-पुपन स्वरूपा-पुपन ऽभिरूपा (बुध-मनोज्ञयोः। भेद्यलिङ्गा अमी)
१ कछुही २ सरस्वती की वीणा।	(कूर्म्मो वीणाभेदश्च) स कच्छपी ॥ १३४ ॥ पु "कुतपो मृगरोमोत्थपटे चान्होऽष्टमेंशके" ॥
	॥ इति पान्ताः ॥
	॥ अष्टादश प्रकरण ॥
१ रेफ़ २ और कुत्सित।	(रवर्णे पुंसि) पु रेफः (स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः)।
	॥ इति फान्ताः ॥
	॥ एकोनविंशति प्रकरण ॥
१ प्राणी २ अश्वादि	(अन्तराभवसत्वे ऽश्वे) पु गन्धर्वो (दिव्यगायने) ॥ १३५ ॥
१ कङ्कण २ शङ्खादि	पु कम्बु-(र्नावलये शंखे)
१ सर्प्प २ चुगुलादि	पु द्विजिह्वौ (सर्प्प-सूचकौ)।

१ शय्या—खाट—वा पलका—वा पलंग—२ अट्टः—कोठे के ऊपर की कोठरी—३ दारा—स्त्री—इन को तल्पं कहते हैं, जैसे गुरुतल्पः; १ स्तम्बः—तृण आदि का गुच्छा—अपि शब्द से २ विस्तार वा बड़ाई—और ३ शाखा वा डार—को विटपः, कहते हैं, "४ पल्लव—और फैलाव, को भी विटपः, कहते हैं"; ॥ १३३ ॥ ये प्राप्तरूप आदि तीन अर्त्थात् प्राप्तरूपः—स्वरूपः—अभिरूपः—पकारान्त भेद्य वा वाच्यलिङ्ग—बुधः पण्डित—मनोज्ञः—मनोहर—वा सुन्दर—अर्त्थ के वाचक हैं, "प्राप्तं रूपं येन स प्राप्तरूपः, स्वमेव रूपं यस्य स स्वरूपः, अभिलक्ष्यं रूपमस्याभिरूपः"; १ कूर्म्मो—कमठी—वा कछुही २ वीणाभेदः—सरस्वती की वीणा—इन को कच्छपी, कहते हैं; कुतपः, यह १ मृगरोम से बने वस्त्र, और दिन के आठवें भाग के नाम हैं", ॥ १३४ ॥ ॥ इति पान्ताः ॥ रवर्णे—र अक्षर में रेफः, पुल्लिङ्ग है, जैसे रेफे परे लोपः, कुत्सिते कुत्सित अर्त्थ में रेफ शब्द वाच्यलिङ्ग है, "शिफाशिफायां सरिति मांसिकायां च मातरि। शफंमूलं तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेपि च। गुंफःस्याद्गुंफने बाहोरलंकारे च कीर्त्तितः ॥ यह डेढ़ श्लोक मूल में भिन्न है, ॥ इति फान्ताः ॥ अब ब और व को तुल्य होने से वान्त और बान्तों को कहते हैं, जो मरण और जन्म के मध्य में प्राणी स्थित है वह अन्तराभवसत्त्वः है, अश्वः, घोड़ा, दिव्यगायने जो विश्वावसु आदि हैं—और गायनमात्र को—गन्धर्व्वः, कहते हैं, "(गन्धर्व्वस्तु नभश्चरे। पुंस्कोकिले गायने च मृगभेदे तुरंगमे। अन्तराभवदेहे चेति हेमः)" ॥ १३५ ॥ १ वलये—हाथ पांव के कड़े—२ शंखे समुद्र से उत्पन्न—या निधिभेद—३ हाथीदान्त का मध्य—४ शम्बूक घोंघा—वा सीपी—या सिपार—५ "गला" इन को पुल्लिङ्ग कम्बुः, कहते हैं; सर्पः सांप—और सूचकः पिशुन—या चुगुल, को द्विजिह्वः, कहते हैं;।

१ पूर्व्व २पुरुषादि।	पुसन पूर्व्वो (ऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुम्बहुत्वे ऽपि पूर्व्वजान्) ॥१३६॥
	॥ इति बान्ताः ॥
१ घड़ा २ हाथी के माथे का भाग ३ वेश्या-वाजादि।	पुसन कुम्भो (घटे-भमूर्द्धांशो)
१ बालक २ मूर्ख।	पु डिम्भो (तु शिशु-बालिशो)।
१ खम्भा २ जड़ता।	पु स्तम्भो (स्थूणा-जडीभावो)
१ ब्रह्मा २ शिव।	१पु शंभू-(ब्रह्म-त्रिलोचनो) ॥ १३७ ॥
१ पेट २ गर्भस्थ जन्तु ३ बालक।	पु (कुक्षि-भ्रूणा-र्भका) गर्भाः
शृंगार की प्रार्त्थनादि।	पु विश्रम्भः (प्रणये ऽपि च)।
तुरही-वा ढोलादि	पु स (स्याद्भेर्य्यां)दुन्दुभिः(पुंसिस्यादक्षे) दुन्दुभिः(स्त्रियाम्)१३८
१ कुसुम का फूल २ करवा।	न (स्यान्महारजनं क्लीवं) कुसुम्भं (करके पुमान्)।
१ क्षत्रिय २ मुख्य राजा।	पु (क्षत्रिये ऽपि च) नाभि-(र्नो)
१ गैया २ वसन्तादि।	स सुरभि-(र्गवि च स्त्रियाम्) ॥ १३९ ॥

१-भु.

पूर्व्व शब्द पूर्व्व दिशा का वाची वाच्यलिङ्ग है, जैसे पूर्व्वानदी, पूर्व्वोग्रामः, पूर्व्ववनं, और जब तो पूर्व्वज पितामहादिकों को कहना है तब पूर्व्व शब्द पुल्लिङ्ग और बहुवचनांत है, जैसे पूर्व्वग्रामपि पूर्व्वजा इति, पूर्व्वस्युः पूर्व्वजाः पूर्व्वे ज्ञातयः इति धरणिः, प्राक् पूर्व्वमग्रतः, "और पूर्बः पूर्व्वः यह भी", ॥ १३६ ॥ इति बान्ताः ॥ १ घटः-कलश-२ इभ-हाथी का मूर्द्धांश शिरोभाग-को कुम्भः, कहते हैं, "(कुम्भःस्यात्कुम्भकर्णस्य सुते वेश्या पतौ घटे ॥ राशिभेदे द्विपाङ्गे चेति विश्वः)"; १ शिशुः-बालक-२ और बालिशः मूर्ख को डिम्भः, कहते हैं; स्थूणा-गृहस्तम्भ-वा खम्भा, जड़ीभावः-जड़ता-इन को स्तम्भः, कहते हैं १ ब्रह्मा-विधाता-२ वा अर्हं-३ और त्रिलोचनः-शिव-को शंभुः, कहते हैं, ॥ १३७ ॥ कुक्षि -उदर-वा पेट-२ भ्रूणः-गर्भस्थजन्तु-३ अर्भकः बालक-इन को गर्भाः, कहते हैं, "(गर्भः, कुक्षौ शिशौ सन्धौ भ्रूणे पनसकंटक इति हैमः)" प्रणयः शृंगाररस की प्रार्त्थना-२ अपि शब्द से विश्वास-आदि को विश्रम्भः, कहते हैं, "विस्रम्भः भी" विश्रम्भः केलिकलहे विश्वासे प्रणयेधव इति विश्वहैमौ" भेर्य्यां बड़ी ढक्का-वा ढोल-को दुन्दुभिः, कहते हैं, "वा नगाड़ा" और पाशा-जूआ-वा बालकों के खेल के पदार्त्थ का वाचक दुन्दुभिः शब्द स्त्रीलिङ्ग है; ॥ १३८ ॥ महारजनं-फूल का भेद उसे कुसुम्भं, कहते हैं, और उस से रंगे वस्त्र को कौसुम्भं कहते हैं, करके कमण्डल वा करवा का वाची पुल्लिङ्ग, कुसुम्भः शब्द है; १ क्षत्रिये छत्री जाति-२ अपि शब्द से मुख्य नृप-३ और चक्र मध्य को, नाभिः, कहते हैं, "और प्राणी के अङ्ग वाची नाभि शब्द पुं-स्त्री॰ है, और मृगभेद में तो स्त्री॰ है"; सौरभेयी गौ वाची सुरभिः शब्द स्त्री॰ है, और चकार से वसन्त जाती के फल, और पुष्प तथा नागसुगन्धि और मनोज्ञ का वाची त्रिलिङ्ग है, सुवर्ण और चम्पक का वाची क्लीव है, ॥ १३९ ॥

१ कचहरी २ उस में बैठने वाले।	स सभा (संसदि सभ्ये च)
१ अध्यक्ष २ प्रिया-दि।	पुस्त्र (त्रिष्वध्यक्षे ऽपि) वल्लभः।
	॥ इति भान्ताः ॥
१ प्रकाश २ पगहा।	(किरण-प्रग्रहौ) १पु रश्मी
१ वानर २ मेंड्कादि	(कपि-भेकौ) पु प्लवङ्गमौ ॥ १४० ॥
१ इच्छा २ काम-देव।	(इच्छा-मनोभवौ) पु कामौ
१ सामर्थ्य २ उपाय।	(शक्त्यु-द्योगौ) पु पराक्रमौ।
पुण्यादि।	पु धर्म्मः (पुण्य-यम-न्याय-स्वभावा-चार-सोमपाः) ॥ १४१ ॥
उपायपूर्व्वक आर-म्भादि।	(उपायपूर्व्व आरम्भ उपधा चाप्यु) २पु पक्रमः।
वाणिज्यादि।	(वणिक्पथः पुरम्वेदौ) पु निगमौ
१ नागर २ और वनियां।	(नागरो वणिक्) ॥ १४२ ॥

१-भिम. २ उ-.

१ संसदि-सभा का स्थान-२ सभ्यः-सभा में साधु ३ वा समाज-४ वा द्यूत का मकान -५ अभीष्ट निश्चय के अर्थ इकट्ठा होते हैं जिस घर में-उस में रहने वाले जन समूह को-सभा, कहते हैं, "स्त्रियां सामाजिके गोष्ठ्यां द्यूत मन्दिरयोः सभेति रभसः"; १ अध्यक्ष मुख्याधिकारि-२ अपि शब्द से प्रिय-३ कुलीनाश्व-इन को वल्लभः, कहते हैं, ॥ इति भान्ताः ॥ १ किरण-प्रकाश २-अश्व आदि के बांधने की रस्सी प्रग्रहः-इन को रश्मि, कहते हैं; १ कपिः वानर-२ वा रक्तचन्दन-३ वा वराह-४ वा कपिल वर्ण-५ भेकः मेघ-वा मेंड्क-इन को प्लवंगमः, कहते हैं; ॥ १४० ॥ १ इच्छा आकांक्षा-२ वा चाहना-३ मनोभवः कामदेव-इन को कामः, कहते हैं; १ शक्तिः-सामर्थ्य-२ वा अस्त्रभेद-३ उद्योगः-उपाय-" ४ शौर्य्य-शूरता" इन को पराक्रमः, कहते हैं; पुण्य आदि छ का वाचक धर्म्म शब्द है; यमः-अन्तक-वा यमराज, न्याये-जैसे, धर्म्माध्यक्षः, स्वभावे जैसे-क्रूर धर्म्मा, आचारे-जैसे धर्म्मशास्त्रोक्त आचार, सोमं पिबतीति सोमपाः, ॥ १४१ ॥ उपाय को जान कर जो आरम्भ है वह उपाय पूर्व्व आरम्भ है, राजमंत्री के शील की परीक्षा का उपाय उपधा है; चिकित्सा भी-इन को उपक्रमः, कहते, हैं, "(उपक्रमः स्यादुपधा चिकित्साऽऽरम्भविक्रम इति विश्वः)"; वणिक्पथः धनिकापन-२ पुरं नगर-३ वेदः आम्नाय-इन को निगमः, कहते हैं, "(निगमो वणिजे पुर्य्यां कटे वेदे वणिक्पथ इति मेदिनी)" नगरेभवः नागरः नगर का-और वणिक्-ये २ नैगमः, वा नैगमा कहलाते हैं, "(नैगमः स्यादुपनिषद्वणिजोर्नागरेपि चेति मेदिनी)" ॥ १४२ ॥

	पु नैगमौ (द्वौ)
बलदेवादि ।	पु (बले) रामो (नीलचारु-सिते त्रिषु) ।
१ वृन्द २ गांव ।	पु (शब्दादिपूर्व्वो वृन्दे ऽपि) ग्रामः
१आक्रमण२चढ़ाई३आ·	पु (क्रान्तौ च) विक्रमः ॥ १४३ ॥
१ स्तोत्र २ यज्ञादि ।	पु "स्तोमः (स्तोत्रे ऽध्वरे वृन्दे)
१ टेढ़ा २ आलसी ।	पु जिह्म-(स्तु कुटिले ऽलसे) ।
१ गर्म्म २ पसीना ।	पु (उष्णे ऽपि) घर्म्म-
१ चेष्टा २ अलङ्कारादि	पु (श्चेष्टा ऽलङ्कारे भ्रान्तौ च) विभ्रमः" ॥
पिलही रोगादि ।	पु गुल्मा (रुक्-स्तम्ब-सेनाश्च)
१ बहिन २ कुलवधू	स स जामिः (स्वसृ-कुलस्त्रियोः) ।
१पृथ्वी २सहनशील	(क्षिति-क्षान्त्योः) क्षमा
योग्यादि ।	न पुसन (युक्ते) क्षमं (शक्ते हिते त्रिषु) ॥ १४४ ॥
१ हरा २ कृष्ण ।	(त्रिषु) श्यामौ (हरित्कृष्णौ)
१ शतावरि २ रात ।	स न श्यामा (स्याच्छारिवानिशा) ।
पुच्छादि ।	लालामं (पुच्छ-पुण्ड्रा-श्व-भूषा-प्राधान्य-केतुषु) ॥ १४५ ॥
अध्यात्मादि ।	न सूक्ष्म (मध्यात्ममप्य्)
१ आदि २ प्रधान ।	पुसन (आदौ प्रधाने) प्रथम-(स्त्रिषु) ।

बले, बलदेव को रामः और नील काला–वा कृष्ण–२ चारु रमणीय–वा सुन्दर–३ सित श्वेत–इन का वाची राम शब्द त्रिलिङ्ग है, "रामः पशुविशेषेस्याज्जामदग्न्ये हलायुधे । राघवे चासिते श्वेते मनोज्ञेपि च वाच्यवदिति कोशान्तरम्)"; शब्दादि पूर्व्व ग्राम शब्द-वृन्द का वाची है, जैसे शब्दग्रामः, २ अपि शब्द से वसतिः, और स्वर को भी ग्रामः, कहते हैं; क्रान्तिः १ आक्रमण–२ वा चढ़ाई–३ च शब्द से पराक्रम–इन को विक्रमः, कहते हैं ॥ १४३ ॥ "कोई यहां स्तोम इस श्लोक को अमूलक कहते हैं, १ स्तोत्र २ यज्ञ ३ वृन्द समूह को स्तोमः, कहते हैं; १ टेढ़ा २ आलसी को जिह्मः, कहते हैं, ग्राम और अपि शब्द से स्वेद के जल को घर्म्मः कहते हैं, चेष्टालंकार हाव है, भ्रान्तिः भ्रम शोभा को विभ्रमः, कहते हैं"; १ रुक् प्लीहाख्य –रोगः २ स्तम्बः–कुश आदि का गुच्छा, ३ सेना–सैन्यरक्षण–इन को गुल्माः कहते हैं; १ स्वसा –बहिनि–२ कुल स्त्री–कुलवधूः, इन दोनों को जामिः, वा यामिः, कहते हैं, "(प्रहरे संयमे यामो यामिः स्वसृकुलस्त्रियोरिति रभसात्)" १ क्षितिः भूमि–२ क्षान्तिः तितिक्षा–३ वा सहनशीलता इन को क्षमा, कहते हैं; युक्ते योग्य वस्तु को क्षमं, शक्ते पराक्रम–२ हिते हितैषी–का वाची क्षम शब्द स्त्रिलिङ्गे, "धरणिने तो–योग्ये शक्ते हिते क्षमं, कहा है" ॥ १४४ ॥ १ हरित्–पलाश –२ कृष्णः–काला, ये दोनों श्यामः, वा श्यामौ, कहलाते हैं, और त्रिलिङ्ग हैं; १ शारि वा शतावरि –२ और निशा–रात को श्यामा, कहते हैं; १ पुच्छः पोंछ–वा लङ्गूर–२ पुण्ड्र अश्व आदि के ललाट का चित्र–३ अश्व घोड़ा–४ भूषा–घोड़े का आभूषण–५ प्रधानही प्राधान्य–६ केतुध्वजा, इन ६ को ललामं, "वा ललाम (–न्) यह भी" कहते हैं, (प्रधानध्वजशृङ्गेषु पुण्ड्रवालधिलक्ष्मसु। भूषा वाजि प्रभावेषु ललामं स्याल्ललम चेति रुद्रः)" ॥ १४५ ॥ अध्यात्मं आत्मनि अधिकृतं लिङ्गदेह–अपि शब्द से कैतव छल को–सूक्ष्मं, कहते हैं; आदौ आद्य और प्रधाने मुख्य, को प्रथमः, कहते हैं; त्रिलिङ्ग है, और मान्त वर्ग पर्य्यन्त त्रिषु इस पद का अधिकार है; ।

१ सुन्दर २ टेढ़ादि।	पुंस्न वामौ (वल्गु-प्रतीपौ द्वाव्)
१ न्यून २ निन्दित।	पुंस्न अधमौ (न्यून-कुत्सितौ) ॥ १४६ ॥
१ जीर्ण २ खाकर त्याग किया।	(जीर्णं च परिभुक्तं च) पुंस्न यातयाम (मिदं द्वयम्)।
	॥ इति मान्ताः ॥

॥ विंशति प्रकरण ॥

१ घोड़ा २ गरुड़।	(तुरङ्ग-गरुडौ) पु तार्क्ष्यौ
१ घर २ कमती ३ कल्पान्त।	(निलया-पचयौ) पु क्षयौ ॥ १४७ ॥
१ देवर २ श्यालक।	पु श्वशुर्य्यौ (देवर-श्यालौ)
१ भतीजा २ शत्रु।	पु भ्रातृव्यौ (भ्रातृज-द्विषौ)।
१ शब्दितमेघ २ इन्द्र।	पु पर्ज्जन्यौ (रसदब्दे-न्द्रौ)
१ स्वामी २ वैश्य।	(स्याद्) पु अर्य्यः (स्वामि-वैश्ययोः) ॥ १४८ ॥
१ पुष्य २ कलियुग।	पु तिष्यः (पुष्ये कलियुगे)
१ अवसर २ क्रम।	पु पर्य्यायो (ऽवसरे क्रमे)।
१ अधीन २ शपथादि	पु प्रत्ययो (ऽधीन-शपथ-ज्ञान-विश्वास-हेतुषु) ॥ १४९ ॥

१ वल्गु—मनोहर—२ प्रतीपः—विपरीत—और ३ महादेव ये ३ वामः, कहलाते हैं, वल्गुः जैसे वामलोचनाः स्त्रियः, "(वामः कामे सव्ये पयोधरे । उमानाथे प्रतीकूले चारौ वा मातु योषितीति हैमः)"; १ न्यूनः—ऊन—२ कुत्सितः निन्दित—इन को अधमः, कहते हैं; ॥ १४६ ॥ १ जीर्णं—परिणाम को प्राप्त—या पहुंचा हुआ—२ परिभुक्तं खा कर त्याग किया हुआ—इन को यातयामं, कहता है, ॥ इति मान्ताः ॥ १ तुरङ्गमः—घोड़ा—२ गरुड़ः—पक्षिराज—इन को तार्क्ष्यः, कहते हैं, "(तार्क्ष्यस्तु स्यन्दने वाहे गरुड़े गरुड़ाग्रजे । अश्वकर्णद्रुमे तरौ स्यादिति हैमः)"; १ निलयः—घर—२ अपचयः—३ ह्रास और कल्पान्त—ये ३ क्षयः, कहलाते हैं; ॥ १४७ ॥ १ देवरः—पति का छोटा भाई—२ श्यालः स्त्री का भाई—ये २ श्वशुर्य्यः, कहलाते हैं, "श्वशुरस्यापत्यं श्वशुर्य्यः"; भ्रातृजः भाई का लड़का—और शत्रु को भ्रातृव्यः, कहते हैं; रसदब्दः—गर्जता मेघ—और इन्द्र—देवराज—को पर्ज्जन्यः, कहते हैं; स्वामी प्रभु—और वैश्य बनियां—को अर्य्यः, कहते हैं; ॥ १४८ ॥ पुष्यः नक्षत्र—कलियुगः चौथा युग—इन को तिष्यः, कहते हैं; अवसरे प्रस्ताव—वा अवकाश—और क्रम—को पर्य्यायः, कहते हैं, "(पर्य्यायस्तु प्रकारे स्यान्निर्माणेऽवसरे क्रम इति विश्वः)"; अधीन आदि ७ अर्थों का वाची प्रत्यय शब्द है, अधीने, जैसे राजप्रत्ययाः प्रजाः, शपथः—शाप, ज्ञाने, जैसे प्रत्यक्ष प्रत्ययः, विश्वासे, जैसे, न शत्रोः प्रत्ययं गच्छेत्, हेतौ, जैसे [illegible] भार्य्या प्रत्ययं, रंध्रे, छिद्र, शब्दे, जैसे चिकीर्षति यहां सन् प्रत्यय है; ॥ १४९ ॥

	(रन्ध्रे शब्दे) पु
१ बहुत दिन का वैर २ पछतावा ।	पु (ऽथा) ऽनुशयो (दीर्घद्वेषानुतापयोः) ।
१ कम २ हाथियों की मध्यगती ।	स्थूलोच्चय-(स्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते) ॥ १५० ॥
शपथादि ।	पु समयाः (शपथा-चार-काल-सिद्धान्त-सम्विदः) ।
व्यसन जूआ आदि।	(व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्य) ऽनया-(स्त्रयः) ॥ १५१ ॥ पु
अतिक्रमादि ।	पु अत्ययो (ऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डे ऽप्य) (ऽथापदि ।
१ लड़ाई २ उत्तर काल	पु युद्धा-यत्योः) सम्परायः पु
१ श्वसुर २ पूजा के योग्य ।	पूज्य-(स्तु श्वशुरे ऽपि च) ॥ १५२ ॥
१ सेना के पीछे रहने वाली सेना २ और समूह ।	पु (पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च) सन्नयौ ।
समुदायादि ।	पु (संघाते सन्निवेशे च) संस्त्यायः
विश्वासादि ।	पु प्रणया-(स्त्वमी ॥ १५३ ॥
	विस्रम्भ-याञ्चा-प्रेमाणो)
विरोधादि ।	पु (विरोधे ऽपि) समुच्छ्रयः ।
शब्दस्पर्शादि ।	पु विषयो (यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि) ॥ १५४ ॥

दीर्घद्वेषः बहुत काल की शत्रुता—और अनुतापः पश्चात्ताप—"अनुबंध" इन को अनुशयः, कहते हैं; असाकल्यः असंम्पूर्ण—गजानां मध्यमेंगते हाथियों की जो न शीघ्र न मन्द गति है—इन को स्थूलोच्चयः, कहते हैं, ॥ १५० ॥ शपथ सौगन्ध खाना—आचार—काल—सिद्धान्त—और अच्छी भाषा आदि का वाची समयः, है, शपथे जैसे कृत समय भी चोर दण्डय है, संवित्सम्भाषा, "(समयः शपथे भाषासम्पदोः कालसंविदोः । सिद्धान्ताचारसंकेतनियमावसरेषु च । क्रियाकारे निर्देशे चेति हेमः)" व्यसनानि जूआ आदि—अशुभं यह दैव विशेषण है, विपत् विपत्ति—ये ३ अनयः, कहलाते हैं, अशुभ दैव में, जैसे निःस्वोभूदनयेन सः; ॥ १५१ ॥ अतिक्रमें उल्लंघन—कृच्छ्रे दुःख—वा पाप—वा तत्कारण—पाप—दोषे वात—पित्त—कफात्मक—"अपि शब्द से नाश" दण्ड लाठी—वा मथने का दण्ड—ध्वंस—इन को अत्ययः, कहते हैं, आपदि विपत्ति—युद्ध लड़ाई—आयतिः उत्तर काल—वा प्रभाव—वा प्राप्ति काल—इन को संपरायः, कहते हैं; श्वशुर पति का पिता—और स्त्री का पिता—अपि शब्द से पूजा के योग्य—इन को पूज्यः, कहते हैं; ॥ १५२ ॥ सेना के पीछे जो सेना रहती है—और समवायः समूह—को सन्नयः, कहते हैं; संघाते समूह—वा नरकभेद—वा अच्छा मारना—सन्निवेशः पुर आदि के बाहर का देश—वा अच्छी स्थिति—वा स्थान विशेष—"विस्तार बड़ाई" इन को संस्त्यायः, कहते हैं; विश्रम्भः विश्वास—प्रत्यय—वा केलिकलह—याञ्चा, माङ्गना—प्रेम स्नेह—वा प्रीति—ये तीनों प्रणयाः, कहलाते हैं; ॥ १५३ ॥ विरोधे वैर—वा द्वेष—और उन्नति उंचाई—को समुच्छ्रयः, कहते हैं; जिस मत्स्य आदि का जो जल आदि ज्ञात नित्य सेवित और शब्द आदि अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध—ये विषयाः, कहलाते हैं; ॥ १५४ ॥

१ काढ़ा २ विलेपनादि ।	पुन (निर्य्यासे ऽपि) कषायो (ऽस्त्री)
१ सभा २ आश्रय ३ अभ्युपगम ।	पु (सभायां च) प्रतिश्रयः ।
१ बहुताई २ मरण के निमित्त अन्नत्यागादि	पु प्रायो (भूम्न्यंन्तगमने)
१ दीनता २ यज्ञादि ।	पु मन्यु-(र्दैन्ये क्रतौ क्रुधि) ॥ १५५ ॥
१ गोप्य २ उपस्थ ।	न (रहस्योपस्थयोर्) गुह्यं
१ शपथ २ सत्यं ।	न सत्यं (शपथ-तथ्ययोः) ।
१ बल २ प्रभाव ।	न वीर्य्यं (बले प्रभावे च)
१ भव्य २ पृथिव्यादि ।	न द्रव्यं (भव्ये गुणाश्रये) ॥ १५६ ॥
१ स्थान २ गृहादि	न धिष्ण्यं (स्थाने गृहे भेऽग्नौ)
१ नक्षत्र २ अग्नि आदि ।	न भाग्यं (कर्म्मशुभाशुभम्) ।
१ कशेरु २ सोनादि ।	न (कशेरु-हेम्नोर्) गाङ्गेयं
दंतियादि ।	स विशल्या (दन्तिकापि च) ॥ १५७ ॥

निर्य्यासे काढ़ा का रस-अपि शब्द से विलेपन आदि-को कषायः, कहते हैं, "कषायो रसभेदेस्यादंगरागे विलेपन इति विश्वः" सभा सम्मति का स्थान-वा आश्रय-च शब्द से स्वीकार-वा प्राप्ति-और समीप गमन-को प्रतिश्रयः, कहते हैं; भूम्नि बाहुल्य-वा बहुधा-जैसे प्रायेण ब्राह्मणाः भोज्याः, अन्तगमने अन्तनाश जाना जाता है जिसमें वह-अन्त गमन में, जैसे प्रायोपवेशः कृतः, अर्थात् मृतः, इन को प्रायः कहते हैं; दैन्ये दीनता-क्रतौ यज्ञ-क्रुधि कोप-इन को मन्युः, कहते हैं; "शोक भी" ॥ १५५ ॥ रहस्य गोप्य-वा एकान्त कोसनास-उपस्थ भग-और शिश्न-को गुह्यं, कहते हैं; शपथ सौगन्ध-तथ्यं सच्चा-इन को सत्यं, कहते हैं; बलं सामर्थ्य-प्रभावः तेज विशेष को वीर्य्यं, कहते हैं, "वीर्य्यं तेजः प्रभावयोः। शुक्रे शक्तौ चेति हैमः"; भव्ये सत्य-वा जीव-गुणाश्रये पृथिवी आदि-और द्रविण-वा धन-को द्रव्यं, कहते हैं; ॥ १५६ ॥ स्थान-गृह-भेनक्षत्र-आगि-इन को धिष्ण्यं, वा धिष्ण्यः, और धिष्ण्य कहते हैं; शुभ और अशुभ शुभाशुभ है, वा जन्मान्तरीय जो कर्म्म है वह भाग्यं, कहलाता है; ऐश्वर्य्यंकोभी भाग्यं, कहते हैं; कशेरुः कशेरु अपने नाम से प्रसिद्ध-और हेम सोना को गांगेयं, कहते हैं; दन्तिका निकुंभ-वा दन्ती वृक्ष-अपि शब्द से अग्नि शिखा-गुडूची गुरुच-वा गिलोय-"त्रिपुटा को भी" विशल्या कहते हैं; ॥ १५७ ॥

१ लक्ष्मी २ पार्वती।	स वृषाकपायी (श्रीगौर्य्योः)
१ नाम २ शोभा।	स अभिख्या (नाम-शोभयोः)।
आरम्भादि।	(आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् ॥ १५८ ॥ स उपायः कर्म्म चेष्टा च चिकित्सा च नव) क्रियाः।
सूर्य्य की स्त्री आदि	स छाया (सूर्य्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्ब मनातपः) ॥ १५९ ॥
हर्म्यादि के अन्त-गृहादि।	स कक्ष्या (प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्ये-भवन्धने)।
१ क्रिया २ तामसी देवतादि।	स कृत्या (क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः) ॥ १६० ॥
निन्दित वादादि।	पुसन जन्यः (स्या ज्जनवादे ऽपि) पुसन
अधमादि।	पुसन जघन्यो (ऽन्त्ये ऽधमे ऽपि च)।
निन्द्यादि।	(गर्ह्यो-धीनौ च) वक्तव्यौ पुसन
सज्जादि।	कल्यौ (सज्ज-निरामयौ) ॥ १६१ ॥

१ श्रोः लक्ष्मी—और २ गौरी को—वृषाकपायी, कहते हैं, "वृषाकपायी जीवन्त्यां शतावर्य्युंमयो स्त्रियामिति हैमः"; नाम अभिधान—वा नाम—शोभा कान्ति—इन को अभिख्या, कहते हैं; १ आरम्भः प्रारम्भ आदि नव क्रिया शब्द वाच्य हैं, तहां आरम्भ में जैसे सर्व्वाः क्रिया मंत्रमूला नृपाणां,—२ निष्कृतिः प्रायश्चित्त प्रायश्चित्त में जैसे महापातकिनां पुंसां प्राणान्तिका क्रिया स्मृता—३ शिक्षा अभ्यास—शिक्षा में जैसे, क्रियाहि वस्तूपहिता प्रसीदति वा वर्णों के उच्चारण के प्रदर्शक—वेदाङ्ग ४ पूजन में जैसे, देवक्रिया परस्तपस्वी, ५ सम्प्रधारणं विचार, जैसे, क्रियां विना कोहि जानाति कृत्यं विना क्रिया कृत्य को कौन जानता है, ॥ १५८ ॥ —६ उपाय में जैसे, सप्रसामादिकाः क्रियाः—७ कर्म में जैसे, निष्क्रियस्य कुतः सुखं, विना क्रिया के सुख कहां है, ८ चेष्टा में जैसे, मृतः किं निष्क्रियो यतः, विना काम का था इसलिये मरा, ९ चिकित्सा में जैसे, पूर्व्वं ज्वरे समुत्पन्ने क्रिया पूर्व्वज्वरानुगा—पहिले ज्वर के उत्पन्न होने पर ज्वर के अनुकूल क्रिया करनी चाहिये; सूर्य्यप्रिया आदि चारों का वाची छाया शब्द है, तिनमें सूर्य्यप्रिया शनैश्चर की माता, कान्ति में जैसे विच्छायः, प्रतिबिम्ब में जैसे, संछायः आदर्शः, आतपाभाव में जैसे नष्टच्छायो मध्याह्नः; ॥ १५९ ॥ हर्म्य आदि और राजगृह आदि के प्रकोष्ठें अर्थात् घर के भीतर जैसे सप्त कक्षा को लांघकर, कांची मेखला वा करधनी, मध्ये मध्य भाग में जो इभ हाथी के कमर का बन्धन है इन को कक्ष्या कहते हैं, क्रिया कर्म्म देवता वा देवत विशेषः अर्थात् देवता संबन्धी—जो भागवत में कहा है, "तया स निर्म्ममे तस्मै कृत्यां कालानलोपमामिति" क्रिया में जैसे, कां कां कृत्यामकार्षीः, धन स्त्री भूमि आदि से जो भेदनीय है—वा भेद किये जाते हैं पराये राज्य में पुरुष आदि वहां कृत्या शब्द वाच्यलिङ्ग है, ॥ १६० ॥ जनवादः निन्दितवाद—अपि शब्द से युद्ध आदि को, जन्यः, कहते हैं "जन्यं हट्टे परीवादे संग्रामे च नपुंसकमिति मेदिनी", अन्त्यः चाण्डाल—अधमः नीच—इन को जघन्यः, कहते हैं, अपि शब्द से चरम—शूद्र—पुरुष का लिङ्ग—और गर्वित को भी जघन्यः, कहते हैं; गर्ह्यः अधम—वा पामर—अधीनः अपने आधीन—इन को वक्तव्यः, कहते हैं, च शब्द से वचन के योग्य को भी वक्तव्यः, कहते हैं; सज्जः उपकरण—वा उपाय से युक्त—निरामयः निरोग—को कल्यः, कहते हैं, और कला में चतुर कल्यः है, ॥ १६१ ॥

आत्मवानादि ।	पुसन (आत्मवान् नर्पेतो ऽत्यांद्) अर्थ्यः
सुन्दरादि ।	पुसन पुण्यं (तु चार्व्वपि) ।
अच्छी चांदी आदि	पुसन रूप्यं (प्रशस्त-रूपे ऽपि)
१ उत्तम बोलनेवा-ला २ दाता ।	पुसन वदान्यो (वल्गुवागपि) ॥ १६२ ॥
१उचित २युक्तियुक्त	पुसन (न्याय्ये ऽपि) मध्यं
प्रियदर्शनादि ।	पुसन सैाम्यं (तु सुन्दरे सोम-दैवते) ।

॥ इति यान्ताः ॥

॥ एकविंशति प्रकरण ॥

१समूह २अवसरादि	पु (निवहा-वसरौ) वारो
कुशशय्यादि ।	पु संस्तरो (प्रस्तरा-ध्वरौ) ॥ १६३ ॥
१ वृहस्पति० २ पि-तादि ।	पु गुरू (गीष्पति-पित्राद्यौ)
१ तीसरा युग २ संशयादि ।	पु द्वापरो (युगसंशयो) ।
१ भेद २ सादृश्य ।	पु प्रकारो (भेद-सादृश्ये)

आत्मवान् धीमान्-और यो अर्त्यात्-धन से युक्त-वा धनवान्-को अर्थ्यः, कहते हैं; चारु सुन्दर-अपि शब्द से, सुकृत-और धर्म-"तथा पवित्र" को पुण्यं, कहते हैं, "(पुण्यं त्रिषु मनोज्ञे स्यात्, क्लीवं सुकृतधर्मयोरिति विश्वः)"; प्रशस्तरूपं अच्छा रूप वा-चांदी अपि शब्द से-सोना-वा गढ़ा हुआ सोना-इन को रूप्यं, कहते हैं; वल्गुवाक् मनोहर बोलनेवाला-अपि शब्द से-दाता-को भी वदान्यः, कहते हैं; ॥ १६२ ॥ न्याय्ये उचित-अपि शब्द से युक्ति युक्त को न्याय्यं, कहते हैं; सुन्दर मनोहर-वा प्रियदर्शन-और सोम चन्द्रमा देवता हैं जिस के उस हविष्य को-सैाम्यं, कहते हैं, ॥ इति यान्ताः ॥ निवहः वृन्द-वा समूह-अवसरः प्रस्ताव-वा जिज्ञासा के निवृत्यर्थ अवश्य वक्तव्य-ये दोनों वारो वारः, वा कारः, कहलाते हैं. "(वारः सूर्य्यादि दिवसे वारो ऽवसरवृन्दयोरिति)" प्रस्तरः दर्भमुष्टिः, वा कुशा मूठी में है जिस्के, वा कुशशय्या-अध्वरः क्रतु-वा यज्ञ-सावधान-आठ वसुओं मे से दूसरा वसु-इन को संस्तरः, वा संस्तरो, कहते हैं, ॥ १६३ ॥ गीष्पतिः वृहस्पति-पित्र पितर-आद्य शब्द से वेद-शास्त्राध्यापक-पूज्य-मान्य-वा माननीय-इन को गुरुः कहते हैं; युगः सत्य-त्रेतादि युगभेद-संशयः संदेह-चिन्ता-खटका-इन को द्वापरः, कहते हैं; भेदः विशेष-वा भिन्नता-जैसे पलांडु के भेद गज्जन-वा गाजर, सादृश्यं, जैसे यह उस के तुल्य है, इन को प्रकारः कहते हैं. "(वा प्रकारः समूह है)"; ।

१ इसारा २ आकृति	१पु आकारौ (इङ्गिता-कृती) ॥ १६४ ॥
१ अन्न का टूंड़ २ बाण ।	पु किंशारू-(धान्यशूकेषु)
१ निर्ज्जल देश २ पर्व्वत ।	पु मरू (धन्व-धराधरौ) ।
१ वृक्ष २ पर्व्वत ३ सूर्य्य।	२पु अद्रयो (द्रुम-शैला-र्क्काः)
१ कुच २ बादर ।	पु (स्त्रीस्तना-ब्दा) पयोधरौ ॥ १६५ ॥
१ अंधकार २ शत्रु ३ दानव ।	पु (ध्वान्ता-रि-दानवा) वृत्रा
१ भेंट २ हाथ ३ किरण।	पु (बलि-हस्तां-शवः) कराः ।
१ भांग २ स्त्री का रोगविशेषादि।	पु प्रदरा (भङ्गनारीरुक्-वाणा) पु
१ बार २ कोन ।	अस्राः (कचा अपि) ॥ १६६ ॥
१ बिन जमे सींगके गैया-बयलादि।	पु (अजातशृङ्गो गौः काले ऽप्यश्मश्रुर्ना च) तूवरः ।
१ सोना २ द्रव्यमात्र	३पु (स्वर्णे ऽपि) राः पु
१ पलंग २ परिवार।	परिकरः (पर्य्यङ्क-परिवारयोः) ॥ १६७ ॥
१ अच्छा मोती आदि ।	पु (मुक्ता-शुद्धौ च) तारः (स्याच्)

१-र. २-द्रि. ३ रै.

१ इङ्गित चेष्टित–वा इसारा–सङ्केत–और २ आकृति स्वरूप–इन को आकारः, कहते हैं; ॥ १६४ ॥ धान्य सतुष चावल–२ वा शालि–तिल–यव आदि–३ शूकतीखा अग्र–४ शिखा–को किंशारुः, कहते हैं; १ धन्वा निर्ज्जल देश–२ वा चाप–३ धराधरः पर्व्वत को भी मरुस्थली के सम्बन्ध से–मरुः, कहते हैं; १ द्रुमः वृक्ष–२ शैल पर्व्वत–३ अर्क्क सूर्य्य–४ वा इन्द्र –इन को अद्रिः, वा अद्रयः, कहते हैं; १ स्त्री स्तन लुगाई की छाती–वा कुच–२ अब्दः मेघ –ये २ पयोधर, वा पयोधरौ, कहलाते हैं, "(पयोधरः कोशकारे नालिकेरे स्तने पिच । कशेरु-मेघयोः पुंसीति मेदिनी)"; ॥ १६५ ॥ ध्वान्त बड़ा अन्धकार–२ अरिः शत्रु–३ दानवः दनुज भेद–इन को वृत्रः, वा वृत्राः, कहते हैं, "(वृत्रो मेघे रिपौ ध्वान्ते दानवे वासवे गिराविति हैमः)" १ बलिः राजकर–२ वा पूजा सामग्री–३ हस्त हाथ–४ वा देह का अवयव–५ अंशुः रश्मि –६ वा किरण–इन को करः, वा कराः, कहते हैं; १ भङ्गः पराजय–२ खण्ड–३ तरङ्ग वा लहर –४ नारीरुक्–स्त्रियों की योनी के रोग का भेद–५ बाणः शर–६ वा तीर–इन को प्रदरः, वा प्रदराः, कहते हैं, "(प्रदरो रोगभेदेस्याद्विदारे शरभंगयोरिति)"; १ कचाः केश–२ अपि शब्द से कोने को भी, अस्राः, कहते हैं; ॥ १६६ ॥ १ अज्ञात शृङ्ग गौ–वा बैल–२ काले काल में भी विना मोछ का पुरुष–ये २ तूवरः, कहलाते हैं; १ स्वर्ण सोना–२ वा काञ्चन–३ अपि शब्द से धनमात्र को राः, कहते हैं; १ पर्य्यंकः खटिया–२ वा योगपट्ट–३ परिजन कुटुम्ब आदि–को परिकरः, कहते हैं, ॥ १६६ ॥ १ मुक्ताशुद्धौ पवित्र–२ वा स्वच्छ मोती–को तारः, कहते हैं "(तारञ्च रजतेत्युच्चस्वरेप्यन्यवदौरितमिति विश्वः)",

पवनादि ।	[१पु] क्षारो (वायौ स तु त्रिषु ।
प्रतिज्ञादि ।	कर्वुरे) [पु] (ऽथ प्रतिज्ञा-जि-सम्वि-दापत्सु) सङ्गरः ॥ १६८ ॥
वेदभेदादि ।	(वेदभेदे गुप्तिवादे) [पु] मन्त्रो
१ सूर्य्य २ मित्रादि ।	[पु] मित्रो (रवावपि) ।
यज्ञादि ।	(मखेषु यूपखण्डे ऽपि) [पु] स्वरुर्
उपस्थादि ।	(गुह्ये ऽप्य) [पु] ऽवस्कारः ॥ १६९ ॥
वाजादि ।	[पु] आडम्बर-(स्तूर्य्यरवे गजेन्द्राणाञ्च गर्ज्जिते) ।
अभिग्रहणादि ।	[पु] अभिहारो (ऽभियोगे च चौर्य्ये सन्नहने ऽपि च) ॥ १७० ॥
जङ्गमादि ।	(स्याज्जङ्गमे) [पु] परीवारः (खड्गकोशे परिच्छदे) ।
वृक्षादि ।	[पु] विष्टरो (विटपीदर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम्) ॥ १७१ ॥
१ द्वार २ चौर द्वारपाल ।	(द्वारिद्वाःस्थे) [पु] प्रतीहारः
झेंढ़ीदारिन ।	[२स] प्रतीहार्य्य (ऽप्यनन्तरे) ।

---

१ शार. २-री—(न).

१ वायौ पवन—वा २ समीरण—३ कर्वुरः शवलवर्ण—इन को शारः, कहते हैं, और वह त्रिलिङ्ग है, "(शारः स्याच्छवले वाच्यलिङ्गः पुंसि समीरणे)"; १ प्रतिज्ञा कर्त्तव्य का उपदेश—२ वा आज्ञा—३ आजिः युद्ध—४ संवित् क्रियाकार—५ आपदा इन को सङ्गरः, कहते हैं, प्रतिज्ञा में जैसे सत्यसङ्गरः, "संगरो युधि चापदि । क्रियाकारे विषेचांगीकारे क्लीवं समी-फल इति मेदिनी" ॥ १६८ ॥ १ वेदभेदे वेदों का भेद—२ गुप्तिवादे एकान्त में कर्त्तव्य का निश्चय—को मंत्रः, कहते हैं, "(मंत्रो देवादि साधने। वेदांशे गुप्तवादे चेति हेमः)"; १ रविः सूर्य—अपि शब्द से सेत युक्त सुहृद को भी मित्रः, कहते हैं, इस अर्थ मे क्लीव है; १ मखेषु यूप के गढ़ने में पहिला गिरा यूप का टुकड़ा—अपि शब्द से—२ वज्र—३ वाण—४ यज्ञ—५ सूर्य्य किरण—इन को स्वरुः, कहते हैं, १ गुह्य उपस्थ—अपि शब्द से विष्ठा को भी अवस्कारः, कहते हैं, ॥ १६९ ॥ १ तूर्य्यरवः वाजे का शब्द—२ मतवाले हाथियों के गर्ज्जन को—आडम्बरः, कहते हैं, "(आडम्बरः समारंभे गजगर्जिततूर्य्ययोरिति कोशान्तरम्)" अभियोगः अभिग्रहण—२ चोर का कर्म चौर्य्य—३ सन्नहनं कवच आदि का ग्रहण—इन को अभिहारः, कहते हैं, ॥ १७० ॥ जङ्गमे जङ्गम विशेष—वा २ परिजन—३ खड्गकोशे खड्ग का ढकना—वा ४ मियान—५ परिच्छद उपकरण—६ सहायक—इन को परिवारः, कहते हैं; १ विटपी वृक्ष—२ दर्भमुष्टि का परिमाण तो, "(पंचाशता भवेद्ब्रह्मा तदर्द्धेन तु विष्टरः)" इस आदि, ३ "पीठमाद्यं यस्य तदासनं च" पीठ वा पीढ़ा—वा पाटा है आद्य आसन जिस्में—आद्य शब्द से कृष्ण मृग चर्म भी—ये विष्टरः, कहलाते हैं; १ द्वारि द्वार वा द्वार—२ द्वाःस्थे द्वारपाल को प्रतीहारः, कहते हैं; अनन्तरे निकट व्यवधान रहित काले मे प्रतीहार को प्रतीहारी अपि शब्द से होता है, वह तो पुरुष व्यक्ति में भी स्त्री लिङ्ग है; ।

१ बड़ा न्यौला २ विष्णु ३ पीला।	(विपुले नकुले विष्णौ) बभ्रुः (स्यात्पिङ्गले त्रिषु) ॥ १७२ ॥
१ बल २ स्थिरांशादि।	सारो (बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु)।
१ जुआरी २ बाज़ी आदि।	दुरोदरो (द्यूतकारे पणे द्यूते) दुरोदरम् ॥ १७३ ॥
१ बड़ा वन १ कठिनरास्तादि।	(महारण्ये दुर्गपथे) कान्तारः (पुन्नपुंसकम्)।
परसंपत का असहनादि।	मत्सरो (ऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु) ॥ १७४ ॥
देवता से वाञ्छा करनादि।	(देवाद्वृते) वरः (श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबे मनाक् प्रिये)।
बांस का अंखुआ आदि।	(वंशाङ्कुरे) करीरो (ऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना) ॥ १७५ ॥
सेना का पश्चाद्भागादि।	(ना चमूजघने हस्तसूत्रे) प्रतिसरो (ऽस्त्रियाम्)।
१ यम २ अनिल वा पवनादि।	(यमा-निले-न्द्र-चन्द्रा-र्क-विष्णु-सिंहां-शु-वाजिषु) ॥ १७६ ॥

१ विपुले यह नकुल का विशेषण है इस से विशाल नकुल—२ वा बड़ा न्यौला—३ विष्णु—इन को पुल्लिङ्ग बभ्रुः, कहते हैं,—और पीले का वाची बभ्रु शब्द त्रिलिङ्ग है; ॥ १७२ ॥ बले सामर्थ्य—२ स्थिरांशे वृक्ष आदि के स्थिर अंश जैसे, शिंशपासारः, ३ न्याय्ये न्याय से युक्त—४ वरः श्रेष्ठ—इन को सारः, कहते हैं; पहिले २ में पुल्लिङ्ग—न्याय्य में क्लीब—वर में त्रिलिङ्ग है; १ द्यूतकार जूआ करानेवाला—और २ पण मूल्य—३ वा धन—इन को दुरोदरः, और द्यूते जूआ वाची दुरोदरं, क्लीब है; ॥ १७३ ॥ १ महारण्ये बड़ा वन—२ वा बिल ३ और दुर्गपथे कठिन मार्ग—को कान्तारः, कहते हैं, वह पुन्नपुंसक है; १ अन्य शुभद्वेषे परसंपत के असहन—का वाची मत्सरः पुल्लिङ्ग है, मत्सर से युक्त—और कृपण का वाची त्रिलिङ्ग है; ॥ १७४ ॥ १ देवात् देवता से वृत चाहा वरः पुल्लिङ्ग है, श्रेष्ठ का वाची त्रिलिङ्ग है, मनाक्प्रिये थोड़ा प्रिय वर शब्द क्लीब है; १ वंशाङ्कुरे बांस के अङ्कुर वा बांस के अंखुआ को करीरः, कहते हैं, वह पुन्नपुंसक है; १ तरुभेदे वृक्षभेद—घटे घट का वाची—करीर शब्द ना पुमान् है, ॥ १७५ ॥ १ चमू जघने—सेना के पीछे के भाग को प्रतिसरः, कहते हैं, वह पुमान् है; हस्तसूत्रे—मङ्गल के अर्थ मंत्रों से अभिमंत्रित सूत जो हाथ में बान्धा जाता है उसे अस्त्रीलिङ्ग प्रतिसरः, कहते हैं; यम आदि चतुर्दश अर्थ का वाची हरिः है, तिन में त्रयोदश अर्थ का वाची हरि शब्द नापुमान् है, और कपिलवर्ण का वाची हरि शब्द त्रिलिङ्ग है, १ यमः यमराज—वा इन्द्रियों का निग्रह अनिलः वायू—इन्द्र—चन्द्र—सूर्य्य—विष्णु—सिंह—अंशुः किरण—वाजी घोड़ा—शुकः पक्षी का भेद—अहिः सर्प—बानर—मेंड़क—"लोकान्तर— और हरित वर्ण का वाची भी हरि शब्द है" ॥ १७६ ॥

	(पु) (शुका-हि-कपि-भेकेषु) हरि-(र्ना कपिले त्रिषु)।
१ सिटकी २ खांड़ ३ पत्थर।	(स) शर्करा (कर्पराशे ऽपि)
१ चलना २ देवता का उत्सव।	(स) यात्रा (स्याद्यापने गतौ) ॥ १७७ ॥
१ पृथ्वी २ वाणी ३ सुरा ४ जल।	(स) इरा (भूवाक्सुराप्सु स्यात्)
१ निद्रा २ आलस्य।	(स) तन्द्री (निद्रा-प्रमीलयोः)।
१ दूध पिलावनेवाली २ पृथिव्यादि।	(स) धात्री (स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि) ॥ १७८ ॥
१ हीनाङ्गी २ नट्यादि।	(स) क्षुद्रा (व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका।
१ क्रूर २ अधमादि।	त्रिषु क्रूरे ऽधमे ऽल्पे ऽपि) (पुसन) क्षुद्रौ
परिच्छदादि।	(स) मात्रा (परिच्छदे ॥ १७९ ॥
	(न) अल्पे च परिमाणे सा) मात्रं (कार्त्स्न्ये ऽवधारणे)।
१ चित्र सारी २ आश्चर्य।	(न) (आलेख्या-श्चर्य्ययोश्) चित्रं

१ कर्पराशे मीटकी–वा सिकता–२ वा बालू–३ अपि शब्द से खांड़ का विकार वा चीनी –भूरा–पत्थर–सिटकिहा देश–आदि को भी शर्करा, कहते हैं, "(शर्करा खण्डविकृता वुपला कर्पराशयोः, शर्करान्वितदेशे ऽपि रुग्भेदे शकलेपि चेति मेदिनी)" १ यापन–२ निकलना–३ गति–गमन–इन को यात्रा कहते हैं, "(यात्रा तु यापनोपाये गतौ देवार्च्चनोत्सव इति विश्वः)"; ॥ १७७ ॥ भू आदि चार का वाची इरा शब्द है, १ भू पृथिवी–२ वा स्थान मात्र–वा ३ यज्ञ अग्नि–१ वाक् वाणी–२ वा बोलना–१ सुरा मद्य–१ अप् जल–ये ४ हैं; १ निद्रा की सोना–२ प्रमीला आलस्य–३ वा परिश्रम आदि से सब इन्द्रियों की असामर्थ्य–को तन्द्री, "वा तन्द्रा, और भी तन्द्रिः, कहते हैं"; १ उपमाता दूधपिलाने वाली–२ क्षितिः पृथिवी–३ आमलकी वृक्ष भेद–४ अपि शब्द से जननी–इन को धात्री, कहते हैं, ॥ १७८ ॥ १ व्यंगा–हीनांगी–२ नटी नाचने वाली–३ वा वेश्या वा वारस्त्री ४ सरघा मधु की माछी–५ कण्टकारिका स्वनाम वृक्ष–इन को क्षुद्रा, कहते हैं, "(क्षुद्रा व्याघ्री नटी·व्यंगा वृहती सरघासु च। चांगेरिकायां हिंसायां मक्षिकामात्रवेश्ययोरिति हेमः)" १ क्रूर–हिंसक–२ अधम नीच–३ अल्प न्यून–इन को क्षुद्रः, कहते हैं, यह त्रिलिङ्ग है, "(क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे कनिष्ठे ऽप्यनुत्तमयोरिति हेमः)"; परिच्छद आदि तीन को मात्रा, कहते हैं, और स्त्रीलिङ्ग है, कार्त्स्न्य आदि दो का वाची मात्रं, क्लीब है; ॥ १७९ ॥ परिच्छद में जैसे, महामात्रः, अल्प में जैसे आचमात्रा, परिमाण में जैसे, किं हस्तिमात्रोंकुशः, कार्त्स्न्य में जैसे, जीवमात्रं न हिंस्यात्, अवधारण में तो; पयोमात्रं भुक्ते; आलेख्यं भीति आदि में नानावर्ण लिखना–आश्चर्य्य अद्भुत–वा विस्मय–को चित्रं, कहते हैं, "(चित्रं खे तिलकेऽद्भुते। आलेख्ये कर्बुर इति हेमः)";

१ कटिहांव २ और स्त्री ।	न कलत्रं (श्रोणि-भार्य्ययोः) ॥ १८० ॥
१ दानादि देने के योग्य २ बर्त्तन ।	न (योग्य-भाजनयोः) पात्रं
१ सवारी २ पक्ष ३ पत्ता ४ चिट्ठी ।	न पत्रं (वाहन-पक्षयोः)
१ आज्ञा २ ग्रन्थ ।	न (निदेश-ग्रन्थयोः) शास्त्रं
१ आयुध २ लोह ।	न शस्त्रम् (आयुध-लोहयोः) ॥ १८१ ॥
१ मिले केश-वा वृक्षकी जर २ वस्त्र विशेष ३ आंखि ।	न (स्याज्जटां-शुकयोर्) नेत्रं
१ स्त्री २ देह ३ खेत ४ तीर्थ ।	न क्षेत्रं (पत्नी-शरीरयोः)
१ सूअर और २ हर का मुखाग्र ।	न (मुखाग्रे क्रोड-हलयोः) पोत्रं
१ नाम २ गोत्रादि।	न गोत्रं (तु नाम्नि च) ॥ १८२ ॥
१ वस्त्र २ यज्ञादि ।	न सत्त्रम् (आच्छादने यज्ञे सदादाने वने ऽपि च)
विषयरूप-रसादि।	न अजिरम् (विषये काये ऽप्य)
१ आकाश २वस्त्रादि ।	न ऽम्बरं (व्योम्नि वाससि) ॥ १८३ ॥

१ श्रोणिः कटि—२ वा चूतड़—३ भार्य्या स्त्री—को कलत्रं, कहते हैं, "दुर्गस्थाने नृपादीनां कलत्रं श्रोणिभार्य्ययोरिति रभसः)"; ॥ १८० ॥ १ योग्यः उचित—२ वा निपुण—३ भाजनं—को पात्रं, कहते हैं, "(पात्रं तु भाजने योग्ये पात्रं तीरद्वयान्तरे । पात्रं स्रुवादौ पर्णो च राजमन्त्रिणि चेष्यत इति विश्वः)"; १ वाहन यान—२ हाथी—घोड़ा—रथ आदि—३ पक्षः शुक्ल—कृष्ण—प्रतिपद से लेकर पञ्चदशी अन्त पञ्चदश तिथ्यात्मक काल—४ चिड़ियों का पर—वा (पंख) ५ बाण के पुंख का पांख—इन आदि को—चिट्ठी और पत्ते को भी पत्रं, कहते हैं; १ निदेश आज्ञा—२ ग्रन्थः व्याकरण आदि—को शास्त्रं, कहते हैं; १ आयुध शस्त्र—२ हथिआर—३ वा प्रहारक मात्र—४ लोहः धातुभेद—५ वा लोहा—इन को शस्त्रं, कहते हैं, ॥ १८१ ॥ १ जटा—आपस में मिले जुले केश—२ अंशुक—वस्त्र का भेद—३ वा वस्त्र—आंखि इन को नेत्रं, कहते हैं; "नेत्रं वस्त्र विशेषः स्यादिति मञ्जरी"; १ पत्नी स्त्री—२ शरीर—देह—३ खेत को क्षेत्रं, कहते हैं; १ क्रोड़ शूकर—२ और हल के—मुखाग्र को पोत्रं, कहते हैं, "(पोत्रं वस्त्रे मुखाग्रे च शूकरस्य हलस्य चेति विश्वः)"; १ नाम—२ गोत्र—३ कुल—४ शैल—पर्व्वत को गोत्रं, कहते हैं, "गोत्रं कुलाख्ययोः संभावनीये बोधे च कानन क्षेत्रवर्त्म स्विति मेदिनी)" ॥ १८२ ॥ १ आच्छादन—वस्त्र—२ यज्ञ—देवयज्ञ—३ सदादान—नित्यत्याग—४ वने—वन—वा अरण्य—५ अपि शब्द से छल को भी सत्त्रं, कहते हैं; १ विषय—रूप—रस—आदि—२ काय—देह—३ अपि शब्द से—चौराहा—४ आंगनादि—को अजिरं, कहते हैं, "(अजिरं दर्दुरे काये विषये प्राङ्गणे ऽनिले इति हेमः)"; १ व्योम्नि—आकाश—२ वाससि वस्त्र—इन को अम्बरं, कहते हैं, "अम्बरं वाससि व्योम्नि कार्प्पासे च सुगन्धक इति विश्वः)"; ॥ १८३ ॥

राज्यादि ।	न चक्रं (राष्ट्रे ऽप्य)
मोक्षादि ।	न ऽक्षरं (तु मोक्षे ऽपि)
१ दूध २ पानी ।	न क्षीरम् (अप्सु च) ।
१ सोना २ चन्द्रमा ३ कपूरादि ।	पु पु (स्वर्णे ऽपि) भूरि चन्द्रौ (द्वौ)
१ द्वारमात्र २ नगर-द्वारादि ।	न (द्वारमात्रे ऽपि) गोपुरम् ॥ १८४ ॥
१ गुहा २ दम्भादि ।	न (गुहा-दम्भौ) गह्वरे (द्वे)
१ निर्जनस्थान २ समीप ।	न (रहोऽन्तिकम्) उपह्वरे ।
पुरादि ।	१न (पुरोऽधिकमुपर्य्यं) ऽग्राण्य्
१ घर २ नगर ।	न (अगारे नगरे) पुरम् ॥ १८५ ॥
	न मन्दिरं (च)
१ देश २ उपद्रव ।	पुन (ऽथ) राष्ट्रो (ऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे) ।

१ अग्र.

१ राष्ट्र—राज्य—२ वा जनपद देश—३ अपि शब्द से सेना ४ उपद्रव—५ अस्त्र विशेष—६ चाक—और रथ की पहिया को चक्रं, कहते हैं, "चक्रं प्रहरणे गणे । कुलालाद्युपकरणे राष्ट्रे मन्यरथाङ्गयोः । जनावर्त्तेऽम्भ इति हैमः" १ मोक्ष—आवागमन रहित—२ अपि शब्द से अकारादि वर्ण—३ नाशरहित—४ ब्रह्म वाची न०—५ आकाश—६ धर्म—७ तपस्या—८ मूल कारण—इन को अक्षरः, वा अक्षरं, कहते हैं; १ अप्सु जल २ दुग्ध—को क्षीरं. कहते हैं; १ स्वर्ण सोना—२ वा कञ्चन—का वाची भूरि शब्द और चन्द्र शब्द वाचक हैं, तिनमें बहुत रूप के भेद से स्वर्ण वाची क्लीब है, अपि शब्द से, भूरि शब्द ३ वासुदेव—४ शिव—५ ब्रह्मा—६ इन्द्र—का वाची पुल्लिङ्ग है, और बहुत का वाची त्रि० वा वाच्य लिङ्ग है; २ कपूर—३ इन्द्र—४ कपिल वर्ण—५ सुधांशु—६ सोना—७ वारि ८—सुन्दर—६ हीरा—आदि को चन्द्रः, कहते हैं; १ द्वारमात्र—२ नगरद्वार—३ प्रतीहार—४ कैवर्त्ती मुस्तक—को गोपुरं, कहते हैं, ॥ १८४ ॥ १ गुहा पर्व्वत की गुफा—२ दम्भः शाठ्य—३ वा कपट—को गह्वरं, कहते हैं, "गह्वरस्तु गुहादम्भ निकुंजगहनेष्वपीति विश्वः)"; १ रहः विजन—२ वा एकान्त—३ अन्तिकं समीप—ये दोनों उपह्वरं कहलाते हैं; पुर इस आदि तीन अग्र शब्द वाच्य हैं, इन में पुरः पुरस्तात् जैसे, अग्रगामी, अधिकं जैसे, मार्गं गतं, उपरि जैसे, वृक्षाग्रं; १ अगार—गृह—२ नगरं पुर भेद—इन दोनों को पुरं, और मन्दिरं, कहते हैं, "गृहीपरिग्रहं, यह भरती का मत है"; ॥ १८५ ॥ १ विषयः जनपद और देश—२ उपद्रवः मरण आदि—इन को राष्ट्रः, कहते हैं, यह पुं नपुंसक लिङ्ग है; ।

१ भय २ गड़हा आदि ।	पुन दरो (ऽस्त्रियां भये श्वभ्रे)
१ हीरा २ वज्र ।	पुन वज्रो (ऽस्त्री हीरके पवौ) ॥ १८६ ॥
१ प्रधान २ सिद्धान्तादि ।	न तन्त्रं (प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे) ।
१ चंवर की डांड़ी २ खसखस की टट्टी आदि. १ शयन २ आसन ।	पु औशीर-(श्चामरे दण्डे ऽप्यो) १न शीरं (शयनासने) ॥ १८७ ॥
हाथी के सूंड़ का आगा आदि ।	न पुष्करं (करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ।
	व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्त्थौषधिविशेषयोः) ॥ १८८ ॥
अवकाशादि ।	न अन्तरम् (अवकाशावधिपरिधानान्तर्द्धि भेदतादर्त्थ्ये ।
	छिद्रात्मीयविनावहिरवसरमध्ये ऽन्तरात्मनि च) ॥ १८९ ॥
१ मोथा २ मथानी	न (मुस्ते ऽपि) पिठरं

१ श्री-.

१ भये डर-२श्वभ्रे गड़हा-३ "इषदर्थ" वा अल्प-इन को दरः, वा दरिः, कहते हैं, यह स्त्री लिङ्ग नहीं है; १ हीरक हीरा-२ वा मणि भेद-३ पवि वज्र-इन को वज्रः, कहते हैं, ॥ १८६ ॥ १ प्रधान स्वतन्त्र-२ सिद्धान्त-तान्त्रिक ३ सूत्रवाय जुलाहा ४ परिच्छद वस्त्र -५ शास्त्र-६ कुटुम्ब का कृत्य इन का वाची तन्त्रं शब्द है; १ चामरः चमरी गैया की पुच्छ के पंख का दण्ड अर्त्थात् चवंर का दण्ड-और खसखस की टट्टी-इन को औशीरः, कहते हैं; १ शयन सोना-२ आसन पीठ आदि-इन को औशीरं, कहते हैं, ॥ १८७ ॥ १ करिहस्ताग्रे गजशुण्ड का अग्रभाग-२ वाद्यभाण्ड बाजा के पात्र का मुख-३ जल पानी-४ व्योम्नि आकाश-५ खड्गफले तलवार का मध्य-६ पद्मे कमल-७ तीर्त्थ विशेष पुस्कर-प्रयाग आदि-८ कूट औषधि विशेष इन आठ को पुष्करं, कहते हैं, "(पुष्करं द्वीपतीर्त्थाहि खगराजौपधान्तरे । तूर्य्यास्येऽसिफले काण्डे शुण्डाग्रे खे जलें ऽबुज इति हेमः)" ॥ १८८ ॥ अवकाश आदि त्रयोदश अर्त्थ का वाचक अन्तरं यह शब्द है, १ अवकाश में जैसे, अन्तरे हिमं-२ अवधौ जैसे, मासान्तरे देयं-३ परिधान में जैसे, अन्तरेण शाटकाः परिधानीया इत्यर्त्थः-४ अन्तर्द्धि में जैसे, पर्व्वतान्तरितो रविः-५ भेद में जैसे, यदन्तरं सर्पपशैलराजयोः-६ तादर्त्थ्य में जैसे, त्वदन्तरेण ऋणमेतत् -७ छिद्र में जैसे, परान्तरे प्रहर्त्तव्यं-८ आत्मीय में जैसे, अयमत्यन्तरो मम-९ विनार्त्थ में जैसे, अन्तरेण पुरुपकारमिति-१० बहिर् में जैसे, अन्तरे चाण्डालगृहाः-वाह्या इत्यर्थः-११ अवसर में जैसे, अन्तरङ्गः सेवकः-१२ मध्य में जैसे, आवयोरन्तरे जातः पर्व्वतः-१३ अन्तरात्मा में जैसे, दृष्टान्तरे ज्योतीरूपः-१४ च शब्द से सादृश्य में जैसे, हकारस्य घकारोऽन्तरतमः, ॥ १८९ ॥ १ मुस्ते मुस्तक-वा मोथा-२ अपि शब्द से मथन दंड-वा स्थावर विप का भेद-इन को पिठरं कहते हैं, "वा सुगन्ध द्रव्य"-आदि;

१ राजकशेरु २ नागरमोथा आदि।	न (राजकशेरुण्यपि) नागरम्।
१ बड़ा अन्धकार २ हिंसक।	पुसन शार्व्वरं (त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकः) ॥ १६० ॥
१ अरुण २ सित ३ पीतादि।	पुसन गौरो (ऽरुणे सिते पीते)
१ घाव करने वाला २ भिलावा।	पुसन (व्रणकार्य्ये ऽप्य) ऽरुष्करः।
१ कठिन २ पेट ३ वृद्ध।	पुसन जठरः (कठिने ऽपि स्याद्)
१ नीचे का होठ २ हीन।	पुसन (अधस्तादपि चा) ऽधरः ॥ १६१ ॥
१ स्वस्थ २ एकतान	१पुसन (अनाकुले ऽपि चै) काग्रो
१ दुविधा २ व्याकुल।	पुसन व्यग्रो (व्यासक्त आकुले)।
१ उपरि २ उत्तर दिशा आदि।	२पुसन (उप-र्युदीच्य-श्रेष्ठेष्वप्यु) त्तरः (स्याद्)
१ इन से विपरीत २ श्रेष्ठ।	पुसन अनुत्तरः ॥ १६२ ॥

१ ए–. २ उ–.

१ राजकशेरु जलतृण मूल–२ नागरमोथा ३ सुंठी ४ पण्डित ५ नगरोत्पन्न मनुष्य इन को नागरं, कहते हैं, "नागरं मुस्तके शुंठ्यां विदग्धे नगरोद्भवे इति मेदिनी"; १ अन्धतमस बड़ा अन्धकार–२ घातुक हिंसक को शार्व्वरं, कहते हैं, वह भेद्य अर्थात् वाच्यलिङ्ग है; ॥ १६० ॥ अरुण सन्ध्याराग–२ सूर्य्य–३ सूर्य्य का सारथी–४ सितश्वेत–५ रूपा–६ पीत पीला–७ हरिताल–८ हल्दी का रंग–९ उजला सरसों १० चन्द्रमा ११ कमल की धूलि इन को गौरः, कहते हैं; १ व्रणकार्य्य क्षत–२ घाव करने वाला–इन को अरुष्करः, कहते हैं, सो त्रिलिङ्ग है, "भल्लातक वृक्ष वाची पुमान् है; १ कठिन क्रूर–२ निष्ठुर–३ कठोर–४ अपि शब्द से उदर पेट–५ वृद्ध बूढ़ा–इन को जठरः, कहते हैं; १ अधस्तात् नीचे–२ निचला ओठ वा होठ– ३ हीन को भी अधरः, कहते हैं; ॥ १६१ ॥ १ अनाकुलस्वस्थ–२ वा अव्यग्र–३ अपि शब्द से एकतान–४ एक विषयासक्त चित्त–इन को एकाग्रः, कहते हैं; १ व्यासक्त कार्य्य में लगा हुआ–२ आकुल व्याकुल–को व्यग्रः, कहते हैं, वा अनेक अर्थ में लगे चित्त को भी व्यग्रः, कहते हैं; उपर्यादि तीन को उत्तरः, कहते हैं, और राजसमीप में वादी के किये प्रश्न के शोधक उत्तर वाक्य–२ राजा विराट का पुत्र–३ उत्तर दिशा–४ ऊपर–५ श्रेष्ठ उत्तम–इन को भी उत्तरः, कहते हैं, "(उत्तरं प्रतिवाक्येस्यादूर्ध्वोदीच्योत्तमे ऽन्यवत्। उत्तरस्तु विराटस्य तनये दिशि चोत्तर इति मेदिनी)" इन उपरि आदि के विपरीतता–और श्रेष्ठ को अनुत्तरः कहते हैं, श्रेष्ठ में तो, नहीं है विद्यमान उत्तर श्रेष्ठ जिससे यह अनुत्तरः है; ॥ १६२ ॥

	(एषां विपर्य्यये श्रेष्ठे)
१ दूर २ अनात्मा ३ उत्तम ।	पुसन (दूरा-नात्मो-त्तमाः) पराः ।
१ स्वादु २ मधुर ।	पुसन (स्वादु-प्रियौ तु) मधुरौ
१ कठिन २ निर्द्दय ।	पु क्रूरौ (कठिन-निर्द्दयौ) ॥ १६३ ॥
१ दाता २ महान् ३ दक्षिण ।	पुसन उदारो (दातृ-महतोर्)
१ अन्य २ नीच ।	पुसन इतर-(स्त्वन्य-नीचयोः) ।
१ मन्द २ स्वाधीन ।	पुसन (मन्द-स्वच्छन्दयोः) स्वैरः
१ प्रदीप्त २ शुक्ल ।	पुसन शुभ्रम् (उद्दीप्त-शुक्लयोः) ॥ १६४ ॥
	॥ इति रान्ताः ॥
	॥ द्वाविंशति प्रकरण ॥
१ शिखा २ किरीट ३ बंधे केश ।	१पुसन (चूडाकिरीटं केशाश्च सय्यंता) मौलयस् (त्रयः) ।
१ पीलु वृक्ष २ हाथी ३ बाणादि ।	२पु (द्रुमप्रभेदमातङ्ग काण्डपुष्पाणि) पीलवः ॥ ॥ १६५ ॥

१—लि. २—लु.

१ दूरः इन्द्रियों से अगोचर—२ अनात्मा आत्मा से भिन्न—३ वा देहादि—४ उत्तमः श्रेष्ठ—५ वा उत्तानपादराजपुत्र—इन को परः, वा पराः, कहते हैं, "(परः श्रेष्ठारि दूरान्योत्तरे क्लीवं तु केवल इति मेदिनी)"; १ स्वादु इष्ट—२ वा मनोज्ञ—३ वा मधुररस—४ प्रियभर्त्ता—५ वा पत्नी—६ और रस—को मधुरः, कहते हैं; १ कठिनः कठोर—२ निठुर—३ वा बड़ा—४ निर्द्दय दया रहित—इन को क्रूरः, कहते हैं; ॥ १६३ ॥ १ दाता—२ और महान्—को उदारः, स्त्री॰ उदारा—री कहते हैं, दक्षिण—वा दक्ष—ढीठ—इन को भी उदारः, कहते हैं; १ अन्यः भिन्न २ नीचः पामर—३ वा वामन—इन को इतरः, कहते हैं; १ मन्दः मूर्ख—२ स्वच्छन्दः स्वाधीन—इन को स्वैरः, कहते हैं; १ उद्दीप्त—२ और शुक्ल को—शुभ्रं, कहते हैं "(शुभ्रं स्यादभ्रके क्लीव मुद्दीप्त शुक्लयो स्त्रिष्विति मेदिनी)", ॥ १६४ ॥ १ ॥ इति रान्ताः ॥ १ चूड़ा शिखा—२ किरीटं मुकुट—३ और बंधे केश, ये ३ मौलयः, कहलाते हैं, त्रयः यह मौलि के पुंस्त्व सूचन के लिये कहा, "(मौलिः किरीटे धम्मिल्ले चूड़ायामनपुंसकं । नाऽशो काट्रौ स्त्रियां भूमाविति तु मेदिनी)" १ द्रुमप्रभेदः वृक्ष भेद—२ मातङ्गः हाथी—"काण्डः बाण और पुष्पाणि फूल इन को" पीलुः, वा पीलवः, कहते हैं; ॥ १६५ ॥

१ कृतान्त-यम २ समयादि ।	पु (कृतान्ता-नेहसोः) कालश्च
१ चौथा युग २ कलहादि ।	पु (चतुर्थ्ये ऽपि युगे) कलिः ।
१ मृग २ जल ३ पद्मादि ।	पु (स्यात्कुरङ्गे ऽपि) कमलः
१ दुपट्टा २ नागरा-जादि ।	पु (प्रावारे ऽपि च) कम्बलः ॥ १९६ ॥
१ भेंट २ पूजा सामग्री ३ दैत्यभेद ।	पु (करो-पहारयोः पुंसि) बलिः (प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्) ।
१ मोटाई २ सामर्थ्यादि ।	न (स्थौल्य-सामर्थ्य-सैन्येषु) बलं (ना काक-सीरिणोः) ॥१९७॥
वायु का समूहादि ।	पु वातूलः (पुंसि वात्यायामपि वातसहे त्रिषु) ।
१ शठ २ हिंसक पशु ३ सर्प्यादि ।	त्रुषन (भेद्यलिङ्गः शठे) व्यालः (पुंसि श्वापदसर्प्ययोः) ॥१९८॥

१ काल.

१ कृतान्तः यमराज–२ दैव–३ पाप–४ श्रोर सिद्धान्तज्ञ–५ अनेहाः समय–वा मृत्यु–इन को कालः, कहते हैं. स्त्री॰ काला, वा काली; "(कालोमर्त्ये महाकाले समये यमकृष्णयोरिति मेदिनी)"; १ चतुर्थ्य युग चौथा युग–२ अपि शब्द से कलह–इन को कलिः, कहते हैं, "(कलिः स्त्री॰ कलिकायां नायुराजिकलहे युग इति मेदिनी)"; १ कुरङ्ग लाल मृग–२ वा मृगमात्र–३ अपि शब्द से, "कमलं सलिले ताम्रे जल जे क्लोम्नि भेषजे । क्लोमन् वायुश्रों का मध्यस्थान"–इन को कमलः, वा कमलं, कहते हैं; १ प्रावारः उत्तरीय वस्त्र–२ उपर्ना–३ वा रोम समूह से बना –४ नागराज–५ कृमि–इन को कम्बलः, कहते हैं; ॥ १९६ ॥ १ करः राजदेयभाग–२ वा नज़र –३ उपहारः उपचार–४ वा पूजासामग्री–वा ५ सेवा–इन को बलिः, "श्रोर दैत्यभेद को भी" बलिः,–ली, वा बलिः, कहते हैं, १ प्राण्यङ्गजे प्राणी के त्वचा का संकोच–२ वा त्रिवली को–वलिः, कहते हैं, यह स्त्री लिङ्ग है; १ स्थौल्य मोटापन २ सामर्थ्य शक्ति–३ सैन्य सेना–इन को बलं, कहते हैं, "(बलं गन्धरसे रूपे स्थामनि स्थौल्यसैन्ययोरिति मेदिनी)"; १ काकः कौश्रा–२ हलायुधः बलदेव–को बलः, कहते हैं यह ना–पुं॰ है, "(बलस्तु बलिनि काके दैत्यहलायुध इति हेमः)" ॥ १९७ ॥ १ वात्यायां वायु का समूह–२ वातसहे वातविकार के सहने वाले प्राणी को–वा तूलः, वा वातुलः कहते हैं, "वातूलो वातुलोऽपिस्यादिति द्विरूपको शात्र्ह्रस्व-मध्योपि" श्रोर त्रिलिङ्ग है, शठ अर्थ का वाची व्यालः, वाच्यलिङ्ग है, १ श्वापद हिंसक पशु–२ वा बाघ–३ सर्प्प सांप–४ वा दुष्ट गज–५ "सिंह" इन को भी व्यालः, "स्त्री॰ व्याली"; कहते हैं, ॥ १९८ ॥

१ पाप २ विष्ठा ३ मैल ।	पुन मलो (ऽस्त्री-पाप-विट्-क्ट्टान्य)
१ रोग २ आयुध ।	पुन (ऽस्त्री) शूलं (रुगायुधम्) ।
लोह आदि का दण्डादि ।	पुस (शङ्कावपि द्वयोः) कीलः
१ धार वा कोण २ गोद ३ पांती ।	स स पालिः (स्त्र्यंशश्रङ्कपंक्तिषु) ॥ १९९ ॥
१ शिल्प २ काष्ठादि	कला (शिल्पे कालभेदे ऽप्य)
१ सखी २ आवली वा पंक्ति ।	१स स आली (सख्या-वली अपि) ।
समुद्र की लहरादि ।	(अब्ध्यम्बुविकृतौ) वेला (कालमर्य्यादयोरपि) ॥ २०० ॥
१ कृत्तिका २ गैया आदि ।	स पु बहुलाः (कृत्तिकागावो) बहुलो (ऽग्निः शितौचिषु) ।
१ विलास २ क्रिया ।	स लीला (विलास-क्रिययोर्)
१ पत्थर २ सिकता ३ वा चीनी ।	स उपला (शर्कराऽपि च) ॥ २०१ ॥

१–लि वा–ली

१ पाप, नरक हेतुक कर्म्म–२ विट् विष्ठा–३ किट्ट स्वेद आदि से उत्पन्न मल–इन को मलः, कहते हैं, "और कृपण का वाची विशेष्यलिङ्ग है"; १ रुक् रोग–२ आयुध शस्त्र–को शूलं, कहते हैं, "शूलो ऽस्त्री रोगआयुधे"; १ शङ्कुः लोह आदि मय कील–२ अपि शब्द से ज्वाला को भी–कीलः, कहते हैं, स्त्री॰ कीला भी, "कीलोग्नितेजसि, कफणिस्तम्भयोः शंकावितु हेमः"; १ अश्रिः धार–वा कोण–२ अंकः उत्सङ्ग–वा गोदी–३ पंक्तिः श्रेणी–वा पांती–इन को पालिः, कहते हैं; ॥ १९९ ॥ १ शिल्प–गीत–वाद्य–आदि की निपुणता–२ कालभेदे –तीस काष्ठात्मक काल–इन को कला, कहते हैं; ३ चित्रकला आदि कर्म्म–४ चित्र आदि का कर्त्ता–५ चन्द्रमण्डल का सोड़स भाग–६ दिये धन का अधिक (सूद) लाभ–७ अवयव–८ काल का परिमाण–९ नाव आदि ये अपि शब्द के अर्त्थ हैं, इन को कला, कहते हैं; १ सखी मित्र स्त्री–२ वा सहेली–३ आवलिः पांती–इन को आली, कहते हैं, "आलिर्विशदाशये । त्रिषु स्त्रियां वयस्यायां सेतौ पंक्तौ च कीर्त्तितेति मेदिनी" १ अब्ध्यम्बुविकृतौ समुद्र का जल चन्द्रोदय से बढ़ना–२ काल समय–३ मर्य्यादा सीमा–४ वा न्यायपथ की स्थिति –५ बड़ों के भोजन का समय–इन को बेला, वा वेला कहते हैं, "(वेला काले च जलधेस्तीरनीरविकारयोः । अक्लिष्टमरणे रोगसोम्निवाचि वुधः स्त्रियां । भोक्ने पीश्वराणां स्यादिति विश्वप्रकाशः)" ॥ २०० ॥ कृत्तिकाः तारा के बहुत्व से बहुवचन है–२ गावः धेनु–इन को बहुलाः, वा वहुलाः, कहते हैं, अग्निवाची, बहुलः, पुं॰ है, और सित कृष्ण वर्ण वाची त्रिलिङ्ग है, "(बहुला नीलिकायां स्यादेलायां गवि योषिति । कृत्तिकायां स्त्रियां भूम्नि विहायसि नपुंसकं । पुंस्यग्नौ कृष्णपक्षे च वाच्यवत्प्राज्यकृष्णयोरिति मेदिनी)" १ विलासः स्त्रियों का शृंगारचेष्टा भेद–२ वा चेष्टा विशेष–३ क्रिया–इन को लीला, कहते हैं, "(लीलां विदुः केलिविलासखेला शृंगारभावप्रभवक्रिया स्विति विश्वप्रकाशः)"; १ शर्करा सिकता–२ वा चीनी–३ अश्म पत्थर वाची पुं॰ है, इन को उपला, कहते हैं, "उपलः प्रस्तरे रत्ने शर्करायां स्मृतोपला" ॥ २०१ ॥

१ रुधिर २ पानी ।	(शोणिते ऽम्भसि) कीलालं (सन)
१ प्रथम २ जर ३ मूल नक्षत्रादि ।	मूलम् (आद्ये शिफा-भयोः) । (न)
समूहादि ।	जालं (समूह आनाये गवाक्षक्षारकावपि) ॥ २०२ ॥ (न)
१ स्वभाव २ यश ।	शीलं (स्वभावे सद्वृत्ते) (न)
१ फल २ लाभ ।	(सस्ये हेतुकृते) फलम् । (न)
१ छप्पर २ नेत्ररोग ३ समूह ।	(छदिर्नेत्ररुजोः क्लीवं समूहे) पटलं (न ना) ॥ २०३ ॥ (न)
१ नीचे २ स्वरूप ।	(अधः-स्वरूपयो-रस्त्री) तलं (न)
१ दण्ड के ६० वें भाग २ मांस ।	(स्याच्चामिषे) पलम् । (न)
१ वड़वानल २ नागलोक ।	(और्वानले ऽपि) पातालं (न)
१ वस्त्र २ अधम ।	चेलं (वस्त्रे ऽधमे त्रिषु) ॥ २०४ ॥ (न)
१ कीन से व्याप्त गड़्ढा २ भूसी की आग ।	कुकूलं (शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले) । (न)

१ शोणिते रक्त—२ अम्भसि जल, इन को कीलालं, कहते हैं; आद्ये प्रथम—२ शिफा वृक्ष की जटा—या जड़ ३ भे नक्षत्र विशेष—इन को मूलं, कहते हैं, "१ मूलधन—२ पास—३ या अन्तिक—४ निज, चरण—५ पिप्पलीमूल—६ टीका आदि से व्याख्यान के योग्य ग्रन्थ—७ "दम्भ" "इन को मूलं, कहते हैं"; १ समूहः ढेर—२ आनायः शणसूत्र से वा और सूत से बना रस्सी का समूह—३ गवाक्ष झरोखा—४ क्षारकः कुछ फूली कली—इन को जालं "स्त्री॰ जाली" कहते हैं, १ जैसे तृणजालं, २ जैसे मत्स्य पकड़ने का जाल, आदि; ॥ २०२ ॥ १ स्वभावे प्रकृति—२ सद्वृत्ते अच्छा यश—इन को शीलं, कहते हैं; सस्ये वृक्षादि का फल सस्य है २ हेतु कृते हेतु से सिद्धफल—जैसे याग का फल स्वर्ग—३ बाण के अग्र को भी—फलं, कहते हैं, "फलं हेतु कृते जातीफले फलकसस्ययोः । त्रिफलायां च कक्कोले शस्त्राग्रे व्युष्टिनाभयोरिति हैमः)" १ छर्दिर्नेत्ररुजोः वमन और नेत्र का रोग—२ छदिः घर छावना—इन का वाची पटल शब्द क्लीब है, और समूहार्थकपटलं, या पटला, होता है, न, और ना इस उक्ति से, ॥ २०३ ॥ १ अधः नीचे—जैसे, रसातलं, २ स्वरूप में जैसे, करस्थलं, इन को तलं, कहते हैं, "भूमीतलं भी" १ आमिष—मांस—२ "उन्मान प्रमाण विशेष"—को पलं, कहते हैं; १ और्वानले वाड़वाग्नि —२ और "बिल—" को पातालं, कहते हैं; १ वस्त्रे वस्त्र वाची चेलं क्लीब है, और अधम-वाची—त्रिलिङ्ग है, स्त्री॰ चेली, ॥ २०४ ॥ १ शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे गड़्हा २ खूंटों से भरे बिल को कुकूलं, क्लीब और तुषाग्नि भूसी—या धान की भूसी के अग्नि को कुकूलः, कहते हैं; ।

१ निश्चित २ एक ३ सम्पूर्ण ।	न (निर्णीते) केवलम् (इति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः) ॥ २०५ ॥
१ पूर्णता २ क्षेम ३ पुण्यादि ।	न (पर्य्याप्तिक्षेमपुण्येषु) कुशलं (शिक्षिते त्रिषु) ।
१ अङ्कुर २ वीणा दण्डादि ।	पुन प्रवालम् (अङ्कुरे ऽप्यस्त्री)
१ जड़ २ मोटा ३ निर्बुद्धि ।	पुसन (त्रिषु) स्थूलं (जड़े ऽपि च) ॥ २०६ ॥
१ ऊंचे दांत का २ ऊंचादि ।	पुसन करालो (दन्तुरे तुङ्गे)
१ सुन्दर २ आलस-हीनादि ।	पुसन (चारौ दक्षे च) पेशलः ।
१ मूर्ख-वा मूढ़ २ लड़का आदि ।	पुसन (मूर्खे ऽर्भके ऽपि) बालः (स्यात्)
१ चञ्चल २ तृष्णा सहितादि ।	पुसन लोल-(श्चल-सतृष्णयोः) ॥ २०७ ॥

॥ इति लान्ताः ॥

॥ त्रयोविंशति प्रकरण ॥

१ वन २ वनाग्नि ।	पु पु दव-दावौ (वना-रण्यवह्नौ)
१ जन्म २ शिव ।	पु (जन्म-हरौ) भवौ ।

निर्णीते निश्चय किये जैसे, केवलं मूर्खः, एकस्मिन् एक को जैसे, केवलोयं व्रजति कात्स्न्ये कृत्स्न को जैसे, केवलाभिक्षवः, स्त्रीलिङ्ग में केवली, "केवलः कुहने पुमानिति मेदिनी" ॥ २०५ ॥ १ पर्य्याप्तिः पूर्णता–२ वा प्राप्ति–३ क्षेम लब्ध वस्तु का रक्षण–४ पुण्य शुभ वा अदृष्ट–५ वा धर्म्म–इन को कुशलं, कहते हैं, और शिक्षिते कृताभ्यास–वा निपुण–का वाची कुशलं त्रिलिङ्ग है, जैसे कुशला कुलवधूः; १ अङ्कुर अंखुआ–२ वा अभिनव उद्भिज–३ नया पत्ता–४लाल रंग के मणि का भेद–(मूङा) ५ वीणादण्ड–इन को प्रव्वालं, कहते हैं, वह स्त्रीलिङ्ग नहीं है, "प्रव्वालो ऽस्त्री किसलये वीणादण्डे च विद्रुम इति मेदिनी"; १ पीवर मोटा–अपि शब्द से २ जड़ हिमार्त्त–३ मूक वा मूर्ख–४ बुद्धिहीन–इन को स्थूलं, कहते हैं, और त्रिलिङ्ग है, "स्थूलं कूटे ऽथ निष्प्रज्ञे पीवरे चान्यलिङ्गक इति मेदिनी" ॥ २०६ ॥ १ दंतुर ऊंचे दांत से युक्त–जैसे दंष्ट्रा करालः, २ तुंगे उच्चता युक्त–को भी करालः, कहते हैं, "(करालो दन्तुरे तुङ्गे भीषणे चाभिधेयवत् । ससर्ज्ज रसतैलेना क्लीवं कृष्णकुठेरक इति मेदिनी)"; १ चारु सुन्दर–२ दक्ष आलसहीन–३ वा शिक्षित–इन को पेशलः वा पेसलः, कहते हैं १ मूर्खः मूढ़–२ वा क्रियाहीन–३ अर्भक लड़का वा अल्प–४ वा कृश–वा घोड़ा–हाथी आदि की पूंछ सुगंधवाला–वा बार, इन को बालः, कहते हैं; १ चलः चञ्चल–सतृष्णः तृष्णासहित–इन को लोलः, और भी स्त्री॰–ला कहते हैं, ॥ २०७ ॥ इति लान्ताः ॥ १ वनं कानन–२ अरण्य वह्निः वनाग्नि इन को दवः, और दावः, कहते हैं; १ जन्म उत्पत्ति–२ हरः शिव–इन को भवः, कहते हैं, "(भवः क्षेमे च संसारे सत्तायां प्राप्तिजन्मनोरिति मेदिनी)" ।

१ प्रधान २ सखा ।	(मंत्री सहाय:) सचिवौ[पु]
१ पति २ खयर ३ मनुष्य ।	(पति-शाखि-नरा) धवा:[पु] ॥ २०८ ॥
पर्व्वतादि ।	अवय:[१पु] (शैल-मेषा-र्का)
१ आज्ञा २ पुकारना आदि ।	(आज्ञा-ह्वाना-ध्वरा) हवा:[पु] ।
सत्ता आदि ।	भाव:[पु] (सत्व-स्वभावा-भिप्राय-चेष्टा-त्म-जन्मसु) ॥ २०९ ॥
१ उत्पत्ति २ फलादि ।	(स्यादुत्पादे फले पुष्पे) प्रसवो[पु] (गर्भमोचने) ।
अविश्वासादि ।	(अविश्वासे ऽपह्नवे ऽपि निकृतावपि) निह्नव:[पु] ॥ २१० ॥
ऊपर उठाना आदि ।	(उत्सेकामर्षयोरिच्छा प्रसवे मह) उत्सव:[पु] ।
प्रभावादि ।	अनुभाव:[पु] (प्रभावे स्यात्सतां च मतिनिश्चये) ॥ २११ ॥
जन्म हेत्वादि ।	(स्याज्जन्महेतु:) प्रभव:[पु] (स्थानं चाद्योपलब्धये) ।
शूद्रा में ब्राह्मण से उत्पन्न पुत्रादि ।	(शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे) पारशव:[पु] (पुमान्) ॥ २१२ ॥

१ अवि.

१ मन्त्री प्रधान–२ सहाय: सखा–इन को सचिव:, और सचिवौ, कहते हैं; १ पति: भर्त्ता–२ शाखी वृक्षभेद–३ नर: मनुष्य–इन को धवा:, कहते हैं, "कम्पन को भी, और धवो· धूर्त्ते नरे पत्यौ द्रुमभेद इति हेम:"; ॥ २०८ ॥ १ शैल पर्व्वत–२ मेष: भेंड़ा–३ अर्क्क: सूर्य्य–४ छाग–५ मूषिक कम्बल–६ प्रभु– इन को अवि:, बहुवचन में अवय:, कहते हैं; आज्ञा आदि तीन को हव: कहते हैं, १ आज्ञा हुकुम २ आह्वानं पुकारना–३ अध्वरो यज्ञ:, सत्ता आदि छ को भाव:, कहते हैं, सत्ता में जैसे, घटभाव:,पटभाव:, आत्मा में जैसे, स्वभावं भावयेद्योगी, "और जब सत्व पाठ है उसके अर्थ १ स्वभाव–२ द्रव्य–३ प्राण–४ व्यवसाय-आदि ये हैं",–२ स्वभाव प्रकृति–३ अभिप्राय आशय–४ चेष्टा शरीरव्यापार–५ आत्मा स्वरूप–वा यत्न– देह–मन–धृति बुद्धि–अर्क्क–वन्हि–वायु– जीव· ब्रह्म आदि–६ जन्म उत्पत्ति–"और क्रिया लीला पदार्थेषु विभूति बुध जन्तुषु रति आदि को भी" भाव:, कहते हैं; ॥ २०९ ॥ १ उत्पादे उत्पत्ति–२ फल–३ पुष्प–४ और गर्भमोचने प्रसव–५ पैदाइस–इन को प्रसव:, कहते हैं, "अपत्य को भी प्रसव:", कहते हैं; १ अविश्वासे विश्वासहीन २ अपन्हवे अपलाप–वा वक्रवाद–३ निकृति शठता–इन को निन्हव:, कहते हैं; ॥ २१० ॥ १ उत्सेक: ऊपर उठना– वा सींचनादि २ अमर्ष: कोप–३ इच्छा–प्रसव: उत्पत्ति–"वा इच्छा प्रसरवेग", ४ मह: क्षण–वा आनन्द का वेग–इन को उत्सव: कहते हैं; १ प्रभाव: प्रताप–२ सतां च मतिनिश्चये ज्ञान का निश्चय–३ वा भाव का सूचक–इन को अनुभाव:, कहते हैं; ॥ २११ ॥ १ आद्योपलब्धये यानि ज्ञान का जो स्थान है, और जो जन्म का हेतु है उन को प्रभव:, कहते हैं, "जन्म हेतु पिता आदि, स्थान गंगा प्रभवो हिमवान्, अर्थात् गंगा के ज्ञान का प्रथम स्थान हिमवान् है, उत्पत्ति भी प्रभव: है जैसे, वाल्मीकि: काव्यप्रभव:", शूद्रा में ब्राह्मण से उत्पन्न पुत्र–शस्त्र करता इत्यादि को पारशव:, कहते हैं यह पुल्लिङ्ग है, ॥ २१२ ॥

नक्षत्र भेदादि ।	पु ध्रुवो (भभेदे क्लीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु) ।
१ ज्ञाति २ आत्मा आदि ।	पु पुमन पुन स्वो (ज्ञातावात्मनि) स्वं (त्रिष्वात्मीये) स्वो (ऽस्त्रियांधने) २१३
स्त्री के कमर की वस्त्र गांठादि ।	स (स्त्रीकटीवस्त्रबन्धे ऽपि) नीवी (परिपणे ऽपि च) ।
पार्व्वती आदि ।	स शिवा [गौरी-फेरवयोर्)
१ कलह २ दो आदि	न द्वन्द्वं (कलह-युग्मयोः) ॥ २१४ ॥
१ द्रव्य २ प्राणादि ।	न (द्रव्यासु व्यवसायेषु) सत्त्वम् (अस्त्री तु जन्तुषु) ।
१ नपुंसक २ निर्बलादि ।	न क्लीवं (नपुंसके षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे) ॥ २१५ ॥
	॥ इति वान्ताः ॥

॥ चतुर्व्विंशति प्रकरण ॥

१ वैश्य २ मनुष्य ।	१पु (द्वौ) विशौ (वश्य-मनुजौ)

---

१ श्-.

१ भभेदे नक्षत्र विशेष को, ध्रुवः, पुंसि, २ निश्चते निश्चिय करने का वाची, ध्रुवः, क्लीव है, जैसे ध्रुवं मूर्खः, ३ शाश्वते नित्य का वाची, ध्रुवः, त्रिलिङ्ग है, जैसे जातस्य हि ध्रुवो मत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य चेति, शङ्कु,–महादेव–विष्णु–बरगद–और उत्तानपाद के पुत्रादि का भी नाम है, "(ध्रुवः शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे। वसुयोगभिदोः पुंसि क्लीवं निश्चित-तर्क्कयोरिति मेदिनी)"; ज्ञातौ सगोत्र–२ आत्मनि क्षेत्रज्ञ को स्वः, पुंसि, ३ आत्मीये स्वसम्बन्धी को, स्वं त्रिलिङ्ग है, और धन का वाची स्वः, पुंनपुंसक है, ॥ २१३ ॥ १ स्त्री· कटी वस्त्रबन्धे स्त्री के कमर में जो वस्त्र की गांठ है–२ परिपणे राजपुत्र आदि के धन का विनिमय–(अदल बदल) अपि शब्द से बनियों के मूल धन को भी नीवी वा नीविः कहते हैं; १ गौरी पार्व्वती–२ वा अष्ट वर्ष की कन्या–३ दारु हल्दी–४ गोरोचन–५ भूमि–६ नदीभेद–७ मजीठा–८ श्वेतदूर्वा–९ मल्लिका–१० तुलसी आदि–२ फेरवः शृगाल–३ वा राक्षस–इन को शिवा, कहते हैं, १ कलहः बिवाद–२ वा युद्ध–३ युग्म जोड़ा–४ युगल–५ वा द्वित्वसंयुत–इन को द्वन्द्वं, कहते हैं; ॥ २१४ ॥ द्रव्य वस्तु–२ असुषु प्राण व्यवसाय वीर्य्य की अधिकता–३ जैसे, सत्ववान्, ४ जन्तुषु जीवमात्र–इन को सत्वं–वा सत्त्वं, कहते हैं, १ नपुंसके स्त्री पुरुष से भिन्न–२ षण्ढे तीसरी प्रकृति–इन को क्लीवं, वा क्लीबं कहते हैं और बकारान्त है; १ अविक्रमे–अलस–२ वा सामर्थ्य हीन– को क्लीवं, वह वाच्यलिङ्ग है, ब और व को सावर्ण्य से यहां पाठ है, "(अस्त्री नपुंसके क्लीवं वाच्यलिङ्गमविक्रम इति रुद्रः क्लीबो ऽपौरुषपंढयोरिति हेमः) ॥ २१५ ॥ इति वान्ताः ॥ १ वैश्यः वर्णभेद–२ मनुजः मनुष्य–को विशः, ए·व·विट्, कहते हैं, "(विट् स्मृतौ वैश्यमनुजप्रवेशेषु मनीषिभिरिति विश्वः)";

१ गूढ़ पुरुष २ युद्ध ।	(द्वौ चरा-भिमरौ) स्पशौ (पु) ।
१ समूह २ मेष ।	(द्वौ) राशी (१पु) (पुञ्ज-मेषाद्यौ)
१ कुल २ बांस ।	(द्वौ) वंशौ (पु) (कुल-मस्करौ) ॥ २१६ ॥
१ एकान्त २ प्रकाश	(रहः-प्रकाशौ) वीकाशौ (पु)
१ तनखाह २ भोगादि ।	निर्व्वेशो (पु) (भृति-भोगयोः) ।
यमराजादि ।	(कृतान्ते पुंसि) कीनाशः (पु) (क्षुद्र-कर्षकयोस्त्रिषु) ॥ २१७ ॥
१ पद २ लक्ष्यादि ।	(पदे लक्ष्ये निमित्ते) ऽपदेशः (पु)
पानी आदि ।	(स्यात्) कुशम् (न) (अप्सु च) ।
१ अवस्था २ छोटा आदि ।	दशा (स) (वस्थानेकविधाप्य)
बड़ी आशा आदि ।	आशा (स) (तृष्णापि चायता) ॥ २१८ ॥
१ स्त्री २ हथिनी ।	वशा (स) (स्त्री करिणी च स्याद्)
१ ज्ञान २ दर्शन ३ नेत्र ।	दृग् (त्रि) (ज्ञाने ज्ञातरि चिषु) ।

१-शि. २-ग्.

१ चरः गूढ़ पुरुष-२ वा अपने औ दूसरे राज्य के वृत्तान्त ज्ञान के अर्थ राजाज्ञा से यहां वहां फिरने वाला-दूत-३ प्रणिधि-४ हलकारा आदि २ अभिमर युद्ध वा मरण की अपेक्षा छोड़ कर किया युद्ध का उत्साह-इन को स्पशः, कहते हैं; १ पुञ्जः समूह-२ मेषः पशु भेद वा ३ बकरा-४ आद्य शब्द से वृषभ आदि भी, इन दोनों को राशी, वा राशिः, कहते हैं; १ कुल सजाति समूह-वा गण-२ मस्कर बांस-३ वा सछिद्र बांस ये २ वंशः, कहलाते, हैं "(वंशः संघेन्वये वेणौ पृष्ठाद्यवयवेपि चेति हेमः)" ॥ २१६ ॥ १ रहः विजन-२ वा गोप्य -३ रमण-४ याथात्म्य आदि-२ प्रकाशः आतप-इन को विकाशः वा वीकाशः, कहते हैं; १ भृतिः वेतन-२ वा (तनखाह) ३ भरण-४ पोषण आदि-२ भोगः उपभोग-३ भोजन आदि से उत्पन्न सुखानुभवभोग-४ स्यान-५ वा मूर्छन-इन को निर्व्वेशः, कहते हैं; १ कृतान्तः यम-२ क्षुद्रः कृपण-३ वा छोटा कर्षक खेतीवाला-इन को कीनाशः, कहते हैं "(कीनाशः कर्षकक्षुद्रौ पांशुघातिषु वाच्यवत् । यमेनेति मेदिनी)" ॥ २१७ ॥ १ पदे छल-वा स्थान-पाद-उद्यम-रक्षण-सुप्तिङन्तरूप-प्रदेश-श्लोक पाद आदि-२ लक्ष्ये उद्देश्य-वा शरव्य-वेध-निशाना आदि-३ निमित्त हेतु-वा कारण-इन को अपदेशः, कहते हैं; १ अप्सु जल को कुशं, और रामसुत-और कुशा को, कुशः पुं० कहते हैं, "बैल जोड़ने की रस्सी-और द्वीप-को भी" पु० कुशः, कहते हैं; अनेकविधा बाल्यादि रूप अवस्था, दशा, कहलाती है, अपि शब्द से वस्त्र का किनारा भी, दशाः, है सो स्त्रीलिङ्ग, और बहुवचनान्त है; आयता बड़ी जो तृष्णा अर्थात् लालसा है सो आशा, और दिशा को भी, आशा, कहते हैं; ॥ २१८ ॥ १ स्त्री योषित्-२ और हथिनी, को वशा कहते हैं १ ज्ञाने बुद्धि-२ ज्ञाता और नेत्र को, दृग्, कहते हैं सो त्रिलिङ्ग है; ।

साहसिकादि ।	पुसन (स्यात्) कर्कशः (साहसिकः कठोरा-मसृणावपि) ॥२१६॥
अति प्रसिद्धादि ।	पुसन प्रकाशो (ऽति प्रसिद्धे ऽपि)
१ लड़का २ अज्ञानी	पुसन (शिशावज्ञे च) वालिशः ।

॥ इति शान्ताः ॥

॥ पञ्चविंशति प्रकरण ॥

१ देवता २ मछली।	पु (सुर-मत्स्याव्) अनिमिषौ
१ क्षेत्रज्ञ २ मनुष्य।	पु पुरुषाव् (आत्म-मानवौ) ॥ २२० ॥
१ कौआ २ बगला।	पु (काक-मत्स्यात्खगौ) ध्वांक्षौ
१ तृण-घास २ लता	पु कक्षौ (तु तृण-वीरुधौ)।
१ घोड़े आदि की रस्सी २ किरण।	पु अभीषु: (प्रग्रहे रश्मौ)
१आज्ञाक॰ २ पीड़ा।	पु प्रैषः (प्रेषण-मर्द्दने) ॥ २२१ ॥

१ साहसिकः विवेकरहित, २ वा मिथ्यावादी—३ मनुष्यमारण आदि में रत—४ चोर आदि—५ कठोर कठिन—६ वा पूर्ण—७ असृण जो चिकना न हो—वा दुःस्पर्श—इन को कर्कशः, कहते हैं, ॥ २१६ ॥ १ अतिप्रसिद्धः बड़ा ख्यात—२ अपि शब्द से आतप—इन को प्रकाशः, कहते हैं; १ शिशौ बालक २ अज्ञे मूर्ख—इन को वालिशः, कहते हैं, ॥ इति शान्ताः ॥ १ सुरः देवता—२ मत्स्यः मछली—इन को अनिमिषः, कहते हैं; १ आत्मा परमात्मा—२ मानवः मनुष्य—इन को पुरुषः, कहते हैं, "(पुरुषश्चात्मनि नरे पुन्नागे वेति हेमचन्द्रः)"; ॥ २२० ॥ १ काकः कौआ—वा काग—२ मत्स्यात् बगला—वा क्रौंच—वा खगः पक्षी—ये ध्वांक्षः, कहलाते हैं; १ तृणं घास—पत्ता आदि—२ वीरुध लता वा वेल—इन को, कक्षः, कहते हैं; १ प्रग्रहः अश्व आदि की रस्सी—२ रश्मिः किरण—इन को अभीषुः वा अभीशुः कहते हैं; १ प्रेषणं आज्ञा करना—२ मर्द्दनं पीड़ा इन को प्रैषः, कहते हैं, "प्रैषः प्रेषणपीड़योरिति । प्रैषः स्यात्प्रेषणे क्लेशे मर्द्दनोन्मादयोरिति विश्वः, ॥ २२१ ॥

१ सहाय २ मासार्द्धादि।	पु पक्षः (सहाये ऽप्य्)
१ पगड़ी २ मुकुट।	पुन उष्णीषः (शिरोवेष्ट-किरीटयोः)
१ पेल्हर २ मूसादि।	(शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे) पु वृषः ॥ २२२ ॥
१ कली २ मियानादि।	पुन कोषो (ऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधाने ऽर्त्थौघ-दीव्ययोः।
१ जूआ २ पाशाआदि।	द्यूते ऽक्षे सारिफलके ऽप्य्) पु आकर्षो
१ इन्द्रिय २ तुतिया	(ऽथा) न ऽक्षम् (इन्द्रिये) ॥ २२३ ॥
१ पाशा २ मानभेदादि।	(ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे)।
१ छोटी नदी २ वा नदीमात्र।	पु कर्षू-(र्व्वार्त्ता करीषाग्निः) स कर्षूः (कुल्याभिधायिनी) ॥२२४ ॥

१ सहायः सहचर–२ वा अनुकूल–३ वा समूह–४ अपि शब्द से मास का आधा–५ चिड़ियों का पंख–६ वाण के पुंखस्थ पत्र–७ केशसमूह वा वृन्द–८ बल–९ सखा–१० चूल्हि का मुख–११ पार्श्व वा पाखड़ी–१२ खग–१३ समूह–१४ राजकुंजर–आदि को पक्षः, कहते हैं; १ शिरोवेष्टः वस्त्र का बनाया शिर के बान्धने का वस्त्र विशेष–२ किरीटं मुकुट–इन को उष्णीषः; (वा पगड़ी) कहते हैं; शुक्ले अण्डकोश–२ मूषिके मूस–वा चूहा –३ श्रेष्ठे पूज्य–वा नृप–४ सुकृते धर्म–५ वृषभे बैल–वा श्रेष्ठ–इन को वृषः, कहते हैं "वृषो गव्याखुधर्मयोः, ॥ २२२ ॥ १ कुड्मले फूलोन्मुख कली–२ खड्गपिधाने खड्गकोष–(मियान) ३ अर्त्थौघ धन समूह–४ दिव्य स्वर्गीय पदार्त्थ–५ सोना रूपा–६ पात्र यान–७ शब्दसंग्रह ग्रन्थ–वा डिक्शनरी–८ अण्डकोश–९ योनि–१० गुप्तगेह–११ हिरण्यादि स्थापन गृह–इन आदि को कोशः, वा कोषः, कहते हैं; १ द्यूते जूआ–२ अक्षे पाशा–३ शारिफलके शारों का बना जूआ खेलने का सामान–४ धन्वियों के धनु का अभ्यास–५ इन्द्रिय–६ द्यूत–७ खलिहान में धान्य के बटोरने का पदार्त्थ–(वा पांचा) ८ निकषे उपले वा कसौटी–९ आधार–इन को आकर्षः, कहते हैं, इन्द्रिय का वाची, अक्षं, क्लीब है, "अक्षं सौवर्च्चले तुत्थे हृषीके इति हैमः" ॥ २२३ ॥ द्यूताङ्गे पाशा २ कर्षे मानभेद–३ चक्रे रथ का अवयव–(वा पहिया)–४ व्यवहारे अर्त्थ विषयक कृत्य–वा देन लेन–कलिद्रुमे बहेरा–६ वार्त्ता जीविका–७ करीषाग्निः उपले की आग–इन को कर्षूः, कहते हैं, और कुल्याभिधायिनी छोटी नदी–वा नदीमात्र को कर्षूः, कहते हैं; ॥ २२४ ॥

१ पुरुष का भाव २ उस्का कर्म्म ।	न (पुम्भावे तत् क्रियायां च) पौरुषं
१ जल २ माहुर ।	न विषम् (अप्सु च) ।
उपादानादि ।	पुन (उपादाने ऽप्य्) आमिषं (स्याद्)
१ पाप २ रोग ।	न (अपराधे ऽपि) किल्विषम् ॥ २२५ ॥
वृष्टि आदि ।	पुन (स्याद्वृष्टौ लोकधात्त्वंशे वत्सरे) वर्षम् (अस्त्रियाम्) ।
नृत्य का देखनादि	स प्रेक्षा (नृत्येक्षणं प्रज्ञा)
सेवा आदि ।	स भिक्षा (सेवा ऽर्त्थना भृतिः) ॥ २२६ ॥
शोभा आदि ।	१स त्विट् (शोभा ऽपि)
	(त्रिषु परे)
सम्पूर्णादि ।	पुसन न्यक्षं (कार्त्स्न्य-निकृष्टयोः) ।
साक्षात्प्रमाण क्रतादि ।	पुसन (प्रत्यक्षे ऽधिकृते) ऽध्यक्षो
अप्रेमादि ।	पुसन रुक्ष-(स्त्व प्रेम्ण्य चिक्कणे) ॥ २२७ ॥
	॥ इति षान्ताः ॥

१–प्र.

१ पुंभावे पुरुष का भाव २ और तत् क्रियायां पुरुष के कर्म्म को पौरुषं, कहते हैं; १ अप्सु जल–२ च शब्द से गरल को भी, विषं, कहते हैं; १ उपादाने उत्कोच वा ग्रहण करना–२ वा (घूस लेना) इस को आमिषं, और मांस–भोग्य वस्तु को भोग–को भी आमिषं, कहते हैं; १ अपराध अकार्य्य आदि करण रूप दोष–२ अपि शब्द से पाप, और रोग को भी किल्विषं, कहते हैं; ॥ २२५ ॥ वृष्टौ मेघ का वर्षण–२ लोकधात्त्वंशे (लोकं धत्ते लोकधातुर्जम्बुद्वीपः) लोक का धारण करने वाला जम्बुद्वीप का अंश भारत वर्ष आदि–खण्ड–३ वत्सरे अब्द–इन को वर्षं, और भी मेघ के वर्षा को स्त्री॰ ब॰ व॰ वर्षाः, कहते हैं; १ नृत्येक्षणं नाच का देखना–२ प्रज्ञा बुद्धिः, इन को प्रेक्षा, कहते हैं, "प्रेक्षा धीरीक्षणं नृतमिति हैमादीक्षणं नृत्यं चेति पृथक् पद भी है" सेवा आराधन–२ वा भजन–३ उपभोग–४ आश्रयण–आदि–५ अर्त्थना याञ्चा–वा मांगना–६ भृतिः वेतन वा मजूरी–७ वा भरण–पोषण–इन को भिक्षा, कहते हैं, ॥ २२६ ॥ १ शोभा छबि–२ अपि शब्द से कान्ति– वाक्–रुचि–को त्विट्, कहते हैं; इस के परे वक्ष्यमाण तीन शब्द त्रिलिङ्ग वा वाच्यलिङ्ग हैं; १ कार्त्स्न्यसाकल्य–वा सम्पूर्ण–२ निकृष्टः अधम–३ परशुराम को भी न्यक्षः, कहते हैं, "नियतानि अक्षाणि हृषीकाणीन्द्रियाणि यस्य सः न्यक्षः" १ प्रत्यक्षे साक्षात्प्रमाणकृत–२ अधिकृते नियुक्त–को अध्यक्षः, कहते हैं, "अधिकृतानि अक्षाण्यस्याध्यक्षः" १ अप्रेम्णिस्नेहाभाव–वा प्रेमरहित–२ अचिक्कणे चिकना नहीं–वा अस्निग्ध–को रुक्षः, कहते हैं; ॥ २२७ ॥ ॥ इति षान्ताः ॥

॥ षड्विंशति प्रकरण ॥

१ सूर्य्य २ उजले पंखवाले ब्रह्मा के वाहन ।	(रवि-श्वेतच्छदौ) हंसौ [पु]
१ सूर्य्य २ अग्नि ।	(सूर्य्य-वह्नी) विभावसू । [१पु]
१ बछड़ा २ वर्ष ।	वत्सौ [पु] (तर्णक-वर्षौ द्वौ)
१ चातक २ देवता	(सारङ्गाश्च) दिवौकसः [२पु] ॥ २२८ ॥
शृङ्गार-वीरादि ।	(शृङ्गारादौ विषे वीर्य्ये गुणेरागे द्रवे) रसः [पु] ।
१ कर्णफूल २ शिरोभूषणादि ।	(पुंस्य) उत्तंसा-ऽवतंसौ [पुन] [पुन] (द्वौ कर्णपूरे ऽपि शेखरे) ॥ २२९ ॥
देवभेदादि ।	(देवभेदे ऽनले रश्मौ) वसू [३पु] (रत्ने धने) वसु [न] ।

१-सु. २-स. ३-सु.

१ रविः सूर्य्य-२ श्वेतच्छदः सफ़ेद परवाला-इन को हंसः, कहते हैं, "हंसः स्यान्मानसौकसि" १ सूर्य्यः दिवाकर-२ वा अर्क्कवृक्ष-(मंदार) ३ वा दानवभेद-२ वह्निः अग्नि-इनको विभावसुः, कहते हैं; १ तर्णकः गैया का बछड़ा-२ वर्ष बरस-इन को वत्सः, कहते हैं, "और पुत्र आदि भी वत्सः, हैं"; १ सारंगाः चातक पक्षी-२ च शब्द से देवाः, ये २ दिवौकसः, "दिवौकाः वा दिवोकाः", कहलाते हैं; ॥ २२८ ॥ १ शृङ्गारादि शृंगार-वीर-करुणा-आदि २ विषे नव प्रकार का गरल-३ वीर्य्ये तेज-वा प्रताप-४ गुणे स्वादु-अम्ल-कटु-आदि-५ रागे प्रीति-वा अनुराग-६ द्रवे द्रवरस-वा वेग-इन को रसः, कहते हैं, रागे जैसे, रसिको युवा "रसो गन्धरसे जले, शृंगारादौ विषे वीर्य्ये तिक्तादौ द्रवरागयोः । देहधातुप्रभेदे च पारदस्वादयोः पुमानिति मेदिनी"; उत्तंस और अवतंस-"वा वतंस" सान्त ये २ क़ान का भूषण विशेष और केश-वा पगड़ी आदि-"वा शिरोभूषण"-के नाम हैं; ॥ २२९ ॥ देवभेदे जैसे, अष्टौवसवः, २ अनले "नास्ति वसुः पर्य्याप्तिर्य्यस्य, बहुदाह्य दहने ऽपि तृप्तेरभावात्" वह्निः-आठ वसुओं के मध्य पांचवां वसु-कृत्तिका नक्षत्र-रश्मौ किरण-वा घोड़े की रस्सी-वा पट्टा-इन को वसुः, कहते हैं; १ रत्न माणिक्य-आदि पत्थर-आदि-२ धन द्रव्य मात्र-को वसु, कहते हैं. और यह क्लीब है; ॥

१ विष्णु २ ब्रह्मा आदि ।	(विष्णौ च) वेधाः [१पु]
हितकी चाहना आदि।	(स्त्रीत्वा) शी-(र्हिताशंसा-ऽहिदंष्ट्रयोः) ॥ २३० ॥ [२स]
१ प्रार्त्थना २ बड़ी चाहना आदि ।	लालसे (प्रार्त्थनौत्सुक्ये) [३स]
१ चोरी २बधादि।	हिंसा (चौर्य्यादिकर्म्मे च) । [स]
१ घोड़ी २ मा ।	प्रसू-(रश्वापि) [स]
१ भूमि २ स्वर्ग ।	(भूद्यावौ) रोदस्यौ रोदसी (च ते) ॥ २३१ ॥ [४स] [५न]
१ ज्वाला २प्रकाश।	(ज्वाला-भासोर्नपुंस्य) ऽर्चिर् [६सन]
१ नक्षत्र २ प्रकाश ३ दृष्टि ।	ज्योतिर् (भ-द्योत-दृष्टिषु) । [७न]
१ पाप २ अपराध ।	(पापा-पराधयोर्) आगः [८न]
१खग २ अवस्था का भेद ।	(खग-बाल्यादिनोर्) वयः ॥ २३२ ॥ [९न]
१ तेज २ विष्ठा ३ बुध ।	(तेजः पुरीषयोर्) वर्च्चो [१०न]
१ उत्सव २ तेज ।	महस् (तूत्सव-तेजसोः) । [न]
१ गुण २ स्त्रीपुष्प ।	रजो (गुणे स्त्रीपुष्पे च) [११न]

१-स्. २ आशीस्. ३-सा. ४-सी. ५-स्. ६-स्. ७-स्. ८-स्. ९-स्. १०-स्. ११-स्.

१ विष्णुः विष्णुभगवान्-वा व्यापक परमेश्वर-२ च शब्द से विरंचि-और बुद्धिमान् को वेधाः, कहते हैं, "वेधा धातृज्ञविष्णुष्विति हैमः"; हिता शंसाहित की चाहना -२ अहेः सर्प्प की दंष्ट्रा दांत-को सान्त आशीः, कहते हैं, यह स्त्रीलिङ्ग है; ॥ २३० ॥ १ प्रार्त्थना मांगना-२ औत्सुक्यं बड़ी चाहना-को लालसा, कहते हैं, "बड़ी तृष्णा को भी लालसा" लालसौत्क्य तृष्णातिरेकयाञ्चासु च द्वयोरिति मेदिनी"; १ चौर्य्य आदि कर्म्म-परद्रव्य का अपहरण-२ च शब्द से वध-आदि पद से वृत्तिनाशादि कर्म्म-इन को हिंसा कहते हैं; १ अश्वा बड़वा-वा घोड़ी-२ जननी मा को भी प्रसूः, कहते हैं; १ रोदसी ए॰ व॰ रोदः और रोदस्यौ-ये सान्त और द्विवचनान्त एक उक्ति से भूमि औ द्यावौ दो भी कहे जाते हैं, पृथक् प्रयोग भी नहीं है, जैसा कहा है, रोदश्च रोदसी चापि दिवि भूमौ पृथक् पृथक् । सहप्रयोगे ऽनयो रोदस्यावपि रोदसी इति ॥ "रोदसी यह अव्यय भी है, जैसा कहा है, द्यावापृथिव्यो रोदस्यौ रोदसी रोदसीति चेति" ॥ २३१ ॥ १ ज्वाला अग्नि आदि का जलना-२ भास दीप्ति वा प्रकाश-को अर्च्चिः, कहते हैं; १ भ नक्षत्र-२ द्योतः प्रकाश-३ दृष्टिः कनीनिका का मध्यभाग-इन को ज्योतिः कहते हैं, "अग्नौ दिवाकरे च ज्योतिः पुंसि" १ पाप २ और अपराध को आगः, कहते हैं, १ खगः पक्षी-२ बाल्य अवस्था का भेद-३ आदि पद से यौवन आदि को-वयः, कहते हैं, ॥ २३२ ॥ १ तेजः सूर्य्य आदि-२ पुरीषः विष्ठा-को वर्च्चः, कहते हैं, १ उत्सवः आनन्द जनक व्यापार विवाह आदि-२ तेजः सूर्य्य आदि-को महः, कहते हैं, १ गुणे गुण के भेद-२ स्त्रीपुष्पे ऋतु-३ च शब्द से रेणु धूलि और फूल का पराग-इन को रजः, कहते हैं, अदन्त भी यह है, रजोयं रजसा सार्द्धं स्त्रीपुष्पगुणधूलिष्वित्यजयः";

१ राहु २ अंधेरा ३ गुण ।	(राहौ ध्वान्ते गुणे) तमः[न] ॥ २३३ ॥
१ पद्य २ इच्छा ।	छन्दः[न] (पद्ये ऽभिलाषे च)
१ कृच्छ्रसान्तपनादि २ व्रतादि ।	तपः[न] (कृच्छ्रादि कर्म्म च) ।
१ बल २ अगहन ।	सहो[१न] (बलं) सहा[१पु] (मार्गे)
१ आकाश २ सावन।	नभः[२न] (खं श्रावणे) नभाः[२पु] ॥ २३४ ॥
१ घर २ आश्रय ।	ओकः[न] (सद्माश्रयश्चौ) काः[३पु]
१ दूध २ पानी ।	पयः[न] (क्षीरं) पयो[न] (ऽम्बु च) ।
१ दीप्ति २ बल ।	ओजो[न] (दीप्तौ बले)
१ इन्द्रिय २ नदी का वेग ।	स्रोत[४न]-(इन्द्रिये निम्नगारये) ॥ २३५ ॥
१ प्रभाव २ दीप्ति ३ बलादि ।	तेजः[न] (प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रे ऽप्य)
	(ऽत स्त्रिषु) ।

१-स. २-स. ३ ओकस्. ४-स.

१ राहौ राहुग्रहभेद-२ ध्वान्त महा अन्धकार-३ गुणे सत्त्व आदि त्रय-"पाप और शोक- को भी तमः, कहते हैं"; ॥ २३३ ॥ १ पद्ये गायत्र्यादिवृत्त-२ अभिलाषे इच्छा-को छन्दः, या छन्दं (-न्द) कहते हैं, "(छन्दः पद्ये ऽभिलाषे च स्वैराचाराभिलाषयोरिति मेदिनी)"; १ कृच्छ्रं सांतपन आदि व्रत-२ आदि पद से चान्द्रायण आदि व्रत-३ लोकान्तर "और धर्म्म को भी" तपः, या तपाः (-स्) कहते हैं; बलं को सहः, (-स्) या सहं (ह), और मार्गं मार्गशीर्ष को, सहाः (स्) या सहः (ह) कहते हैं; १ खं आकाश-को नभः, क्लीव और श्रावणे सावन मास का वाची, नभाः पुल्लिङ्ग है; ॥ २३४ ॥ सद्म गृह को ओकः, या ओकं कहते हैं, और आश्रयः आश्रयमात्र को, ओकाः, "ओकास्त्वाश्रयमात्रे स्यादिति हैमः", १ क्षीरं दूध को, पयः २ और अम्बु जल-को पयः, कहते हैं, १ दीप्तिः प्रकाश-और २ बलं सामर्थ्य-को ओजः, या ओजं कहते हैं, १ इन्द्रिय और नदी के वेग को, स्रोतः, या स्रोतं कहते हैं, ॥ २३५ ॥ १ प्रभावः प्रताप-२ दीप्तिः प्रकाश-३ बलं सामर्थ्य-४ शुक्रे वीर्य्य-या पराक्रम-इन को तेजः, कहते हैं, "तेजोऽस्त्रियां रेतसि वीर्ये । नवनीते प्रभावेनाग्नियिति हैमः"; इस के उपरान्त सान्त वर्ग समाप्ति-पर्य्यन्त वक्ष्यमाण शब्द वाच्यलिङ्ग, अर्थात् त्रिलिङ्ग हैं; ।

१ विज्ञ २ आत्मज्ञानी।	१पुसन विद्वान् (विदंश्च)
१ क्रूर २ रसभेद।	पुसन बीभत्सो (हिंस्रो ऽप्य्)
	(अतिशये त्वमी) ॥ २३६ ॥
अतिशय वृद्ध वा स्तुति के योग्य।	२पुसन (वृद्ध-प्रशस्ययोर्) ज्यायान्
अतिशय युवा और अल्प।	३पुसन कनीयांस्तु (युवा-ल्पयोः)।
अतिशय महान् और श्रेष्ठ।	४पुसन वरीयां (स्तूरु-वरयोः)
अतिशय साधु और बाढ़।	५पुसन साधीयान् (साधु-वाढयोः) ॥ २३७ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

॥ सप्तविंशति प्रकरण ॥

१ पत्ता २ मोर का पुच्छ।	पुन (दले ऽपि) बर्हं
निबंधादि।	पु (निर्बन्धो-परागा-र्क्कादयो) ग्रहाः।

१ विद्वस्. २ ज्यायस्. ३-यस्. ४-यस्. ५-यस्.

१ विदन् ज्ञाता-२ चकार से प्राज्ञ-३ पण्डित और आत्मज्ञ-को भी विद्वान्,कहते हैं, "(विद्वानात्मविदिप्राज्ञे चाभिधेयवत् इति विश्वः)"; १ हिंस्रे क्रूर-२ अपि शब्द से रस के भेद को भी, बीभत्सः, "स्त्री॰ बीभत्सा" कहते हैं, "(बीभत्सो विकृते क्रूरे रसे पार्थे घृणात्मनीति हैमः)"; ये वक्ष्यमाण ज्याय आदि और साधीयः पर्य्यन्त-सान्त वृद्ध आदिकों के और बाढ़ पर्य्यन्तों के अतिशयार्थ में जानने चाहिये; ॥ २३६ ॥ १ अतिशय से वृद्ध २ औ स्तुति के योग्य को, ज्यायान्, स्त्री॰ ज्यायसी, कहते हैं; १ अतिशय से युवा और २ अल्प को, कनीयान्, स्त्री॰ कनीयसी, कहते हैं; १ उरुः महान्-२ वरः श्रेष्ठ-इन के अतिशय को, वरीयान्, स्त्री॰ वरीयसी कहते हैं, १ अतिशय से साधुः, साधीयान्, स्त्री॰ साधीयसी और अतिशयित बाढ़ को भी, साधीयः, कहते हैं; ॥ २३७ ॥ इति सान्ताः ॥ १ दले पत्ता-२ अपि शब्द से मोर की पूंछ को-बर्हं, कहते हैं, "बर्हं पर्णे परीवारे कलापे इति हैमः" १ निर्बन्धः आग्रह विशेष-वा ज़िद्द-२ उपरागः सूर्य्य और चन्द्रग्रहण-३ अर्क्कादि सूर्य्यादि, ये ३ ग्रहाः, कहलाते हैं, "(ग्रहो निग्रहनिर्बन्धग्रहणेषु रणोद्यमे। सूर्य्यादौ पूतनादौ च सैंहिकेयोपरागयोः)";।

१ द्वार २ मस्तक भूषणादि ।	(द्वार्य्यापीडे क्वाथरसे) नि-[पु]र्व्यूहो (नागदन्तके) ॥ २३८ ॥
तुलासूत्रादि ।	(तुलासूत्रे ऽश्वादिरश्मौ) प्रग्राहः[पु] प्रग्रहो[पु] (ऽपि च) ।
१ स्त्री २ परिवारादि ।	(पत्नी-परिजना-दान-मूल-शापाः) परिग्रहाः[पु] ॥ २३९ ॥
१ स्त्री २ मन्दिरादि ।	(दारेष्वपि) गृहाः[पु]
श्रेष्ठ स्त्री की कमरादि	(श्रोण्यामप्या) रोहो[१पु] (वरस्त्रियाः) ।
१ समूह २ सेना का विन्यासादि ।	व्यूहो[पु] (वृन्दे ऽप्य्)
१ वृत्रासुर २ सर्प्प ।	अहि-[पु](र्वृत्रे ऽप्य्)
१ अग्नि २ चन्द्र ३ सूर्य्य ।	(अग्नीन्द्वर्क्कास्) तमोपहाः[पु] ॥ २४० ॥
१ परिच्छद २ राजयोग्य वस्तु ।	(परिच्छदे नृपार्हे ऽर्थे) परिबर्हो[पु]
	(ऽव्ययाः परे) ॥ २४१ ॥

॥ इति हान्ताः ॥

---

१ आ–.

१ द्वारि द्वार–२ आपीड़े शिरोभूषण–३ क्वाथरसे काढ़ा का रस–नागदन्त के घर आदि की भीति में गड़ी कीलद्वय वा खूंटी को–निर्व्यूहः, कहते हैं ; ॥ २३८ ॥ तुलासूत्रे हाथ से पकड़कर तराजू में जो तोला जाता है वह तुलासूत्र है–२ अश्व और बैल आदि की रस्सी को, प्रग्राहः, और प्रग्रहः, कहते हैं, "प्रग्राहः स्यात्तुलासूत्रे वृषादीनां च बन्धने। प्रग्रहः किरणे भुजे, तुलासूत्रेश्वादिरश्मौ सुवर्णे हरिपादपे । बन्धे बन्द्यामिति हैमः"; १ पत्नी स्त्री–२ परिजनः परिवार–३ आदानं स्वीकार–वा ग्रहण–४ मूल–मूलधन का स्वीकार और शाप इन को, परिग्रहः, कहते हैं, "(परिग्रहः कलत्रे च मूलस्वीकारयोरपि । शपथे परिवारे च राहु, चक्रस्य भास्कर इत्य जयः)" ॥ २३९ ॥ दारेषु पत्नी–२ अपि शब्द से सदम गृह को–गृहाः पुं और बहुवचनांत है; जो वर उत्तम स्त्री हैउस की श्रोण्यां कटी को, आरोहः कहते हैं ; जैसे वरारोहा, अपि शब्द से अवरोहः गजारोह को भी, कहते हैं, "(आरोहो दैर्घ्यउच्छ्राये स्त्रीकट्यां मानभिद्यपि । आरोहणे गजारोहे इति हेमचन्द्रः)" ; १ वृन्द समूह–२ अपि शब्द से सेना का रीति विशेष से ठहराना–इन को व्यूहः, कहते हैं ; १ वृत्रे वृत्रासुर–२ सर्प्प–को अहिः, कहते हैं ; १ अग्निः आग–२ इन्दुः चन्द्रमा–३ अर्कः सूर्य्य–इन को तमोपहाः, कहते हैं, "जिन को भी तमोपहः" ॥ २४० ॥ नृपार्हेर्थे राजा के योग्य द्रव्यसितछत्र आदि परिच्छद–वस्त्राभूषण–वा परिवार–वा हाथी –अश्व–रथ आदि–वा पैदल–इन को परिबर्हः, कहते हैं ; अब अव्यय का बखान करते हैं ; इस के परे ये वक्ष्यमाण आङ आदि शब्द हैं वे अव्यय कहलाते हैं, अव्यय के लक्षण ये हैं ; जो कि तीनों लिङ्ग सातों विभक्ति–एकवचन–द्विवचन–और बहुवचन में समान बने रहते हैं, और उन में कुछ विकार नहीं होता, जैसा कहा है कि सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्व्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्व्वेषु यन्नव्येति तदव्ययमिति, उन का यहां हान्त वर्गों में कहना पूर्व्व के सदृश नानार्थत्व बोधनार्थक हैं, ॥ इति हान्ताः ॥

॥ अष्टाविंशति प्रकरण ॥

१ अल्प २ अभिव्याप्ति ३ सीमार्त्थ ४ धातुयोगज।	आङ् (ईषदर्त्थे ऽभिव्याप्तौ सीमार्त्थे धातुयोगजे) ।
१ स्मरण २ वाक्यपूरण।	आ (प्रगृह्य: स्मृतौ वाक्ये ऽप्य्)
१ कोप २ पीड़ा।	आस् (तु स्यात्कोप-पीडयो:) ॥ १ ॥
१ पाप २ निन्दा ३ थोड़ा।	(पापकुत्सेषदर्त्थे) कु
१ धिक्कार २ निन्दा	धिङ्[1] (निर्भत्सन-निन्दयो:) ।
अन्वाचयादि।	चा[2] (ऽन्वाचये समाहारेतरेतरसमुच्चये) ॥ २ ॥
आशीर्वादादि।	स्वस्त्या[3] (शी: क्षेम-पुण्यादौ)

१ धिक्. २ च. ३ स्वस्ति.

आङ् यह अव्यय इषदर्त्थ आदि चार अर्त्थ का वाची है, इषदर्त्थ में जैसे, आपिङ्गल इषत्पिङ्गल इत्यर्त्थः, अभिव्याप्तौ अर्त्थात् सम्पूर्ण व्याप्त जैसे, आसत्यलोकात्–आपातालात्, सीमार्त्थे सीमा के अर्त्थ में–आसमुद्रं राजदण्डः, धातुयोगजे क्रियायोगजे ऽर्त्थे–क्रियायोगज में जैसे, आहरेति, "आक्रामतीत्यादि", जो प्रगृह्य संज्ञक आ यह निपात है, वह स्मरण और वाक्य पूर्णार्त्थ में कहा गया है, प्रगृह्य तो अचि परे नित्य ही प्रकृतिभाव से रहता है, तहां स्मृति में जैसे, आ एवं किल तत्, वाक्य में तो, आ एवं मन्यसे, "(आ प्रगृह्य स्मृतौ वाक्ये ऽनुकम्पायां समुच्चय इति मेदिनी)"; स विसर्ग आ यह जो निपात है वह पीड़ा, और कोप अर्त्थ में विद्यमान है, तिन में पीड़ा अर्त्थ में जैसे, आः शीतं, कोप में जैसे, आः पाप किं विकत्थसे, "आस्मरणे ऽपाकरणे कोपसन्तापयोरप्रीति कोशान्तरम्"; ॥ १ ॥ पाप आदि अर्त्थ त्रय का वाची कु शब्द है, पाप में, जैसे, कुकर्म–कुत्सा में जैसे, कापथः, इषदर्त्थ में जैसे, कवोष्णं, अपकार के शब्दों से भय उत्पन्न करना निर्भत्सन है–दोष का कथन मात्र निन्दा है, निर्भत्सन में जैसे, धिक्त्वां ताड़नार्हमनध्ययनशीलं, निन्दा में जैसे, धिक् परस्त्रीगामिनं पुरुषं; अन्वाचय आदि चार अर्त्थ का वाचक च शब्द है, दो में से एक का अनुषङ्ग से अन्वय अन्वाचय है, तहां जैसे, भिक्षामट गां चानय, समाहारः समूह–तहां जैसे, संज्ञा च परिभाषां च संज्ञापरिभाषं, मिले हुयों का अन्वय इतरेतर योग है, जैसे, धवश्च खदिरश्च धवखदिरौ परस्पर निरपेक्ष का और अनेक का एक में अन्वय समुच्चय है, तहां जैसे, ईश्वरं गुरुं च भजस्वेति, ॥ २ ॥ आशीः आशीर्व्वाद–तहां जैसे, स्वस्ति ते भूयात्; क्षेम निरुपद्रव, तहां जैसे, स्वस्ति गच्छ, पुण्य में जैसे, स्वस्तिमान् स्वर्गमश्नुते, आदिना "(स्वस्तिस्यान्मंगले पुण्येप्याशंसायामपि क्वचिदिति मेदिनी)";

१ प्रकर्ष २ लंघन।	(प्रकर्षे लंघने ऽप्य) ऽति।
१ प्रश्न २ वितर्क्क।	स्वित् (प्रश्ने च वितर्क्के च)
१ भेद २ अवधारण	तु (स्याद्भेदे ऽवधारणे) ॥ ३ ॥
१ साथ २ एकवार।	सकृत् (सहैकवारे स्याद्)
१ दूर २ समीप।	[१] आराद् (दूर-समीपयोः)।
१ पश्चिम दिशा २ अन्त।	[२] (प्रतीच्यां चरमे) पश्चाद्
१ समुच्चय २ विकल्प	[३] उता (प्यर्थे-विकल्पयोः) ॥ ४ ॥
१ वारंवार २ सहार्त्य वा साथ।	(पुनः सदार्त्थयोः) शश्वत्
१ प्रत्यक्ष २ तुल्य।	साक्षात् (प्रत्यक्ष-तुल्ययोः)।
१ खेद २ दया आदि	(खेदानुकम्पासन्तोषविस्मया मन्त्रणे) वत ॥ ५ ॥
१ हर्ष २ दया आदि	हन्त (हर्षे ऽनुकम्पायां वाक्यारम्भ-विषादयोः)।
प्रतिनिधि आदि।	प्रति (प्रतिनिधौ वीप्सा लक्षणादौ प्रयोगतः) ॥ ६ ॥

१-त्. २-त्. ३ उत, वा उत्.

१ प्रकर्ष अति जैसे अत्युत्तमो विष्णुः, २ अतिप्रकर्ष लंघने भणे, जैसे अतिवेलं जलधितलं, इस से प्रकर्ष और लंघन में अति है; १ प्रश्न-२ और वितर्क्क अर्त्थ का वाची स्वित् शब्द है, प्रश्न में जैसे, किं स्वित्कुशलमस्ति, २ वितर्क्क नाना पक्ष का विचार, जैसे, सर्व्वेश्वरत्त्वं विष्णोराहो स्वित् शिवस्य, "स्वित् प्रश्ने च वितर्क्के च तथैव पदपूरणे इति मेदिनी"; १ भेद पृथक् करण-२ अवधारण निश्चय का वाची तु शब्द है, जैसे, चौरान्मांसं तु पुष्टिकृत्, शिष्टैर्म्मातं तु तद्युक्तं; ॥ ३ ॥ १ सहार्त्थ में-२ और एक वार कथन में-सकृत् शब्द है, जैसे, सकृद्यान्ति, २ जैसे, सकृदपि कुर्य्याद्दयाश्राद्धं; १ दूर-२ और समीप का वाची-आरात् यह शब्द है, जैसे, आराच्छत्रोः सदा वसेत्, २ समीप में, जैसे सपायं स्थापयेदारात्; १ प्रतीच्यां पश्चिम दिशा-२ चर में अन्त में-इन का वाचक पश्चात् शब्द है, जैसे, पश्चादस्तंगतोरविः, २-पश्चिमे वयसि नेमिषं वशी, १ अपि शब्द का अर्त्थ समुच्चय है-२ और विकल्प-का वाचक-उत् शब्द है, जैसे उतभीमः, उतार्ज्जुनः, विष्णुः उतशिवः सेव्यः, "उत प्रश्नविकल्पयोः। समुच्चये विकल्पे चेति हैमः" अजयस्तु उतापीट्टौ च वाढार्त्थाविति ॥ ४ ॥ १ पुनरर्त्थं पुनः पुनः, २ और सदार्त्थ का वाचक-शश्वत्, वा सस्वत् है, जैसे शश्वद्विष्णुं स्मरेत्, शिष्यशश्वद्गतो गुरुः; १ प्रत्यक्ष २ तुल्य को-साक्षात् कहते हैं, जैसे, साक्षाद्दृष्टो मया हरिः, साक्षाल्लक्ष्मीरियं वधूः; खेद आदि पांच अर्त्थ का वाची वत शब्द है, १ अहो वत महत्कष्टं, २ वत निःस्वोसि-३ वत पतिरालिङ्गितः-४ अहो वतायं ध्रुवः आपदेवं, ५ एहि वत सखे ॥ ५ ॥ हर्ष आदि चार अर्त्थ को हन्त शब्द कहता है, १ हर्ष में जैसे, हन्तलाभः शतगुणः, २ अनुकम्पा में जैसे, हन्तादीनो रक्षितव्यः, ३ वाक्यारम्भ में जैसे, हन्तते कथयिष्यामि, ४ विषाद में जैसे, हन्तजातमजातारेः प्रथमे न त्वया रिणोति माघः, "(हन्तदाने ऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः। निश्चये च प्रमोदे चेति हैमः)" १ जो मुख्य करके सदृश प्रतिनिधि है उस को प्रतिनिधिः कहते हैं, जैसे अभिमन्युं प्रति परीक्षित् २ वीप्सा व्याप्त होने की इच्छा, इस में जैसे, तीर्त्थं तीर्त्थं प्रतिगच्छति, ३ लक्षणा में जैसे, वृक्षशाखायां विद्योतते विद्युत्, आदि शब्द से इत्थं भूताख्यान आदि जानने चाहिये, ४ प्रयोगतः शिष्ट वा महात्मा के प्रयोग के अनुसार प्रति शब्द का प्रयोग करना चाहिये ॥ ६ ॥

१ हेतु २ प्रकारादि।	इति (हेतु-प्रकरण-प्रकर्षा-दि-समाप्तिषु)।
पूर्व्व दिशा आदि।	(प्राच्यां) पुरस्तात् (प्रथमे पुरार्त्थे ऽग्रत इत्यपि) ॥ ७ ॥
सम्पूर्णादि।	यावत् तावत् (च साकल्ये ऽवधौ माने ऽवधारणे)। [१]
१ मङ्गल २ अनन्तरादि।	(मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्व) ऽथो अथ ॥ ८ ॥
१ निरर्थक २ अविधि।	वृथा (निरर्थका-विध्योर्)
१ अनेकार्थ २ उभयार्थ।	नाना (ऽनेको-भयार्थयोः)।
१ पूछना २ विकल्पार्थ।	नु (पृच्छायां विकल्पे च)
१ पीछे २ बराबरी।	(पश्चा-त्सादृश्ययोर्) अनु ॥ ९ ॥
१ प्रश्न २ अवधारणादि।	(प्रश्नावधारणानुज्ञा ऽनुनया मन्त्रणे) ननु।

१—त.

१ हेतु के अर्थ में इति शब्द है, जैसे, रामो हन्तीति रावणः पलायते, २ प्रकरणं प्रकार जैसे, विप्र—क्षत्रिय—विट्—शूद्राः ये वर्णाः; कहलाते हैं, ३ प्रकर्ष—वा प्रकाश—जैसे इति पाणिनिः, पाणिनि शब्द लोक में प्रकाशित है, ४ आदि शब्द से ऐसे अर्थ में है जैसे, क्रमादमुं नारद इत्यबोधि स इति माद्यः, ५ समाप्ति अवसान में जैसे, (धर्ममाचरेदिति); प्राची आदि अर्थ चतुष्टय से युक्त अर्थ को पुरस्तात् कहते हैं, १ प्राच्यां पूर्व्व दिशा, १ प्रथम (पुरस्ताद्भुंक्ते) २ पुरार्थे अतीत बीते विषय में, (पुरस्ताद्वासो ऽभूत्) ३ अग्रतो आगे वा पहिले जैसे, (पुरस्तात्पुस्तकं) यद्वा, अग्रतः यह, अपि शब्द प्राची आदि अर्थ में है, ॥ ७ ॥ १ यावत् २ तावत् शब्द साकल्य आदि अर्थ के वाची हैं, जैसे, यावद्दत्तं तावद्भुक्तं, २ अवधौ जैसे मूलाच्छाखां यावत्प्रकाण्डः, ३ माने परिमाण में जैसे, यावत्स्वर्णं तावद्रजतं, ४ अवधारणे निश्चय में जैसे, श्रोत्रियं तावदामंत्रयस्व, १ अथो और अथ शब्द ये दोनों मंगलादि अर्थों के वाचक हैं, १ मंगल में जैसे, अथातो ब्रह्मजिज्ञासा, २ अनन्तर में जैसे, स्नानं, कृत्वाथ भुंजीत, ३ आरम्भ में जैसे, अथ शब्दानुशासनं लिख्यते, ४ प्रश्न में जैसे, अथ वक्तुं समर्थोसि, ५ कार्त्स्न्य में जैसे, अथ धातून् ब्रूमः, "अथो अथ समूच्चये, मंगले संशयारम्भाधिकारानन्तरेषु च, अन्वादेशे प्रतिज्ञायां प्रश्नसाकल्ययोरपीति हैमः" ॥ ८ ॥ १ निरर्थके व्यर्थ में वृथा जैसे, वृथा दुग्धो नड्वान्, २ अविधौ विधिहीन में वृथा शब्द है जैसे, वृथा दानं, "वृथा निष्कारणे वन्ध्ये वृथा स्याद्विधिवर्ज्जिते इति विश्वः" १ अनेकार्थ में नाना शब्द है जैसे, नानाविधाजनाः, २ उभयार्थ में जैसे, नानाविधं न सज्जेत, "नानाविनो भयानेकार्थेष्विति हेमचन्द्र"; १ पृच्छायां जानने की इच्छा में जैसे, कोनुधावति, २ विकल्पे अनेक कल्पन में जैसे, अयं भोमोनुधर्मोनु, "नु प्रश्ने ऽनुनये ऽतीतार्थे विकल्पवितर्क्कयोरिति हैमः", पश्चादर्थ और सादृश्य में अनु शब्द है, १ पश्चात् अर्थ में जैसे, रथमनुगच्छति, २ सादृश्य अर्थ में जैसे, ज्येष्ठमनुकरोति, ॥ ९ ॥ प्रश्न आदि पांच अर्थ का वाचक ननु शब्द है, १ प्रश्न में जैसे, ननु किमेतत्, २ अवधारण निश्चय में जैसे, नन्वयं योगी, ३ अनुज्ञा आज्ञा में जैसे, ननु गच्छ, ४ अनुनयः सान्त्वन में जैसे, ननु कोपं मुंच दयां कुरु, ५ आमन्त्रणं सम्बोधन में जैसे, ननु राजन्;।

१ निन्दा २ समुच्चयादि ।	(गर्हा-समुच्चय-प्रश्न-शङ्का-सम्भावनास्व्) ऽपि ॥ १० ॥
१ उपमा २ विकल्प।	(उपमायां विकल्पे) वा
१ आधा २ निन्दित।	सामि (त्वर्द्धे जुगुप्सने) ।
१ साथ २ समीप ।	अमा (सह समीपे च)
१ पानी २ मस्तक।	कम् (वारिणि च मूर्द्धि च) ॥ ११ ॥
१ ऐसा २ प्रकार ।	(इवे-त्यमर्त्थयोर्) एवं
१ तर्क २ अर्त्थनिश्चय ।	नूनं (तर्क्के ऽर्त्थनिश्चये) ।
१ चुपचाप २ सुख ।	(तूष्णीमर्त्थे सुखे) जोषं
१ पूछना २ निन्दा-करना ।	किम् (पृच्छायां जुगुप्सने) ॥ १२ ॥
१ प्रसिद्ध २ होनहार।	नाम (प्राकाश्य-सम्भाव्य-क्रोधो-पगम-कुत्सने) ।
१ भूषण २ परिपूर्णता आदि ।	अलम् (भूषण-पर्य्याप्ति-शक्ति-वारण -वाचकम्) ॥ १३ ॥

गर्हा आदि पांच अर्त्थ का वाचक अपि शब्द है, १ गर्हा निन्दा में जैसे, अपि सिंचेत्पलांडुं, (प्याज) २ समुच्चय अर्त्थ में जैसे, स्त्रियं पालय पुत्रमपि, ३ प्रश्न पूछने में जैसे, अपि जानासि किंचित्त्वं, ४ शंका में जैसे, अपि चोरो भवेत्, ५ संभावना में जैसे, अपि स्थाणुं जयेद्रामः-"युक्तपदार्त्थे कामचारक्रियासु च अपि शब्दः"; ॥ १० ॥ १ उपमा में जैसे, आशीविषो वा संक्रुद्धः, २ विकल्प में जैसे, शिवं वा यदि वा विष्णुं, "वा स्याद्विकल्पोपमयोरेवार्त्थे च समुच्चये इति विश्वः"; अर्द्ध आधा और जुगुप्सन निन्दा का वाची-सामि शब्द है, १ अर्द्ध खण्ड में जैसे, सामि संमितालो, जुगुप्सन में जैसे, सामिकृतमकल्याणकारि, १ सहार्त्थ में जैसे, पुत्रैरामा भुंक्ते, २ समीप में जैसे, अमात्यः, समीपवर्त्तीत्यर्त्थः; वारि जलं वा पानी और मूर्द्धा मस्तक का वाचक कम् शब्द है, १ "कं शिरः सुखवारिण्विति मेदिनी"; ॥ ११ ॥ इवार्त्थ और इत्यमर्त्थ का वाचक एवं शब्द है, १ जैसे अग्निरेवं द्विजः, अग्निरिवेत्यर्त्थः, २ इत्थं अर्त्थ प्रकार में जैसे, एवं वादिनिदेवर्षौ, "एवं प्रकारोपमयोरंगीकारे ऽवधारणे इति धरणि हेमचन्द्रौ"; १ तर्क्के नूनं जैसे, नूनमयमतिपञ्चानां प्रियः, २ अर्त्थ निश्चय में जैसे, दुष्टे ऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने, "नूनं निश्चततर्क्कयोरिति विश्वः" तूष्णीमर्त्थे मौन में जैसे, १ जोषं तिष्ट, २ सुख अर्त्थ में जैसे, जोषमासीत वर्षासु, "जोषं सुखे स्तुतौ, मौनलंघनयोश्चापीति हैमः" १ पृच्छायां किम् जानने में जैसे, किमाद्रियेरन् रसिकाः क्रांतं मे, २ जुगुप्सने किं निन्दा अर्त्थ में किं शब्द है, जैसे स किं राजायः प्रजां न रक्षति, "किं वितर्क्के परिप्रश्ने क्षेपनिन्दाप्रकाशयोरिति विश्वः" ॥ १२ ॥ प्राकाश्य आदि पांच अर्त्थ का वाचक नाम शब्द है, १ प्राकाश्यं प्रसिद्धि जैसे, हिमालयोनाम नगाधिराजः, २ संभाव्ये कथंचित् अर्त्थ में जैसे, भविष्यति युद्धं नाम, ३ क्रोधे क्रोध में जैसे, मम वैरी रावणो नाम पापः, ४ उपगम सत्स्वरूप के अंगीकार में जैसे, शत्रोः सकाशात् गृह्णाति नाम, ५ कुत्सने निन्दा में जैसे, को नामायं प्रजपति में विगतः सभायां, "(नाम क्रोधे ऽभ्युपगमे विस्मये स्मरणे ऽपि च सम्भाव्य कुत्सा प्राकाश्य विकल्पेष्वपि दृश्यत इति मेदिनी)"; भूषणं अलंकार-पर्य्याप्तिः परिपूर्णता-शक्तिः सामर्त्थ्य-वारणं निषेध-इन अर्त्थों का वाचक अलं शब्द है, क्रम से उदाहरण जैसे, १ अलंकृतः शिशुः, २ अलं भुक्तवान्, ३ अलं मल्लो-मल्लाय, ४ अलं महीपाल तव श्रमेण, "अलं निरर्त्थके इति हैमः" ॥ १३ ॥

१ वितर्क २ परिप्रश्न	हूम् (वितर्के परिप्रश्ने)
१ समीप २ मध्य ।	समया (ऽन्तिक-मध्ययोः) ।
१ अभाव २ भेद ।	पुनर् (अप्रथमे भेदे)
१ निश्चय २ निषेध ।	निर् (निश्चय-निषेधयोः) ॥ १४ ॥
१ प्रबन्ध २ बहुकालादि ।	(स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके) पुरा ।
१ विस्तरादि २ अंगीकार ।	ऊर्य्युरी[१] (चो)[२] ररी[३] (च विस्तारे ऽङ्गीकृतौ त्रयम्) ॥ १५ ॥
१ स्वर्ग २ परलोक ।	(स्वर्गे परे च लोके) स्वर्
१ वार्त्ता २ सम्भावना	(वार्त्ता-सम्भाव्ययोः) किल ।
१ निषेध २ वाक्यभूषणादि ।	(निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनये) खलु ॥ १६ ॥[४]
समीपादि ।	(समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखे) ऽभितः[५] ।
१ नाम २ प्रकाश ।	(नाम-प्रकाशयोः) प्रादुर्[६]
१ परस्पर २ एकान्त ।	मिथो (ऽन्यो ऽन्यं रहस्यपि) ॥ १७ ॥
१ अन्तर्द्धान २ तिरछा ।	तिरो[७] (ऽन्तर्द्धौ तिर्य्यगर्थे)

१ ऊररी. २ ऊरी. ३ उररी. ४—तस्. ५—स्. ६ मिथस्. ७ तिरस्.

वितर्क्क सन्देह—वा ऊहा—२ परिप्रश्न पूंछना, इन का वाचक हूं शब्द है, १ वितर्क्क में जैसे, हुं जलं मृगतृष्णाहूं, २ परिप्रश्न में जैसे, हूं यज्ञदत्तोयं, "हूं वितर्क्के चानुमताविति त्रिकाण्डशेषः"; समीप और मध्य का वाची समया है, १ अन्तिक समीप में जैसे, समयापत्तनं नदी, २ मध्ये जैसे, समया शैलयोर्ग्रामः, १ अप्रथ में प्रथम के अभाव में जैसे, पुनरुक्तं, २ भेदे भेद में जैसे, किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः, "(पुनरप्रथमे मतं, अधिकारे च भेदे च तथा पक्षान्तरेऽपि चेति मेदिनी)" १ निश्चय अर्थ मे निः है जैसे, निरुक्तं, २ निषेध अर्थ में जैसे, निर्द्धनो राजा, ॥ १४ ॥ प्रबन्ध आदि का वाचक पुरा शब्द है, १ प्रबन्धे प्रबन्ध अर्थ में जैसे, पुराधीते, अविरतमपाठीदित्यर्थः, २ चिरंतनं पुराण में जैसे, पुरातनं, ३ अतीतंगतं, ४ निकटः सन्निहितः, ५ आगामिकं होनेवाला, ऊररी यह एक दीर्घादि शब्द—और उररी यह ह्रस्वादि इस भेद से द्विरुक्ति है और ऊरी शब्द वा उरी—और उररी—ये ३ शब्द विस्तार बड़ाई—और अंगीकृतौ स्वीकार—के वाचक हैं, ऊरी करोतीत्यादि ॥ १५ ॥ १ स्वः शब्द स्वर्ग का वाची है जैसे, स्वर्णद्यां स्नाति नारदः, स्वर्ग की नदी में नारद नहाता है; पर यह लोक का विशेषण है, २ परे लोके परलोक में, जैसे, "स्वर्गतस्य क्रियाकार्य्यापुत्रैः परमभक्तितः"; १ वार्तायां बात में जैसे, "जघान कंसं किल वासुदेवः" २ संभाव्य बड़ाई के योग्य—इसमें जैसे, गुरून् किल अतिशेते शिष्यः, "(किल शब्दस्तु वार्तायां सम्भाव्यानुनयार्थयोरिति विश्वः)"; निषेध रोकना, जैसे रुदित्वा, वाक्यालङ्कारे वाक्यभूषा (गहना) जैसे, एतत् खल्वाहुः, ३ जिज्ञासा जानने की इच्छा जैसे, खलु जानाति, ४ अनुनय अर्थ में, देहि खलु वाचकं ॥ १६ ॥ समीपादि पांच अर्थ का वाचक, अभितः, है, जैसे वाराणसीमभितः भागीरथी २ उभयतः उभय के अर्थ में जैसे, "अभितः कुरुचामरो" ३ शीघ्रार्थे—जलदी में जैसे, "अभितोऽधीष्व" ४ साकल्ये सम्पूर्ण अर्थ में जैसे, "अभितो वनदाहः" ५ अभिमुखे सन्मुख अर्थ में जैसे, "अभितो हिंसको हन्ति मामेव परिधावति"; नाम—और प्रकाश अर्थ का वाचक—प्रादुः शब्द है जैसे, १ "प्रादुरासीच् चक्रपाणिः" २ में, "प्रादुर्बुद्धिर्भविष्यति"; अन्योन्य परस्पर के अर्थ में मिथः शब्द है जैसे, "वाशिष्ठकौण्डिन्यमैत्रावरुणानां मिथो न विवाहः"; ॥ १७ ॥ अन्तरधान छिपना और तिर्य्यग् अर्थ टेढ़ा में तिरः शब्द है, जैसे १ तिरोभूयास्ते—२ में—तिरो वर्तते चन्द्रः;

१ विषाद २ शोक ३ पीड़ा।	१ हा (विषाद-शुग-र्त्तिषु)।
१ अद्भुत २ खेद।	अहहे (त्यद्भुते खेदे)
१ हेतु २ निश्चय।	हि (हेताववधारणे) ॥ १८ ॥
	॥ इति नानार्त्थवर्गः ॥
	॥ अथ पञ्चमवर्गः ॥
१ दीर्घकाल वाचक अव्यय।	। । २। चिराय चिरराचाय चिरस्या (द्या श्चिरार्त्थकाः)।
वारम्वार वाचक।	३। ४। ५। ६। ७। मुहुः पुनः पुनः शश्वद् भीक्ष्ण मसकृत् (समाः) ॥ १ ॥
शीघ्रता वाचक।	८। ६। १०। । । ११। । स्राग् झटि त्यञ्जसा ऽह्नाय सपदि द्राङ् मंक्षु (च द्रुते)।
अतिशयार्त्थक।	। । । । १२। १३। १४। बलवत् सुष्ठु कि मुत स्व ऽत्य तीव (च निर्भरे) ॥ २ ॥
वर्ज्जनार्त्थक।	१५। १६। । १७। १८। १९। पृथ ग्विना ऽन्तरे णर्त्ते हिरुङ् नाना (च वर्ज्जने)।

१–हा वा–हा. २–स्य. ३–स्. ४–र्. ५–त्. ६ अ–. ७ अ–. ८–क्. ९–ति. १० अं–. ११–क्. १२ सु. १३ अति. १४ अ–१५–क्. १६ विना. १७ ऋते. १८–क्. १९ नाना.

विषाद आदि तीन अर्त्थ का वाची हा शब्द है, विषाद अर्त्थ में जैसे, "हा रमणीयो गतः कालः, २ शुचि शोक में जैसे, हाराम वनं गतोसि, ३ अर्त्ती पीड़ा में जैसे, हा हतोस्मीति", "कुत्सार्त्थ में भी हा शब्द है"; अद्भुत अर्त्थ में जैसे, "अहह वुद्धिप्रकर्षो राज्ञः" २ खेदे शोक अर्त्थ में जैसे, अहह नीतो मया दूतेन कालः, "अहहा दीर्घान्त भी है यहां ङीप् प्रत्यय है, अहहेत्यद्भुते खेदे परिक्लेशप्रकर्षयोः। सम्बोधनेपीति मेदिनी"; १ हेतौ कारण अर्त्थ में हि है जैसे, "अग्निरत्रास्ति धूमो हि दृश्यते" २ अवधारणे निश्चय अर्त्थ में जैसे, "चन्द्रो हि शीतः"; ॥ १८ ॥ ॥ इति नानार्त्थवर्गः ॥ १ चिराय २ चिररात्राय ३ चिरस्य–ये निपात आदि में हैं जिनके वे आद्य शब्द से ४ चिरेण–५ चिरात्–६ चिरं–ये ६ चिरार्त्थक हैं, अर्त्थात् दीर्घ काल के वाचक हैं, इन का क्रम से उदाहरण ये हैं जैसे, "१ चिराय संतर्प्य समिद्भिरग्निं, २ चिररात्राय संचितं, ३ चिरस्य दृष्टेव मतोत्थितेव, ४ चिरेण नाभिं प्रथमोदविन्दवः, ५ चिरात्सुतस्पर्शरसज्ञतां ययौ, ६ स चिरं तपसि स्थितः", १ मुहुः २ पुनः पुनः, ३ शश्वत्–४ अभीक्ष्णं–५ असकृत्–ये ५ समाः, अर्त्थ से तुल्य हैं, जैसे मुहुः पश्यसि कौन्तेय, २ आगच्छति पुनः पुनः, ३ वन्यवृत्तिरिमां शश्वत्,–४ अभीक्ष्ण मद्गुणतया ऽतिदुर्गमं, असकृतज्जलपानाच्च मकृत्ताम्बूलचर्व्वणात् ॥ १ ॥ १ स्राक्–२ झटिति–३ अंजसा–४ अह्नाय–५ द्राक् ६ मंक्षु–७ सपदि–ये ७ द्रुते शीघ्र के वाचक हैं, जैसे, "स्राक् वयो याति देहिनां, २ वृत्तं झटित्याकरोद्, ३ अञ्जसा याति तुरगः, ४ अह्नाय सूर्य्येण तमो निरस्तं, ५ वचसस्तस्य सपदि क्रिया केवलमुत्तरं, ६ द्राक् भविष्यति सुखं तव प्रिये, ७ मंक्षु स्वपादि सरितः पटलैरलीनां", १ बलवत्–२ सुष्ठु, ३ किमुत–४ सु–५ अति–६ अतीव–ये ६ निर्भरे अर्त्थात् अतिशय अर्त्थ के वाचक हैं, जैसे, १ पुनर्व्वशित्वात् बलवन्निगृह्य, २ सुष्ठु पीतं मया घृतं, ३ किमुतावर्द्धतं क्षेत्रं, ४ अतिवृष्टिः, ५ अतीव शोभते राजा, सुपक्वं कदलीफलं, ॥ २ ॥ १ पृथक् २ विना–३ अन्तरेण–४ ऋते–५ हिरुक्–६ नाना ये ६ वर्ज्जनार्त्थ के वाचक हैं, जैसे, १ किंचिद्दत्वा पृथक् क्रिया, २ क्षणमप्युत्सहते न मां विना, ३ अन्तरेण सुखं नास्ति सुखं संसारिणां भुवि, ४ ऋते पुण्यात्स्वर्गतिर्न, ५ हिरुक् कर्म्म न मोक्षः, विष्णुं नानाश्रावदो नास्ति देवः"; ।

कारण वाचक ।	यत्त द्यत स्ततो (हेताव्)
असम्पूर्ण ।	(असाकल्ये तु) चिच्चन[1][2] ॥ ३ ॥
किसीकाल ।	कदाचि[3] ज्जातु[4]
साथ के वाचक ।	सार्द्धं (न्तु) साकं सत्रा समं सह ।
अनुकूलता ।	(आनुकूल्यार्थकं) प्राध्वं
व्यर्थ ।	(व्यर्थके तु) वृथा मुधा ॥ ४ ॥
विकल्पार्थ ।	आहो उताहो किमुत (विकल्पे) किं[5] किमुत[6] च ।
पादपूरणार्थक ।	तु हि च स्म ह वै (पादपूरणे)
पूजनार्थक ।	(पूजने) स्व[7] ति[8] ॥ ५ ॥
दिनार्थक ।	दिवा (ह्नीत्य)
रात्र्यर्थक ।	(ऽथ) दोषा (च) नक्तं (च रजनाविति) ।
टेढ़ा ।	(तिर्य्यगर्थे) साचि तिरो[9] (ऽप्य)
सम्बोधनार्थक ।	(ऽथ सम्बोधनार्थकाः ॥ ६ ॥

१–त्. २ च–. ३–त्. ४ जा–. ५ किमु. ६ उत. ७ सु. ८ अति. ९ तिरस्.

१ यत्–२ तत् ३ यतः–४ ततः– ये ४ हेतौ अर्थात् कारणार्थक के वाचक हैं, जैसे, १ यत्र रम्यं तरस्विभ्यः, २ तदिदं परिरत्न शोभने, ३ यतो गंगाम्भसि स्नातः, ४ ततो निष्कल्मषो भवेत्; १ चित्–२ चन–ये २ असाकल्ये अर्थात् असंपूर्ण के वाचक हैं; जैसे १ कश्चित्, २ कंचन; ॥ ३ ॥ १ कदाचित्–२ जातु–ये २ किसी काल के वाचक हैं, जैसे, "स्मृतिः कदाचिद्भवति । ज्ञानं ते जातु सूत्तमं", १ सार्द्धं–२ साकं–३ सत्रा–४ समं–५ सह–ये ५ सहार्थक हैं, जैसे, "१ सार्द्धं दानववैरिणा, २ पत्न्यासाकं पतिभुक्ते, ३ सत्राकलत्रेण सुखं समश्नुते, ४ समं वधूभिस्तरुणा रमंते, ५ निश्वासधूमं सह रत्नभाभिः"; प्राध्वं यह एक–आनुकूल्यार्थ का वाचक है; १ वृथा–२ मुधा–ये २ व्यर्थ के वाचक हैं जैसे, "वृथा पुष्टः, बुधा मुधा भ्रमंत्यत्र" ॥ ४ ॥ १ आहो–२ उताहो–३ किमुत–४ किं–५ किमु–६ उत–ये ६ विकल्पार्थक हैं जैसे, "१ देव आहो गन्धर्व्वः, २ उताहो ब्रह्म चोच्यते, ३ किमुतत्त्वं शिवो ब्रह्मा, ४ स्थाणुरयं किं पुरुषः, ५ गृहं किमु वनं गतः, ६ विष्णुरुतशिवः सेव्यः"; १ तु–२ हि–३ च–४ स्म–५ ह–६ वै–ये ६ श्लोक के चरण पूर्ण करने में हैं जैसे, १ "रामस्तु लक्ष्मणं प्राह, २ अहं हियास्ये नगरं, ३ सच प्राह च राजानं, ४ मया स्म भुक्तं, ५ सह तं प्राह लक्ष्मणः, ६ तेन वै हतः"; १ सु–२ अति–ये २ पूजन अर्थ में हैं, "जैसे, १ सुस्तुतं, २ अत्युत्तमः"; ॥ ५ ॥ १ अह्नि दिन के अर्थ में दिवा शब्द है, १ दोषा २ नक्तं–ये २ रात्रि अर्थ के वाचक हैं, जैसे, "चोराश्च दोषा ययुः, २ नक्तं गृहस्थो भुंजीत"; १ साचि–२ तिरः–ये २ तिर्यगर्थ में हैं, १ जैसे, "कृतसाचिधनुस्तेन, २ तिरो गत्वा समीक्षेत, इस के उपरान्त सम्बोधनार्थक हैं"; ॥ ६ ॥

	स्युः) प्याट् पाडङ्ग है हे भोः
समीपार्त्थक ।	समया निकषा हिरुक् ।
अकस्मात् ।	(अतर्क्किते तु) सहसा
आगे इस अर्त्थक ।	(स्यात्) पुरः पुरतो ऽग्रतः ॥ ७ ॥
देवतार्त्थक ४ पित्रर्त्थक ।	स्वाहा (देवहविर्द्दाने) श्रौषड् वौषड् वषट् स्वधा ।
अल्पार्त्थक ।	किञ्चि दीष न्मनाग् (अल्पे)
जन्मान्तर ।	प्रेत्या ऽमुत्र (भवान्तरे) ॥ ८ ॥
तुल्यार्त्थक ।	वद्वा यथा तथैवैवं (साम्ये)
विस्मयार्त्थक ।	ऽहो ही (च विस्मये) ।
चुपचाप ।	(मौने तु) तूष्णीं तूष्णीकां
तत्काल ।	सद्यस् सपदि (तत्क्षणे) ॥ ६ ॥
आनन्दार्त्थक ।	दिष्ट्याशमुपजोषं (चेत्यानन्दे)
मध्य ।	(ऽथा) ऽन्तरे ऽन्तरा ।

१ पाट्. २अङ्ग. ३-स्. ४-द्. ५-त्. ६ ईषत्. ७-क्. ८-त्य. ६ वा. १० तथा. ११ इव. १२ एवं १३ श.

१ प्याट्-२ पाट्-३ अङ्ग-४ हे-५ है-६ भोः-ये ६ सम्बोधनार्त्थक हैं, जैसे, प्याट् भीम पत्रं रक्षस्व, इसी प्रकार पाट्, आदि को जानना; १ समया-२ निकषा-३ हिरुक्-ये ३ समीप के वाचक हैं जैसे, "ग्रामं समया, विलंघ्य लंकां निकषा हनिष्यति, पर्व्वतस्य हिरुक् नदी"; सहसा, यह एक अतर्क्किते अर्त्थात् अकस्मात इस अर्त्थ का वाचक है जैसे "दिवः प्रसूनं सहसा पपात । सहसा विदधीत न क्रियाम्"; १ पुरः-२ पुरतः-३ अग्रतः-ये ३ अग्र वा आगे इस अर्त्थ के वाचक हैं; जैसे, "पुरः पश्यसि किं बाले, २ पुरतः स्थाप्य सर्व्वगं, ३ लेखः प्रत्यर्त्थिनोग्रतः" ॥ ७ ॥ १ स्वाहा-२ श्रौषट्-३ वौषट्-४ वषट-५ स्वधा-ये ५ देवताओं के अर्त्थ हविष्यदान विशेष में प्रयोग किये जाते हैं, तिनमें जैसे, इन्द्राय स्वाहा, पितृदान में स्वधा शब्द प्रसिद्ध है; जैसे, पितृभ्यः स्वधा १ किंचित् २ ईषत् ३ मनाक-ये ३ अल्प के वाचक हैं, जैसे "किंचिद्विकसितं सुमं, वा पुष्पं, २ ईषदुष्णं पयः पिब, ३ मनाक् विहस्य संतुष्टः"; १ प्रेत्य-२ अमुत्र-ये २ जन्मान्तर के वाचक हैं, जैसे "प्रेत्य स्वर्गं महीपते, २ इह चामुत्र च फलं, ॥ ८ ॥ वत्-वा व-वा-यथा-तथा-इव-एवं-और भी एव ये ६ साम्ये अर्त्थात् तुल्य के वाचक हैं, तिन्मे व शब्द जैसे, शास्त्रवं व पर्युदस्तः, सखोवोष्टम्य नम्वे ते प्रियो वत्सतरो मम-यथा बुभुक्षितस्यान्नं, तथैवार्त्तस्यौषधं, इन्दुरिन्दुरिव श्रीमान्, अग्निरेवं द्विजः, वं प्रचेतसि जानीया दिवार्त्थे च तदव्ययमिति मेदिनी आदि", "(इसीलिये व-वा-यथा-तथा-ये आदि मनोरमा का पाठ साधु है)" १ अहो-२ ही-ये २ विस्मय वा आश्चर्य्य के वाचक हैं, जैसे, "अहो रूपमहोसत्वं, ही विचित्रोमायः, ही विस्मय विषादयोरिति विश्वः"; तूष्णीं, तूष्णीकां, ये २ चुप रहने के नाम हैं, "जैसे तूष्णीं स्थित्वा सर्वं भूयः, तूष्णीकां जलमध्यगः"; १ सद्यः-२ सपदि-ये २ तत्काल के नाम हैं, "जैसे सद्योहतः समुत्तस्थौ. शत्रुं जघान सपदि"; ॥ ६ ॥ दिष्ट्या, शमुपयोषं, ये २ आनन्द के नाम हैं, जैसे "दिष्ट्या ते दर्शनं कान्ते, २ समुपजोषं, और भी समुपयोषं, वाले, पढ़ते हैं उपयोषं, भूयात्"; अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण, ये ३ मध्य के नाम हैं, जैसे "अनयोरंतरे तिष्ठ, त्वां मां चान्तरा अन्तरेण वा कमण्डलुः ।

	१
	अन्तरेण (च मध्ये स्युः) ।
हठार्त्थक ।	१ १ प्रसह्य (तु हठार्त्थकम्) ॥ १० ॥
युक्तार्त्थक ।	(युक्ते द्वे) साम्प्रतं स्थाने । १ १
निरन्तर ।	२। ३। ४। ऽभीक्ष्णं शश्वद् (अनारते) ।
प्रतिषेध ।	(अभावे) नह्य् नो ना (ऽपि)
	१ १ १
रोकना ।	५। ६। मास्म मा ऽलं (च वारणे) ॥ ११ ॥
पक्षान्तर ।	(पक्षान्तरे) चे द्यदि (च) १ १
तत्वार्त्थ ।	७। ८। (तत्वेत्व) द्धा ऽञ्जसा (द्वयम्) ।
प्रगट ।	(प्राकाश्ये) प्रादु राविः (स्याद्)
	६। १०।
अङ्गीकार ।	ओ मेवं परमं (मते) ॥ १२ ॥
	१ १ १ ११।
चारों ओर ।	समन्ततस् (तु) परितः सर्व्वतो विष्वग् (इत्यपि) ।
	१
बिना इच्छा स्वीकार ।	(अकामानुमतौ) कामम् १
निन्दापूर्व्वक स्वीकार।	(असूयो पगमे) ऽस्तु (च) ॥ १३ ॥

१-त्. २ नहि. ३ अ. ४ न, वा ना. ५ चेत्. ६ यदि. ७-स्. ८ आविस्. ९-म. १० एवं. ११ क् (च्).

१ प्रसह्य, यह एक हठार्त्थक है; ॥ १० ॥ १ साम्प्रतं, २ स्थाने, ये २ उचित-वा युक्त के नाम हैं, "जैसे; स्वयं च्छेत्तुमसाम्प्रतं, क्रमशो वच्मि साम्प्रतम्" "स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या इति गीता"; १ अभीक्ष्णं, शश्वत्, ये २ अनारत वा सन्तत-वा निरन्तर के नाम हैं, जैसे "अभीक्ष्णमुष्णैरपि तस्य सोष्मणः, शश्वत्कालः; नहि-अ-नो-न-ये ४ अभाव के नाम हैं जैसे, "नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति, २ अराज दैविकं नष्टं, ३ नो चक्री किं कुलालः, ४ न मे किंचन दह्यते" अस्यादभावे स्वल्पार्त्थे इति विश्वः" १ मास्म-२ मा-३ अलं, ये ३ वारणे अर्त्थात् निषेध-वा रोकना, जैसे "मास्मकार्षीरिदं पुत्र, २ माकुरु, ३ अलं महीपाल तव श्रमेण"; ॥ ११ ॥ १ चेत्-२ यदि-ये २ पक्षान्तर के वाचक हैं, जैसे "सत्यं चेत्तपसा च किं, २ शुचिमनो यद्यस्ति तीर्त्थेन किं"; १ अद्धा-२ अञ्जसा-ये २ तत्त्वे-वा यथार्त्थ के वाचक हैं, जैसे, "१ यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्द्धघटनादवैतित्वामद्धा, २ अञ्जसेति रुरुधुः कुचग्रहैः"; १ प्रादुः-२ आविः-ये २ प्राकाश्य-वा स्पष्ट के वाचक हैं, जैसे "प्रादुरासीत्-२ आविर्बभूव"; १ ओम्-२ एवं-३ परमं-ये ३ मते अर्त्थात् अंगीकार के वाचक हैं, जैसे "ओमित्युक्तवतोथशार्ङ्गिणः, २ एवं यदाह भगवान्-३ परममित्युक्त्वा" (ओमित्यनुमतौ प्रोक्तं प्रणवेचाप्युपक्रमे। एवं प्रकारोपमयोरंगीकारेवधारणे इति च विश्वः)"; ॥ १२ ॥ १ समंततः-२ परितः-३ सर्व्वतः-४ विष्वक्-ये ४ सर्व्वतः-वा चारों ओर से इस अर्त्थ के वाचक हैं, जैसे "१ समंततो वर्षति मेघः, २ आयान्ति परितः श्रियः, ३ सर्व्वतो वातिपवनः, ४ विष्वक् पतंति किरणाः"; अकामानुमतौ अनिच्छा स्वीकार का वाचक कामं यह है जैसे, "त्वं हनिष्यसि चेत्कामं, कामं प्राकामे ऽनुमतौ वसूयानुगमेपि चेति हैम विश्वप्रकाशो"; असूया निन्दापूर्व्वक स्वीकार अर्त्थ में अस्तु यह एक है, जैसे "तथा विधस्तावदशेषमस्तु सः" च शब्द से कामं यह भी है "अस्तु स्यादभ्यनुज्ञाने ऽसूयांगीकारयोरपीति मेदिनी" ॥ १३ ॥

विरोधोक्ति।	ननु च (स्याद्विरोधोक्तौ)
इष्ट प्रश्न।	क्वच्चित् (कामप्रवेदने)।
निन्दा।	निःषम न्दुःषमं (गर्ह्ये)।
यथायोग्य।	यथास्वं (तु) यथायथम् ॥ १४ ॥
झूठ।	मृषा मिथ्या (च वितथे)
सत्य।	यथार्त्थं (तु) यथातथम्।
निश्चयार्त्थक।	१। १। १। २। ३। (स्युर्) एवं तु पुन र्वै वे (त्यवधारणवाचकाः) ॥ १५ ॥
	४।
भूतकाल।	प्राग् (अतीतार्त्थकं) ।५।
निश्चय।	नून मवश्यं (निश्चये द्वयम्)।
	६।
वर्ष।	सम्वद् (वर्षे) ७।
पीछे।	(ऽवरेत्व्) ऽर्व्वाग् ८। ९।
अङ्गीकार।	आमेवं
आप।	स्वयम् (आत्मना) ॥ १६ ॥
	। १०
अल्प।	(अल्पे) नीचैः ११।
उंचाई।	(महत्यु) च्चैः १२।
वहुताई।	प्रायो (भूम्नि) ।
धीरे२।	(अद्रुते) शनैः।

१-र्. २वै. ३वा. ४क् (च्). ५अ-. ६-द्. ७-क् (च). ८आं.
९एवं. १०-स्. ११उच्चैस्. १२-स्.

ननु यह एक विरोधोक्ति में है, जैसे "ननु एवं मन्यसे तर्हि किमपि न स्यात्"; कच्चित्, यह एक कामप्रवेदने-वा इष्ट के परिप्रश्न का वाचक है, वा इच्छा का प्रकाश, जैसे, "कच्चिज्जीवति मे माता"; निःषमं-दुःषमं-ये २ गर्ह्य-वा निंद्य के नाम हैं. जैसे "निःषमं वक्ति मे मूर्खः, दुःषमं वर्तते वधूः"; यथास्वं-यथायथं-ये २ यथायोग्य के नाम हैं, जैसे, "यथा स्वमाश्रमै चक्रे-वा यथायथं फलायन्ते, ॥ १४ ॥ मृषा-मिथ्या, ये २ वितथ वा असत्य के नाम हैं, जैसे "उच्छाय सौन्दर्य्यगुणामृषोद्या, मिथ्योक्तं-त्वया-यथार्त्थं-यथातथं, ये २ सत्य के नाम हैं, जैसे "यथार्त्थमुक्तं नान्यत्", जैसे "गुरुर्य्यथातथं वक्ति, तथा शब्द और तथ शब्द भी सत्यार्त्थक हैं", एवं-तु, पुनः-वै-वा-ये ५ निश्चयार्त्थक हैं, जैसे "एवमेव यथ प्राह, रावणं तु दुरात्मान मवधीद्राघवः प्रभुः, पुनर्व्यासो वै धर्म्मज्ञः, वे वे यहां वा एव ऐसा पदच्छेद है" ॥ १५ ॥ प्राक् यह एक अतीत अर्त्थ का वाचक है, जैसे प्राक्कर्म्म; नूनं-अवश्यं, ये २ निश्चित के वाचक हैं, जैसे, "नूनं शरणं प्रपन्नाः, अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः" "नूनं निश्चततर्कयोरिति विश्वः"; संवत् यह एक वर्ष का वाचक है जैसे "प्रभव नाम संवत्; अर्व्वाक् यह एक अवर वा पीछे का वाचक है, जैसे "कुले त्रतुत्रयादर्व्वाक् मण्डनान्न तु मुंडनं"; आं-एवं-ये २ अंगीकार के वाचक हैं, जैसे "आं कुर्म्मः, एवं कुर्म्मः; स्वयं, यह एक आत्मना इस अर्त्थ का वाचक है; ॥ १६ ॥ नीचैः यह एक अल्पार्त्थक है, जैसे "तथापि नीचैर्विनयाददृश्यत"-उच्चैः यह एक महार्त्थक है, जैसे "शृंगमुच्चैर्गिरेरिदं"; प्रायः यह भूम्नि-वा वाहुल्यार्त्थक है, "प्रायो नववधूः कांतं"; शनैः यह एक अनुद्रुत-वा धीरार्थक है जैसे, "शनैर्य्याति पिपीलिका"; ।

नित्य।	सना (नित्ये) १।
बाहर।	वहिर् (बाह्ये) २।
भूतकाल।	स्म। (ऽतीते)
छिपना।	ऽस्तम् (अदर्शने) ॥ १७ ॥
होना।	अस्ति (सत्त्वे)
क्रोध से कहना।	(रुषोक्तावु) ऊम्
प्रश्न।	उं (प्रश्ने)
अनुनय।	(ऽनुनयेत्व) ऽयि।
तर्क।	हूं (तर्क्के स्यात्)।
राज्यन्त।	उषा (रात्रेरवसाने) ३।
प्रणाम।	नमो (नतौ) ॥ १८ ॥
फिर।	(पुनरर्त्थे) ऽङ्ग
निन्दा।	(निन्दायां) दुष्ठु।
प्रशंसा।	सुष्ठु (प्रशंसने)।
सायंकाल।	(सायं (साये) ४।
प्रातः।	प्रगे प्रातः (प्रभाते) ५।
समीप।	निकषा (ऽन्तिके) ॥ १९ ॥

१-स्. २ स्म. ३-स्. ४-स्. ५-र्.

सना "और भी सनात्, और सनत्", यह एक नित्यार्त्थक है, जैसे "सनातनः" वहिः यह एक वाह्यार्त्थक है, जैसे "निष्कासितो वहिर्ग्रामात्"; स्म यह एक अतीतार्त्थक है, जैसे "वक्ति स्म व्यासः" अस्तं यह एक दर्शनाभावार्त्थक है, "जैसे सायमस्तमितो रविः ॥ १७ ॥ अस्ति यह सत्व वा सत्ता का वाचक है जैसे, "अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य स आस्तिकः"; ऊम् यह रुषोक्तौ अर्त्थात् क्रोध से कथन का वाचक है जैसे, "ऊम् आगतः शत्रुः"; उं यह प्रश्न का वाचक है, "उं गच्छसि वहिर्धव"; अयि यह अनुनय-प्रीति-वा प्रार्त्थना में है, जैसे "अयि क्रियार्त्थं सुलभं समित्कुशं"; हूं, यह तर्क्क का वाची है, "स्याच्चेत्किं हूं प्रपद्यते"; और भी उषा, "उसी प्रकार उषः (स्), यह रात के अवसान का वाचक है, जैसे "उषातनोवायुः"; नमः, यह नति वा प्रणामार्त्थक है, जैसे "नमो ब्रह्मण्यदेवाय"; ॥ १८ ॥ अङ्ग, पुनरर्त्थक है, जैसे "मूर्खोपि नावमन्यते किमंगविद्वान्, किम्पुनरित्यर्त्थः" दुष्ठु, यह निन्दार्त्थक है जैसे, "दुष्ठु खलु त्वं"; सुष्ठु, यह प्रशंसा वा स्तुति में है, जैसे, "सुष्ठु काव्यम्"; सायं, यह साये-वा दिनान्त का वाचक है, जैसे "सायंसंध्यामुपासिष्ये"; प्रगे-प्रातः-ये २ प्रभात-वा प्रातःकाल के वाचक है, जैसे "प्रगे नृपाणामथ तोरणाद्वहिः, यः पठेत्प्रातरुत्थाय"; निकषा, यह समीपार्त्थक है ॥ १९ ॥

पूर्व्वगत-पूर्व्व पूर्व्वगतवर्त्तमान वर्ष।	परुत्परार्य्यैषमो (ऽब्दे पूर्व्वे पूर्व्वतरे यति)।
आज।	[1] अद्या (ऽत्राह्न्य)
पूर्व्वगत दिनादि।	(ऽथ पूर्वे ऽह्नीत्यादौ पूर्व्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥ तथा ऽधरा ऽन्या ऽन्यतरेतरात्) पूर्व्वेद्युर् (आदयः)।
दोनों दिन।	[2] उभयद्यु (श्चो) [3] भयेद्युः
परदिन।	(परे त्वह्नि) परेद्यवि ॥ २१ ॥
गतदिन।	[4] ह्यो (गते)
आनेवाला दिन।	(ऽनागते ऽह्नि) [5] श्वः
परसों।	परश्वस् (तत्परे ऽहनि)।
तिस काल।	तदा तदानीं
एक समय।	[6] युगपद् [7] एकदा
सब दिन।	सर्व्वदा सदा ॥ २२ ॥

१ अद्य. २ उ-स. ३-स. ४-स. ५-स. ६-त. ७-ए.

बीते पूर्व्व वर्ष को परुत्, पूर्व्व से पूर्व्वगत वर्ष को परारि, और यति अर्थात् वर्त्तमान अब्द वर्ष को ऐषमः, कहते हैं, तीनों का उदाहरण, जैसे "परारिगतः कान्तः परुच्चागत एव-मोऽपि नागतः"; यति यह शत्रन्त इण् धातु के सप्तमी का रूप है; अत्र अह्नि आज के दिन को अद्य कहते हैं, जैसे "अद्य गन्तुञ्च शक्नोमि"; अथ पूर्व्वेह्नि इस आदि शब्द से उत्तरेह्नि इस आदि पद या ६ का ग्रहण है, पूर्वेह्नि इस आदि अर्थ में पूर्व्व आदि शब्दों से (एद्युस्) प्रत्यय करने पर पूर्व्वेद्युः आदि ७ शब्द होते हैं, क्रम से जैसे, "पूर्वस्मिन्नहनीत्यर्थे पूर्वेद्युः, पूर्वेद्युरिष्यते प्रातः, पूर्व्वेद्युः पूर्व्ववासरे इति रुद्रः", २उत्तरस्मिन्नहनि उत्तरेद्युः नान्दीमुखादुत्तरेद्युर्व्विवाहः परि-कीर्त्तितः, "३ अपरस्मिन्नहनि अपरेद्युः, आगतान परेद्युस्तान्" ४ अधरस्मिन्नहनि अधरेद्युः, "अधरेद्युः प्रसूता सा अधरस्तु पुमानोष्ठे हीने ऽनूर्द्धे च वाच्यवत्" ५ अन्यस्मिन्नहनि अन्येद्युः, "अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं"; अन्यतरस्मिन्नहनि अन्यतरेद्युः, "अन्यतरेद्युः पितरं द्रक्ष्यसि" ७ इत-रस्मिन्नहनि इतरेद्युः कष्टदिनादितरेद्युः प्रियो द्रष्टव्यः", ॥ २० ॥ उभयद्युः, उभयेद्युः, ये २ दोनों दिन के नाम हैं, "उभयद्युः उपपोषणं"; परेद्यवि यह एक पर दिन का नाम है, "मित्रं दृष्टं परेद्यवि"; ॥ २१ ॥ ह्यो-काल्ह-एक बीते दिन का नाम है, "ह्यः सर्व्वमभवत्कार्य्यं"; श्वः, यह एक आने वाले दिन का नाम है, फिर दूसरे दिन को परश्वः, कहते हैं, (परसों) श्वःऔर परश्वः, या परःश्वः जैसे "अद्य श्वो वा परश्वो वा सर्व्वं कर्म भविष्यति"; तदा, तदानीं-ये२ उस काल के नाम हैं, "जैसे तदा चक्षुष्मतां प्रीतिः, यदा स्यात्प्रियसङ्गस्तदानीमेव मे सुखम्"; युगपत्, एकदा, ये २ एक समय वा (टाइम) के नाम हैं, जैसे "शत्रुमित्रोदासीनाः युग-पदागताः, सर्व्वागतमेकदा दत्तं"; सर्व्वदा-सदा-ये २ सर्व्व काल के नाम हैं "सर्व्वदा सर्व्वदा-ऽस्तीति याचते याचकः सदा"; ॥ २२ ॥

अब-वा इस काल।	एतर्हि सम्प्रती दानी मधुना साम्प्रतं (तथा)।
पूर्व्व-उत्तर-पश्चिम।	(दिग्देशकाले पूर्व्वादौ) प्रागुदक्प्रत्यग् (आदयः) ॥ २३ ॥

॥ इत्यव्ययवर्गः ॥

॥ अथ लिङ्गसङ्ग्रहवर्गमाह ॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः।
अनुक्तैः संग्रहो लिङ्गं संकीर्णवदिहो न्नयेत् ॥ १ ॥

१-ति, इ-म्. २ अ-. ३-क् (च्). ४ उ-च्. ५-क् (च्).

एतर्हि संप्रति, इदानीं, अधुना, सांप्रतं, ये ५ इस काल-वा अब के वाचक हैं, जैसे "एतर्हि क्रियते कार्य्यम्, सम्प्रत्यसौ गृहं याति, इदानीमस्मि संवृतः, बलाबलेयादधुना, तत्रास्ते साम्प्रतं मुनिः"; तथा, समुच्चयार्थक है; पूर्व्व आदि दिशा, पूर्व्व आदि देश, पूर्व्व आदि काल, इन के वाचक प्राक् आदि हैं, जैसे "दिशा प्राक् आदि, देश प्राक् वा पूर्व्व देश आदि, काल प्राक्काल वा पूर्व्व काल इस आदि", पूर्व्वादौ इस आदि शब्द से उत्तर-पश्चिम-दक्षिण-अधर-ऊर्ध्व-आदि का ग्रहण है, और प्रत्यगादयः इस आदि शब्द से तो उदक् (च्), प्रत्यक् (च्), अवाक् (च्) आदि का ग्रहण है, "उत्तरात्-अधरात्-दक्षिणात्-उत्तरेण-अधरेण-दक्षिणेन-दक्षिणा-दक्षिणाहि-दक्षिणतः-उत्तरतः भी संग्रह किये जाते हैं, ऊर्ध्वे तू उपरि-उपरिष्टात्-अधस्तात्-ये होते हैं, ॥ २३ ॥ ॥ इति अव्ययवर्गः

॥ अब लिङ्गसंग्रह वर्ग कहते हैं ॥

सलिङ्गशास्त्रैः पाणिनि आदि से कहे लिङ्गानुशासन के सहित सन् आदि प्रत्ययों से उत्पन्न चिकीर्षा आदि शब्दों से, कृदन्त से उत्पन्न श्वपाक आदिकों से, तद्धित प्रत्यय अण आदि से उत्पन्न, समासजैः अदन्तोत्तरपदोद्विगु इस आदि से और वाहुल्य से पहिले अनुक्त शब्दों से संग्रह किये जाते हैं. यहां इस संग्रह वर्ग में लिङ्ग का ज्ञान किस प्रकार करें, इस पर कहते हैं, संकीर्णवत् यह, जैसे संकीर्णवर्ग में प्रकृति आदि से जाने जाते हैं, इसी प्रकार यहां भी जाने, तिनमें प्रकृत्यर्थ से जैसे, अर्द्धर्चाः पुंसि च यह, प्रत्ययार्थ से जैसे, स्त्रियां क्तिन्, प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः इस आद्य शब्द से क्रियाविशेषणों को नपुंसकत्व और एकवचनत्व होता है, जैसे, शोभनं पचति, इस आदि ॥ १ ॥

लिङ्गं शेषविधि-र्व्यापी विशेषैर्य्यद्यबाधितः ।

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्

सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

नाम विद्यु-न्निशा-वल्ली-वीणा-दि-ग्भू-नदी-ह्रियाम् ।

अदन्तै-र्द्विगुरेकार्थो न च पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

तल्वृन्दे ये-नि-कट्य-चा वैर-मैथुनिका दिवुन् ।

सन्नादि-कृत्-तद्धित-समास-से उत्पन्न विषय पूर्व्वोक्त शब्द के लिङ्ग से अन्य लिङ्ग, लिङ्ग-शेष है उस की विधि उत्सर्ग होने से काण्डत्रय का व्यापक है, जो पूर्वोक्त और यहां के कहे विशेष विधियों से बाधित न होवे, तभी व्यापक होता है, क्योंकि अपवाद विषय छोड़ कर उत्सर्ग सर्व्वत्र प्रवृत्त होता है इस कहने से लिङ्ग विशेष विधि को जो उत्सर्ग भूत का स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद हैं, तिन में पहिले के कहे हुये विशेषों को फिर कहने के दोष के और विस्तार के डर से फिर यहां विधान नहीं है, स्वर्ग पर्य्याय यहां पुल्लिङ्ग कहेंगे, उस्का द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लिवे त्रिविष्टपं यह पूर्व्वोक्त अपवाद है, और नी प्रभृतिकों के तो कृतः कर्त्तरि इस आदि से कहेंगे, यद्यपि पहिले लिङ्ग कहा है, तथापि अप्राप्त के प्रापणार्थकता से लिङ्गानुशासन यहां भी प्रधान ही है, स्त्रियां इस का अधिकार मसी शब्द पर्य्यन्त जानना चाहिये; ईदूतौ ईकार और ऊकार विराम अर्थात् अवसानस्थ हैं जिन के वे ईदू द्विराम हैं वे और एकाच ये दोनों ईदू द्विरामैकाच हैं, ईदन्त ऊदन्त वा जो एकस्वर शब्द स्वरुप हैं वे स्त्री लिङ्ग हैं यह अर्थ है, जैसे, धीः, श्रीः, भूः, भ्रूः, नयतीति नीः, इन आदि में कृतः कर्त्तरि इस के बाध होने से वाच्यलिङ्गत्व हैं, योनिः भग है इस के सहित प्राणियों के नाम स्त्रियां, वा स्त्री लिङ्ग हैं, जैसे, माता-दुहिता-धेनु-इन आदि, दार शब्द आदि में तो "दाराः पुंभूम्नीति" यह बाधक पहिले कह चुके हैं, कलत्रं और गृहं शब्द को कलत्रं श्रोणिभार्य्ययोः यहां का क्लीब पाठ बाधक है, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार करलेना चाहिये, ॥ २ ॥ विद्युत् आदि ह्री शब्द पर्य्यन्त आठ शब्दों को जो नाम अर्थात् संज्ञा हैं, वे स्त्री लिङ्ग हैं, जैसे, विद्युत्, तड़ित्, रात्रिः, रजनिः, वल्ली, व्रततिः, वीरुत्, वीणा, विपञ्ची, इस आदि, "वीणा-दिग्-भू-नदी-धी, यह भी कहीं पाठ है", अदन्तैः मूल आदि शब्दों से जो एकार्थ हैं समाहारार्थ हैं और द्विगु समास हैं, वे स्त्री लिङ्ग हैं, जैसे, पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली", इसी प्रकार, त्रिलोकी, षड्ध्यायी, इस आदि, च पुनः पात्र-युग-आदि उत्तरपद ऐसे अदन्त शब्दों के साथ एकार्थ द्विगु समास को स्त्री लिङ्गत्व नहीं है जैसे पंचपात्रं, चतुर्य्युगं, त्रिभुवनं, ॥ ३ ॥ भाव आदि अर्थ में विहित तल् प्रत्यय स्त्री लिङ्ग में होता है, तहां भाव अर्थ में जैसे, शुक्लता, कर्म्म अर्थ में, ब्राह्मणता, समूह अर्थ में, ग्रामता, स्वार्थ में देवता, वृन्दे समूह अर्थ में य-इनि-कट्यच्-त्र-ये ४ प्रत्यय स्त्री लिङ्ग में होते हैं, जैसे, पाशादिभ्योयः, पाशानां समूहः पाश्या, वात्या, खलादिभ्यः इनिः, खलिनी, पद्मिनी, रथादिभ्यः कट्यच्, रथकट्या, इस रीति गोत्रा, वैर मैथुन आदि अर्थ में जो वुन प्रत्यय है सो स्त्रीलिङ्ग है, तिन में वैर विरोधार्थ में जैसे, अश्व महिष का, अश्व और महिषका यह वैर है, इस भांति काकोलूकिका, मैथुनिका अर्थ में जैसे, अत्रि भरद्वाजिका, अत्रि भरद्वाज को यह मैथुनिका विवाहरूप सम्बन्ध, इसी प्रकार "कुत्सश्च कुशिका च तयोर्मैथुनिका, कुत्सकुशिकिका", वुन् ग्रहण वुञ्-वुण्-वा वुञ्-अक्-इका-आदि का उपलक्षण है, जैसे काशिका, गार्गिकया श्लाघते, कहीं वु भी पाठ है', आदि पद से वीप्सा आदि में वुन का ग्रहण है; ।

अनि-क्तिन्-आदि ।	स्त्रीभावादावनिक्तिण्ण्वुल्ण्वच्ण्वुच्क्यब्युजिञङ्निशाः॥४॥
नि-ऊ-ई ।	उणादिषु निरूरीश्च
ङी-आप् वा आङ् आदि ।	ङ्याबूङन्तं चरं स्थिरम् ।
मूठी आदि से प्रहारणार्थक ।	तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवा णदिक् ॥ ५ ॥

"स्त्रियां भावादिः स्त्रीभावादिस्तस्मिन्" स्त्रियां इस का अधिकार कर भाव आदि अर्थ में जो विहित प्रत्यय अनि-क्तिन्-(ति) आदि हैं वे स्त्री लिङ्ग अर्थ में होते हैं, अनि जैसे "आक्रोशे नञ्यनिः" इस सूत्र से अनि प्रत्यय होने से, अकरणिः, अजीवनिः, क्तिन् से, स्मृतिः, कृतिः, गतिः, ण्वुल् से, जीविका प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका, णच् से, व्यावक्रोशी, स्वार्थिका द्राहा, ण्वुच् से, शायिका, इक्षुभक्षिका क्यप् से ब्रह्महत्या वज्या, इज्या, "स्त्रीभावादौ क्यों कहा, मपीठ्यं, ब्रह्मभूयं" यहां दोप आवेगा, युच से, कारणा, आसना, मण्डना, इञ् से, वापिः, वासिः, कां कारिमकार्पीः, इञ् यह, इण् इक् का उपलक्षणार्थक है जैसे, आजिः, कृपिः, अङ् से, पचा, त्रपा, भिदा, नि से, ग्लानिः, म्लानिः, हानिः, श प्रत्यय से, चिकीर्षा क्रिया, इच्छा, ॥ ४ ॥ उणादिकों में निः-ऊः-ईः-ये ३ प्रत्यय स्त्री लिङ्ग में हैं, तिन में नि प्रत्ययान्त से, श्रेणिः, "श्रोणिः, द्रोणिः, उणादि में अनिः इस पाठ में, अनिः जैसे, अवनिः, धरणिः, धमनिः, सरणिः" ऊदन्त जैसे, चमूः, कर्पूः, ईदन्त जैसे, तन्त्रीः, "तरीः लक्ष्मीः", ङ्यन्तं आबन्तं (ङी, आप्-वा आङ्) ऊङन्तं-और जो चरं-जंगम हैं, वा जो स्थिरं स्थावर हैं वे स्त्री लिङ्ग हैं जंगम जैसे, नारी, शिवा, ब्रह्मबधूः, स्थावर जैसे, कदली, माला, कर्कन्धूः, तत् क्रीडायां यहां के तत् शब्द से यहां मौष्ट्यादिक का निर्द्देश है, तिस से यह अर्थ है, वह मुष्ट्यादिक प्रहरण अर्थात् मारना जो क्रीड़ा वा खेल में होय तो उस अर्थ में विहित ण प्रत्यय स्त्री लिङ्ग में है, दिक् इस पद से उक्तोदाहरण की अभिलाषा है, जिस से दंडा मौसला यह उदाहरण के योग्य हैं मुष्टी से प्रहार करना जिस क्रीड़ा में है उसे मौष्टा "वा मौष्ट्या" और पल्लव हाथ वा पत्ते से मारना जिस क्रीड़ा में है उसे पाल्लवा, कहते हैं, ॥ ५ ॥

घञ् काञ् ।

घञोञः साक्रियास्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
श्येनम्पाता हि मृगया तैलम्पाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥
स्त्रीस्यात्का चिन्मृणाल्यादि-र्विवक्षा ऽपचये यदि ।
लङ्का[1] शेफालिका टीका धातकी पञ्जिका ढकी ॥ ७ ॥
सिध्रका[2] सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गा-सूचि-माढय[3]: ॥ ८ ॥
पिच्छा[4]वितण्डा काकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत् ।

'१ आ-. २ उ-. ३ माढि. ४-णी वा नी.

यह घञन्त वाच्य दण्डपात आदि क्रिया इस फाल्गुनी आदि के अर्थ में घञंत से विहित जो ञ प्रत्यय है सो स्त्री लिङ्ग में है, उदाहरण, "दण्डपातो अस्यां फालगुन्यां दांडपाता फाल्गुनी", इसी प्रकार, "श्येनपातो ऽस्यां श्येनं पाता, श्येनपाता मृगया, तिलपातो ऽस्यां स्वधा क्रियायां तैलंपाता" "(पितृदाने स्वधा मतमित्यमरमाला, वर कचिना तु स्वधा क्रिया प्रयेमीति स्त्रीलिङ्गता उक्ता)" इति शब्द से, "मुसलपातो ऽस्यां मौसलपाता, भूमिः" इस आदि सिद्ध होते हैं, किसी देश में फाल्गुन महीने की पूर्णिमा को दण्ड से वा लाठी से क्रीड़ा होती है इस लिये "दाण्डपाता आदि उदाहरण भी होते हैं; ॥ ६ ॥ यदि जो अपचये अर्थात्" अल्पत्व के कहने की इच्छा होय तो मृणाली, आदि शब्द स्त्री लिङ्ग हैं, जैसे "अल्पं मृणालं मृणाली" आदि शब्द से जैसे, "ह्रस्वो वंशोवंशी" गौरादि मान कर ङीप प्रत्यय होता है, इसी भांति कुम्भी-प्रणाली-छत्री-पटी-मठी-आदि-ये भी हैं, "ह्रस्वार्थे कन प्रत्ययः स्त्रियां" होने पेटिका, काचित् यह क्यों कहा, "यहां दोष पड़ता है जैसे, अल्पो वृक्षो वृक्षक इस आदि स्त्री लिङ्ग नहीं हैं"; ॥ अब आवृडन्तं इस आदि से कहे लिङ्गवालों में से किसी शब्दों के भी सुख से लिङ्गज्ञान के हेतु, भिन्नकान्त और पान्तादि क्रम से कहते हैं, १ लङ्का-राक्षसपुरी-२ शेफालिका-फूल के भेद-वा वृक्ष भेद-(निर्गुंठी-निरसा-यह प्रसिद्ध है, ३ टीका- कठिन पद की व्याख्या-४ धातकी-वृक्ष भेद-(धंवरा यह प्रसिद्ध है)-५ पञ्जिका-(शेष पद की व्याख्या)-६ आढ़की-तुरई प्रसिद्ध है, ॥ ७ ॥ "सिध्रका वृक्ष भेद-२ सारिका पक्षि भेद-वा (मयना) ३ हिक्का स्वर भेद-वा हुचकी वा (हुक्क यह प्रसिद्ध है) ४ प्राचिका प्राचिका भी; वन की मक्खी वा "पक्षि भेद इति स्वामी-" ५ उल्का तेज का समूह-६ पिपीलिका कीड़े का भेद-(चिउंटी-वा चिउंटा भी) "शनैर्यातिपिपीलकः, यह स्वामी के मत से पुल्लिङ्ग भी है" ७ तिन्दुकी वृक्ष भेद-वा (तिन्दुआ यह प्रसिद्ध है. ८ कणिका परमाणु-९ भङ्गिः कुटिलता का भेद-वा टेढ़ाई १० सुरंगा बिल-सुरङ्ग यह प्रसिद्ध है, ११ सूचिः सूई-वा व्यधनी-"(स्त्री सूचिर् नृत्यभेदे च व्यधनी शिखयोरपीति रत्नकोशः)" १२ माढिः, पत्ते का सिरा-डेपुनी यह प्रसिद्ध है, ॥ ८ ॥ १ पिच्छा शेमर यह प्रसिद्ध है २ वितण्डा वाद भेद-३ काकिण्यः-वा काकिणी पण का चौथा भाग वा कौड़ी-४ चूर्णिः, वा चूर्णी, चूर्णिका; शाणी, शण-पट विशेष है, द्रुणी, कर्णजलौका, वा कछुही, दरत्, म्लेच्छ जाति; ।

दान-कथरी-आस-नी-राजसभा ।	सातिः[1] कन्था (तथा) ऽसन्दी नाभी राजसभा (ऽपि च) ॥९॥
झालरी-आदि ।	झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा (च) सिध्मला ।
लाख आदि ।	लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥
	* ॥ इति स्त्रीलिङ्गसङ्ग्रहः ॥ *

१ आ-.

१ सातिः दान, और अवसान को कहते हैं; २ कन्था प्रावरणान्तर-वा दूसरा बिछौना, "कंथा मृन्मयभित्तौ च तथा प्रावरणान्तर इति मेदिनी"; ३ आसन्दी, आसन का भेद-वा बेंत का आसन-वा कुर्सी; ४ नाभी-वा नाभिः, शरीर का अंग विशेष-वा ढोंढ़ी ५ राजसभा, राज्ञां सभा, राजों की सभा, वा कचहरी यह प्रसिद्ध है; ॥ ९ ॥ १ झल्लरी, बाजा का भेद-वा झालरि यह प्रसिद्ध है, "झलरी झल्लरी च द्वे हुडुक्के बालचक्रके इति मेदिनी" २ चर्चरी, कर शब्दः-वा हाथ का शब्द-वा हर्ष क्रीड़ा, बाजे ककटी, पढ़ते हैं, एक छोटा घड़ा", ३ पारी, वा वारी हाथी के पांव की रस्सी, ४ होरा, लग्न का आधा-वा लग्न, "होरा तु लग्ने राश्यर्द्धे शास्त्ररेखाप्रभेदयोरिति हेमः" ५ लट्वा ग्रामचटकः, चिड़ा वा चिड़ी-(गँवरैया वा)-"लट्वाकरञ्जभेदेस्यात्फले वाद्ये खगान्तरे इति मेदिनी" ६ सिध्मला, मत्स्यविकार-७ लाक्षाजतु-वा लाख-लाह प्रसिद्ध-८ लिक्षायुकाण्ड-वा परिमाण भेद-९ गण्डूषा, जल आदि से मुख पूर्ण, वा (कुल्ला प्रसिद्ध है) "(गंडूषो मुखपूर्त्तौ स्याद्गजहस्ताङ्गुलावपि । प्रसृत्या प्रमिते ऽपि स्यादिति हेमः, पुंस्यपि)"; १० गृध्रसी, वातरोग भेद, वह ऊरु की सन्धि में होता है, ११ चमसी यज्ञ के पात्र का नाम है, वा प्रणीता यह प्रसिद्ध है, ११ मसी, और भी पुं॰ मसिः, कज्जल, "मेलामसीजलं पत्राञ्जनं च स्यान्मसिर्द्वयोरिति त्रिकाण्डशेषः" ॥ १० ॥ इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

॥ अथ द्वितीय प्रकरण ॥

सुर-असुर-आदि ।	पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्य्यायाः सुरासुराः ।
स्वर्गादि ।	स्वर्ग-यागा-द्रि-मेघा-ब्धि-द्रु-काला-सि-शरा-रयः ॥ ११ ॥
हाथ-गाल-आदि ।	कर-गण्डौ-ष्ठ-दो-र्दण्ड-कण्ठ-केश-नख-स्तनाः ।
अन्हहान्त ।	अन्हाहान्ताः
विषभेद ।	क्ष्वेडभेदा
रात्रन्त ।	रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

अब पुल्लिंग संग्रह करते हैं, पुंस्त्वे इसका पतद्ग्रह शब्द पर्य्यन्त अधिकार है, भेदास्तुषित–साध्य आदि, अनुचराः–सुनन्द आदि–इनके सहित–सुर–असुर–देव–और दैत्य–के पर्य्याय के साथ पुल्लिङ्ग हैं, १ सुर पर्य्याय जैसे, "अमरा–निर्जरा देवा–मरुत–इत्यादयः" इनके भेद जैसे, "तुषिताः, साध्य–इन्द्रो मरुत्वान्मघवा–सूरः–सूर्य्यः–अर्य्यमा–हाहा–हूहूः–तुम्बुरुः" इस आदि, २ अनुचराः जैसे विष्णु के अनुचर, जय–विजय–प्रभृति, रुद्र के अनुचर, नन्दिकेश्वर आदि, इसी प्रकार–असुर पर्याय दैत्य–दानव इस आदि–इनके भेद–बलि–नमुचि आदि, असुर के अनुचर–कुष्माण्ड–मुण्ड–आदि, इस भांति सब स्थान में जानना, इनके भी दैवतानि पुंसि वा देवता स्त्रियां" इस आदि बाधक को स्मरण करावेंगे–"अबाधिताः" इन वक्ष्यमाण से; स्वर्ग आदि १६ अपने भेद और पर्य्याय के सहित–पुल्लिङ्ग हैं, १ स्वर्ग पर्य्याय जैसे, "स्वर्गो नाकः–त्रिदिवः" इस आदि का द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपं, यह बड़ा बलवान् बाधक है इस के बिना पुल्लिङ्ग हैं, २ यागो यज्ञः वा मखः–क्रतुः–इन के भेद–अग्निष्टोम–वाजपेय–आदि इनको बाधकत्व कहेंगे, ३ अद्रिः–गिरिः–वा पर्व्वत, इनके भेद जैसे मेरु–सह्याद्रि–आदि–इनके मध्य में अपवाद है सो शैलवर्ग में कहचुके हैं, ४ मेघो घन–वा बादल–इस आदि पर्य्याय हैं–भेद आवर्त्त आदि–अभ्र का तो अभ्रं मेघः यह क्लीब पाठ बाधक है, ५ अब्धिः समुद्र का पार्य्याय–भेद क्षीरोद आदि, ६ द्रुः वृक्ष–शाखी आदि पर्य्याय–और–वट–पीपर–आदि भेद हैं, यहां भी कहीं रूप भेद आदि से, (पाटला शिंशपा) आदि में अपवाद कहा है, ७ कालो दिष्टः समयः–इस प्रकार पर्य्याय हैं, और मास आदि भेद हैं, ८ असिः खड्गः नन्दक आदि भेद–(इत्यादौ बाधः), ९ शरो बाण, भेद नाराच् आदि –"इषुधिर्द्वयोरिति विशेषो दर्शितः" १० अरिः शत्रु–भेदश्च ततार्ई आदि, ॥ ११ ॥ १ करः राजग्रहण के योग्य भाग–रश्मिः और पाणिः–दीधिति आदि को तो पुंस्त्व बाधित है, २ गण्डः कपोल–वा गाल, ओष्ठः वा दन्तच्छद–दशन–वसन आदि तो रूप भेद से बाधित हैं, ३ दोः प्रकोष्ठः–भुज बाह्वोस्तु द्वयोरिति विशेषः, दंतः, वा दण्डः–भेदजंभ, कण्ठः गल–"सन्निधानभेदेषु कंठं त्रिषु विदुर्बुधा इति शाश्वतः" केशः कचः–वा बार–बाल, नखः कररुहः, "नखो ऽस्त्रीत्यादिना बाधितं" स्तनः कुचः, ये सब यथा सम्भव सभेद और पर्य्याय पुल्लिङ्ग हैं; १ अन्हः अहश्च ये हैं अन्त में जिनके वे पुल्लिङ्ग हैं, जैसे, अन्हः पूर्वं पूर्व्वान्हः, "अन्हः परं परान्हः" द्वे अहनी समाहृते द्व्यन्हः, २ क्ष्वेडभेदाः विष विशेष पुंस्त्व है, जैसे सौराष्ट्रिकः, यहां गरलं विषं पुंसि और क्लीब में हैं, "काकोलं इस आदि में बाधित हैं' ३ रात्रान्ताः यह समासान्त के एकदेश का अनुकरण है, इसी प्रकार आगे भी, रात्र शब्द है अन्त में जिनके वे जो प्राक् असंख्यावाचक शब्द हों तो पुंसि हैं, जैसे अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः, सर्वरात्रः, पूर्व्वरात्रः, अर्धरात्रः, अपररात्रः, प्राक् असंख्यका यह क्यों कहा, पंचरात्रं, गणरात्रं, इन में दोष होगा, पुण्यरात्र को अर्द्धर्च्चादि पाठ से क्लीबत्व भी हैं, ॥ १२ ॥

सरलादि ।	श्रीवेष्टाद्याश्च निर्य्यासा
असन्त अचन्त ।	असन्नन्ता अवाधिताः ।
कशेरु लाखादि ।	कशेरु जतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ।
	क-ष-ण-भ-म-रो-पान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।
	प-थ-न-य-स-टो-पान्ता
	गोत्राख्याश्च
	चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥
	नाम्न्यकर्त्तरिभावे च घञ्-ज-ब्-नङ्-ण-घा-थुचः ।

१ श्रीवेष्ट आदि ये निर्य्यास हैं अर्थात् द्रव वा गोन–वा सार वाचक हैं वे पुल्लिङ्ग हैं, श्रीवेष्टः सरल–वा धूप काष्ठ, "श्रोपिष्टः भी कहीं पाठ है, आद्य शब्द से श्रीवास–वृक्ष धूप आदि –च शब्द से गुग्गुल आदि–२ असन्त अचन्त पुल्लिङ्ग हैं, असन्त जैसे, अंगिराः–वेधाः–चन्द्रमाः अचन्त जैसे–कृष्णवर्त्मा–मघवा—आदि, "अवाधिताः" क्यों कहा, अप्सरसः, जलौकसः, सुमनसः, इदं वयः, इदं लोम, "तुश्चरुश्चतुरु" ये दोनों विराम अर्थात् अन्त में हैं जिन के वे तुरुविरामकाः कहलाते हैं, कशेरु–जतु–वस्तु–इनको छोड़ कर तु शब्दान्त और रु शब्दान्त पुलिङ्ग हैं, जैसे, हेतुः–सेतुः—धातुः–मन्तुः–तन्तुः– इस आदि, कुरुः–मेरुः–किंशारुः–इस आदि, कशेरु आदि उपलक्षण हैं दारु श्मश्रु प्रभृति का तिन में कशेरुः, अस्थि विशेष–वा तृण विशेष, जतुलाक्षा वा लाही, ॥ १३ ॥ क ष ण आदि ६ वर्ण उपान्ते अन्त्य के समीप में है जिन के वे, तैसे यदि ये क आदि वर्ण षट्क उपान्त अदन्त हैं तो पुल्लिङ्ग में होते हैं, जैसे अंकः, लोकः, स्फटिकः, शुल्क–वल्क– आदि तो बाधित हैं पहिले ही, ओष प्लोष माष त्यक्ष आदि षोपान्त हैं, वर्षा आदि शब्द तो पहिले ही बाधित हैं, पाषाण गुण किरण आदि णोपान्त शब्द, विषाण आदि से बाधित हैं, कौस्तुभ–दर्भ–शलभ–आदि भोपान्त हैं, कुसुम्भ आदि से बाधित हैं, होम–याम–व्यायाम–गुल्म–आदि मोपान्त, "पद्मादेर्वा पुंसि" इस आदि से बाधित हैं, झर्झर सीकर–सीर–प्रभृति रोपान्त हैं, अजिर आदि का वाधक हैं, रादि वर्ण षट् को पान्त शब्द अबाधित हैं तो पुल्लिङ्ग हैं, यहां यदन्ता इस पूर्वोक्त का सम्बन्ध नहीं है, अथादित्व से, पकारोपान्ता जैसे, यूप–वाष्प–कलाप आदि, कुतप आदि बाधित हैं, थकारोपान्त–वेपथु– रोमन्थ–आदि नोपान्त–इन–घन–भानु–आदि–वनादि तो वाधित हैं, योपान्त–आय –व्यय–जायु–तन्तुवाय आदि, मृगया आदि तो बाधित हैं, सोपान्त रस–हास–आदि विस आदि वाधित हैं, टोपान्त पट–घट आदि, किरीट आदि को वाधकत्व कहा है; गोत्रं वंश में आख्या संज्ञा है जिन की वे गोत्राख्य ऋषि संज्ञक हैं, गोत्र के आदि पुरुष ये प्रवराध्याय में पढ़े हैं, और ये अन्य अपत्य प्रत्यय के बिना गोत्रवाचित्व से लोक में प्रसिद्ध हैं वे पुल्लिङ्ग हैं, जैसे भरद्वाजः गोत्रमस्माकम्, इस प्रकार कश्यप वत्स प्रभृति. चरण के और वेदः शाखा के नाम वाली संज्ञा पुल्लिङ्ग हैं, जैसे कठः, बह्वृचः, इत्यादि, ॥ १४ ॥ नाम्नि संज्ञा में और अकर्त्तरि चकार के भाव मात्र में भी विहित घञ आदि सात प्रत्ययान्त पुल्लिंग हैं, भावेच इस चकार से असंज्ञा में भी घञ गृहीत है, घञन्त जैसे, प्रासीदन्ति मनांस्यस्मिन् प्रासादः, "प्रास्यते इति प्रासः, विन्दति अनेन वेदः, प्रपतति अस्मादिति प्रपातः" भाव में जैसे, पाकः, त्यागः, अच् जैसे, जयः, चयः, नयः, अप् जैसे, करः, गरः, लवः, स्रवः, नङ जैसे, यज्ञः, प्रश्नः, याञ्चा यहां पुंस्त्व बाधित है, नङ उपलक्षण है, स्वपोन न, स्वप्नः, ण प्रत्यय जैसे, न्यादः, घ प्रत्यय जैसे, उरश्छदः, अथुच् जैसे, वेपथुः ।

१ ल्यु-२ मनिच्-क-आदि ।	ल्युः कर्त्तरी मनिज् भावे को घोः किः प्रादितो ऽन्यतः ॥१५॥
	द्वन्द्वे ऽश्व वडवावश्ववडवा न समाहृते ।
	कान्तः सूर्य्येन्दु पर्य्याय पूर्व्वायः पूर्व्वको ऽपि च ॥ १६ ॥
	वटक (श्चा) ऽनुवाक (श्च) रल्लक (श्च) कुटुङ्गकः ।
	पुंखो न्युङ्खः समुद्ग (श्च) विट-पट्ट-घटाः खटः ॥ १७ ॥

ल्युः प्रत्यय कर्त्ता में नंद्यादित्व से पुल्लिङ्ग में होता है, जैसे नन्दनः, रमणः, मधुसूदनः; भाव में पृथ्वादिभ्योयः इमनिच् है वह पुल्लिंग है, जैसे पृथोर्भावः प्रथिमा, महिमा, भावे ऐसा योग करना, धृणोतीति धरिमा पृथ्वी, यहां का भावे यह शब्द देहली दीपकन्याय से पूर्व्व और पर में सम्बन्ध होता है, भाव में क प्रत्यय जैसे, आखूत्थः, प्रस्थः, प्रादितः और अन्यतः से पर जो घु संज्ञक धातु है उससे विहित जो कि प्रत्यय है सो पुल्लिङ्ग है, दाप् दैपो विना-दारूप और धारूप भी धातु घु संज्ञक हैं, प्रादितः, जैसे प्रधिः, निधिः, आदिः, अन्यतो जैसे जलधिः, "इषुधेस्तु द्वयोरिति बाधितत्त्व है", ॥ १५ ॥ द्वन्द्वे समाहार संज्ञक से अन्यत्र समास द्वंद्व संज्ञक में अश्ववडवौ पुंसि है. आप उदाहरण देते हैं, अश्वाश्च वडवाश्च अश्ववडवाः, इसी रीति, अश्ववडवान्, अश्ववडवैः, इस आदि प्रयोग, समाहारे तु अश्ववडवम्, यह क्लीब है, सूर्य्य चन्द्र के पर्य्याय पूर्व्वक कान्त शब्द पुंसि है, जैसे सूर्य्यकान्तः, अर्क्ककान्तः, चन्द्रकान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः, अयो वाचक अर्थात् लोह वाचक पूर्व्वक भी कान्त शब्द पुंसि है जैसे, अयस्कान्तः, लोहकान्तः; ॥ १६ ॥ अब पुल्लिङ्ग विशेष पर्य्यन्त अनुक्त और अकारान्तादि क्रम से कहा है, १ वटकः पिष्टक भेद- वा (वरा) २ अनुवाकः-वेद का अवयव-वा भाग, ३ रल्लकः कम्बल-वा कमरा प्रसिद्ध है, ४ कुटुङ्गकः, वा कुटङ्गकः, वा कुडङ्गकः, वृक्षलता का समूह, ५ पुंखः बाण का अवयव, ६ न्युङ्खः "न्यूङ्खः भी सामवेद में धरा ओंकार -७ समुद्गः सम्पुट-वा डब्बा, ८ विटः धूर्त्त-वा ठग-९ पट्टः काष्ठ आदि का बना आसन विशेष-वा पाटा-पीढ़ा, १० घटः तुला, वा तराजू, ११ खटः अन्धकूप आदि-वा कफ-वा तृण-॥ १७ ॥

कोट २ अरहट ३वा कूआ ४ बज़ार आदि ।	कोट्टा-रघट्ट-हट्टा (श्च) पिण्ड-गोण्ड-चिपिण्ड (वत्) ।
१ गलगंड २ प्यटारी ३ लाठी ४ मुखरोग ५ घाव का चिह्न ६ घुन ।	गडुः करण्डो लगुडो वरण्ड (श्च) किणो घुणः ॥ १८ ॥
१ मसक २ बन्धे केश ३ हरारङ्ग-वा दिशा ४ पगुराना ५ सामवेद ६ बुल्ला ।	दृति[1]-सीमन्त-हरितो रोमन्थो-द्गीथ[2]-बुद्बुदाः ।
१ रोगभेद २ दशकोटि ३ पुष्प विशेष ४ जल विकार ५ बरा ६ पूआ ।	कासमर्दो ऽर्बुदः कुन्द-स्फेन-स्तूपौ (सः) पूपकौ ॥ १९ ॥

१—तृ. २ उद्—

१ कोट्टः, दुर्ग—पुर—क़िला—गढ़—वा कोट्टारः, २ अरघट्टः कूप भेद—महा कूप—वा उसके ऊपर बंधा जल के निकालने का काष्ठ, वा अरहट—पुरवट, "(कोट्टारो नागरे कूपे पुष्करिण्याश्च पाटक इति मेदिनी)" तव घट्टः घाटाङ्ग यह प्रसिद्ध है, ३ हट्टः क्रय विक्रय का स्थान—वा हटिया —बज़ार यह प्रसिद्ध है, ४ पिण्डः मट्टी आदि का समूह, ५ गोण्डः नाभिः,—वा नीचा जाति भेद— "गोंडः पामरजातौ च वृद्धनाभौ च संमत इति रुद्रः" गोड़ः— वा गेड़ः भी पाठ है, ६ चिपिण्डः—वा पिचण्डः—वा पिचिण्डः, उदर—वा पेट—"पिचिण्डउदरे पशोरवयवे पुमानिति मेदिनी" चिपिंडवत् यहां के वत शब्द से गड्वादिक शब्द भी पुल्लिङ्ग हैं यह बोधित होता है, ७ गडुः गलगंडः "गडुः पृष्ठगुड़े कुब्ज इति विश्वः" ८ करण्डः बांस आदि का बना भाण्ड का भेद, वा प्यटाढ़ी वा पुष्पभाजन, ९ लगुड़ः बांस आदि का दण्ड—वा लाठी, १० वरण्डः मुख का रोग—"वा बदन की व्यथा, अन्तरावेदि संघे चेति विश्वः" ११ किणो मास की गांठि का भेद—वह भी फावड़ा लाठी आदि के चलाने से हाथ आदि में स्पष्ट है, "व्रण और चिह्न को भी किणः" १२ घुणः काठ का कीड़ा वा घुन यह प्रसिद्ध है "घुणः स्यात्काष्ठवेधकः इति रत्नकोशः" ॥ १८ ॥ १ दृतिः, चाम का दोना वा मसक (भिस्ती का) "दृतिश्चर्मपुटे मत्स्येनेति मेदिनी" २ सीमन्तः केश वेश—वा चूड़ा गूथा हुआ—३ हरितः पलाश वर्ण वा हरियर प्रसिद्ध; "हरिद्दिशि स्त्रियां पुंसि हयवर्णविशेषयोः, अस्त्रियां स्यात्तृणे चेति मेदिनी"; ४ रोमन्थः, पशुओं का खाये को फिर खाना—(वा पागुर), ५ उद्गीथः, सामवेद "उद्गीथः प्रणवः सामवेदध्वनिरित्युक्तः", ६ बुद्बुदाः, जल का विकार ७ कासमर्दः वा काशमर्दः गुल्म भेद वा रोग भेद—८ अर्बुदः दशकोटि, "अर्बुदो मांसपिण्डे स्यात्पुरुषे दशकोटिषु इति मेदिनी" ९ कुंदः, पुष्प विशेष—वा औज़ार रखने का पात्र, वा शिल्प भाण्ड, १० फेनः, जलविकार— ११ स्तूपः, वटक आदि, ये २ और पूप—वा पूपकः—वा "पूप भी" बरा—पूआदि के नाम हैं ;॥ १९ ॥

१ घाम २ राजा-वा क्षत्री ३ मुर्दा ४ छूरा ५ व्यवहार पदार्थ।	आतपः (क्षत्रिये) नाभि-कुणप-क्षुर-केदराः ।
१ पानी की धारा २ बाण ३ अमिल बेतस ४ गोला ५ ईंगुर ६ देह ।	पूर-क्षुरप्र-चुक्रा-(श्च) गोल-हिङ्गुल-पुद्गलाः ॥ २० ॥
१ भूत २ माल ३ भालू ४ जाठरि ५ पटा-वा पीढ़ा-वा अस्त्र भेद ।	वेताल-मल्ल-भल्ला-(श्च) पुरोडाशो (ऽपि) पट्टिशः ।
१ कांजी २ हर्ष ३ कड़ाह ४ पीकदान।	कुल्माषो रभस-(श्चैव स) कटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

॥ * ॥ इति पुंलिङ्गसङ्ग्रहः ॥ * ॥

१ आतपः, सूर्य्य का प्रकाश-या उंजिआला, २ नाभिः, राजा विशेष-वा क्षत्रिये-क्षत्रिय वाची नाभि शब्द पुंसि है, ३ कणपः, "उसी प्रकार कुणपः, शवभेदः-त्यक्त प्राण, "कुणपः पूतिगन्धो शवोऽपि चेति मेदिनी" ४ क्षुरः, वपनद्रव्य-नाई का शस्त्र-(छूरा) वा पशु की खुरी, "क्षुरः स्याच्छेदनद्रव्ये कोकिलाक्षे च गोक्षुर इति मेदिनी" ५ केदरः, व्यवहार का द्रव्य-वा पदार्थ, ६ पूरः जलप्रवाह, "पूरः स्यादम्भसां वृद्धौ व्रणसंशुद्धिखाद्ययोरिति हैमः" ७ क्षुरप्रः, बाण का भेद-"क्षुरप्रः भी", ८ चुक्रः, शाक भेद, "चुक्रस्त्वाम्ले ऽम्लवेतसे इति हैमः" ९ गोलः, वर्तुल पिण्ड-वा गोल, १० हिंगुलुः, वा हिंगुलः, रागद्रव्य का भेद-वा रक्तवर्ण, ११ पुद्गलः वा पुद्धलः, आत्मा, "पुद्गलः सुन्दराकारे त्रिषु पुंस्यात्मदेहयोरिति मेदिनी", ॥ २० ॥ १ वेतालः, भूताधिष्ठितशव-२ मल्ल विशेष-३ शिव का अनुचर-४ द्वारपाल, २ मल्लः, बाहु युद्ध कुशल-वा माल प्रसिद्ध, ३ भल्लः, भालू, ४ पुरोडाशः वा पुरोडाः(स्) हविष भेद-"(पुरोडाशो हविर्भेदे चमस्यां पिष्टकस्य च। रसे सोमलतायाश्च हुतशेषे च कीर्त्तित इति विश्वः)" ५ पट्टिशः, अस्त्र भेद-"पट्टिशः पश दन्त्यान्त है मुकुटः", ६ कुल्माषः, वा कुल्मासः, अर्द्धस्विन्न यव-वा कुत्सित माष, "(कुल्माषं कांजिके यावके पुमान् इति मेदिनी)" ७ रभसः, हर्ष-२ वेग-३ उत्सुकता-४ वा पूर्व्वापर विचार, ८ सकटाहः, कटाह के सहित-कटाह शब्द भी पुल्लिङ्ग है, "कड़ाही नाम प्रसिद्ध है, "(कटाहो वर्त्तनादि पाकपात्रे ऽपि कर्परे। कटाहः कूर्मपृष्ठे च कूपे च महिषी स्त्रिया विति विश्वः)" ९ पतद्ग्रहः, निष्ठीवनपात्र वा (पीकदान) ॥ इति पुंल्लिंगशेषः ॥

॥ अथ तृतीय प्रकरण ॥

१ अन्य २ इन्द्रिय आकाश ३ वनादि।	द्विहीने ऽन्यच्च खा-रण्य-पर्ण-श्वभ्र-हिमो-दकम् ।
१ शीत २ उष्ण ३ मांसादि ।	शीतो-ष्ण-मांस-रुधिर-मुखा-क्षि-द्रविण-म्बलम् ॥ २२ ॥
१ फल २ सोना ३ तामा आदि ।	फल-हेम-शुल्व-लोह-सुख-दुःख-शुभा-शुभम् ।
फफूला-कमलादि।	जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥
कोटि आदि ।	कोट्याः शतादि संख्यान्याबालक्षानियुतं च तत् ।
	द्व्यच्कमसि सुसन्नन्तं यदनान्तमकर्त्तरि ॥ २४ ॥

द्विहीने स्त्री और पुरुष से हीन नपुंसक का अधिकार है वाह्लीक शब्द पर्य्यन्त, श्लोक-द्वय से प्राधान्य करके निर्द्दिष्ट खादि शब्द २६-अपने पर्य्यायों के सहित नपुंसक हैं, यहां अन्यत् इस बाधित से जो भिन्न हैं वे क्लीव हैं यह सावधान के अर्त्थ कहा, चकार से वस्त्र आभूषण का संग्रह है, १ खं, इन्द्रिय २ व्योम वा देह-३ शून्य-४ अभ्र-विन्दु-५ पुर-६ स्वर्ग-७ सुख भी, जैसे, छिद्रं नभः वियत् इत्यादि, २ अरण्यं-विपिनं-काननं-इस आदि, ३ पर्णं-पत्रं-वा पत्ता दलं इस आदि, "पर्णं पत्रे किंशुके चेति मेदिनी" ४ श्वभ्रं तु पातालं, ५ हिमं, प्रालेय-ठण्ढ, ६ उदकं, जलं-नीरं-पानी-इस आदि, ७ शीतं, शीतलं-इस आदि, ८ उष्णं, तीग्मं-इस आदि, शीतोष्णं गुणे क्लीवं तद्वति त्रिषु, "(शीतं हिमगुणे क्लीवं शीतलालसयोस्त्रिष्विति मेदिनी" उष्णो ग्रीष्मे पुमान्दक्षाशीतयोरन्यलिङ्गक इति मेदिनी)" ९ मांसं, पिशितं तरसं-इस आदि, १० रुधिरं, शोणितं, रक्तं-"(रुधिरोंगारके पुंसि क्लीवन्तु कुंकुमासृजोरिति मेदिनी)" ११ मुखं, वदनं-वक्त्रं-"(मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि संध्यन्तरे नाटकादेः शब्दे पिच नपुंसकमिति मेदिनी)" १२ अक्षि, नयनं-नेत्रं, १३ द्रविणं, धनं, इस आदि, "द्रविणं कांचनेधने, पराक्रमे बलेपि स्यादिति हैमः" बलं, शक्ति-सैन्य-आदि, शक्ति में जैसे बलं सूक्ष्ममित्यादि, सैन्यं चक्रमित्यादि ॥ २२ ॥ १ फलं, फलमात्रं-कपित्थं, इस आदि, "हलं भी" २ हेम, सुवर्णं, कनकं, इस आदि ३ शुल्वं ताम्रं इस आदि, ४ लोहं, कालायसं, इस आदि, ५ सुखं, शर्मशातं, इस आदि, ६ दुःखं तु कृच्छ्रं कष्टं, ७ शुभं, कल्याणं-कुशलं, इस आदि, ८ अशुभं, अकल्याणं, ९ जलपुष्पाणि, कुमुद-कमल-कल्हार-उत्पलानि आदि-१० लवणं, सैन्धवं, इस आदि, ११ व्यञ्जनं, तेमनं, निष्ठानं, इस आदि, "व्यंजनं श्मश्रुचिह्नयोः, तेमने ऽवयवे कादाविति हैमः"; व्यंजन विशेष से दधि-तक्र-आदि का ग्रहण है, १२ अनुलेपनं, कुंकुमं आदि, यहां बाधितादन्यत् ऐसा क्यों कहा, आकाशो, विहायाः, द्यौः, अटवी अरण्यानि इस आदि, इसी प्रकार अन्यत्र भी विचारना चाहिये, ॥ २३ ॥ कोट्याः कोटि शब्द के बिना जो शत आदि संख्या हैं वे क्लीव में होती हैं, "लक्ष शब्द वा विकल्प से क्लीव में है, पक्ष में स्त्री लिङ्ग है, "लक्षा नपुंसि संख्यायां क्लीवं व्याजशरव्ययोरिति मेदिनी" तत् शब्द से लक्ष का पर्याय नियुतं, यह अर्त्थ है, उदाहरण जैसे, "नियुतं-शतं-सहस्र-मयुत-मित्यादि", और भी, "शतं-सहस्र-मयुतं-नियुतं प्रयुतं मतं । स्त्रीकोटिरर्बुदमिति क्रमाद्दशगुणोत्तरमिति रत्नकोशः)" असन्त-इसन्त-उसन्त-और अन्नन्त जो द्व्यक्ष्च वा द्विस्वर हैं वे क्लीव में हैं, असन्त जैसे, पयः, मनः, इसन्त जैसे, सर्पिः, ज्योतिः, उसन्त जैसे, वपुः, यजुः, अन्नन्त जैसे, चर्म-शर्म्म-साम-नाम इत्यादि, इसी से क्लीवत्व सिद्ध था आगे जो मर्म्म शब्द का उपादान है सो इसके अनित्यत्त्व ज्ञापन के अर्त्थ है, तिस्से गुणांधकारशोकेषु तमो राहो पुमानयमित्यादि सिद्धं", अकर्त्तरि अर्त्थ में कर्त्ता से अन्यत्र जो अनान्तं अन यह अन्त में जिस्के हैं वे क्लीव में हैं, जैसे, गमनं, मरणं, दानं, करणं, वरणं, अकर्त्तरि क्यों कहा, इध्मव्रश्चनः कुठारः, नन्दयतीति नन्दनः, ॥ २४ ॥

त्र, स, ल, ।	त्रान्तं सलोपधं शिष्टं
रात्र ।	रात्रम्प्राक् संख्ययान्वितम् ।
पात्र ।	पात्राद्यदन्तैरेका-र्थो द्विगु-र्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥
	द्वन्द्वैकत्वा-व्ययीभावौ
पथि	पथः संख्या व्ययात्परः ।
छाया ।	षष्ठ्याश्छाया बहूनाञ्चे द्विच्छायं
सभा ।	संहतौ सभा ॥ २६ ॥

त्रान्तं, क्लीब में हैं जैसे, पात्रं-वहित्रं-मित्रं-वस्त्रं-गात्रं-यन्त्रं इस आदि, सकार और लकार उपधा अन्त्य से पूर्व वर्ण हैं जिनके वे क्लीब में हैं, सोपधं जैसे, वुसं, विसं, अन्धतमसं, लोपधं जैसे, कुलं, मूलं, इस आदि, शिष्टं यह जो प्रागुक्त से भिन्न है, वह भी और वह प्रागुक्त जो अबाधित हैं यह भी त्रान्तादिक क्लीब में है, शिष्टं क्यों कहा, पुत्रः-शत्रुः-हंसः-वंशः-पनसः-शालः, कालः-गलः, संख्या पूर्वक रात्र शब्द क्लीब है, (रात्राह्नाहाः पुंसि) इस सूत्र से पुंस्त्व प्राप्त था उसका यह अपवाद है, त्रिरात्रं, पंचरात्रं, संख्यया यह क्यों कहा, अर्द्धरात्रः, मध्यरात्रः, पात्र आदि अदन्त शब्दों से जो एकार्थ्य द्विगु समास है वह क्लीब है, पंचरात्रं, आदि पद से चतुर्युगं, लक्ष्यानुसारतः अर्थात् शिष्ट प्रयोग के अनुसार, इससे पंचमूली त्रिलोकी इत्यादि अपवाद हैं, एकार्थ्य क्यों कहा, पंचकपालः पुरोडाशः, द्विगु यह तद्धितार्थ है, ॥ २५ ॥ द्वन्द्व समास का एकत्व, और अव्ययीभाव समास क्लीब मे हैं, द्वन्द्वैक्यं जैसे, पाणिपादं, शिरोग्रीवं, मार्दंगिकपाणविकं, अव्ययीभाव जैसे, अधिस्त्रि, यथाशक्ति, उपगंगं, संख्या और अव्यय से परे पथ शब्द क्लीब में है, जैसे द्विपथं, त्रयाणां पथां समाहारस्त्रिपथं, चतुष्पथं, अव्यय से परे जैसे, विपथं, कापथं; संख्याव्ययादिति किं, धर्मपथः, योगपथः; पथः यह समासांत का अनुकरण है, समास में षष्ठी विभक्त्यन्त से परे जो छाया शब्द है सो क्लीब है, यह भी बहुतों की सम्बन्धिनी होय तो, जैसे, वीनां पक्षिणां छाया विच्छायम्, इक्षूणां छाया इक्षुच्छायं, बहूनां, ऐसा क्यों कहा, कुड्यस्य छाया कुड्यच्छायं, वा स्त्रियां यह तो कौमि, संहति समूह विषय में सभा शब्द क्लीब है, यहां भी षष्ठ्या इसका अनुवर्त्तन करते हैं, जैसे दासीनां सभा दासीसभं, नृपसभं, स्त्रीसभमित्यादि, संहतौ ऐसा क्यों कहा, दासीनां सभा दासीसभा, दासीगृहं, यह अर्थ है, ॥ २६ ॥

	शालार्थोपि पराराजा ऽमनुष्यार्थादराजकात् ।
	दासीसभं नृपसभं रक्ष:सभमिमा दिश: ॥ २७ ॥
उपज्ञा, और उपक्रम	उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।
	कोपज्ञं कोपक्रमादि
और भी कन्या ।	कन्योशीनरनामसु ॥ २८ ॥
	भावेनण कचिद्भ्यो ऽन्ये समूहे भावकर्म्मणो: ।
	अदन्तप्रत्यया:
अह ।	पुण्यसुदिनाभ्यां त्वह:पर: ॥ २९ ॥
	क्रियाव्ययानां भेदकान्ये कत्वे ऽप्य्
	उक्थ-तोटके ।

शालार्थ अर्थात् गृहार्थ—अपि शब्द से समुदायार्थ भी जो सभा शब्द हैं वे अराजकात् राज शब्द से वर्ज्जित और राजा मनुष्यार्थात् अर्थात् राजार्थक राजपर्य्याय और अमनुष्यार्थक रक्ष: आदि शब्द से और पष्ठ्यन्त से परे होंय तो क्लीव में हैं, "शालागृहं अर्थो ऽभिधेयो यस्या: सा शालार्था" राजपर्य्याय से, जैसे, ईन सभं, प्रभु सभं, अमनुष्यार्थ से जैसे, रक्ष: सभं, पिशाच सभं, अराजकात् क्यों कहा, राजसभा, "राजपर्य्याय के ग्रहण से यहां नहीं हुआ, चन्द्रगुप्तसभा, राज विशेष यह है", पष्ठ्या: यह क्यों कहा, नृपतिविषये सभा नृपतिसभा, नृणां पतिर्यस्यां सा चासौ सभा चेति वा नृपतिसभा, अमनुष्यार्थात् यह क्यों कहा, दासीसभा, दासीनां शाला इत्यर्थ:, इमा दिश: यह दासीसभं इस आदि क्रम से उदाहरण हैं, तिनमें दासीसभं यह समुदाय ही अर्थ में, शेष दो शाला औरसंहति अर्थ में हैं, ॥ ७७ ॥ उपज्ञा और उपक्रमान्त के आदित्व के प्रकाशन में उपज्ञान्त और उपक्रमान्त यह समास क्लीव में होता है, उदाहरण जैसे, "उपज्ञायते इति उपज्ञा, को ब्रह्मा तस्य उपज्ञा को पज्ञं प्रजा, कस्योपक्रम: कोपक्रमं लोक:", प्रजापति ने प्रथम बनाया था इससे उसीने आदि में प्रजा को जाना था, यह अर्थ है, उसी नरों के मध्य में पष्ठ्यन्त से पर कन्या क्लीव में हैं, जैसे, सौशमीनां कन्या सौशमिकंथं, उशीनरदेशवाची से अन्यत्र दाक्षिकंथा, नामसु यह क्यों कहा, वीरणकंथा, ॥ २८ ॥ चकार इत्संज्ञक है जिसका वह चित् है, "नश्चणश्चकश्च चिच्चन णकचित: तेभ्यो ऽन्ये" अर्थात् इनसे भिन्न जोतव्यक्त, आदि अदन्त धातु प्रत्यय भाव में विहित हैं वे क्लीव में हैं, तिनमें धातु प्रत्यय जैसे, भवितव्यं, भाव्यं, हसितं भुक्तं, नणक चित् क्यों कहा, प्रश्न:, न्याद:, आखूत्य:, वेपथु:, नणक यह घञ का उपलक्षण है, पाक:, भावे क्यों कहा, कर्म में दोष होगा, जैसे, "कर्त्तव्यो धर्मसंग्रह:," समूह अर्थ में, जैसे, भिक्षाणां समूहो भैक्षं, गार्भिणं, औपगवं, काकं, भाव में अदन्त जैसे, गोर्भाव: गोत्वं, शुचेर्भाव: शौचं, कर्म्मणि जैसे, शुक्लस्य कर्म शौक्ल्यम्, राज्ञ: कर्म राज्यं, चौर्य्यं तल प्रत्यय को तो स्त्रीत्व कहा है, पुण्य और सुदिन शब्द से पर: विहित समासान्त अहन् शब्द क्लीव में हैं, अन्हाहान्ता इस पुंस्त्व का अपवाद है, पुण्याहं, सुदिनाहं, सुदिन शब्द प्रशस्तार्थक है, ॥ २९ ॥ क्रिया और अव्ययों का भेदक वा विशेषण क्लीव और एक वचन में होते हैं. क्रियाविशेषण जैसे, मन्दमपचंति, सुखं तिष्ठन्ति योगिन:, सलीलं नृत्यन्ति बाला:, अव्यय विशेषण जैसे, रम्यं स्व:, सुखदं प्रात:, अब कितने कण्ठस्वर से कहा है, उक्थं साम भेद, तोटकं वृत्त भेद ; ।

चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटम्मर्म्मयोजने ॥ ३० ॥

राजसूयं वाजपेयं गद्य-पद्ये (कृतौ कवेः)।

माणिक्य-भाष्य-सिन्दूर-चीर-चीवर-पञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलं स्थालबाह्लकम्।

॥ इति नपुंसकसंग्रहः ॥

१ चोचं, त्वाये फल का शेष-वा तालफल, वा केला आदि के फल को भी कोई कहते हैं, "मोचं और मोटं भी" २ पिच्छं, गुच्छा—वा मोर की पोंछ-वा-चूड़ा-वा-लाङ्गूल-वा-शाल्मली वृक्ष-वा परम्परा-आदि, उक्तं उक्थं, और मुक्तं, ३ गृहस्थूणं, घर का खम्भा-वा थूनि ४ तिरीटं, वेठन-"वा शिरोभूषण" ५ मर्म सन्धिस्थान, वा हड्डियों के जोड़ का स्थान, ६ योजनं, क्रोशचतुष्टयं—वा चार कोस, "(योजनं परमात्मनि, चतुष्क्रोश्यां च योगे इति मेदिनी)" ॥ ३० ॥ १ राजसूयं—और वाजपेयं— ये २ यज्ञ के भेद— "राजा लतात्मकः सोमः सूयते ऽत्र राजसूयं, वाजं पिष्टं सुरापीयते—वा पेयमत्र वाजपेयं" ३ गद्यं, ४ पद्यं, ये कवेः कृतौ। अर्थात् कविकी वर्त्तमान रचना को गद्यं और पद समूह की रचना को पद्यं, श्लोकः, "(पद्यं श्लोके पुमान् शूद्रे पद्यावर्त्मनि कीर्त्तितेति मेदिनी)" कवेः कृतौ, ऐसा क्यों कहा, गद्या वाक्, पद्या पद्धतिः, ५ माणिक्यं, रत्न का भेद, "मणिके मणिपुराख्ये नगरे भवं माणिक्यं" ६ भाष्यं, पदार्थ—विवृतिः—वा विवरण, "(सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः, स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुरिति)" ७ सिन्दूरं, रक्त—वा लाल चूर्ण, "(सिन्दूरस्तरुभेदे स्यात् सिन्दूरं रक्तचूर्णके, सिन्दूरी रोचना रक्तचेल्लिका धातकीषु चेति विश्वप्रकाशः)" ८ चीरं, वस्त्र भेद—"(चीरी झिल्ल्यां नपुंसकं, गोस्तने वस्त्रभेदे च रेखालिखन भेदयोरिति मेदिनी)", ९ चीवरं, मुनिवासः—वा वस्त्र, "शाक्यभिक्षुकप्रावर्णमिति सुभूतिः, १० पंजरं, वा पिञ्जरं, पक्ष्यादिबन्धनागार—वा पिंजरा ॥ ३१ ॥ १ लोकायतं, चार्वाकशास्त्रं, हरितालं, धातु भेद, "हरितालं धातुभेदे स्त्री दूर्वाकाशरेखयोरिति मेदिनी" ३ विदलं, वांस का बना पात्र भेद. ४ स्थालं, पात्र भेद—वा थार वा हांडी—अन्नपात्र—पाकपात्र, आदि, ५ बाह्लकं, कुंकुम—वा देश भेद—उस देश का उत्पन्न कुंकुम, "बाह्लवं भी, बह्लदेशे भवं बाह्लवं" ॥

॥ इति नपुंसकसंग्रहः ॥

॥ अथ चतुर्थ प्रकरण ॥

१ कहे से अन्य २ आधी ऋचा ३ तिलकी खल ४ रोमहर्ष ।	(पुन्नपुंसकयोः) शेषो ऽर्द्धर्च्च-पिण्याक-कण्टकाः ॥ ३२ ॥
१ लड्डु २ उपताप ३ टांकी ४ शाड़ी ५ कपड़ा ६ दशकोटि ।	मोदक-स्तण्डक-ष्टङ्क श्शाटकः कर्व्वटो-ऽर्बुदः ।
१ ब्रह्महत्या २ उत्साह ३ वैद्यग्रन्थ ४ तमाखू ५ अंबरा ६ नरई ।	पातको-द्योग-चरक तमाला-ऽमलको नडः ॥ ३३ ॥

अब चिक्कस शब्द पर्य्यंत पुंसि और क्लीब में हैं, उक्त से भिन्न शेष है, जैसे, शंख और पद्म–ये निधि वाचक पुल्लिङ्ग हैं, कम्बु–नलिन–वाची तो पुन्नपुंसक लिङ्ग हैं, तैसे अत्रत्य शब्द भी पर्य्याय में वाधित हैं उसके पर्य्याय से भिन्न हैं तो पुंनपुंसक लिङ्ग होते हैं, १ ऋचो ऽर्द्धं अर्द्धर्च्चः, आधी ऋचा–वेद भाग, २ पिण्याकं, तिल की खल, "(पिण्याको ऽस्त्री तिलकल्के हिङ्गुबाह्लीक सिह्लक इति मेदिनी)" ३ कंटकं, रोमहर्ष–वा रोमांच, "(कंटकः क्षुद्रशत्रौ च कर्म्मस्थानिकदोषयोः, रोमांचे च द्रुमांगे च कंटको मस्करे ऽपि चेति विश्वप्रकाशः, कंटको न स्त्रियां क्षुद्रशत्रौ मत्स्यादि कीकसे, नैयोगिकादि दोषोक्तौ स्याद्रोमांच द्रुमांगयोरिति मेदिनी)"; ॥ ३२ ॥ १ मोदकः, भक्ष्य भेद–वा (लड्डू) "(मोदकः खाद्यभेदे स्त्रीहर्षके पुरन्यवदिति मेदिनी, मोदको हर्षुलेखाद्य इति हैमः)"; २ तण्डकः उपताप विशेष, वा रोग विशेष, "तण्डकः खञ्जने फेने समास प्रायवाचि च, गृहदारुतरुस्कन्ध माया बहुलके ष्वपि इति मेदिनी)"; "उसी प्रकार बाज़े पढ़ते हैं, दण्डकः यह भी" ३ टंकः, वा तङ्कः, अश्मदारणः, वा टांकी पत्थर गढ़ने की, "(टंको नीलकपित्थेच खनित्रे टंकने स्त्रियां, जंघायां स्त्री पुमान् कोपे कोशाजिग्रावदारण इति मेदिनी)" ४ शाटकः, पटभेदः, वा शाड़ी प्रसिद्ध है, ५ कर्व्वटः, वा कर्प्पटः, "बाज़े पढ़ते हैं खर्व्वटः", स्थान भेद–वा वस्त्र भेद, "(यत्रैकतो भवेद्ग्रामो नगरं चैकतो भवेत्, मिश्रं तु खर्व्वटं नाम नदीगिरिसमाश्रयमिति)" ६ अर्बुदः, संख्या भेद–वा दशकोटि ७ पातकं, ब्रह्महत्यादि, ८ उद्योगः, उत्साह, ९ चरकः, वा वरकः, वैद्यशास्त्र भेद, "करकः यह भी पाठ है, इस का स्यूत वस्त्र अर्थ है" १० तमालः, वृक्ष भेद–तमाखू प्रसिद्ध है, "तमालस्तिलके खड्गे तापिच्छे वरुणद्रुम इति मेदिनी" ११ आमलकः, वा आमालकः, धात्रीफल, वा अंवरा प्रसिद्ध, १२ नडः, भीतर बिल–वा तृण भेद, ॥ ३३ ॥

१ कोढ़ २ मूड़ ३ मदिरा ४ मांसविशेष ५ वीर शब्द ६ कुशल ७ भीति ।	कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ।
१ संयोग २ तोल भेद ३ अक्षिरोग ४ रङ्गभेद ५ विकारशून्य ६ नाचना ।	सङ्गमं शतमाना ऽर्म्मं शम्बला ऽव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥
१ तोवड़ा २ जिमीकन्द ३ वस्त्र ४ नदी का दोनों पार ५ जूआ आदि ।	कविय-कन्द-कार्प्पासं पारा ऽवारं युगन्धरम् ।
१ यज्ञस्तम्भ २ झरोखा ३ यज्ञपात्र ४ माग-वा जूम ५ यज्ञपात्र ६ पात्रविशेष ।	यूपं प्रग्रीव-पात्रीवे यूपं चमस-चिक्कसौ ॥ ३५ ॥

१ कुष्ठं रोग भेद, २ पुष्कर–वा कमल, "कुष्ठं रोगे पुष्करे ऽस्त्रीति मेदिनी, कुष्ठं भेषज-रोगयोरिति हेमः"; ३ मुण्डं, शिरः, ३ शीधु, मद्य, ४ वुस्तं, भूंजा मांस–वा कटहल आदि के फल का सार भाग–"कहीं पुस्तं, वा शस्तं, पाठ है" "कहीं चुस्तं, वा तुस्तं भी पाठ है" ५ क्ष्वेडितं, वीर का किया सिंहनाद-६ क्षेम, कुशल, "क्षेमो ऽस्त्री लब्धरक्षणे, मोक्ष को भी" ७ कुट्टिमं, भीत का भेद, "कुट्टिमो ऽस्त्री निबद्धा- भूरिति कोशान्तरं" ८ संगमं, संयोग, ९ शत-मानं, मान भेद, १० अर्म्मं अक्षि रोग, ११ शम्बलं, वा सम्बलं–वर्ण का भेद, "पाथेयं च शंबलो ऽस्त्री शम्बलवत्कूलपाथेयमत्सरः इति मेदिनी)" ११ अव्ययं, स्वरादिनिपातं, वा विकार रहित, "अव्ययो ऽस्त्री शब्द भेदे नाविपणी निव्यंये त्रिष्विति मेदिनी" १२ ताण्डवं, वा ताण्डव्यं, नाच का भेद. ॥ ३४ ॥ १ कवियं, तोवड़ा–वा लगाम–वा वागडोर; २ कन्दं, कमलिनी की जड़–वा मूल–"(कन्दो ऽस्त्री सूरणे सस्य मूले जलधरे पुमानिति मेदिनी)", कहीं कम्मं यह पाठ है, ३ कार्प्पासं, "कर्पासं वा कपास–वा रुई–वस्त्र, का कारण आदि", ४ पारावारं, "वारं" नदी आदि के दोनों पार को क्रम से पारं और अवारं कहते हैं, "पारा ऽवारः पयोराशौ ६ पारा-वारं तटद्वये इति हेमः" ५ युगन्धरं, कूबरं–वा रथ के जूआ के काठ को पुष्ट करने वाला काष्ठ–वा पर्वत भेद–आदि, ६ यूपं, वा यूपं, यज्ञाङ्ग भेद–वा यज्ञ पशुबांधने का काष्ठ भेद. ७ प्रग्रीवं, दुमर्गीपर्क–,वा झरोखा–मुखशाला–खिड़की–आदि, ८ पात्रीवं, "वा पात्रीयं" यज्ञपात्र का भेद–९ यूपं, वा जूपं, माग, यह प्रसिद्ध है, "मुद्गामलकयूपस्तु ग्राही पित्त कफे हित इति वर्क धैयकें" १० चमस–चिक्कसौ, ये २ पात्र भेद हैं, ॥ ३५ ॥

अर्द्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
तन्नोक्तमिह लोके ऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

॥ * ॥ इति पुन्नपुंसकसङ्ग्रहवर्गः ॥ * ॥

॥ अथ पञ्चम प्रकरण ॥

स्त्री पुंसयोर् पत्यान्ता
द्विचतुः षट् पदोरगाः ।
जातिभेदाः
पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह
वेला । मल्लकः ॥ ३७ ॥

अर्द्धर्चादौ इस पुंनपुंसकाधिकार वर्ग में, घृतादिकों को पाणिनि आदियों ने पुंस्त्व आदि कहा है, वे तो वेद में प्रसिद्ध वैदिक हैं, इस हेतु, उन्हें यहां नहीं कहा और लोक में हैं तो वे शेषवत् आर्त्थत् उक्त से भिन्न शेष हैं उनके समान शिष्ट प्रयोग के अनुसार ग्राह्य हैं, ॥ ३६ ॥ ॥ इति पुन्नपुंसकसङ्ग्रहवर्गः ॥ अपत्य प्रत्यय अन्त में है जिनके वे शब्द स्त्री· और पुल्लिङ्ग में होते हैं, जैसे, उपगोः, अपत्यं पुमान् औपगवः, उपगोः, अपत्यं स्त्री· औपगवी, वैदेहः, वैदेही, गार्ग्यः, गार्गी, द्विचतुःषट्पदोरगाः, द्विपद–चतुष्पद–और षट्पद वाची और भुजग वाची जाति भेद स्त्री· पुंस हैं, तिनमें द्विपद जाति भेद जैसे, मानुषः पुमान्, मानुषी स्त्री, गोपः, पुमान्, स्त्री· गोपी, ब्राह्मणः, ब्राह्मणी, "शूद्रः, शूद्रा, अजादि मान कर टाप् है" चतुष्पद भेद जैसे, मृगः, मृगी, हयः, हयी, षट् पद भेद जैसे, भृंगः, भृंगी, मक्षिका, मक्खी, शिवा, सिआर, लूता, मकरी, पिपीलिका, चिउंटी, उरग जैसे, उरगः, उरगी, नागः, नागी, स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः, अर्थात् स्त्री वाचक शब्द के योग से पुं· वाचक शब्द स्त्री· और पुल्लिंग में होते हैं, जैसे इन्द्रः, इन्द्राणी, मातुर्भ्राता मातुलः, तस्य स्त्री मातुली, पुंसि में वर्त्तमान मातुलः, स्त्री योग से स्त्रीत्व में भी है, शूद्रस्य स्त्री शूद्री, मल्लक आदि भी स्त्री पुंस में हैं, मल्लकः, स्त्री· में तो मल्लिका, पुष्पवल्लिका भेद है; ॥ ३७ ॥

१ यती २ कौड़ी ३ नक्षत्र ४ चन्दन ५ मिरवा वृक्ष विशेष ६ स्वायम्भुव।

मुनिर्व्वराटकः स्वाति-र्व्वर्णको झाटलि-र्म्मनुः ।

१ सोनार की घरिया २ परिमाण भेद ३ बेरि वृक्षादि ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धु-र्य्यष्टिः शाटी कटी कुटिः ॥ ३८ ॥

॥ * ॥ इति स्त्रीपुंसशेषसङ्ग्रहवर्गः ॥ * ॥

॥ अथ षष्ठ प्रकरण ॥

स्त्रीनपुंसकयो-र्भाव-क्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ् ।

१ उचित २ मिताई ।

औचित्य-मौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

१ सेना २ छाया ३ शाला आदि ।

१ मनुष्यों की सेना २ कुत्तों की रात ३ गैयों का स्थानादि ।

षष्ठ्यन्त प्राक्पदाः सेना-च्छाया-शाला-सुरा-निशाः ।

स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशाल-मितरे च दिक् ॥ ४० ॥

१ष-. २ष-.

१ मुनिः, यती-इंगुदी-बुद्ध-पियाल वृक्ष भेद, अगस्त वृक्ष भेद, पलाश-आदि, "ऊर्मिः तरंग, यह भी पाठ है" ; २ वराटकः, कौड़ी-स्त्री लिङ्ग में वराटिका, ३ स्वातिः, नक्षत्र, ४ वर्णकः, चंदन-वा विलेपन, "(विलेपने चन्दने च वर्णकं पुन्नपुंसकमिति रभसः, वर्णकश्चारणे स्त्री तु चन्दने च विलेपने, हृयोर्नील्यादिषु स्त्री स्यादुत्कर्षे कांचनस्य चेति मेदिनी)" ५ झाटलिः, "झाटलिः, वा पाटलिः भी पाठ है" पलाश वृक्ष के सदृश है, ६ मनुः, स्वायंभुव आदि-वा मंत्र, ७ मूषा, धातु गलाने का पात्र-वा घरिया, ८ सृपाटी, परिमाण भेद, "सृपाटः, वा स्त्री॰ सृपाटी, वा असृपाटी, रुधिर की नदी, ९ कर्कंधुः बेर वृक्ष, १० यष्टिः, लाठी, ११ शाटिः, पट भेद-वा साड़ी, १२ कटिः, और कटः, स्त्री॰ कटिः, वा कटी, देह का अवयव-वा कमर, १३ पुं॰ कुटिः, स्त्री॰ कुटिः वा कुटी, गृह विशेष, वा पत्ते का घर, यहां मूषा नकारान्त है, ॥ ॥ इति स्त्रीपुंसशेषसङ्ग्रहवर्गः ॥ भावक्रिययोः अर्थात् भाव और कर्म्म अर्थ में वर्त्तमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ् कहीं स्त्री और नपुंसक में वर्त्तते हैं, तिनके मध्य ष्यञ् प्रत्यय का उदाहरण जैसे, औचित्यं यह, उचितस्याभावः औचित्यं, और औचिती भी, मित्रस्य कर्म्म मैत्र्यं, मैत्री वा, "इसी प्रकार वार्द्धकं वार्द्धका, सामग्र्यं, सामग्री, आर्हत्यं, आर्हती", वुञ् प्रत्यय तो औरमैथुनिकादि पुन इस भांति पहिले कहा है, जैसे, मिथुनस्य भावः कर्म्म वा मैथुनिका, मैथुनकं भी ॥ ३९ ॥ तत्पुरुष समास में षष्ठ्यन्त षष्ठी विभक्त्यन्त प्राक् पद हैं जिनके ऐसे सेनान्त प्राक् पद सेना आदि शब्द स्त्री और नपुंसक में होवें, उदाहरण, जैसे, नृणां सेना नृसेनं ऐसे विकल्प से नृसेना भी, इनसे भिन्न भी इसी प्रकार उदाहरण करना चाहिये, शर्भच्छायं, गोशालं, यवसुरं यवसुरा, कुड्यस्य छाया कुड्यच्छायं, कुड्यच्छाया वा, षष्ठी बहुवचनान्त से पूर्व पद को छाया हो तो क्लीबता में ऐसा पहिले दिखाया है, ॥ ४० ॥

श्रीविघ्नाधीशाय नमः

॥ अमरकोश की अनुक्रमणिका ॥

इ

ऐ

ओ

औ

कं

का

ख

ल

श

इति श्री पण्डित देवदत्त त्रिपाठि विरचिता ऽमरकोशा ऽनुक्रमणिका सम्पूर्णा

शुभमस्तु·

तथास्तु·